

खुतबाते मुहम्म

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

लेखक
फकीहे मिलात मुफ्ती
जलालुद्दीन अहमद अमजदी

उबैदे गौसो खाजः रज़ा व कुल औलिया
महम्मद जमालुद्दीन खान कादिरि रज़वी
ज़िलज़ु बहराइच शरीफ़ यूपी, अल-हिन्द
मोबाइल नम्बर +917860520899

मुहर्रम के लिए 12 बयानात का मजमूआ

खुतबाते मुहर्रम

लेखक

फकीहे मिल्लत

मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी

रहमतुल्लाहि तआला अलैह

संस्थापक— मर्कज़ तर्बियते इफ़ता दारुल उलूम अमजदिया
अरशदुल उलूम ओझागंज, ज़िला बस्ती (यू. पी.)

प्रकाशक

कुतुब ख़ाना अमजदिया

425/7, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6

उबैदे गौसो ख्वाज: रज़ा व कुल औलिया
महम्मद जमालुद्दीन खान क़ादिरी रज़वी
ज़िलज़् बहराद्द शरीफ़ यूपी, अल-हिन्द
मोबाइल नम्बर +917860520899

© समस्त अधिकार प्रकाशक हेतु सुरक्षित

- नाम किताब :— खुतबाते मुहर्रम
लेखक :— फ़कीहे मिल्लत मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी
(रहमतुल्लाहि तआला अलैह)
पृष्ठ :— 608
पहला एडीशन :— 1432 हि0 मुताबिक 2011 ई0
मूल्य :— .200=00
प्रकाशक :— कुतुब ख़ाना अमजदिया, दिल्ली-६

मिलने का पता

कुतुब ख़ाना अमजदिया

425/7, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6

Phone & Fax: 011-23243187, Mob: 9136469264

E-mail: kkamjadia@yahoo.co.uk

Website: www.kutubkhanaamjadia.com

शर्फे इन्तिसाब

फर्जन्दे रसूल जिगर गोश-ए-बतूल सैय्यदुश शुहदा हज़रते
 इमाम हुसैन रजियल्लाहु तआला अन्ह
 और उन तमाम मुसलमानों के नाम
 जिन्होंने दीन की हिफाज़त के लिये
 ख़लूस के साथ अपना खून या पसीना बहाया।

और

बिरादरे गिरामी जनाब निज़ामुद्दीन अहमद मरहूम
 के नाम जो मेरी दस्तार बन्दी से आठ साल क़ब्ल
 मुझे आलिमे दीन बनाने की तमन्ना लेकर
 दुनिया से रुख़्सत हो गए।
 खुदाबन्दे कुहूस उनकी क़ब्र को अनवार व तजल्लियात से
 मामूर फरमाए। आमीन

जलालुद्दीन अहमद अमजदी

खुत्बाते मुहर्रम मुन्द्रजा जैल किताबों से तैयार की गई है

कुरआने मजीद	शह अकाइद नसफी	असदुल गायह	कामिल इब्ने असीर
तफसीरे कबीर	दुर्रे मुहत्तार	इस्लाम की तर्फीक़त सलामा	बिदाया निहाया
तफसीर रुहुल बयान	रुहुल मुहत्तार	ख़साइसे कुबरा	तारीख़े तबरी
तफसीर ख़ाज़िन	शहें बिकाया	इन्बतुल्लाहि अलत जालमीन	वफाउल वफा
तफसीर मअतिमुत तंज़ील	उम्दतुर रिज़ाया	अश्शफ़ुल मोअब्बद	तारीख़ुल खुलफा
तफसीराते अहमदिया	मराफ़िउल फ़ताह	बरकाते आले रसूल	सवाईके मुहर्रका
तफसीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान	फ़तावा आलमग़ीरी	अश्श-ए-मुबशशरा	नूरुल अवसार
बुख़ारी शरीफ	फ़तावा अज़ीज़िया	करामाते सहाबा	नुज़ुतुल मजालिस
मुस्लिम शरीफ	फ़तावा रज़वियह	सियरुल सहाबियात	रौज़तुल शुहदा
तिर्मिज़ी शरीफ	वहारे शरीअत	तोहफ़ए अस्ना अशरिया	सवानेहे करबला
अबू दाऊद शरीफ	तंज़ीहुल मफ़नुत ह्यरिया	अदौलतुल मक्किया	शामे करबला
मिशकात शरीफ	हक्कुल ऐव	अन्नाहिया	नक्शे वफा
मोअल्ला इमाम मुहम्मद	अज़ुवुल इमदाह	अमीरे मुज्रबिया पर एक नज़र	शहस सुदूर
अनवारुल हदीस	अल-इतिबाह	गुन्यतुल तालिबीन	फ़ज़ाइले मदीना
ऐनी शहें बुख़ारी	हुज्जते दाहिरा	कश्फुल महजूब	अल-मलफूज़
मिर्कात शहें मिश्कात	नसीमुर रियाज़	मक्तूबात इमामे रब्बानी	इश्क़ की सरफराज़ी
अश्शतुल लमअत	मदारिजुन नुबुव्वत	महबूबे यज़दानी	इस्तिक्ामत
शहें फ़िज़हे अक्बर	शवाहिदुन नुबुव्वत	मसनवी मौलाना रूम	

फेहरिस्त मजामीन

मज्मून	पेज	मज्मून	पेज
निगाहे अव्वलीं	12	कब्र शरीफ	55
***		नमाजे जनाजा	57
मर्तबए शहादत	15	रब्बी उम्मती-उम्मती	58
शहादत आसान भी है		हजरत फातिमा का गुम	60
और मुश्किल भी		अबियाए किराम जिंदा हैं	61
अब्दुल कैयूम का वाकिआ	16	हयाते अबिया अलैहिमुस्सलाम	
शहीद की किस्में	19	वाकिआत की रौशनी में	66
शुहदा के फज़ाइल	21	एक सवाल और उसका जवाब	70
शहीद और ऐहसासे ज़ख्म	24	औलियाउल्लाह भी जिंदा हैं	72
मिस्र की औरतें	25	***	
शहादत की लज्जत	26	हजरत अबू बकर सिद्दीक	
बे मिस्र शहादत	27	रज़ियल्लाहु तआला अन्दु	77
शहीदों की जिंदगी	29	आप की खिलाफत	78
तीन मुजाहिद	30	आप की खिलाफत पर	
मुहब्बत वाले	33	आयाते कुरआनी	81
***		आप अफज़लुल् बशर	
विसाल रसूले अकरम		बादल् अबिया हैं	83
सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम	37	सिद्दीके अक्बर	
शुहदाए उहुद को अपनी		और आयाते कुरआनी	85
ज़ियारत से मुशरफ फरमाया	40	सिद्दीके अक्बर	
आखिरी वसियत	40	और अहादीसे करीमा	88
हुक्क की तपसील	41	आप का नाम व नसब	94
अलालत की इब्तिदा	46	अहदे तिफली में बुत-शिकनी	94
हदीसे किरतास	48	आप अहदे जाहिलिय्यत में	95
विसाल का असर	52	आप का हुलिया	96
तज्जहीज़ व तक्फीन	54	आप का कबूले इस्लाम	97
		आप का कमाले ईमान	99

मज़्मून	पेज	मज़्मून	पेज
आप की शुजाअत	103	रातों में गश्त	161
आप की सखावत	104	बैतुल माल से वज़ीफा	164
हुज़ूर से मुहब्बत	107	वसीला	165
मानिईने ज़कात	114	आप की शहादत	165
ग़लत इल्ज़ाम	116	***	
अलालत और वफात	117	हज़रत उस्माने ग़नी	
आप की करामतें	118	रज़ियल्लाहु तआला अन्हु	169
आप की खुसूसियात	120	नाम व नसब	172
***		क़बूले इस्लाम और मसाइब	172
हज़रत उमर फारूक़		आप का हुलिया	173
रज़ियल्लाहु तआला अन्हु	122	हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु	
नाम व नसब	123	और आयाते कुरआनी	174
आप के क़बूले इस्लाम		हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु	
का वाकिआ	123	और अहादीसे करीमा	179
फारूक़ लक़ब	127	आप की ख़िलाफत	186
इज़्हारे इस्लाम	128	एक ऐतराज़ और उसका जवाब	191
आप की हिज़्रत	130	आप का पहला खुत्बा	195
आप का हुलिया	132	आपके ज़मानए ख़िलाफत की फुतूहात	196
फारूके आजम और अहादीसे करीमा	132	आप की करामतें	199
आप की राय से		आप की शहादत	201
कुरआन की मुवाफ़क़त	136	मुहासरा में सख़्ती	206
आप की ख़िलाफत	140	बल्वाइयों का आप को शहीद कर देना	208
एक ऐतराज़		हज़रत अली की बरहमी	210
और उस का जवाब	143	***	
आप की करामतें	146	हज़रत अली मुर्तज़ा	
मक़ामे रफीअ	151	कर्मल्लाहु तआला बज़्हुल करीम	212
हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु		नाम व नसब	213
और गुस्सानी बादशाह	153	आप का क़बूले इस्लाम	214
इतिबाह	159	आप की हिज़्रत	215
गवर्नरों से शराइत	160		

मज्मून	पेज	मज्मून	पेज
उखुवते रसूल	216	अहले बैत और अकाबिरीन	
आप की शुजाअत	217	सलफ व खलफ के इरशादात	270
आप का हुलिया	225	खुसूसियात अहले बैत	275
हजरत अली रजियल्लाहु अन्हु		पहली खुसूसियत	275
और अहादीसे करीमा	226	दूसरी खुसूसियत	277
अबू तुराब	230	तीसरी खुसूसियत	279
खुलफाए सलासा		एक शुद्धा और उस का जवाब	280
और हजरत अली	230	चौथी खुसूसियत	283
आप का इल्म	235	पांचवीं खुसूसियत	285
आप के फैसले	236	छठी खुसूसियत	287
आका और गुलाम	237	सातवीं खुसूसियत	288
हकीकी मां	237	आठवीं खुसूसियत	288
एक शख्स की वसिय्यत	238	नवीं खुसूसियत	289
सत्तरा (17) ऊंट	238	दस्वीं खुसूसियत	289
आठ रोटियां	240	***	
आप की करामतें	241	मनाकिवे अहले बैत	
फुरात में तुगयानी	243	रजियल्लाहु तआला अन्हुम	291
पानी का चश्मा	244	एक ऐतराज और उसका जवाब	293
आप की खिलाफत	246	हजरत फातिमा	
खारजियों की साजिश	247	रजियल्लाहु तआला अन्हा	300
आप की शहादत	248	नाम व लकब और साले पैदाइश	" "
आप की वसिय्यत	249	आप का निकाह	301
आप का मजारे मुबारक	250	आप का जहेज	301
आप की बीवियां और आलौद	251	आप की घरेलू जिंदगी	302
आप के अक्वाले ज़र्री	251	आप के फजाइल	302
***		आप की वफात	305
फजाइल अहले बैत		आप की औलाद	306
रजियल्लाहु तआला अन्हुम	253		
अहलेबैत और अहादीसे करीमा	266		

मज्मून	पेज	मज्मून	पेज
हज़रत इमामे हसन		दूसरा ऐतराज़	359
रज़ियल्लाहु तआला अन्हु	308	जवाब	359
आप के फज़ाइल	309	इख़्तिलाफ की वजह	362
ख़िलाफ़त और उससे दस्तबरदारी	311	तीसरा ऐतराज़	363
आप की करामतें	313	जवाब	364
आप की शहादत	314	***	
ज़हेर किस ने दिया	317	हज़रत इमाम हुसैन	
ऐब या ख़ूबी	318	रज़ियल्लाहु तआला अन्हु	369
ताज़ीमे अहलेबैत के चन्द वाकिअत	320	आप की विलादत (पैदाइश)	370
***		आप के फज़ाइल	371
हज़रत अमीर मुआविया		आप की शहादत की शोहरत	377
रज़ियल्लाहु तआला अन्हु	329	एक ऐतराज़	
नाम व नसब	331	और उस का जवाब	381
आप का कबूले इस्लाम	332	यज़ीद पत्नीद	383
आप की वालिदा का अजीब		यज़ीद और अहादीसे करीमा ..	384
व ग़रीब वाकिअ	333	यज़ीद और हदीसे कुस्तुनुनिया	388
सहाबिए रसूल	335	यज़ीद की तख़्त नशीनी	
सहाबा और अहादीसे करीमा	336	और तलबे बैअत	392
सहाबा और अक्वाले आइम्मा	338	मदीना मुनव्वरा से रिहलत (रवानगी)	394
हज़रत मुआविया के फज़ाइल	342	कूफियों के खुतूत	396
इतिबाह	343	कूफा को हज़रत मुस्लिम की	
आप की सखावत	349	रवानगी	397
आप हाकिम कैसे बने?	351	हज़रत मुस्लिम कूफा में	399
आप की आखिरी वसिय्यत	352	इब्ने ज़ियाद का कूफा आना	401
आप की वफात	353	जासूस की जासूसी	403
आप की करामतें	353	गवर्नर हाउस का घिराव	406
आप पर ऐतराज़ात के जवाबात	357	हज़रत मुस्लिम तौआ के घर में	408
पहला ऐतराज़	" "	हज़रत मुस्लिम और गवर्नर हाउस	411
जवाब	" "	हज़रत मुस्लिम और इब्ने ज़ियाद	412
		आप की शहादत	414

मज्मून	पेज	मज्मून	पेज
शहादत फर्जन्दाने हज़रत मुस्लिम	415	शहादत हज़रत अली अकबर	465
कातिल का अंजाम	421	शहादत हज़रत अली असगर	469
***		इमाम आली मक़ाम की शहादत	471
करबला का ख़ूनी मंज़ूर	423	ऐ हुसैन! (मन्ज़ूम)	479
हज़रत इमाम हुसैन की		रहमते आलम को सदमए जानकाह	480
मक्का शरीफ से रवानगी	423	उस हुसैन इब्ने पे लाखों सलाम	481
करबला जाने वाले अहले बैत	427	(मन्ज़ूम)	
हज़रत कैस की शहादत	430	***	
हज़रत जुहैर से मुलाकात	431	बाकिअत बादे शहादत	482
शहादते मुस्लिम की ख़बर	432	इमाम का सरे अनवर	
हुर की आमद	434	और इब्ने ज़ियाद	484
बाप और बेटे की गुफ्तुगू	436	एक जां निसार की और शहादत	484
ज़मीने करबला	437	ग़ैबी शेअूर	486
इमाम और इब्ने सज़द की मुलाकात	439	राहिब का क़बूलें इस्लाम	486
साथियों में इमाम की तक्रीर	442	बाजे बजे	487
करबला में क़ियामते सुगरा		इमाम का सरे मुबारक और यज़ीद	488
दस्ती मुहर्म्म के दिलदोज़ बाकिअत	445	मदीना मुनव्वरा को वापसी	490
हुर का शौके शहादत	447	करबला के बाद यज़ीद की	
कूफियों से हुर का ख़िताब	448	ख़बासत, मदीना मुनव्वरा पर चढ़ाई	491
जंग की इब्तिदा	449	फ़ज़ाइले मदीना मुनव्वरा	493
करबला में हज़रत इमाम की करामतें	451	मक्कए मुअज़्ज़मा पर हमला	494
इमाम के साथियों की शुजाअत		यज़ीद की मौत के बाद	496
और शहादत	453	कातिलीने इमाम हुसैन का	
हाशमी जवानों की शहादत	455	इब्रतनाक अंजाम	497
औलादे अकील की शहादत	456	इब्ने सज़द का क़त्ल	497
फर्जन्दाने अली की शहादत	457	ख़ूली बिन यज़ीद को क़त्ल के	
शहादत हज़रत कासिम	459	बाद जला दिया गया	498
शहादत हज़रते अब्बास	462	शिमर क़त्ल के बाद कुत्तों के	
		हवाले किया गया	499

मज्मून	पेज	मज्मून	पेज
हाथ पांव काट कर तड़पने के लिये छोड़ दिया गया	501	हालाते मुसन्नफ (बकलम पद)	530
हकीम बरहना करके तीरों का निशाना बनाया गया	502	पैदाइश — नाम व नसब	" "
नेज़ों से छेद-छेद कर मारा गया	503	खानदानी हालात	" "
कातिल को जिंदा जला दिया गया	504	तहसीले इल्म	531
इब्ने ज़ियाद का इब्रतनाक अंजाम	505	ज़मानए तालिब इल्मी का एक	
मुख्तार का दअ्वए नुबुव्वत	506	अहम वाकिआ	532
कातिलीने इमाम हुसैन पर		शर्फे बैअत	534
तरह-तरह के अज़ाब	506	आला हज़रत से अकीदत	534
मुंह सुवर जैसा हो गया	508	तदरीस	535
एक ऐतराज़ और उसका जवाब	510	तरीकए तदरीस	536
मजालिसे मुहर्रम के फाइदे	510	बड़े तलबा	538
फज़ाइले आशूरा	512	इफ्ता	541
आशूरा के आमाल	513	फत्वा नवेसी की जिंदगी के	
हूर और हुलए बहिश्ती	514	चन्द वाकिआत	541
इमामे आली मक़ाम की		तस्नीफो-तालीफ	546
नज़्र व नेयाज़ करना	515	कुतुब खाना अमजदिया	548
ताज़िया दारी उलमाए		एक और अहम ख़िदमते दीन	552
अहले सुन्नत की नज़र में	517	दुनियवी सिला	554
हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़		आम हालात -- हक़-गोई	556
मोहदिस देहलवी रहिमहुमुल्लाह	517	दहरियों के मुकाबले में	
आला हज़रत इमाम अहमद		हक़-गोई	556
रज़ा बरैलवी रहिमहुमुल्लाह	518	बम्बई में हक़ गोई	560
सदरुश शरीआ मुसन्नफ		एक बड़े बाबा	562
बहारे शरीअत रहिमहुमुल्लाह	521	तबकए मलामतियह	566
एक फत्वा मअ तस्दीकात		हज़रत बायज़ीद बुस्तामी	567
उलमाए अहले सुन्नत	523	खुलासा	568
***		हज़रत मख़्दूम समनानी	569

मज्मून	पेज	मज्मून	पेज
खतरनाक गलती	570	ख्वाजा खिज़र का तेवहार	588
मुद्दा पूरा किया	571	मां-बाप का खाना	589
ऐब जोई और गीबत	572	ओझा गंज की कुछ	
देवबंदी घर में हक-गोई	572	और इस्ताहें	591
शहज़ाद पुर में हक-गोई	574	पुरानी रस्में	595
तक़रीर और उस का नज़ाना	576	हसद	596
सण्डीला का वाकिआ	578	मिज़ाज में शिद्दत	598
ओझा गंज की ग़लत बातें और		कुछ और बातें	599
उनकी इस्ताह	589	नमाज़ के लिये गैबी ताइदें	604
ओझा गंज की पहली		शार्गिंदों को वसियत	607
तालीमी हालत	589	दारुल उलूम फैज़ुर रसूल	
ओझा गंज में शादी की रस्में	581	बराऊं शरीफ, ज़िला बस्ती	
बद-मज़हबों से रिश्ता	583	यू०पी० अल-हिन्द	
ओझा गंज की ताज़िया दारी	586	पाइन्दा बाद	



निगाहे अब्बलीं

मुहर्रम शरीफ की मजालिस का सिलसिला साल-बसला बढ़ता ही जा रहा है कि अब शहरों के अलावा देहातों में भी इस तरह के प्रोग्राम आम होते जा रहे हैं जिन में बारह रोज़ मुसलसल एक ही स्टेज पर बयान करने के लिये नए मुकर्रिरीन को सख्त दुश्वारियां पेश आ रही हैं।

इस लिये अरसे से एक ऐसी किताब की शदीद ज़रूरत महसूस की जा रही थी जो मुस्तनद रिवायात पर मुश्तमिल होने के साथ बारह वज्जों का मज्मूआ हो ताकि मुकर्रिरीन गैर मोअतबर रिवायात बयान करने से बचें और बारह रोज़ मुसलसल वज्ज कहने पर आसानी के साथ कादिर हो सकें।

और साथ ही सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम, खुलफ़ाए अरबा, हज़रत अमीर मुआविया, हज़रत इमाम हसन और सय्यिदुश-शुहदा हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अज्मईन पर बद-मज़हबों की तरफ से किये गए एतराज़ात के मुदल्लल जवाबात भी हों ताकि अवाम और बाज़ ख़्वास भी जो इन हज़रात की जानिब से गुलत फहमी में मुब्तला कर दिये गए हैं वह गुमराह होने से बचें और अपनी आक़िबत को बरबाद होने से बचायें।

इन ज़रूरतों के पेशे नज़र हम ने क़लम उठाया, दर्सों-तदरीस और दीगर ज़रूरी कामों से वक़्त निकाल कर थोड़ा-थोड़ा लिखा यहां तक कि अल्हम्दु लिल्लाह किताब मुकम्मल हो गई और किताबत वगैरा की बड़ी बड़ी परेशानियों से गुज़रने के बाद ज़ेवरें तबा से आरास्ता होकर आप के हाथों में पहुंची।

अगरचे मैं इस तरह की किताब लिखने का अहल नहीं था इस लिये कि तक़रीरी किताब लिखने के लिये मुसन्नफ को अदीब होना चाहिये और मुफ़्ती उमूमन अदीब नहीं होते। फत्वा नवीसी में अदबी अल्फ़ाज़ से एहताराज़ करते हैं इस तरह मा-फ़िज़्ज़मीर को मुख़्तसर और जामेअ् अल्फ़ाज़ में अदा करने के आदी हो जाते हैं।

लेकिन जो लोग कि इसके अहल हैं जब उन्होंने ने इस तरफ तवज्जोह नहीं की तो हमें मजबूरन इस के लिये कलम उठाना पड़ा। और किसी तरह किताब मुकम्मल करके हम ने कौम के सामने पेश कर दिया। लिहाजा जो लोग अदबी अल्फाज़ या बाज़ारी बातों के शाइक हैं उनकी तिश्नगी इस किताब से दूर न होगी। सिर्फ ठोस मज़ामीन और मुस्तनद रिवायात व वाकिआत तलाश करने वालों के लिये बेइन्तिहा मुफीद साबित होगी और हत्तल इम्कान मुशकिल अल्फाज़ लिखने से भी बचने की कोशिश की गई है ताकि औरतें और कम पढ़े लिखे लोग भी ज़्यादा से ज़्यादा इस किताब से फायदा उठा सकें।

किताब के आखिर में हम ने अपने हालात भी दर्ज कर दिये हैं जो बहुत सी मुफीद मज़हबी और दीनी मालूमात पर मुशतमिल हैं। उनका भी ज़रूर मुतालआ करें।

नबी के अलावा दुनिया में कोई बड़ा से बड़ा इल्म वाला ऐसा नहीं हुआ है कि जिसे बोलने या लिखने में कहीं लगज़िश न हुई हो तो बहुत मुमकिन है कि इस किताब की तरतीब में कहीं हमारा कलम भी बहक गया हो। इस लिये अहले इल्म से गुज़ारिश है कि अगर इस में कोई ग़लत बात नज़र आए तो लोगों में इस किताब की अहमियत न घटायें बल्कि बज़रिये तहरीर हम को मुत्तला करें ताकि नए एडीशन में उसकी तस्हीह कर दी जाए।

अज़ीजे गिरामी हज़रत मौलाना गुलाम अब्दुल कादिर साहब अलवी साहिबज़ादा शुऐबुल औलिया हज़रत शाह मुहम्मद यार अली साहब किब्ला रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने इस किताब का अक्सर हिस्सा पढ़ा और मुफीद मशवरा दिया।

और जनाब मौलाना काज़ी अताउल हक़ साहब उस्मानी गौंडवी की याद देहानी से किताब में बाज़ अहम मज़ामीन का इज़ाफा हुआ।

और मौलवी मुहम्मद शमीम बढ़यावी फाज़िल फैज़ुर रसूल ने बाज़ किताबें फराहम कीं जो इस मज़मूअे की तस्नीफ में बहुत मुआविन

लेकिन जो लोग कि इसके अहल हैं जब उन्होंने ने इस तरफ तबज्जोह नहीं की तो हमें मजबूरन इस के लिये कलम उठाना पड़ा। और किसी तरह किताब मुकम्मल करके हम ने कौम के सामने पेश कर दिया। लिहाजा जो लोग अदबी अल्फाज या बाजारी बातों के शाइक हैं उनकी तिश्नगी इस किताब से दूर न होगी। सिर्फ ठोस मजामीन और मुस्तनद रिवायात व चाकिआत तलाश करने वालों के लिये बेइन्तिहा मुफीद साबित होगी और हत्तल इम्कान मुशकिल अल्फाज लिखने से भी बचने की कोशिश की गई है ताकि औरतें और कम पढ़े लिखे लोग भी ज्यादा से ज्यादा इस किताब से फायदा उठा सकें।

किताब के आखिर में हम ने अपने हालात भी दर्ज कर दिये हैं जो बहुत सी मुफीद मजहबी और दीनी मालूमात पर मुशतमिल हैं। उनका भी ज़रूर मुतालआ करें।

नबी के अलावा दुनिया में कोई बड़ा से बड़ा इल्म वाला ऐसा नहीं हुआ है कि जिसे बोलने या लिखने में कहीं लगज़िश न हुई हो तो बहुत मुमकिन है कि इस किताब की तरतीब में कहीं हमारा कलम भी बहक गया हो। इस लिये अहले इल्म से गुज़ारिश है कि अगर इस में कोई ग़लत बात नज़र आए तो लोगों में इस किताब की अहमियत न घटायें बल्कि बज़रिये तहरीर हम को मुत्तला करें ताकि नए एडीशन में उसकी तस्हीह कर दी जाए।

अजीजे गिरामी हज़रत मौलाना गुलाम अब्दुल कादिर साहब अलवी साहिबज़ादा शुऐबुल औलिया हज़रत शाह मुहम्मद यार अली साहब किब्ला रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने इस किताब का अक्सर हिस्सा पढ़ा और मुफीद मशवरा दिया।

और जनाब मौलाना काज़ी अताउल हक़ साहब उस्मानी गौंडवी की याद देहानी से किताब में बाज़ अहम मजामीन का इज़ाफा हुआ।

और मौलवी मुहम्मद शमीम बड़यावी फाज़िल फैज़ुर रसूल ने बाज़ किताबें फराहम कीं जो इस मज्मूअे की तस्नीफ में बहुत मुआविन साबित हुईं।

खुदाए अज़्ज़ व जल्ल इन सब के इल्म व अमल में रोज़ अफ़ज़ूँ तरक्की अता फरमाए और खुलूस के साथ दीने मतीन की बेश अज़ बेश ख़िदमत की तौफीके रफीक बख़्शे।

और दुआ है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इस किताब से अहले सुन्नत व जमाअत को तक्वियत बख़्शे। आख़िरी दम तक खुलूस के साथ दीन की ख़िदमतें लेता रहे, हमारी औलाद को भी इस्लाम व सुन्नियत की नशर व इशाअत का सही जज़्बा अता फरमाए, ईमान पर हमारा खातिमा हो, क़ियामत की हवलनाकियों से महफूज़ रखे और हुज़ूर पुर नूर शाफ़े यौमुन नुशूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शफ़ाअत नसीब फरमाए। आमीन

بحرمة النبي الكريم الامين وعلى اله افضل الصلوات واكمل التسليم

बिहुर्मतिन् नबियिल् करीमिल् अमीन व अला आलिही

अफ़ज़लुस् सलवाति व अक्मलुत्-तस्लीम।

जलालुद्दीन अहमद अमजदी

25 जमादिउल उख़रा 1408 हि०

14 फरवरी 1988 ई०

मर्कज़ तरबियते इफ़्ता की इमदाद के तरीके

- ☆ दारुल उलूम के लिये कमरों की तामीर करें।
- ☆ प्रोग्राम की तौसीअ के लिये ज़मीन की ख़रीदारी में हिस्सा लें।
- ☆ अपने वालिदैन वग़ैरा के ईसाले सवाब के लिये लाइब्रेरी में किताबें वक़फ़ करें।
- ☆ मुफती बनने वाले उलमा के तआम और वज़ीफ़ा की ज़िम्मेदारी कबूल करें।
- ☆ अपने हल्क़ए असर में इदारा का तआरुफ़ कराएं और इमदाद की दरख़्वास्त करें।

राक्ता: मैनेजर दारुल उलूम अमजदिया अरशदुल उलूम औझा गंज,

ज़िला बस्ती, यू०पी० अल-हिन्द, पिन:272131 Mob:- 9936919820

मर्तबाए शहादत

الحمد لله الذى اكرام الشهداء بالحياة، بقوله وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتٌ - والصلوة والسلام على صاحب الشفاعات وعلى اله واصحابه الذين فازوا بالشهادات - اما بعد فاعوذ بالله من الشيطان الرجيم - بسم الله الرحمن الرحيم - وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا بَلْ أَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ (ب: ٤: ٨٤)
صدق الله العلي العظيم وصدق رسوله النبي الكريم ونحن على ذلك لمن الشاهدين والشاكرين والحمد لله رب العلمين -

एक मर्तबा हम और आप सब लोग मिल कर मक्का के सरकार मदीना के ताजदार दोनों आलम के मालिक व मुख्तार जनाब अहमदे मुज्ताबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दरबार दुरर बार में बुलंद आवाज़ से दुरूद व सलाम का नज़ाना और हदिया पेश करें।

صلى الله على النبي الامى واله صلى الله تعالى عليه وسلم صلاوة سلاماً عليك يا رسول الله
सल्लल्लाहु अलन्नबियिल उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तआला
अलैहि व सल्लम सलातु व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

शहादत आखिरी मंज़िल है इंसानी सआदत की

वो खुश किस्मत हैं मिल जाए जिन्हें दौलत शहादत की

शहादत पा के हस्ती जिंदए जावेद होती है

ये रंगीं शाम सुब्हे ईद की तम्हीद होती है

दुनिया के लिहाज से इंसान के मुख्तलिफ दर्जे हैं, कोई चौकीदार है तो कोई कानेस्टबल, कोई सब-इंक्सपेक्टर है तो कोई एस0 पी0 यहां तक कि कोई वजीरे आजम है तो कोई सदर जमहूरिया। और बाज़ इतिहाई ज़िल्लत व पस्ती में हैं जैसे कोढ़ी वगैरा कि इन के घर वाले भी इन से नफरत और घिन करते हैं।

इसी तरह इस्लामी एतबार से भी इंसान की दो किस्में हैं, एक मुस्लिम दूसरे काफिर। काफिरों में भी मुख्तलिफ दर्जे हैं, उन में मुर्तद सब से बदतर काफिर है कि उसे जीने का भी हक नहीं है। और मुसलमानों में सब से ऊंचा दर्जा सैय्यिदुर रुसुल नबिय्युल अंबिया जनाब अहमदे मुज्ज्ता मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का है। फिर रुसुले इज़ाम का फिर दीगर अंबियाए किराम अलैहिमुस सलातु वस्सलाम का, फिर सिद्दीकीन फिर शुहदा और फिर सालिहीन यानी औलियाए किराम का रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम।

फिर औलियाए किराम में भी ग़ौस, कुतुब और अब्दाल व औताद वगैरा मुख्तलिफ दर्जात हैं और फिर उलमाए इस्लाम हैं वह भी मुख्तलिफ दर्जे वाले हैं, फिर मोमिन मुत्तकी हैं, फिर फासिक और मुसलमानों में सब से कम दर्जा गुमराह व बद मज़्हब का है जिस की बद मज़्हबी हदे कुफ्र को नहीं पहुंची है।

नबी उस मोहतरम हस्ती को कहते हैं जिस पर अल्लाह तआला की जानिब से वही नाज़िल की गई हो, इबादत व रियाज़त से कोई नबी नहीं हो सकता बल्कि अल्लाह तआला अपने फज़ल से जिसे चाहता है नुबुव्वत से सरफराज़ फरमाता है। मगर हमारे नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद अब कोई नबी नहीं हो सकता कि वह खातिमुल अंबिया हैं और सिद्दीक़ या वली बनना भी बड़ा मुश्किल काम है, और शहीद बनना आसान भी है और मुश्किल भी।

मुश्किल तो इस लिहाज़ से है कि इंसान को अपनी जान बहुत ज़्यादा प्यारी होती है और आसान इस एतबार से है कि थोड़ी ही देर में दर्जाए शहादत हासिल हो जाता है यानी शहीद एक ही जस्त में ज़मीन की पस्ती से आसमान की बुलंदी पर पहुंच जाता है।

अब्दुल कैय्यूम का वाकिआ

1934 का वाकिआ अब्दुल कैय्यूम का मशहूर है जो विक्टोरिया गाड़ी चलाता था, जो कोचवानी करके अपनी और अपने घर वालों की

रोजी हासिल करता था, उस की रात झोंपड़े में बसर होती थी और दिन विक्टोरिया चलाने में। घोड़े की लगाम पकड़े पकड़े उसकी हथेलियों का चमड़ा मोटा और खुरदुरा हो गया था। पूरे शहर कराची में जहाँ-वहाँ रहता था कोई उस का हमदर्द व गमगुसार नहीं था अगर कोई उस का दोस्त और शनासा था तो उसका प्यारा घोड़ा मोती था।

अब्दुल कैय्यूम को मालूम हुआ कि एक शख्स ने अपनी किताब में सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शान में गुस्ताखी व बे अदबी की है जिस पर मुक़द्दमा चल रहा है और आज उस की तारीख़ है, वह फौरन विक्टोरिया लेकर कचहरी की तरफ चल पड़ा, एक किनारे अपनी गाड़ी खड़ी की और फातिहाना शान की तरह चल कर जज के कमरे में पहुँच गया जो आदमियों से ख़ा ख़ा भरा हुआ था। दो अंग्रेज़ अभी कानूनी दफ़्तात का चेहरा देखने में लगे हुए थे कि उस ने इस तरह चाकू मारा जो उस की गर्दन में उतरता चला गया लाश तड़प कर ठंडी हो गई और अब्दुल कैय्यूम ने बग़ैर किसी मुज़ाहमत के अपने आप को पुलिस के हवाले कर दिया।

अब्दुल कैय्यूम जो अपने ही शहर में अजनबी था और कोई उसे जानता पहचानता न था थोड़ी ही देर में सिर्फ़ कराची नहीं बल्कि पूरा हिन्दुस्तान उसे जान गया और सारे मुसलमानों की मुहब्बतों का मर्कज़ बन गया, उस ज़मानत पर छुड़ाया गया और मुक़द्दमा शुरू हुआ, वक़्त के माहिर कानून दानों, बड़े बड़े वकीलों और बैनल अक्वामी शोहरत रखने वाले बैरिस्टर्स ने अब्दुल कैय्यूम के मुक़द्दमे की पैरवी करनी चाही और उस से कहा बस अपना बयान ज़रा बदल दो हम तुम्हें बचा लेंगे। कहने वालों ने बहुत कहा, मिन्नत समाजत करने वालों ने बहुत मिन्नत समाजत की मगर अब्दुल कैय्यूम के पास हर शख्स के लिये सिर्फ़ एक ही जवाब था कि मैं ने जान बूझ का मर्तबए शहादत ख़रीदा है, आप इस नेअमत से मुझ को महरूम करने की कोशिश न करें मैं इक्बाले बयान बदल कर अपनी आक़िबत नहीं ख़राब करूँगा।

रोज़ी हासिल करता था, उस की रात झोंपड़े में बसर होती थी और दिन विक्टोरिया चलाने में। घोड़े की लगाम पकड़े पकड़े उसकी हथेलियों का चमड़ा मोटा और खुरदुरा हो गया था। पूरे शहर कराची में जहां-वह रहता था कोई उस का हमदर्द व गमगुसार नहीं था अगर कोई उस का दोस्त और शनासा था तो उसका प्यारा घोड़ा मोती था।

अब्दुल कैयूम को मालूम हुआ कि एक शख्स ने अपनी किताब में सरकारें अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शान में गुस्ताखी व बे अदबी की है जिस पर मुकद्दमा चल रहा है और आज उस की तारीख है, वह फौरन विक्टोरिया लेकर कचहरी की तरफ चल पड़ा, एक किनारे अपनी गाड़ी खड़ी की और फातिहाना शान की तरह चल कर जज के कमरे में पहुंच गया जो आदमियों से खछा खछ भरा हुआ था। दो अंग्रेज़ अभी कानूनी दफ़आत का चेहरा देखने में लगे हुए थे कि उस ने इस तरह चाकू मारा जो उस की गर्दन में उतरता चला गया लाश तड़प कर ठंडी हो गई और अब्दुल कैयूम ने बग़ैर किसी मुज़ाहमत के अपने आप को पुलिस के हवाले कर दिया।

अब्दुल कैयूम जो अपने ही शहर में अजनबी था और कोई उसे जानता पहचानता न था थोड़ी ही देर में सिर्फ कराची नहीं बल्कि पूरा हिन्दुस्तान उसे जान गया और सारे मुसलमानों की मुहब्बतों का मर्कज़ बन गया, उस ज़मानत पर छुड़ाया गया और मुकद्दमा शुरू हुआ, वक़्त के माहिर कानून दानों, बड़े बड़े वकीलों और बैनल अक्वामी शोहरत रखने वाले बैरिस्टरों ने अब्दुल कैयूम के मुकद्दमे की पैरवी करनी चाही और उस से कहा बस अपना बयान ज़रा बदल दो हम तुम्हें बचा लेंगे। कहने वालों ने बहुत कहा, मिन्नत समाजत करने वालों ने बहुत मिन्नत समाजत की मगर अब्दुल कैयूम के पास हर शख्स के लिये सिर्फ एक ही जवाब था कि मैं ने जान बूझ का मर्तबए शहादत खरीदा है, आप इस नेअमत से मुझ को महलूम करने की कोशिश न करें मैं इक्बाले बयान बदल कर अपनी आक़िबत नहीं ख़राब करूंगा।

अब्दुल कैय्यूम की रिहाई के लिये मस्जिदों में दुआएं की गईं, औरतों ने मिन्नतें मानीं और बूढ़ों के लरज़ते हाथ, नौजवानों के दिल और बच्चों की उदासियों ने मालिके हकीकी से उस की ज़िंदगी की भीक मांगी मगर अब्दुल कैय्यूम ही की तमन्ना पूरी हुई। क़ानून के मुहाफिज़ों ने उस की मौत का हुक्म सुना दिया, वह मौत कि जिस पर हर दिल ग़मज़दा और हर घर मातम कदा बना हुआ था जैसे कि यह उसी के घर का अलमिय्या हो।

फिर जब अब्दुल कैय्यूम का जनाज़ा उठा तो उस में 25 लाख से ज़्यादा आदमी शरीक हुए, छतों और बाला ख़ानों से औरतें आंचलों से आंसू पोछती जाती थीं और फूल निछावर करती जाती थीं। कराची की तारीख़ गवाह है इस से पहले किसी भी शख्स के जनाज़े में इतने इंसान नहीं शरीक हुए। फिर यह तो इंसानों की तादाद थी जो 25 लाख से ज़ाइद थी और फिरिश्ते कितने करोड़ थे फिर महबूबे काइनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने किस प्यार व मुहब्बत से अब्दुल कैय्यूम को खुश आमदेद कहा होगा? उसे कौन जान सकता है?

रहमतुल्लाहि तआला अलैह।

देखा आप ने वह अब्दुल कैय्यूम कि जो विकटोरिया चलाता था, कोचवान था, पूरे शहर में उसे कोई जानता पहचानता नहीं था, लोगों के लिये अजनबी था, समाज और मुआशरे के पस्त तबक़े का एक ना क़ाबिले तवज्जोह आदमी था मगर एकी ही जस्त में रिफ़ातों की सारी मंज़िलों को तैय कर लिया और थोड़ी ही देर में उस मक़ामे रफीअ को पा लिया कि जहां बरसहा बरस के मुजाहिदों और ज़िंदगी भर की रियाज़तों के बाद भी हर इंसान नहीं पहुंच पाता।

ये रुत्बए बुलंद मिला जिस को मिल गया

हर शख्स के नसीब में दारो-रसन कहा

और जब अब्दुल कैय्यूम जैसा एक मामूली इंसान राहे हक़ में शहीद होकर लोगों के दिलों की धड़कन बन गया तो सैय्युदश शुहदा

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जी महबूबे खुदा सैय्यिदुल अंबिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के नवासे हैं, अली मुर्तजा के लख्ते जिगर हैं और फातिमा ज़हरा के नूरे नज़र हैं और जो तमाम अजीज व अकारिब यहां तक कि जवान बेटे अली अकबर और शीर-ख़्वार साहिब जादे की दर्दनाक शहादत के बावजूद हिम्मत नहीं हारे और राहे हक़ में कुर्बान हो गए वह शहीद हो कर हमेशा के लिये मुसलमानों की दिलों की धड़कन बन गए और उनकी मुहब्बतों के मर्कज़ बन गए।

यही वजह है कि हर साल जब उन की तारीख़े शहादत क़रीब आती है और मुहर्रम का चांद नमूदार होता है तो पूरा माहौल सोगवार हो जाता है, उन की याद लोगों के दिलों को तड़पा देती है, जगह जगह उन के ज़िक्र की मज्लिसें काइम होती हैं, खाने खिलाए जाते हैं, खिचड़े पकाए जाते हैं, सबीलें काइम की जाती हैं और तरह तरह से उन की बारगाह में नज़्र व नियाज़ पेश की जाती हैं और इंशा अल्लाह यह सिलसिला क़ियामत तक ऐसे ही जारी रहेगा, यज़ीदियों की हज़ार मुखालिफ़तों के बावजूद कभी नहीं मिटेगा।

रहेगा यूं ही उन का चर्चा रहेगा

पड़े खाक हो जाएं जल जाने वाले

صلى الله على النبي الامى واله صلى الله تعالى عليه وسلم صلاة وسلاماً عليك يا رسول الله

सल्लल्लाहु अलन् नबियिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तआला

अलैहि व सल्लम, सलातब् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

शहीद की किस्में

शहीद की तीन किस्में हैं:

1- शहीदे हकीकी, 2- शहीदे फिक्ही और 3- शहीदे हुक्मी।

जो अल्लाह की राह में क़त्ल किया जाए वह शहीदे हकीकी है। और शहीदे फिक्ही उसे कहते हैं कि आक़िल बालिग़ मुसलमान जिस पर गुस्त फ़र्ज़ न हो वह तलवार व बंदूक वगैरा आलए ज़ारिहा से

जुल्मन क़त्ल किया जाए और क़त्ल के सबब माल न वाजिब हुआ हो और न ज़ख्मी होने के बाद कोई फायदा दुनिया से हासिल किया हो और न ज़िन्दों के अहकाम में से कोई हुकम उस पर साबित हुआ हो।

यानी अगर पागल, ना बालिग या हैज़ व निफास वाली औरतें और जुनुब शहीद किये जाएं तो वह शहीदे फिक्ही नहीं। और अगर क़त्ल से माल वाजिब हुआ हो जैसे कि लाठी से मारा गया या क़त्ले ख़ता कि मार रहा था शिकार को और लग गया किसी मुसलमान को, या ज़ख्मी होने के बाद खाया पिया, इलाज किया, नमाज़ का पूरा वक़्त होश में गुज़रा और वह नमाज़ पर कादिर था या किसी बात की वसियत की तो वह शहीदे फिक्ही नहीं।

मगर शहीदे फिक्ही न होने का यह मअ्ना नहीं कि वह शहीद होने का सवाब भी नहीं पाएगा बल्कि इस का मतलब सिर्फ़ इतना है कि उसे गुस्ल दिया जाएगा और शहीदे फिक्ही नमाज़े जनाज़ा तो पढ़ी जाएगी मगर उसे गुस्ल नहीं दिया जाएगा वैसे ही खून के साथ दफन कर दिया जाएगा। और जो चीज़ें कि अज़ किस्म कफन नहीं होंगी उन्हें उतार लिया जाएगा जैसे ज़िरह, टोपी और हथियार वगैरा। और कफन मस्नून में अगर कमी होगी तो उसे पूरा किया जाएगा। पाजामा नहीं उतारा जाएगा और सारे कपड़े उतार कर नए कपड़े नहीं दिये जाएंगे कि मक्रूह है।

और शहीदे हुक्मी वह है कि जो जुल्मन नहीं क़त्ल किया गया मगर क़ियामत के दिन वह शहीदों के ग़िरोह में उठाया जाएगा। हदीस शरीफ़ में है कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि खुदाए तअ़ाला की राह में शहीद किये जाने के अलावा सात शहादतें और हैं, जो ताऊन में मरे शहीद है, जो डूब कर मर जाए शहीद है, जो ज़ातुल जुनुब (नमूनिया) में मरे शहीद है, जो पेट की बीमारी में मर जाए शहीद है, जो आग में जल जाए शहीद है, जो इमारत के नीचे दब कर मर जाए वह शहीद है और जो औरत बच्चे

की पैदाइश के वक़्त मर जाए वह भी शहीद है। (मिशकात शरीफ:136)

इन के अलावा और भी बहुत सी सूरतें हैं जिन में शहादत का सवाब मिलता है। उन में से चन्द यह हैं: हालते सफर में मरा, सिल की बीमारी में मरा, सवारी से गिर कर मरा या मिरगी से मरा, बुखार में मरा, जान व माल या अहल व अयाल या किसी हक के बचाने में क़त्ल किया गया, इश्क में मरा बशर्ते कि पाक दामन हो और छुपाया हो, किसी दरिन्दे ने फाड़ खाया, बादशाह ने जुल्मन कैद किया या मारा और मर गया, किसी मूजी जानवर के काटने से मरा, इल्मे दीन की तलब में मरा, मोअज्जिन जोकि तलबे सवाब के लिये अज्ञान कहता हो, रास्त-गो ताजिर जिस समन्दर के सफर में मतली कैय आई और मर गया, जो अपने बाल बच्चों के लिये सई (कोशिश) करे उन में अग्रे इलाही काइम करे और उन्हें हलाल खिलाए, जो हर रोज़ 25 बार यह दुआ पढ़े: **اللَّهُمَّ بَارِكْ لِي فِي الْمَوْتِ وَفِي مَا بَعْدَ الْمَوْتِ** जो चाश्त की नमाज़ पढ़े हर महीने में तीन रोज़े रखे और वित्र को सफर व हज़र में कहीं तर्क न करे, फसादे उम्मत के वक़्त सुन्नत पर अमल करने वाला उस के लिये सौ शहीदों का सवाब है। जो मर्ज़ में **لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ** चालीस मर्तबा कहे और उसी मर्ज़ में इन्तेकाल कर जाए और अच्छा हो गया तो उस की मग़फिरत हो जाएगी, कुपफार से मुक़ाबला के लिये सरहद पर घोड़ा बांधने वाला, जो शख्स हर रात सूरए यासीन शरीफ पढ़े, जो बा वज़ू सोया और मर गया, जो नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर सौ मर्तबा रोज़ाना दुरूद शरीफ पढ़े, जो सच्चे दिल से यह दुआ करे कि अल्लाह की राह में क़त्ल किया जाऊँ और जो शख्स जुमा के रोज़ इन्तिकाल करे। (रहुल मोहतार, बहारे शरीअत)

इन तमाम किस्मों में सब से अज़ला शहीद वह है जो अल्लाह की राह में क़त्ल किया गया और शहादते हकीकिय्या से सरफराज़ हुआ। इस के फज़ाइल में कई आयतें और बेशुमार हदीसें वारिद हैं।

शुहदा के फज़ाइल

खुदाए अज़्ज़ व जल्ल शुहदाए किराम की फज़ीलत बयान करते

हुए कुरआने मजीद में इरशाद फरमाता है।

जो खुदा की राह में कल्ल किये जाएं उन्हें मुर्दा मत कहना बल्कि वह जिंदा हैं लेकिन तुम्हें खबर नहीं। (पारा:2 रुकूअ:3)

وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ يُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتٌ ۚ بَلْ أَحْيَاءٌ وَلَكِنْ لَا تَشْعُرُونَ ۝

और इरशाद फरमाता है:

जो लोग अल्लाह की राह में कल्ल किये गए उन्हें मुर्दा हरगिज़ न ख्याल करना बल्कि वह अपने रब के पास जिंदा हैं, रोज़ी दिये जाते हैं। (पारा:4 रुकूअ:8)

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ قُتِلُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَمْوَاتًا ۚ بَلْ أَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُونَ ۝

हज़रत इब्ने मस्कूद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैं ने इस आयते करीमा का मअूना रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से दर्याफ्त किया तो आप ने इरशाद फरमाया कि शहीदों की रूहें सब्ज़ परिन्दों के जिस्म में हैं, उन के रहने के लिये अर्श इलाही के नीचे किन्दीलें लटकाई गई हैं। जन्नत में जहां उन का जी चाहता है वह सैर करते हैं और उसके मेवे खाते हैं। (मुस्लिम, मिश्कात:330)

और सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम शुहदाए इस्लाम की अज़मत बयान करते हुए इरशाद फरमाते हैं कि शहीद के लिये खुदाए तआला के नज़्दीक छः खूबियां हैं: (1) खून का पहला कतरा गिरते ही उसे बख़्श दिया जाता है और रूह निकलने ही के वक़्त उस को जन्नत में उस का ठिकाना दिखा दिया जाता है। (2) क़ब्र के अज़ाब से महफूज़ रहता है। (3) उसे जहन्नम के अज़ाब का खौफ नहीं रहता। (4) उस के सर पर इज़्ज़त व वफ़ार का ताज रखा जाएगा कि जिस का बेश बहा याकूत दुनिया और दुनिया की तमाम चीज़ों से बेहतर होगा। (5) उस के निकाह में बड़ी-बड़ी आंखों वाली 72 हूरें दी जाएंगी। (6) और उसके अज़ीज़ों में से 70 आदमियों के लिये उस की शफाअत क़बूल की जाएगी। (तिर्मिज़ी, मिश्कात:333)

और सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं कि जो लोग लड़ाई में कल्ल किये जाते हैं उन की

तीन किस्में हैं: एक वह मोमिन जो अपनी जान और अपने माल से अल्लाह की राह में लड़े और दुश्मन से खूब मुकाबला करे यहां तक कि कत्ल कर दिया जाए। यह वह शहीद है जो सब्र और मशक्कत के इम्तिहान में कामियाब हुआ। यह शहीद खुदाए तआला के अर्श के नीचे खुदा के खेमे (यानी अल्लाह तआला के हुजूर और उस के कुर्ब में) होगा। (अश्अतुल् लमआत:3/260) لَا يَفْضُلُ النَّيُّونَ إِلَّا بِزَوْجَةِ النَّيُّونَةِ अबियाए किराम इस से सिर्फ दर्जए नुबुव्वत में ज्यादा होंगे यानी मर्तबाए नुबुव्वत और उस से जो कमालात मुतअल्लिक हैं उन के अलावा हर मर्तबा और हर कमाल उस शहीद को हासिल होगा।

और दूसरा वह मोमिन जिस के आमांल दोनों तरह के हों यानी कुछ अच्छे और कुछ बुरे, वह अपनी जान व माल से खुदा की राह में जिहाद करे, जिस वक़्त दुश्मन से सामना हो उस से लड़े यहां तक कि कत्ल कर दिया जाए। यह ऐसी शहादत है जो गुनाहों और बुराइयों को मिटाने वाली है। फिर फरमाया: إِنَّ السَّيْفَ مَحْذُورٌ لِلْعَظَمَاءِ وَأَدْخِلْ مِنْ أَيِّ أَبْوَابِ الْحَيَاةِ يَأْتِيكَ يَاسَى यानी बेशक तलवार गुनाहों को बहुत ज्यादा मिटाने वाली है और यह शहीद जिस दरवाज़े से चाहेगा जन्नत में चला जाएगा।

और तीसरा वह मुनाफिक है जिस ने अपनी जान और अपने माल से जिहाद किया और जब दुश्मन से मुकाबिला हुआ तो खूब लड़ा यहां तक कि मारा गया। यह शख्स दोज़ख में जाएगा। हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: इस लिये कि لَا يَنْفَكُ يَاسَى यानी छिपे हुए कुफ़ को तलवार नहीं मिटाती है। (दारमी, मिश्कात:336)

इस हदीस शरीफ से जहां यह मालूम हुआ कि अल्लाह की राह में शहीद होने वाला मर्तबाए नुबुव्वत और उस के मुतअल्लिका कमालात के अलावा सारे दरजात से सरफराज़ किया जाता है और उस के तमाम गुनाह माफ कर दिये जाते हैं साथ ही यह भी वाज़ेह हुआ कि अगर दिल में कुफ़ छिपाए हो और सिर्फ ज़ाहिर में मुसलमान हो तो चाहे ज़िंदगी भर जिहाद करे यहां तक कि अपनी अज़ीज़ तरीन जान भी कुर्बान कर दे मगर वह जहन्नम ही में जाएगा।

इसी तरह जो लोग महबूबे खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बुग़ज़ व अ़दावत का कुफ़ अपने दिलों में छिपाए हुए हैं और उन की अज़मत के दुश्मन हैं अगर वह दिन-रात इबादत करें और जिंदगी भर सारी दुनिया में इस्लाम की नशर व इशाअत करें और तब्तीग़ करते फिरें यहां तक कि उसी हाल में मर जाएं तो उन का ठिकाना जहन्नम ही होगा। इसी लिये इस तरह की किसी भी नेकी से कुफ़ नहीं माफ़ होता।

صلى الله على النبي الامى واله صلى الله تعالى عليه وسلم صلاوة سلاماً عليك يا رسول الله

सल्लल्लाहु अलन्नबियिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तआला अलैहि व सल्लम, सलातुव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

शहीद और ऐहसासे ज़ख़्म

मैदाने जंग में शहीद हर तरह से ज़ख़्मी होता है कभी हाथ कटता है, कभी पांव घायल होता है, कभी उस के सीने में नेज़ा दाख़िल किया जाता है, खून का फव्वारा जारी होता है, कभी गर्दन कट के अलग हो जाती है और शहीद खून में नहा कर ज़मीन पर गिर जाता है जिस से बज़ाहिर यह मालूम होता है कि उस को सख़्त तकलीफ़ व अज़िय्यत होती है लेकिन हकीक़त यह है कि उस को बहुत मामूली सी तकलीफ़ होती है और उसे उन ज़ख़्मों का पूरा ऐहसास नहीं होता। मुख़िबरे सादिक़ सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं:

शहीद क़त्ल की सिर्फ़ इतनी ही तकलीफ़ महसूस करता है जितनी कि الشَّهِيدُ لَا يَجِدُ أَلَمَ الْقَتْلِ إِلَّا كَمَا يَجِدُ
तुम चुटकी भरने या चींवटी के काटने
की तकलीफ़ महसूस करते हो। أَحَدُكُمْ أَلَمَ الْقَرْصَةِ۔

(तिर्मिज़ी, मिश्कात:33)

मुमकिन है कोई कहे कि यह कैसे हो सकता है कि शहीद के हाथ पांव काट दिये गए और उसकी गर्दन भी जुदा कर दी गई मगर उसको सिर्फ़ इतनी तकलीफ़ हुई जितनी चींवटी काटने या चुटकी भरने से होती है।

तो इस शुब्हा का जवाब यह है कि शहीद से वह शहीदे हक् मुराद है जिस के दिल में अल्लाह और उस के रसूल की मुहब्बत इस दर्जा पैदा हो गई हो कि उस का दिल चाहता है कि एक नहीं बल्कि करोड़ों जानें हों तो मैं सब को अपने महबूब पर कुर्बान कर दूँ। अअला हज़रत अज़ीमुल बरकत रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं:

करुं तेरे नाम पे जां फिदा न बस एक जां दो जहां फिदा
दो जहां से भी नहीं जी भरा करुं क्या करोरों जहां नहीं

जैसे डॉक्टर मरीज़ को दवा सुंघा देता है फिर उस के जिस्म को चीरता और फाड़ता है, हड्डियां तोड़ता है और टांके लगाता है मगर चूँकि दवा का असर उस पर ग़ालिब होता है इस लिये मरीज़ को कोई तकलीफ नहीं महसूस होती। बिल्कुल इसी तरह वह शहीदे हक् कि जिस के दिल में अल्लाह व रसूल की मुहब्बत ग़ालिब हो गई तो उस का जिस्म कटता है, हड्डियां टूटती हैं, खून बहता है और गर्दन जुदा होती है मगर उसे तकलीफ का एहसास नहीं होता।

मिस्र की औरतें

मिस्र के शरीफ घर की औरतों ने जब जुलैखा को हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम की मुहब्बत पर मलामत की और तअना दिया तो जुलैखा ने उन औरतों को बुलाया, उन के लिये दस्तर ख़्वांन बिछवाया जिस पर तरह तरह के खाने और मेवे चुने गए फिर जुलैखा ने हर औरत को फल वगैरा काटने के लिये एक-एक छुरी दी और हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम से अर्ज किया आप इन औरतों के सामने आ जाएं। जब आप तशरीफ लाए और औरतों ने उनके जमाले जहां आरा को देखा तो उन के हुस्न ने औरतों पर इतना असर किया कि बजाए लीमू के उन्होंने ने अपने-अपने हाथों को काट लिया और खून बहने लगा मगर उन लोगों को हाथों के कटने का एहसास नहीं हुआ इसी लिये उन्होंने ने यह नहीं कहा कि हाए! हम तो अपने हाथ काट लिये बल्कि यह कहा कि यह इंसान नहीं हैं फिरिश्ता हैं। وَقَطَعْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَذَا بَشَرًا إِنْ هَذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ

(सूरए यूसुफ पारा:12, रकूअ:14)

और जब हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम के हुस्न का औरतों पर ऐसा असर हुआ कि उन को हाथ कटने की तक्लीफ का ऐहसास नहीं हुआ तो जनाब अहमदे मुज्ताबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम जिन का चेहरा अक्दस ऐसा रौशन व ताबनाक था कि बकौल रावियाने हदीस आप के चेहरे में चांद व सूरज तैरते थे। जिस पर उन के हुस्नो-जमाल का असर होता है और उन की मुहब्बत का ग़लबा होता है उस का सर भी कट जाता है मगर उसे ऐहसास नहीं होता।

हुस्ने यूसुफ पे कटें मिस्र में अंगुष्ठे ज़ना
सर कटाते हैं तेरे नाम पे मदनि अरब

☆☆☆

शहादत की लज़्ज़त

दुनिया की बेशुमार नेअ्मतों से इंसान लुत्फ व लज़्ज़त हासिल करता है, किसी नेअ्मत को खाता है, किसी को पीता है, किसी को सूँघता है, किसी को देखता है, किसी को सुनता है और इन के अलावा मुख़्तलिफ तरीकों से तमाम नेअ्मतों को इस्तेमाल करता है और उन से महज़ूज़ होता है लेकिन मर्दे मोमिन को शहादत की जो लज़्ज़त हासिल होती है उस के सामने दुनिया की सारी लज़्ज़तें हेच हैं। यहां तक कि शहीद जन्नत की तमाम नेअ्मतों से फाइदा उठाएगा और उन से लुत्फ अंदोज़ होगा मगर जब उस को अल्लाह व रसूल की मुहब्बत में सर कटाने का मज़ा याद आएगा तो जन्नत की भी सारी नेअ्मतों का मज़ा भूल जाएगा और तमन्ना करेगा कि ऐ काश! मैं दुनिया में वापस किया जाऊं और बार-बार शहीद किया जाऊं।

हदीस शरीफ में है सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जन्नत में दाख़िल होने के बाद फिर कोई जन्नती वहां की राहतों और नेअ्मतों को छोड़ कर दुनिया में आना पसंद न करेगा कि जो चीज़ें हमें ज़मीन में हासिल थीं वह फिर मिल जाएं।

मगर शहीद आरजू करेगा कि वह फिर दुनिया की तरफ वापस होकर अल्लाह की राह में दस मर्तबा क़त्ल किया जाए। (बुखारी, मुस्लिम, निश्कात:330)

إِلَّا الشَّهِيدُ يَتَمَنَّى أَنْ يُرْجَعَ إِلَى الدُّنْيَا
فَيَقْتَلَ عَشْرَ مَرَّاتٍ۔

صلى الله على النبي الامي واله صلى الله تعالى عليه وسلم صلاة وسلاماً عليك يا رسول الله

सल्लल्लाहु अलन्नबियिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तअला अलेहि
व सल्लम, सलातव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

बेमिस्ल शहादत

इस्लाम की नशर व इशाअत और उस की बका के लिये बेशुमार मुसलमान अब तक शहीद किये गए मगर इन तमाम लोगों में सैय्युदश- शुहदा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तअला अन्हु की शहादत बेमिस्ल है कि आप जैसी मुसीबतें किसी दूसरे शहीद ने नहीं उठाईं। आप तीन दिन के भूके प्यासे शहीद किये गए, इस हाल में कि आप के तमाम रुफका, अज़ीज़ व अकारिब व अहल व अयाल भी सब भूके प्यासे थे और छोटे बच्चे पानी के लिये तड़प रहे थे। यह आप के लिये और ज़्यादा मुसीबत की बात थी इस लिये कि इंसान अपनी भूक व प्यास तो बर्दाश्त कर लेता है लेकिन अहल व अयाल और खास कर छोटे बच्चों की भूक व प्यास उसे पागल बना देती है।

और जब पानी का वुजूद नहीं होता तो प्यास की तकलीफ कम होती है लेकिन जब कि पानी की बोहतात हो जिसे आम लोग हर तरह से इस्तेमाल कर रहे हों यहां तक कि जानवर भी उस से सैराब हो रहे हों मगर कोई शख्स जो तीन दिन का भूका प्यासा हो उसे न पीने दिया जाए तो उस के लिये ज़्यादा तकलीफ की बात है।

और मैदाने करबला में यही नक़्शा था कि आदमी और जानवर सभी लोग दरियाए फुरात से सैराब हो रहे थे, मगर इमामे आली मक़ाम और उनके तमाम रुफका पर पानी बन्द कर दिया गया था यहां तक कि आप अपने बीमारों और छोटे बच्चों को भी एक क़तरा नहीं पिला सकते थे।

उस की कुदरत जानवर तक आब से सैराब हों
प्यास की शिदत में तड़पे बे ज़बाने अहले बैत

और फिर ग़ैर ऐसा करे तो तक्लीफ का ऐहसास कम होगा और यहां हाल यह है कि खाना पानी रोकने वाले अपने को मुसलमान ही कहलाते हैं, कलमा पढ़ते हैं, नमाज़ें अदा करते हैं और उनके नाना जान का इस्मे गरामी अज़ानों में बुलन्द करते हैं मगर नवासे पर जुल्म व सितम का पहाड़ तोड़ते हैं।

अगर्चे हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर भी पानी बन्द कर दिया गया था मगर वह अपने घर और अपने वतन में थे और इमामे आली मक़ाम अपने घर से दूर और बे वतन हैं, इस के साथ तेज़ धूप, तपती हुई ज़मीन और गर्म हवाओं के धपेड़ें भी हैं।

और आप को यह अंदेशा भी दामनगीर था कि मेरी शहादत के बाद मेरा तमाम साज़ व सामान लूट लिया जाएगा, खेमा जला दिया जाएगा, मस्तूरात बेसहारा हो जायेंगी और उन्हें कैद कर लिया जाएगा।

इन हालात में अगर रुस्तम भी होता तो उस के हौसले पस्त हो जाते और वह अपनी गर्दन झुका देता लेकिन सैय्यिदुश शुहदा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उन मसाइब व आलाम के हुजूम में भी बातिल के मुक़ाबिले के लिये सब्र व रज़ा का पहाड़ बन कर क़ाइम रहे और आप के पाए इस्तिक़्ाल में लगज़िश नहीं पैदा हुई यहां तक कि 73 ज़ख़्म खा कर शहीद हो गए और आप की लाशे मुबारक घोड़ों की टापों से रौन्दी भी गई।

आप की यह शहादत बे मिस्ल है जिस ने यज़ीदियत को मुर्दा कर दिया, उसे दुनिया में नहीं फैलने दिया और दीने इस्लाम को मस्ख़ होने से बचा लिया। इसी लिय सुल्तानुल हिन्द हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अजमेरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं:

शाह अस्त हुसैन बादशाह अस्त हुसैन
दीन अस्त हुसैन दीं पनाह अस्त हुसैन

सर दाद, नदाद दस्त दर दस्ते यज़ीद
हक्का कि बिनाए ला इलाह अस्त हुसैन

शहीदों की जिंदगी

शहीद जो अल्लाह की राह में क़ल्ल किये जाते हैं वह जिंदा हैं, पारए दोम, रुकूअ 3 की आयते करीमा لَا تَحْسَبَنَّ الْمَيِّتَ وَهُوَ فِي حَيَاتِهِ وَمِنْ دُونِهِ يُدْعَىٰ فِي الْمَنَاقِبِ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ में खुदावन्दे कुद्स ने शहीदों को मुर्दा कहने से रोक दिया और फरमाया कि वह जिंदा हैं लेकिन तुम शऊर नहीं रखते हो और नहीं समझते हो कि वह कैसे जिंदा हैं।

मगर इंसान जबकि देखता है कि शहीद के हाथ पांव कट गए, उस की गर्दन जुदा हो गई, वह बेहिस व हरकत हो गया और सांस की आमद व रफ्त भी बन्द हो गई फिर उस को ज़मीन के नीचे दफन कर दिया गया, वारिसों ने उस के माल को आपस में तक्सीम कर लिया और बीबी ने इद्दत गुज़ार कर दूसरा निकाह भी कर लिया तो हो सकता था कि ज़ाहिरी हाल देख कर वह गुमान करता शहीद मुर्दा हैं अल्बत्ता जब अल्लाह तआला ने मना फरमा दिया है तो उसे मुर्दा नहीं कहा जाएगा। तो खुदाए अज़्ज़ व जल्ल ने पारए चहारुम, रुकूअ 8 की आयते मुबारका لَا تَحْسَبَنَّ الْمَيِّتَ وَهُوَ فِي حَيَاتِهِ وَمِنْ دُونِهِ يُدْعَىٰ में शहीदों को मुर्दा गुमान करने से भी रोक दिया और ताकीद के साथ फरमाया कि ऐसे लोगों को मुर्दा हरगिज़ गुमान मत करना बल्कि वह जिंदा हैं और बारगाहे इलाही से रोज़ी दिये जाते हैं।

कुरआने करीम की इन आयाते मुबारका से वाज़ेह तौर पर साबित हुआ कि शुहदाए किराम जिंदा हैं, उन को मुर्दा कहना कुरआने मजीद की मुखालफत करना है बल्कि उन्हें मुर्दा गुमान करने से भी सख्ती से रोका गया गया, यानी मुर्दा कहना तो बड़ी बात है उनको मुर्दा ख्याल भी नहीं कर सकते इस लिये कि वह अल्लाह की राह में क़ल्ल हो कर जिंदए जावेद हो जाते हैं, रिज़क आखिरत से खाते पीते हैं और जहां खुदाए तआला चाहता है जन्नत वगैरा की सैर करते हैं।

आवाज़ आ रही है शहीदों की खाक से
मर कर मिली है ज़िंदगीए जाविदां मुझे

صلى الله على النبي الامى واله صلى الله تعالى عليه وسلم صلاةً وسلاماً عليك يا رسول الله
सल्लल्लाहु अलन्नबिय्यिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तआला अलेहि
व सल्लम, सलातव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह ।

तीन मुजाहिद

शहीदों की ज़िंदगी के लिये बेशुमार वाकिआत मोअ्तबर किताबों में दर्ज हैं। उन में एक वाकिआ हम आप लोगों के सामने पेश करते हैं जिस को अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती ने शर्हुस् सुदूर में और अअूला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फाज़िल बरैलवी ने अपने रिसालए मुबारका “अल्-इतिबाह फी हल्लि निदाए या रसूलल्लाह” में तहरीर फरमाया है।

तीन भाई मुल्के शाम में रहते थे जो बड़े जरी और बहादुर थे, हमेशा अल्लाह की राह में जिहाद किया करते थे, रूमियों ने एक मर्तबा उनको गिरफ्तार कर लिया और अपन ईसाई बादशाह के सामने पेश किया, उसने कहा कि तुम लोग मज़हबे इस्लाम छोड़ दो और ईसाई बन जाओ, उन तीनों ने बयक ज़बान कहा कि यह हरगिज़ नहीं हो सकता।

बादशाह ने कहा اِنِّى اَعْمَلُ فِىْكُمْ الْمُلْكُ وَأَوْجِبُكُمْ بَنَاتِى यानी मैं तुम लोगों को सलतनत दूंगा और अपनी लड़कियों से शादी भी कर दूंगा, तुम लोग ईसाई हो जाओ, मगर मुजाहिदीन इस पर भी ईसाई बनने के लिये तैयार न हुए। बादशाह ने कहा अगर हमारी बात नहीं मानोगे तो क़त्ल कर दिये जाओगे, मुजाहिदीन ने कहा:

गुलामाने मुहम्मद जान देने से नहीं डरते

यह सर कट जाए या रह जाए कुछ परवा नहीं करते

बादशाह ने हुक्म दिया कि तीन देगों में जैतून का तेल खीलाया जाए, जब तैल खील गया तो मुजाहिदीन को उन देगों के पास लाया गया और कहा गया कि अगर ईसाई नहीं बनेंगे तो इसी खीलते हुए

तेल में डाल दिये जाओगे, अब भी मौका है खूब सोच लो, उन बहादुरों ने कहा कि हमारी आखिरी सांस का जवाब यही होगा कि हम जान तो दे सकते हैं मगर मुस्तफा का दिया हुआ ईमान नहीं दे सकते।

उन्होंने ने या मुहम्मदाह! पुकारा, फिर ईसाइयों ने बड़े भाई को तेल के खौलते हुए देग में डाल दिया, उस के बाद फिर बाकी दोनों भाईयों को समझाने की कोशिश की गई मगर आंखों से अपने भाई का यह अंजाम देखने के बावजूद उन के अन्दर कुछ फर्क पैदा नहीं हुआ, वह अब भी खुशी के साथ अल्लाह की राह में शहीद होने के लिये तैयार रहे, आखिर मंझले भाई को भी खौलते हुए तेल में डाल दिया गया।

छोटे भाई की उभरती जवानी देख कर वजीर ने बादशाह से कहा कि इसे हमारे सुपुर्द कर दीजिये, हम एक तरकीब से निहायत आसानी के साथ इस को ईसाई बना लेंगे, बादशाह ने उनको वजीर के सुपुर्द कर दिया, वजीर ने उन्हें एक मकान में बन्द कर दिया और अपनी हसीन लड़की को उन्हें बहकाने के लिये मुकर्रर किया, रात के वक्त लड़की दाखिल हुई, वह मर्दे मुजाहिद रात भर नफल नमाजें पढ़ता रहा और हसीना की तरफ नज़र उठा कर भी न देखा और कैसे देखता, जिन निगाहों में हुस्ने मुस्तफा बस चुका हो वह निगाहें भला किसी और की तरफ कैसे उठ सकती हैं।

दर पर आँख न डाले कभी शैदा तेरा

सब से बेगाना है ऐ प्यारे शनासा तेरा

लड़की के लिये यह मन्ज़र बड़ा ही अजीब था कि जिस की एक झलक देखने के लिये दुनियाय बेताब है, यह जवान उस को एक नज़र भी देखने के लिये तैयार नहीं। सुबह के वक्त वह नाकामी के साथ वापस आई और अपने बाप को बताया कि आज उस की इबादत की कोई रात थी, मगर इसी तरह चालीस रातें गुज़र गईं और वह मर्दे मुजाहिद उस की तरफ मुतवज्जह नहीं हुआ, आखिर में खुद वह लड़की मुतअस्सिर हो गई और कहा कि ऐ पाकबाज़ नौजवान तू किस का शैदाई और फिदाई है कि मेरी तरफ निगाह उठा कर भी नहीं देखता।

फरमाया:

मैं मुस्तफा के जामे मुहब्बत का मस्त हूँ
ये वो नशा नहीं जिसे तुरशी उतार दे

लड़की सिदक दिल से **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ** पढ़ कर मुसलमान हो गई और अस्तबल से दो घोड़े लाई, रात ही में दोनों वहां से फरार हो गए और अभी ज्यादा दूर नहीं पहुंचे थे कि पीछे से घोड़ों के आने की आहट मालूम हुई और जल्द ही वह करीब आ गए, देखा तो नौजवान के वही दोनों भाई हैं जो खौलते हुए तेल में डाले गए थे, साथ में फिरिशतों का एक गिरोह भी था, नौजवान मुजाहिद ने हाल पूछा तो उन लोगों ने बताया कि **يَا مَعْشَرَ الْإِسْلَامِ الْغَطْسَةُ الَّتِي رَأَيْتُمْ حَتَّى عَمَّخْنَا فِي الْفِرْدَوْسِ** यानी बस वही तेल का एक गोता था जो तुम ने देखा उस के बाद हम जन्नतुल फिरदौस में पहुंच गए, फिर दोनों भाइयों ने फिरिशतों की मौजूदगी में उस लड़की का निकाह अपने भाई से कर दिया और वापस चले गए।

ज़िंदा हो जाते हैं जो मरते हैं हक के नाम पर

अल्लाह, अल्लाह मौत को किस ने मसीहा कर दिया

इस वाकिआ से जहां यह साबित हुआ कि अल्लाह की राह में कुर्बान होने वाले शहीद मरते नहीं हैं बल्कि ज़िंदा हो जाते हैं साथ ही यह भी मालूम हुआ कि मदद के लिये या रसूलल्लाह पुकारना जाइज़ है कि मुजाहिदीन ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम को पुकारा था अगर दूर से पुकारना शिर्क होता तो उन्हें जन्नतुल फिरदौस में जगह न मिलती और न छोटे भाई की शादी में फिरिशतों की शिर्कत होती।

صلى الله على النبي الامي واله صلى الله تعالى عليه وسلم

صلاة وسلاماً عليك يا رسول الله

सल्लल्लाहु अलन्नबिबियिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तअ़ाला अलैहि
व सल्लम, सलातं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

मुहब्बत वाले

शहीदों के अलावा दूसरे लोग जो अल्लाह व रसूल से सच्ची मुहब्बत रखने वाले हैं, मरने के बाद वह भी ज़िंदा रहते हैं।

1933 ई0 का वाकिआ है कि इराक़ पर हुक्मरानी के ज़माने में शाह फैसल अव्वल को हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के जलीलुल कद्र सहाबी हज़रत हुजैफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़्वाब में ज़ियारत हुई, उसी हालत में शाह फैसल से फरमाया कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का सहाबी हुजैफा हूँ, मुझे और हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह को अपनी अपनी क़ब्रों में बेइन्तिहा तक्लीफ़ पहुंच रही है, हम दोनों को मौजूदा क़ब्रों से निकाल कर दरियाए दजला के कुछ फासिले पर दफन किया जाए, मेरी क़ब्र में पानी आ रहा है और जाबिर की क़ब्र में बहुत ज़्यादा नमी आ गई है।

शाह फैसल बेदार हुआ तो हुक्मत के कामों में इस तरह मसरूफ़ हो गया कि वह रात के ख़्वाब की हिदायत बिल्कुल ही भूल गया। दूसरी रात में हज़रत हुजैफा ने फिर उसी तरह हिदायत फरमाई, मगर उस ज़माने में मुल्की और सियासी मामलात में इस क़द्र पेचीदगी पैदा हो गई थी कि शाह फैसल जल्द मुक़द्दस ज़िस्मों को नई क़ब्रों में मुन्तक़िल न कर सके, उस के बाद हज़रत हुजैफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ख़्वाब में इराक़ के मुफ़्तए आज़म को इस तरफ़ तवज्जोह दिलाई और बताया कि वह दो बार शाह फैसल को भी इस के लिये हिदायत कर चुके हैं मगर अभी तक इस पर अमल नहीं हुआ, इस लिये तुम शाह फैसल के पास जा कर कहो कि उन की राय से हमारे ज़िस्मों को मुनासिब मक़ाम पर मुन्तक़िल किये जाने का इन्तेज़ाम करो।

दूसरे दिन सुबह बेदार होते ही मुफ़्तए आज़म नूरी अस्सईद पहले वज़ीरे आज़म इराक़ के पास पहुंचे और उन को अपने साथ लेकर शाह फैसल के सामने बयान किया, शाह फैसल ने उन की ताईद की और

कहा कि बेशक मुसलसल दो रात मुझे इस की हिदायत की गई है मगर मैं अब तक कुछ तो सियासी उलझनों और कुछ मज़हबी पाबंदियों के सबब इस की तरफ तवज्जोह न कर सका, उस के बाद मुफ्तिए आजम से कहा गया कि अगर आप इस के मुतअल्लिक़ फत्वा सादिर करें तो मैं फौरन इन हज़राते सहाबा के जिस्मों को मुनासिब मक़ाम पर दफन कराके मज़ार तामीर करने का मुकम्मल इन्तेज़ाम कर दूंगा।

मुफ्तिए आजम ने अपनी आंखों से उन क़ब्रों को देखा, दर हकीक़त क़ब्रों तक दरियाए दजला का पानी पहुंच चुका था और यह अदेशा पैदा हो गया था कि अगर इन मुक़तद्र सहाबए किराम के जिस्मों को जल्द ही दूसरी जगह मुन्तक़िल न किया गया तो मुम्किन है कुछ दिनों बाद दरियाए दजला का सैलाब इन को बहा ले जाए, इस अदेशे के पेशे नज़र मुफ्तिए आजम ने सहाबए किराम के जिस्मों को दूसरे मक़ाम पर दफन करने का फत्वा दे दिया और अख़्बारात के ज़रिये इस का ऐलान भी हो गया कि ख़ास ईदुल अज़्हा के दिन बाद नमाज़े जुहर मज़क़ूरा सहाबियों की क़ब्रें खोली जायेंगी और उनके बा बरकत जिस्मों को एक दूसरी जगह पर दफन कर दिया जाएगा।

अख़्बारात में ऐलान छपते ही यह ख़बर पूरी दुनियाए अरब में फैल गई, हज का ज़माना था, दुनिया के चारों तरफ से तौहीद व रिसालत के परवाने फरीज़ए हज की अदाइगी और ज़ियारत रौज़ए अनवर की गरज़ से मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना तैय्यिबा में हाज़िर थे लेकिन चूंकि ख़ास ईदुल अज़्हा के दिन सहाबा के जिस्मों को मुन्तक़िल किया जाने वाला था इस लिये जो लोग हज करने गए थे वह इस मौक़े पर शर्फ़ अंदोज़ नहीं हो सकते थे। तो शाहे इराक़ से दरख़्वास्त की गई कि इन दोनों सहाबियों की क़ब्रों से उन के जिस्मों को उस वक़्त निकाला जाए जब हज का ज़माना गुज़र जाए ताकि तमाम मुल्कों के मुसलमान इस सज़ादत में हिस्सा ले सकें।

शाह ने तारीख़ की तब्दीली की मंजूरी कर ली और यह ऐलान कर

दिया गया कि मुकद्दस जिस्मों को मुन्तकिल करने का काम 20 जिल्-हिज्जा को अंजाम दिया जाएगा और साथ ही ऐसा इन्तिजाम कर दिया गया कि दरियाए दजला का पानी उन कब्रों को कोई मज्जीद नुकसान न पहुंचा सके। हस्बे ऐलान 20 जिल्-हिज्जा की सुबह ही की लाखों मुसलमानों का अजीमुश्-शान इज्तिमाअ इस सहाबए किराम रजियल्लाहु तआला अन्हुमु की कब्रों के गिर्द हो गया। उन तमाम मुसलमानों की मौजूदगी में जब दोनों सहाबियों की कब्रें खोली गईं तो वाकई हज़रत हुजैफा रजियल्लाहु तआला अन्हु की कब्र शरीफ में पानी आ रहा था और हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजियल्लाहु तआला अन्हु के मज़ारे मुबारक में भी गैर मामूली नमी देखी गई।

जब कब्रों से मुकद्दस जिस्म निकाले गए तो लोगों ने देखा कि तेरह सौ साल की लम्बी मुद्दत गुज़र जाने के बा वजूद भी जिस्म बिल्कुल तरी-ताज़ा हैं और अजीब व गरीब खुशबू से महक रहे हैं। ऐसा मालूम होता था कि इन बुजुर्गों को विसाल फरमाए हुए शायद मुश्किल से चन्द घन्टे हुए होंगे। उनके चेहरों पर ऐसा नूर फैला हुआ था कि देखने से कल्बो-नज़र को सुख हासिल होता था और उन पर नज़र नहीं ठहर सकती थी यहाँ तक कि कफन का कपड़ा भी बिल्कुल ताज़ा मालूम होता था और रीशे मुबारक (दाढ़ी) के बाल बिल्कुल सलामत थे।

और एक बात यह भी निहायत अजीब हुई कि हज़रत हुजैफा रजियल्लाहु तआला अन्हु के जिस्मे मुबारक को उठाने के लिये स्त्रीचर का सामने लाया गया तो किसी को हाथ लगाने की ज़रूरत पेश नहीं आई बल्कि वह खुद बखुद स्त्रीचर पर आ गया और हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजियल्लाहु तआला अन्हु का जिस्मे अक्दस भी ऐसे ही आ गया, हाथ लगाने की ज़रूरत नहीं हुई। इन दोनों जिस्मों को उस के बाद दो शीशे ताबूतों में रख दिया गया और फिर बड़ी ऐहतियात के साथ नए मज़ारात में दफन कर दिया गया।

इस मौके पर शाह फैसल अव्वल, मुफ्तिए आजम, वज़ीर आजम

और दूसरे मुल्कों के बड़े-बड़े उमरा व सुफरा भी मौजूद थे। जब यह वाकिआ अख्बारात के सफहात पर आया तो सारी दुनिया को यह हकीकत तस्लीम करनी पड़ी कि अल्लाह के महबूब बन्दे बादे विसाल भी जिंदा रहते हैं।

आसी शहीदे इश्क हूँ मुर्दा न जानियो
मर कर मिली है जिंदगिए जाविदां मुझे

صلی اللہ علی النبی الامی والہ صلی اللہ تعالیٰ علیہ وسلم

صلاة وسلاماً عليك يا رسول الله

सल्लल्लाहु अलन्नबियिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तआला अलैहि
व सल्लम, सलातव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।



विसाल रसूले अकरम

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम

الحمد لله رب العالمين، والصلاة والسلام على سيد المرسلين وعلى آله واصحابه اجمعين۔ اما بعد فقد قال الله تعالى في القرآن المجيد والفرقان الحميد اعوذ بالله من الشيطان الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم - وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ أَفَإِنْ مَاتَ أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلَى أَعْقَابِكُمْ وَمَنْ يَنْقَلِبْ عَلَى عَقْبِهِ فَلَنْ يَضُرَّ اللَّهَ شَيْئًا وَسَيَجْزِي اللَّهُ الشَّاكِرِينَ ٥ (پ: ٤، ع: ٦)

صدق الله العلي العظيم وصدق رسوله النبي الكريم ونحن على ذلك لمن الشاهدين والشاكرين والحمد لله رب العلمين۔

एक बार आप तमाम हज़रात सारी काइनात के आका व मौला जनाब अहमदे मुज्जबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बारगाहे बेकस पनाह में बुलंद आवाज़ से दुरुद शरीफ का नज़्नाना और हदिया पेश करें।

صلى الله على النبي الامى واله صلى الله تعالى عليه وسلم صلاة وسلاماً عليك يا رسول الله

सल्लल्लाहु अलन्नबियिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम, सलातुव व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

जब कोई शख्स किसी मक्सद और किसी गर्ज से अपना मर्कज़ छोड़ कर दूसरे मकाम पर जाता है तो मक्सद पूरा हो जाने और मतलब हल हो जाने के बाद वह अपने मर्कज़े अस्ती की तरफ वापस हो जाता है हमारे और आप के प्यारे नबी जनाब अहमदे मुज्जबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दुनिया में तशरीफ लाने का मक्सद था दीने इस्लाम के अहकाम खुदा के बन्दों तक पहुंचाना और उन को तौहीद परस्त बना कर उन के नुफूस को मुकम्मल तज्किया फरमाना।

जब आप का मक्सद पूरा हो गया और खुदाए अज्ज़ व जल्ल ने आयते करीमा **الْيَوْمَ اكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ** (पारा: 6, रूकूअ: 5) नाज़िल फरमा कर

आप के दीन के कामिल होने की खुशखबरी सुनाई और अपनी नेअ्मतें आप पर पूरी फरमा दीं तो आप को अपने मर्कजे अस्ती मकामे कुदस की तरफ जाने का वक़्त करीब आ गया, जिस का इल्म आप को बहुत पहले से था इसी लिये हज्जतुल विदाअ के मौके पर आप ने लोगों से फरमाया कि “शायद इस के बाद मैं तुम्हारे साथ हज न कर सकूँ।”

मिशकात शरीफ में हैं हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हमा फरमाते हैं कि जब सूरए इज़ा जाअ नस्रल्लाहि नाज़िल हुई तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपनी लख्ते जिगर, नूरे नज़र साहिबज़ादी हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को बुलाया और उन से फरमाया: نُوْعِتْ إِلَى نَفْسِي यानी मुझ को मेरे सफरे आखिरत की ख़बर दी गई है। यह सुन कर हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा रोने लगीं हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया لَا يَكُنْ فَاكِئًا أَوْ لَا حَيْثُ لَا حَيْثُ بَيَّ यानी ऐ फातिमा! रोओ नहीं, मेरे अहले बैत में तुम ही सब से पहले मुझ से मुलाकात करोगी। यह सुन कर हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा हंसने लगीं। यह देख कर अज़ाजे मुतहहरात में से बाज़ बीवियों ने हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से दर्याफ्त किया कि पहले हम ने आप को रोते देखा और फिर हंसते देखा, इस का मतलब क्या है? हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने कहा कि हुज़ूर ने मुझ को बताया कि आप को आप के सफरे आखिरत की ख़बर दी गई है। यह सुन कर मैं रोने लगी। आप ने फरमाया रोओ नहीं, मेरे अहले बैत में सब से पहले तू ही मुझ से मिलेगीं यह सुन कर मैं हंसने लगी।

दारमी शरीफ की हदीस है, हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अपनी उस अलालत में कि जिस में आप ने विसाल फरमाया घर से बाहर तशरीफ लाए इस हाल में कि अपने सर पर कपड़ा बांधे हुए थे, हम लोग उस वक़्त मस्जिद में थे, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला

अलैहि व सल्लम मस्जिद में दाखिल हो कर मिम्बर की तरफ तशरीफ ले गए और उस पर रौनक अफरोज़ हुए। फिर आप ने एक खुल्वा दिया और फरमाया: **وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنِّي لَأَنْظُرُ إِلَى الْحَوْضِ مِنْ مَقَامِي هَذَا** यानी कसम है उस ज़ात की जिस के कब्ज़ए कुद़त में मेरी जान है कि मैं इस मिम्बर पर बैठे हुए होज़े कौसर को देख रहा हूँ। फिर फरमाया: खुदा का एक बन्दा है जिस के सामने दुनिया व आखिरत की जीनत पेश की गई मगर उस ने आखिरत को इख्तियार कर लिया।

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि हुज़ूर के इस इरशाद को हज़रत अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अलावा और कोई नहीं समझ सका। उन की आंखों से आंसू जारी हो गए और वह रो पड़े और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम अपने मां-बाप के साथ आप पर कुर्बान हो जाएं। सहाबए किराम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की इस बात को सुनकर बहुत मुतअज्जिब हुए कि वह ऐसा क्यों फरमा रहे हैं, यहां तक कि बाज़ लोगों ने कहा कि इस बूढ़े को देखो, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तो एक बन्दे का हाल बयान फरमा रहे हैं कि जिस को खुदाए अज़्ज़ व जल्ल ने दुनिया की तरो-ताज़गी और आखिरत के दरमियान इख्तियार दिया है। और वह यह कह रहे हैं कि हम और हमारे मां-बाप आप पर कुर्बान हो जाएं, लेकिन राज़दारे नुबुव्वत फौरन समझ गया था कि वह बन्दा खुद हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हैं।

अस्दकुस-सादिकीन सैय्यिदुल मुत्तकीन

राज़दारे नुबुव्वत पे लाखों सलाम

☆☆☆

शुहदाए उहुद को अपनी ज़ियारत से

मुशर्रफ़ फरमाया

बुखारी और मुस्लिम में हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने शुहदाए उहुद पर आठ बरस के बाद नमाज़े जनाज़ा पढ़ी। “हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि मिर्क़ात में फरमाते हैं कि यह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम या शुहदाए उहुद की खुसूसियात में से है कि आप ने आठ बरस के बाद उनपर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी” गोया आप ज़िंदों और मुर्दों को रुख़सत फरमा रहे हैं। शुहदाए उहुद को अपनी ज़ियारत से मुशर्रफ़ फरमाने के बाद लौटे तो मिम्बर पर रौनक़ अपरोज़ हुए और फरमाया: मैं तुम से पहले जा रहा हूँ, मैं तुम लोगों के दअ्वते इस्लाम के कबूल करने और इताअत व फरमां बरदारी के बजा लाने पर गवाह हूँ। और तुम से हमारी मुलाक़ात का मक़ाम हैज़े कौसर है। और मैं इस जगह से हैज़े कौसर को देख रहा हूँ। और फरमाया: *يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنِّي فَعَلْتُ لَكُمْ مَنَافِعَ عَظِيمًا فِي الْأَرْضِ* यानी नी बेशक मुझ को ज़मीन के खज़ानों की कुजियां दी गई हैं।

आखिरी वसिय्यत

हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि तआलीर फरमाते हैं कि सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बुला कर फरमाया कि ऐ बिलाल! जाकर ऐलान कर दो कि सब लोग मस्जिद में जमा हो जाएं, मैं उन को वसिय्यत करूंगा और कह दो कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की यह आखिरी वसिय्यत होगी, जब हज़रते बिलाल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मदीना शरीफ़ के बाज़ारों और गलियों में ऐलान किया कि रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की आखिरी वसियत सुनने के लिय मस्जिदे नबवी में सब लोग जमा हो हाज़िर हो जाएं। तो इस ऐलान को सुन कर लोग इस कद्र घबरा गए कि दुकानों और घरों को ऐसे ही खुले हुए छोड़ कर मस्जिद में हाज़िर हो गए। और इतने लोग जमा हुए कि मस्जिदे नबवी में गुंजाइश न रही। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मिम्बर शरीफ पर रौनक अफ़रोज़ हुए और तवील खुत्बा फरमाया जो वक्त और हाल के मुनासिब नसीहत और अहकामे शरअ पर मुश्तमिल था। और फरमाया कि ऐ लोगो! मेरा सफ़रे आखिरत करीब है, जान व माल और सामान वगैरा का कोई भी हक किसी शख्स का मुझ पर हो तो उसका बदला मुझ से ले ले।

(मदारिजुन् नुबुव्वत)

नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का यह ऐलान इस लिये था ताकि हुकूकुल इबाद की अहमियत व ज़रूरत उन की उम्मत पर अच्छी तरह वाज़ेह हो जाए और वह एक दूसरे के हुकूक की पामाली से हमेशा दूर रहे।

हुकूक की तफ़सील

बिरादराने मिल्लत! हुकूक की दो किस्में हैं: एक हुकूकुल्लाह दूसरे हुकूकुल इबाद। फिर हुकूकुल्लाह की दो किस्में हैं। एक वह कि अगर उन के बारे में बन्दा से कुसूर वाक़ेअ हुआ, तो वह सिर्फ़ तौबा से माफ़ हो सकते हैं जैसे कि शहर में जुमा और इदैन की नमाज़ छूट जाने के गुनाह, या शराब पीने और नाच वगैरा देखने के गुनाह। और दूसरे वह जो सिर्फ़ तौबा से नहीं माफ़ हो सकते जैसे नमाज़ न पढ़ने, रोज़ा न रखने, ज़कात व फित्रा न अदा करने और हज व कुर्बानी वगैरा न करने के गुनाह कि इनके माफ़ होने की सूरत सिर्फ़ तौबा नहीं है बल्कि छूटी हुई नमाज़ों और रोज़ों की क़ज़ा करे, जितने सालों की ज़कात और फित्रा न दिया हो अब अदा करे, साहिबे निसाब होकर जितने साल

कुर्बानी न की हो हर साल के बदले एक बकरा की कीमत सदका करे, खुद हज न कर सकता हो तो हज्जे बदल कराए। माल न रह गया हो तो हज्जे बदल कराने की वसियत करे और तौबा करे तो माफ हो सकते हैं। यानी तौबा के साथ उन की अदाइगी भी जरूरी है कि यह चीजें सिर्फ तौबा से नहीं माफ हो सकतीं।

और रहे हुक्कुल इबाद यानी बन्दों के हुक्कू तो वह हुक्कुल्लाह की दूसरी किस्म से भी अहम हैं। इस लिये कि खुदाए तआला अहमुर राहिमीन है अगर वह चाहे तो अपने हर किस्म के हुक्कू माफ कर दे लेकिन वह किसी बन्दे का हक हरगिज नहीं माफ करेगा जब तक कि वह बन्दा न माफ कर दे कि जिस की हक तत्फी की गई है। इसी लिये सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने आखिरी वसियत में खास तौर पर इस की अहमियत को ज़ाहिर फरमाया। और ज़मानए सेहत में भी हमेशा इस की ताकीद फरमाते रहे। मिश्कात शरीफ की हदीस है हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सहाबए किराम से दर्याफ्त फरमाया: **اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ** यानी क्या तुम लोग जानते हो कि मुफ़्लिस और कंगाल कौन है? सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! हम में मुफ़्लिस वह शख्स है कि जिस के पास न पैसे हों और न सामान। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मेरी उम्मत में दरअसल मुफ़्लिस वह शख्स है कि जो कियामत के दिन नमाज़, रोज़ा और ज़कात वगैरा लेकर इस हाल में आएगा कि उस ने किसी को गाली दी होगी, किसी पर तोहमत लगाई होगी, किसी का माल खा लिया होगा, किसी का खून बहाया होगा और किसी को मारा होगा। तो अब उन लोगों को राज़ी करने के लिये उस शख्स की नेकियां उन मज़्लूमों के दरमियान तक्सीम की जाएंगी। अगर उस की नेकियां ख़त्म हो जाने के बाद भी लोगों के हुक्कू उस पर बाकी रह जाएंगे तो अब हकदारों के मुनाह लाद दिये जायेंगे यहां तक कि उसे

दोजख में फेंक दिया जाएगा। العباد بالله تعالى अल-इयाजु बिल्लाहि तआला

बेशक मेरे सरकार ने सहीह फरमाया, हकीकत में मुफ्लिस और गरीब वही शख्स है कि जिस के पास कियामत के दिन नेकियां नहीं होंगी। या वह बहुत सी नेकियां लेकर आएगा मगर हुकूकुल इबाद में गिरफ्तार होगा। मां-बाप को सताया होगा, पड़ोसी को तक्लीफ दी होगी। भाई का हक मार लिया होगा। मां-बाप के मरने पर बहन का हक नहीं दिया होगा या दादा के इन्तेकाल पर फूफी का हक ग़सब कर लिया होगा। तो कियामत के दिन उस की सारी नेकियां उन लोगों को दे दी जायेंगी जिस की उस ने हक तल्फी की होगी, यहां तक कि उस के पास कोई नेकी नहीं रह जाएगी। तो हकीकत में गरीब वही शख्स है, इस लिये कि दुनिया का गरीब अगर उस के पास खाना न हो तो मांगने से कहीं मिल जाएगा, कपड़ा न हो तो वह भी कहीं से पा जाएगा। सर्दी में रज़ाई या कम्बल न हो तो किसी का रहम आ जाएगा वह भी हासिल हो जाएगा और रहने के लिये घर न हो तो सर छुपाने के लिये कहीं कोई जगह मिल ही जाएगी, लेकिन कियामत के दिन जब नेकियां नहीं होंगी तो वह कहीं से नहीं मिलेंगी। पारा:21, रुकूअ:13 में इरशादे खुदा वन्दी है: يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمۡ وَاصْبِرُوۡا يَوْمًا لَا يَجۡزِیْ وَالِدٌ عَنْ وَلَدِهِ وَرَجُلٌ عَنْ اٰمِلَةٍ شَيْۤئًا يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمۡ وَاصْبِرُوۡا يَوْمًا لَا يَجۡزِیْ وَالِدٌ عَنْ وَلَدِهِ وَرَجُلٌ عَنْ اٰمِلَةٍ شَيْۤئًا यानी ऐ लोगो! अपने रब से डरो, और उस दिन का खौफ करो जिस में कोई बाप अपने बच्चे के काम न आएगा और न कोई काम वाला बच्चा अपने बाप को कुछ फायदा पहुंचाएगा। और पारए 30 सूरए अबस में इरशादे रब्बे जुल-जलाल है: يَوْمَ يُنفَخُ الصُّرُۡمُ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوا رَبَّكُمۡ وَاصْبِرُوۡا يَوْمًا لَا يَجۡزِیْ وَالِدٌ عَنْ وَلَدِهِ وَرَجُلٌ عَنْ اٰمِلَةٍ شَيْۤئًا यानी कियामत का दिन वह हवलनाक दिन होगा कि आदमी अपने भाई से भगेगा, अपने मां-बाप से भागेगा यहां तक कि अपनी बीवी और बेटों से भी राहे फरार इख्तियार करेगा। उन में से हर एक को उस दिन अपनी नजात की एक फिक्र होगी कि वही उस के लिये बस होगी। मतलब यह है कि कोई किसी की मदद करने और नेकी देने को तैयार न होगा। तो

हकीकत में गरीब वही शख्स है कि जिस के पास कियामत के दिन नेकियां न रहेंगी।
(दुरुद शरीफ)

बाज़ लोग इस ग़लत फ़हमी में मुब्तला हैं कि हज करने से छोटा बड़ा सारा गुनाह माफ हो जाता है, ज़िंदगी भर नमाज़ नहीं पढ़ते, रोज़ा नहीं रखते, ज़कात नहीं देते, दूसरों की ज़मीनों, दुकानों और जायदादों पर ना जाइज़ क़बज़ा कर लेते हैं, ग़लत कामों में पूरी ज़िंदगी गुज़ारते हैं और जब देखते हैं कि मरने का वक़्त आ गया तो हज कर लेते हैं और समझते हैं कि सारा गुनाह माफ हो गया और हम ऐसे हो गए जैसे कि अभी मां के पेट से पैदा हुए हों।

तो ऐ मुसलमानों! आला हज़रत पेशवाए अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपने रिसालए मुबारका अज़्जबुल इमदाद में इस मस्अले की नफीस तहकीक़ फरमाई जिस का खुलासा हम आप के सामने पेश करते हैं ताकि हज से गुनाहों की माफी का मस्अला अच्छी तरह वाज़ेह हो जाए।

वह फरमाते हैं कि जिस ने पाक माल, पाक कमाई, पाक नियत से हज किया और उस में लड़ाई झगड़ा नीज़ हर किस्म के गुनाह और ना फरमानी से बचा फिर हज के बाद फौरन मर गया, इतनी मोहलत न मिली कि जो हुक्कुल्लाह या हुक्कुल इबाद उस के ज़िम्मे थे उन्हें अदा करता या अदा करने की फिक्र करता तो हज क़बूल होने की सूरत में उम्मीदे क़वी है कि अल्लाह तआला अपने तमाम हुक्क़ को माफ़ फरमा दे और हुक्कुल इबाद को अपने ज़िम्माए करम पर लेकर हक़ वालों को कियामत के दिन राज़ी करे और खुसूमत से नजात बख़्शे।

और अगर हज के बाद ज़िंदा रहा और हत्तल इम्कान हुक्क़ का तदारुक़ कर लिया, यानी सालहाए गुज़िश्ता मा बक़िया ज़कात अदा कर दी, छूटी हुई नमाज़ और रोज़े की कज़ा की, जिस का हक़ मार लिया था उस को या मरने के बाद उसके वारिसीन के दे दिया, जिसे तक्लीफ़ पहुंचाई थी ग़फ़ करा लिया, जो साहिबे हक़ न रहा उस की तरफ से

सदका कर दिया। अगर हुक्कुल्लाह और हुक्कुल इबाद में से अदा करते करते कुछ रह गया तो मौत के वक़्त अपने माल में से उन की अदाइगी की वसियत कर गया। खुलासा यह कि हुक्कुल्लाह और हुक्कुल इबाद से छुटकारे हर मुम्किन कोशिश की तो उस के लिये बख़्शिश की और ज़्यादा उम्मीद है। हां अगर हज के बाद कुद़त होने के बावजूद इन उमूर से गुफ़लत बरती, इन्हें अदा न किया, तो यह सब गुनाह अज़ सरे नौ उस के ज़िम्मे होंगे, इस लिये कि हुक्कुल्लाह और हुक्कुल इबाद तो बाकी ही थे, उन की अदाइगी में ताख़ीर करना फिर ताज़ा गुनाह हुआ जिस के इज़ाले के लिये वह हज काफी न होगा, इस लिये कि हज गुज़रे हुए गुनाहों यानी वक़्त पर नमाज़ और रोज़ा वग़ैरा अदा न करने की तक्सीर धोता है। हज से क़ज़ा शुदा नमाज़ और रोज़ा हरगिज़ नहीं माफ़ होते और न आइन्दा के लिये परवानए आज़ादी मिलता है। انتهى كلامه

और हज़रत अल्लामा इब्ने आबिदीन शामी रहमतुल्लाहि अलैह इस मसअले पर बहस करने के बाद तहरीर फरमाते हैं। खुलाए कलाम यह है कि क़र्ज़ की अदाइगी में देर लगाना और नमाज़ व ज़कात वग़ैरा को अदा करने में ताख़ीर करना चूँकि यह हुक्कुल्लाह में से हैं इस लिये फ़क़त ताख़ीर का गुनाह जो माज़ी में हो चुका वह माफ़ हो जाएगा लेकिन असल क़र्ज़ और नमाज़ व ज़कात वग़ैरा फ़राइज़ की अदाइगी में जो आइन्दा ताख़ीर होगी वह माफ़ नहीं होगी। अल्लामा शामी बहरुर राइक के हवाले से लिखते हैं कि हज जो गुनाहों का कफ़फ़ारा हो जाता है, उस का यह मतलब नहीं है कि क़र्ज़ की अदाइगी और सौम व सलात की क़ज़ा उसके ज़िम्मे से साफ़ित हो जाती है जैसा कि बहुत से लोगों का वहम है, इस लिये कि उम्मत में से कोई भी इस का काइल नहीं है। फिर अल्लामा शामी तहरीर फरमाते हैं कि तो यकीन के साथ नहीं कहा जा सकता कि हज उन कबीरा गुनाहों का कफ़फ़ारा हो जाता है जो हुक्कुल्लाह हैं तो फिर भला हुक्कुल इबाद का कफ़फ़ारा क्यों कर

ये सकता है?

दुआ है कि खुदाए अज्ज व जल्ल हम सब को पूरे-पूरे हुक्कुल्लाह और हुक्कुल इबाद अदा करने की तौफीके रकीक बख्शे। और दुनिया व आखिरमत में हमें मुफिलसी के अज़ाब से महफूज रखे। आमीन

(दुरुद शरीफ)

शेख मोहम्मद लिखते हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने आखिरी वसियत के खुत्वे में यह भी फरमाया कि ऐ लोगो! जिस शख्स पर कोई हक हो उसे चाहिये कि वह अदा करे और यह ख्याल न करे कि रुस्वाई होगी इस लिये कि दुनिया की रुस्वाई आखिरत की रुस्वाई से बहुत आसान है। आप के इस ऐलान पर एक सहाबी उठे और उन्होंने ने अर्ज किया या रसूलल्लाह! हम ने माले गनीमत में ख्यानत की थी और उस में से तीन दिरम ले लिया था, हुजूर ने उन से दरियाफ्त फरमाया कि किस चीज़ ने तुम को ख्यानत करने पर मजबूर किया, उन्होंने ने अर्ज किया या रसूलल्लाह! मुझे तीन दिरम की ज़रूरत थी, हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रते फज़ल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हुक्म फरमाया कि इन से तीन दिरम ले लो।

(मदारिजुन् नुबुव्वत)

कितने अच्छे थे वह कि उन्होंने ने आखिरत की रुस्वाई से बचने के लिये भरे मजमे में दुनिया की रुस्वाई इख्तियार की, अपनी ख्यानत का ऐलान कर दिया और आखिरत की रुस्वाई से बचने के लिये दुनिया की रुस्वाई में कोई आर नहीं महसूस की। दुआ है कि खुदाए जुल जलाल हम सब को हुजूर और उनके सहाबा के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफीक़ मरहमत फरमाए और आखिरत की रुस्वाई से बचने का पूरा जज़्बा नसीब फरमाए। आमीन (दुरुद शरीफ)

अलालत की इब्तिदा

हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के मरजे वफ़ात की कब इब्तिदा हुई? इस के बारे में लोगों ने इख़्तिलाफ़ किया है। हज़रत शेख़

अब्दुल हक मोहम्मिसे देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि तहरीर फरमाते हैं कि जब माहे सफर के खत्म होने में एक या दो रोज बाकी रह गए थे तब अलालत की इत्तिदा हुई, यानी सर में दर्द पैदा हुआ। और हज़रत सुलैमान तैमी जोकि सिकह (मौअत्बर) लोगों में से हैं उन्होंने ने इस बात पर जज़्म किया है कि 22 सफर को मिजाज़े मुबारक नासाज़ हुआ।

(अशतुल् लमआत)

मिजाज़े अक्दस की नासाज़ी के ज़माने में आप पांच दिन तक अज़ राहे अद्ल बारी-बारी एक-एक जौजए मोहतरमा के हुज़रे में तशरीफ ले जाते रहे, जब मरज़ में बहुत शिद्दत पैदा हो गई तो अज़्याजे मुतद्हरात की इजाज़त से हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के हुज़रए मुबारका में कियाम फरमाया और जब तक ताकत रही आप खुद ही मस्जिदे नबवी में नमाज़ें पढ़ाने के लिये तशरीफ लाते रहे।

बुखारी व मुस्लिम की हदीस है हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के मरज़ ने जब ग़लबा किया तो आप ने फरमाया: **سُورَةُ الْبَقَرَةِ تَكْفُلُ بِالنَّاسِ** यानी अबू बकर से कहो कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाए। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! वह नर्म दिल आदमी हैं, आपकी जगह खड़े होकर नमाज़ नहीं पढ़ा सकेंगे, दोबारा फरमाया: अबू बकर से कहो कि वह नमाज़ पढ़ाए, हज़रत सिद्दीका ने फिर वही उज़्र पेश किया तो हुज़ूर ने तीसरी बार वही हुक्म बताकीद फरमाया तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने नमाज़ पढ़ाई। हुज़ूर की हयाते जाहिरी में उन्होंने ने कुल 17 नमाज़ें पढ़ाई। उलमाए किराम फरमाते हैं कि इस हदीस में बहुत वाजेह दलालत है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुतलकन तमाम सहाबा से अफज़ल और ख़िलाफत व इमामत के सब से ज़्यादा हकदार हैं।

हदीसे किरतास

बुखारी व मुस्लिम में है कि वफात से चार दिन पहले जुमेरात को जब सरकार अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का दर्द बहुत बढ़ गया तो आप ने फरमाया कि मेरे पास शानह का हड्डी लाओ, मैं तुम्हारे लिये एक तहरीर लिख दूँ ताकि उस के बाद तुम न बहको तो सहाबा में इख़िलाफ हो गया, हज़रत उमर फारुक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि इस वक़्त हुज़ूर को बीमारी की तकलीफ़ ज्यादा है, तुम्हारे पास कुरआन है, वही अल्लाह की किताब तुम्हारे लिये काफी है। बाज़ लोग कहते थे कि हुज़ूर के पास लिखने का सामान रख दो। और कई लोगों ने कहा **مَا فَاانَ الْفَخْرَ اسْمُهُمْ** यानी हुज़ूर का क्या हाल है? क्या जुदाई का वक़्त करीब आ गया? आप से दरयाफ़्त करो। बाज़ सहाबा ने लिखने के बारे में आप से दरयाफ़्त करना शुरू किया तो ज़वाब में आप ने फरमाया कि मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो। इस लिये कि मैं जिस हालत में हूँ वह उस से बेहतर है कि जिस की तरफ़ तुम मुझे बुला रहे हो।

बाज़ लोगों का ख़याल है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ख़िलाफ़त का मामला लिखना चाहते थे मगर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के रोक देने से यह अहम मामला रह गया तो इस शुब्हा का जवाब यह है कि ख़िलाफ़त का मामला लिखना हरगिज़ मनज़ूर न था, इस लिये कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िलाफ़त के मुतअल्लिक़ हुज़ूर न उसी मेरज़ में इरादा फरमाया था जैसा कि मुस्लिम शरीफ़:2/273, में है कि हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से फरमाया कि अपने बाप अबू बकर और अपने भाई को बुलाओ ताकि मैं उन के लिये वसियत नामा लिख दूँ। इस लिये कि मैं डरता हूँ कि कोई आरज़ू करने वाला आरज़ू करे या कोई कहने वाला कहे कि मैं अफ़ज़ल हूँ, हालां कि खुदाए तआला और मोमिनीन अबू बकर के अलावा किसी को कबूल न करेंगे,

मगर ऐसा इरादा फरमाने के बाद फिर हज़रत उमर या किसी दूसरे की मुमानअत के बग़ैर हुज़ूर ने खुद बख़ुद लिखना मौकूफ कर दिया। और फिर अगर खिलाफ़त के लिये वसिय्यत ही करनी थी तो इस के लिये लिखना ज़रूरी न था बल्कि जो लोग हुज़रए मुबारका में मौजूद थे उन के सामने ज़बानी वसिय्यत कर देना ही काफी था।

नोट: इस मसअले के बारे में हमारा रिसाला “बागे फिदक और हदीसे किरतास” देखें। अमजदी

बुख़ारी और मुस्लिम में है कि एक दिन जुहर की नमाज़ के वक़्त आप को कुछ इफ़ाका हुआ तो आप खड़े हुए और हज़रत अब्बास व हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के सहारे मस्जिद में तशरीफ़ लाए, हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नमाज़ पढ़ा रहे थे, जब उन्होंने ने आप की आइट महसूस की तो पीछे हटने लगे, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उन्हें इशारा फरमाया कि न हटो, आप हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बाईं जानिब बैठ गए, यानी उन को अपने दाहिने किया और इस तरह आप ने बैठ कर नमाज़ पढ़ाई। आप को देख कर हज़रत अबू बकर, और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को देख कर दूसरे लोग नमाज़ के अर्कान अदा करते रहे। नमाज़ के बाद आप ने एक खुत्बा दिया जिस में आप ने सहाबए किराम को बहुत सी वसिय्यतें फरमाईं।

हदीस शरीफ़ में है जब कि आप की अलालत बहुत सख़्त हो चुकी थी आप को याद आया कि मेरी मिलकियत में 6-7 अशरफियां हैं, आप ने हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को हुक्म फरमाया कि इसे ख़ैरात कर दें मगर वह मशगूलियत के सबब ख़ैरात न कर सकीं। तो हुज़ूर ने खुद उन अशरफियों को मंगा कर ख़ैरात कर दिया और फरमाया कि अल्लाह का नबी खुदाए तआला से इस हाल में मिले कि अशरफियां उस के क़बज़े में हों तो यह मक़ामे नुबुव्वत के मनाफी है।

(अश्शतुल् लमआत)

मरज़ में कमी बेशी होती रहती थी। दोशंबा के रोज़ जिस दिन आप की वफात हुई, सुबह के वक़्त आप की तबीअत बज़ाहिर पुर सुकून थी मगर दिन जैसे जैसे बढ़ता जाता था आप पर बार-बार ग़शी तारी होती थी और फिर इफ़ाका हो जाता था।

बुख़ारी शरीफ में है हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं कि वफात से कुछ पहले मेरे सीने से टेक लगाए बैठे थे कि मेरे भाई अब्दुर रहमान बिन अबू बकर इस हाल में आए कि उन के हाथ में मिस्वाक थी, मैं ने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अब्दुर रहमान की तरफ देख रहे हैं, मैं जानती थी कि आप मिस्वाक को बहुत पसंद फरमाते हैं, मैं ने अर्ज़ किया, क्या मैं अब्दुर रहमान से आप के लिये मिस्वाक ले लूं, आप ने सर के इशारे से फरमाया कि हां ले लो, मैं ने अब्दुर रहमान से मिस्वाक लेकर आप को दे दी मगर आप को उस मिस्वाक को चबाना दुश्वार मालूम हुआ इस लिये कि वह सख़्त थी, मैं ने अर्ज़ किया क्या मैं इस मिस्वाक को नर्म कर दूं, आप ने इजाज़त दे दी, तो मैं ने मिस्वाक को नर्म कर दिया और आप ने उस को अपने दांतों पर फेरा। (दुरूद शरीफ)

आप के सफ़रे आख़िरत का वक़्त करीब आ रहा था। सांस की घर-घराहट सीने में महसूस होती थी। इसी दरमियान में लंबे मुबारक हिले तो लोगों ने यह अल्फाज़ सुने **الصلوة والسلام عليكم** यानी नमाज़ और गुलाम व बांदी।

मिशकात शरीफ में है कि वफात के दिन हज़रत जिब्रील अलैहिस् सलाम आए तो उन के साथ एक फिरिश्ता और था जो एक लाख फिरिश्तों का अप्सर था जिन में से हर एक फिरिश्ता एक-एक लाख फिरिश्तों का अप्सर था। उस फिरिश्ते ने हाज़िरी की इजाज़त तलब की, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने जिब्रील से उस के बारे में पूछा, हज़रत जिब्रील ने अर्ज़ किया कि यह मौत का फिरिश्ता है, हाज़िरी की इजाज़त चाहता है। और आज से पहले न तो इस ने

किसी से इजाजत तलब की है और न आइन्दा इस के बाद किसी आदमी से इजाजत तलब करेगा। आप ने फरमाया उस को बुला लो। तो हज़रत जिब्रील ने उसे बुला लिया, उस ने हाज़िर हो कर सलाम किया और फिर अर्ज किया या रसूलल्लाह!

खुदाए तआला ने मुझे आप की खिदमत में भेजा है, अगर आप हुक्म देंगे तो मैं आप की रूह को कब्ज़ करूंगा वरना छोड़ दूंगा, सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया क्या तू मेरी मरज़ी के मुताबिक अमल करेगा, मौत के फिरिश्ते ने अर्ज किया हां, मुझ को यही हुक्म दिया गया है कि जो कुछ आप फरमाएं उसी के मुताबिक अमल करूं। रावी का बयान है कि यह सुन कर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत जिब्रील की तरफ देखा, जिब्रील अलैहिस्सलाम ने अर्ज किया या रसूलल्लाह! **إِنَّ اللَّهَ قَدْ مَنَّكَ إِلَى رَسُولِكَ** यानी अल्लाह तआला आप की मुलाकात का मुश्ताक है। तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मौत के फिरिश्ते से फरमाया कि जिस बात का तुझ को हुक्म दिया गया उस पर अमल कर।

बुखारी और मुस्लिम में हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं कि जब मौत का फिरिश्ता हाज़िर हुआ उस वक़्त हुज़ूर का सरे मुबारक मेरी रान पर था, आप पर ग़शी तारी हुई फिर होश आया तो आप छत की तरफ देखने लगे। और बुखारी शरीफ की एक और रिवायत में है कि ऐने वासल के वक़्त हुज़ूर का सरे मुबारक हज़रत आइशा के सीने और हलक के दरमियान था और करीब में पानी का एक बर्तन रखा हुआ था, आप उस पानी में हाथ डालते और उन को चेहरे पर फेर लेते और फरमाते थे 'लाइलाह इल्लल्लाह' और मौत के सख़्त्रियां हैं। फिर हुज़ूर ने आसमान की तरफ हाथ उठाए और फरमाने लगे **يَا رُبُّ الْعَالَمِ** यानी ऐ अल्लाह! मुझे रफ़ीक़े अअ़ला में कर दे। या यह मतलब था कि मैं रफ़ीक़े अअ़ला में आना चाहता हूं। और एक रिवायत में है कि फरमाया: **يَا رُبُّ الْعَالَمِ** यानी मैं ने रफ़ीक़े

अजला को इख्तियार किया। (अश्अतुल् लमआत) यही कहते-कहते हाथ लटक गए और रूहे कुदसी आलमे कुदुस में पहुंच गई। **إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ** इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। (दुरूद शरीफ)

विशाल का असर

बिरादराने इस्लाम! सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व सल्लम की वफ़ात हसरते आयात से अहले बैत और सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हुम को जो सदमा पहुंचा वह बयान से बाहर है। लोग हुज़ूर की मुहब्बत में होश व हवास खो बैठे, उन की समझ में नहीं आता था कि अब क्या करें। हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु की यह हालत हो गई कि उन पर सक्ता तारी हो गया, बोलने की ताक़त नहीं रह गई, हालते बेकरारी में इधर से उधर आते जाते थे। मगर किसी से कुछ कहते नहीं थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु इस कद्र गुम से निढाल हो गए कि एक जगह बैठ गए और हिलने की ताक़त नहीं रखते थे। और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु का यह हाल हुआ कि वह गंगी तलवार लेकर मदीना शरीफ के बाज़ार और गलियों में घूमते थे और फ़र्माते थे कि जो कहेगा कि हुज़ूर की वफ़ात हो गई, मैं इसी तलवार से उस की गर्दन उड़ा दूंगा। हज़रत अबू बकर सिदीक़ रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु विसाल के वक़्त अपने घर थे, जब यह ख़बर सुनी तो रोते हुए और वा मुहम्मदाह! के नारे लगाते हुए मस्जिद शरीफ में हाज़िर हुए, देखा कि सहाबए किराम हैरान व परेशान हैं, आप ने किसी से कुछ बात नहीं की और न किसी की तरफ मुतवज्जह हुए, सीधे हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हा के हुजरए मुबारका में पहुंचे। हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व सल्लम के मुबारक चेहरे से चादर हटाई और पेशानिए अनवर को बोसां दिया, रोते हुए बाहर निकले। खुदाए तअ़ाला का उन पर यह ख़ालिस फज़ल हुआ कि हुज़ूर से इन्तिहाई मुहब्बत के बा वजूद उन के होश व हवास बजा रहे। आप मस्जिद में तशरीफ लाए, उस वक़्त हज़रत उमर

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मस्जिद में मौजूद थे, आप ने उन से फरमाया ऐ उमर! बैठ जाओ, उन्होंने ने इनकार कर दिया और कहा कि हम नहीं बैठेंगे। तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन्हें छोड़ दिया और लोगों की तरफ मुतवज्जह होकर खुल्वा देना शुरू किया।

फरमाया: ऐ लोगो! कान खोल कर सुन लो, जो शख्स मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की इबादत करता था तो वह जान ले कि उन का विसाल हो गया और जो खुदाए तआला की इबादत करता था वह सुन ले कि खुदा जिंदा है वह कभी नहीं मरेगा, उस पर कभी मौत नहीं तारी हो सकती, फिर आप ने वह आयते करीमा तिलावत फरमाई जिस के पढ़ने का शर्फ हम इब्तिदाए तकरीर में हासिल कर चुके हैं, وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُولٌ مُحَمَّد सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तो एक रसूल हैं فَذُكِرْتُمْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ उन से पहले और रसूल हो चुके, أَتَأْمُرُونَ أَنْ تُؤْفَاقُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ तो क्या अगर वह इन्तिकाल फरमाएं या शहीद हों तो तुम उल्टे पांव फिर जाओगे? وَمَنْ يُؤْفَاقْ عَلَى غَيْبِهِ لَنْ يَنْفَعَهُ شَيْءٌ और जो उल्टे पांव फिरेगा तो वह अल्लाह का कुछ नुकसान न करेगा وَسَيَحْزَى اللَّهُ الْفُكْرَيْنِ और अन्करीब अल्लाह तआला शुक करने वालों को सिला अता फरमाएगा। यानी जो अपने दीन पर साबित रहेंगे और नहीं फिरेंगे वह गिरोह शाकिरीन में से हैं, खुदाए तआला उन को अज्जे अजीम अता फरमाएगा।

बुखारी शरीफ में है कि हज़रत अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इस आयते करीमा की तिलावत फरमाने से लोगों को ऐसा मालूम हुआ कि गोया कोई इस आयते करीमा को जानता ही न था, उन से सुन कर अब इसी आयते करीमा को हर शख्स पढ़ने लगा। और मदारिजुन् नुबुव्वत में है, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि जब हज़रत अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मैं ने यह आयते करीमा सुनी तो मुझे ऐसा महसूस हुआ कि इस से पहले मैं ने इस आयते करीमा को सुना ही न था, सुनने के बाद मुझे

मालूम हो गया कि वाकई रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का विसाल हो गया। इस यकीन के बाद मेरे बदन में लर्जा पैदा हुआ और मैं ज़मीन पर गिर पड़ा। और हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा का बयान है कि गोया हमारी निगाहों पर पर्दा पड़ा हुआ था जिसको हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के खुत्बे ने उठा दिया, उनसे सुनकर अब इसी आयते करीमा को हर शख्स पढ़ने लगा जिससे लोगों को कुछ सुकून हासिल हो गया। (दुरूद शरीफ)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जब कुरआने मजीद की आयते करीमा पढ़ कर सुनाई तो अगर्चे इस से लोगों को कुछ सुकून हासिल हो गया लेकिन अब इतना वक़्त नहीं बाकी रह गया था कि उसी रोज़ तजहीज़ व तक्फीन हो सके, इस लिये दूसरे रोज़ सह शंबा (मंगल) को यह काम अंजाम पाया।

तजहीज़ व तक्फीन

मदारिजुन् नुबुव्वत में है कि वसिय्यत के मुताबिक़ जब अज़ीज़ व अक़ारिब ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को वफ़ात के बाद गुस्त देना चाहा तो आवाज़ आई कि अल्लाह के रसूल को गुस्त न दो कि वह पाक व साफ़ हैं, उन्हें गुस्त की हाज़त नहीं, आवाज़ किस ने दी और किधर से आई? लोगों ने बहुत छान बीन की मगर कुछ पता नहीं चला, मालूम हुआ कि ग़ैब से आवाज़ आई है तो बाज़ लोगों ने चाहा कि ग़ैबी आवाज़ पर अमल किया जाए और गुस्त न दिया जाए तो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने फरमाया कि ऐसी आवाज़ के सबब जिस की हकीक़त से हम वाकिफ़ नहीं है कि वह कहां से आई है और कहने वाला कौन है हम इस्लाम के तरीक़े को हरगिज़ नहीं छोड़ सकते, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को हम गुस्त ज़रूर देंगे, इतने में फिर दूसरी ग़ैबी आवाज़ आई कि अल्लाह के रसूल को गुस्त दिया जाए, पहली आवाज़ इब्नीस की

थी और मैं खिज़र हूँ।

हज़रत खिज़र अलैहिस्सलाम की आवाज़ के बाद जब लोगों ने गुस्ल का इरादा किया तो फिर एक दूसरा इख़िलाफ पैदा हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को उनके पैराहन मुबारक में गुस्ल दिया जाए या दूसरे लोगों की तरह बरहना करके नहलाया जाए? अभी कोई फैसला नहीं हो पाया था कि एक तरफ से फिर गैबी आवाज़ आई, अल्लाह के रसूल को बरहना मत करों, उन को उन्हीं के पैराहन मुबारक में गुस्ल दो। अब हज़रत अली, हज़रत अब्बास, हज़रत फज़ल बिन अब्बास, हज़रत कुस्म बिन अब्बास, हज़रत उसामा बिन जैउ रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने मिल-जुल कर आप को गुस्ल दिया और हज़रत औस बिन खौला अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पानी का घड़ा भर-भर कर लाते थे, गुस्ल के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की नाफे मुबारक और पल्कों पर पानी के जो क़तरे और तरी रह गई थी, जोशे अक़ीदत में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उसको अपनी ज़बान से चाट कर पी लिया। आप फरमाते थे कि उस की बरकत से मेरा इल्म और कुव्वते हाफ़िज़ा बहुत बढ़ गई।

अशअतुल् लमआत में है कि गुस्ल के बाद हुज़ूर को तीन सफ़ेद सूती कपड़ों का कफ़न दिया गया जो यमन के एक गांव “सहोल” के बने हुए थे।

क़ब्र शरीफ

सरकारे अक्वदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को कहाँ दफ़न किया जाए, इस के मुतअल्लिक सहाबा में इख़िलाफ हुआ, एक नज़ाअत ने कहा कि उसी हुज़रे में दफ़न किया जाए जहाँ आप की क़ब्रत हुई, और एक ग़िरोह ने मशवरा दिया कि मस्जिदे नबवी आप का मदफ़न होना चाहिये। बाज़ सहाबा ने राय दी कि जन्नतुल बक़ीअ मेदीना शरीफ का आम क़ब्रिस्तान है उस में दफ़न किया जाए और कुछ लोगों ने कहा कि बैतुल मुक़द्दस में आप की क़ब्र होनी चाहिये इस

लिये कि वहां बहुत से अंबियाए किराम की कब्रें हैं। हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि मैं ने रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से सुना है कि हर नबी वहीं दफन किया गया जहां उस की वफात हुई है। और एक रिवायत में है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि रूए ज़मीन पर खुदाए तआला के नज़्दीक उस जगह से बढ़ कर कोई जगह अज़मत और बुजुर्गी वाली नहीं है कि जहां अल्लाह के रसूल का विसाल हुआ है। इस गुफ्तगू के बाद तमाम सहाबए किराम हुजरए आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा में हुज़ूर को दफन करने पर मुत्ताफ़िक हो गए और वही जगह कब्र शरीफ के लिये मुत्तअय्यन हो गई। (दुरूद शरीफ)

मिशकात शरीफ में है हज़रत उर्वा बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मदीना शरीफ में दो आदमी कब्र खोदा करते थे, एक उन में हज़रत अबू तलहा अन्सारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे, जो मदीना शरीफ के रेवाज के मुताबिक लहद यानी बग्ली कब्र खोदा करते थे और दूसरे हज़रत अबू उबैदा बिन जराह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे जो बग्ली नहीं खोदते थे, बल्कि शक़ यानी संदूकी कब्र बनाते थे। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के विसाल पर सहाबा में इख़्तिलाफ हुआ कि किस तरह की कब्र खोदी जाए, तो लोगों ने आपस में यह तैय किया कि दोनों साहिबों के पास आदमी भेजा जाए जो उन में से पहले आएगा वह अपना काम करेगा। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दुआ की या रब्बल आलमीन! कब्र के बारे में अपने प्यारे रसूल के लिये वह सूरत इख़्तियार फरमा जो तुझे महबूब व पसंदीदा हो। और कब्र खोदने वालों के पास बुलाने के लिये आदमी भेजे गए तो पहले हज़रत अबू तलहा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आए जो लहद खोदा करते थे तो उन्होंने ने सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के लिये बग्ली कब्र तैयार की।

नमाजे जनाजा

अजला हजरत इमाम अहमद रज़ा बैरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फतावा रज़विया जि०:४ में तहरीर फरमाते हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के जनाज़ए अक्दस पर नमाज़ के बारे में फुकहाए किराम की मुख्तलिफ राएं हैं, बहुत से उलमा आम लोगों की नमाजे जनाज़ा की तरह मानते हैं। वह फरमाते हैं कि हजरत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दस्ते हक परस्त पर जब तक बैअत न हुई थी लोग फौज दर फौज हुजरए मुबारका में आते और जनाज़ए अक्दस पर नमाज़ पढ़ते जाते, जब बैअत हो गई तो वलिय शरअ हजरत अबू बकर सिद्दीक हुए, उन्होंने ने जनाज़ए मुबारका पर नमाज़ पढ़ी फिर उन के बाद किसी ने नहीं पढ़ी कि वली के पढ़ने के बाद फिर किसी को नमाजे जनाज़ा पढ़ने का इख्तियार नहीं होता। और बाज़ लोग कहते हैं कि जिस तरह नमाजे जनाज़ा आम तौर पर होती है, हुजूर की नमाजे जनाज़ा उस तरह नहीं हुई बल्कि लोग गिरोह दर गिरोह हाज़िर होते और सलात व सलाम अर्ज करते जिस की ताईद हदीस शरीफ से भी होती है। बैहकी और तबरानी वगैरा में है हजरत अब्दुल्लाह बिन मस्कूद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने फरमाया कि जब मेरे गुस्ल व कफन से फारिग हो जाओ तो मुझे नअशे मुबारक पर रख कर बाहर चले जाओ, सब से पहले जिब्रील मुझ पर सलात करेंगे फिर मीकाईल फिर इस्राफील फिर मलकुल मौत अपने सारे लश्करों के साथ और फिर गिरोह दर गिरोह मेरे पास हाज़िर हो कर मुझ पर दुरूद व सलाम अर्ज करते जाओ। इन्तहा कलामहू

जिस हुजरए मुबारका में विसाल हुआ, गुस्ल व कफन के बाद वहीं रखा गया, लोग हर चहार तरफ से नमाजे जनाज़ा के लिये दूट पड़े लेकिन चूंकि हुजरए मुबारका में जगह कम थी इस लिये थोड़े-थोड़े करके पहले मर्द हाज़िर हुए फिर औरतें और फिर बच्चे। इस सबब से

दफन में भी ताखीर हुई जिस को बाज़ ना समझ दूसरी ग़लत बातों पर महमूल करते हैं।

बहरहाल सब लोग जब नमाज़े जनाज़ा या दुरूद व सलाम पढ़ चुके तो हज़रत अली, हज़रत इब्ने अब्बास, हज़रत फज़ल बिन अब्बास और हज़रत कुस्म बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने आप के जिस्मे अक़दस को क़ब्रे अनवर में उतार कर क़िब्ला रु दाहिने पहलू पर लिटाया। और बाज़ हदीस शरीफ की रिवायतों से मालूम होता है कि हज़रत उसामा बिन ज़ैद और हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा भी आप की क़ब्रे मुबारक में उतरे थे।

रबि उम्मती-उम्मती

मदारिजुन् नुबुव्वत में है कि आप की क़ब्रे मुबारक से जो आखिर में निकले वह कुस्म बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा हैं। वह फरमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के चेहरा अनवर की जब आखिरी ज़ियारत हम ने की तो देखा कि आप के लबहाए मुबारक हिल रहे हैं, हम ने अपना कान क़रीब कर दिया तो सुना कि हुज़ूर "रबि उम्मती-उम्मती" फरमा रहे हैं।

कुर्बान जाइये अपने मेहरबान आका व मौला जनाब अहमदे मुज्ताबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर कि वह हमेशा हम गुनहगारों की फिक्र में रहे, यहां तक कि हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं कि उम्मत के गुनाहों के ग़म से हुज़ूर कभी पूरी एक रात बिस्तर पर आराम से नहीं सोए। और कभी ऐसा होता कि रात-रात भर हम लोगों के लिये खुदाए तआला से दुआएं मांगने और बख़्शिश के इन्तिज़ार में रोते थे। अल्ला हज़रत फ़ाज़िले बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं:

अश्क शब भर इन्तिज़ारे अप्ने उम्मत में बहें

यैं फिदा और चांद यूं अज़्ज़ार शुमारी वाह वाह

और एक शाइर यूँ कहता है:

तुम्हारे ही लिये था ऐ गुनहगारो सियह कारो

वो शब भर जागना और रात भर रोना मुहम्मद का

(सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम)

अगर काली घटा छा जाती तो हमारे मेहरबान आका प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम बेचैन हो जाते, कभी हुजरए मुबारका में आते और कभी मस्जिद में पहुँच कर उम्मत की हिफाज़त के लिये दुआ फरमाते। अगर आंधी आती तो बारगाहे इलाही में सज्दा रेज़ हो जाते, देर तक सर न उठाते, अज़ाब से मामून रहने की खुदाए तअ़ाला से दुआए करते और इस क़द्र रोते कि ज़मीन आंसुओं से तर हो जाती। गुरज़ेकि हमेशा हमारी फिक्र में रहे कभी हम को फरामोश नहीं फरमाया। अपने हुजरए मुबारका में रहे तो वहाँ याद फरमाया, मस्जिद में तशरीफ लाए तो वहाँ याद फरमाया, जंगल व बियाबान में याद फरमाया, पहाड़ की घाटियों में याद फरमाया, यहाँ तक कि क़ब्रे अनवर में लिटाए गए तो वहाँ भी याद फरमाया।

ऐ खुदाए जुल् जलाल! हम गुनहगारों की तरफ से हमारे मेहरबान आका व मौला जनाब अहमदे मुज्ताबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम की बारगाहे बेकस पनाह में दुरूद व सलाम की डालियाँ निखावर फरमा। और कियामत के दिन हम सब को उन की शफाअत नसीब फरमा कर जहन्नम के अज़ाब से हिफाज़त फरमा और जन्नतुल फिरदौस में बेहतरीन जगह इनायत फरमा (एक बार हम सब मिल कर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़ें)।

अश्शतुल् लमआत में है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम का विसाल दो शंबा मबारका को हुआ और सह शंबा यानी मंगल का दिन गुज़र कर रात में सहाबए किराम आप की तजहीज़ व तक्फीन से फारिग हुए।

बुखारी शरीफ की रिवायत है कि जब सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु

तआला अलैहि व सल्लम को दफन कर दिया गया उस के बाद सहाबए किराम हज़रत फातिमा के पास बतौर तअज़ियत आए, तो हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फरमाया कि अनस! और ऐ सहाबा! तुम को यह कैसे ग़वारा हुआ कि तुम ने अल्लाह के रसूल पर मिट्टी डाल दी, सहाबा ने कहा ऐ फातिमा! (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) हम भी यही सोचते थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर कैसे मिट्टी डालें लेकिन अल्लाह के फैसला और शरीअत का हुक्म से कोई चारए कार नहीं, इस लिये मजबूरन हम को ऐसा करना पड़ा। फिर हुज़ूर की जुदाई में सब लोग ज़ारो-क़तार रोए।

☆☆☆

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का ग़म

रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की वफात का असर यूं तो हर मुसलमान पर बहुत हुआ कि ऐसा मुसीबत का दिन उन्होंने ने कभी देखा ही नहीं था। हदीस शरीफ में है, सहाबा फरमाते हैं कि जिस दिन हुज़ूर मदीना में तशरीफ लाए उस से अच्छा और पुरमसरत दिन हम ने मदीना शरीफ में कभी नहीं देखा कि इस शहरे मुबारक की हर चीज़ रौशन और ताबनाक हो गई और जिस दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की वफात हुई उस दिन से ज़्यादा अलमनाक और बुरा दिन हम ने मदीना तैय्यिबा में कभी नहीं देखा कि सब चीज़ों पर तारीकी छा गई, हर घर से रोने और गिर्या व ज़ारी की आवाज़ आती थी, पूरा मदीना शरीफ मातम कदा बना हुआ था लेकिन हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा पर ग़म का पहाड़ टूट पड़ा था कि उन का हुज़रए मुबारक जिस में हुज़ूर का विसाल हुआ था दफन के बाद वह 'बैतुल् हुज़्न वल्-फिराक' हो गया था कि शबो-रोज़ हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बैठी रोया करती थीं। और ख़ास कर हुज़ूर की लख्खे जिगर, नूरे नज़र हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को बेइन्तिहा ग़म हुआ कि वह रात

भर और दिन भर हुजूर की जुदाई में आंसू बहाया करती थीं। हदीस शरीफ में है कि हुजूर के विसाल फरमाने के बाद कभी किसी ने उन को हंसते हुए नहीं देखा। (दुरूद शरीफ)

मदरिजुन् नुबुव्वत में है कि दफन के बाद हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बारगाह में हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा आप के सरहाने हाज़िर हुई, मज़ारे मुबारक से थोड़ी मिट्टी उठा कर अशक आलूद और आंसुओं से भरी हुई अपनी आंखों पर रखा और फरमाया:

مَاذَا عَلَى مَنْ شِمُّ ثُرَيَّةَ أَحْمَدَ

أَنْ لَا يَشُمَّ مَدَى الزَّمَانِ عَوَالِيَا

यानी क्या हरज होता है कि जो शख्स हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की कब्रे मुबारक को सूँघ ले तो वह कभी बेश कीमत खुशबू को न सूँघे। मतलब यह है कि हुजूर की तुर्बते अनवर से ऐसी खुशबू आ रही है कि जो शख्स उसे सूँघ ले तो फिर किसी दूसरी खुशबू को सूँघने की उसे हाजत नहीं।

और फरमाया:

صُبَّتْ عَلَى مَصَائِبِ لَوَائِيَا

صُبَّتْ عَلَى الْأَيَّامِ صِرَّةَ لِيَا

यानी मुझ पर ऐसी मुसीबतें आ गईं कि अगर यह मुसीबतें रोज़े रौशन पर आ जाएं तो वह मारे ग़म के रात बन जाए। (एक बार फिर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़िये।)

अंबियाए किराम अलैहिमुस् सलातु वस्सलाम ज़िंदा हैं

बाज़ लोगों का अक्कीदा है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अब ज़िंदा नहीं बल्कि मर कर मिट्टी में मिल गए, जैसा कि वहाबियों देवबंदियों के पेशवा मौलवी इस्माईल देहलवी ने अपनी किताब तक्विमयतुल् इमान सफ़हः 42 पर लिखा है, मगर यह अक्कीदा मज़हबे हक़ अहले सुन्नत व जमाअत के खिलाफ है और बातिल है।

हदीस शरीफ की मोअ्तमद और मशहूर किताब मिश्कात शरीफ सफ़हा:121 पर है: **إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَ عَلَى الْأَرْضِ أَنْ تَأْكُلَ أَحْسَادَ الْأَنْبِيَاءِ قَبْلَ اللَّهِ حَتَّى يَرُورَ** यानी सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि खुदाए अज़्ज़ व जल्ल ने ज़मीन पर अंबियाए किराम अलैहिमुस् सलातु वस्सलाम के जिस्मों को खाना हराम फरमा दिया है। लिहाज़ा अल्लाह के नबी जिंदा हैं, रिज़्क दिये जाते हैं।

अशअ्तुल् लमआत:1/576 पर इस हदीस शरीफ की शरह में हज़रत शैख अब्दुल हक मोहदिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि तहरीर फरमाते हैं कि "पैगम्बरे खुदा जिंदा अस्त व हकीकते हयाते दुन्यावी" यानी खुदाए तआला के नबी दुनियावी जिंदगी की हकीकत के साथ जिंदा हैं।

और मिर्कात:2/212 पर रईसुल् मोहदिसीन हज़रत मुल्ला अली कारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इस हदीस की शरह में लिखते हैं कि **لَا فَرْقَ لَهُمْ فِي الْحَالِ وَلَا فِي الْأَوَّلِ وَالْآخِرِ وَاللَّهُ لَا يَمُوتُ وَلَكِنْ يُتَوَلَّوْنَ مِنْ دَارٍ إِلَى دَارٍ** यानी अबियाए किराम की कबले विसाल और बादे विसाल की जिंदगी में कोई फर्क नहीं। इसी लिये कहा जाता है कि महबूबाने खुदा मरते नहीं बल्कि एक दार से दूसरे दार यानी एक घर से दूसरे घर की तरफ मुन्तकिल हो जाते हैं।

और हदीस की इसी मशहूर किताब मिश्कात शरीफ सफ़हा:120 पर अबू दाऊद, नसाई, दारमी, बैहकी और इब्ने माजा यानी हदीस की पांच मोअ्तमद किताबों से रिवायत है **إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَ عَلَى الْأَرْضِ أَنْ تَأْكُلَ أَحْسَادَ الْأَنْبِيَاءِ** यानी रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि खुदाए अज़्ज़ व जल्ल ने अंबियाए किराम अलैहिमुस् सलातु वस्सलाम के जिस्मों को ज़मीन पर खाना हराम फरमा दिया है।

रईसुल् मोहदिसीन हज़रत मुल्ला अली कारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि मिर्कात:2/209 पर इसी हदीस की शरह में तहरीर फरमाते हैं **الْأَنْبِيَاءُ فِي قُبُورِهِمْ أَحْيَاءٌ** यानी अंबियाए किराम अलैहिमुस् सलातु वस्सलाम अपनी

कब्रों में ज़िंदा हैं।

और सैय्यिदुल् मोहक्किकीन हज़रत शैख अब्दुल हक् मोहदिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह अश्शतुल् लमआत:1/574 पर इस हदीस के तहत फरमाते हैं कि “हयाते अंबिया मुत्तफक् अलैह अस्त हेच कस रा दर वेय खिलाफे नीस्त हयाते जिस्मानी दुन्यावी हक्कीकी न हयाते मअूनवी रुहानी चुनां कि शुहदा रास्त” अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम ज़िंदा हैं और उन की ज़िंदगी सब मानते आए हैं, किसी को इस में इख़्तिलाफ नहीं है। उन की ज़िंदगी जिस्मानी हक्कीकी दुनियावी है। शहीदों की तरह सिर्फ मअूनवी और रुहानी नहीं है।

हज़रत शैख मुहक्किक् की इस शरह से यह भी मालूम हुआ कि उन के ज़मानए हयात ग्यारहवीं सदी हिज़्री तक यह मस्अला मुत्तफक् अलैह रहा कि अंबियाए किराम बादे विसाल भी ज़िंदा रहते हैं, इस में किसी को इख़्तिलाफ नहीं। यानी जो लोग कि अंबियाए किराम को ज़िंदा नहीं मानते चाहे वह देवबंदी हों या वहाबी उन का मज़हब और उन का अक़ीदा नया है। अहले सुन्नत वल जमाअत हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के फरमाने के मुताबिक हमेशा यही अक़ीदा रखते रहे कि अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम अपनी कब्रों में ज़िंदा हैं और रोज़ी दिये जाते हैं।

और ज़ाहिर है कि अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम अगर बादे वफ़ात ज़िंदा न होते और मर कर मिट्टी में मिल गए होते (मआज़ल्लाहि तआला) तो मेअ्राज की रात हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के पीछे नमाज़ पढ़ने के लिये बैतुल मुक़दस में कैसे आते। मालूम हुआ कि बेशक अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम ज़िंदा हैं। एक बार हम सब मिल कर बुलन्द आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़ें।

और यह भी ख़ूब अच्छी तरह ज़ेहन नशीन कर लीजिये कि

अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम की जिंदगी जिस्मानी हकीकी दुनियावी है। शहीदों की तरह सिर्फ मअनवी और रूहानी नहीं है। यही वजह कि अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम का तरका नहीं तक्सीम किया जाता और न उनकी बीवियां दूसरे से निकाह कर सकती हैं। और शहीदों का तरका तक्सीम होता है और उन की बीवियां इदत गुजारने के बाद दूसरे से निकाह कर सकती हैं।

और यह भी वाजेह रहे कि अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम की जिंदगी बरज़खी नहीं है बल्कि दुनियावी है, बस फर्क सिर्फ इतना है कि वह हम जैसे लोगों की निगाहों से ओझल हैं जैसा कि नूरुल ईज़ाह की शरह मराकिउल फलाह मअ तहतावी मतबूआ मिस्र सफ़हा:447 में हज़रत हसन शुरुंबलानी रहमतुल्लाहि अलैह तहरीर फरमाते हैं: وَمَسْأَلُهُمْ مَقْرُورٌ عِنْدَ الْمُحَقِّقِينَ أَنَّهُ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى يَرَوْهُ مُتَمَيِّعٌ بِحَيَاتِهِ السَّلَامَةِ يَٰنَابِي يَٰنَابِي وَالْحَقَّ قَدْ غَيَّرْتُ عَنْكَ عَنْ أَصْحَابِ النَّاصِرِينَ عَنْ فَرْغِ الْمَغَانِبِ यानी यह बात अबबि तहकीक के नज़्दीक साबित है कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम (हकीकी दुनियावी जिंदगी के साथ) जिंदा हैं, उनपर रोज़ी पेश की जाती है, सारी लज़्ज़त वाली चीज़ों का मज़ा और इबादतों का सुख पाते हैं, लेकिन जो लोग कि बुलंद दर्जों तक पहुंचने से कासिर हैं उन की निगाहों से ओझल हैं।

तू जिन्दा है वल्लाह तू जिन्दा है वल्लाह

मेरी चश्मे आलम से छुप जाने वाले

और शहाबुल उलूम हज़रत अल्लामा शहाबुद्दीन ख़फ़ाजी अलैहिर रहमत नसीमुर रियाज़ शर्ह शिफा काज़ी अयाज़ 1/196 में तहरीर फरमाते हैं: الْآيَةُ عَلَيْهِمُ السَّلَامُ أَحْيَاءُ فِي قُبُورِهِمْ حَيَاةً حَقِيقَةً यानी अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम हकीकी जिंदगी के साथ अपनी क़ब्रों में जिंदा हैं।

और रईसुल मोहद्दीसीन हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि मिर्कात शर्ह मिश्कात:1/484 में तहरीर फरमाते हैं: اَللّٰهُ

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّىٰ يُرْزَأَ وَيُسْتَعْدَّ بِهِ الْمَعْدَةُ الْمَطْلَقُ यानी बेशक हुजूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम जिंदा और बा हयात हैं, उन्हें रोज़ी पेश की जाती है और उन से हर किस्म की मदद तलब की जाती है।

और सैय्यिदुल् मोहक्किनीन हज़रत शैख़ अब्दुल इब्न मोहदिस देहलवी बुख़ारी रहमतुल्लाहि तअ़ाला अलैहि अपने मक्तूब “मुलूक अक़रबुस् सुबुल बित्तवज्जुहि इला सैय्यिदिर रुसुल” मज़ अख़बारिल अख़बार मतबूआ रहीमिया देवबन्द सफ़हा:161 में फरमाया कि “बा चंदी इख़िलाफ व कसूरते मज़ाहिब कि दर उलमाए उम्मत अस्त यक कस् रा दरिं मस्तअला ख़िलाफे नीस्त कि आं हज़रत सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम बहकीकीते हयात बे शाइबा मजाज़ व तवहहम तावीले दाइम व बाकी अस्त व बर आमाले उम्मत हाज़िर व नाज़िर व मर तालिबाने हकीकत रा व मुतवज्जिहाने आं हज़रत रा मुफीज़ व मुरब्बी” यानी उलमाए उम्मत में इतने इख़िलाफात व कसूरत मज़ाहिब के बा वजूद किसी शख़्त को इस मस्तअले में कोई इख़िलाफ नहीं है कि आं हज़रत सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम हयाते (दुनियावी) की हकीकत के साथ काइम और बाकी हैं। इस हयाते नबवी में मजाज़ की आमेज़िश और तावील का वहम नहीं है। और उम्मत के आमाल पर हाज़िर व नाज़िर हैं। नीज़ तालिबाने हकीकत के लिये और उन लोगों के लिये कि आं हज़रत की जानिब तवज्जोह रखते हैं हुजूर उन को फ़ैज़ बख़्शने वाले और उन के मुरब्बी हैं।

और पारा:23 आख़िरी रुकूअ की आयते करीमा اَللّٰهُمَّ میں जो हुजूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम के लिये मौत आने का ज़िक्र फरमाया गया है तो इस से मुराद इस आलमे दुनिया से मुन्तकिल होना है और अहादीसे करीमा व अक्वाले अइम्मा में हयात से बाद विसाल की हकीकी जिंदगी मुराद है। (एक बार हम सब मिल कर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़ें)।

हयाते अंबिया अलैहिमुस्सलाम वाकिआत की रौशनी में

बिरादराने मिल्लत! आकाए दो आलम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम और दीगर अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम बादे विसाल जिंदा हैं। इस के बारे में अहादीसे करीमा और अइम्मए इज़ाम के बहुत से अक्वाल आप लोगों ने सुन लिया। अब हम चन्द वाकिआत बयान करते हैं जिन से यह बात अच्छी तरह वाजेह और रौशन हो जाएगी कि नबी बादे विसाल जिंदा रहता है मरता नहीं है।

अल्लामा समहूदी रहमतुल्लाहि तअ़ाला अलैहि अपनी मशहूर किताब “वफाउल् वफा बि- अख़्बारि दारिल् मुस्तफा” 1/466 में तहरीर फरमाते हैं कि सुल्तान नूरुद्दीन रहमतुल्लाहि तअ़ाला अलैहि जो आदिल बादशाह और बड़े मुल्तकी थे, उन की रात का बहुत सा हिस्सा तहज्जुद और वज़ीफे में खर्च होता था। 557 ई० में एक रात जब कि तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने के बाद वह सोए तो ख़्वाब में सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम की ज़ियारत उन को नसीब हुई, सरकार ने दो कैरी आंख वालों की तरफ इशारा करते हुए बादशाह से इरशाद फरमाया कि इन दोनों से मेरी हिफाज़त करो, बादशाह घबरा कर उठे, वज़ू किया और जब कुछ नवाफिल पढ़ कर दोबारा सोए तो फिर बिऐनिही वही ख़्वाब देखा कि हुज़ूर फरमा रहे हैं कि इन दोनों से मेरी हिफाज़त करो। बादशाह फिर बेदार हो गए, वज़ू किया और तीसरी बार कुछ नवाफिल पढ़ कर सोए तो फिर वही ख़्वाब देखा, उठ कर फरमाया कि अब नीन्द की कोई गुंजाइश नहीं, रात ही को फौरन अपने वज़ीर को बुलाया जो नेक और सालिह आदमी थे, नाम जमालुद्दीन बताया जाता है, उन को सारा किस्सा सुनाया, वज़ीर ने कहा अब ताख़ीर का मौक़ा नहीं है, फौरन मदीना मुनव्वरा चलिये मगर इस ख़्वाब का ज़िक्र किसी से न कीजिये। बादशाह ने फौरन रात ही को तैयारी की, वज़ीर और 20 मख़सूस ख़ादिमों को साथ लेकर तेज़ रफ्तार

ऊंटनियों पर बहुत सामान और माल व मताजू लदवा कर मदीना मुनव्वरा के लिये रवाना हो गए और दिन रात चलते रहे यहां तक कि सोलहवें रोज़ मिस्र से मदीना तैय्यिबा पहुंचे, शहर से बाहर गुस्ल किया और निहायत अदब व ऐहतिराम से मस्जिदे नबवी में हाज़िर हुए, जन्नत की कियारी में दो रकअत नमाज़ नफ़ल पढ़ी और हुज़ूर की बारगाह में हाज़िर हो कर सलात व सलाम अर्ज़ किया फिर निहायत मुतफिक्कर हो कर बैठे सोचते रहे कि अब क्या करें? वज़ीर ने ऐलान किया कि बादशाह नूरुद्दीन ज़ियारत के लिये आए हैं और बहुत सा माल अपने हमराह यहां के लोगों पर तक्सीम करने के लिये लाए हैं। लिहाज़ा सब लोग उन से मुलाकात करें। इस ऐलान के बाद लोगों की आमद शुरू हो गई। बादशाह हर आने वाले को निहायत गहरी निगाह से देखते रहे। सब लोग यके बाद दीगरे बादशाह से मुलाकातें कीं और अताएं लेकर चले गए मगर कैरी आंख वाले वह दो शख्स कि जिन को ख्वाब में देखा था नज़र न आए। बादशाह ने कहा कि और कोई बाकी रह गया हो तो उस को भी बुला लिया जाए। मालूम हुआ कि अब कोई नहीं बाकी रह गया है। मगर बादशाह के बार-बार कहने पर लोगों ने बहुत गौर व ख़ौज़ किया तो कहा कि दो नेक मर्द निहायत मुत्तकी और परहेज़गार मरिबी बुजुर्ग हैं वह किसी से कोई चीज़ नहीं लेते बल्कि खुद ही बहुत कुछ सदकात व ख़ैरात अहले मदीना पर करते रहते हैं, गोशा नशीन लोग हैं, सब से अलग थलग रहते हैं। बादशाह ने उन दो आदमियों को भी बुलवाया और जब वह आए तो देखते ही पहचान लिया कि यही वह दो आदमी हैं जो ख्वाब में दिखलाए गए थे। बादशाह ने उन लोगों से पूछा कि तुम कौन हो? उन लोगों ने कहा कि हम मरिब के बाशिन्दे हैं, हज के लिये आए हुए थे, उस से फारिग होकर मदीना तैय्यिबा ज़ियारत के लिये हाज़िर हुए और सरंकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के पड़ोस में रहने की तमन्ना हुई तो यहां ठहर गए, बादशाह ने कहा सही-सही बता दो, उन्होंने ने जो

पहले कहा फिर उसी जवाब को दोहराया, बादशाह ने सही बात बताने पर बहुत इस्सारा किया मगर उन लोगों ने कुछ और नहीं बताया बल्कि हर बार यही कहते रहे कि हम लोग हज के लिये आए थे फिर ज़ियारत के लिये हाज़िर हुए और कुछ रोज़ के लिये हुज़ूर सल्लल्लाहु तज़ाला अलैहि व सल्लम के पड़ोस में क़ियाम कर लिया, बादशाह ने उन की क़ियामगाह दरियाफ्त की, मालूम हुआ कि रौज़ए मुबारक के करीब ही एक रिवात में रहते हैं। बादशाह ने हुक्म दिया कि इन दोनों को यहीं रोके रखें और खुद उन की क़ियामगाह पर गए, वहां पहुंच कर बहुत कुछ देखा भाला तो माल व मताज़ बहुत सा मिला और किताबें भी रखी हुई मिलीं लेकिन कोई ऐसी चीज़ नहीं मिली जिस से ख़्वाब के मजमून की ताईद होती।

बादशाह बहुत परेशान और मुतफक्किर था कि ख़्वाब सच है, यह दोनों आदमी वही हैं जो ख़्वाब में दिखलाए गए लेकिन इनके हालात से मामले का कोई सुराग़ नहीं मिलता। और मदीना तैय्यिबा के लोगों का हाल यह था कि बहुत से लोग सिफारिश के लिये आए और बयान दिया कि यह दोनों नेक बुजुर्ग दिन भर रोज़ा रखते हैं, हर नमाज़ जन्नत की क़ियारी में पढ़ते हैं, हुज़ूर की बारगाह में हाज़िर होकर सलात व सलाम अर्ज़ करते हैं, रोज़ाना जन्नतुल बक़ीअ की ज़ियारत करते हैं, हर सनीचर मस्जिदे कुबा जाते हैं, किसी साइल को बग़ैर कुछ दिये हुए वापस नहीं करते। इस कहत के साल में इन्होंने मदीना शरीफ वालों के साथ बहुत हमदर्दी और ग़मगुसारी की है, बादशाह उन के हालात सुन कर तज़जुब करते थे और उन की क़ियामगाह में इधर उधर मुतफक्किर फिर रहे थे, यका यक उन के मुसल्ले को उठाया जो एक चटाई पर बिछा हुआ था और चटाई के नीचे एक पत्थर बिछा हुआ था, जब उस को उठाया गया तो उस के नीचे एक सुरंग ज़ाहिर हुई जो बहुत गहरी खोदी गई थी और बहुत दूर तक चली गई थी यहां तक कि हुज़ूर की क़ब्रे अनवर तक पहुंच गई थी, यह देख कर सब लोग दंग रह

गए, बादशाह ने उन को इन्तिहाई गुस्से में कांपते हुए मारना शुरू किया और कहा कि सही-सही वाकिआ बताओ, उन लोगों ने बताया कि वह दोनों नस्रानी हैं, ईसाई बादशाहों ने उन को बहुत सा माल दिया है और आइन्दा बहुत ज्यादा देने का वादा किया है, हम लोग हाजियों की सूरत बना कर इस लिये आए हैं ताकि क़ब्रे अनवर से हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के जिस्मे मुबारक को निकाल ले जाएं, हम दोनों रात को यह जगह खोदते थे और जो मिट्टी निकलती थी उस को चमड़े की दो मशकों में भरकर रात ही जन्नतुल बक़ीअ में डाल आया करते थे।

बादशाह इस बात पर कि खुदाए अज़्ज़ व जल् ने और उस के प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इस ख़िदमत के लिये उन को मुत्तख़ब किया बहुत रोए। उन दोनों को क़त्ल कराया और हुजरए मुबारका के चारों तरफ इतनी गहरी खन्दक खुदवाई कि पानी निकल आया फिर उस खन्दक को रांगा या सीसा पिघला कर भरवा दिया ताकि सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के जिस्मे मुबारक तक कभी किसी की रसाई न हो सके। (एक बार हम सब मिल कर उस ज़िंदा नबी पर ज़िंदा दिली के साथ दुरुद शरीफ का नज़्राना पेश करें।)

इस वाकिआ से रोज़े रौशन की तरह वाज़ेह हो गया कि हमारे आका व मौला जनाब अहमदे मुज्ज्ता मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ज़िंदा हैं अगर वह (मआज़ल्लाह सद बार मआज़ल्लाह) मर कर मिट्टी में मिल गए होते जैसा कि वहाबियों और देबन्दियों का अक़ीदा है तो बादशाह नूरुद्दीन को विसाल के तक़रीबन साढ़े पांच सौ साल बाद हिफाज़त का हुक्म देने का सवाल ही नहीं पैदा होता। साबित हुआ कि अल्लाह के रसूल ज़िंदा हैं और वहाबियों और देबन्दियों का अक़ीदा बातिल है। और यह भी मालूम हुआ कि नस्रानियों का भी यह अक़ीदा है कि अल्लाह का नबी विसाल फरमाने

के बाद मिट्टी में नहीं मिल जाता वरना कई सौ साल बाद वह हुजूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम के जिस्मे अक्वदस को निकाल कर ले जाने का प्रोग्राम न बनाते।

एक सवाल और उस का जवाब

रहा यह सवाल कि हमारे अक्कीदे के मुताबिक जबकि हुजूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम खुद दूसरों की मदद करते हैं और मुशिकलें हल फरमाते हैं तो उन्होंने ने अपनी हिफाज़त के लिये बादशाह नूरुद्दीन से क्यों कहा और नस्रानियों को खुद ही क्यों नहीं हलाक कर दिया और जब वह खुद अपनी हिफाज़त नहीं कर सकते और अपने दुश्मनों को हलाक नहीं कर सकते तो वह दूसरों की मदद क्या कर सकते हैं? तो इस सवाल का जवाब यह है कि हुजूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम खुदाए अज़्ज़ व जल्ल की अता की हुई ताकत से अपनी हिफाज़त फरमा सकते थे और बादशाह नूरुद्दीन की मदद के बगैर उन के दुश्मन हलाक हो सकते थे, जैसा कि इसी किताब वफाउल् वफा:1/471 में एक दूसरा वाकिअ दर्ज है कि हलब की एक जामअत से मदीना का एक हाकिम मिल गया और बहुत सा माल रिश्वत लेकर उन को हज़रत अबू बकर व उमर रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हुमा के जिस्मे मुबारक को निकाल ले जाने की इजाज़त दे दी और जब वह लोग ज़मीन खोदने के बहुत से हथियार लेकर बाबुस सलाम से अन्दर दाखिल हुए और हुजरह शरीफ की तरफ चले तो हज़रत शैख़ शमसुद्दीन सब्बाब रहमतुल्लाहि तअ़ाला अलैहि जो खादिमैन हरमे नबवी के अपसर थे और इस वाकिअ के रावी हैं वह फरमाते हैं **وَاللّٰهُ مَا وَصَلُوا الْجَمْعَ حَتَّى ابْتَلَعْتَهُمْ** यानी खुदा की कंसम वह लोग अभी मिम्बर शरीफ तक भी न पहुंचे थे कि अचानक उन को और उनके सारे साज़ व सामान को ज़मीन निगल गई और उन का नाम व निशान मिट गया।

तो इसी तरह वह दोनों नम्रानी भी हलाक हो सकते थे, मगर अल्लाह व रसूल (अज़्ज़ व जल्ल व सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम) बादशाह नूरुद्दीन की किसी नेकी पर सारी दुनियाएँ इस्लाम में उनके नाम को रौशन व मुनव्वर फरमाना चाहते थे और आखिरत में उन को मर्तबए जलीला पर फाइज़ करना चाहते थे, इस लिये यह ख़िदमत उन के सुपुर्द फरमाई।

लेकिन अगर अब भी कोई बद बख्त ना माने और यही बकता रहे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम को अपने दुश्मनों के हलाक करने की ताक़त नहीं थी इस लिये बादशाह नूरुद्दीन से हलाक करवाया, तो उस बद बख्त को यह भी मानना पड़ेगा कि अल्लाह तअ़ाला को भी अपने महबूब के दुश्मनों को हलाक करने की ताक़त नहीं थी इस लिये वह खुद हलाक नहीं कर सका बल्कि दूसरे से हलाक करवाया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम बादे विसाल भी ज़िंदा हैं, इस सिलसिले में एक वाकिआ और समाज़त फरमाइये। हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तअ़ाला अलैहि अपनी किताब अल-हावी में तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत सैय्यद अहमद रिफाई रहमतुल्लाहि तअ़ाला अलैहि जो मशहूर बुजुर्ग अकाबिरे सूफिया में से हैं उन का वाकिआ मशहूर है कि जब वह 555 हि० में हज से फारिग हो कर सरकार आजम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम की ज़ियारत के लिये मदीना तैय्यिबा हाज़िर हुए और कब्रे अनवर के सामने खड़े हुए तो यह दो शेअर पढ़े:

يَسَى حَالِ الْيَعْدِ رُوِّجِي كُنْتُ أَرْبِلَهَا
تَقَبَّلْ الْأَرْضَ عَنِّي وَهِيَ نَائِبَتِي

यानी मैं दूर होने की हालत में अपनी रूह को ख़िदमते मुबारका में भेजा करता था जो मेरी नाइब बन कर हुज़ूर के आस्तानए मुक़द्दस को चूमा करती थी।

وَمِنْهُ دَوْلَةُ الْأَشْبَاحِ قَدْ حَضَرَتْ

فَانْزُدْ بِمِثْلِكَ عَمَّا تَحْطَى بِهَا شَفَقِي

यानी अब जिस्मों की हाजिरी का वक़्त आया है, लिहाज़ा अपने दस्ते अक़दस को अता फरमाइये ताकि मेरे होंट उस को चूमें।

हज़रत सैय्यद अहमद रिफ़ाई रहमतुल्लाहि तआला अलैहि की इस अर्ज़ पर सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि ने क़ब्रे अनवर से अपने दस्ते मुबारक को बाहर निकाला जिस को उन्होंने ने चूमा।

“अल-बुनयानुल् मुशाय्दिद” में है कि उस वक़्त कई हज़ार का मजमअ मस्जिदे नबवी में था जिन्होंने ने इस वाकिआ को देखा और हुज़ूर के दस्ते अक़दस की ज़ियारत की। उन लोगों में महबूबे सुब्हानी हज़रत शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी यानी ग़ौसे आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का नामे नामी भी ज़िक्र किया जाता है। खुलासए कलाम यह है कि:

अंबिया को भी मौत आनी है	मगर ऐसी कि फक़त आनी है
बस उसी आन के बाद उनकी हयात	मिस्त ताबिक वही जिस्मानी है

औलियाउल्लाह भी ज़िन्दा हैं

वहाबियों देबन्दियों को तो अंबियाए किराम अलैहिमुस् सलातु वस्सलाम की ज़िंदगी के बारे में भी कलाम है यहां तक कि सैय्यदुल अंबिया और नबिय्युल अंबिया जनाब अहमदे मुज्ताबा मुहम्मद मुस्तफ़ा के बारे में यह अक़ीदा रखते हैं कि वह मर कर मिट्टी में मिल गए। हालां कि औलियाए किराम व बुजुर्गाने दीन को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लाम की गुलामी में यह मर्तबा मिला कि वह बादे वफ़ात ज़िन्दा रहते हैं, सुबूत के लिये बर वक़्त सिर्फ़ दो वाकिआ समाअत फरमाएं।

हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि जो मशहूर बुजुर्गों में से हैं उन का वाकिआ आरिफ बिल्लाह हज़रत मौलाना रुम

रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपनी मस्नवी शरीफ के दफ्तर चहारूम में तहरीर फरमाते हैं कि एक रोज़ बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपने मुरिदों के साथ एक रास्ते से गुज़र रहे थे कि अचानक शहरे रेय के इलाके में ख़रक़ान की तरफ से उन्हें खुशबू महसूस हुई, हज़रत उस खुशबू से इस कदर मस्त हुए कि चेहरे का रंग कभी सुर्ख़ होता था और कभी सफ़ेद। एक मुरिद ने अर्ज़ किया हुज़ूर क्या मामला है कि मैं हज़रत के चेहरे का रंग बदलता हुआ पाता हूँ? फरमाया कि इस तरफ से एक दोस्त की खुशबू आ रही है कि जहाँ दर्ज़ए विलायत व कुतबिय्यत का एक बहुत बड़ा बादशाह इतने साल के बाद फुलां तारीख़ को तशरीफ़ लाने वाला है, किसी ने पूछा कि उन का नाम क्या है? फरमाया कि उन का नाम अबुल हसन है, फिर सर से लेकर पाँच तक उन का पूरा हुलिया बयान फरमाया।

हज़रत के बयान के मुताबिक़ अबुल हसन ख़रक़ानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की तारीख़े पैदाइश को नोट कर लिया और जब हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की वफ़ात के बाद वही तारीख़ आई तो ख़रक़ान में हज़रत अबुल हसन ख़रक़ानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह पैदा हुए (और सिन्ने बुलूग़ को पहुंचे) तो लोगों ने उन से बयान किया कि हज़रत बायज़ीद बुस्तामी फरमाया करते थे कि अबुल हसन मेरा अकीदत मन्द होगा और मेरी क़ब्र पर आकर मुझ से फैज़ हासिल करेगा। आप ने फरमाया कि मैं ने भी इसी मज़मून का ख़्वाब देखा है, फिर रोज़ाना सुबह के वक़्त हज़रत बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की क़ब्रे मुबारक के पास हाज़िर होते और चाशत के वक़्त तक उन के मज़ार के सामने बाअदब खड़े रहते और फैज़ हासिल करते।

एक रोज़ सुबह के वक़्त जबकि आप उस क़ब्रिस्तान में तशरीफ़ ले गए कि जहाँ हज़रत का मज़ार था तो देखा कि सारी क़ब्रें बर्फ़ से छुपी हुई हैं, आप हज़रत की क़ब्रे मुबारक को पहचान नहीं सके जिस के

सबब बहुत परेशान हुए तो फिर उस के बाद क्या हुआ? इसे मौलाना रुम रहमतुल्लाहि तआला अलैह की ज़बान से सुनिये:

बांगश आमद अज़ हज़ीरए शेख हय्य

مَا أَكْذَرُكَ كَيْ تَسْلَى إِلَيَّ

यानी अचानक बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह जो ज़िंदा हैं उनकी कब्रे मुबारक से आवाज़ आई कि मैं तुम्हें पुकारता हूँ तुम मेरी तरफ आओ।

बेशक बायज़ीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह वफात के बाद भी ज़िंदा हैं। अगर वह मर कर मिट्टी में मिल गए होते और ज़िंदा न होते तो उन की कब्रे मुबारक से इस तरह की आवाज़ हरगिज़ न आती।

हयाते जाविदां पाता है 'आसी'

क़तीले तैग़ आबरूए मुहम्मद

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लाम

(एक बार हम सब मिल कर बुलंद आवाज़ से फिर दुरूद शरीफ पढ़ें)

औलियाए किराम भी बादे विसाल ज़िंदा रहते हैं, इस सिलसिले में दूसरा वाकिआ यह समाअत फरमाएं। हज़रत मख़्दूम अशरफ जहांगीर समनानी कछौछवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के तज़िकरे में लिखा है कि जब अपने पीर व मुरशिद हज़रत अलाउल हक़ वद्दीन रहमतुल्लाहि तआला अलैह के आस्तानए मुबारका "पंडोह शरीफ" की हाज़िरी के लिये गुलबर्गा शरीफ (दकन) से रवाना हुए तो जिस रोज़ सूबए बिहार में मुनीर शरीफ के क़रीब पहुंचे उसी रोज़ हज़रत शफ़ुद्दीन यहया मुनीरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह का विसाल हुआ। वफात से कुछ पहले उन्होंने ने वसिय्यत फरमाई थी कि एक सैय्यद सहीहुन नसब जो तारिके सल्लनत हैं और सातों क़िराअत के हाफिज़ हैं वह अन्क़रीब आने वाले हैं, वही मेरी जनाज़े की नमाज़ पढ़ाएंगे, हज़रत का विसाल हो गया और जनाज़ा भी तैयार हो गया मगर जिनके बारे में हज़रत ने वसिय्यत

फरमाई थी वह नहीं पहुंचे तो शेख जिलाई नाम के एक शख आप की तलाश में निकले, जब आबादी के बाहर पहुंचे तो उन्हें दूर से एक काफिला आता हुआ नज़र आया, काफिला करीब पहुंचा तो शेख जिलाई आप को तलाश करने लगे, लोगों की भीड़ में उन को ऐसा चेहरा नज़र आया कि जिन की पेशानी में नूरे विलायत जगमगा रहा था, पूछा कि हुजूर सैय्यिद हैं? फरमाया कि हां। फिर सातों किराअत के हाफिज़ होने और तर्क सल्लतनत के बारे में दरियाफत किया, जब इत्मीनान हो गया कि आप ही के बारे में हज़रत ने वसिय्यत फरमाई है तो बड़े ऐजाज़ व इक्राम के साथ आप को लाए और हस्बे वसिय्यत हज़रत की नमाज़े जनाज़ा आप ने पढ़ाई और वह दफन कर दिये गए।

कुछ वक्फा बाद मख़दूम साहब को इत्तिलाअ मिली कि हज़रत शरफुद्दीन मुनीरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह का मुबारक हाथ क़ब्र शरीफ से बाहर निकल आया है और बहुत से लोग वहां जमा हो गए हैं मगर किसी की समझ में नहीं आता कि मामला क्या है। हज़रत मख़दूम साहब मज़ार शरीफ के पास पहुंचे, जब क़ब्र के बाहर निकले हुए हाथ को देखा तो आप ने वहीं बैठ कर मुराक़्बा फरमाया और जब सर उठाया तो लोगों को बताया कि हज़रत शेख मुनीरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह को मर्दाने ग़ैब से एक टोपी मिली थी जिस के बारे में हज़रत ने वसिय्यत फरमाई थी कि वह मेरे साथ क़ब्र में रख दी जाए मगर आप लोग भूल गए। हज़रत शेख उसी टोपी को तलाब फरमा रहे हैं, लोगों ने तस्दीक की कि वाकई हज़रत ने टोपी के मुतअल्लिक वसिय्यत फरमाई थी कि वह मेरे साथ क़ब्र में रख दी जाए जिसे हम लोग भूल गए, अब वह टोपी लाई गई और जब हज़रत शेख के मुबारक हाथ पर रखी गई तो आप ने फौरन अपना हाथ अन्दर कर लिया।

यह वाकिआ भी बबांगे दुहल ऐलान कर रहा है कि औलियाए किराम भी बादे विसाल जिंदा रहते हैं अगर जिंदा न रहते तो हज़रत

शरफुद्दीन यह्या मुनीरी रहमतुल्लाहि तअला अलैह दफन के बाद कब्र से बाहर हाथ न निकालते। और औलियाए किराम क्यों न जिंदा रहें कि वह तो अल्लाह ही के नाम पर मरते हैं और जो अल्लाह तअला के नाम पर मरते हैं वह हमेशा जिंदा रहते हैं।

एक शाइर कहता है:

जिंदा हो जाते हैं जो मरते हैं उस के नाम पर
अल्लाह! अल्लाह! मौत को किस ने मसीहा कर दिया

तक्रीर बहुत तवील हो गई, बस दुआ है कि खुदाए अज़्ज़ व जल्ल हम सब को मजहबे अहले सुन्नत व जमाअत पर काइम रखे और गुमराही से बचने की तौफीके रफीक अता फरमाए। आमीन

بحرمة النبى الكريم الامين عليه وعلى اله افضل الصلوة واكمل التسليم

बिहुर्मतिन् नबिय्यिल करीमिल् अमीन

अलैहि व अला आलिही अफज़लुस् सलाति

व अक्मलुत् तस्लीम।



अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

الحمد لله الذى هدانا الى الصراط المستقيم والصلوة والسلام على من
اختص بالخلق العظيم وعلى اله واصحابه الذين قاموا بنصرة الدين القويم- اما بعد
فقد قال الله تعالى فى كتابه العظيم، اعوذ بالله من الشيطان الرجيم بسم الله الرحمن
الرحيم - وَالَّذِى جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ اُولَئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ٥ (ب: ١٤، ع: ١) صدق
الله العلى العظيم وبلغنا رسوله النبى الامين وعلى اله افضل الصلوات والتسليم-

एक बार आप तमाम हज़रात बुलंद आवाज़ से प्यारे मुस्तफा
सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दरबारे गुहर बार में
दुरूदो-सलाम का नज़ाना पेश करें।

اللهم صل على سيدنا ومولانا محمد وعلى اله واصحابه واولادك وسلم-

अल्लाहुम्म सल्लि अला सैय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिन् व अला आलि

सैय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिन् मअ्दनिल् जूदि वल्करम

व अला आलिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम।

एक बाकमाल उस्ताद को जो बहुत सी खूबियों का जामेअ होता है
अपने जिस शागिर्द में जिस खूबी की मुमताज़ सलाहियत पाता है उसी
खूबी में उसे बाकमाल बनाता है, जिस में फकीह बनने की ज़्यादा
सलाहियत पाता है उसे फकीह बनाता है, जिस में मुक़र्रिर बनने की
सलाहियत ज़ाज़ेह होती है उसे कामयाब मुक़र्रिर बनाता है और जिस में
मुसन्नफ बनने की सलाहियत ग़ालिब होती है उसे बाकमाल मुसन्नफ
ही बनाता है तो हमारे आका व मौला जनाब अहमदे मुज्ताबा मुहम्मद
मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपने जिस सहाबी में
जिस खूबी की मुमताज़ सलाहियत पाई उसी वस्फे खास में उसे कामिल
बनाया। लिहाज़ा अपने प्यारे सहाबी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़
रज़ियल्लाहु तआला अन्हु में सिद्दीक़ बनने की सलाहियत को ज़ाज़ेह तौर
पर महसूस फरमाया तो उसी वस्फ में उन को मुमताज़ व कामिल

बनाया। और सिद्दीक होना ऐसा वस्फ है जो बहुत सी खूबियों का जामेअ है और इस वस्फे खास के सब से ज्यादा मुस्तहिक सिर्फ हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ाते गिरामी थी इसी लिये वह इस से सरफराज़ फरमाए गए।

अस्दकुस् सादिकीन सैय्यिदुल् मुत्तकीन

चश्म व गोशे विज़ारत पे लाखों सलाम

आप की खिलाफत

आकाए दो आलम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की वफात के बाद यह सवाल पैदा हुआ कि उन का नाइब और खलीफा किस को मुकर्रर किया जाए? हदीस शरीफ की मशहूर किताब बैहकी में हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत कि खिलाफत के मामले को हल करने के लिये सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम हज़रत सअद बिन उबादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मकान पर जमा हुए, जिन में हज़रत अबू बकर सिद्दीक, उमर फारूक आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा और दूसरे बहुत से अजिल्लए सहाबा मौजूद थे।

सब से पहले एक अन्सारी खड़े हुए और उन्होंने ने लोगों से इस तरह खिताब किया कि ऐ मुहाजिरीन! आप लोगों को मालूम है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम आप में से किसी शख्स को कही आमिल मुकर्रर फरमाते थे तो अन्सार में से भी एक शख्स को उस के साथ कर दिया करते थे। लिहाज़ा इसी तरह हम चाहते हैं कि खिलाफत के मामले में भी एक शख्स मुहाजिरीन में से हो और एक अन्सार में से हो। फिर एक दूसरे अन्सारी खड़े हुए और उन्होंने ने भी इसी किस्म की तक्रीर फरमाई।

इन लोगों की तक्रीरों के बाद हज़रत जैद बिन साबित रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खड़े हुए और उन्होंने ने फरमाया, हज़रात! क्या आप लोगों को मालूम नहीं है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम

मुहाजिरीन में से थे लिहाजा उन का नाइब और खलीफा भी मुहाजिरीन ही में से होगा और जिस तरह हम लोग पहले हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के मुआविन व मददगार रहे अब उसी तरह खलीफा रसूल के मददगार रहेंगे यह फरमाने के बाद उन्होंने हज़रत अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हाथ पकड़ा और कहा कि अब यह तुम्हारे वाली हैं और फिर हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आप से बैअत की, इस के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने और फिर तमाम अन्सार व मुहाजिरीन ने आप से बैअत की।

इस के बाद हज़रत अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मिम्बर पर रौनक अपरोज़ हुए और एक निगाह डाली तो उस मजमअ में हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को नहीं पाया, फरमाया कि उन को बुलाया जाए, जब हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आए तो हज़रत अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन से फरमाया कि आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की फूफी के साहिबज़ादे और हुजूर के खास सहाबियों में से हैं, मुझे उम्मीद है कि आप मुसलमानों में इख़्तिलाफ नहीं पैदा होने देंगे। यह सुन कर उन्होंने ने कहा कि ऐ खलीफा रसूलुल्लाह! आप कोई फिक्र न करें, यह कहने के बाद खड़े हुए और आप से बैअत कर ली।

फिर हज़रत अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मजमअ पर एक नज़र डाली तो उस में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मौजूद न थे, फरमाया कि अली भी नहीं हैं, उन को भी बुलाया जाए, जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तशरीफ लाए तो आप ने फरमाया कि ऐ अबू तालिब के साहिबज़ादे! आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के चचा-ज़ाद भाई और उन के दामाद हैं, मुझे उम्मीद है कि आप इस्लाम को कमज़ोर होने से बचाने में हमारी मदद करेंगे, उन्होंने ने भी हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु तआला

अन्हु की तरह कहा कि ऐ खलीफए रसूलुल्लाह! आप कुछ फिक्र न करें, यह कह कर उन्होंने ने भी बैअत कर ली। (तारीखुल् खुलफा) और मदारिजुन् नुबुव्वत में है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया: **فَلَمَّا رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَتَمَّ الَّذِي يُؤَخَّرُ** यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने आप को आगे बढ़ाया तो फिर कौन शख्स आप को पीछे कर सकता है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इस फरमान में उस वाकिआ की जानिब इशारा है जो सरकारे अक्वदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपनी अलालत के ज़माने में हज़रत अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को आगे बढ़ाया और आपही को तमाम सहाबा का इमाम बनाया। यहां तक कि इब्ने जुमआ की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने लोगों को हुक्म दिया कि वह अबू बकर के पीछे नमाज़ पढ़ें मगर इत्तिफाक से उस वक़्त हज़रत अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मौजूद न थे तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आगे बढ़े ताकि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَالْمُسْلِمُونَ اِلَّا بِاَمْرِ يَصْلِيْ بِالنَّاسِ اَبُو بَكْرٍ** यानी नहीं, नहीं, नहीं अल्लाह और मुसलमान अबू बकर ही से राज़ी हैं वही लोगों को नमाज़ पढ़ाएंगे।

(तारीखुल् खुलफा:43)

बहरहाल इस तरह हज़रत अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मुत्तफका तौर पर खलीफा तस्लीम कर लिया गया और किसी ने इख़िलाफ नहीं किया। और अल्लाह के महबूब दानाए ख़िफाया व गुयूब (छुपी और पोशीदा को जानने वाले) जनाब अहमदे मुज्ताबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का फरमान हर्फ बहर्फ सही हुआ कि मेरे बाद ख़िलाफत के बारे में खुदाए तआला और मोमिनीन अबू बकर के अलावा किसी को क़बूल न करेंगे। और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का फरमान क्यों न सही हो कि

वह अल्लाह के प्यारे महबूब हैं, तो नदी का बहता हुआ धारा रुक सकता है, दरख्त अपनी जगह से खिसक सकता है बल्कि पहाड़ भी अपनी जगह से टल सकता है मगर अल्लाह के प्यारे महबूब का फरमान नहीं टल सकता है। (एक बार सब लोग मिल कर बुलंद आवाज़ से दुरुद शरीफ पढ़े।)

आप की खिलाफत पर आयते कुरआनी

हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की खिलाफत का इस्तिदलाल उलमाए किराम की एक जमाअत ने इस आयते करीमा से किया है: **يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَنْ يَرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَسَوْفَ يَأْتِي اللَّهَ بِقَوْمٍ يُضَاهِيهِمْ وَيُجَاهِدُونَ أَدْنَىٰ** यानी ऐ ईमान वालो! तुम में से जो कोई अपने दीन से फिर जाएगा तो अन्करीब अल्लाह तआला ऐसे लोगों को लाएगा कि वह अल्लाह के प्यारे हैं और अल्लाह उन का प्यारा है। वह लोग मुसलमानों पर नर्म होंगे और काफिरों पर सख्त। अल्लाह की राह में वह लोग जिहाद करेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत से नहीं डरेंगे। (पारा:6, रुकूअ:12)

मुफस्सिरीने किराम इस आयते करीमा की तफसीर में फरमाते हैं कि “कौम” से मुराद हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और उन के अस्थाब हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की वफात के बाद जब कुछ अरब इस्लाम से बरगश्ता हो गए तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और उन के अस्थाब ही ने मुरतदों से जिहाद किया और फिर उन को मुसलमान बनाया। और हज़रत अबू कतादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के विसाल फरमाने के बाद जब अरब के कुछ लोग मुरतद हुए और हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन से किताल फरमाया तो उस ज़माने में हम लोग आपस में कहा करते थे कि आयते करीमा: **فَسَوْفَ يَأْتِي اللَّهَ بِقَوْمٍ**

هُجْرَتِ اَبُو بَكْرٍ سِيْدِيكَ رَاجِيْیَیْلَلاھُ تَاْاَلَا اَنْھُ اَوْر
 اُنْ كَے اَسْتِاْاَبْ هِیْ كِیْ شَاْاَنْ مَےْ نَاْجِیْلْ هُوْیْ هَیْ ।

और पारा:26, रुकूअ:10 में हैं: قُلْ لِلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتَعْبُؤْنَ اِلٰی قَوْمٍ اٰوٰی اَنْھُمْ اَوْیَلُوْنَ
 یٰۤاَسْ یٰۤاَسْ فَرِیْاْیَلُوْکُمْ اَوْیَلُوْنَ यानी इन गवारों से फरमाओ जो कि पीछे रह
 गए कि अन्करीब एक सख्त लड़ाई वाली कौम की तरफ बुलाए जाओगे
 कि उन से लड़ो या वह मुसलमान हो जाएं।

हजरत सदरुल्ल अफाजिल मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन साहब
 मुरादाबादी रहमतुल्लाहि तआला अलैह इस आयते करीमा की तफसीर में
 तहरीर फरमाते हैं कि उस कौम से बनी हुनैफा यमामा के रहने वाले जो
 मुसैलमए कज्जाब की कौम के लोग हैं वह मुराद हैं जिन से हजरत अबू
 बकर सिद्दीक रजियल्लाहु तआला अन्हु ने जंग फरमाई और ऐसा ही
 तबरानी में जुहरी से मरवी है। इसी लिये हजरत इब्ने अबी हातिम और
 इब्ने कुतैबा फरमाते हैं कि यह आयते करीमा हजरत अबू बकर सिद्दीक
 रजियल्लाहु तआला अन्हु की खिलाफत पर हुज्जत और वाजेह दलील है
 इस लिये कि आप ही ने मुरतदों से क़िताल की तरफ दअवत दी।

और हजरत शेख अबुल हसन अश्शरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह
 कहते हैं कि मैं ने अबू अब्बास बिन शुरैह को यह फरमाते हुए सुना है
 कि हजरत अबू बकर सिद्दीक रजियल्लाहु तआला अन्हु की खिलाफत
 कुरआने करीम की इस आयत से साबित है, इस लिये कि तमाम
 उलमाए किराम का इस बात पर इत्तिफाक है कि इस आयते करीमा के
 नाज़िल होने के बाद जिन लोगों ने कि ज़कात अदा करने से इनकार
 कर दिया यानी उस की फर्ज़ियत के मुन्किर हो गए थे और जो लोग
 कि मुरतद हो गए थे सिर्फ हजरत अबू बकर सिद्दीक रजियल्लाहु
 तआला अन्हु ने लोगों को उन से क़िताल की दअवत दी और उन से
 जंग की। लिहाज़ा यह आयते करीमा आप की खिलाफत पर दलालत
 करती है और आप की इताअत को लोगों पर फर्ज़ करती है। इस लिये
 कि अल्लाह तआला ने आयते करीमा के आखिर में वाजेह अल्फाज़ के

साथ फरमा दिया है कि जो कोई उस को नहीं मानेगा वह दर्दनाक अज़ाब में मुब्तला होगा।

आप अफ़ज़लु बशर बादलू अंबिया हैं

अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम व रज़ियल्लाहुत तआला अन्हु

उलमाए अहले सुन्नत व जमाअत का इस बात पर इज्माअ व इत्तिफाक है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के बाद तमाम लोगों में सब से अफ़ज़ल हैं। हदीस शरीफ में हैं कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **مَا طَلَعَتِ الشَّمْسُ وَلَا غَرَبَتْ عَلَى أَحَدٍ أَفْضَلَ مِنْ أَبِي بَكْرٍ إِلَّا أَنْ يَكُونَ نَبِيًّا** यानी सिवाए नबी के और कोई शख्स ऐसा नहीं कि जिस पर आफताब तुलूअ और गुरूब हुआ हो और वह हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से अफ़ज़ल हो। मतलब यह है कि दुनिया में नबी के बाद उन से अफ़ज़ल कोई पैदा नहीं हुआ। और एक दूसरी हदीस में आकाए दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने यूं इरशाद फरमाया है: **أَبُو بَكْرٍ الصِّدِّيقُ خَيْرُ النَّاسِ إِلَّا أَنْ يَكُونَ نَبِيًّا** यानी हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लोगों में से सब से बेहतर हैं अलावा इस के कि वह नबी नहीं हैं।

एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु भिम्बर पर रौनक अपरोज़ हुए और फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अफ़ज़लुन् नास यानी लोगों में सब से अफ़ज़ल हैं, अगर किसी शख्स ने इस के खिलाफ कहा तो वह मुफ्तरी और कज़़ाब है, उस को वह सज़ा दी जाएगी जो इफ्तिरा परदाज़ों के लिये शरीअत ने सज़ा मुकर्र की है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं: **خَيْرُهُلِهِ الْأُمَمُ بَعْدَ نَبِيِّهَا** यानी इस उम्मत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद सब से बेहतर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु

तआला अन्हुमा हैं। अल्लामा ज़हबी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फरमाते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह कौल उन से तवातुर के साथ मरवी है। (तारीखुल खुलफा:31)

और बुखारी शरीफ में है कि हज़रत मुहम्मद बिन हनफिय्यह रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं कि मैं ने अपने वालिदे गिरामी हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पूछा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद लोगों में कौन सब से अफज़ल है? قَالَ فرमाया कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सब से अफज़ल हैं, मैं ने अर्ज किया कि फिर उन के बाद? قَالَ عُمرُ فرमाया कि उन के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सब से अफज़ल हैं। हज़रत मुहम्मद बिन हनफिय्यह फरमाते हैं: عَیْتُكَ أَنْ یُقُولَ عُثْمَانُ यानी मैं डरा कि अब इस के बाद हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का नाम लेंगे तो मैं ने कहा कि इस के बाद आप सब से अफज़ल हैं قَالَ لاَ هَذَا هज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि मैं तो मुसलमानों में से एक आदमी हूँ यानी अज़ राहे इन्किसारी फरमाया कि मैं एक मामूली मुसलमान हूँ। (मिशकात शरीफ:555)

और बुखारी शरीफ में है कि हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ज़ाहिरी हयात में हम लोग हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बराबर किसी को नहीं समझते थे यानी वही सब से अफज़ल व बेहतर क़रार दिये जाते थे। फिर हज़रत उमर को और उन के बाद हज़रत उस्मान को रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फिर हज़रत उस्मान के बाद हम सहाबए किराम को उन के हाल पर छोड़ देते थे और उन के दरमियान किसी को फज़ीलत नहीं देते थे। (मिशकात शरीफ:555)

और हज़रत अबू मन्सूर बग़दादी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फरमाते हैं कि इस बात पर उम्मत मुस्लिमा का इज्माअ और इत्तिफाक है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद हज़रत

अबू बकर सिद्दीक, उन के बाद हज़रत उमर फारूक फिर हज़रत उस्माने उन के बाद हज़रत अली और फिर अशरफ़ मुबशशस के बाकी हज़रात सब से अपजल हैं। उन के बाद बाकी अस्हाबे बद्र फिर बाकी अस्हाबे उहद, उन के बाद बैअतुर रिज्जान के सहाबा फिर दीगर अस्हाबे रसूल सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम तमाम लोगों से अपजल हैं। (तारीखुल् खुलफा:30) एक बार सब लोग मिल कर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़ें।

सिद्दीक़े अब्बर और आयाते कुरआनी

बिरादराने इस्लाम! हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु की तारीफ़ व तौसीफ़ में कुरआने मजीद की बहुत सी आयाते करीमा नाज़िल हुई हैं, यहां तक कि बहुत से बुजुर्गों ने इस मौजूज़ पर मुस्तक़िल किताबें लिखी हैं। हम उन में से चन्द आयाते करीमा आप लोगों के सामने पेश करते हैं

खुदाए अज़्ज़ व जल्ल इरशाद फरमाता है: **وَالَّذِي خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ وَإِنَّكَ مُتَعَلِّمٌ** यह आयते मुबारका 24वें पारा के पहले रुकूअ की है जिस की तिलावत का शर्फ़ हम आज की शुरु तवरीर में पहले हासिल कर चुके हैं। इस आयते करीमा का मतलब यह है कि जो सच्चाई लाया यानी सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम और जिन्होंने उन की तस्दीक़ की यानी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु यही लोग मुत्तकी हैं।

इस आयते करीमा की तपसीर में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु से ऐसे ही मरवी है **الَّذِي خَلَقَ الْإِنْسَانَ** यानी से मुराद रसूले खुदा सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम हैं और **مَنْ** से मुराद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु हैं जिन्होंने सब से पहले हुज़ूर की तस्दीक़ की। ऐसा ही तपसीरे मदरिक में भी है। और इसी को हज़रत इमाम राजी रहमतुल्लाहि तअ़ाला अलैहि ने तरजीह दी है। और तपसीरे रूहुल बयान ने भी। लिहाज़ा इन मुफ़स्सिरीने किराम के बयान

से साबित हुआ कि खुदाए अज़्ज व जल् ने इस आयते मुबारका में रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को भी मुत्तकी फरमाया है। मालूम हुआ कि वह इस उम्मत के सब से पहले मुत्तकी हैं और कियामत तक पैदा होने वाले सारे मत्तकियों के सरदार और सैय्यिदुल मुत्तकीन हैं। इसी लिये अज़्जल हज़रत फाज़िले बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं:

अस्दकुस् सादिकीन सैय्यिदुल् मुत्तकीन

चश्म व गोशे विज़ारत पे लाखों सलाम

और पारा:10, रुकूअ:11 में है:

لَا تَنْصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ النَّبِيِّ إِذْ هُمْ فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِقُوَّةٍ لَمْ يَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَى وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

तमाम मुफस्सिरीने किराम का इस बात पर इत्तिफाक़ है कि यह आयते करीमा हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शान में नाज़िल हुई है। अब इस आयते करीमा का मतलब मुलाहेज़ा फरमाएं। खुदाए अज़्ज जल् इरशाद फरमाता है: لَا تَنْصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ النَّبِيِّ إِذْ هُمْ فِي الْغَارِ यानी ऐ मुसलमानो! अगर तुम लोग मेरे रसूल की मदद न करो तो बेशक अल्लाह ने उन की मदद फरमाई जब काफिरों की शरारत से उन्हें बाहर तशरीफ़ ले जाना हुआ सिर्फ़ दो जान से जब वह दोनों यानी हुज़ूर सैय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु गार में थे, إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا जब रसूल अपने यारे गार हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फरमाते थे कि ग़म न कर बेशक अल्लाह हमारे साथ है, فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِقُوَّةٍ لَمْ يَرَوْهَا तो अल्लाह ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर अपना सकीना उतारा। यानी उन के दिल को इत्मीनान अता फरमाया और

ऐसी फौजों से उस की मदद फरमाई जिन को तुम लोगों ने नहीं देखा। और वह मलाइका थे जिन्होंने ने कुफ़र के रुख फेर दिये यहां तक कि वह लोग आप को देख ही न सके **وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَى** और काफ़िरी की बात को नीचे कर दी, यानी उन की दअवते कुफ़ व शिर्क को पस्त कर दिया, **وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ** और अल्लाह ही का बोल बाला है और अल्लाह ग़ालिब हिक्मत वाला है।

इस आयते करीमा में जो आकाए दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का यह कौल नक़ल किया गया है कि आप ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फरमाया **لَا تُحْزَنُوا إِلَّاهُ مَنَّا** यानी ग़म मत करो कि अल्लाह हमारे साथ है तो इस मौक़े पर हज़रत सिद्दीक़े अक़बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपना ग़म नहीं था बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का ग़म था आप फरमाते थे **إِنْ قُتِلَ فَرَجُلٌ وَاحِدٌ وَأُفْلِكَ عَلَيْكَ الْإِثْمُ** यानी अगर मैं क़त्ल कर दिया गया तो सिर्फ़ एक फ़र्द हलाक होगा और ऐ अल्लाह के रसूल! अगर आप क़त्ल कर दिये गए तो पूरी उम्मत हलाक हो जाएगी।

बहरहाल यह आयते करीमा हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तारीफ़ व तौसीफ़ में बिल्कुल वाज़ेह है और आप के सहाबी होने पर नस्से क़तई है कि खुदाए अज़्ज़ व जल् ने **أَيُّقُولُ لِصَاحِبِهِ** फरमाया। इसी लिये हज़रत हुसैन बिन फज़ल रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने फरमाया कि **مَنْ قَالَ إِنْ أَبَا بَكْرٍ لَمْ يَكُنْ صَاحِبَ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** यानी जो शख्स कहे कि हज़रत अबू बकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सहाबी नहीं थे तो वह नस्से कुरआनी के इनकार करने के सबब काफ़िर है।

और 23वें पारे सूरए वल्लैल की आयते करीमा है **وَسَوْفَ نَحْطِيهِ الْآتَمَى الَّذِي** यानी और जहन्नम से बहुत दूर रखा जाएगा वह शख्स जो कि सब से बड़ा परहेज़गार है जो कि अपना माल देता है खुदाए तआला के नज़्दीक़ सुथरा होने के लिये न कि रिया, सुमआ या इन के

अलावा किसी दूसरे मकसद के लिये खर्च करता है।

यह आयते मुबारका भी हज़रत अबू बकर सिदीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की फज़ीलत में नाज़िल हुई है। हज़रत सदरुल अफ़ज़िल मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि जब हज़रत अबू बकर सिदीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत बिलाल को बहुत गिरां कीमत पर ख़रीद कर आज़ाद कर दिया तो कुप्फ़ार को हैरत हुई और उन्होंने कहा कि हज़रत सिदीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ऐसा क्यों किया, शायद बिलाल पर उन का कोई ऐहसान होगा जो उन्होंने ने इतनी गिरां कीमत देकर ख़रीदा और आज़ाद कर दिया। इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई और ज़ाहिर फरमा दिया गया कि हज़रत सिदीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह फ़ैज़ल मेहज़ अल्लाह तआला की रज़ा के लिये है किसी के ऐहसान का बदला नहीं और उन पर हज़रत बिलाल वगैरा कोई ऐहसान है।

इस आयते करीमा में हज़रत अबू बकर सिदीक़ को "أَفْضَى" यानी सब से बड़ा परहेज़गार फरमाया गया है। और पारा:26, रुकूअ:14 की आयते मुबारका है اِنْ كُنْتُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَفْضَى يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا यानी बेशक अल्लाह के यहां तुम में सब से ज़्यादा मुक़र्रम और इज़्ज़त वाला वह है जो सब से बड़ा परहेज़गार है। तो इन दोनों आयते करीमा के मिलाने से मालूम हुआ कि हज़रत अबू बकर सिदीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खुदाए अज़्ज़ व जल्ल के नज़्दीक सब से ज़्यादा मुक़र्रम और इज़्ज़त वाले हैं।

सिदीक़े अक्बर और अहादीसे करीमा

हज़रत अबू बकर सिदीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की फज़ीलत और उन की अज़मत के इज़हार में बहुत सी हदीसें वारिद हैं। तिमिज़ी शरीफ की हदीस है कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया مَا لِيْ بِأَحَدٍ قَطُّ مَنَّفَعٌ مَّا لِيَ بِيْكَ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا यानी किसी शख्स के माल ने मुझ को इतना फाइदा नहीं पहुंचाया जितना फाइदा कि अबू

बकर के माल ने पहुंचाया है।

(मिशकात शरीफ:555)

और यह हदीस शरीफ भी तिर्मिजी में है कि आकाए दो आलम ﷺ ने हज़रत अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फरमाया اَنْتَ صَاحِبِيْ فِي الْغَارِ وَصَاحِبِيْ فِي الْحَوْضِ यानी गारे सौर में तुम मेरे साथ रहे और हौजे कौसर पर भी तुम मेरे साथ रहोगे।

और तिर्मिजी शरीफ में हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से मरवी है कि मेरे वालिदे गिरामी हज़रत अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की खिमदत में हाजिर हुए तो हुज़ूर ने फरमाया اَنْتَ عَيْتُ الْوَيْلِ مِنَ النَّارِ यानी तुझे अल्लाह ने जहन्नम की आग से आज़ाद कर दिया है। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं कि उसी रोज़ से मेरे वालिदे मोहतरम का नाम अतीक पड़ गया।

(मिशकात शरीफ:556)

और अबू दाऊद शरीफ की हदीस है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मुखातब करते हुए फरमाया اَمَّا اَنْتَ يَا اَبَا بَكْرٍ اَوَّلُ مَنْ يَدْخُلُ الْحَنَّةَ यानी ऐ अबू बकर सुन तो कि मेरी उम्मत में सब से पहले तुम जन्नत में दाखिल होगे।

(मिशकात शरीफ:556)

और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि एक चांदनी रात में जब कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का सरे मुबारक मेरी गोद में था मैं ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! क्या किसी शख्स की नेकियां इतनी भी हैं जितनी कि आसमान पर सितारे हैं, आप ने फरमाया हां, उमर की नेकियां इतनी ही हैं। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं कि फिर मैं ने पूछा और अबू बकर की नेकियों का क्या हाल है? हुज़ूर ने फरमाया उमर की सारी उम्र की नेकियां अबू बकर की एक नेकी के बराबर हैं रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा।

(मिशकात शरीफ:560)

और हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया **حُبُّ اِيْنِيْ نَكْرٍ** यानी अबू बकर से मुहब्बत करना और उन का शुक अदा करना मेरी पूरी उम्मत पर वाजिब है। (तारीखुल खुलफा:40)

और हज़रत अबू दर्दा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बारगाहे अक्दस में हाज़िर था कि हज़रत अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आए और सलाम के बाद उन्होंने ने अर्ज किया कि या रसूलुल्लाह! मेरे और उमर बिन खत्ताब के दरमियान कुछ बातें हो गई हैं फिर मैं ने नादिम होकर उन से मअज़िरत तलब की लेकिन उन्होंने ने मअज़िरत कबूल करने से इनकार कर दिया। यह सुन कर हुज़ूर ने तीन बार इरशाद फरमाया कि ऐ अबू बकर अल्लाह तआला तुम को माफ़ फरमाए।

थोड़ी देर के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु भी हुज़ूर की बारगाह में आ गए, उन को देखते ही हुज़ूर के चेहरा अक्दस का रंग बदल गया, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को रंजीदा देख कर हज़रत उमर दो ज़ानू बैठे और अर्ज किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! मैं इन से ज़्यादा कुसूर वार हूँ, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया **اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الْكُفْرَ فَقُلْتُمْ كَذَبْتَ وَقَالَ اَبُو بَكْرٍ صَلَفَتْ وَاَسَاسِيْ بِنَفْسِهِ وَمَالِه** यानी जब अल्लाह ने मुझे तुम्हारी जानिब मबऊस फरमाया तो तुम लोगों ने मुझ झुठलाया मगर अबू बकर ने मेरी तस्दीक की और अपनी जान व माल से मेरी ग़मख़्तारी मदद की तो क्या आज तुम लोग मेरे ऐसे दोस्त को छोड़ दोगे? और इस जुमला को हुज़ूर ने दो बार फरमाया। (तारीखुल खुलफा:37)

हज़रत मिक्दाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से हज़रत अकील बिन अबी तालिब ने कुछ संख़्त कलामी की मगर हज़रत अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हुज़ूर की कराबत दारी का ख़्याल करते हुए हज़रत अकील रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को कुछ नहीं कहा और हुज़ूर

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की खिदमत में पूरा वाकिआ बयान किया, हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पूरा माजरा सुन कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला व अलैहि व सल्लम मजलिस में खड़े हुए और फरमाया **الْأَسَدُ عَلَى صَاحِبِي مَا شِئْتُمْ وَشَاءَ فَوَاللَّهِ مَا يَنْكُرُكُمْ رَجُلٌ إِلَّا عَلَى بَابِ نَبِيٍّ** **ظُلْمَةُ الْإِبَابِ أَيْ نَكِرَ فَإِنَّ عَلَى بَابِهِ النُّورَ فَوَاللَّهِ لَقَدْ قُلْتُمْ كَذِبْتَ وَقَالَ أَبُو بَكْرٍ صَدَقْتَ وَأَسْكَنْتُمْ الْأَمْوَالَ** यानी ऐ लोगो! सुन लो, मेरे दोस्त को मेरे लिये छोड़ दो, तुम्हारी क्या हैसियत है? और उनकी हैसियत क्या है? तुम्हें कुछ मालूम है? खुदा की कसम तुम लोगों के दरवाजों पर अंधेरा है मगर अबू बकर के दरवाजे पर नूर की बारिश हो रही है। खुदाए जुलजलाल की कसम तुम लोगों ने मुझे झुठलाया और अबू बकर ने मेरी तस्दीक की, तुम लोगों ने माल खर्च करने में बुख़्त से काम लिया, अबू बकर ने मेरे लिये अपना माल खर्च किया और तुम लोगों ने मेरी मदद नहीं की मगर अबू बकर ने मेरी ग़मख़्तारी की और मेरी इत्तिबाअ की। (तारीखुल खुलफा:37)

और मिश्कात शरीफ:556 में है कि एक रोज़ हज़रत उमर फारूक आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सामने हज़रत अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ज़िक्र किया गया तो वह रोने लगे और फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के ज़ाहिरी ज़माने में हज़रत अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक दिन रात में जो अमल और बेहतरीन काम किये हैं काश कि मेरी पूरी ज़िंदगी का अमल उनकी एक दिन रात के अमल के बराबर होता। उन की एक रात का अमल तो यह है कि जब वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ हिज़्रत की रात ग़ारे सौर पहुंचे (जो तक्रीबन ढाई किलो मीटर बुलंद है) तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया **وَاللّٰهُ لَا تَدْعُهُ حَتَّىٰ تَخْلُ بِكَ** यानी खुदा की कसम आप ग़ार में दाखिल नहीं होंगे जब तक कि आप के पहले मैं न दाखिल हो जाऊं ताकि अगर कोई मूज़ी (तक्लीफ देने वाली) चीज़ सांप

यगैरा हो तो उस से तक्लीफ मुझी को पहुंचे और आप महफूज रहें। फिर आप गार के अन्दर दाखिल हुए और उस को खूब साफ किया और जब गार के अन्दर उन को कुछ सुखाख नजर आए तो उन को उन्होंने ने अपनी लुंगी में से कपड़ा फाड़ कर भर दिया और दो सुखाखों पर उन्होंने ने अपनी ऐड़ियां लगा दीं, इस के बाद रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से अर्ज किया कि अब आप अन्दर तशरीफ लाइये, हुजूर गार के अन्दर तशरीफ ले गए और हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की गोद में सर रख कर सो गए, अभी हुजूर आराम ही फरमा रहे थे कि उसी हालत में हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पांव में सूखाख के अन्दर से सांप ने काट लिया मगर आप ने हरकत नहीं की और उसी तरह बैठे रहे, इस लिये कि कहीं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की आंख न खुल जाए लेकिन सांप के ज़हेर की इन्तिहाई तक्लीफ के सबब आप की आंखों से आंसू निकल पड़े जो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के चेहरए अक़दस पर गिरे, हुजूर की आंख खुल गई और आप से दरियाफ्त फरमाया अबू बकर क्या हुआ? قَالَ لَيْسَ بِلَا شَيْءٍ, अर्ज किया ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे मां बाप आप पर कुर्बान हों मुझ को सांप ने काट लिया है, हुजूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उन के ज़ख्म पर अपना लुआबे दहन लगा दिया तो फौरन उनकी तक्लीफ जाती रही, मगर अरसए दराज़ के बाद सांप का वही ज़हेर फिर लौट आया जो आप के विसाल का सबब बना यानी उसी ज़हेर की वजह से आप की वफात हुई।

और हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के एक दिन का बेहतरीन अमल यह है कि जब हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की वफात के बाद अरब के कुछ लोग मुरतद हो गए और उन्होंने ने कहा कि हम ज़कात नहीं देंगे यानी उस की फर्जियत के

मुन्किर हो गए तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि अगर मुझ को ऊंट की रस्सी जो लोगों पर वाजिब होगी उस के देने से भी इनकार करेंगे तो मैं उन से जिहाद करूंगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि उस वक़्त मैं ने उनसे अर्ज किया **يَا عَلِيَّةُ رَسُولُ اللَّهِ تَأْلِفُ النَّاسَ وَارْتَفُقَ بِهِمْ** यानी लोगों के साथ उल्फ़त से पेश आइये और नमी से काम लीजिये तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि तुम अय्यामे जाहिलिय्यत में तो बड़े सख़्त और गुज़बनाक थे क्या इस्लाम में दाखिल हो कर ज़लील व ख़्वार और पस्त हिम्मत हो गए हो **إِنَّ قَدَانَفَطَعَ الْوَحْيُ وَتَمَّ الْوَيْنُ يَنْقُصُ وَالْآخَى** यानी वही का आना बन्द हो गया है और दीने इस्लाम कामिल हो चुका है तो क्या मेरी ज़िंदगी में वह कमज़ोर व नाक़िस हो जाएगा? मतलब यह है कि मैं दीने इस्लाम को अपनी ज़िंदगी में कमज़ोर व नाक़िस हरगिज़ नहीं होने दूंगा और जो लोग कि ज़कात देने से इनकार कर रहे हैं मैं उन से जिहाद ज़रूर करूंगा। एक बार हम सब मिल कर बुलंद आवाज़ से सरकारे मदीना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उन के अस्हाबे किबार पर दुरूद व सलाम का नज़्राना पेश करें।

यह चन्द हदीसों हम ने आप के सामने अफज़लुल बशर बादलू अंबियाए हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शान में पेश की हैं। इन के अलावा और भी बहुत सी हदीसों इसी किस्म के मज़मून की हज़रत सिद्दीक़े अक्बर की तारीफ व तौसीफ में वारिद हुई हैं। जिन से साफ़ ज़ाहिर होता है कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के नज़्दीक़ सारे सहाबा में सब से ज़्यादा मुक़र्रब, सब से ज़्यादा प्यारे और सब से ज़्यादा फज़ीलत व अज़मत वाले हज़रत सिद्दीक़े अक्बर ही हैं और हुज़ूर ख़ातिमुलू अंबिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की जा नशीनी के सब से पहले मुस्तहिक् वही हैं। *रज़ियल्लाहु तआला अन्हु व अज़ाहु अन्हु व अन् साइरिल मुस्लिमीन।*

आप का नाम व नसब

बिरादराने इस्लाम! आप का नाम अब्दुल्लाह है और अबू बकर से जो आप मशहूर हैं तो यह आप की कुन्नियत है और सिद्दीक व अतीक आप का लक़ब है। आप के वालिद का नाम उस्मान और कुन्नियत अबु कुहाफा है और आप की वालिदा का नाम सलमा है जिन की कुन्नियत उम्मुल्-खैर है। आप का सिलसिलए नसब सातवीं पुश्त में मुरा बिन कअब पर हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के शजरए नसब से मिल जाता है। आप वाकिए फील के तकरीबन ढाई बरस बाद मक्का शरीफ में पैदा हुए।

अहदे तिफली में बुत-शिकनी

जमानए जाहिलिय्यत में भी आप ने कभी बुत-परस्ती नहीं की है। आप हमेशा इस के खिलाफ रहे, यहां तक कि आप की उम्र शरीफ जब चन्द बरस की हुई तो उसी जमाने में आप ने बुत-शिकनी फरमाई। जैसा कि अअला हज़रत इमाम अहले सुन्नत फाजिले बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपने रिसालए मुबारका “तंजीहुल् मकानतिल हैदरिया” सफ़हा:13 में तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वालिद माजिद हज़रत अबू कुहाफा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु (कि वह भी बाद में सहाबी हुए) जमानए जाहिलिय्यत में उन्हें बुत-खाना ले गए और बुतों को दिखा कर उन से कहा **هَذِهِ إِلَهُكَ اللَّهُمَّ الْعُلَى فَاَسْجُدْ لَهَا** यानी यह तुम्हारे बुलंद व बाला खुदा हैं, इन्हें सज्दा करो। वह तो यह कह कर बाहर चले गए। सैय्यिदना सिद्दीक अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कज़ाए मुबरक की तरह बुत के सामने तशरीफ लाए और बराए इज़हारे इज्जे सनम (बुतों की आजिजी को ज़ाहिर करने के लिये) व जेहल सनम परस्त (बुतों की पूजा करने वालों की जहालत को ज़ाहिर करने के लिये) इरशाद फरमाया **إِنِّي خَائِعٌ فَاطْعُونِي** मैं भूका हूं मुझे खाना दे, वह कुछ न बोला,

फरमाया **يَا نَارُ كُونِي بَرْدًا وَسَآئِرُ الْأَشْيَاءِ فَكُونِي نَارًا** यानी मैं नंगा हूँ मुझे कपड़ा पहना। वह कुछ न बोला। सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक पत्थर हाथ में लेकर फरमाया मैं तुझ पर पत्थर मारता हूँ **فَإِنْ كُنْتَ إِلَّا فَاتِنًا فَتَفَسَّدِي** अगर तू खुदा है तो अपने आप को बचा। वह अब भी निरा बुत बना रहा। आखिर आप ने बकुव्वते सिद्दीकी उस को पत्थर मारा तो वह खुदाए गुमराहां (गुमराहों का खुदा यानी बुत) मुंह के बल गिर पड़ा। उसी वक़्त आप के वालिद माजिद वापस आ रहे थे, यह माजरा देख कर फरमाया कि एक मेरे बच्चे तुम ने यह क्या किया? फरमाया कि वही किया जो आप देख रहे हैं। आप के वालिद उन्हें उन की वालिदा माजिदा हज़रत उम्मुल ख़ैर के पास रज़ियल्लाहु तआला अन्हा (कि वह भी सहाबिया हुई) लेकर आए और सारा वाकिआ उन से बयान किया। उन्होंने ने फरमाया इस बच्चे से कुछ न कहो कि जिस रात यह पैदा हुए मेरे पास कोई न था, मैं ने सुना कि हातिफ कह रहा है **بِأَمْرِ اللَّهِ عَلَى التَّحْوِي** यानी ऐ अल्लाह की सच्ची बन्दी! तुझे खुशख़बरी हो उस आज़ाद बच्चे की जिस का नाम आसमानों में सिद्दीक़ है और जो मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का यार व रफीक़ है।

رواه القاضي أبو حسين أحمد بن محمد الزبيدي بسنده في معالي الفرس إلى عوالي العرش-

आप अहदे जाहिलिय्यत में

ज़मानए जाहिलिय्यत में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपनी बिरादरी में सब से ज़्यादा मालदार थे, मुख्वत व ऐहसान का मुजस्समा थे, कौम में बहुत मोअज़्ज़ समझे जाते थे, गुमशुदा की तलाश आप का शेवा रहा और मेहमानों की आप ख़ूब मेज़बानी फरमाते थे। आप का शुमार रुअसाए कुरैश में होता थे, वह लोग आप से मशवरा लिया करते थे और आप से बे इन्तिहा मुहब्बत करते थे। आप कुरैश के उन ग्यारह लोगों में से हैं जिन को अय्यामे जाहिलिय्यत और ज़मानए इस्लाम दोनों में इज़्ज़त व बुजुर्गी हासिल रही

कि आप अहदे जाहिलिय्यत में “खूं बहा” और जुमाने के मुकद्दमात का फैसला किया करते थे जो उस ज़माने का बहुत बड़ा ऐज़ाज़ समझा जाता था।

आप ने अहदे जाहिलिय्यत में कभी शराब नहीं पी। एक बार सहाबए किराम के मजमअ में हज़रत अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से दरियाफ्त किया गया कि आप ज़मानए जाहिलिय्यत में शराब पी है, आप ने फरमाया खुदा की पनाह! मैं ने कभी शराब नहीं पी। लोगों ने कहा क्यों? फरमाया كُنْتُ أَصَوْنُ عَرَضِي وَأَحْفَظُ مَرْوِي यानी मैं अपनी इज्ज़त व आबरू को बचाता था और मुरव्वत की हिफाज़त करता था। इस लिये कि जो शख्स शराब पीता है उस की इज्ज़त व नामूस और मुरव्वत जाती रहती है। जब इस बात की ख़बर हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को पहुंची तो आप ने दोबार फरमाया अबू बकर ने सच कहा, अबू बकर ने सच कहा। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु। (तारीखुल खुलफा)

आप का हुलिया

एक शख्स ने हज़रत आइशा सिदीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से अर्ज किया आप हम से हज़रत अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का सरापा और हुलिया बयान फरमाएं तो हज़रत सिदीका ने फरमाया कि आप का रंग सफ़ेद था, बदन एकहरा था, दोनों रुख़्सार अन्दर को दबे हुए थे, पेट इतना बड़ा था कि आप की लुंगी अक्सर नीचे खिसक जाया करती थी, पेशानी पर हमेशा पसीना रहता था, चेहरे पर ज़्यादा गोश्त नहीं था, हमेशा नज़रें नीची रखते थे, पेशानी बुलंद थी, उंगलियों की जड़ें गोश्त से ख़ाली थीं यानी खाइयां खुली रहती थीं, हिना और कतम का खिज़ाब लगाते थे।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मदीना तैय्यिबा तशरीफ लाए तो हज़रत अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अलावा

किसी के बाल सियाह व सफेद मिले हुए खिचड़ी नहीं थे। आप उन खिचड़ी बालों पर हिना यानी मेंहदी और कतम का खिजाब लगाया करते थे। (तारीखुल खुलफा:22) हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बारे में यह जो बयान किया गया है कि आप कतम का खिजाब लगाते थे, इस से आप के मुतअल्लिक़ सियाह खिजाब का गुमान करना यह इस से नील और हिना मिले हुए कि मुतलकन जाइज़ समझ लेना महेज़ ग़लती है। तफ़सील के लिये अज़ला हज़रत फ़ाज़िल बैरलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के रिसालए मुबारका “हक्कुल ऐब फी हुरमति तस्वीदिशू शैब” का मुतालआ करें।

आप का क़बूले इस्लाम

बिरादराने मिल्लत! बहुत से सहाबए किराम व ताबईन इज़ाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम फरमाते हैं कि सब से पहले इस्लाम क़बूल करने वाले हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं। इमाम शअबी फरमाते हैं कि मैं ने हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से पूछा कि सब से पहले इस्लाम लाने वाला कौन है? तो उन्होंने ने फरमाया हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और सुबूत में हज़रत हस्तान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के वह अश्आर पढ़े जो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तारीफ व तौसीफ में हैं और उन में सब से पहले आप के इस्लाम लोने का ज़िक्र है। और इब्ने असाकिर ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की है, उन्होंने ने फरमाया **أَوَّلُ مَنْ أَسْلَمَ مِنَ الرِّجَالِ أَبُو بَكْرٍ** यानी सब से पहले मर्दों में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस्लाम लाए। और इब्ने सअद ने सहाबिए रसूल हज़रत अबू अरवी दौसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की है उन्होंने ने फरमाया **أَوَّلُ مَنْ أَسْلَمَ أَبُو بَكْرٍ الصِّدِّيقُ** यानी सब से पहले जो इस्लाम लाए वह अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं। यहां तक कि हज़रत मैमून बिन मेहरान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से जब दरियाफ़्त किया गया कि

हज़रत अबू बकर सिद्दीक पहले मुसलमान हुए या हज़रत अली? तो उन्होंने ने जवाब में फरमाया **وَاللّٰهُ لَقَدْ اَمَرْتُ اَبُو بَكْرٍ بِالْبَيْتِ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ زَمَنَ** यानी कसम है खुदाए अज़्ज़ व जल्ल की कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बहीरा राहिब ही के ज़माने में नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर ईमान ला चुके थे, जब कि हज़रत अली पैदा भी नहीं हुए थे। (तारीखुल खुलफा:23)

और मुहम्मद बिन इस्हाक़ फरमाते हैं कि मुझ से मुहम्मद बिन अब्दुर रहमान तमीमी ने बयान किया कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने बयान फरमाया कि जब मैं ने किसी को भी इस्लाम की दअ्वत दी तो उस को तरहुद हुआ अलावा अबू बकर के कि जब मैं ने उन पर इस्लाम पेश किया तो उन्होंने ने बग़ैर तरहुद के इस्लाम क़बूल कर लिया। इमाम बैहकी फरमाते हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साबिकुल इस्लाम होने का सबब यह है कि आप नुबुव्वत व रिसालत की निशानियां क़बूल अज़्ज़ इस्लाम ही मालूम कर चुके थे इस लिये जब उन को इस्लाम की दअ्वत दी गई तो उन्होंने ने फौरन इस्लाम क़बूल कर लिया।

और बाज़ मोहदिसीन यूं फरमाते हैं कि ऐलाने नुबुव्वत के क़बूल ही हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दोस्त थे और आप के अख़्लाक़ की उम्दगी, आदत की पाकीज़गी और आप की सच्चाई व दियानतदार पर यकीने कामिल रखते थे तो जब सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उनपर इस्लाम पेश किया तो उन्होंने ने फौरन क़बूल कर लिया। इस लिये कि जो शख़्स ज़िंदगी के आम हालात में झूठ नहीं बोलता और न ग़लत बात कहता है तो भला वह खुदाए जुल-जलाल के बारे में कैसे झूठ बोल सकता है कि उस ने मुझे रसूल बना कर मक्कस फरमाया है। इसी बुनियाद पर हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फौरन बिला तअम्मुल मुसलमान हो गए।

इन तमाम शवाहिद से मालूम हुआ कि हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तमाम सहाबा में सब से पहले इस्लाम कबूल किये हैं। इस लिये बाज़ हज़रत ने यहां तक दअवा किया है कि आप के सब से मुसलमान होने पर इज्माअ है। लेकिन बाज़ लोग कहते हैं कि सब से पहले हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ईमान लाए। और बाज़ लोगों का ख़्याल है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सब से पहले इस्लाम कबूल किया। तो इन तमाम अक्वाल में हमारे इमामे आजम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस तरह तत्बीक़ फरमाई है कि मर्दों में सब से पहले हज़रत अबू बकर सिद्दीक़, औरतों में सब से पहले हज़रत ख़दीजा और लड़कों में सब से पहले हज़रत अली ईमान लाए हैं। रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ख़जमईन।

आप का कमाले ईमान

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ईमान सारे सहाबा में सब से ज़्यादा कामिल था, जिस का सुबूत बहुत से वाकिआत से मिलता है। हुदैबिया में जिन शर्तों पर सुलह हुई उन में एक शर्त यह भी थी कि मक्का के मुसलमानों या काफ़िरों में से अगर कोई शख्स मदीना चला जाए तो वह वापस कर दिया जाएगा लेकिन अगर कोई मुसलमान मदीने से मक्का चला आए तो उसे वापस नहीं किया जाएगा, अभी सुलह नामे पर तरफैन (दोनों ग़िरोह) के दस्तख़त नहीं हुए थे कि अबू जन्दल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो मुसलमान हो चुके थे, मक्का मुअज़्ज़मा से गिरते पड़ते और अपनी बेड़ियां घसीटते हुए हुदैबिया मक़ाम पर मुसलमानों के दरमियान आ गए, सुहैल बिन अम्र ने अबू जन्दल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का बाप था और कुफ़ारे मक्का की तरफ से सुलह की गुप्तगू करने के लिये हुदैबिया आया हुआ था, जब उस ने अपने बेटे को देखा तो कहा कि अबू जन्दल को आप मेरी तरफ वापस कर दें। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व

सल्लम ने फरमाया कि अभी तो सुलह नामे पर फरीकैन के दस्तखत ही नहीं हुए हैं। लिहाजा यह मुआहिदा तुम्हारे और हमारे दस्तखत हो जाने के बाद ही नाफिज होगा। उस ने कहा तो जाइये हम आप से सुलह नहीं करेंगे, हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया ऐ सुहैल! अबू जन्दल को मेरे पास रहने की तुम अपनी तरफ से इजाजत दे दो, उस ने कहा मैं इस बात की हरगिज इजाजत नहीं दे सकता।

जब हज़रत अबू जन्दल रजियल्लाहु तआला अन्हु ने देखा कि अब मैं फिर मक्का लौटा दिया जाऊंगा तो उन्होंने ने सहाबए किराम से फर्याद की और कहा कि ऐ मुसलमानो! देखो मैं काफिरों की तरफ लौटया जा रहा हूं, हालां कि मैं मुसलमान हो चुका हूं और आप लोगों के पास आ गया हूं। और हज़रत अबू जन्दल के बदन पर काफिरों की मार के जो निशानात थे आप मुसलमानों को वह निशानात दिखा दिखा कर रोने लगे, तो मुसलमानों को बड़ा जोश पैदा हो गया यहां तक कि हज़रत उमर रजियल्लाहु तआला अन्हु अल्लाह के महबूब दानाए खिफाया व गुयूब जनाब अहमदे मुज्ताबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बारगाह में पहुंच गए और अर्ज किया, क्या आप अल्लाह के सच्चे रसूल नहीं हैं? इरशाद फरमाया क्यों नहीं, यानी हां मैं अल्लाह का सच्चा रसूल हूं, फिर हज़रत उमर ने अर्ज किया, क्या हम हक़ पर और कुफ़ार बातिल पर नहीं हैं? हुजूर ने फरमाया क्यों नहीं? यानी बेशक हम हक़ पर हैं और कुफ़ार बातिल पर हैं। इस जवाब पर हज़रत उमर ने कहा तो फिर हम दीन के मामले में दब कर क्यों सुलह करें? हुजूर ने फरमाया ऐ उमर! बेशक मैं अल्लाह का रसूल हूं, मैं उस की नाफरमानी कभी नहीं कर सकता और मेरा मददगार वही है। फिर हज़रत उमर ने कहा क्या आप यह नहीं फरमाया करते थे कि हम बैतुल्लाह शरीफ का तवाफ करेंगे? हुजूर ने फरमाया ठीक है, मगर हम ने यह कब कहा था कि इसी साल तवाफ करेंगे। हज़रत उमर ने कहा कि हां यह सही है कि आप ने इसी साल के लिये नहीं फरमाया था।

फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास गए और उन से भी इसी किस्म की गुफ्तुगू की, ती हज़रत सिद्दीक़े अक्बर ने फरमाया: **الْوَعْدَةُ** यानी उन की रकाब थामे रहो और उन के दामन से लगे रहो, बेशक वह अल्लाह के रसूल हैं और अल्लाह उन का मुआविन और मददगार है। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इस जवाब से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का जोश ठंडा हो गया।

हुदैबिया में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने जिस तरह सुलह फरमाई उस से मुसलमानों की नागवारी और रंज व गुम का यह आलम रहा कि तक्मीले मुआहिदा के बाद तीन बार हुज़ूर ने फरमाया कि उठो कुर्बानी करो और सर मुंडा कर एहराम खोल दो मगर कोई उठने को तैयार न होता था यहां तक कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जोश में आकर हुज़ूर सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बारगाह में ऐसी गुफ्तुगू की कि जिस पर वह जिंदगी भर अफसोस करते रहे और माफी के लिये बहुत सी नेकियां करते रहे, मगर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को जो जवाब दिया वह ईमान अफरोज़ जवाब बता रहा है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपनी जगह पर बिल्कुल मुत्मइन थे कि हुज़ूर अल्लाह के रसूल हैं वह जो कुछ कर रहे हैं सब हक़ है। हर हाल में अल्लाह उन की मदद फरमाएगा।

इस वाकिआ से साफ़ ज़ाहिर होता है कि हुज़ूर की रिसालत व नुबुव्वत पर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ईमान सारे सहाबा में सब से ज्यादा कामिल व अक्मल था जिस ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के जोश को भी ठंडा कर दिया।

और शबे मेअराज की सुबह बहुत से मुश्रिकीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास आए और कहा कि आप को

कुछ खबर है? आप के दोस्त मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) कह रहे हैं कि उन्हीं रात का बैतुल मुकद्दस और आसमान वगैरह की सैर कराई गई है। आप ने कहा क्या वाकई वह ऐसा फरमा रहे हैं? उन लोगों ने कहा हां, वह ऐसा ही कह रहे हैं, तो आप ने फरमाया **إِنِّي لَأَصِدِّقُ بِأَعْدَائِي** यानी अगर वह इस से भी ज्यादा बर्द अज कयास और हैरत अंगेज खबर देंगे तो बेशक मैं उस की तस्दीक करूंगा।

और गुज़व बद्र में आप के साहिबज़ादे हज़रत अब्दुर रहमान कुफ़फारे मक्का के साथ थे। इस्लाम कबूल करने के बाद उन्हीं ने अपने वालिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कहा कि आप जंगे बद्र में कई बार मेरी ज़द में आए लेकिन मैं ने आप से सर्फे नज़र की और आप को क़त्ल नहीं किया। इस के जवाब में सिद्दीके अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया **لَوْ أَهْلَفْتُ لِي لَمْ أَصْرِفْ عَنْكَ** यानी ऐ अब्दुर रहमान! कान खोल कर सुन लो कि अगर तुम मेरी ज़द में आ जाते तो मैं सर्फे नज़र न करता बल्कि तुम को क़त्ल करके मौत के घाट उतार देता।

इन वाकिआत से भी वाज़ेह तौर पर मालूम हुआ कि हज़रत सिद्दीके अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ईमान सारे सहाबा में सब से ज्यादा कामिल था, बल्कि दर्जे कमाल की इन्तिहा को पहुंचा हुआ था, यहां तक कि इमामे बैहकी ने शोअबुल ईमान में हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह कौल नक़ल किया है कि पूरी ज़मीन के मुसलमानों का ईमान और हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ईमान अगर वज़न किया जाए तो हज़रत हज़रत सिद्दीके अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ईमान का पल्ला भारी होगा। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु। (तारीखुल खुलफा:40)

एक बार हम सब मिल कर सरकारे मदीना और उन के अस्थाब पर बुलंद आवाज़ से दुरूद व सलाम की डालियां पेश करें।

आप की शुजाअत

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सारे सहाबा में सब से ज़्यादा शुजाअ और बहादुर भी थे। अल्लामा बज़्ज़ार रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने अपनी मुसन्द में तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने लोगों से दरियाफ्त किया कि बताओ सब से ज़्यादा बहादुर कौन है? उन लोगों ने कहा कि सब से ज़्यादा बहादुर आप हैं, हज़रत अली ने फरमाया मैं तो हमेशा अपने जोड़ से लड़ता हूँ, फिर कैसे मैं सब से बहादुर हुआ, तुम लोग यह बताओ कि सब से ज़्यादा बहादुर कौन है? लोगों ने कहा कि हज़रत हम को नहीं मालूम है, आप ही बताएं। आप ने फरमाया कि सब से ज़्यादा शुजाअ और बहादुर हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं, सुनो! जंगे बद्र में हम लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के लिये एक अरीश यानी झोंपड़ा बनाया था ताकि गर्द व गुबार और सूरज की धूप से हुज़ूर महफूज़ रहें तो हम लोगों ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ कौन रहेगा? कहीं ऐसा न हो कि उन पर कोई हमला कर दे **فَوَلَّاهُ** यानी तो खुदा की क़सम इस काम के लिये सिवाए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के कोई आगे नहीं बढ़ा, आप शमशीरे बरहना हाथ में लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के पास खड़े हो गए फिर किसी दुश्मन को आप के पास आने की ज़ुअत नहीं हो सकी और अगर किसी ने ज़ुअत भी की तो आप उस पर टूट पड़े। इस लिये अबू बकर सिद्दीक़ ही सब से ज़्यादा शुजाअ और बहादुर थे।

(तारीख़ुल खुलफ़ा: 25)

और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि एक बार का वाकिआ है कि काफ़िरों ने रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को पकड़ लिया और कहने लगे कि तुम ही हो जो

कहते हो कि खुदा एक है, हज़रत अली ने फरमाया तो कसम खुदा की इस मौके पर हज़रत अबू बकर सिद्दीक अलावा कोई हुज़ूर के करीब नहीं गया, आप आगे बढ़े और काफिरों को मारा और उन्हें धक्के दे दे के हटाया और फरमाया तुम पर अप्सोस है कि तुम लोग ऐसी ज़ात को तकलीफ पहुंचा रहे हो जो यह कहता है कि मेरा परवरदिगार सिर्फ अल्लाह है। और हज़रत अली ने फरमाया कि लोग अपने ईमान को छुपाते थे मगर हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने ईमान को अलल् ऐलान ज़ाहिर फरमाते थे इस लिये आप सबसे ज्यादा बहादुर थे। (तारीखुल खुलफा:25)

और अल्लामा हैसम अपनी मुस्नद में तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने खुद फरमाया: لَسَاكَ يَوْمَ كَيْفَ أُنْصَرَفَ النَّاسُ كُلُّهُمْ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَكَثُرَ أَوَّلُ مَنْ فَاءَ कि यानी जंगे उहद के दिन सब लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को तन्हा छोड़ कर इधर उधर हो गए तो सब से पहले मैं हुज़ूर के पास पहुंच कर उन की हिफाज़त की। (तारीखुल खुलफा:25)

इन शवाहिद से रोज़े रोशन की तरह वाज़ेह हो गया कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सारे सहाबा में सबसे ज्यादा शुजाअ और बहादुर भी थे। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु व अरज़ाहु अन्ना

आप की सखावत

हज़रत सिद्दीके अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अल्लाह के रास्ते में खर्च करने और सखावत करने के बारे में भी सारे सहाबा पर फौकियत रखते थे। हदीस शरीफ की दो मशहूर किताबें तिर्मिज़ी और अबू दाऊद में हैं, हज़रत उमर फारूक आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक रोज़ हम लोगों को अल्लाह की राह में सदका और खैरात करने का हुक्म दिया और हुस्ने इत्तिफाक से इस मौके पर मेरे पास काफी माल

था, मैं ने अपने दिल में कहा कि अगर हज़रत अबू बकर से आगे बढ़ जाना किसी दिन मेरे लिये मुम्किन होगा तो आज का दिन होगा। मैं काफी माल खर्च करके आज उन से सब्कत ले जाऊंगा। हज़रत उमर फरमाते हैं तो मैं आधा माल लेकर खिदमत में हाज़िर हुआ तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मुझ से दरियाफ्त फरमाया **يَا بَنِيَّ** यानी अपने घर वालों के लिये तुम ने कितना छोड़ा? हज़रत उमर फरमाते हैं कि मैं ने अर्ज किया कि आधा माल उन के लिये छोड़ दिया है, फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो कुछ उनके पास था सब ले आए, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उन से पूछा **يَا بَنِيَّ** यानी ऐ अबू बकर! अपने अहल अयाल के लिये क्या छोड़ आए हो? यानी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज किया कि उन के लिये मैं अल्लाह और उस के रसूल को छोड़ आया हूं। मतलब यह है कि मेरे और मेरे अहल व अयाल के लिये अल्लाह व रसूल काफी हैं।

परवाने को चिराग है बुलबुल को फूल बस

सिद्दीक के लिये है खुदा का रसूल बस

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं **فَلَيْسَ لَكَ لَأَسْبِقَ إِلَى شَيْءٍ** यानी मैं ने अपने दिल में कहा किसी चीज़ में हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर मैं कभी सब्कत नहीं ले जा सकूंगा।

(मिशकात शरीफ:556)

और हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है जिस रोज़ मेरे वालिद बुजुर्गवार हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस्लाम से मुशर्रफ हुए उस रोज़ आप के पास चालीस हज़ार दीनार मौजूद थे और एक रिवायत में है कि चालीस हज़ार दिरहम थे, आप ने यह सारा माल रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के हुक्म पर खर्च कर दिया। और हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला

अन्हुमा से मरवी है कि जिस हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ईमान लाए तो उन के पास चालीस हजार दिरहम थे और जब आप मदीना तैय्यिबा हिज़्रत करके आए तो उस माल में से आप के पास सिर्फ़ पांच हजार बाकी रह गए थे। मक्का मोअज़्ज़मा में आप ने 35 हजार दिरहम मुसलमान गुलामों के आज़ाद कराने और इस्लाम की मदद में खर्च कर डाला था।

हज़रत सदरुल अफाज़िल मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु राहे खुदा में चालीस हजार दीनार खर्च किये, दस हजार रात में, दस हजार दिन में, दस हजार छुपा कर, दस हजार अलानिया तो अल्लाह तआला ने उन के हक़ में यह आयते करीमा नाज़िल फरमाई: **الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرٌ مُّكْرَمٌ** यानी जो लोग अपने माल ख़ैरात करते हैं रात में और दिन में, छुपा कर और अलानिया, तो उन के लिये उन के रब के पास उन का अज़्र है और न उनको कुछ ख़ौफ़ होगा और न वह लोग गुमगीन होंगे। (फारा:3 रुकूअ:6)

तिर्मिज़ी शरीफ़ में रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिस किसी ने भी मेरे साथ एहसान किया था मैं ने हर एक का एहसान उतार दिया अलावा अबू बकर के एहसान के। उन्होंने ने मेरे साथ ऐसा एहसान किया है जिस का बदला कियामत के दिन उन को खुदाए तआला ही अता फरमाएगा। **وَمَا نَفَعْنِي مَالٌ أَحَدٍ قَطُّ مِمَّا كُنْتُ مَالٍ** यानी और हरगिज़ किसी के माल ने मुझे इतना फायदा नहीं पहुंचाया जितना फायदा कि अबू बकर के माल ने पहुंचाया है।

(मिशकात शरीफ:555)

एक बार हम सब मिल कर सरकारे मदीना और उन के अस्थाब पर बुलन्द अवाज़ से दुरूद व सलाम का नज़ाना पेश करें।

हुजूर से मुहब्बत

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को बहुत चाहते थे और उनसे बेइन्तिहा मुहब्बत फरमाते थे, शुरू ज़मानए इस्लाम में जो शख्स मुसलमान होता था वह हत्तल इम्कान अपने इस्लाम को छुपाए रखता था और सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम भी छुपाने की तल्कीन फरमाते थे ताकि काफ़िरो से अज़िय्यत न पहुंचे। जब मुसलमानों की तादाद तक़रीबन 40 हुई तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से दरख्वास्त की कि अब इस्लाम की तब्लीग़ खुल्लम खुल्ला और अलल् ऐलान की जाए, पहले तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इन्कार फरमाया लेकिन जब सिद्दीके अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बहुत इसरार किया तो आप ने कबूल फरमा लिया और सब लोगों को साथ लेकर मस्जिदे हराम में तशरीफ ले गए। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने खुत्बा शुरू फरमाया और यह सब से पहला खुत्बा है जो इस्लाम में पढ़ा गया। हुजूर के चचा हज़रत अमीरे हम्ज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उसी रोज़ इस्लाम लाए, खुत्बा का शुरू होना था कि चारों तरफ से मुशिरकीन मुसलमानों पर टूट पड़े। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अज़मत व शराफत मक्का मुअज़्ज़मा में मुसल्लम थी, इस के बावजूद आप को इस क़दर मारा कि पूरा चेहरा और कान व नाक सब लहू लहान हो गए और खून से भर गए और हर तरह से आप को बहुत मारा यहां तक कि बेहोश हो गए। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के कबीले बनू तमीम के लोगों को ख़बर हुई तो वह आपको वहां से उठा कर लाए और किसी को भी यह उम्मीद नहीं थी कि मुशिरकीन की इस मार के बाद आप ज़िंदा बच सकेंगे। आप के कबीले के लोग

मस्जिदे कअूबा में आए और ऐलान किया कि अगर हज़रत अबू बकर इस हादिसे में इन्तेक़ाल कर गए तो हम उन के बदले में उल्वा बिन रबीआ को क़त्ल करेंगे कि उस ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मारने में बहुत ज़्यादा हिस्सा लिया था।

शाम तक आप बेहोश रहे और जब होश में हुए तो सब से पहला लफज़ यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का क्या हाल है? लोगों ने आप को बहुत मलामत की कि उन्हीं के साथ रहने की वजह से यह मुसीबत पेश आई और दिन भर बेहोश रहने के बाद बात की तो सब से पहले उन्हीं का नाम लिया। और सब से पहले उन का नाम क्यों न लें कि उन के खून में एक-एक क़त्रा में सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की मुहब्बत मौजज़न थी। कुछ लोग बद दिली के सबब और बाज़ लोग इस ख़्याल से उठकर चले गए कि जब बोलने लगे हैं तो अब आप की जान बच जाएगी। जाते हुए लोग आप की वालिदा मोहतरमा हज़रत उम्मुल खैर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा कि बाद में वह भी मुसलमान हुई) उन से कह गए कि हज़रत अबू बकर के खाने पीने के लिये किसी चीज़ का इन्तिज़ाम कर दें। वह कुछ तैयार करके लाई और खाने के लिये बहुत कहा मगर आशिके सादिक़ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की वही एक सदा थी कि मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का क्या हाल है? और उन पर क्या गुज़री? आप की वालिदा ने फरमाया कि मुझे कुछ नहीं मालूम कि उन का क्या हाल है? आप ने फरमाया कि हज़रत उमर की बहन उम्मे जमील (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) के पास जाकर दरियाफ्त करो कि हुज़ूर का क्या हाल है? वह अपने साहिबज़ादे की इस बेताबाना दरख्वास्त को पूरी करने के लिये दौड़ी हुई उम्मे जमील के पास गई और सैयिदना मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का हाल दरियाफ्त किया, वह भी उस वक़्त तक अपने इस्लाम को छुपाए हुए थीं, उन्होंने टाल दिया, कोई वाज़ेह जवाब

नहीं दिया और कहा कि अगर तुम कहो तो मैं चल कर तुम्हारे बेटे हज़रत अबू बकर को देखूँ कि उन का क्या हाल है, उन्होंने ने कहा कि हाँ चलो। हज़रत उम्मे जमील (रज़ियल्लाहु तआला अन्हा) उन के घर गई और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हालत देख कर बरदाश्त न कर सकीं, बेतहाशा रोने लगीं, हज़रत अबू बकर सिद्दीक ने उन से पूछा कि हुजूर का क्या हाल है? हज़रत उम्मे जमील ने आप की वालिदा की तरफ इशारा करते हुए फरमाया कि वह सुन रही हैं, आप ने फरमाया कि उन से न डरो, तो उम्मे जमील ने फरमाया कि हुजूर बख़ैरो-आफियत हैं, आप ने दरियाफ्त फरमाया कि इस वक़्त कहाँ हैं? उन्होंने ने कहा कि हज़रत अरक़म के घर तशरीफ रखते हैं, फरमाया कसम है खुदाए जुलजलाल की कि मैं उस वक़्त तक कुछ नहीं खाऊंगा जब तक हुजूर की ज़ियारत नहीं कर लूंगा।

आप की वालिदा मोहतरमा तो बहुत ज़्यादा बेकरार थीं कि आप कुछ खा पी लें मगर आप ने कसम खा ली जब तक हुजूर की ज़ियारत नहीं कर लूंगा कुछ नहीं खाऊंगा तो आप की वालिदा ने लोगों की आमदो रफ्त बन्द हो जाने का इन्तेज़ार किया ताकि ऐसा न हो कोई आप को देख कर फिर अज़ियत पहुंचा दे, जब रात का बहुत सा हिस्सा गुज़र गया और लोगों की आमदो-रफ्त बन्द हो गई तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को उनकी वालिदा मोहतरमा लेकर हुजुरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की खिदमत में हज़रत अरक़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के घर पहुंचीं, हज़रत अबू बकर हुजूर से लिपट गए और हुजूर भी अपने आशिके सादिक से लिपट कर रोए और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हालत देख कर सब रोने लगे। (तारीख़ुल खुलफा वगैरा)

इस वाक़िआ से साफ़ ज़ाहिर होता है कि आकाए दो आलम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से हज़रत सिद्दीके अक़बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ग़ायत दर्जे मुहब्बत थी और क्यों न हो:

मुहम्मद है मताएँ आलम ईजाद से प्यारा
पिदर मादर बिरादर जानो-माल से प्यारा
मुहम्मद की मुहब्बत देने हक की शर्तें अव्वल है
इसी में हो गर खामी तो सब कुछ ना मुकम्मल है

सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम

और हज़रत सदरुल अफाज़िल रहमतुल्लाहि तअ़ाला अलैहि तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु ने जैशे उसामा की तन्फीज़ की जिस को हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम ने अपने अहदे मुबारक के आखिर में शाम की तरफ रवाना फरमाया था, अभी यह लश्कर थोड़ी ही दूर पहुंचा था और मदीना तैयिबा के करीब मक़ामे जी ख़शब ही में था कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम ने इस आलम से पर्दा फरमाया, यह ख़बर सुन कर अतराफ मदीना के अरब इस्लाम से फिर गए और मुस्तद हो गए, सहाबए किराम ने मुज्त्मा होकर हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु पर जोर दिया कि आप उस लश्कर को वापस बुला लें, इस वक़्त उस लश्कर का रवाना करना किसी तरह मस्तहत नहीं। मदीना गिर्द तो अरब के तवाइफ़े कसीरा मुस्तद हो गए और लश्कर शाम को भेज दिया जाए? इस्लाम के लिये यह नाज़ुक तरीन वक़्त था, हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम की वफ़ात से कुफ़्फ़ार के हौसले बढ़ गए थे और उन की मुर्दा हिम्मतों में जान पड़ गई थी। मुनाफ़िकीन समझते थे कि अब खेल खेलने का वक़्त आ गया, ज़ईफ़ुल ईमान दीन से फिर गए, मुसलमान एक ऐसे सदमे में शिकस्ता दिल और बेताब व नातवां हो रहे हैं जिस का मिस्ल दुनिया की आंख ने कभी नहीं देखा, उन के दिल घायल हैं और आंखों से अशक जारी हैं, खाना पीना बुरा मालूम होता, ज़िंदगी एक नागवार मुसीबत नज़र आती है। उस वक़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम के जानशीन को नज़म कायम करना, दीन का संभालना,

मुसलमानों की हिफाजत करना, इरतिदाद के सैलाब को रोकना किस कदर दुश्वार था, बावजूद इस के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के खाना किये हुए लश्कर को वापस करना और मरज़िए मुबारक के खिलाफ जुर्त करना सिद्दीक सरापा सिदक का राब्त नयाज़मन्दी गवारा न करता था और उस को वह हर मुश्किल से सख्त तर समझते थे, इस पर सहाबा का इस्रार कि लश्कर वापस बुला लिया जाए और खुद हज़रत उसामा का लौट कर आना और हज़रत अबू सिद्दीक से अर्ज करना कि क़बाइले अरब आमादए जंग और दरपए तख़ीबे इस्लाम (यानी इस्लाम को बर्बाद करने पर आमादा) हैं और कार आजमा बहादुर मेरे लश्कर में हैं, उन्होंने इस वक़्त रूम भेजना और मुल्क को ऐसे दिलावर मदनि जंग से खाली कर देना किसी तरह मुनासिब नहीं मालूम होता, यह हज़रत सिद्दीक के लिये और मुश्किलात थीं।

सहाबए किराम ने ऐतिराफ़ किया है कि उस वक़्त हज़रत सिद्दीक की जगह दूसरा होता तो हरगिज़ मुस्तक़िल न रहता और मसाइब व अपकार का यह हुजूम और अपनी जमाअत की परेशान हालत मबहूत कर डालती। मगर अल्लाहु अक्बर! हज़रत सिद्दीक के पाए सबात को ज़रा भर लगज़िश न हुई और उन के इस्तिक्लाल में एक शिम्मा (ज़रा बराबर) फर्क न आया आप ने फरमाया कि अगर परिन्द मेरी बोटियां नोच खाएं तो मुझे यह गवारा है मगर हुज़ूर अनवर सैयिदे आलम की मरज़ीए मुबारक में अपनी राय को दखल देना और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के खाना किये हुए लश्कर को वापस करना गवारा नहीं, यह मुझ से नहीं हो सकता। चुनांचे ऐसी हालत में आप ने लश्कर को खाना फरमा दिया, इस से हज़रत सिद्दीक अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हैरत अंगेज़ शुजाअत व लियाक़त और कमाले दिलेरी व जवांमर्दी के अलावा उन के तबक्कुले सादिक का पता चलता है और दुश्मन भी इंसाफ़न यह कहने पर मजबूर होता है कि खुदाए तआला ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद

खिलाफत व जा नशीनी की अज़ला काबिलियत व अहलियत हज़रत सिद्दीक़ को अता फरमाई थी।

अब यह लश्कर खाना हुआ और जो क़बाइल मुरतद होने के लिये तैयार थे वह यह समझ चुके थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद इस्लाम का शीराज़ा ज़रूर दरहम बरहम हो जाएगा और उस की शान व शौकत बाकी न रहेगी। उन्होंने ने देखा कि लश्करे इस्लाम रुमियों की सर कोबी के लिये खाना हो गया, उसी वक़्त उन के ख़्याली मन्सूबे ग़लत हो गए और उन्होंने ने समझ लिया कि सैयिदे आलाम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपने अहदे मुबारक में इस्लाम के लिये ऐसा ज़बर्दस्त नज़्म फरमा दिया है जिस से मुसलमानों का शीराज़ा दरहम बरहम नहीं हो सकता और वह ऐसे ग़म व अन्दोह के वक़्त में भी इस्लाम की तब्लीग़ व इशाअत और उस के सामने अक्वामे आलम को सर निगूँ करने के लिये एक ज़बर्दस्त क़ौम पर फौज कशी करते हैं। लिहाज़ा यह ख़्याल ग़लत है कि इस्लाम मिट जाएगा और उस में कुव्वत बाकी न रहेगी बल्कि अभी सब्र के साथ देखना चाहिये कि यह लश्कर किस शान से वापस होता है। फज़ले इलाही से यह लश्कर ज़परे पैकर फतहयाब हुआ, रुमियों को हज़ीमत व शिकस्त हुई, जब यह फातेह लश्कर वापस आया उस वक़्त वह तमाम क़बाइल जो मुरतद होने का इरादा कर चुके थे उस नापाक क़स्द से बाज़ आए और इस्लाम पर सच्चाई के साथ कायम हो गए। बड़े-बड़े जलीलुल क़दर साइबुर राय सहबा जो इस लश्कर की खानगी के वक़्त निहायत शिद्दत से इख़्तिलाफ़ फरमा रहे थे अपनी फिक्र की ख़ता और हज़रत सिद्दीक़ की राय मुबारक के साइब और उनके इल्म की वुस्अत के मोअतरिफ़ हुए।

(सवानेहे बरबाला)

और बैहकी व इब्ने असाकिर में है कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि कसम है उस ज़ात की जिस के सिवा कोई माबूद नहीं अगर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला

अन्हु खलीफा मुकर्रर न हुए होते तो रूप जमीन पर खुदाए तआला की इबादत बाकी न रह जाती। इसी तरह कसम के साथ आप ने तीन बार फरमाया, लोगों ने आप से अर्ज किया ऐ अबू हुरैरा! आप ऐसा क्यों कह रहे हैं? आप ने फरमाया कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हजरत उसामा को अमीरे लश्कर मुकर्रर करके शाम की तरफ रवाना फरमाया था और वह अभी जी ख़शब मक़ाम पर थे कि हुज़ूर का विसाल हो गया इस ख़बर को सुन कर अतराफे मदीना के अरब मुरतद हो गए। सहाबए किराम हजरत अबू बकर की खिदमत में आए और इस बात पर जोर दिया कि उसामा के लश्कर को वापस बुला लें, आप ने फरमाया: **وَالَّذِي لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ لَوْ خَرَّبَ الْكَلْبُ بِأَرْحَلِ الْأَوَّاحِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا رَدَّدْتُ خَيْفًا وَجْهَهُ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** यानी कसम है उस ज़ात की जिस के सिवा कोई मअबूद नहीं, अगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की पाक बीवियों के पांव कुत्ते पकड़ कर घसीटें तब भी मैं उस लश्कर को वापस नहीं बुला सकता जिस को अल्लाह के रसूल ने रवाना फरमाया था और न मैं उस परचम को सर निगूं करूंगा जिस को मेरे हुज़ूर ने लहराया था।

पस हजरत उसामा को आगे बढ़ने का हुक्म दिया, वह रवाना हुए तो मुरतद कबीले दहशतज़दा हो गए यहां तक कि वह सलतनते रूम की हद में पहुंच गए, तरफैन में जंग हुई, मुसलमानों का लश्कर फतहयाब हो कर वापस हुआ तो इस तरह इस्लाम का बोल बाला हो गया।

(तारीखुल खुलफा:51)

महबूबे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से हजरत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को जो बेइन्तहा और ग़ायत दर्जा मुहब्बत थी उसी मुहब्बत का यह असर है कि ऐसे नाजुक वक़्त में सहाबए किराम के जोर डालने के बावजूद हजरत उसामा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लश्कर को वापस बुलाना और प्यारे मुस्तफ़ा के लहराए हुए झण्डे को सरनिगूं करना आप ने ग़बारा न किया

जिस का नतीजा यह हुआ कि दुश्मनों के हौसले पस्त हो गए और इस्लाम का फिर से बोल बाला हो गया। इसे यूँ भी कहा जा सकता है कि हुजूर से हज़रत सिद्दीक की मुहब्बत ने इस्लाम को ज़िंदे जावेद बना दिया। एक बार फिर बुलन्द आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़िये।

मानिईने ज़कात

रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के विसाल फरमाने पर बाज़ लोग तो इस्लाम के सारे अहकाम के मुन्किर हो कर मुरतद हो गए थे और कुछ लोगों ने कहा कि हम ज़कात नहीं देंगे। यानी उस की फरज़ियत के मुन्किर हो गए और ज़कात की फरज़ियत चूँकि नस्से कतई से साबित है तो उस के मुन्किर होकर वह भी मुरतद हो गए। इसी लिये शारिहीने हदीस व फुकहाए किराम मानिईने ज़कात को भी मुरतदीन में शुमार करते हैं।

हज़रत हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन से जिहाद का इरादा फरमाया तो हज़रत उमर और बाज़ दूसरे सहाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने उन से कहा कि इस वक़्त मुन्किरीने ज़कात से जंग करना मुनासिब नहीं, आप ने फरमाया खुदाए जुलजलाल की कसम अगर वह लोग एक रस्सी या बकरी का एक बच्चा भी हुजूर के ज़माने में ज़कात दिया करते थे और अब उस के देने से इनकार करेंगे तो मैं उन से जंग करूँगा। (तारीखुल खुल्फा:51) फिर आप मुहाजिरीन व अन्सार को साथ लेकर अज़राब की तरफ निकल पड़े और जब वह भाग खड़े हुए तो हज़रत ख़ालिद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को आप अमीरे लश्कर बना कर वापस आ गए, उन्होंने अज़राब को जगह-जगह घेरा तो अल्लाह तआला ने उन्हें हर जगह फतह अता फरमाई। अब सहाबए किराम खुसूसन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आप की राय के सहीह होने का ऐतराफ किया और कहा कि खुदा की कसम, अल्लाह तआला ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक का सीना खोल दिया है और उन्होंने ने जो कुछ किया वह हक़ है।

और वाकिआ भी यही है कि अगर उस वक्त मानिईने जकात की सर कोबी न की जाती और उन्हें छूट दे दी जाती तो फिर कुछ लोग नमाज़ के भी मुन्किर हो जाते और बाज़ लोग रोजे से भी इनकार कर देते और कुछ लोग बाज़ दूसरी चीज़ों का इनकार कर देते तो इस्लाम अपनी शान व शौकत के साथ बाकी न रहता बल्कि खेल बन जाता और उस का निज़ाम दरहम बरहम हो जाता।

मानिईने जकात और उन से हज़रत अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के जिहाद के नतीजे में हज़रत सदरुल अफाज़िल रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं: यहां से मुसलमानों को सबक लेना चाहिये कि हर हालत में हक की हिमायत और ना हक की मुखालफत ज़रूरी है और जो कौम ना हक की मुखालफत में सुस्ती करेगी वह जल्द तबाह हो जाएगी। आज कल बाज़ सादा लौह बातिल फिरकों के रद्द करने को भी मना करते हैं और कहते हैं कि इस वक्त आपस की जंग मौकूफ करो, उन्हें हज़रत सिदीक़े अव्वल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के तरीक़े अमल से सबक लेना चाहिये कि आप ऐसे नज़ुक वक़्त में भी बातिल की सर शिकनी में तवक्कुफ न फरमाया, जो फिरके इस्लाम को नुक़सान पहुंचाने के लिये पैदा हुए हैं उन से उपलत बरतना यकीनन इस्लाम की नुक़सान रसानी है। (सवानेहे करबला)

इस वाकिआ से यह भी मालूम हुआ कि सिर्फ़ कलिमा और नमाज़ मुसलमान होने के लिये काफी नहीं बल्कि इस्लाम की सारी बातों को मनना ज़रूरी है। लिहाज़ा अगर कोई शख्स इस्लाम के सारे अहकाम पर ईमान रखता हो लेकिन ज़रूरियाते दीन में से किसी एक बात का इनकार करता हो तो वह काफिर व मुरतद है जैसे कि मानिईने जकात एक बात का इनकार करके काफिर व मुरतद हुए। نعوذ بالله من ذلك

और मुसैलमा के साथी व मानिईने जकात के काफिर व मुरतद होने से यह भी साबित हुआ कि “अरब में काफिर व मुरतद न होंगे” यह कहना ग़लत है।

ग़लत इल्ज़ाम

राफज़ी लोग हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर इल्ज़ाम लगाते हैं कि उन्होंने ने हुज़ूर के बाग़ै फ़दक़ को ग़सब कर लिया और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को नहीं दिया; तो उस का ज़वाब यह है कि अंबियाए किराम किसी को अपने माल का वारिस नहीं बनाते वह जो कुछ छोड़ जाते हैं सब सदका होता है, जैसा कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से हदीस शरीफ़ मरवी है कि सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: لَا نُورِثُ مَنَّا رِثَّةً صَدَقَةٌ यानी हम ग़िरोहे अंबिया किसी को अपना वारिस नहीं बनाते हम जो कुछ छोड़ जाते हैं वह सब सदका है।

(बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कात:550)

और मुस्लिम शरीफ़ 2/91 पर है कि हुज़ूर के विसाल फ़रमा जाने के बाद अज़्वाजे मुतहहरात ने चाहा कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़रिये हुज़ूर के माल से अपना हिस्सा तक्सीम करवाएं तो हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने फ़रमाया: لَا يَسْأَلُ فِدَاً قَالِ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا نُورِثُ مَنَّا رِثَّةً صَدَقَةٌ यानी क्या हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने यह नहीं फ़रमाया है कि हम किसी को अपने माल का वारिस नहीं बनाते हम जो कुछ छोड़ जाएं वह सब सदका है।

और बुख़ारी 2/575 व मुस्लिम 2/90 पर हज़रत मालिक बिन औस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि मजमए सहाबा जिन में हज़रत अब्बास, हज़रत उस्मान, हज़रत अली, हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़, हज़रत जुबैर बिन अव्वाम और हज़रत सअद बिन वक्कास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम मौजूद थे, हज़रत उमर फ़ारूक़ आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सब को क़सम देकर फ़रमाया क्या आप लोग जानते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि हम किसी को वारिस नहीं बनाते हम जो कुछ छोड़ें वह

फदक है तो सब ने इकरार किया कि हां हुजूर ने ऐसा फरमाया है।

इन अहादीसे करीमा के सहीह होने का सुबूत यह है कि जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की खिलाफत का ज़माना आया और हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का तरका खैबर और फदक वगैरा उनके क़बजे में हुआ और फिर उन के बाद हस्नैन करीमैन वगैरा के इख्तियार में रहा मगर उन में से किसी ने अज़्वाजे मुतहहरात हज़रत अब्बास और उन की औलाद को बाग़े फदक वगैरा से हिस्सा न दिया। लिहाज़ा मानना पड़ेगा कि नबी के तरके में वरासत जारी नहीं होती। इसी लिये हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत फातिमा ज़ह्रा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को बाग़े फदक नहीं दिया न कि बुग़ज़ व अदावत के सबब जैसा कि राफज़ियों का इल्ज़ाम है। (इस मस्अले के मुतअल्लिक मुफ़स्सल-बहस हमारे रिसाला “बाग़े फदक और हदीसे किरतास” में देखें।) अल्-अमजदी

और आयते करीमा وَرَثَةُ الْمَوْلَىٰ یا इसके अलावा कुरआने मजीद व हदीस शरीफ में जहां भी कही अबियाए कराम की वरासत का जिक्र है उस से इल्मे शरीअत व नबुवुत ही मुराद है न कि दिरहम व दीनार।

अलालत और वफात

वाफ़िदी और हाकिम में है, हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने बयान फ़रमाया कि वालिदे गिरामी हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अलालत की इब्तिदा यूं हुई कि आप ने 7 जुमादल उख़रा, पीर के रोज़ गुस्त फरमाया, उस रोज़ सरदी बहुत ज़्यादा थी जो असर कर गई। आप को बुख़ार आ गया और 15 दिन आप अलील रहे, इस दरमियान में आप नमाज़ के लिये भी घर से बाहर तशरीफ नहीं ला सके, आखिर कार बज़ाहिर उसी बुख़ार के सबब 63 साल की उम्र में 2 साल 2 माह से कुछ ज़ाइद उमूरे खिलाफत अंजाम देने के बाद 22 जुमादल उख़रा 13 हि0 को आप की वफात हुई

और अक़ाए दो आलम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम के मुबारक पहलू में मदफून् हुए। *إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ* इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि रजिऊन।

आप की करामतें

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु से कई करामतें जाहिर हुई हैं जिन में चन्द करामतों का ज़िक्र यहां किया जाता है।

हज़रत अब्दुर रहमान बिन अबू बकर रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु^{म्} से रिवायत है उन्होंने ने फरमाया कि एक बार मेरे बाप हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु अस्हाबे सुफ्फा में से तीन आदमियों को अपने घर लाए और उन को खाना खिलाने का हुक्म फरमा कर खुद रसूले करीम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम की खिदमत में चले गए, यहां तक कि रात का खाना आप ने हुज़ूर ही के यहां खा लिया और बहुत ज़्यादा रात गुज़र जाने के बाद अपने मकान पर तशरीफ़ लाए। उन की बीवी ने कहा कि मेहमानों के पास आने से आप को किस चीज़ ने रोक रखा? आप ने फरमाया क्या तुम ने अभी तक मेहमानों को खाना नहीं खिलाया, उन्होंने ने अर्ज़ किया कि मैं ने खाना पेश किया था मगर मेहमानों ने आप के बग़ैर खाना खाने से इनकार कर दिया, यह सुन कर आप अपने साहिबज़ादे हज़रत अब्दुर रहमान रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु पर सख्त नाराज़ हुए और उन को बहुत बुरा भला कहा कि उस ने मुझ को मुत्तला क्यों नहीं किया, फिर खाना मंगा कर मेहमानों के साथ खाने के लिये बैठ गए।

रावी का बयान है कि *أَمَّ اللّٰهُ مَا كُنَّا نَأْكُلُ مِنَ اللَّحْمِ الْإِسْلَامِيْنَ أَشْفَلَهَا أَكْثَرُ مِنْهَا* यानी खुदा की क़सम हम में जो भी लुक़्मा उठाए उस के नीचे खाना उस से ज़्यादा हो जाता, यहां तक कि हम सब शिकम सैर हो गए और जितना खाना पहले था उस से भी ज़्यादा बच रहा। हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु ने मुतअज्जिब हो कर अपनी बीवी से फरमाया कि यह क्या मामला है कि बरतन में खाना पहले से कुछ

ज्यादा नज़र आता है? आप की बीवी ने कसम खा कर कहा कि बिला शुब्हा यह खाना पहले से तीन गुना ज्यादा है, फिर वह खाना उठा कर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की खिदमत में ले गए, सुबह तक खाना बारगाहे रिसालत में रहा, मुसलमान और काफ़िरो के दरमियान एक मुआहेदा हुआ था जिस की मुदत खत्म हो गई थी तो उस रोज़ सुबह के वक़्त एक लश्कर तैयार किया गया जिस में बहुत काफ़ी आदमी थे पूरी फौज ने उस खाने को शिकम सैर होकर खाया फिर भी उस बरतन में खाना कम नहीं हुआ। (बुख़ारी:1/506)

मेहमानों के खाने के बाद पहले से भी खाने का तीन गुना ज्यादा हो जाना और सुबह के वक़्त पूरी फौज का उस खाने को शिकम सैर हो कर खाना फिर भी बरतन में खाने का कम न होना यह हज़रत अबू बकर सिदीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अज़ीम करामत है।

और हज़रत आइशा सिदीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से मरवी है उन्होंने ने फरमाया कि मेरे बाप हज़रत अबू बकर सिदीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने मरजे मौत में मुझे वसिय्यत करते हुए इरशाद फरमाया कि मेरी प्यारी बेटी! मेरे पास जो कुछ मेरा माल था आज वह माल वारिसों का हो चुका है, मेरी औलाद में तुम्हारे दो भाई अब्दुर रहमान व मुहम्मद हैं और तुम्हारी दो बहनें हैं। लिहाज़ा मेरे माल को तुम लोग कुरआन मजीद के फरमान के मुताबिक़ तक्सीम करके अपना अपना हिस्सा ले लेना। हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अर्ज किया कि अब्बा जान! मेरी तो एक ही बहन बीबी अस्मा हैं। यह मेरी दूसरी बहन कौन है? आप ने इरशाद फरमाया कि तुम्हारी सौतेली मां हबीबा बिन्ते खारिजा जो हामिला है उस के पेट में लड़की है वही तुम्हारी दूसरी बहन है। चुनांचे आप के विसाल फरमाने के बाद आप के फरमान के मुताबिक़ हबीबा बिन्त खारिजा के पेट से लड़की (उम्मे कुलसूम) ही पैदा हुई। (मोअत्ता इमाम मुहम्मद बाबुन नहली:348)

इस हदीस शरीफ से हज़रत अबू बकर सिदीक़ की दो करामतें

साबित होती हैं पहली करामत यह कि वफात से पहले आप को इस बात का इल्म हो गया था कि मैं इसी मरज़ में इन्तिकाल कर जाऊंगा इसी लिये आप ने वसियत के वक़्त यह फरमाया कि आप मेरा माल मेरे वारिसों का माल हो चुका है। और दूसरी करामत यह साबित होती है कि हामिला के पेट में लड़की है आप यकीन के साथ जानते थे इसी लिये हज़रत आइशा सिदीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से फरमाया कि हबीबा बन्ते ख़ारिजा जो हामिला है उस के पेट में लड़की है वही तुम्हारी बहन है। और इन दोनों बातों का इल्म यकीनन ग़ैब का इल्म है जो बेशक हज़रत अबू बकर सिदीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की दो अज़ीमुश शान करामतें हैं।

आप की खुसूसियात

हज़रत अबू बकर सिदीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु में बहुत सी खुसूसियात पाई जाती हैं जिन में से चन्द खुसूसियात को हम आप के सामने पेश करते हैं। इब्ने असाकिर हज़रत इमामे शअबी से रिवायत करते हैं उन्होंने ने फरमाया कि हज़रत सिदीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को खुदाए अज़्ज़ व जल् ने ऐसी चार ख़स्तलों से मुज़्जैस फरमाया जिन से किसी को सरफराज़ नहीं फरमाया। अब्बल आप का नाम सिदीक़ रखा और किसी दूसरे का नाम सिदीक़ नहीं। दूसरे आप रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ ग़ारे सौर में रहे। तीसरे आप हुज़ूर की हिज़्रत में रफ़ीक़े सफ़र रहे, चौथे सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने आप को हुक्म फरमाया कि आप सहाबए किराम को नमाज़ पढ़ाएं और दूसरे लोग आप के मुक्त्तदी बनें। एक बहुत बड़ी खुसूसियत आप की यह भी है कि आप सहाबी, आप के वालिद अबू कुहाफ़ा सहाबी, आप के साहिबज़ादे अब्दुर रहमान सहाबी और उन के साहिबज़ादे अबू अतीक़ मुहम्मद सहाबी। यानी आप की चार नस्ल सहाबी हैं। रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अज्मईन।

सायए मुस्तफा मायए इस्तिफा
इज्जो-नाजें खिलाफत पे लाखों सलाम
यानी उस अपजलुल खल्क बादर रुसुल
सानिइस नैने हिज्रत पे लाखों सलाम

दुआ है कि खुदाए अज्ज व जल् हम सब को हुजूर सल्लल्लाहु
तअाला अलैहि व सल्लम की सच्ची गुलामी अता फरमाए और हजरत
अबू बकर सिद्दीक रजियल्लाहु तअाला अन्हु के नक्शे कदम पर चलने
की तौफीके रफीक बख्शे। आमीन

بجاء حبیبك سيد المرسلین صلوات اللہ تعالیٰ وسلامہ علیہ

وعلیہم اجمعین ویرحمک بالرحم الراحمین

बिजाहि हबीबिक सैय्यदिल् मुरसलीन सलवातुल्लाहि तअाला व सलामहू
अलैहि व अलैहिम अजमईन व बिरहमतिक या अरहमर्राहिमीन।



अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फारुके आज़म

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى مَنْ كَانَ
نَبِيًّا وَأَدَمُ بَيْنَ الْمَاءِ وَالطِّينِ وَعَلَى آلِهِ وَأَصْحَابِهِ أَجْمَعِينَ۔ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ
الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهُ اشِدَّاءُ
عَلَى الْكُفَّارِ رَحِمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرَاهُمْ رُكْعًا سُجَّدًا يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا
(پ: ۲۶، ع: ۱۲) صَدَقَ اللّٰهُ مَوْلَانَا الْعَظِيْمَ وَصَدَقَ رَسُوْلُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيْمُ الْاَمِيْنُ عَلَيْهِ
وَعَلَى اٰلِهِ الْاَكْرَمِ الصَّلَوَاتُ وَالتَّسْلِيْمُ۔

एक बार हम और आप सब लोग मिल कर तमाम आलम के मोहसिने आज़म, रहमते आलम, नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दरबारे दुरर बार में दुरुदो-सलाम की डालियां पेश करें।

صلى الله على النبي الامى واله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاما عليك يا رسول الله

सल्लल्लाहु अलन् नबियिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम सलातुव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

हकीकत में कमाल व खूबी वाला वह शख्स है जो दूसरों को कमाल व खूबी वाला बना दे तो हमारे आका व मौला जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हकीकत में कमाल व खूबी वाले हैं जिन्होंने ने बेशुमार लोगों को कमाल व खूबी वाला बना दिया और उनका यह फैज़ हमेशा जारी रहेगा कि कियामत तक अपने जां निसारों को कमाल व खूबी वाला बनाते रहेंगे।

और प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने जिन लोगों को कमाल व खूबी वाला बनाया उन में से एक मशहूर-व मारुफ अमीरुल मोमिनीन उमर फारुके आज़म हैं कि जो अफज़ल बशर बादल अबिया हज़रत अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बाद तमाम सहाबा में सब से अफज़ल हैं।

नाम व नसब

आप का नाम उमर है। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कुन्नियत अबू हफ्स और लक़ब फारूके आजुम है। आप के वालिद का नाम ख़त्ताब और मां का नाम अन्तमा है जो हिशाम बिन मुगीरा की बेटी यानी अबू जहल की बहन हैं। आठवीं पुस्त में आप का शजरए नसब सराकरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के ख़ांदानी शजरा से मिलता है। आप वाकिए फील के तेरह साल बाद पैदा हुए। नुबुव्वत के छठे साल 27 बरस की उम्र में इस्लाम से मुशरफ़ हुए। आप ने उस वक़्त इस्लाम क़बूल फरमाया जबकि 40 मर्द और ग्यारह औरतें ईमान ला चुकी थीं और बाज़ उलमा का ख़्याल है कि आप ने 39 मर्द और 23 औरतों के बाद इस्लाम क़बूल किया। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)

तिर्मिज़ी शरीफ की हदीस में है कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम दुआ फरमाते थे या इलाहल आलमीन उमर बिन ख़त्ताब और अबू जहल बिन हिशाम में से जो तुझे प्यारा हो उस से तू इस्लाम को इज़्ज़त अता फरमा। और हाकिम की रिवायत में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से है कि हुज़ूर ने इस तरह दुआ फरमाई: ~~اللّٰهُمَّ اجْرِ الْاِسْلَامَ بِعَمْرِ بْنِ الْخَطَّابِ عَاصَةً~~ यानी या अल्लाह! ख़ास तौर से उमर बिन ख़त्ताब को मुसलमान बना कर इस्लाम को इज़्ज़त व कुव्वत अता फरमा। तो अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की यह दुआ बारगाहे इलाही में मक़बूल हो गई और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस्लाम से मुशरफ़ हो गए।

आप के क़बूले इस्लाम का वाक़िआ

दिन बदिन मुसलमानों की तादाद बढ़ते हुए देख कर एक रोज़ कुफ़ारे मक्का जमा हुए और सब ने यह तय किया कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) को क़त्ल कर दिया जाए। मआज़ल्लाहि रब्बिल आलमीन। मगर सवाल पैदा हुआ कि कौन क़त्ल

करे, मजमा में ऐलान हुआ कि है कोई बहादुर जो मुहम्मद को क़त्ल कर दे, सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम, इस ऐलान पर पूरा मजमा तो ख़ामोश रहा मगर हज़रत उमर ने कहा कि मैं उन को क़त्ल करूंगा। लोगों ने कहा बेशक तुम ही उन को क़त्ल कर सकते हो, फिर हज़रत उमर उठे और तलवार लटकाए हुए चल दिये, इसी ख़्याल में जा रहे थे कि एक साहब कबीलए जुहरा के जिन का नाम हज़रत नुऐम बिन अब्दुल्लाह बताया जाता है और बाज़ लोगों ने दूसरों का नाम लिखा है, बहरहाल उन्होंने ने पूछा कि ऐ उमर! कहा जा रहे हो? कहा मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) को क़त्ल करने जा रहा हूं, हज़रत नुऐम ने कहा इस क़त्ल के बाद तुम बनी हाशिम और बनी जुहरा से किस तरह बच सकोगे, वह तुम्हें उन के बदले में क़त्ल कर देंगे, इस बात को सुन कर वह बिगड़ गए और कहने लगे मालूम होता है कि तुम ने भी अपने बाप दादा का दीन छोड़ दिया है, तो लाओ मैं पहले तुझी को निपटा दूं, यह कह कर तलवार खींच ली और हज़रत नुऐम ने भी यह कहा कि हां मैं मुसलमान हो गया हूं अपनी तलवार संभाल ली, अन्करीब दोनों तरफ से तलवार चलने को थी कि हज़रत नुऐम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि तू पहले अपने घर की ख़बर ले, तेरी बहन फातिमा बिनते ख़त्ताब और बहनोई सईद बिन ज़ैद दोनों अपने बाप दादा का दीन छोड़ कर मुसलमान हो चुके हैं, यह सुन कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बे इन्तिहा गुस्सा पैदा हुआ, वहीं से पलट पड़े और सीधे अपनी बहन के घर पहुंचे, वहां हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दरवाज़ा बन्द किये हुए उन दोनों मियां बीबी का क़ुरआन मजीद पढ़ा रहे थे, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दरवाज़ा खोलने के लिये कहा, उन की आवाज़ सुन कर हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु घर के एक हिस्से में छुप गए, बहन ने दरवाज़ा खोला, आप घर में दाखिल हुए और पूछा तुम लोग क्या कर रहे थे? और यह आवाज़ किस की थी? आप

के बहनोई ने टाल दिया और कोई वाज़ेह जवाब नहीं दिया, कहने लगे मुझे मालूम हुआ कि तुम लोग अपने बाप दादा का दीन छोड़ कर दूसरा दीन इस्तिथार कर लिये हो, बहनोई ने कहा हां बाप दादा का दीन बातिल है और दूसरा दीन हक़ है, यह सुनना था कि बेतहाशा टूट पड़े, उन की दाढ़ी पकड़ कर खींची और ज़मीन पर पटख कर खूब मारा, उन की बहन छुड़ाने के लिये दौड़ी तो उन के मुंह पर एक घूंसा इतनी जोर से मारा कि वह खून से तर बतर हो गई, आखिर वह भी हज़रत उमर ही की बहन थीं, कहने लगीं कि उमर हम को इस वजह से मार रहे हो कि हम मुसलमान हो गए हैं, कान खोल कर सुन लो कि तुम मार-मार कर हमारे खून का एक-एक कतरा निकाल लो, यह हो सकता है लेकिन हमारे दिलों से ईमान निकाल लो यह हरगिज़ नहीं हो सकता। और आप की बहन ने कहा कि मैं गवाही देती हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) अल्लाह तआला के बन्दे और उसके रसूल हैं। बेशक हम लोग मुसलमान हो गए हैं, तुझ से जो हो सके तू कर ले, बहन के जवाब और उनको खून में तर बतर देख कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का गुस्सा ठंडा हुआ, आप ने फरमाया कि अच्छा मुझे वह किताब दो जो तुम लोग पढ़ रहे थे ताकि मैं भी उस को पढ़ूं, आप की बहन ने कहा कि तुम नापाक हो और उस मुक़दस किताब को पाक लोग ही हाथ लगा सकते हैं, हज़रत उमर ने हर चन्द इस्रार किया मगर वह बग़ैर गुस्ल के देने को तैयार न हुई, आखिर हज़रत उमर ने गुस्ल किया फिर किताब लेकर पढ़ी, उस में सूरए ताहा लिखी हुई थी, उस को पढ़ना शुरू किया जिस वक़्त इस आयते करीमा पर पहुंचे: **أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ** यानी बेशक मैं अल्लाह हूं मेरे अलावा कोई माबूद नहीं तो मेरी इबादत करो और मेरी याद के लिये नमाज़ कायम करो (पारा:16, रूकूअ:10) तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहने लगे कि मुझे मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत

में ले चलो, जिस वक्त हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यह बात सुनी तो आप बाहर निकल आए और कहा कि ऐ उमर! मैं तुम को खुशख़बरी देता हूँ कि कल जुमेरात की शब में सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने दुआ मांगी थी कि या इलाहल आलमीन! उमर और अबू जहल में जो तुझे महबूब व प्यारा हो उस से इस्लाम को कुव्वत अता फरमा, मालूम होता है कि रसूलुल्लाह की दुआ तुम्हारे हक़ में कबूल हो गई।

रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उस वक्त सफ़ा पहाड़ी की करीब हज़रत अरक़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मकान में तशरीफ़ फरमा थे, हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आपको साथ लेकर रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िमदत में हाज़िर होने के इरादे से चले, हज़रत अरक़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दरवाज़े पर हज़रत हमज़ा, हज़रत तलहा और कुछ दूसरे सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम हिफाज़त और निगरानी के लिये बैठे हुए थे, हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आप को देख कर फरमाया कि उमर आ रहे हैं, अगर अल्लाह तआला को उन की भलाई मनज़ूर है तब तो यह मेरे हाथ से बच जायेंगे और अगर उनकी नियत कुछ और है तो इस वक्त उन का क़त्ल करना बहुत आसान है। इसी दरमियान में आकाए दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर इन हालात के बारे में वही नाज़िल हो चुकी थी, सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मकान से बाहर तशरीफ़ लाकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को दामन और उन की तलवार पकड़ ली और फरमाया ऐ उमर! क्या यह फ़साद तुम उस वक्त तक बरपा करते रहोगे जब तक कि तुम पर ज़िल्लत व रुस्वाई मुसल्लत न हो जाए, यह सुनते ही हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा: **يَا أُمُّ الْيَسْرِ وَاللَّهِ مَا بَدَأَ اللَّهُ بِكَ وَلَا يَخْلُقُ لَكَ خَلْقًا** यानी मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि

आप अल्लाह तआला के बन्दे और उसके रसूल हैं। (तारीखुल खुलफा ब्रैरा)

इस तरह अल्लाह के प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम की दुआ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हक में मकबूल हुई। आला हज़रत रहमतुल्लाहि तआला अलेहि फरमाते हैं:

इजाबत का सेहरा इनायत का जोड़ा

दुल्हन बन के निकली दुआए मुहम्मद

सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम

और फरमाते हैं:

इजाबत ने झुक कर गले से लगाया

बढ़ी नाज़ से जब दुआए मुहम्मद

सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम

चले थे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अल्लाह के महबूब प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम को कत्ल करने के लिये (मआज़ल्लाहि तआला) मगर खुद ही कत्तीले तेग आबरूए मुहम्मद हो गए (यानी मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम के जानिसार हो गए)।

शुद गुलामे कि आबे जू आरद

आबे जू आमद व गुलाम बबुरद

इस वाकिआ से यह बात वाज़ेह तौर पर मालूम हुई कि इस्लाम बज़ोरे शमशीर नहीं फैला, देखिये इस्लाम कबूल करने वाले के हाथ में शमशीर है और इस्लाम फैलाने वाले का हाथ शमशीर से खाली है।

(एक मर्तबा सब लोग मिल कर बुलन्द आवाज़ से दुस्द शरीफ पढ़ें)

फारूक लक़ब

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि जब मैं कलिमए शहादत पढ़ कर मुसलमान हो गया तो मेरे इस्लाम कबूल करने की खुशी में उस वक़्त जितने मुसलमान हज़रत अरक़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के घर में मौजूद थे इतनी जोर से नारए

तक्बीर बुलन्द किया कि उस को मक्का के सब लोगों ने सुना। मैं ने रसूलें खुदा सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम से अर्ज किया या रसूलल्लाह! क्या हम हक पर नहीं हैं? हुजूर ने फरमाया क्यों नहीं? यानी बेशक हम हक पर हैं। इस पर मैंने अर्ज किया फिर यह पोशीदगी और पर्दा क्यों है। इस के बाद हम सब मुसलमान उस घर से दो सफें बना कर निकले, एक सफ में हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे, दूसरी सफ में मैं था और इसी तरह हम सब सफों की शकल में मस्जिदे हराम में दाखिल हुए, कुप्फारे कुरैश ने मुझे और हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को जब मुसलमानों के गिरोह के साथ देखा तो उनको बे इन्तिहा मलाल हुआ, उस रोज़ सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को फारूक का लक़ब अता फरमाया, इस लिये इस्लाम जाहिर हो गया और हक व बातिल के दरमियान फर्क वाज़ेह हो गया। (तारीख़ुल खुलफ़ा:78)

इज़हारे इस्लाम

हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैं जब मुसलमान हो गया तो उस के बाद अपने मामू अबू जहल बिन हिशाम के पास पहुंचा, अबू जहल ख़ानदाने कुरैश में बहुत बा असर समझा जाता था और उस को भी रईसे कुरैश की हैसियत हासिल थी, मैं ने उस के दरवाज़े की कुंडी खट खटाई, उस ने अन्दर से पूछा कौन है? मैं ने कहा मैं उमर हूं और मैं तुम्हारा दीन छोड़ कर मुसलमान हो गया हूं, उस ने कहा उमर! ऐसा कभी मत करना, मगर मेरे डर के सबब बाहर नहीं निकला बल्कि अन्दर से दरवाज़ा बन्द कर लिया, मैं ने कहा यह क्या तरीका है? मगर उस ने कोई जवाब नहीं दिया और न दरवाज़ा खोला, मैं उसी तरह देर तक बाहर खड़ा रहा, फिर वहां से कुरैश के एक दूसरे सरदार और बा असर शख्स के पास पहुंचा, मैं ने उस को पुकारा, वह निकला तो जो बात मैं ने अपने मामू अबू जहल से कही थी कि मैं मुसलमान हो गया हूं, वही बात उस से भी कही, तो

उस ने भी कहा ऐसा मत करना, फिर मेरे खौफ से घर के अन्दर दाखिल होकर दरवाजा बन्द कर लिया, मैं ने अपने दिल में कहा यह क्या मामला है कि मुसलमान मारे जाते हैं और मैं नहीं मारा जाता हूँ, कोई मुझ से कुछ तआरुज नहीं करता, मेरी यह बातें सुन कर एक शख्स ने कहा कि तुम अपना इस्लाम और दीन इस तरह जाहिर करना चाहते हो, मैंने कहा हां मैं उसी तरह जाहिर करूंगा, उस ने कहा वह देखो पत्थर के पास कुछ लोग बैठे हुए हैं, उन में फुलां शख्स ऐसा है कि अगर उस से तुम कुछ राज की बात कहो तो वह फौरन ऐलान कर देगा, उस से अपने इस्लाम लाने का वाकिआ बयान कर दो, हर जगह खबर हो जाएगी, एक एक आदमी के घर जाने की ज़रूरत नहीं। मैं वहां पहुंचा और उस से अपने इस्लाम कबूल करने को जाहिर किया, उस ने कहा क्या वाकई तुम मुसलमान हो चुके हो? मैं ने कहा हां बेशक मैं मुसलमान हो चुका हूँ, यह सुनते ही उस ने बुलन्द आवाज़ से ऐलान किया कि ऐ लोगो! उमर बिन खत्ताब हमारे दीन से निकल गया, यह सुनते ही इधर उधर जो मुशिरकीन बैठे हुए थे मुझ पर टूट पड़े, फिर देर तक मार पीट होती रही, शोरो-गुल की आवाज़ मेरे मामूं अबू जहल ने सुनी, उस ने पूछा क्या मामला है? लोगों ने कहा कि उमर मुसलमान हो गया है, मेरा मामूं अबू जहल एक पत्थर पर चढ़ा और कहा कि मैं ने अपने भांजे को पनाह दे दी, यह सुनते ही जो लोग मुझसे उलझ रहे थे अलग हो गए मगर यह बात मुझे बहुत नागवार हई कि दूसरे मुसलमानों से मार पीट हो और मुझ को पनाह दे दी जाए, मैं अबू जहल के पास फिर पहुंचा और कहा: أَعْلَىٰ ذَاكَ यानी तेरी पनाह मैं तुझे वापस करता हूँ, मुझे तेरी पनाह की ज़रूरत नहीं। फिर कुछ दिनों तक मार पीट का सिलसिला जारी रहा यहां तक कि खुदाए तआला ने इस्लाम को ग़लबा अता फ़रमाया। (तारीख़ुल खुलफा:77)

हज़रत इब्ने मस्कूद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है वह फरमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का मुसलमान होना

इस्लाम की फतह थी, उन की हिज्रत नुस्रते इलाही थी और उन की खिलाफत रहमते खुदावन्दी थी। हम में से किसी की यह हिम्मत व ताकत नहीं थी कि हम बैतुल्लाह शरीफ के पास नमाज़ पढ़ सकें मगर जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुसलमान हो गए तो उन्होंने ने मुशिरकीन से इस क़दर जंग व जिदाल किया कि उन्होंने ने आजिज़ आकर मुसलमानों का पीछा छोड़ दिया तो हम बैतुल्लाह शरीफ के पास इत्मिनान से नमाज़ पढ़ने लगे।

और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि जिस ने सब से पहले अपना इस्लाम अलल ऐलान ज़ाहिर किया वह हज़रत उमर फारूक आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं।

और हज़रत सुहैब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है उन्होंने ने फरमाया कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ईमान लाए तब इस्लाम ज़ाहिर हुआ, यानी इस से पहले लोग अपना इस्लाम क़बूल करना ज़ाहिर नहीं करते थे, उन के ईमान लाने के बाद लोगों को इस्लाम की तरफ खुल्लम खुल्ला बुलाया जाने लगा और हम बैतुल्लाह शरीफ के पास मजलिसें कायम करने, उस का अलानिया तवाफ करने, काफिरों से बदला लेने और उन को जवाब देने के काबिल हो गए।

(तारीखुल खुलफा:79)

आप की हिज्रत

हज़रत उमर फारूक़े आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हिज्रत भी बेमिसाल है, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अलावा हम किसी ऐसे शख्स को नहीं जानते जिस ने अलानिया हिज्रत की हो, जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हिज्रत की नियत से निकले तो आप ने अपनी तलवार गले में लटकाई और कमान कंधे पर और तरकश से तीर निकाल कर हाथ में ले लिया फिर बैतुल्लाह शरीफ के पास हाज़िर हुए, वहां बहुत से अशराफे (सरदार) कुरैश बैठे हुए थे, आप ने इत्मिनान से

कअबा शरीफ का तवाफ किया, फिर बहुत इत्मिनान से मकामे इब्राहीम के पास दो रकअत नमाज़ पढ़ी, फिर अशराफे कुरैश की जमाअत के पास आ कर एक एक शख्स से अलग अलग फरमाया: **فَافْتِ الْوُجُوهُ** यानी तुम लोगों के चेहरे बद शकल हो जायें, बिगड़ जायें और तुम्हारा नास हो जाए, उस के बाद फरमाया **وَيَقُمْ وَلَدُهُ وَتَرْبِيعُهُ** यानी जो शख्स कि अपनी मां को बे औलाद, अपने बच्चों को यतीम और अपनी बीवी को बेवा बनाने का इरादा रखता हो तो वह इस वादी के उस तरफ आकर मेरा मुकाबला कर ले, आप के इस तरह ललकारने के बावजूद उन अशराफे कुरैश में से किसी माई के लाल की हिम्मत न हुई कि वह आप का पीछा करता।

(तारीखुल खुलफा: 79)

हज़रत दरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि हमारे पास मदीना तैयिबा में सब से पहले हिज़्रत करके मुस्अब बिन उमैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आए, फिर हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम और उनके बाद हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बीस सवारों के साथ तशरीफ लाए, हम ने उन से पूछा कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का इरादा क्या है? उन्हों ने फरमाया कि वह पीछे तशरीफ लाएंगे, तो आप के बाद सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मदीना तैयिबा तशरीफ लाए, हुज़ूर के साथ हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु भी थे।

(तारीखुल खुलफा)

इमामे नववी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं कि हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ तमाम ग़ज़वात में शरीक रहे और आप वह बहादुर है कि ग़ज़वा उहद में जबकि जंग का नक्शा बदल गया और मुसलमानों में अफ़रा तफ़री पैदा हो गई तो उस हालत में आप साबित क़दम रहे।

(तारीखुल खुलफा)

आप का हुलिया

हज़रत ज़िर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का रंग गंदुमी था, आप के सर के बाल खोद पहनने की वजह से गिर गए थे, कद आप का लम्बा था, आप का सर दूसरों लोगों के सरों से ऊंचा मालूम होता था, देखने में ऐसा महसूस होता था कि आप किसी जानवर पर सवार हैं।

और अल्लामा वाक़दी फरमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का रंग जो लोग गंदुमी बतलाते हैं उन्होंने ने कहते के ज़माने में आप को देखा होगा, इस लिये कि उस ज़माने में जैतून का तेल इस्तेमाल करने के सबब रंग आप का गंदुमी हो गया था।

और इब्ने सअद ने रिवायत की है कि हज़रत इब्ने उमर ने अपने बाप हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हुलिया इस तरह बयान किया है कि आप का रंग सुरख़ी माइल सफ़ेद था, आख़िरी उम्र में सर के बाल झड़ गए थे और बुढ़ापे के आसार ज़ाहिर थे। और इब्ने रज़ा से इब्ने असाकिर ने रिवायत की है उन्होंने ने फरमाया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तवीलुल कामत और मोटे बदन के आदमी थे, सर के बाल बहुत ज़्यादा झड़े हुए थे, रंग बहुत गोरा था, जिस में सुरख़ी झलकती थी, आप के गाल अन्दर को धंसे हुए थे, मूँछों के किनारे का हिस्सा बहुत लम्बा था और उन के अतराफ़ में सुरख़ी थी।

(तारीख़ुल खुलफ़ा:89)

फारूक़े आज़म और अहादीसे करीमा

हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की फज़ीलत में बहुत सी हदीसे वारिद हुई हैं, तिर्मिज़ी शरीफ़ की हदीस है, सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया: لَوْ كَانَتْ نَبِيٌّ لَكَانَ عُمرُ بْنُ الْخَطَّابِ यानी अगर मेरे बाद नबी होते तो उमर होते। (मिशकात शरीफ़:558) सुब्हानल्लाह! यह है मर्तबा हज़रत उमर

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का कि अगर नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम खातिमुन नबिय्यीन न होते तो आप नबी होते। इस हदीस शरीफ में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की फज़ीलत का अज़ीमुश शान बयान है।

और हज़रत आइशा सिदीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: إِنِّي لَأَنْظُرُ إِلَى شَيْطَانِ الْإِنْسَانِ فَقَدْ قُذِرْتُ مِنْ عَمَلِهِ यानी मैं बिला शुब्हा निगाहे नुबुव्वत से देख रहा हूँ कि जिन्न के शैतान भी और इंसान के शैतान भी दोनों मेरे उमर के खौफ से भागते हैं रज़ियल्लाहु तआला अन्हु (मिशकात शरीफ:558) यह रुज़ब व दबदबा है हज़रत उमर फारुके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का कि चाहे जिन्न का शैतान हो या इंसान का दोनों उन के डर से भाग जाते हैं।

और मदारिजुन नुबुव्वत:2/426 में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि उमर बा मन अस्त व मन बा उमरम व हक बा उमर अस्त हर जा कि बाशद यानी उमर मुझ से हैं और मैं उमर से हूँ और उमर जिस जगह भी होते हैं हक उन के साथ होता है रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।

और हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बुखारी और मुस्लिम में रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मैं सो रहा था कि ख्वाब देखा कि लोग मेरे सामने पेश किये जा रहे हैं और मुझ को दिखाए जा रहे हैं, वह सब कुरते पहने हुए थे, जिन में कुछ लोगों के कुरते ऐसे थे जो सिर्फ सीने तक थे और बाज़ लोगों के कुरते उस से नीचे थे। फिर उमर बिन खत्ताब को पेश किया गया जो इतना लाम्बा कुर्ता पहने हुए थे कि ज़मीन पर घिस्टते हुए चलते थे। लोगों ने अर्ज किया या रसूल्लाह! इस ख्वाब की ताबीर क्या है? हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि दीन। (मिशकात शरीफ:557) इस हदीसे शरीफ में इस बात

का वाजेह बयान है कि हजरत उमर फारुके आजम रजियल्लाहु तआला अन्हु दोनदारी और तक्वा शिआरी में बहुत बढ़े हुए थे।

और तिर्मिजी शरीफ में हजरत इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **إِنَّ اللَّهَ حَصَلَ الْحَقُّ عَلَى لِسَانِ عُمَرَ وَقَلْبِهِ** यानी अल्लाह तआला ने उमर की ज़बान और क़ल्ब पर हक़ को जारी फरमा दिया है। (मिशकात शरीफ:557) मतलब यह है कि हजरत उमर फारुके आजम रजियल्लाहु तआला अन्हु हमेशा हक़ ही बोलते हैं उन के क़ल्ब और ज़बान पर बातिल कभी जारी नहीं होता।

और तबरानी औसत में हजरत अबू सईद खुदरी रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया: **مَنْ أَبْغَضَ عُمَرَ فَقَدْ أَبْغَضَنِي وَمَنْ أَحَبَّ عُمَرَ فَقَدْ أَحَبَّنِي** यानी जिस शख्स ने उमर से दुश्मनी रखी उस ने मुझ से दुश्मनी रखी और जिस ने उमर से मुहब्बत की उस ने मुझ से मुहब्बत की। और खुदाए तआला ने अरफा वालों पर उमूमन और उमर पर खुसूसन फख़र व मुबाहात की है रजियल्लाहु तआला अन्हु। और जितने आंबियाए किराम अलैहिमुस् सलाम दुनिया में भवक़ुस हुए (भेजे गए), हर नबी की उम्मत में एक मुहदिस ज़रूर हुआ है। और अगर कोई मोहदिस मेरी उम्मत में है तो वह उमर हैं। सहाबए किराम रजियल्लाहु तआला अन्हुम ने अर्ज किया कि या रसूलल्लाह! मुहदिस कैसा होता है? हुज़ूर ने फरमाया कि जिस की ज़बान से मलाइका बात करें वह मुहदिस होता है। (तारीख़ुल खुलफा:81)

और हजरत अबू हुरैरा रजियल्लाहु तआला अन्हु से बुखारी व मुस्लिम में रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **لَقَدْ كَانَ مِنْكُمْ مِنَ الْأَوَّلِينَ مَنْ قَدْ قَالَ بِلِسَانِهِ أَنِّي قَدْ نَبِئْتُ عُمَرَ** यानी तुम से पहले उम्मतों में मुहदिस हुए हैं। अगर मेरी उम्मत में कोई मुहदिस है तो वह उमर हैं रजियल्लाहु तआला अन्हु। (मिशकात शरीफ:556)

हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास दुनिया नहीं आई और न उन्होंने ने इस की ख्वाहिश व तमन्ना फरमाई मगर हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास दुनिया बहुत आई लेकिन उन्होंने ने उसे कबूल नहीं किया बल्कि ठुकरा दिया। (तारीखुल खुलफा:82) बेशक हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास दुनिया आई कि उन के ज़मानए ख़िलाफत में बहुत ममालिक फतह हुए और बेशुमार शहरों पर कबज़ा हुआ जहां से बेइन्तिहा माले ग़नीमत हासिल हुआ और वहां से इस कद्र माले ग़नीमत हासिल हुआ कि इस से पहले किसी शहर के फतह होने पर नहीं हासिल हुआ था। शहरे मदाइन के माले ग़नीमत का अन्दाज़ा इस से लगाया जा सकता है कि उस शहर के फतह करने वाले लश्कर के सिपाही साठ हज़ार थे, बैतुल माल का पांचवां हिस्सा निकालने के बाद हर सिपाही को बारह हज़ार दिरहम नक़द मिला था। और यह माल किस्रा बादशाह के उस फर्श के अलावा था जो सोने चांदी और जवाहेरात से बना हुआ था जिस को मख्सूस दरबारों में किस्रा बादशाह के लिये बिछाया जाता था, यह फर्श लश्कर की इजाज़त से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में भेज दिया गया, इस फर्श की कीमत का अन्दाज़ा इस से लगाया जा सकता है कि इस के एक बालिशत मुरब्बा टुकड़े की कीमत हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बीस हज़ार की रक़म मिली थी। तो इस तरह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास दुनिया आती थी मगर आप हमेशा उसे ठुकराते रहे।

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तहरीर फरमाया कि लोगों को उन की तन्ज़ाहें और उस के साथ अतियात के तौर पर भी माल तक्सीम कर दो, उन्होंने ने आप को लिखा कि मैं ने ऐसा ही किया है लेकिन इस के बावजूद अभी

माल बहुत ज्यादा मौजूद है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उनको तहरीर फरमाया कि कुल माल "माले ग़नीमत" है जो खुदाए तआला ने मुसलमानों को दिया है लिहाज़ा वह सब माल उन्हीं पर तक्सीम कर दो, वह माल उमर या उस की औलाद का नहीं है।
 रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन। (तारीख़ुल खुलफ़ा:98)

आप की राय से कुरआन की मुवाफ़क़त

हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की एक बहुत बड़ी फज़ीलत यह है कि कुरआन मजीद आप की राय के मुवाफ़िक़ नाज़िल होता था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि कुरआने करीम में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की राय मौजूद हैं और हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि अगर किसी मामले में लोगों की राय दूसरी होती और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की राय दूसरी तो कुरआने मजीद हज़रत उमर की राय के मुवाफ़िक़ नाज़िल होता था। हज़रत मुजाहिद से मरवी है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु किसी मामले में जो कुछ मशवरा देते थे, कुरआन शरीफ़ की आयतें उसी के मुताबिक़ नाज़िल होती थीं। (तारीख़ुल खुलफ़ा:83) हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि उन के रब ने उनसे 21 बातों में मुवाफ़क़त फरमाई है, उन में चन्द बातों का आप लोगों के सामने ज़िक़ किया जाता है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैं ने सरकां अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि हुज़ूर! आप की ख़िदमत में हर तरह के लोग आते जाते हैं और हुज़ूर की ख़िदमत में अज़्वाजे मुतहहरात भी होती हैं, बेहतर है कि आप उन को पर्दा करने का हुक्म फरमाएं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मेरी इस अर्ज़ के बाद उम्महातुल मोमिनीन के पर्दा के बारे में यह आयते करीमा नाज़िल हुई: وَإِذَا سَأَلَكَ الْمُؤْمِنُونَ مَعْصَاءَ فُتُلُوقٍ مِنْ وَرَاءِ

حَبَابِ यानी और जब तुम उम्महातुल मोमिनीन से इस्तेमाल करने की कोई चीज मांगो तो पर्दे के बाहर से मांगो। (पारा:22, रूकूअ:4) (तारीखुल खुलफा)

मुल्के शाम से एक काफिले के साथ अबू सुफियान के आने की खबर पाकर रसूले अकरम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम अपने अस्हाब के साथ उन के मुकाबले के लिये रवाना हुए, मक्का मुअज्जमा से अबू जहल कुफारे कुरैश का एक भारी लश्कर लेकर काफिला की इमदाद के लिये रवाना हुआ। अबू सुफियान तो रास्ते से हट कर अपने काफिला के साथ समन्दर के साहिल की तरफ चल पड़े। तो अबू जहल से उस के साथियों ने कहा कि काफिला तो बच गया अब मक्का मुअज्जमा वापस चलो मगर उस ने इनकार कर दिया और हुजूर सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम से जंग करने के इरादे से बद्र की तरफ चल पड़ा। हुजूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम ने सहाबाए किराम रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हुम से जंग करने के बारे में मश्वरा किया तो बाज़ लोगों ने कहा कि हम इस तैयारी से नहीं चले थे, न हमारी तादाद ज़्यादा है, न हमारे पास काफी सामान अस्तिहा है, मगर उस वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु ने बद्र की तरफ निकल कर काफिरों से मुकाबला करने ही का मश्वरा दिया तो यह आयते करीमा नाज़िल हुई: كَمَا أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنَ مِثْلِكَ بِالسَّحْقِ وَإِنَّ قَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ لَكُرُفُؤُ يानी ऐ महबूब! तुम्हें तुम्हारे रब ने तुम्हारे घर से हक़ के साथ (बद्र की तरफ) बर आमद किया और बेशक मुसलमानों का एक गिरोह इस पर नाखुश था। (पारा:9, रूकूअ:15) (तारीखुल खुलफा)

हज़रत अब्दुर रहमान बिन अबू यज़ूला बयान फरमाते हैं कि एक यहूदी हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु से मिला और आप से कहने लगा कि जिब्रील फिरिश्ता जिस का तज़्किरा तुम्हारे नबी (सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम) करते हैं, वह हमारा सख़्त दुश्मन है, उस के जवाब में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु ने

फरमाया: مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِلَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَرُسُلِهِ وَجِبْرِيلَ وَمِيكَالَ فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ لِلْكَافِرِينَ यानी जो कोई दुश्मन हो अल्लाह और उस के फिरीशतों और उस के रसूलों और जिब्रील व मीकाईल का तो अल्लाह दुश्मन है काफिरों का।

(पारा:1, रुकूअ:12) (तारीखुल खुलफा:84)

तो जिन अल्फाज के साथ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यहूदी को जवाब दिया बिल्कुल उन्हीं अल्फाज के साथ कुरआने मजीद की यह आयते करीमा नाज़िल हुई। आयते मुबारका के आखिरी जुम्ला: فَإِنَّ اللَّهَ عَدُوٌّ لِلْكَافِرِينَ से मालूम हुआ कि अबिया व मलाइका की अदावत कुफ़्र है और महबूबाने हक से दुश्मनी करना खुदाए तआला से दुश्मनी करना है।

पहली शरीअतों में रोज़ा इफ्तार करने के बाद खाना पीना और हम-बिस्तरी करना इशा की नमाज़ तक जाइज़ था। बाद नमाज़े इशा यह सारी चीज़ें रात में भी हराम हो जाती थीं। यह हुक्म हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के ज़मानए मुबारका तक बाकी रहा, यहां तक कि रमज़ान शरीफ की रात में बाद नमाज़े इशा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से हम-बिस्तरी हो गई, जिस पर वह बहुत शर्मिन्दा हुए, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बारगाह में हाज़िर हुए और वाकिआ बयान किया तो इस पर यह आयते मुबारका नाज़िल हुई: أَجَلٌ لَّكُمْ لَيْلَةُ الصِّيَامِ الرُّكْتُ إِلَى نَسَائِكُمْ इस आयते करीमा का मतलब यह है कि रोज़ों की रातों में अपनी औरतों के पास जाना (यानी उनसे हम-बिस्तरी करना) तुम्हारे लिये हलाल हो गया।

(पारा:2, रुकूअ:7)

बिशर नामी एक मुनाफ़िक था, उस का एक यहूदी से झगड़ा था, यहूदी ने कहा चलो सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से फैसला करा लें, मुनाफ़िक ने ख्याल किया हुज़ूर हक़ फैसला करेंगे, कभी किसी की तरफदारी और रिआयत न फरमायेंगे जिस से उस का मतलब हासिल न हो सकेगा, इस लिये उस ने मद्दईये ईमान होने (यानी

ईमान का दावा करने) के बावजूद कहा कि हम कअब बिन अशरफ यहूदी को पंच बनायेंगे। यहूदी जिस का मामला था वह खूब जानता था कि कअब रिश्वत खोर है और जो रिश्वत खोर होता है उस से सहीह फैसले की उम्मीद रखना ग़लत है। इस लिये कअब के हम मज़हब होने के बावजूद यहूदी ने उस को पंच तस्लीम करने से इनकार कर दिया तो मुनाफिक को फैसले के लिये सरकारे अक्दस के यहां मजबूरन आना पड़ा, हुज़ूर ने जो हक़ फैसला किया वह इत्तिफाक से यहूदी के मुवाफिक और मुनाफिक के मुखालिफ़ हुआ। मुनाफिक हुज़ूर का फैसला सुनने के बाद फिर यहूदी के दरपै हुआ और उसे मजबूर करके हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास लाया, यहूदी ने आप से अर्ज किया कि मेरा और इस का मामला हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तय फरमा चुके हैं लेकिन यह हुज़ूर के फैसले को नहीं मानता, आप से फैसला चाहता है, आप ने फरमाया ठहरो मैं अभी आकर फैसला किये देता हूँ, यह फरमा कर मकान में तशरीफ ले गए और तलवार लाकर उस मुनाफिक मुद्ई को क़त्ल कर दिया और फरमाया जो अल्लाह और उस के रसूल के फैसले को न माने उस के मुतअल्लिक मेरा यही फैसला है। तो बयाने वाकिआ के लिये यह आयते करीमा नाज़िल हुई: أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يَزْعُمُونَ أَنَّهُمْ آمَنُوا بِمَا نَزَّلَ إِلَيْكَ وَمَا نَزَّلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيدُونَ أَن يَتَّبِعُوا إِلَى الطَّاغُوتِ وَقَدْ أُمِرُوا أَنْ يَكْفُرُوا بِهِ وَيُرِيدُ الشَّيْطَانُ أَنْ يُضِلَّهُمْ ضَلَالًا بَعِيدًا (प:5,रु:6) क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन का दावा है कि वह ईमान लाए उस पर जो तुम्हारी तरफ उतरा और उस पर जो तुम से पहले उतरा, फिर चाहते हैं कि अपना पंच शैतान को बनाएं और उन को तो यह हुक्म था कि उसे हरगिज़ न मानें और इब्नीस यह चाहता है उन्हें दूर बहका दे।

(तफसीरे जलालैन व साबी)

फिर किसी ने सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को इत्तिला दी कि हज़रत उमर ने उस मुसलमान को क़त्ल कर दिया जो हुज़ूर के दरबार में फैसले के लिये हाज़िर हुआ था, आप ने फरमाया

कि मुझे उमर से ऐसी उम्मीद नहीं कि वह किसी मोमिन के कत्ल पर हाथ उठाने की जुअत कर सके तो अल्लाह तबारक व तआला ने फिर मन्द्रजा जैल आयते मुबारका नाज़िल फरमाई। (तारीखुल खुलफा:84)

فَلَا رَيْبَ لَكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتَّى يُخَرِّجُوكَ فِيمَا شَرَّيْتَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِي أَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِمَّا قَضَيْتَ وَيَسْأَلُوكَ اسْلِيمًا ۝

तर्जमा: यानी ऐ महबूब! तुम्हारे रब की कसम, वह लोग मुसलमान न होंगे जब तक अपने आपस के झगड़ों में तुम्हें हाकिम न तस्लीम कर लें। फिर जो कुछ तुम हुक्म फरमा दो, अपने दिलों में उसे रुकावट न पाएं और दिल से मान लें। (पारा:5,रुकूअ:6)

इन वाकिआत से खुदावन्दे कुद्दूस की बारगाह में हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की इज़्ज़त व अज़मत का पता चलता है कि उन की बातों के मुवाफिक़ वही-ए-इलाही और कुरआने मजीद की आयतें नाज़िल होती थीं, मजीद तपसील जानने के लिये तारीखुल खुलफा वगैरा का मुतालेआ करें।

एक बार सब मिल कर बुलन्द आवाज़ से दुरुद शरीफ पढ़ें।

आप की खिलाफत

हज़रत फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की खिलाफत का वाकिआ अल्लामा वाकिदी की रिवायत के मुताबिक़ यूँ है कि जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तबीअत अलालत के सबब बहुत ज़्यादा नासाज़ हो गई तो आप ने हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बुलाया जो अशरए मुबशशरा (वह दस सहाबए किराम जिन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने दुनिया में ही जन्नती होने की खुशख़बरी दी थी, हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ उन्हीं) में से हैं और उन से फरमाया कि उमर के बारे में तुम्हारी क्या राय है? उन्हीं ने कहा कि मेरे ख़्याल

में तो वह उस से बढ़ कर हैं जितना कि आप उन के बारे में ख्याल फरमाते हैं, फिर आप ने हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बुला कर उन से भी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बारे में दरियाफ्त फरमाया, उन्होंने ने भी यही कहा कि मुझ से ज़्यादा आप उन के बारे में जानते हैं, हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इरशाद फरमाया कि कुछ तो बतलाओ, हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि उन का बातिन उन के ज़ाहिर से अच्छा है और हम लोगों में उन का मिस्ल कोई नहीं। फिर आप ने सईद बिन जैद, उसैद बिन हुज़ैर और दीगर अंसार व मुहाजिरीन हज़रात से भी मशवरा लिया और उन की रायें मालूम कीं। हज़रत उसैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि खुदाए तआला खूब जानता है कि आप के बाद हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) सबसे अफज़ल हैं, वह अल्लाह की रज़ा पर राजी रहते हैं और अल्लाह जिस से नाखुश होता है उस से वह भी नाखुश रहते हैं, उन का बातिन उन के ज़ाहिर से भी अच्छा है और कारे खिलाफत के लिये उन से ज़्यादा मुस्तइद और क़वी शख्स कोई नज़र नहीं आता, फिर कुछ और सहाबए किराम आए, उन में से एक शख्स ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कहा कि हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) की सख्त मिज़ाजी से आप वाकिफ हैं इस के बावजूद अगर आप उन को खलीफा मुकर्रर करेंगे तो खुदाए तआला के यहां क्या जवाब देंगे? आप ने फरमाया खुदा की कसम तुम ने मुझ को खौफ ज़दा कर दिया मगर मैं बारगाहे खुदाबन्दी में अर्ज़ करूंगा कि या इलाहल आलमीन! मैं ने तेरे बन्दों में से बेहतरीन शख्स को खलीफा बनाया है और ऐ.ऐतराज़ करने वाले यह जो कुछ मैं ने कहा है तुम दूसरे लोगों को भी पहुंचा देना।

उस के बाद आप ने हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

को बुला कर फरमाया लिखिये: बिस्मिल्लाहि रहमानि रहिम, यह वसियत नामा है जो अबू बकर बिन कुहाफा ने अपने आखिरी ज़माने में दुनिया से रुख्तत होते वक़्त और अहदे आखिरत के शुरू में आलमे बाला में दाखिल होते वक़्त लिखाया है, यह वह वक़्त है जबकि एक काफिर भी ईमान ले आता है, एक फासिक व फाजिर भी यकीन की रौशनी हासिल कर लेता है और एक झूठा भी सच बोलता है, मुसलमानों! अपने बाद मैं ने तुम्हारे ऊपर उमर बिन खत्ताब को खलीफा मुन्तख़ब किया है, उन के अहकाम को सुनना और उन की इताअत व फरमां बरदारी करना, मैं ने हत्तल इम्कान खुदा व रसूल, दीन और अपने नफ्स के बारे में कोई तक्सीर व गुलती नहीं की है और जहाँ तक हो सका तुम्हारे साथ भलाई की है, मुझे यकीन है कि वह (यानी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) अदल व इंसाफ से काम लेंगे, अगर उन्होंने ने ऐसा किया तो मेरे ख्याल के मुताबिक़ होगा और अगर उन्होंने ने अदल व इंसाफ को छोड़ दिया और बदल गए तो हर शख्स अपने किये का जवाबदेह होगा। और ऐ मुसलमानों! मैं ने तुम्हारे लिये नेकी और भलाई ही का कसद किया है: **وَسَيُعْلَمُ الْبَيْنُ وَالْمَوَاقِفُ** (प:19-रु:15) यानी और ज़ालिम अन्करीब जानेंगे कि व किस करवट पर पलटा खायेंगे। **वस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु।**

फिर आप ने उस वसियत नामा को सर बमोहर करने का हुक्म फरमाया, जब वह मोहर बन्द हो गया, तो आप ने उसे हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हवाले कर दिया, जिसे लेकर वह गए, लागों ने राज़ी खुशी से हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दस्ते हक परस्त पर बैअत की। उस के बाद आप ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तन्हाई में बुला कर कुछ वसियतें फरमाई और जब वह चले गए तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बारगाहे इलाही में दुआ के लिये हाथ उठाया और अर्ज

किया या इलाहल आलमीन! यह जो कुछ मैं ने किया है इस से मेरी नियत मुसलमानों की फलाह व बहबूद है, तू इस बात से खूब वाकिफ है कि मैं ने फित्ना व फसाद रोकने के लिये ऐसा काम किया है, मैं ने इस के बारे में अपनी राय के इज्तिहाद से काम लिया है, मुसलमानों में जो सब से बेहतर है, मैं ने उस को उन का वाली बनाया है और वह उन में सब से कवी और नेकी पर हरीस है।

और या इलाहल आलमीन! मैं तेरे हुक्म से तेरी बारगाह में हाजिर हो रहा हूं, खुदावन्दा तू ही अपने बन्दों का मालिक व मुख्तार है और उन की बाग डोर तेरे ही दस्ते कुद्वत में है, या इलाहल आलमीन उन लोगों में दुरुस्तगी और सलाहियत पैदा करना और उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) को खुलफाए राशिदीन में से करना और उन के साथ उन की रअय्यत को भी अच्छी जिंदगी बसर करने की तौफीके रफीक अता फरमा।

एक ऐतराज़ और उस का जवाब

राफज़ी लोग कहते हैं कि (हज़रत) अबू बकर ने जो अपनी जिंदगी में खलीफा मुन्तख़ब किया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की मुखालफत की इस लिये कि हुज़ूर ने अपनी ज़ाहिरी जिंदगी में किसी को खलीफा नहीं बनाया हालां कि वह अच्छाई व बुराई को खूब जानते थे और अपनी उम्मत पर पूरी पूरी शफ़क़त व राफ़त रखते थे मगर इस के बावजूद आप ने उम्मत पर किसी को खलीफा नामज़द नहीं किया और (हज़रत) अबू बकर ने (हज़रत) उमर को अपनी जिंदगी में खलीफा नामज़द कर दिया जो हुज़ूर की खुली हुई मुखालफत है।

इस ऐतराज़ के तीन जवाब हज़रत शाह अब्दुल अजीज़ साहब मोहदिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाए हैं और वह यह हैं। पहला जवाब यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का अपनी ज़ाहिरी जिंदगी में उम्मत पर खलीफा न बनाना खुला हुआ झूठ और बोहतान है इस लिये कि राफज़ी सब के सब इस बात

के काइल हैं कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को खलीफा बनाया था। लिहाज़ा अगर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने भी सुन्नते नबवी की पैरवी में खलीफा मुन्तख़ब कर दिया तो इस में मुख़ालफ़त कहां से लाज़िम आ गई। और अगर जवाब की बुनियाद मज़हबे अहले सुन्नत पर रखें तो अहले सुन्नत के मुहक्क़ीन इस बात के काइल हैं कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बकर सिदीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को नमाज़ और हज में अपना नाइब व खलीफा बनाया है। और सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम जो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के रमज़ शनास (इशारा पहचानने वाले), आप के कामों की बारीकियों से आगाह और आप के इशारों को अच्छी तरह समझते थे उन के लिये इतना ही इशारा काफी था और हज़रत अबू बकर सिदीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सिर्फ़ इस नुक्तेए नज़र से ख़िलाफ़त नामा लिखवाया कि अरब व अजम के नौ मुस्लिम बग़ैर तसरीह व तन्सीस के इस से वाकिफ़ न हो सकेंगे।

और दूसरा जवाब यह है कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इस वजह से खलीफा नहीं मुकर्रर फरमाया कि आप वही-ए-इलाही से पूरे यकीन के साथ जानते थे कि आप के बाद हज़रत अबू बकर ही खलीफा होंगे, सहाबा उन्हीं पर इत्तिफ़ाक़ करेंगे और कोई दूसरा उस में दख़ल अन्दाज़ी नहीं कर सकेगा। चुनांचे अहादीसे करीमा जो अहले सुन्नत की किताबों में मौजूद हैं इस बात पर वाज़ेह तरीक़े से दलालत करती हैं मसलन हुजूर ने फरमाया: **بَعَثْتُكَ يَا عَلِيٌّ وَالْمُسْلِمُونَ الْآئِينَ** यानी अल्लाह और मुसलमान अबू बकर के सिवा किसी को क़बूल न करेंगे। और हदीस शरीफ़ में है: **يَا عَلِيُّ خَلِيفَةُ مِنْ بَعْدِي** यानी मेरे बाद अबू बकर खलीफा होंगे रज़ियल्लाहु तआला अन्हु। और जब हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का यकीने कायम था कि खलीफा

हजरत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ही होंगे तो खिलाफत नामा लिखने की कोई हाजत न थी। चुनांचे मुस्लिम शरीफ में है कि मरजे वफात में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हजरत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और उनके साहिबज़ादे को बुलाया ताकि खिलाफत नामा लिखें, फिर फरमाया कि खुदाए तआला और मुसलमान अबू बकर के अलावा किसी और को खलीफा नहीं बनाएंगे, लिखने की हाजत क्या है? तो आप ने इरादा तरक़ फरमाया दिया। बखिलाफ हजरत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के कि आपके पास वही नहीं आती थी और न आप को इस बात का कतई इल्म था कि मेरे बाद लोग बिला शुब्हा उमर बिन खत्ताब को खलीफा बनाएंगे और अपनी अक्ल से इस्लाम और मुसलमानों के लिये हजरत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की खिलाफत को अच्छा समझते थे इस लिये उन पर ज़रूरी था कि जिस चीज़ में उम्मत की भलाई देखें उस पर अमल करें, बिहम्दिल्लाहि तआला आप की अक्ल ने सहीह काम किया कि इस्लाम की शौकत, इन्तिज़ाम उमूरे सल्लनत और काफिरों की जिल्लत जिस क़द्र हजरत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हाथों हुई तारीख़ उस की मिसाल पेश करने से आजिज़ है।

और तीसरा जवाब यह है कि खलीफा न बनाना और चीज़ है और खलीफा बनाने से मना करना और चीज़ है, मुख़ालफत जब लाज़िम आती कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम खलीफा बनाने से रोके होते और हजरत अबू बकर खलीफा बना देते और अगर खलीफा बनाना हुज़ूर की मुख़ालफत करना है तो लाज़िम आएगा कि हजरत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हजरत इमाम हसन को खलीफा बना कर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की मुख़ालफत की।
अल्-इयाज़ु बिल्लाहि तआला। (तोहफ़े इस्ना अशरिया)

हजरत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हजरत उमर

फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपने बाद खलीफा बना कर निहायत अक्ल और दानिशमन्दी से काम लिया। इस लिये कि वह जानते थे, इस्लाम अपनी सच्चाई की बिना पर रोज़ बरोज़ फैलता ही जाएगा, बड़ी-बड़ी सत्तनतें ज़ेरे नहीं होंगी और बड़े-बड़े ममालिक फट्ट होंगे, जहां से बहुत माले ग़नीमत आएगा, लोग खुशहाल व मालदार हो जायेंगे और मालदारी के बाद अक्सर दुनियादारी आ जाती है दीनदारी कम हो जाती है, इस लिये अब मेरे बाद उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) जैसे शख्स को खलीफा होना ज़रूरी है जो दीन के मामले में बहुत सख्त हैं और शरीअत के मामले में किसी की परवाह नहीं करते हैं।

हज़रत सुफियाने सौरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि जिस शख्स ने यह ख्याल किया कि हज़रत अबू बकर सिदीक और हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से ज़्यादा खिलाफत के मुस्तहिक और हकदार हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे तो उस ने हज़रत अबू बकर व हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा को ख़ताकार ठहराने के साथ तमाम अन्तार व मुहाजिरीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को भी ख़ताकार ठहराया।
 अल्-इयाजु बिल्लाहि तआला। (तारीखुल खुत्तफा:83)

आप की करामतें

हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बहुत सी करामतें भी ज़ाहिर हुई हैं जिन में से चन्द करामतों का जिक्र आप के सामने किया जाता है। अल्लामा अबू नुऐम ने दलाइल में हज़रत उमर बिन हारिस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की है कि हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जुमा का खुत्बा फरमा रहे थे यका यक आप ने दरमियाने खुत्बा छोड़ कर तीन बार यह फरमाया: **يَا سَارِيَا!** यानी ऐ सारिया! पहाड़ की तरफ जाओ, ऐ सारिया! पहाड़ की तरफ जाओ, ऐ सारिया! पहाड़ की तरफ जाओ। इस तरह हज़रत

सारिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को पुकार कर पहाड़ की तरफ जाने का हुक्म दिया और उस के बाद फिर खुत्बा शुरू फरमा दिया। हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बाद नमाज़ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से दरियाफ्त किया कि आप तो खुत्बा फरमा रहे थे फिर यका यक बुलंद आवाज़ से कहने लगे **يَا سَارِيَةَ** तो यह क्या मामला था? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया: कसम है खुदाए जुल जलाल की मैं ऐसा कहने पर मजबूर हो गया था **رَأَيْتُمْ يُقَاتِلُونَ عِنْدَ حَلٍ يُؤْتُونَ مِنْ بَيْنِ كَيْدِيهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ فَلَمْ أَمْلِكْ أَنْ تَكُنْ يَا سَارِيَةَ الْحَبْل** यानी मैं ने मुसलमानों को देखा कि वह पहाड़ के पास लड़ रहे हैं और कुफ़ार उन को आगे और पीछे से घेरे हुए हैं, यह देख कर मुझ से ज़ब्त न हो सका और मैं ने कह दिया ऐ सारिया! पहाड़ की तरफ जाओ।

इस वाकिआ के कुछ रोज़ बाद हज़रत सारिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का कासिद एक खत लेकर आया जिस में लिखा था कि हम लोग जुमा के दिन कुफ़ार से लड़ रहे थे और करीब था कि हम शिकस्त खा जाते कि ऐने जुमा की नमाज़ के वक़्त हम ने किसी की आवाज़ सुनी **يَا سَارِيَةَ الْحَبْل** ऐ सारिया! पहाड़ की तरफ हट जाओ, इस आवाज़ को सुन कर हम पहाड़ की तरफ चले गए तो खुदाए तआला ने काफ़िरों को शिकस्त दी, हम ने उन्हें क़त्ल कर डाला, इस तरह हम को फ़तह हासिल हो गई।

(तारीख़ुल खुलफ़ा:86)

हज़रत सारिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु निहावन्द में लड़ाई कर रहे थे जो ईरान के सूबए आजर बाइजान के पहाड़ी शहरों में से है और मदीना तैयिबा से इतनी दूर है कि उस ज़माने में वहां से चल कर एक माह के अन्दर निहावन्द नहीं पहुंच सकते थे, जैसा कि हाशिया अशअतुल लम्आत:4/601 में है कि “निहावन्द दर (ईरान) सूबा आजर बाइजान अज बिलादे जिबाल अस्त कि अज मदीना बयक माह आजा **रसीद**” तो जब निहावन्द मदीना तैयिबा से इतनी दूर है कि उस

जमाने में आदमी वहां से चल कर एक माह में निहावन्द नहीं पहुंच सकता था मगर हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मस्जिद नबवी में खुल्वा फरमाते हुए हज़रत सारिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को निहावन्द में लड़ते हुए मुलाहेज़ा फरमाया और आप ने यह भी देखा कि दुश्मन मुसलमानों को आगे पीछे से घेरे हुए हैं और पहाड़ करीब में है, फिर आप ने उन्हें आवाज़ देकर पहाड़ की तरफ जाने का हुक्म फरमाया और बगैर किसी मशीन की मदद के अपनी आवाज़ को वहां तक पहुंचा दिया, यह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की खुली हुई करामत है।

हर कि इश्के मुस्तफा सामाने ऊस्त

बहरो-बर दर गोशए दामाने ऊस्त

हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की इस करामत को इमाम बैहकी ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से भी रिवायत है की है जो हदीस की मशहूर व मौजूतमद किताब मिश्कात शरीफ पेज: 546 पर भी लिखी हुई है।

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक शख्स से पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है? उसने कहा कि जुमरा यानी चिंगारी, फिर आप ने उसके बाप का नाम दरियाफत फरमाया तो उस ने कहा शिहाब यानी शोला। फिर आप ने उस से पूछा तुम्हारे कबीले का नाम क्या है? उस ने कहा हरका यानी आग और जब आप ने उस के रहने की जगह दरियाफत की तो उस ने हुरा बताया यानी गरमी। आप ने पूछा कि हुरा कहां है? उस ने कहा ज़ाते लज़ा यानी शोले वाली जगह में, इन सारे जवाबात को सुनने के बाद हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया: اَوْرَكَ الْمَلِكُ نَفْسًا خَرَّتْ يَاقُ यानी अपने अहल व अयाल की ख़बर लो कि वह सब जल कर मर गए, जब वह शख्स अपने घर वापस हुआ तो देखा वाकई उस के घर को आग लग गई थी और सब

लोग जल कर मर गए थे।

(तारीखुल खुलफा:86)

हजरत अबुश शैख़ किताबुल इस्मत में हजरत कैस बिन हज्जाज रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं कि जब हजरत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हजरत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़मानए खिलाफत में मिस्र को फ़तह किया तो अहले अजम एक मुकर्ररा दिन पर हजरत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास आए और कहा: **يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ إِنَّ هَذِهِ نَهْرٌ لَا يَجْرِي إِلَّا بِهَا** यानी एक हाकिम! हमारे इस दरियाए नील के लिये एक पुराना तरीका चला आ रहा है कि जिस के बग़ैर जारी नहीं रहता है बल्कि खुश्क हो जाता है और हमारी खेती का दारो मदार इसी दरियाए नील के पानी पर ही है। हजरत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन लोगों से दरियाफत फरमाया कि दरियाए नील के जारी रहने का वह पुराना तरीका क्या है? उन लोगों ने कहा कि जब उस महीने की चांद की ग्यारहवीं तारीख़ आती है तो हम लोग एक कुंवारी लड़की को मुन्तख़ब करके उस के मां बाप को राज़ी करते हैं फिर उसे बेहतरीन किसम के ज़ेवरात और कपड़े पहनाते हैं, उस के बाद लड़की को दरियाए नील में डाल देते हैं। हजरत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया: **إِنَّ هَذَا لَا يَكُونُ إِلَّا فِي الْإِسْلَامِ** यानी इस्लाम में ऐसा कभी नहीं हो सकता है, यह तमाम बातें लगव और बेसरो-पा हैं, इस्लाम इस किसम की तमाम बातिल बातों को मिटाने आया है, वह लड़की को दरियाए नील में डालने की इजाज़त हरगिज़ नहीं दे सकता, आप के इस जवाब के बाद लोग वापस चले गए, कुछ दिनों के बाद वाकई दरियाए नील बिल्कुल खुश्क हो गया, यहां तक कि बहुत से लोग वतन छोड़ने पर आमादा हो गए। हजरत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यह मामला देखा तो एक ख़त लिख कर हजरत उमर फारूके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को सारे हालात से मुत्तला (आगाह) किया, आप ने ख़त पढ़ने के बाद हजरत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तहरीर फरमाया

कि तुम ने मिस्रियों को बहुत उम्दा जवाब दिया, बेशक इस्लाम इस किसम की तमाम लगव और बेहूदा बातों को मिटाने के लिये आया है। मैं इस खत के हमराह एक रुकड़ा खाना कर रहा हूँ तुम इस को दरियाए नील में डाल देना।

जब वह रुकड़ा हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को पहुँचा तो आप ने उसे खोल कर पढ़ा उस में लिखा हुआ था कि:

مِنْ عَبْدِ اللَّهِ عُمَرَ أَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ إِلَى نَيْلٍ مِصْرَ أَمَّا بَعْدُ فَإِنْ كُنْتَ تَجْرِي مِنْ قَبْلِكَ فَلَا تَحْزَنْ

وَإِنْ كَانَ اللَّهُ يُحَرِّيكَ فَاسْأَلِ اللَّهَ الْوَاحِدَ الْقَهَّارَ أَنْ يُحَرِّيكَ۔

यानी अल्लाह के बन्दे उमर अमीरुल मोमिनीन की तरफ से मिस्र के दरियाए नील को मालूम हो कि अगर तू बज़ाते खुद जारी होता है तो मत जारी हो। और अगर खुदाए अज़्ज़ व जल्ल तुझे जारी करे तो मैं अल्लाह वाहिदुल कहहार से दुआ करता हूँ कि वह तुझे जारी फरमा दे।

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के उस रुकड़ा को रात के वक़्त दरियाए नील में डाल दिया। मिस्र वाले जब सुबह को नीन्द से बेदार हुए तो देखा कि अल्लाह तबारक व तआला ने उस को इस तरह जारी फरमा दिया कि सोला हाथ पानी ऊपर चढ़ा हुआ है। फिर दरियाए नील उस तरह कभी नहीं सूखा और मिस्र वालों को यह जाहिलाना रस्म हमेशा के लिये ख़त्म हो गई। (तारीख़ुल ख़ुल्फा: 87)

यह हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बहुत बड़ी करामत है कि आप ने दरियाए नील के नाम ख़त लिखा और खुदाए अज़्ज़ व जल्ल से दुआ की, तो वह दरियाए नील जो हर साल एक कुंवारी लड़की की जान लिये बग़ैर जारी नहीं होता था हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ख़त से हमेशा के लिये जारी हो गया। मालूम हुआ कि आप बहरो-बर दोनों पर हुकूमत फरमाते थे। एक

शायर ने बहुत खूब कहा है:

याद ऊ गर मोनिस जानत बूद

हर दो अलाम जेरे फरमानत बूद

खिलाफते फारूकी का ज़माना था एक अजमी शख्स मदीना तैयिबा आया जो हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तलाश कर रहा था, किसी ने बताया कि कहीं आबादी के बाहर कहीं सो रहे होंगे, वह शख्स आबादी के बाहर निकल कर आप को तलाश करने लगा, यहाँ तक कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इस हालत में पाया कि वह ज़मीन पर सर के नीचे ज़िरह रखे हुए सो रहे थे, उसने सोचा कि सारी दुनिया में इस शख्स की वजह से फिल्ला बरपा है इस लिये कि उस वक़्त ईरान और दूसरे मुल्कों में इस्लामी फौजों ने तहलका मचा रखा था, लिहाज़ा इस को कत्ल कर देना ही मुनासिब है और आसान भी है, इस लिये कि आबादी के बाहर सोते हुए शख्स को मार डालना कोई मुश्किल बात नहीं, यह सोच कर उस ने नियाम से तलवार निकाली और आप की ज़ात बा बरकात पर वार करना ही चाहता था कि अचानक ग़ैब से दो शेर नमूदार हुए और उस अजमी की तरफ बढ़े, इस मन्ज़र को देख कर वह चीख पड़ा, उस की आवाज़ से हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जाग उठे, आप के बेबाक होने पर उस ने अपना सारा वाकिआ बयान किया और फिर मुसलमान हो गया। (सीरत खुलफाए राशिदीन)

यह भी आप की एक करामत है कि शेर जो इंसानों के जान लेवा हैं वह आप की हिफाज़त के लिये नमूदार हो गए और क्यों न हो कि: **مَنْ كَانَ يُلُوْكَ اَللّٰهُ** यानी जो अल्लाह तआला का हो जाता है अल्लाह तआला उस का हो जाता है और हर तरह उस की हिफाज़त फरमाता है।

मक़ामे रफीअ

हज़रत अल्लामा इमाम राज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह सूरए

कहफ की आयते करीमा की तफसीर में बुखारी शरीफ की हदीस: **أَحْيَيْتُهُ كُنْتُ سَمْعَهُ الَّذِي يَسْمَعُ بِهِ وَبَصَرَهُ الَّذِي يَبْصُرُ بِهِ وَيَدَهُ الَّتِي يَبْطِشُ بِهَا وَرِجْلَهُ الَّتِي يَمْشِي بِهَا** (मिशकात शरीफ:197) नक़ल फरमाने के बाद तहरीर फरमाते हैं: **الْعَبْدُ إِذَا وَاطَّبَ عَلَى الطَّاعَاتِ بَلَغَ الْمَقَامَ الَّذِي يَقُولُ اللَّهُ كُنْتُ لَهُ سَمْعًا وَبَصَرًا إِذَا صَارَ نُورٌ جَلَالِ اللَّهِ سَمْعًا لَهُ سَمِعَ الْقَرِيبُ وَالْبَعِيدُ وَإِذَا صَارَ ذَلِكَ النُّورُ بُدْأَ لَهُ قَدْرٌ عَلَى الْقَرِيبِ وَالْبَعِيدِ** (तफसीर कबीर:5/480) यानी जब कोई बन्दा नेकियों पर हमेशगी इख्तियार करता है तो उस मकामे रफीअ तक पहुंच जाता है कि जिस के मुतअल्लिक अल्लाह तआला ने **كُنْتُ لَهُ سَمْعًا** फरमाया है। तो जब अल्लाह के जलाल का नूर उस की समअ हो जाता है तो वह दूर व नज़्दीक की आवाज़ को सुन लेता है। और जब यही नूर उस की बसर हो जाता है तो वह दूर व नज़्दीक की चीज़ों को देख लेता है और जब यही नूरे जलाल उस का हाथ हो जाता है तो वह बन्दा आसान व मुश्किल और दूर व नज़्दीक की चीज़ों में तसरुफ करने पर कादिर हो जाता है।



हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और

ग़स्सानी बादशाह जब्ला बिन अल-ऐहम

औस व खज़रज के बाज़ कबीलों ने मुल्के शाम में एक चश्मे पर जिस का नाम ग़स्सान था डेरा डाला और उस इलाक़े के कुछ शहरों पर कब्ज़ा कर लेने के बाद एक अजीमुश शान सल्तनत काइम कर दी और मुलूके ग़स्सानिया के मुअज़्ज़ज नाम से मशहूर हो गए। मुलूके ग़स्सान में सब से पहला बादशाह जुफ़्ना हुआ और सब से आखिरी बादशाह जब्ला बिन अल-ऐहम। वह पहले बुत-परस्त थे, फिर रूमी बादशाहों के साथ तअल्लुक की वजह से अपना क़दीम मज़हब छोड़ कर ईसाई हो गए थे। कुरैशे मक्का के बाद सब से ज़्यादा जिन को इस्लाम की कुव्वत तोड़ देने और उस को सफ़हए हस्ती से मिटा देने की फ़िक्र थी वह मुलूक ग़स्सान थे, अरब के दूसरे कबीले अगर्चे मुकाबले के लिये आमादा हुए थे लेकिन उन के पास बाकाइदा लश्कर न था और न किसी किस्म का अहम साजो-सामान था मगर ग़स्सानियों की सल्तनत निहायत बाकाइदा और मुनज़्ज़म थी, उन का लश्कर भी आरास्ता था और सब से ज़्यादा यह कि एक ज़बर्दस्त बादशाह कैसरे रूम से उन के तअल्लुकात थे जो हर वक़्त उनकी इम्दाद पर आमादा और मुस्तइद था।

मलिके (बादशाहे) ग़स्सान मुसलमानों को सफ़हए हस्ती से मिटाने के लिये सोच ही रहा था कि इसी दरमियान में सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के कासिद हज़रत शुजाअ बिन वहब अल-अस्ज़दी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उसके नाम हुज़ूर का ख़त लेकर ऐसे वक़्त पहुंचे जबकि कैसरे रूम किस्सा के मुकाबले से फारिग होकर शुक्राना अदा करने के लिये बैतुल मुकद्दस आया हुआ था और ग़स्सान का बादशाह उस की दअवत में मशगूल था, इसी सबब से कई रोज़ तक हुज़ूर के कासिद हज़रत शुजाअ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को

वहां ठहरना पड़ा और कई रोज़ तक रसाई न हो सकी। आखिर किसी तरह एक रोज़ हुजूर के कासिद मलिक गस्सान के सामने पेश हुए और उन्होंने ने जो नामए (ख़ते) मुबारक उस को दिया उस का मज़मून यह था: **إِنِّي أَدْعُوكَ إِلَى أَنْ تُؤْمِنَ بِاللَّهِ وَحَدَّثَ بَيْنِي لَكَ مَلَكُكَ** यानी मैं तुम को सिर्फ़ एक खुदा पर ईमान लाने की तरफ़ बुलाता हूँ, अगर तुम ईमान ले आए तो तुम्हारा मुल्क तुम्हारे लिये बाकी रहेगा।

शाहे गस्सान सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम का ख़त पढ़ कर भड़क उठा और गुस्से से कहा कि मेरा मुल्क कौन छीन सकता है? मैं खुद मदीना पर हम्ला करूंगा और उस की ईंट से ईंट बजा दूंगा और कासिद से कहा कि जाकर यही बात मुहम्मद (सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम) से कह देना।

हज़रत शुजाअ् रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु फरमाते हैं कि मदीना तैयिबा पहुंच कर जब मैं ने हुजूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम से गस्सान के बादशाह की पूरी कैफियत बयान की तो हुजूर ने इरशाद फरमाया: **كَلِمَاتٌ** यानी उस का मुल्क तबाह व बरबाद हो गया।

सीरते हलबिया में है कि हुजूर का नामए मुबारक हारिस गस्सानी के नाम था और इब्ने हिशाम वगैरा दूसरे मुवर्रिख़ीन ने लिखा है कि हज़रत शुजाअ् रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु हुजूर का नामए मुबारक जब्बा बिन अल-ऐहम के यहां लेकर गए थे।

अलगरज हुजूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम के नामए मुबारक भेजने का यह असर हुआ कि जो आग अन्दर ही अन्दर सुलग रही थी वह भड़क उठी और मलिके गस्सान अपनी पूरी कुव्वत के साथ आमदए जंग हुआ, यहां तक कि गस्सानियों ही की अदावत के नतीजे में मूता का सख्त तरीन मारिका हुआ (जंग हुई) जिस में मुसलमानों को बहुत बड़ा नुक़सान उठाना पड़ा कि बहुत से सिपाही और कई एक चीदा और बरगुज़ीदा सिपह सालार इस जंग में शहीद हो गए।

मदीना तैयिबा पर गस्सानी बादशाह के हमले की ख़बर जब कासिद

के जुरिये पहुंची तो मुसलमान बहुत तश्वीश और फिक्र में हुए कि अगर्चे अल्लाह के महबूब दानाए खिफाया व गुयूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के इरशाद के मुताबिक मलिक गस्सान खाइब व खासिर होगा और उस का मुल्क तबाह व बरबाद होगा लेकिन मदीना शरीफ पर उस के हम्ले से न मालूम कितनी जानें जाए होंगी, कितनी औरतें बेवा हो जायेंगी और न मालूम कितने बच्चे यतीम हो जायेंगे, मगर अल्लाह तआला ने उस के हम्ले से मदीना तैयिबा को महफूज रखा। गस्सानी बादशाह जिस के मदीना शरीफ पर हम्ले की खबर गर्म थी वह हारिस था या जब्बा बिन अल-ऐहम? इस में इख्तिलाफ है, तब्रानी में अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से जो रिवायत है उस से मालूम होता है कि वह गस्सानी बादशाह जब्बा बिन अल-ऐहम था।

अलगरज जब्बा बिन अल-ऐहम ने मुसलमानों से दुश्मनी जाहिर करने में कोई कमी नहीं रखी मगर इसके बावजूद इस्लाम की खूबियों से वाकिफ था, उसके कानों तक इस्लाम की अच्छाइयां पहुंचती रहती थीं, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की सच्चाई की दलीलों और निशानियों का भी इल्म उसे होता रहा था। अंसार हज़रत का मुसलमान होकर सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को अपने यहाँ ठहराना और उन की हिफाज़त व हिमायत में जान व माल का कुर्बान कर देना भी आहिस्ता आहिस्ता उस के अन्दर इस्लाम की मुहब्बत पैदा कर रहा था इस लिये अंसार और जब्बा दोनों एक ही कबीले से तअल्लुक रखते थे। बिल-आखिर इस्लाम की मुहब्बत उस के दिल में बढ़ती गई, यहां तक कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़माने में वह मुहब्बत इस कदर बढ़ गई कि उस ने खुद हज़रत उमर फारूक़े आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को लिखा कि मैं इस्लाम में दाखिल होने के लिये आप की खिदमत में हाज़िर होना चाहता हूं, आप ने निहायत खुशी से तहरीर फरमाया कि तुम बिला खटक चले आओ

يَا نَبِيَّ اللَّهِ يَا نَبِيَّ اللَّهِ يَا نَبِيَّ اللَّهِ यानी हर हाल में तुम हमारी तरह हो जाओगे।

जब्ला बादशाह अपने कबीले उक और गुस्तान के पांच सौ आदमियों को हमराह लेकर रवाना हुआ, जब मदीना मुनव्वरा सिर्फ दो मंज़िल रह गया तो उस ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की खिदमत में इत्तिला भेजी कि मैं हाज़िर हो रहा हूं और अपने लश्कर के दो सौ सवारों को हुक्म दिया कि ज़र्बफ्त व हरीर (रेशम व कामखाब) की सुर्ख व ज़र्द वरदियां पहनें और घोड़ों पर दीबाज की झूलें डाल कर उन के गले में सोने के तौक पहनाएं और अपना ताज सर पर रख कर पूरी शान दिखलाने के लिये अपने खानदान की बेहतरीन और माया नाज़ कुर्ते मारिया ताज में लगायें, मारिया तमाम गुस्तानी बादशाहों की दादी थी, उस के पास दो बालियां थीं, जिन में दो मोती कबूतर के अण्डे के बराबर लगे हुए थे, यह बालियां अपनी खूबसूरती और बेश कीमत मोतियों की वजह से बेमिस्ल समझी जाती थीं। कहा जाता है कि पूरी दुनिया के बादशाहों के खज़ानों में ऐसे मोती और ऐसी बालियां नहीं थीं। मुलूके गुस्तान को उन पर फख था और वह उन बेश कीमत और नादिर होने के अलावा अपनी साहिबे इक़बाल दादी की यादगार समझ कर उन बालियों का निहायत ऐहताराम करते थे और इसी वजह से जब्ला ने यह दिखलाने को कि अपनी उस शाहाना हैसियत और हालते आज़ादी व खुद मुख्तारी छोड़ कर दीने इस्लाम में दाखिल होकर अमीरुल मोमिनीन की पैरवी को गवारा करता हूं, उन बेश कीमत बालियों को भी अपने ताज में लगा लिया था। इस तरह बड़ी शान व शौकत के साथ मदीना तैयिबा में दाखिल होने के लिये तैयार हुआ।

हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मुसलमानों को जब्ला के इस्तेक़बाल करने और ताज़ीम व तकरीम के साथ उतारने का हुक्म दिया। मदीना मुनव्वरा में खुशी और मसरत का जोश फैला हुआ था, बच्चे और बूढ़े सभी उस जुलूस के नज़ारे को देखने के लिये अपने अपने घरों से निकल पड़े। मुसलमानों के लिये हकीकत में इस से

बढ़ कर खुशी की और कौन सी बात हो सकती थी कि मजहबे इस्लाम जिस के फैलाने की खिदमत उन के सपुर्द हुई थी, उस के अन्दर इस तरह राजी और खुशी से बड़े बड़े बादशाह दाखिल हों। मगर उस वक्त यह खुशी इस वजह से और ज्यादा दोबाला हो रही थी कि वही गुस्तान का बादशाह जिस के हमले का चर्चा मदीना तैयिबा में घर घर था और जिस के डर से सब सहम रहे थे, आज वही बादशाह इस तरह सरे तस्लीम खम किये हुए मदीना तैयिबा में दाखिल हो रहा है। यह खुदाए तआला की कुद्रेत और इस्लाम की एक करामत थी और इसी वजह से सब छोटे बड़े उस जुलूस को देखने के लिये निकल खड़े हुए।

अलगरज बड़ी शान व शौकत और निहायत ताजीम व तंक्रीम से इस्तक्बालिया जमाअत के झुमुट में शाहाना जुलूस के साथ जब्बा मदीना तैयिबा में दाखिल हुआ, हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मेहमान दारी के मरासिम में कोई कसर न रखी और मदीना तैयिबा में उन नए मेहमानों की आमद से खूब चहल पहल रही। इत्तिफाक से ज़मानए हज करीब था, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हर साल हज के लिये भक्कए मोअज्ज़मा हाजिर हुआ करते थे, इस साल जब वह हज के लिये निकले तो जब्बा भी साथ में खाना हुआ, वहां बद किस्मती से यह बात पेश आ गई कि तवाफ की हालत में जब्बा की लुंगी पर जो बवजह शाने बादशाही ज़मीन पर घिसटती हुई जा रही थी, कबीलए फज़ारा के एक शख्स का पैर पड़ गया, जिस के सबब लुंगी खुल गई, जब्बा को गुस्सा आया और उस ने इतनी ज़ोर से मुंह पर घूंसा मारा कि उस की नाक टेढ़ी हो गई।

यह मुकद्दमा खिलाफत की अदालत में पेश हुआ, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बगैर किसी रिआयत के हक् फैसला करते हुए जब्बा से फरमाया कि या तो तुम किसी तरह मुद्ई को राजी कर लो वरना बदला देने के लिये तैयार हो जाओ, जब्बा जो अपने को बड़ी शान व शौकत वाला समझता था यह खिलाफे उम्मीद फैसला उसे सख्त

नागवार गुजरा। और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़ूब जानते थे कि जब्ला को यह फैसला नागवार गुज़रेगा मगर आप उस की कोई परवाह न की और बादशाह का लिहाज़ किये बग़ैर हक़ फैसला सुना दिया, उस ने कहा एक मामूली आदमी के ऐवज़ मुझ से बदला लिया जाएगा, मैं बादशाह हूँ और वह एक मामूली आदमी है। हज़रत ने फरमाया कि बादशाह और रिअय्यत (जनता) को इस्लाम ने अपने अहकाम में बराबर कर दिया है। किसी को किसी पर फज़ीलत है तो तक्वा और परहेज़गारी के सबब **إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللَّهِ أَتْقَاهُ** (पारा:26, रूकूज:14)

जब्ला ने कहा मैं तो यह समझ कर दाइराए इस्लाम में दाखिल हुआ था कि मैं पहले से ज़्यादा मुअज़्ज़ज़ और मोहतरम होकर रहूंगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि इस्लामी कानून का फैसला यही है जिस की पाबंदी हम पर और तुम पर लाज़िम है, इस के खिलाफ कुछ हरगिज़ नहीं हो सकता, तुम को अपनी इज़्ज़त काइम रखनी है तो उस को किसी तरह राज़ी कर लो वरना आम मज्मू में बदला देने को तैयार हो जाओ। जब्ला ने कहा तो मैं फिर ईसाई हो जाऊंगा, आप ने फरमाया तो अब इस सूरत में तेरा क़त्ल ज़रूरी होगा, इस लिये कि जो मुरतद हो जाता है इस्लाम में उस की सज़ा यही है। जब्ला ने कहा कि अपने मामले में ग़ोर व फ़िक्र करने के लिये आप मुझे एक रात की मोहलत दें। हज़रत ने उस की यह दरख्वास्त मनज़ूर फरमा ली और उसे एक रात की मोहलत दे दी, तो जब्ला उसी रात को अपने लश्कर के साथ पोशीदा तौर पर मक्का मुअज़्ज़मा से भाग गया और कुस्तुतूनिया पहुँच कर नम्रानी बन गया। **अल-इयाजु बिल्लाहि तआला।**

यह हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बेमिसाल अदालत कि आप ने एक मामूली आदमी के मुकाबले में ऐसी शान व शौकत वाले बादशाह की कोई परवाह न की, उसे मुद्दई को राज़ी करने के या बदला देने पर मजबूर किया और इस बात का ख़्याल

बिल्कुल न फरमाया कि ऐसे जलीलुल कदर बादशाह पर इस फैसला का रहे अमल क्या होगा। लिहाजा मानना पड़ेगा कि खुलफाए राशिदीन ने अपनी इस किस्म की खूबियों से इस्लाम की जड़ों को मजबूत फरमाया और उसे खूब रौशन और ताबनाक बनाया। रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन।

इतिबाह

बाज़ लोग आप के अदल व ईसाफ की तारीफ करते हुए बयान करते हैं कि आप के साहिब ज़ादे अबू शहमा ने शराब पी और फिर उसी नशे की हालत में जिना किया, इन बातों पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन को कोड़े लगवाए, यहां तक कि उसी तक्लीफ से बीमार होकर उनका इन्तेकाल हो गया। तो हज़रत अबू शहमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की जानिब जिना और शराब नोशी की निस्बत गुलत है। मशहूर और मोतबर किताब मज्मउल बिहार में है कि जिना की निस्बत सहीह नहीं, अल्बत्ता उन्होंने ने नबीज़ पी थी और नबीज़ उस पानी को कहते हैं जिस में खजूर भिगाई गई हो और उस की मिठास पानी में उतर आई हो। उम्दतुर रिआया हाशिया शरह विकाया जिल्द अब्वल मजीदी, पेज: 87 में है: *هوالماء الذي تبيد فيه تمرات فتخرج حلاوته* और नबीज़ दो तरह की होती है एक वह कि उस में नशा नहीं होता ऐसी नबीज़ हलाल व पाक है और हज़रत सैयिदना इमामे आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के नज़्दीक उस से वजू बनाना भी जाइज़ है बशर्ते कि रिक्कत व सैलान बाकी हो (शरहे विकाया में उसी सफहा पर है) और एक नबीज़ वह होती है जिस में नशा पैदा हो जाता है और वह हराम व नजिस होती है। हज़रत अबू शहमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने नबीज़ पी यह समझ कर कि यह हलाल है, नशा वाली नहीं है मगर वह नशा वाली साबित हुई तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उनकी गिरिफ्त फरमाई और अज़ राहे अदल व ईसाफ उन्हें सज़ा दी।

गवर्नरों से शराइत

हज़रत इब्ने साबित रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत उमर फारूक़े आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब किसी को कहीं का वाली मुकर्रर फरमाते तो उस से चन्द शरतें लिखवा लेते थे, अब्बल यह कि वह तुरकी घोड़े पर सवार नहीं होगा दूसरे यह कि वह अज़ूला दर्जे का खान्ना नहीं खाएगा, तीसरे यह कि वह बारीक कपड़ा नहीं पहनेगा, चौथे यह कि हाजत वालों के लिये अपने दरवाज़े को बन्द नहीं करेगा और दरबान नहीं रखेगा।

फिर जो शख्स इन शराइत की पाबन्दी नहीं करता था उस के साथ निहायत सख्ती से पेश आते थे। हाकिमे मिस्र अयाज़ बिन गुनम के बारे में मालूम हुआ कि वह रेशम पहनता है और दरबान रखता है तो आप ने हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा को हुक्म दिया कि अयाज़ बिन गुनम को जिस हालत में भी प्राव गिरफ्तार करके ले आओ, जब अयाज़ खलीफतुल मुस्लिमीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सामने लाए गए तो आप ने उन को कम्बल का कुर्ता पहनाया और बकरियों का एक रेवड़ उन के सुपुर्द किया और फरमाया कि जाओ इन बकरियों को चराओ, तुम इंसानों पर हुक्मत के करने के काबिल नहीं हो। यानी अयाज़ बिन गुनम को गवर्नर से एक चरवाहा बना दिया। यही वजह है कि पूरी मम्लकते इस्लामिया के हुक्काम और गवर्नर आप की हैबत से कांपते रहते थे। आप फरमाया करते थे कि खिलाफत का कारोबार उस वक़्त तक दुरुस्त नहीं होता जब तक कि उस में इतनी शिद्दत न की जाए जो जबर न बन जाए और इतनी नरमी न बरती जाए जो सुस्ती से ताबीर हो।

इमाम शअबी फरमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह तरीका था कि जब आप किसी हाकिम को किसी तौर पर मुकर्रर फरमाते तो उस के तमाम माल व असासे की फेहरिस्त लिखवा कर अपने पास महफूज़ कर लिया करते थे। एक बार आप ने अपने

तमाम उम्माल को हुक्म फरमाया कि वह अपने अपने मौजूद माल व असासे की एक एक फेहरिस्त बना कर उन को भेज दें, उन्हीं उम्माल में हज़रत सअद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु भी थे जो अशरए मुबश्शरा में से हैं, जब उन्होंने ने अपने असासों की फेहरिस्त बना कर भेजी तो हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन के सारे माल के दो हिस्से किये जिन में से एक हिस्सा उन के लिये छोड़ दिया और एक हिस्सा बैतुल माल में जमा कर दिया।

(तारीखुल खुलफा:96)

रातों में गश्त

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रिआया की ख़बरग़ीरी के लिये बदवी का लिबास पहन कर मदीना तैयिबा के अतराफ में रातों को गश्त लगाया करते थे, एक बार हस्बे मामूल आप गश्त लगा रहे थे कि उन्होंने ने सुना एक औरत कुछ अशआर पढ़ रही है, जिस का खुलासा यह है कि:

“रात बहुत हो गई और सितारे चमक रहे हैं मगर मुझे यह बात जगा रही है कि मेरे साथ कोई खेलने वाला नहीं है। तो मैं खुदाए तआला की कसम खा कर कहती हूँ कि अगर मुझे अल्लाह के अज़ाब का ख़ौफ न होता तो इस चारपाई की चूल्हें हिलतीं लेकिन मैं अपने नफ्स के साथ उस निगहबान और मोअविकल से डरती हूँ जिस का कातिब कभी नहीं थकता।”

अशआर को सुन कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस औरत से दरियाफ्त फरमाया कि तेरा क्या मामला है कि इस किस्म के अशआर पढ़ रही है? उस ने कहा कि मेरा शौहर कई माह से जंग पर गया हुआ है, उसी की मुलाकात के शौक में यह अशआर पढ़ रही हूँ। सुबह होते ही आप ने उस के शौहर को बुलाने के लिये कासिद रवाना फरमा दिया और चूँकि आप की ज़ौजए मोहतरमा वफात पा चुकी थीं इस लिये आप ने अपनी साहिब ज़ादी उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ्सा

रजियल्लाहु तआला अन्हा से दरियाफ्त फरमाया कि औरत कितने जमाने तक शौहर के बगैर रह सकती है? इस सवाल को सुन कर हज़रत हफ्सा रजियल्लाहु तआला अन्हा ने शर्म से अपना सर झुका लिया और कोई जवाब नहीं दिया, आप ने फरमाया कि खुदाए तआला हक बात में शर्म नहीं करता, तो हज़रत हफ्सा रजियल्लाहु तआला अन्हा ने हाथ के इशारे से फरमाया कि तीन महीने या ज्यादा से ज्यादा चार, तो हज़रत उमर रजियल्लाहु तआला अन्हु ने हुक्म जारी फरमा दिया कि: لَا يَحْسَبُ الْحَمْلُ فَوْقَ أَرْبَعَةِ أَشْهُرٍ यानी चार महीने से ज्यादा किसी सिपाही को जंग में न रोका जाए। (तारीखुल खुल्फा)

एक रात आप शश्त फरमा रहे थे कि एक मकान से आवाज़ आई बेटी दूध में पानी मिला दे, दूसरी आवाज़ आई जो लड़की की थी, मां अमीरुल मोमिनीन का हुक्म तुझ को याद नहीं रहा जिस में ऐलान किया गया है कि दूध में कोई शख्स पानी न मिलाए, मां ने कहा अमीरुल मोमिनीन यहां देखने नहीं आयेगे, पानी मिला दे, लड़की ने कहा कि मैं ऐसा नहीं कर सकती कि खलीफा के सामने इताअत का इकरार और पीठ पीछे नाफरमानी। उस वक़्त हज़रत उमर रजियल्लाहु तआला अन्हु के साथ हज़रत सालिम रजियल्लाहु तआला अन्हु थे, आप ने उन से फरमाया कि इस घर को याद रखो और सुबह के वक़्त हालात मालूम करके मुझे बताओ। हज़रत सालिम रजियल्लाहु तआला अन्हु ने दरबारे खिलाफत में रिपोर्ट पेश की कि लड़की बहुत नेक जवान और बेवा है, कोई मर्द उन का सरपरस्त नहीं है, मां बेसहारा है, आप ने उसी वक़्त अपने लड़कों को बुला कर फरमाया कि तुम में से जो चाहे उस लड़की से निकाह कर ले तो हज़रत आसिम रजियल्लाहु तआला अन्हु तैयार हो गए, आप ने उस बेवा लड़की को बुला कर हज़रत आसिम से अक्द करके अपनी बहू बना लिया। (अश्रए मुबश्शरा)

इस वाकिआ को एक ग़ैर मुक़ल्लिद मौलवी ने एक जल्सा में बयान करने के बाद इन लफ्जों में तब्सिरा किया कि देखो! हज़रत उमर

रजियल्लाहु तअल्ला अन्हु इतने अअला खानदान के होते हुए अपने लड़के की शादी एक गुवालन से कर दी, लिहाजा हनफियों का कुपच वाला मस्अला ग़लत है, इत्तिफाक से उस जल्से की तक्रीर सुनने के लिये एक सुन्नी हनफी मौलवी भी गए थे, ग़ैर मुक़ल्लिद की इस तक्रीर से मुतअस्सिर होकर उन्होंने ने यह ख़्याल कायम कर लिया कि वाकई कुपच का मस्अला ग़लत मालूम होता है, यह बात उन्होंने ने एक सुन्नी हनफी मुफ्ती से बयान की, तो हज़रत मुफ्ती साहब ने फरमाया कि ग़ैर मुक़ल्लिद ने फरेब से काम लिया जिसे आप भांप न सके, हनफियों के यहां लड़के की तरफ से कुपच होने का ऐतबार नहीं है, वह छोटी से छोटी बिरादरी और बहुत कम दर्जे की लड़की से भी निकाह कर सकता है। कुपच होने का ऐतबार सिर्फ लड़की की तरफ से है कि बालिग होने के बावजूद अपने वली की रज़ा के बग़ैर वह ग़ैर कुपच से निकाह नहीं कर सकती जैसा कि फिक्हे हनफी की आम किताबों में मज़कूर है, तो मौलवी साहब ने इक़्रार किया कि वाकई मैं ग़ैर मुक़ल्लिद के फरेब में आ गया था, इस पर हज़रत मुफ्ती साहब ने फरमाया कि इसी लिये बद मज़हबों की तक्रीर सुनने से मना फरमाया गया है कि जब आप दस साल इल्मे दीन हासिल करने के बावजूद उस के फरेब में आ गए तो अवाम का क्या हाल होगा, किसी मौलवी की तक्रीर का सुनना भी दीन का हासिल करना है और हदीस शरीफ में है: **اَنْظُرُوْا عَمَّنْ تَاْعُلُوْنَ بِكُمْ** यानी देख लो कि तुम अपना दीन किस से हासिल कर रहे हो।

(रवाहु मुस्लिम, मिश्कात:37)

लिहाजा किसी बद मज़हब की तक्रीर सुनना हराम व ना जाइज़ है। और जो लोग यह कहते हैं कि हम पर किसी बद मज़हब की तक्रीर का असर नहीं हो सकता वह बहुत बड़ी ग़लत फहमी में मुब्तला हैं, जब दस साल के पढ़े हुए मौलवी पर बद मज़हब की तक्रीर का असर पड़ गया तो दूसरे लोगों की क्या हकीकत है। बस दुआ है कि खुदाए तअल्ला ऐसे लोगों को समझ अता फरमाए और बद मज़हबों की तक्रीर

से दूर रहने की तौफीके स्फीक बख्शो। आमीन

बैतुल माल से वजीफा

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दिन रात खिलाफत के काम अंजाम देते थे मगर बैतुल माल से कोई खास वजीफा नहीं लेते थे, जब आप खलीफा बनाए गए तो कुछ दिनों के बाद आप ने लोगों को जमा करके इरशाद फरमाया कि मैं पहले तिजारत किया करता था और अब तुम लोगों ने मुझ को खिलाफत के काम में मशगूल कर दिया है तो अब गुज़ारे की सूरत क्या होगी, लोगों ने मुख्तलिफ़ मिक्दारें तज्वीज़ (मुकर्रर) कीं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि मुतवस्सित तरीके पर जो आप के घर वालों के लिये और आप के लिये काफी हो जाए वहीं मुकर्रर फरमाएं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस राय को पसंद फरमाया और कबूल कर लिया, इस तरह बैतुल माल से मुतवस्सित मिक्दार आप के लिये मुकर्रर हो गई। कुछ दिनों के बाद एक मजलिस जिस में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु भी थे यह तय पाया कि खलीफतुल मुस्लिमीन के वजीफे में इज़ाफा करना चाहिये कि गुज़र में तंगी होती है मगर किसी की हिम्मत न हुई कि वह आप से क ६१ तो उन लोगों ने उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़सा रज़ियल्लाहु तआला अन्ना की वसीला बनाया और ताकीद कर दी कि हम लोगों का नाम न बताइयेगा, जब हज़रत हफ़सा ने आप से इस का तज़क़िरा किया तो आप का चेहरा गुस्से से तमतमा उठा, आप ने लोगों के नाम दरियाफ्त किये, हज़रत हफ़सा ने कहा पहले आप की राय मालूम हो जाए, आप ने फरमाया कि अगर मुझे उन के नाम मालूम हो जाते तो मैं उन को सख्त सज़ा देता। यानी आप ने लोगों की राय के बावजूद वजीफे के इज़ाफे को मनज़ूर नहीं फरमाया बल्कि उनपर और नाराज़गी ज़ाहिर फरमाई।

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ وَأَرْضَاهُ عَنْهُ سَائِرُ الْمُسْلِمِينَ
 रज़ियल्लाहु तआला अन्हु व अरज़ाहु अन्ना व अन् साइरिल् मुस्लिमीन।

वसीला

आप के ज़मानए खिलाफत में एक बार जबर्दस्त कहत पड़ा, आप ने बारिश तलब करने के लिये हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ नमाज़े इस्तिस्का अदा फरमाई। हज़रते इब्ने औन फरमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हाथ पकड़ा और उस को बुलंद करके इस तरह बारगाहे इलाही में दुआ की: **اللَّهُمَّ إِنَّا نَتَوَسَّلُ إِلَيْكَ بِعَمِّ نَبِيِّكَ أَنْ تُلْعَبَ عَلَّا الْمَعْلُ وَأَنْ** यानी या इलाहल आलमीन! हम तेरे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के चचा को वसीला बना कर तेरी बारगाह में अर्ज करते हैं कहत और खुशकसाली को खत्म फरमा दे और हम पर रहमत वाली बारिश नाज़िल फरमा, यह दुआ मांग कर अभी आप वापस भी नहीं हुए थे कि बारिश शुरू हो गई और कई रोज़ तक मुसलसल होती रही। (तारीखुल खुल्फा:90) मालूम हुआ कि हुज़ू सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से निस्वत रखने वालों को अपनी किसी हाज़त के लिये वसीला बनाना शिर्क नहीं है बल्कि हज़रत उमर फारुके आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का तरीका और उन की सुन्नत है और हुज़ूर का इरशादे गरामी है: **عَلَيْكُمْ بِسُتَيْ وَسُتَةِ الْخُلَفَاءِ الرَّاشِدِينَ** यानी मेरी और मेरे खुल्फाए राशिदीन की सुन्नत को इख्तियार करो। (मिशकात शरीफ:30)

आप की शहादत

बुखारी शरीफ में है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बारगाहे इलाही में दुआ की: **اللَّهُمَّ ارْزُقْنِي شَهَادَةً فِي سَبِيلِكَ وَأَخْلُ مَوْتِي فِي بِلَدِ رَسُولِكَ** यानी या इलाहल आलमीन! मुझे अपनी राह में शहादत अता फरमा और अपने रसूल के शहर में मुझे मौत नसीब फरमा। (तारीखुल खुल्फा:90)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की दुआ इस तरह कबूल हुई कि हज़रत मुगीरा बिन शोअबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मजूसी मुल्लाम अबू लूअलू ने आप से शिकायत की कि उस के आका हज़रत

मुगीरा रोज़ाना उस से चार दिरहम वसूल करते हैं आप उस में कमी करा दीजिये, आप ने फरमाया कि तुम लोहार और बढ़ई का काम खूब अच्छी तरह जानते हो और नक्काशी भी बहुत उम्दा करते हो तो चार दिरहम यौमिया तुम्हारे ऊपर ज़्यादा नहीं हैं, इस जवाब को सुन कर वह गुस्से से तिलमिलाता हुआ वापस चला गया, कुछ दिनों के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उसे फिर बुलाया और फरमाया कि तू कहता था कि “अगर आप कहें तो मैं ऐसी चक्की तैयार कर दूँ जो हवा से चले” उसने तेवर बदल कर कहा कि हां, मैं आप के लिये ऐसी चक्की तैयार कर दूँगा जिस का लोग हमेशा ज़िक्र किया करेंगे। जब वह चला गया तो आप ने फरमाया कि यह लड़का मुझे क़त्ल की धमकी देकर गया है। मगर आप ने उस के खिलाफ कोई काररवाई नहीं की। अबू लुअलू ने आप के क़त्ल का पुख़्ता इरादा कर लिया, एक ख़न्जर पर धार लगाई और उस को ज़हेर में बुझा कर अपने पास रख लिया, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़ज़ की नमाज़ के लिये मस्जिदे नबवी तशरीफ ले गए और उनका तरीक़ा था कि वह तक्बीर तहरीमा से पहले फरमाया करते थे कि सफ़ें सीधी कर लो, यह सुन कर अबू लुअलू आप के बिल्कुल करीब सफ में आकर खड़ा हो गया और फिर आप के कंधे और पहलू पर ख़न्जर से दो वार किया जिस से आप गिर पड़े, उस के बाद उस ने और नमाज़ियों पर हम्ला करके 13 आदमियों को ज़रमी कर दिया, जिन में से बाद में छः अपराद का इन्तेक़ाल हो गया, उस वक़्त जबकि वह लोगों को ज़ख़मी कर रहा था एक इराक़ी ने उस पर कपड़ा डाल दिया और जब वह उस कपड़े में उलझ गया तो उस ने उसी वक़्त खुदकुशी कर ली। चूँकि अब सूरज निकलना ही चाहता था इस लिये हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दो मुख़्तसर सूरतों के साथ नमाज़ पढ़ाई। और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को आप के मकान पर लाए, पहले आप को नबीज़ पिलाई गई, जो ज़ख़्मों के रास्ते से बाहर

निकल गई, फिर दूध पिलाया गया मगर वह भी ज़ख्मों से बाहर निकल गया। किसी शख्स ने आप से कहा कि आप अपने फर्जन्द अब्दुल्लाह को अपने बाद खलीफा मुकर्रर कर दें, आप ने उस शख्स को जवाब दिया कि अल्लाह तआला तुम्हें गारत करे, तुम मुझे ऐसा गलत मशवरा दे रहो जिसे अपनी बीवी को सहीह तरीके से तलाक़ देने का सलीका भी न हो, क्या मैं ऐसे शख्स को खलीफा मुकर्रर कर दूँ? फिर आप ने हज़रत उस्मान, हज़रत अली, हज़रत तल्हा, हज़रत जुबैर, हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ और सअद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम की इन्तिखाबे खलीफा के लिये एक कमेटी बना दी और फरमाया कि इन्हीं में से किसी को खलीफा मुकर्रर किया जाए। उस के बाद आप ने अपने साहिबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह से फरमाया कि बताओ हम पर कितना कर्ज़ है, उन्होंने ने हिसाब करके बताया कि तक़रीबन 86 हज़ार कर्ज़ है, आप ने फरमाया कि यह रक़म हमारे माल से अदा कर देना, अगर उस से पूरा न हो तो बनू अदी से मांगना और अगर उन से भी पूरा न हो तो कुरैश से लेना, फिर आप ने फरमाया कि जाओ हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से कहो कि उमर अपने दोनों दोस्तों के पास दफन होने की इजाज़त चाहता है, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के पास गए और अपने बाप की ख्वाहिश को ज़ाहिर की, उन्होंने ने फरमाया कि यह जगह तो मैं ने अपने लिये महफूज़ कर रखी थी, मगर मैं आज अपनी ज़ात पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तरजीह देती हूँ, जब आप को यह ख़बर मिली तो आप ने खुदा का शुक़ अदा किया। 26 ज़िलहिज्जा 23 हिजरी, बुध के दिन आप ज़ख्मी हुए, तीन दिन बाद 10 बरस, छः माह चार दिन उमूरे ख़िलाफ़त को अंजाम देकर 63 साल की उम्र में वफ़ात पाई। **وَاللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَىٰ رَسُوْلِكَ مُحَمَّدٍ** इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि रजिऊन।

वह उमर जिस के अज़्दा पे शैदा सकर

उस खुदा दोस्त हज़रत पे लाखों सलाम

तर्जुमाने नबी हमजुवाने नबी
जाने शाने अदालत पे लाखों सलाम

हजरत उर्वा बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि खलीफा वलीद बिन अब्दुल मलिक के जमाने में जब रौज़ए मुनव्वरा की दीवार गिर पड़ी और लोगों ने उस की तामीर (87 हिजरी में) शुरू की तो (बुनियाद खोदते वक़्त) एक क़दम (घुटने तक) ज़ाहिर हुआ तो सब लोग घबरा गए और लोगों को ख्याल हुआ कि शायद रसूलुल्लाह ﷺ का क़दम मुबारक है और वहां कोई जानने वाला नहीं मिला तो हजरत उर्वा बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ यानी खुदा की क़सम यह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का क़दम शरीफ नहीं है बल्कि यह हजरत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का क़दम मुबारक है।

(बुखारी शरीफ: 1/186)

खुलासा यह कि तक्रीबन 64 बरस के बाद हजरत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का जिस्मे मुबारक बदस्तूर साबिक रहा, उस में किसी किस्म की तब्दीली नहीं हुई थी और न कभी होगी। एक शायर ने खूब कहा है कि:

ज़िंदा हो जाते हैं जो मरते हैं उस के नाम पर
अल्लाह, अल्लाह मौत को किस ने मसीहा कर दिया

وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى خَيْرِ خَلْفَتِهِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ آلِهِ وَآصْحَابِهِ

وَذُرِّيَّتِهِ أَجْمَعِينَ بِرَحْمَتِكَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ

व सल्लल्लाहु तआला अला खैरि खलूकिही सैय्यिदिना मुहम्मदिन्

व अला आलिही व अस्हाबिही व ज़िर्रियातिही अजूमईन

बिरहमतिक या अर्रहमर् राहिमीन।



अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने गुनी

रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु

الحمد لله نعمه ونستعينه ونستغفره ونؤمن به وتوكل عليه ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا من يهده الله فلا مضل له ومن يضلل فلا هادي له ونشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له ونشهد أن سيدنا ونبينا محمدا عبده ورسوله. أما بعد فاعوذ بالله من الشيطان الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم-
مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرَاهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَبْتَغُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا (پ: ۲۶، ع: ۱۲) صَدَقَ اللَّهُ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ
وبلغنا رسولہ النبی الکریم ونحن علی ذالک من الشاہدین والشاکرین والحمد لله رب العالمین۔

एक बार सब लोग मिल कर मक्का के सरकार मदीना के ताजदार दोनों आलम के मालिक व मुख्तार जनाब अहमद मुज्तबा मुहम्मद मुस्ताफा सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम के दरबारे गुहर बार में दुरुदो-सलाम का नज़ाना पेश करें।

صلی الله علی النبی الامی والہ صلی الله علیہ وسلم صلاة وسلاما علیک یا رسول الله

सल्लल्लाहु अलन् नबियिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि
व सल्लम सलातुव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

तक़रीबन एक लाख 24 हजार अंबियाए किराम इस दुनिया में मब्जूस फरमाए गए, या कुछ कमो-बेश 2 लाख 24 हजार अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम ने अपने कुदूमे मैमनत लुज़ूम (तशरीफ लाने की बरकत) से इस दुनिया को सरफराज़ फरमाया, वह लोग साहिबे औलाद भी हुए, लड़का वाले हुए और लड़की वाले भी हुए, तो जिन लोगों के साथ अंबियाए किराम अलैहिमस् सलातु वस्सलाम ने अपनी साहिब जादियों को मन्सूब फरमाया वह यकीनन इज़्ज़त व अज़मत वाले हुए, इस लिये कि अल्लाह के नबी का दामाद होना एक बहुत बड़ा मर्तबा है, जो खुशनसीब इंसानों ही को नसीब हुआ है, मगर

इस सिलसिले में जो खुसूसियत और जो इन्फिरादियत हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हासिल है वह किसी को नहीं, कि हज़रत आदम अलैहिस् सलाम से लेकर हुज़ूरे खातिमुल अंबिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तक किसी के निकाह में नबी की दो बेटियां नहीं आई हैं लेकिन हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के निकाह में सिर्फ नबी नहीं बल्कि नबिय्युल अंबिया और सैयिदुल अंबिया जनाब अहमद मुज्ताबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की दो साहिब जादियां यके बाद दीगरे निकाह में आईं।

और सिर्फ यही नहीं बल्कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से यहां तक रिवायत है उन्होंने ने फरमाया कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का यह इरशाद सुना है कि आप हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फरमा रहे थे कि अगर मेरी चालीस लड़कियां भी होतीं तो यके बाद दीगरे मैं उन सब का निकाह ऐ उस्मान तुम से कर देता, यहां तक कि कोई भी बाकी न रहती।

(तारीखुल खुलफा:104)

और बैहकी ने अपनी सुनन में लिखा है कि अब्दुल्लाह जौफी बयान फरमाते हैं कि मुझ से मेरे मामू हुसैन जौफी ने दरियाफ्त किया कि तुम्हें मालूम है कि हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का लक़ब जुन्नूरैन क्यों है? मैं ने कहा कि नहीं। उन्होंने कहा कि हज़रत आदम अलैहिस् सलाम से लेकर कियामत तक हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अलावा किसी शख्स के निकाह में किसी नबी की दो साहिब जादियां नहीं आयेंगी, इसी लिये आप को जुन्नूरैन कहते हैं, अज़ला हज़रत फाज़िल बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फरमाते हैं:

नूर की सरकार से पाया दो शाला नूर का
हो मुबारक तुम को जुन्नूरैन जोड़ा नूर का

सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम ने क़ब्ले ऐलाने नुबुव्वत अपनी साहिब ज़ादी हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हा का निकाह आप से किया था जो ग़ज़वए बद्र के मौक़ा पर बीमार थीं और उन्हीं की तीमारदारी के सबब हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु उस जंग में शिरकत नहीं फरमा सके और सैय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम की इजाज़त से मदीना तैयिबा ही में रह गए थे, मगर चूँकि हुज़ूर ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु को बद्र के माले ग़नीमत से हिस्सा अता फरमाया था इसी लिये आप बद्रियों में शुमार किये जाते हैं। ग़ज़वए बद्र में मुसलमानों के फतह पाने की खुशख़बरी लेकर जिस वक़्त हज़रत जैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु मदीना मुनव्वरा पहुँचे उस वक़्त हज़रत रुक़य्या रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हा को दफन किया जा रहा था। उन के इन्तेक़ाल फरमा जाने के बाद हुज़ूर सैय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम ने अपनी दूसरी साहिब ज़ादी हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हा का निकाह हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु से कर दिया तो उन का भी 9 हिजरी में विसाल हो गया। गरज़ कि इस तरह हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु जुन्नूरैन हुए। आप के एक साहिब ज़ादे हज़रत बीबी रुक़य्या रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हा के शिकमे मुबारक से पैदा हुए थे जिन का नाम 'अब्दुल्लाह' था, वह अपनी माँ के बाद 6 बरस की उम्र पाकर इन्तेक़ाल कर गए और हज़रत बीबी उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हा से आप की कोई औलाद नहीं हुई।

एक बार सब लोग मिल कर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़े।

صلى الله على النبي الامى واله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاما عليك يا رسول الله

सल्लल्लाहु अलन् नबि्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम सलातुवं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

नाम व नसब

आप का नाम उस्मान, कुनिय्यत अबू उमर और लक़ब जुन्नूरैन है। आप का सिलसिलए नसब इस तरह है: उस्माने बिन अफ्फ़ान अबुल आस बिन उमैया बिन अब्दे शमस बिन अब्दे मनाफ़ यानी पांचवीं पुश्त में आप का सिलसिलए नसब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के शजरए नसब से मिल जाता है। आप की नानी उम्मे हकीम जो हज़रत अब्दुल मुत्तलिब की बेटी थीं वह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के वालिदे गरामी हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ एक ही पेट से पैदा हुई थीं, इस रिश्ता से हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की वालिदा हुज़ूर सैय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की फूफी की बेटी थीं, आप की पैदाश आम्मुल फील के छः साल बाद हुई। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।

क़बूले इस्लाम और मसाइब

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उन हज़रत में से हैं जिन को हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस्लाम की दअवत दी थी, आप कदीमुल इस्लाम हैं यानी इब्तिदाए इस्लाम ही में ईमान ले आए थे। इब्ने इरहफ़ कहते हैं कि आप ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़, हज़रत अली, हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के बाद इस्लाम क़बूल किया।

इब्ने सअद मुहम्मद बिन इब्राहीम से रिवायत करते हैं कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब हल्क़ए बगोश इस्लाम हुए उन का पूरा ख़ानदान भड़क उठा, यहाँ तक आप का चचा हिकम बिन अबिल आस इस क़दर नाराज़ और बरहम हुआ कि आप को पकड़ कर एक रस्ती से बांध दिया और कहा कि तुम ने अपने बाप दादा का दीन छोड़ कर एक दूसरा नया मज़हब इख़्तियार कर लिया है, जब तक कि तुम इस नए मज़हब को नहीं छोड़ोगे, हम तुम्हें नहीं छोड़ेंगे, इसी तरह

बांध कर रखेंगे। यह सुन कर आप ने फरमाया: **وَاللّٰهُ لَا يَخْلُقُ مَا يَكْفُرُ**, यानी खुदाए जुल जलाल की कसम मज़हबे इस्लाम की मैं कभी नहीं छोड़ सकता और न कभी इस दौलत से दस्तबरदार हो सकता हूँ, मेरे जिस्म के टुकड़े टुकड़े कर डालो यह हो सकता है मगर दिल से दीने इस्लाम निकल जाए यह हरगिज़ नहीं हो सकता। हिकम बिन अबिल आस ने जब इस तरह आप का इस्तिक्लाल देखा तो मजबूर होकर आप को रिहा कर दिया।

आप का हुलिया

हज़रत उस्माने गुनी रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु का हुलिया और सरापा इब्ने असाकिर चन्द तरीकों से इस तरह बयान करते हैं कि आप दरमियानी क़द के ख़ूबसूरत शख्स थे, रंग में सफ़ेदी के साथ सुरख़ी भी शामिल थी, चेहरे पर चेचक के दाग़ थे, जिस्म की हड्डियाँ चौड़ी थीं, कंधे काफी फैले हुए थे, पिंडलियाँ भरी हुई थीं, हाथ लम्बे थे जिन पर काफी बाल थे, दाढ़ी बहुत घनी थी, सर के बाल घुंघरियाले थे, दांत बहुत ख़ूबसूरत थे और सोने के तार से बंधे हुए थे, कंपटियों के बाल कानों से नीचे तक थे और पीले रंग का ख़िज़ाब किया करते थे

और इब्ने असाकिर अब्दुल्लाह बिन हज़म माज़नी से रिवायत करते हैं उन्होंने ने फरमाया कि मैं ने हज़रत उस्माने गुनी रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु को देखा: **فَسَارِكٌ قَطَا ذَكَرُوا لَأَنِّي أَحْسَنُ وَجْهًا** यानी मैं ने औरतों और मर्दों में से किसी को उन से ज़्यादा हसीन व ख़ूबसूरत नहीं पाया।

(तारीख़ुल खुलफ़ा)

और इब्ने असाकिर हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हुमा से रिवायत करते हैं वह फरमाते हैं कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम ने गोश्त का एक बड़ा प्याला देकर हज़रत उस्माने गुनी रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु के पास भेजा, जब मैं आप के घर में दाख़िल हुआ तो हज़रत बीबी रुक़य्या रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हा भी बैठी हुई थीं, मैं कभी हज़रत बीबी रुक़य्या के चेहरे

की तरफ देखता और कभी हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सूरत देखता था, जब मैं आप के घर से वापस होकर रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमते मुबारका में हाज़िर हुआ तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मुझ से दरियाफ्त फरमाया कि उस्मान (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) के घर के अन्दर तुम गए थे, मैं ने अर्ज किया या रसूलल्लाह! जी हां, मैं घर के अन्दर गया था, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया: तुम ने उन मियां बीबी से हसीन व ख़ूबसूरत किसी मियां बीबी को देखा है? मैं ने अर्ज किया या रसूलल्लाह! कभी नहीं देखा। (तारीख़ुल खुलफ़ा)

यह वाकिआ ग़ालिबन आयते हिजाब के नाज़िल होने से पहले का है।

और इब्ने अदी हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं उन्होंने ने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ अपनी साहिबज़ादी उम्मे कुल्सूम का निकाह किया तो उनसे फरमाया कि तुम्हारे शौहर उस्माने ग़नी तुम्हारे दादा हज़रत इब्राहीम और तुम्हारे बाप मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) से शक्लो-सूरत में बहुत मुशाबह हैं। (तारीख़ुल खुलफ़ा)

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

और आयाते कुरआनी

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हक़ में भी कुरआन मजीद की आयाते करीमा नाज़िल हुई हैं। जंगे तबूक का वाकिआ ऐसे वक़्त में पेश आया जबकि मदीना मुनव्वरा में सख़्त कंहत पड़ा हुआ था और आम मुसलमान बहुत ज़्यादा तंगी में थे, यहां तक कि दरख़्त की पत्तियाँ खा कर लोग गुज़ारा करते थे, इसी लिये उस जंग के लश्कर को जैशे उसूरा कहा जाता है यानी तंगदस्ती का

लश्कर। तिमिज़ी शरीफ में हज़रत अब्दुर रहमान इब्ने ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है वह फरमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की खिदमत में उस वक़्त हाज़िर था जबकि आप जैशे उसरा की मदद के लिये लोगों को जोश दिला रहे थे। हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आप के पुर जोश लफ़्ज़ सुन कर खड़े हुए और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मैं सौ ऊंट पालान और सामान के साथ खुदाए तआला की राह में पेश करूंगा, उसके बाद फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को सामाने लश्कर के बारे में तरगीब दी और इम्दाद के लिये मुतवज्जह फरमाया, तो फिर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खड़े हुए और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मैं दो सौ ऊंट मज़ साज़ व सामान अल्लाह के रास्ते में नज़्र करूंगा। उसके बाद फिर रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सामाने जंग की दुरुस्तगी और फराहमी की तरफ़ मुसलमानों को रग़बत दिलाई, फिर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खड़े हुए और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मैं तीन सौ ऊंट पालान और सामान के साथ खुदाए तआला की राह में हाज़िर करूंगा। हदीस के रावी हज़रत अब्दुर रहमान बिन ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं मैं ने देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मिम्बर से उतरते जाते थे और फरमाते जाते थे: مَا عَلَى عُسْمَانَ مَا عَلَى عُمَرَ، مَا عَلَى عُمَرَ مَا عَلَى عُمَرَ يَوْمَئِذٍ यानी एक ही जुम्ला को हुज़ूर सैय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने दो बार फरमाया, इस जुम्ला का मतलब यह है कि अब उस्मान को वह अमल कोई नुक़सान नहीं पहुंचाएगा जो इस के बाद करेंगे।

मुराद यह है कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह अमले ख़ैर ऐसा अज़ला, इतना मक़बूल है कि अब और नवाफिल न करें जब भी यह उन के मदरिजे उलिया (ऊंचा मर्तबा) के लिये काफ़ी

है और इस मक्बूलियत के बाद कोई उन्हें अंदशए जरूर नहीं है।

(मिशकात शरीफ:561)

तपसीरे खाजिन और तपसीरे मअलिमुत तंजील में है कि आप ने साज व सामान के साथ एक हजार ऊंट इस मौका पर चन्द दिया था।

और हजरत अब्दुर रहमान बिन समुरा रजियल्लाहु तअाला अन्हु फरमाते हैं हजरत उस्माने गनी रजियल्लाहु तअाला अन्हु जैशे उसरा की तैयारी की जमाने में एक हजार दीनार अपने कुर्ते की आस्तीन में भर कर लाए (दीनार साढ़े चार माशा सोने का होता है), उन दीनारों को आप ने रसूले मक्बूल सल्लल्लाहु तअाला अलैहि व सल्लम की गोद में डाल दिया। रावीए हदीस हजरत अब्दुर रहमान बिन समुरा रजियल्लाहु तअाला अन्हु फरमाते हैं मैं ने देखा कि नबीए करीम रजियल्लाहु तअाला अन्हु उन दीनारों को अपनी गोद में उलट पलट कर देखते जाते थे और फरमाते थे जाते थे: **مَا ضَرَّ عَمَّاكَ مَا عَمِلَ بَعْدَ الْيَوْمِ مَرَّتَيْنِ** यानी आज के बाद उस्मान को उन का कोई अमल नुकसान नहीं पहुंचाएगा। सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तअाला अलैहि व सल्लम ने उन के बारे में इस जुम्ला को दो बार फरमाया। मतलब यह है कि फर्ज कर लिया जाए कि अगर हजरत उस्माने गनी रजियल्लाहु तअाला अन्हु से कोई खता वांकेअ हो जाए तो आज का उन का यह अमल उन की खता के लिये कफफारा बन जाएगा।

(मिशकात शरीफ:561)

तपसीरे खाजिन और तपसीरे मअलिमुत तंजील में है कि जब हजरत उस्माने गनी रजियल्लाहु तअाला अन्हु ने जैशे उसरा की इस तरह मदद फरमाई कि एक हजार ऊंट साजो-सामान के साथ पेश फरमाया और एक हजार दीनार भी चन्दा दिया और हजरत अब्दुर रहमान बिन औफ रजियल्लाहु तअाला अन्हु सदका के चार हजार दिरहम बारगाहे रिसालत में पेश किये तो इन दोनों हजरत के बारे में यह आयते करीमा नाजिल हुई: **الَّذِينَ يُؤْتُونَ مَوَالِيَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ لِيَجْزِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ مَتَاعَهُمْ**

يَا نِي جَو لَوِی کِ اَپنِ
 مَال کِ اَللّٰہ کِ رَاہ مَی خُورْ کَرतے ہِی، فِیر دَیْنِ کِ بَاد نِ اَہِساَن
 رَکھتے ہِی اَوِیر نِ تَکْثِیْف دَیتے ہِی تُو اُن کَا اَجر و سَواَب اُن کِ رَکھ
 کِ پَاس ہِی اَوِیر نِ اُن پَر کُوی خُوف تَارِی ہِوِیَا اَوِیر نِ ہِوِی گُمّیَن
 ہِوِیے । (پَارَا:3، رُکُؤ:4)

ہَجرَت سَدْرُال اَفَاژِیل مَولِاَنَا مُہْمْمَد نَہْمُدِیَن سَاہَب
 مُرَادَابَادِی رَہْمَتُاللّٰہِ تَآلَا اَلّٰہِی نِ ہِی اَپنی تَپْسیَر خُجّازِیْنُال
 اِرفَان مَی تَہْرِیر فَرَمَايَا کِ آیاتِ مُبَارَکَا ہَجرَت اُسمَانِی گُنی اَوِیر
 ہَجرَت اَبْدُور رَہْمَان بِن اُف رَجزِیْللّٰہُ تَآلَا اَنْہُمَا کِ حَک مَی
 نَاجِیل ہُیے ।

اَک بار سَب مِیل کَر بُلُند آوَآج سِی دُرُود شَرِیْف پڑَے:

صَلَّى اللّٰهُ عَلَی النَّبِیِّ الْاَمِّ وَالْهٖ صَلَی اللّٰهُ عَلَیْہِ وَسَلَمُ صَلَاةٌ وَسَلَامٌ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ

سَلَّلَللّٰہُ اَزَلَنْ نَبِیْیِلْ اُمِّیَیْ وَ اَلِیْہِی سَلَّلَللّٰہُ اَلّٰہِی

وَ سَلَّلَم سَلَاتُؤْ وَ سَلَامَنْ اَلّٰکَ یَا رَسُوْلَللّٰہِ ।

ہَجرَت سَہْل بِن سَآد رَجزِیْللّٰہُ تَآلَا اَنْہُ سِی رِیْوَیْت ہِی
 کِ اَک رُؤْ نَبِیْ اَکَرِیْم سَلَّلَللّٰہُ تَآلَا وَ سَلَّلَم، ہَجرَت اَبُو
 بَکَر سِدیق، ہَجرَت اُمَر فَاړُکَ اَآجَم اَوِیر ہَجرَت اُسمَانِی گُنی
 رَجزِیْللّٰہُ تَآلَا اَنْہُم اُھُد پَہاڑ پَر تھے کِ یَکَا یَک وَہ ہِیلَن
 لَگَا تُو رَسُوْلَللّٰہ سَلَّلَللّٰہُ تَآلَا وَ سَلَّلَم نِ فَرَمَايَا: اِنَّہٗ اَحَدٌ
 عَلَیْکَ اِلَّا نَبِیٌّ اَوْ صِدِّیْقٌ اَوْ شَہِیْدٌ یَانِی اَی اُھُد! تُو ٹَہَر جَا، کِ تَیرے اُپَر سِرفِ
 اَک نَبِیْ یَا سِدیق یَا دُو شَہِیْد ہِیے । (تَپْسیَر مَآلِیْمُت تَنْجِیْل:6/216)

اِس ہَدِیْس شَرِیْف سِی مَالُوم ہُآ کِ ہُجُور سَیْیِدِیْ اَلَام
 سَلَّلَللّٰہُ تَآلَا وَ سَلَّلَم پَہاڑِی پَر ہِی اَپنا حُکْم نَافِیْژ
 فَرَمَاتے تھے اَوِیر یَہ ہِی سَاَبِیْت ہُآ کِ خُودَا تَآلَا نِ آآپ کِ
 اِلْمِی غَیْب اَتَا فَرَمَايَا تھے کِ بَرَسِی پَہلے ہَجرَت اُمَر فَاړُکَ اَآجَم
 اَوِیر ہَجرَت اُسمَانِی گُنی رَجزِیْللّٰہُ تَآلَا اَنْہُمَا کِ شَہِیْد ہونے کِ

बारे में हुजूर ख़बर दे रहे हैं। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फाज़िल बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं:

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला

जब न खुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुखद

और हज़रत उस्माने गुनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ख़ूब जानते थे कि नदी का बहता हुआ धारा रुक सकता है, दरख़्त अपनी जगह से हट सकता है बल्कि पहाड़ भी अपनी जगह से टल सकता है मगर अल्लाह के महबूब दानाए ख़िफ़ाया व गुयूब जनाब अहमदे मुज्ताबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला व सल्लम का फरमान नहीं टल सकता, इस लिये आप अपनी शहादत का इन्तेज़ार फरमा रहे थे, तो यह और उन के अलावा दूसरे लोग जो अपनी शहादत के मुन्तज़िर थे जैसे कि दुल्हा दुल्हन अपनी शादी की तारीख़ के मुन्तज़िर होते हैं, तो उन के हक़ में यह आयते करीमा नाज़िल हुई: **فَمِنْهُمْ مَنْ قَضَىٰ نَحْبَهُ وَمِنْهُمْ مَنْ يَنْتَظِرُ** यानी तो उन में से कोई वह है जो अपनी मिन्नत पूरी कर चुका (जैसे हज़रत हमज़ा व मुसअब रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा कि यह लोग जिहाद पर साबित रहे, यहां तक कि जंगे उहद में शहीद हो गए) और उन में से कोई वह है जो अपनी शहादत का इन्तेज़ार कर रहा है (जैसे हज़रत उस्मान और हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा)।

और हज़रत अल्लामा इस्माईल हक्की रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि मदीना मुनव्वरा में एक मुनाफ़िक़ रहता था, उस का दरख़्त एक अंसारी पड़ोसी के मकान पर झुका हुआ था जिस का फल उन के मकान में गिरता था, अंसारी ने सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला व सल्लम से इसका ज़िक़ किया, उस वक़्त तक मुनाफ़िक़ का निफ़ाक़ लोगों पर ज़ाहिर नहीं हुआ था, हुजूर सल्लल्लाहु तआला व सल्लम ने उस से फरमाया कि तुम दरख़्त अंसारी के हाथ के बेच डालो, उस के बदले तुम्हें जन्नत का दरख़्त मिलेगा, मगर मुनाफ़िक़ ने अंसारी को दरख़्त देने से इनकार कर दिया, जब इस वाकिआ की ख़बर हज़रत

उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हुई कि मुनाफिक ने हुजूर के फरमान को मन्ज़ूर नहीं किया तो आप ने पूरा एक बाग़ देकर दरख्त को उस से खरीद लिया और अंसारी को दे दिया, इस पर हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तारीफ और मुनाफिक की बुराई में यह आयते करीमा नाज़िल हुई: **سَيَذَكِّرُنَا بَعْضُهُمْ أَلْفُسًا الْآخَرَى** यानी अन्करीब नसीहत मानेगा जो डरता है और उस से वह बड़ा बद बख्त दूर रहेगा जो सब से बड़ी आग में जायेगा।

(पारा:30,रुकूअ:12)

इस आयते मुबारका में **سَيَذَكِّرُنَا بَعْضُهُمْ** से मुराद हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं और **الْآخَرَى** से मुराद उस दरख्त का मालिक मुनाफिक है।

(तपसीर रूहुल बयान:10/408)

हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

और अहादीसे करीमा

हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के फज़ाइल व मनाकिब में बहुत सी हदीसे भी वारिद हैं। तिर्मिज़ी और इब्ने माजा में हज़रत मुरा बिन कअब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है वह फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ज़मानए आइन्दा में होने वाले फिलों का ज़िक्र फरमा रहे थे कि इतने में एक साहब सर पर कपड़ा डाले हुए उधर से गुज़रे तो हुजूर ने फरमाया कि यह शख्स उस रोज़ हिदायत पर होगा। हज़रत मुरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि हुजूर से यह अल्फाज़ सुन कर मैं उठा और उस शख्स की तरफ गया तो देखा कि वह हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं। फिर मैं हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की तरफ उन का रुख किया और पूछा क्या यह शख्स उन फिलों में हिदायत पर होंगे? तो हुजूर ने इरशाद फरमाया कि हां यही।

और तिर्मिज़ी में हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से

रिवायत है, वह फरमाते हैं कि रसूल मकबूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मुस्तविबल में होने वाले फिलों का जिक्र किया तो इरशाद फरमाया कि यह शख्स उस फिले में जुल्म से कत्ल किया जाएगा, यह कहते हुए आप ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तरफ इशारा फरमाया।

और बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अबू मूसा अश्शरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है वह फरमाते हैं कि मैं मदीना तैयिबा के एक बाग़ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के हम्राह था कि एक साहब आए और उस बाग़ का दरवाज़ा खुलवाए तो नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **اَفْتَحْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْحَنَّةِ** यानी दरवाज़ा खोल दो और आने वाले शख्स को जन्नत की बशारत दो, मैं ने दरवाज़ा खोला तो देखा वह हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं, मैं ने उन को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के फरमान के मुताबिक जन्नत की खुशख़बरी दी। इस पर हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने खुदाए तआला का शुक्र अदा किया और उस की हम्द व सना की। फिर एक साहब और आए और उन्होंने ने दरवाज़ा खुलवाया, हुज़ूर ने उन के बारे में भी फरमाया: **اَفْتَحْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْحَنَّةِ** यानी इनके लिये भी दरवाज़ा खोल दो और इन को भी जन्नत की बशारत दो, मैं ने दरवाज़ा खोला तो देखा कि वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं, मैं ने उन को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की खुशख़बरी से मुत्तला किया, उन्होंने ने खुदाए अज़्ज़ व जल्ल की हम्दो-सना की और उस का शुक्र अदा किया। फिर एक तीसरे साहब ने दरवाज़ा खुलवाया तो नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मुझ से इरशाद फरमाया: **اَفْتَحْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْحَنَّةِ عَلَى بَلَوَى نَفْسِهِ** यानी आने वाले के लिये दरवाज़ा खोल दो और उन मुसीबतों पर जो इस शख्स को पहुंचेंगी जन्नत की खुशख़बरी दो। राविए हदीस हज़रत अबू मूसा अश्शरी रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैं ने दरवाजा खोला तो देखा कि आने वाले शख्स हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हैं, मैं ने उन को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के इरशाद के मुताबिक़ खुशख़बरी दी और हुज़ूर के फरमान से उनको आगाह किया, उन्होंने ने खुदाए तआला की हम्द व सना की, उसका शुक्र अदा किया और फरमाया: **اللَّهُ الشَّعَدَان** यानी आने वाली मुसीबतों पर अल्लाह तआला से मदद तलब की जाती है।

और मुस्लिम शरीफ में हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है वह फरमाती हैं कि एक रोज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अपने मकान में लेटे हुए थे और आप की रान¹ या पिंडली मुबारक से कपड़ा हटा हुआ था, इतने में हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आए और उन्होंने ने हाज़िरी की इजाज़त चाही, हुज़ूर ने उन को बुला लिया और वह अन्दर आ गए मगर हुज़ूर उसी तरह लेटे रहे और गुप्तगू फरमाते रहे। उसके बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु भी आ गए, उन्होंने ने अन्दर आने की इजाज़त तलब की, हुज़ूर ने उन को भी इजाज़त दे दी और वह भी अन्दर आ गए लेकिन हुज़ूर फिर भी बदस्तूर उसी तरह लेटे रहे यानी रान या पिंडली से कपड़ा हटा रहा। फिर हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आ गए और आप ने अन्दर आने की इजाज़त चाही तो आप उठ कर बैठ गए और कपड़ों को दुरुस्त कर लिया, उस के बाद हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अंदर आने की इजाज़त मरहमत फरमाई।

रावियए हदीस हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाती हैं कि जब यह लोग चले गए तो मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला

1-शक रावी अस्त पस इस्तिदलाल नबूद हर कसे रा कि रफ़्ता अस्त बआं कि फख़्जे औरत नेस्त ज़ेरा कि मोहत्तमल सल्लाहियते हुज्जते नदारद, व बाज़े तावील करदा अन्द कश्फ़ आं रा कि अज़ कमीस बूद न मीज़ री गुफ़्ता अन्द कि ज़ाहिर अज़ हाल शरीफ बय सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ईस्त। (अश्शतुल लमआत:4/655)

अलैहि व सल्लम से दरियाफ्त फरमाया या रसूलुल्लाह! क्या वजह है कि मेरे बाप हज़रत सिद्दीक़े अक़बर आए तो आप बदस्तूर लेटे रहे, फिर हज़रत फारूक़े आज़म आए मगर आप बदस्तूर लेटे रहे और जुंबिश नहीं फरमाई लेकिन जब हज़रत उस्माने ग़नी आए तो आप उठकर बैठ गए और कपड़ों को दुरुस्त कर लिया। हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के इस सवाल के जवाब में सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **أَلَا تَسْتَحْيِي مِنْ رَجُلٍ تَسْتَحْيِي مِنْهُ النَّبَاكَةُ** यानी क्या मैं उस शख्स से हया न करूँ जिस से फिरिश्ते भी हया करते हैं।

सुब्हानल्लाह! हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का दर्जा क्या ही बुलंद व बाला और अज़मत वाला है कि फिरिश्ते आप से हया करते हैं यहां तक कि सैय्यिदुल अंबिया और नबिय्युल अंबिया जनाब अहमदे मुज्ताबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम भी आप से हया फरमाते हैं।

तिर्मिज़ी शरीफ में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है वह फरमाते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मक़ामे हुदैबिया में बैअते रिज्जान का हुक्म फरमाया उस वक़्त हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के कासिद की हैसियत से मक्का मुअज़्ज़मा गए हुए थे, लोगों ने हुज़ूर के हाथ पर बैअत की, जब सब लोग बैअत कर चुके तो रसूल मक्बूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि उस्मान खुदा और रसूले खुदा के काम से गए हुए हैं, फिर अपना एक हाथ दूसरे हाथ पर मारा यानी हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तरफ से खुद बैअत फरमाई, लिहाज़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का मुबारक हाथ हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये उन हाथों से बेहतर है जिन्हों ने अपने हाथों से अपने लिये बैअत की।

हज़रत शैख मोहदिसे देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि व सल्लम अश्शतुल लमआत में इस हदीस के तहत फरमाते हैं कि सरकार अक्दास सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपने दस्ते मुबारक को हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हाथ करार दिया। यह वह फज़ीलत है जो हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ खास है यानी इस फज़ीलत से उनके सिवा और कोई दूसरा सहाबी कभी मुशर्रफ नहीं हुआ।

तिर्मिज़ी शरीफ और इब्ने माजा में हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने एक रोज़ हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फरमाया कि ऐ उस्मान! खुदाए तआला तुझ को एक कमीस पहनाएगा यानी ख़िलाफत से सरफराज़ फरमाएगा, फिर अगर लोग उस कमीस के उतारने का तुझ से मुतालेबा करें तो उन की ख़्वाहिश पर उस कमीस को मत उतारना यानी ख़िलाफत को मत छोड़ना। इसी लिये जिस रोज़ उन को शहीद किया गया उन्होंने ने हज़रत अबू सहला रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फरमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मुझ को ख़िलाफत के बारे में वसियत फरमाई थी, इसी लिये मैं उस वसियत पर काइम हूँ और जो कुछ मुझ पर बीत रही है उस पर सब्र कर रहा हूँ।

हाकिम ने हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत की है कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दो बार जन्नत ख़रीदी है, एक बार तो बिअरे रोमा ख़रीद कर और दूसरी बार जैशे उस्रा के लिये सामान देकर। जैशे उस्रा के लिये जो सामान आप ने फराहम किया था उस का बयान पहले हो चुका है। और बिअरे रोमा की ख़रीदारी का वाकिआ यह है कि जब सरकार अक्दास सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मक्का मुअज्ज़मा से हिज़्रत फरमा कर मदीना तैयिबा तशरीफ लाए तो उस ज़माने में वहां पर बिअरे रोमा के अलावा

और किसी कुएं का पानी मीठा न था, यह कुंआं वादिए अकीक के किनारे एक पुर-फिजा बाग में है जो मदीना तैयिबा से तक्रीबन चार किलो मीटर के फासिले पर है, इस कुएं का मालिक यहूदी था जो उस का पानी फरोख्त किया करता था और मुसलमानों को पानी की सख्त तक्लीफ थी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की तरगीब पर हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आधा कुंआं बारह हज़ार दिरहम में खरीद कर मुसलमानों पर वक्फ कर दिया और तय यह पाया कि एक रोज़ मुसलमान पानी भरेंगे और दूसरे दिन यहूदी, मगर जब यहूदी ने देखा कि मुसलमान एक रोज़ में दो रोज़ का पानी भर लेते हैं और मेरा पानी खातिर ख्वाह नहीं बिकता तो परेशान होकर बकिया आधा भी हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हाथ आठ हज़ार दिरहम में बेच दिया। उस कुएं को आज कल बिअरे हज़रत उस्मान कहते हैं।

رضى الله تعالى عنه وأرضاه عنا وعن سائر المسلمين

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु व अर्ज़ाहु अन्ना व अन् साइरिल् मुस्लिमीन।

हज़रत उस्मान बिन अब्दुल्लाह बिन मौहब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मिस्र का रहने वाला एक शख्स हज के इरादे से बैतुल्लाह शरीफ आया, उस ने एक जगह कुछ लोगों को बैठे हुए देखा तो पूछा कि यह कौन लोग हैं? जवाब दिया गया कि यह लोग कुरैश हैं, उस ने पूछा कि इन लोगों का शैख कौन है? जवाब दिया गया कि इन लोगों के शैख हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा हैं। अब उस ने हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की तरफ मुतवज्जह होकर कहा कि ऐ इब्ने उमर! मैं कुछ सवाल करना चाहता हूं आप उसका जवाब दें, क्या आप को मालूम है कि उस्मान उहद की जंग से भाग गए थे, हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने फरमाया कि हां ऐसा हुआ था, फिर उस शख्स ने दरियाफ्त किया क्या आप को मालूम है कि बद्र की लड़ाई से उस्मान गाइब थे और मअ्रिकए बद्र में वह शरीक न हुए थे, हज़रत इब्ने उमर

रजियल्लाहु तआला अन्हुमा ने जवाब दिया कि हां वह बद्र के मअूरिके में मौजूद न थे। फिर उस शख्स ने पूछा क्या आप को मालूम है कि उस्मान बैअते रिज्वान के मौके पर भी गाइब थे और उस में शरीक न हुए थे, हज़रत इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अन्हुमा ने फरमाया कि हां वह बैअते रिज्वान के मौके पर मौजूद न थे और उस में शामिल न थे। हज़रत इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अन्हुमा से तीनों बातों की तस्दीक सुन कर उस शख्स ने अल्लाहु अक्बर कहा। बज़ाहिर उस मिस्त्री शख्स का सवाल था लेकिन हकीकत में हज़रत उस्माने ग़नी रजियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ाते गरामी पर उस का ऐतराज़ था, हज़रत इब्ने उमर रजियल्लाहु तआला अन्हुमा ने उस से फरमाया कि इधर आ, मैं तुझ से हकीकते हाल बयान करके तेरे शुब्हात दूर कर दूँ। उहद के मअूरिके से हज़रत उस्माने ग़नी रजियल्लाहु तआला अन्हु के भाग जाने के मुतअल्लिक मैं तुझ से यह कहता हूँ कि खुदाए जुलजलाल ने उन की ग़लती को माफ़ फरमा दी जैसा कि कुरआन मजीद में इरशादे खुदावंदी है: **إِنَّ الْإِنْسَانَ قَوْلُوا مِنْكُمْ يَوْمَ الْآخِرَةِ إِنَّمَا سُوءٌ لَّهُمْ الشَّيْطَانُ يَغْضُ مَا كَسَبُوا وَلَقَدْ عَفَا اللَّهُ عَنْهُمْ إِنَّ** यानी बेशक वह लोग जो तुम से फिर गए जिस दिन दोनों फौजें मिली थीं, उन के बाज़ आमात के सबब उन्हें शैतान ही ने लगज़िश दी और बेशक अल्लाह ने उन्हें माफ़ फरमा दिया, बेशक अल्लाह बख्शाने वाला हिल्म वाला है। (पारा:4 रुकूअ:7)

और जंगे बद्र में हज़रत उस्माने ग़नी रजियल्लाहु तआला अन्हु का मौजूद न होना उस का वाकिआ यह है कि हज़रत रुक़ैया रजियल्लाहु तआला अन्हु यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की साहिबज़ादी और हज़रत उस्माने ग़नी की बीवी उस ज़माने में बीमार थीं, हुज़ूर ने हज़रत उस्माने ग़नी रजियल्लाहु तआला अन्हु को उन की देख भाल के लिये मदीना तैयिबा में छोड़ दिया था और फरमाया कि उस्माने ग़नी को जंगे बद्र में शरीक होने वालों में से एक मुजाहिद का सवाब मिलेगा और माले ग़नीमत में से भी एक शख्स का हिस्सा दिया

जाएगा। अब रहा मामला बैअते रिजवान से हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का गाइब होना तो उसकी वजह यह है कि अगर मक्का मुअज़्ज़मा हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से ज्यादा बा इज़्ज़त और हर दिल अजीज़ कोई और शख्स होता तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उसी को मक्का मोअज़्ज़मा भेजते मगर चूँकि हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से ज्यादा हरदिल अजीज़ और बा इज़्ज़त मक्का शरीफ वालों की निगाह में कोई और शख्स न था इस लिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उन्हीं को मक्का मोअज़्ज़मा रवाना फरमाया ताकि वह आप की तरफ से कुम्फारे मक्का से बात-चीत करें, तो हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के हुक्म से मक्का मोअज़्ज़मा चले गए थे इस तरह उनकी गैर मौजूदगी में बैअते रिजवान का वाकिआ पेश आया और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने बैअते रिजवान के वक़्त अपने दाहिने हाथ को उठा कर फरमाया कि यह उस्मान का हाथ है और फिर उस हाथ को अपने दूसरे हाथ पर मार कर फरमाया कि यह उस्मान की बैअत है। उसके बाद हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने फरमाया कि अभी जो मैं ने तेरे सामने बयान किया है तू इस को ले जा कि यही तेरे सवालात के मुकम्मल जवाबात हैं। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।

(बुखारी शरीफ)

आप की खिलाफत

हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपनी मशहूर किताब तारीखुल खुलफा में तहरीर फरमाते हैं कि ज़िख्बी होने के बाद हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तबीअत जब ज्यादा नासाज़ हुई तो लोगों ने आप से अर्ज किया कि या अमीरल मोमिनीन आप हमें कुछ वसियतें फरमाइये और खिलाफत के

लिये किसी का इन्तिखाब फरमा दीजिये, तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इरशाद फरमाया कि खिलाफत के लिये अलावा उन छे: सहाबा के जिन से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम राजी हौर खुश रह कर इस दुनिया से तशरीफ ले गए हैं मैं किसी और को मुस्तहिक नहीं समझता हूं। फिर आप ने हज़रत उस्मान, हज़रत अली, हज़रत तल्हा, हज़रत जुबैर, हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ और हज़रत सअद बिन वक्कास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के नाम लिये और फरमाया कि मेरे लड़के अब्दुल्लाह मज्लिसे शूरा में उन के साथ रहेंगे लेकिन खिलाफत से उन्हें कोई सरोकार न होगा। अगर सअद बिन वक्कास का इन्तेखाब हो जाए तो वह उस का हक रखते हैं, वरना उन छे: सहाबियों में से जिस को चाहें मुन्तख़ब कर लें और मैं ने सअद बिन वक्कास को किसी आजिज़ी और ख्यानत की वजह से मअज़ूल नहीं किया था। फिर आप ने फरमाया कि मैं अपने बाद होने वाले खलीफा को वसियत करता हूं कि वह अल्लाह तआला से डरता रहे और सब अंसार व मुहाजिरीन और सारी रिआया के साथ भलाई से पेश आता रहे।

जब हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का विसाल हो गया और लोग उन की तज्हीज़ व तक्फीन से फारिग हो गए तो तीर रोज़ बाद खलीफा को मुन्तख़ब करने के लिये जमा हुए, हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने लोगों से फरमाया कि पहले तीन आदमी अपना हक़ तीन आदमियों को देकर दस्त बरदार हो जाएं, लोगों ने इस बात की तईद की, तो हज़रत जुबैर हज़रत अली को, हज़रत सअद बिन वक्कास हज़रत अब्दुर रहमान को और हज़रत तल्हा हज़रत उस्मान को अपना हक़ देकर दस्त बरदार हो गए रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन।

यह तीनों हज़रत राय मश्वरा करने के लिये एक तरफ चले गए, वहां हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने

फरमाया कि मैं अपने लिये खिलाफत पसंद नहीं करता, अब आप लोगों में से भी जो खिलाफत की जिम्मेदारी से दस्त बरदार होना चाहे वह बता दे, इस लिये कि जो बरी होगा हम खिलाफत उसी के सुपुर्द कर देंगे। और जो शरख खलीफा हो उस के लिये जरूरी है कि वह हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की उम्मत में सब से अफजल हो और इस्लाहे उम्मत की बहुत ख्याहिश रखता हो। इस बात के जवाब में हज़रत उस्मान और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा यानी दोनों हज़रात चुप रहे, तो हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि अच्छा आप लोग इस इन्तिखाब का काम हमारे सुपुर्द कर दें, कसम खुदा की मैं आप लोगों में से बेहतर और अफजल शरख का इन्तिखाब करूंगा, दोनों हज़रात ने फरमाया कि हमें मन्ज़ूर है, हम इन्तिखाबे खलीफा का काम आप के सुपुर्द करते हैं।

अब इस के बाद हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को लेकर एक तरफ गए और उनसे कहा कि ऐ अली! आप इस्लाम कबूल करने में साबिकीन अव्वलीन में से हैं और आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के करीबी अजीज़ हैं, लिहाज़ा अगर आप को अगर मैं खलीफा मुकर्रर कर दूं तो आप कबूल फरमा लें और अगर मैं किसी दूसरे को आप पर खलीफा मुकर्रर कर दूं तो उस की इताअत करें। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि मुझे मन्ज़ूर है।

इस के बाद हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को लेकर एक तरफ गए और उनसे भी तन्हाई में उसी किस्म की गुप्तगू की तो उन्होंने ने भी दोनों बातों को तस्लीम कर लिया, जब इन दोनों हज़रात से हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस किस्म का अहद व पैमान ले लिया तो उस के आप ने हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हाथ पर बैअत कर ली और उन के बाद

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने भी बैअत कर ली।

तारीखुल खुलफा में इब्ने असाकिर के हवाले से है कि हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बजाए हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इस लिये ख़लीफा मुन्तख़ब किया कि जो भी साइबुर राय तन्हाई में उन से मिलता वह यही मश्वरा देता कि ख़िलाफत हज़रत उस्मान ही को मिलनी चाहिये, वह उस के लिये सब से ज़्यादा मुस्तहिक हैं। चुनांचे एक रिवायत में यूं आया है कि हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हम्दो-सलात के बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फरमाया ऐ अली! मैं ने सब लोगों की राय मालूम कर ली है, ख़िलाफत के बारे में सब की राय हज़रत उस्मान के लिये है रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यह कह कर आप ने हज़रत उस्मान का हाथ पकड़ा और कहा कि मैं सुन्नते खुदा, सुन्नते रसूल और दोनों खुलफा की सुन्नत पर आप से बैअत करता हूं। इस तरह सब से पहले हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बैअत की, फिर तमाम मुहाजिरीन व अंसार ने उन से बैअत की।

और मुस्नद इमाम अहमद में हज़रत अबू वाइल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से इस तरह मरवी है, उन्होंने ने फरमाया कि मैं ने हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से दरियाफ्त किया कि आप ने हज़रत अली को छोड़ कर हज़रत उस्मान से क्यों बैअत की? उन्होंने ने फरमाया कि इस में मेरा कुसूर नहीं है, मैं ने पहले हज़रत अली ही से कहा कि मैं किताबुल्लाह, सुन्नते रसूलुल्लाह और हज़रत अबू बकर व हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की सुन्नत पर आप से बैअत करता हूं, तो उन्होंने फरमाया कि मैं इस की इस्तिताअत नहीं रखता। उस के बाद मैं ने हज़रत उस्मान से इसी किस्म की गुफ्तगू की तो उन्होंने ने क़बूल कर लिया।

(तारीखुल खुलफा:24)

गुनियतुत तालिबीन जो हज़रत गौस पाक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तस्नीफ मशहूर है उस में भी यही रिवायत मज़कूर है।

तो इस रिवायत की बुनियाद पर यह कहा जाएगा कि गालिबन हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस वक़्त ख़िलाफ़त से इस लिये इनकार कर दिया कि उन पर सहाबा का रुजहान ज़ाहिर हो चुका था कि वह मेरे बजाए हज़रत उस्मान को ख़लीफा मुक़र्रर करना चाहते हैं तो आप ने सहाबा की मरज़ी के ख़िलाफ़ ज़बर्दस्ती उन का ख़लीफा बनना पसंद न फरमाया। रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम।

और एक रिवायत में यह भी है कि हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैं ने तन्हाई में हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से दरियाफ़्त किया कि अगर मैं आप से बैअत न करूं तो मुझे आप किस से बैअत करने का मश्वरा देंगे? उन्होंने ने फरमाया कि अली से। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फिर मैं ने इसी तरह तन्हाई में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कहा कि अगर मैं आप की बैअत न करूं तो आप मुझे किस की बैअत का मश्वरा देंगे? उन्होंने ने फरमाया उस्मान से, रज़ियल्लाहु तआला अन्हु। फिर मैं ने हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बुला कर इसी तरह तख़्लिया में उन से दरियाफ़्त किया कि अगर मैं आप की बैअत न करूं तो आप मुझे किस से बैअत करने की राय देंगे? उन्होंने ने फरमाया कि हज़रत अली या हज़रत उस्मान से। रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि फिर मैं ने हज़रत सअद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बुलाया और उन से कहा कि मेरा और आप का इरादा ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन बनने का तो है नहीं तो फिर आप मुझे किस से बैअत करने का मश्वरा देते हैं? उन्होंने ने फरमाया कि हज़रत उस्मान से। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फिर हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तमाम मुहाजिरीन व अंसार से मश्वरा किया तो अक्सर लोगों की राय

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बारे में पाई। इसलिये उन्होंने ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बैअत की।

एक बार हम सब मिल कर बुलंद आवाज़ से सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उन की आल व अस्हाब पर दुस्द व सलाम की डालियां निछावर करें।

☆☆☆

एक ऐतराज़ और उस का जवाब

राफज़ी कहते हैं कि सब से पहले खिलाफत के हकदार हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु थे मगर लोगों ने उन के हक को ग़सब कर लिया, पहले (हज़रत) अबू बकर फिर (हज़रत) हज़रत उमर और फिर (हज़रत) उस्मान को खलीफा बनाया (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) इस तरह मुसलसल हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हक तल्फी की गई।

फिर राफज़ी इसी पर इक्तिफा नहीं करते बल्कि हज़रते खुलफाए सलासा और दीगर सहाबए किराम को जिन्होंने ने उन को खलीफा मुन्तख़ब किया उन सब से बुग़ज़ व अदावत रखते हैं और उन को बुरा भला कहते हैं।

इस ऐतराज़ का जवाब यह है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पहले जो लोग खलीफा हुए और जिन्होंने ने उन को खलीफा बनाया यह वह लोग जिन की खुदाए तआला ने मदह फरमाई है और उन की तारीफ व तौसीफ में कुरआन मजीद की बहुत सी आयाते करीमा नाज़िल हुई हैं। मसलन पारा: 27, रुकूअ: 17 में है: لَا تَسْتَوِي مِنْكُمْ مَنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتِلْ أُولَئِكَ أَكْثَرُ دَرَجَةً مِنَ الَّذِينَ أَنْفَقُوا مِنْ بَعْدِ وَكَانُوا وَكَانَ اللَّهُ الْغَنِيَّ

क़नी तुम में बराबर नहीं वह जिन्होंने ने फतेह मक्का से पहले खर्च और जिहाद किया, वह मर्तबा में उन से बड़े हैं, जिन्होंने ने फतेह मक्का के बाद खर्च और जिहाद किया, और उन सब से अल्लाह जन्नत का वादा फरमा चुका।

और पारा:11, रुकूअ:2 में है: وَالسَّيْفُونَ الْأَوَّلُونَ مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالْأَنْصَارِ وَالَّذِينَ يَنِصُّونَ النَّبِيَّ يَوْمَ الْمَلَّةِ عَلَيْهِمْ وَرِضْوَانُهُمْ يَنْصُرُونَ اللَّهَ وَرِضْوَانًا وَنَصْرُ اللَّهِ وَرِسْوَةٌ لَكَ أُولَئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ मुहाजिरीन और अंसार और जो भलाई के साथ उन की इत्तिबाअु किये अल्लाह उन से राजी हुआ और वह अल्लाह से राजी हुए।

और पारा:28, रुकूअ:4 में हैं: لِلْفُقَرَاءِ الْمُهَاجِرِينَ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِنْ دِيَارِهِمْ وَأَمْوَالِهِمْ يَنْصُرُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا وَيَنْصُرُونَ اللَّهَ وَرِسْوَةٌ لَكَ أُولَئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ यानी हिज्रत करने वाले फकीरों के लिये जो अपने घरों और मालों से निकाले गए, अल्लाह का फज़ल और उस की रज़ा चाहते हैं और अल्लाह व रसूल की मदद करते हैं, वही लोग सच्चे हैं।

फिर इसी पारा:28, रुकूअ:4 में हैं: وَالَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هُمْ يُحِبُّونَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُونَ فِي صُدُورِهِمْ حَاجَةً مِمَّا أُوتُوا وَيُؤْثِرُونَ عَلَىٰ أَنفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ يَنْصُرُونَ اللَّهَ وَرِضْوَانًا وَيَنْصُرُونَ اللَّهَ وَرِسْوَةٌ لَكَ أُولَئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ यानी और जिन लोगों ने पहले से इस (मदीना मुनव्वरा) शहर में और ईमान में घर बना लिया, वह दोस्त रखते हैं उन लोगों को जो उन की तरफ हिज्रत कर गए। और वह लोग अपने दिलों में कोई हाज़त नहीं पाते, उस चीज़ की जो (मुहाजिरीन और माले ग़नीमत) दिये गए हैं और (अंसार) अपनी जानों पर उन को तरजीह देते हैं अगर्चे उन्हें शदीद मोहताजी हो और जो अपने नफ्स के लालच से बचाया गया तो वही कामयाब है।

और पारा:4, रुकूअ:8 में हैं: لَقَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ إِذْ بَعَثَ فِيهِمْ رَسُولًا مِنْ أَنفُسِهِمْ يَتْلُوا عَلَيْهِمْ وَأَنزَلَ لَهُمْ نَزْلًا وَمِنْ أَنفُسِهِمْ يَخُوضُونَ فِي الْأَسْوَاقِ يَنْصُرُونَ اللَّهَ وَرِضْوَانًا وَيَنْصُرُونَ اللَّهَ وَرِسْوَةٌ لَكَ أُولَئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ यानी बेशक अल्लाह का मुसलमानों पर बड़ा ऐहसान हुआ कि उन में उन्हीं में से एक रसूल भेजा जो उन पर खुदाए तआला की आयतें पढ़ता है और उन्हें पाक करता है।

हज़रात! इस किस्म की और भी बहुत सी आयाते करीमा हैं जिन में खुदाए अज़्ज़ व जल्ल ने अपने प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के अस्हाब की वाज़ेह लफ्ज़ों में तारीफ व तौसीफ फरमाई है मगर हम बर वक़्त इन्हीं चन्द आयात पर इक्तिफा करते हैं।

अब आप लोग ग़ौर कीजिये! पहली आयते करीमा जो हम ने

तिलावत की उस में फरमाया गया है: **وَكَلَّا وَعَلَّاهُ الْحُسَى** यानी फल्ले मक्का से पहले और उस के बाद अल्लाह की राह में खर्च करने और लड़ाई करने वाले हर एक सक अल्लाह तआला ने भलाई का वादा फरमाया है। और दूसरी आयते मुबारका में है: **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ** यानी अल्लाह तआला उन से राजी हुआ और वह अल्लाह तआला से राजी हैं।

और तीसरी आयते करीमा में फरमाया गया: **أُولَئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ** यानी वही लोग सच्चे हैं।

और चौथी आयते मुबारका में है: **فَأُولَئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ** यानी वह लोग फलाह याफता और कामयाब हैं।

और पांचवीं आयते करीमा में फरमाया गया: **وَبَرَكِيهِمْ** नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उनका तज्किया फरमाते हैं, यानी ना पसंदीदा खस्तों और बुरी बातों से उन को पाक व साफ करते हैं और सालेह बनाते हैं।

अल्लाह तआला ने इस आयते मुबारका में खबर दी कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मुजक्की हैं तो इस बात पर ईमान लाना ज़रूरी है कि सहाबए किराम के कुलूब का उन्होंने ने तज्किया फरमाया इस लिये कि अगर उनके कुलूब का तज्किया नहीं फरमाया तो वह मुजक्की नहीं हो सकते। और जब हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उन के कुलूब का तज्किया फरमाया तो मानना पड़ेगा कि वह नेकोकार और सालेह हैं। उन के अख्लाक बुलंद हैं और औसाफे हमीदा वाले हैं, उन की नियतें सहीह हैं और उन का अमल हमारे लिये मशअले राह है।

लिहाजा सहाबए किराम कि जिन से अल्लाह तआला ने भलाई का वादा फरमाया, अल्लाह तआला उन से राजी और वह अल्लाह तआला से राजी। और ऐसे लोग जो फलाह याफता और सच्चे हैं और जिन के कुलूब मजक्का व मुजल्ला हैं उनके बारे में यह फासिद ऐतिकाद रखना कि उन्होंने ने हज़रत अली रजियल्लाहु तआला अन्हु के हक को गुसब

कर लिया, इन्तिहाई बद नसीबी और बद बख्ती है बल्कि कुरआन शरीफ को झुठलाना है। अल्-इयाजु बिल्लाहि तआला।

बादशाह जिस जमाअत से राज़ी हो और उन की तारीफ व तौसीफ बयान करता हो उस जमाअत से बुग़ज़ व अदावत रखना और उन की बुराई करना बादशाह की नाराज़गी का सबब होगा। तो खुदाए जुल जलाल जो सहाबा से राज़ी है और अपनी किताब कुरआने मजीद में जगह जगह उन की तारीफ व तौसीफ बयान फरमाता है उस मुबारक जमाअत से बुग़ज़ व अदावत रखना और उन की बुराई करना खुदाए तआला की सख़्त नाराज़गी का सबब है।

हज़रत अल्लामा अबू जुरआ राज़ी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो तबूए ताबिईन में से हैं उन्होंने ने इस सिलसिले में निहायत ही उम्दा बात फ़रमाई है, फरमाते हैं: *إِنَّمَا رَأَيْتُ الرَّجُلَ أَنَّهُ يَقْضِي أَحَدًا مِّنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَعْلَمْتُ أَنَّهُ زَنْدِيقٌ* यानी जब तुम किसी शख्स को देखो कि वह रसूले करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के अस्थाब में से किसी की तन्कीस करता है, उन में नक्स निकालता है तो जान लो कि वह जिन्दीक और बे दीन है। इस लिये कि कुरआन और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का हर फरमान हमें सहाबा ही के वास्ते से मिला है तो उन की ज़ात में बुराई साबित करना और उन का ग़लत ठहराना कुरआन व हदीस को बातिल करार देना है, अल्-इयाजु बिल्लाहि तआला। (अल-इसाबा:1/11)

एक बार आप सब लोग मिल कर सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बारगाह में दुखद शरीफ की डालियां पेश करें।

صَلَّى اللَّهُ عَلَى النَّبِيِّ الْأَمِيِّ وَاللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صَلَاةً وَسَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ

सल्लल्लाहु अलन् नबियिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम सलातुव व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

आप का पहला खुत्बा

तारीखुल खुलफा में इब्ने सअद के हवाले से है कि खलीफा मुत्ताखब होने के बाद जब हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खुत्बा देने के लिये खड़े हुए तो आप कुछ बयान न कर सके। सिर्फ इतना फरमाया कि ऐ लोगो! पहली मर्तबा घोड़े पर सवार होना बड़ा मुश्किल होता है, आज के बाद बहुत से दिन आवेंगे अगर मैं जिंदा रहा तो इन्शाअल्लाह आप लोगों के सामने ज़रूर खुत्बा दूंगा। हमारे खानदान में लोग ख़तीब नहीं हुए हैं। खुदाए तआला से उम्मीद है कि वह अन्करीब हमें खुत्बा देने पर कुद़त अता फरमाएगा।

अज़ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फाज़िल बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि: मिम्बर के तीन जीने थे, अलावा ऊपर के तख्ते के कि जिस पर बैठते हैं। हुज़ूर सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम दर्जए बाला पर खुत्बा फरमाया करते। सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दूसरे पर पड़ा। फारूक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तीसरे पर। जब ज़माना जुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का आया, फिर अव्वल पर खुत्बा फरमाया, सबब पूछा गया, फरमाया अगर दूसरे पर पढ़ता तो लोग गुमान करते कि मैं सिद्दीक का हमूसर हूं और तीसरे पर तो वहम होता कि फारूक के बराबर हूं। लिहाज़ा वहां पड़ा जहां यह ऐहतमाल मुतसव्वर ही नहीं। (फतवा रज़ियह:3/700)

हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के जुम्ले काबिले गौर हैं, वह फरमाते हैं कि अगर दूसरे पर पढ़ता तो लोग गुमान करते कि मैं सिद्दीक का हमूसर हूं। सवाल यह पैदा होता है कि अगर लोग उन को हज़रत सिद्दीक का हमूसर गुमान करते तो क्या उस में कोई ख़राबी थी? हां बेशक ख़राबी थी। इस लिये कि हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को यह हरगिज़ मन्ज़ूर नहीं था कि लोग उन को सिद्दीक का हमूसर गुमान करें। इसी तरह उन को यह भी ग़वारा

नहीं था कि लोग उन के बारे में वहम करें कि वह फारूक आजम के बराबर हैं। इसी लिये फरमाया कि अगर तीसरे पर पढ़ता तो वहम होता कि फारूक के बराबर हूँ।

मालूम हुआ कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का हज़रत अबू बकर सिद्दीक व हज़रत उमर फारूक से बराबरी का दावा करना तो बहुत दूर की बात है उन को इतना भी ग़वारा नहीं था कि उन के बारे में कोई यह वहम व गुमान करे कि वह हज़राते शेख़ैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के हम्सरी व बराबर हैं। इसी लिये वह सब से ऊपर वाले दर्जे पर खुत्बा पढ़े।

फिर हज़रत उस्माने ग़नी जुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का यह जुम्ला भी काबिले तवज्जोह है कि मैं ने वहां खुत्बा पढ़ा जहां यह (यानी हम्सरी व बरारबी का) ऐहतिमाल मुतसव्वर ही नहीं। मतलब यह हुआ कि सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अज्मईन में से कोई भी यह तसव्वुर कर ही नहीं सकता था कि हज़रत उस्माने ग़नी हुज़ूर से बराबरी व हम्सरी का दावा कर सकते हैं।

साबित हुआ कि अगर कोई आकाए दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से बराबरी व हम्सरी का दावा करे तो वह गुस्ताख़ व बेअदब है और सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अज्मईन के रास्ते से अलग है। और हदीस शरीफ مَالَنَا عَلَيْهِ وَأَصْحَابِي के मुताबिक़ उन्हीं के रास्ते पर चलने वाले जन्नती हैं, बाकी सब जहन्नमी।

आप के ज़मानए ख़िलाफत की फुतूहात

हज़रत उस्माने ग़नी जुन्नूरैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़मानए ख़िलाफत में भी इस्लामी फुतूहात का दाइरा बराबर वसीअ़ होता रहा। चुनांचे आप के ज़मानए ख़िलाफत के पहले साल यानी 24 हिजरी में "रय" फतह हुआ। रय ख़ुरासान का एक शहर है जो आज कल ईरान का दारुस सल्लतनत है और उसे तेहरान कहते हैं। 26 हिजरी में शहर

साबूर फतह हुआ।

हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दौरे खिलाफत में मुल्के शाम के गवर्नर थे उन्होंने ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कई बार यह दरख्वास्त पेश की थी कि बहरी बेड़ा के ज़रिये क़ब्रस पर हम्ला की इजाज़त दी जाए मगर आप ने इजाज़त न दी लेकिन जब हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इस्रार बहुत ज़्यादा हुआ तो आप ने हज़रत अम्र बिन अल-आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को लिखा कि आप समन्दर और बादबानी जहाज़ों की कैफियत मुफ़स्सल तरीके से लिख कर मुझे ख़बाना करें। उन्होंने ने लिखा कि मैं ने बादबानी जहाज़ों को देखा है जो एक बड़ी मख़्लूक है और उस पर छोटी मख़्लूक सवार होती है, जब वह जहाज़ ठहर जाता है तो लोगों के दिल फटने लगते हैं और जब वह चलता है तो अक़ल्मंद लोग भी ख़ौफ़ ज़दा हो जाते हैं, उस में अच्छाइयां कम और ख़राबियां ज़्यादा हैं। उस में सफर करने वालों की हैसियत कीड़े मकोड़ों जैसी है, अगर यह सवारी किसी तरफ़ झुक जाए तो उमूमन लोग डूब जाते हैं और अगर बच जाते हैं तो इस हाल में साहिल तक पहुंचते हैं कि कांपते रहते हैं।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जब हज़रत अम्र बिन अल-आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ख़त इस मज़मून का पढ़ा तो हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को लिखा कि: **وَاللّٰهُ لَا يَسْتَلِيزُ** यानी क़सम है खुदाए तआला की मैं ऐसी सवारी पर मुसलमानों को कभी सवार नहीं कर सकता। (तारीख़ुल ख़ुलफा:106)

इस तरह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दौरे खिलाफत में क़ब्रस पर मुसलमानों का हम्ला नहीं हो सका। लेकिन जब हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ज़माना खिलाफत आया तो उन के हुक्म से 27 हिजरी में जहाज़ के ज़रिये हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने लश्कर ले जा कर क़ब्रस पर हम्ला किया,

उस को फतह कर लिया और जिज़्या लेने की शर्त मन्ज़ूर कर ली।

जिस लश्कर ने बहरी रास्ते से जाकर क़ब्रस पर हम्ला किया था उस लश्कर में मशहूर व मारुफ़ सहाबी हज़रत उबादा बिन सामित रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपनी अहलिया मोहतरमा हज़रत उम्मे हुराय्म बिनते मिहान अंसारिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के साथ मौजूद थे, आप की बीवी जानवर से गिर कर इन्तेक़ाल कर गई तो उन को वहीं क़ब्रस में दफन कर दिया गया। उस लश्कर के मुतअल्लिक अल्लाह के महबूब दानाए ख़िफा व गुयूब जनाब अहमदे मुज्जबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने पेशीन गोई फरमाई थी कि उबादा बिन सामित की बीवी भी उस लश्कर में होगी और क़ब्रस ही में उस की क़ब्र बनेगी। चुनांचे यह पेशीन गोई हर्फ़ बहर्फ़ सहीह हुई। और क्यों न हो कि नदी का बहता हुआ धारा रुक सकता है, दरख़्त अपनी जगह से हट सकता है बल्कि बड़ा से बड़ा पहाड़ भी अपनी जगह से टल सकता है मगर अल्लाह के महबूब प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का फरमान नहीं टल सकता।

صلی اللہ علی النبی الامی والہ صلی اللہ علیہ وسلم صلاۃ وسلاما علیک یا رسول اللہ

सल्लल्लाहु अलन् नबियिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम सलातुव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

और इसी 27 हिजरी में जुर्जान और दारे बजरर फतह हुए। और इसी साल जब हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन सअद बिन अबी सरह को मिस्र का गवर्नर बनाया तो उन्होंने ने मिस्र पहुंच कर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हुक्म से अफ्रीका पर हम्ला किया और उस को फतह करके सारी सल्लतनों को हुक्मते इस्लामिया में शामिल कर लिया। इस जंम में इस क़द्र माले ग़नीमत मुसलमानों को हासिल हुआ कि हर सिपाही को एक एक हज़ार दीनार और बाज़ रिवायात के मुताबिक़ तीन तीन हज़ार दीनार मिले। दीनार साढ़े चार माशा सोने का एक सिक्का होता है। इस

फतेह अजीम के बाद इसी 27 हिजरी में स्पेन यानी हस्पानिया भी फतह हो गया और 29 हिजरी में हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हुक्म से उस्तुखर, क़सा और इन के अलावा बाज़ दूसरे ममालिक भी फतह हुए।

और 30 हिजरी में जौर, खुरासान और नेशापुर सुलह के ज़रिये फतह हुए। इसी तरह मुल्के ईरान के दूसरे शहर तूस, सरख़्त, मर्व और बैहक़ भी सुलह के फतह हुए। इस क़दर फुतूहात से जब बेशुमार माले ग़नीमत हर तरफ से दारुल ख़िलाफत में पहुंचने लगा तो हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इन मालों की हिफाज़त के लिये कई महफूज़ खज़ाने बनवाने पड़े और लोगों में इस फराख़ दिली से माल तक्सीम फरमाया कि एक-एक शख्स को एक-एक लाख बदरे मिले जबकि एक बदरा दस हज़ार दिरहम का होता है। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:106)

आप की करामतें

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कई करामतों को जुहूर हुआ जिन में चन्द करामतें आप हज़रत के सामने पेश की जाती हैं।

अल्लामा ताजुद्दीन सुबकी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने अपनी किताब “तबक़ात” में तहरीर फरमाया है कि एक शख्स ने रास्ता चलते हुए एक अज्जबी औरत को धूर-धूर कर ग़लत निगाहों से देखा, उस के बाद यह शख्स अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमते अक्दस में हाज़िर हुआ, उस शख्स को देख कर हज़रत अमीरुल मोमिनीन ने निहायत ही पुर जलाल लहजे में फरमाया कि तुम लोग ऐसी हालत में मेरे सामने आते हो कि तुम्हारी आंखों में जिना के असरात होते हैं, शख्स मज़कूर ने जल भुन कर कहा कि क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद आप पर वही उतरने लगी है? आप को यह कैसे मालूम हो गया कि मेरी आंखों में जिना के असरात हैं?

अमीरुल मोमिनीन ने इरशाद फरमाया कि मेरी ऊपर वही तो

नाज़िल नहीं होती है लेकिन मैं ने जो कुछ कहा है यह बिल्कुल ही कौले हक़ और सच्ची बात है और खुदावन्दे कुद्स ने मुझे एक ऐसी फ़रासत (नूरानी बसीरत) अता फ़रमाई है जिस से मैं लोगों के दिलों के हालात व ख़्यालात को मालूम कर लेता हूँ।

(करामाते सहाबा बहवाला हुज्जतुल्लाहि आलमीन:2/862)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा रावी हैं कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मस्जिदे नबवी शरीफ़ के मिम्बरे अक्दस पर खुल्वा पढ़ रहे थे कि बिल्कुल ही अचानक एक बंद नसीब और ख़बीसुन नफ़्स इंसान जिस का नाम “जहज़ाह ग़िफ़ारी” था खड़ा हो गया और आप के दस्ते मुबारक असा छीन कर उस को तोड़ डाला, आप पे अपने हिल्मो-हया की वजह से उस से कोई मवाख़ज़ा नहीं फ़रमाया लेकिन खुदाए तआला की कहहारी व जब्बारी ने इस बे अदबी और गुस्ताख़ी पर उस मर्दू को यह सज़ा दी कि उस के हाथ में कैंसर का मर्ज़ हो गया और उस का हाथ गल सड़ कर गिर पड़ा और वह यह सज़ा पा कर एक साल के अन्दर ही मर गया।

(करामाते सहाबा बहवाला हुज्जतुल्लाहि अल-आलमीन:2/862)

और हज़रत अबू किलाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि मैं मुल्के शाम की सर ज़मीन में था, मैं ने एक शख्स को बार-बार यह सदा लगाते हुए सुना, हाए अफ़सोस! मेरे लिये जहन्नम है, मैं उठ का उस के पास गया तो यह देख कर हैरान रह गया कि उस शख्स के दोनों हाथ और पांव कटे हुए हैं और वह दोनों आंखों से अंधा है, और अपने चेहरे के बल ज़मीन पर औन्धा पड़ा हुआ बार-बार लगातार यही कह रहा है कि “हाए अफ़सोस मेरे लिये जहन्नम है” यह मन्ज़र देख कर मुझ से रहा न गया और मैं ने उस से पूछा कि ऐ शख्स तेरा क्या हाल है? और क्यों और किस बिना पर तुझे अपने जहन्नमी होने का यकीन है? यह सुन कर उस ने यह कहा कि ऐ शख्स! मेरा हाल न पूछ, मैं उन बंद नसीब लोगों में से हूँ जो अमीरुल मोमिनीन हज़रत

उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को क़त्ल करने के लिये उन के मकान में घुस पड़े थे, मैं जब तल्वार लेकर उन के करीब पहुंचा तो उन की बीवी साहिबा ने मुझे डांट कर शोर मचाना शुरू किया तो मैं ने उन की बीवी साहिबा को एक थप्पड़ मार दिया, यह देख कर अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दुआ मांगी कि "अल्लाह तआला तेरे दोनों हाथों और पांव को काट डाले और तेरी दोनों आंखों को अंधी कर दे और तुझ को जहन्नम में झोंक दे ऐ शख्स! मैं अमीरुल मोमिनीन के पुर जलाल चेहरे को देख कर और उन की इस काहिराना दुआ को सुन कर कांप उठा और मेरे बदन का एक-एक रोंगटा खड़ा हो गया और मैं खौफ व दहशत से कांपते हुए वहां से भाग निकला।

अमीरुल मोमिनीन की चार दुआओं में से तीन दुआओं की ज़द में तो आ चुका हूं, तुम देख रहे हो कि मेरे दोनों पांव कट चुके हैं, दोनों आंखें अंधी हो चुकीं, अब सिर्फ चौथी दुआ यानी मेरा जहन्नम में दाखिल होना बाकी रह गया है और मुझे यकीन है कि यह मामला भी यकीनन होकर रहेगा। चुनांच अब मैं उसी का इन्तिज़ार कर रहा हूं और अपने जुर्म को बार-बार याद करके नादिम व शर्मसार हो रहा हूं और अपने जहन्नमी होने का इकरार करता हूं।

(करामाते सहाबा बहवाला इज़ालतुल ख़िफा मक़दस:2, पेज:227)

मज़क़ूर बाला तीनों वाकिआत अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अज़ीम करामतें हैं जो उन की जलालते शान और बारगाहे खुदावन्दी में उन की मक़बूलियत और विलायत की वाज़हे निशानियां हैं।

आप की शहादत

हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का दौर ख़िलाफ़त कुल 12 साल रहा, शुरू के छः बरसों में लोगों को आप से कोई शिकायत नहीं हुई, बल्कि इन बरसों में वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

से भी ज्यादा लोगों में मकबूल व महबूब रहे, इस लिये कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मिज़ाज कुछ सख्ती थी और हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मिज़ाज में सख्ती का वजूद न था, आप बहुत बा मुरव्वत थे, लेकिन आखिरी छः बरसों में बाज़ गवर्नरों के सबब लोगों को आप से शिकायत हो गई, आप ने अब्दुल्लाह बिन अबी सरह को मिस्र का गवर्नर मुक़र्रर किया, अभी अब्दुल्लाह के त़क़र्रर को सिर्फ़ दो साल गुज़रे थे कि मिस्र के लोगों को उन से शिकायतें पैदा हो गई, उन्होंने ने हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से दादरसी चाही, आप ने बज़रिये तहरीर अब्दुल्लाह को सख्त तंबीह फरमाई और ताकीद की कि ख़बरदार! आइन्दा तुम्हारी शिकायत मेरे पास न पहुंचे, मगर अब्दुल्लाह ने आप के ख़त की कुछ परवाह न की बल्कि मिस्र के जो लोग दारुल ख़िलाफ़त मदीना शरीफ़ में शिकायत लेकर आए थे उन को क़त्ल कर दिया, इस से मिस्र की हालत और ज्यादा ख़राब हो गई, यहां तक कि वहां से 700 अपराध मदीना शरीफ़ आए, हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से अब्दुल्लाह की ज़्यादतियां बयान कीं और दूसरे सहाबए किराम से भी शिकायतें कीं, तो बाज़ सहाबा ने हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से सख्त कलामी की और उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आप के पास कहला भेजा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सहाबा आप के पास आए हैं और अब्दुल्लाह बिन अबी सरह जिस पर क़त्ल का इल्ज़ाम है उस की माज़ूली और बर तरफ़ी का आप से मुतालेबा करते हैं, मगर आप उन की बातों पर तज़ज्जोह नहीं करते, आप को चाहिये कि ऐसे शख्स को मुनासिब सज़ा दें।

और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तशरीफ़ लाए, उन्होंने ने भी हज़रत उस्माने गनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कहा कि यह लोग क़त्ले नाहक के सबब मिस्र के गवर्नर की माज़ूली चाहते हैं, आप इस मामले में इंसाफ़ कीजिये, अब्दुल्लाह बिन अबी सरह की जगह पर किसी दूसरे को गवर्नर मुक़र्रर कर दीजिये, आप ने मिस्र के लोगों से

फरमाया कि: **اخْتَارُوا رَجُلًا وَّارِثًا عَلَيَّ مِنْكُمْ** यानी आप लोग खुद ही किसी को गवर्नर चुन लीजिये, मैं अब्दुल्लाह बिन अबी सरह को माजूल करके आप लोगों के चुने हुए गवर्नर को मुकर्रर कर दूंगा, उन लोगों ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साहिबज़ादे यानी मुहम्मद बिन अबू बकर को मुन्तख़ब किया रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन लोगों के इन्तेख़बा को मन्ज़ूर फरमा लिया और हज़रत मुहम्मद बिन अबू बकर के लिये परवाना तक़्ररी अब्दुल्लाह बिन अबी सरह के बारे में माजूली की तहरीर लिख दी। मुहम्मद बिन अबू बकर मिस्र से आए हुए 700 अपराध और कुछ अंसार व मुहाजिरीन के साथ मिस्र के लिये रवाना हुए।

मदीना मुनव्वरा से अभी यह काफ़िला तीसरी ही मंज़िल पर था, उन को एक हबशी गुलाम सांडनी पर बैठा हुआ निहायत तेज़ी के साथ मिस्र की तरफ जाता हुआ नज़र आया, उस के रंग ढंग और उस की तेज़ रफ्तारी से मालूम होता था कि यह गुलाम या तो अपने मालिक से भागा हुआ है, या तो किसी का कासिद है, काफ़िला वालों ने उसे बढ़ कर पकड़ लिया और पूछा कि तू कौन है? तू कहीं से भागा है या तुझे किसी की तलाश है? उस ने कहा मैं अमीरुल मोमिनीन उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का गुलाम हूँ, फिर कहा कि मैं मरवान का गुलाम हूँ। एक शख्स ने उसे पहचान लिया और बताया कि यह अमीरुल मोमिनीन ही का गुलाम है। हज़रत मुहम्मद बिन अबू बकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने उस से दरियाफ्त फरमाया कि तुम्हें कहा भेजा गया? उस ने कहा मुझे मिस्र के गवर्नर अब्दुल्लाह बिन अबी सरह के पास भेजा गया है, उस की तलाशी ली गई तो उस के खुश्क मश्कीज़ा से एक ख़त निकला जो अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तरफ से आमिले मिस्र अब्दुल्लाह बिन अबी सरह के नाम था। मुहम्मद बिन अबू बकर ने सब लोगों को जमा किया और उन के सामने ख़त खोला जिस में लिखा हुआ था कि

يَا نَبِيَّ اِنَّ اَتَاكَ مُعْتَدٌ وَقُلَانٌ فَاحْضَلْ فِي قَتْلِهِمْ وَارْبِطْ كِتَابَهُ وَقَرَّ عَلَى عَمَلِكَ حَتَّى يَأْتِيكَ رَأْيِي

जब मुहम्मद बिन अबू बकर और फुलां फुलां तुम्हारे पास पहुंचें तो उन को किसी हीले से कत्ल कर दो और खत को कलअदम करार दो और जब तक कि मेरा दूसरा हुक्म नामा न पहुंचे अपने उहदा पर बरकरार रहो।

इस खत को पढ़ कर काफिले वाले सब लोग दंग रह गए। मुहम्मद बिन अबू बकर ने इस खत पर साथ के चन्द ज़िम्मेदार लोगों की मोहरें लगावा दीं और उसे एक शख्स की तहवील में दे दिया और सब लोग वहीं से मदीना मुनव्वरा वापस हो गए, जब वहां पहुंचे तो हज़रत अली, हज़रत तल्हा, हज़रत जुबैर, हज़रत सअद और दीगर सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हुम अज्मईन को इकट्ठा करके उन के सामने खत खोल कर सब को पढ़वाया और उस हबशी गुलाम का सारा वाकिआ सुनाया, इस पर सब लोग बहुत सख्त बरहम हुए और तमाम सहाबए किराम गैज़ व ग़ज़ब में भरे हुए अपने घरों को वापस हो गए। मगर मुहम्मद बिन अबू बकर अपने कबीला बनू तमीम और मिस्त्रियों के साथ हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु के घर को घेर लिया।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु ने जब यह सूरते हाल देखी तो हज़रत तल्हा, हज़रत जुबैर, हज़रत सअद, हज़रत अम्मार और दीगर अकाबिर सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हुम अज्मईन के साथ अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु के मकान पर तशरीफ ले गए, उन के साथ वह खत, गुलाम और ऊंटनी भी थी, जो रास्ते में पकड़ी गई थी। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु से दरियाफ्त फरमाया क्या यह गुलाम आप का है? उन्होंने ने फरमाया हां यह गुलाम मेरा है। फिर उन्होंने ने पूछा क्या यह ऊंटनी भी आप ही की है? उन्होंने ने जवाब में फरमाया हां, यह ऊंटनी भी हमारी है। फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु ने वह खत पेश फरमाया और पूछा क्या यह खत आप ने लिखा है? उन्होंने ने फरमाया नहीं और खुदाए तअ़ाला की

कसम खा के कहा कि न मैं ने इस खत को लिखा है, न किसी को लिखने का हुक्म दिया है और न मुझे इस के बारे में कोई इल्म है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया बड़े तअज़्जुब की बात है कि ऊंटनी भी आप की, और खत पर मोहर भी आप की, जिसे आप का ही गुलाम यहां से लेकर जा रहा था, मगर आप को कोई इल्म नहीं। फिर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अल्लाह तआला की कसम खा के फरमाया कि न मैं ने इस खत को लिखा है, न किसी से लिखवाया है, न मैं ने गुलाम को यह खत देकर मिस्र की तरफ रवाना किया है।

जब हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कसम खा कर अपनी बराअत जाहिर फरमाई तो हर शख्स को यकीन हो गया कि इनका दामन इस जुर्म से पाक है। लोगों ने तहरीर को बग़ौर देखा, यह ख्याल काइम किया कि तहरीर मरवान की है और सारी शरारत उसी की ज़ात से है। मरवान उस वक़्त अमीरुल मोमिनीन के मकान में मौजूद था, लोगों ने उन से कहा कि आप उसे हमारे हवाले कर दीजिये, आप ने इनकार कर दिया, इस लिये कि वह लोग ग़ैज़ व ग़ज़ब में भरे हुए थे। मरवान को सज़ा देते और उसे क़त्ल कर देते। हालांकि तहरीर से यकीने का मिल नहीं होता इस लिये कि: **لَا يَكُونُ** यानी एक तहरीर दूसरी तहरीर के मुशाबह होती है, तो उन्हें मरवान की तहरीर होने का सिर्फ़ शुब्हा था और शुब्हा का फाइदा हमेशा मुल्जिम को पहुंचता है, इस लिये हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मरवान के उन के सपुर्द नहीं किया। अलावा इस के सपुर्द करने में बहुत बड़े फिले का अदेशा भी था।

बहर हाल जब हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मरवान को लोगों के हवाले करने से इनकार कर दिया तो सहाबए किराम उन के यहां से उठ कर चले गए और आपस में यह कह रहे थे कि हज़रत उस्मान कभी झूठी कसम नहीं खा सकते, मगर कुछ लोग

यह भी कह रहे थे कि वह शक से बरी नहीं हो सकते, जब तक मरवान को हमारे सपुर्द न कर दें और हम उस से तहकीक न कर लें और यह मालूम न हो जाए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तअलाला अलैहि व सल्लम के सहाबियों को कत्ल करने का हुक्म क्यों दिया गया? अगर यह बात साबित हो गई कि खत उन्होंने ने ही लिखा है तो हम उन्हें खिलाफत से अलग कर देंगे और अगर यह बात पाए सुबूत को पहुंची कि हज़रत उस्मान की तरफ से मरवान ने खत लिखा है तो हम उसे सजा देंगे।

मुहासरा में सख्ती

जब अकाबिरे सहाबा अपने-अपने घर चले गए तो बलवाइयों ने मुहासरा में और सख्ती पैदा कर दी, यहां तक कि उन पर पानी को बन्द कर दिया। हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तअलाला अन्हु ने ऊपर से झांक कर मजमा से दरियाफ्त फरमाया क्या तुम में अली हैं? लोगों ने कहा नहीं, फिर आप ने पूछा क्या तुम में सअद मौजूद हैं, जवाब दिया गया कि सअद भी नहीं मौजूद हैं, यह जवाब सुन आप थोड़ी देर खामोश रहे, उस के बाद फरमाया कोई शख्स अली को यह ख़बर पहुंचा दे कि वह हमारे लिये पानी मुहैया कर दें, जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तअलाला अन्हु को यह ख़बर पहुंच गई तो उन्होंने ने आप के लिये पानी से भरे हुए तीन मश्कीज़े भिजवा दिये, मगर वह पानी बमुश्किले तमाम आप तक पहुंचा कि उस के सबब बनी हाशिम और बनी उमैया के कई गुलाम ज़ख्मी हो गए। इस वाकिआ से हज़रत अली रज़ियल्लाहु तअलाला अन्हु को इस बात का अंदाज़ा हुआ कि लोग हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तअलाला अन्हु को कत्ल करना चाहते हैं तो आप ने अपने दोनों साहिब ज़ादगान यानी हज़रत इमामे हसन और इमामे हुसैन से फरमाया कि तुम दोनों अपनी-अपनी तल्वारें लेकर हज़रत उस्माने ग़नी के दरवाजे पर जाओ, पहेरे दारों की तरह होशियार खड़े रहो और ख़बरदार किसी भी बलवाई को अन्दर हरगिज़ न जाने

चे। इसी तरह हज़रत तल्हा, हज़रत जुबैर और दीगर अकाबिरे सहाबा ने अपने-अपने साहिब जादगान को अमीरुल मोमिनीन के दरवाज़ा पर भेज दिया जो बराबर निहायत मुस्तइद्दी के साथ उन की हिफाज़त करते रहे।

(तारीखुल खुलफा)

हज़रत शाह अब्दुल अजीज़ साहब मोहद्विसे देहलवी रहमतुल्लाहि तज़ाला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि जब बलवाइयों ने मुहासरा सख़्त कर दिया तो अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तज़ाला अन्हुमा चन्द मुहाजिरीन के साथ हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तज़ाला अन्हु के दौलत खाना पर तशरीफ़ लाए और उन से कहने लगे कि यह जिस कद्र बलवाई आप पर चढ़ आए हैं, यह वही हैं जो हमारी तलवारों से मुसलमान हुए हैं और अब भी डर के मारे कपड़े ही में पाख़ाना किये देते हैं, यह सब शेखियाँ और ऊंची-ऊंची उड़ानें इस सबब हैं कि कलिमा पढ़ते हैं और आप कलिमा की हुर्मत का पास व लिहाज़ करते हैं, अगर आप हुक्म दें तो हम इन को इन की हकीकत मालूम करा दें और इनकी भूली हुई बात फिर इन को याद दिला दें। हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तज़ाला अन्हु ने फरमाया, खुदा की कसम! ऐसी बात न कहो, सिर्फ़ मेरी जान की खातिर इस्लाम में हरगिज़ फूट न पैदा करो।

फिर आप के सारे गुलाम जो एक फौज के बराबर थे, अस्बाब व हथियार से तैयार होकर आप के सामने आए और बड़ी बेचैनी व बेकरारी के साथ आप से कहने लगे, हम वही तो हैं जिन की तलवारों की ताब खुरासान से अफ़्रीका तक कोई न ला सका, अगर आप इजाज़त फरमाएं तो हम मगरूरों को उन के काम का तमाशा दिखा दें। मुस्तगू और बात चीत से उन की दुरुस्तगी नहीं हो सकती। वह लोग जानते हैं कि कलिमा की हुर्मत के सबब हमें कोई नहीं छेड़ेगा इसी लिये वह राहे रास्त पर नहीं आते और आप की नेज़ दीगर सहाबए किराम की बातों को ज़र्रा बराबर अहमियत नहीं देते। लिहाज़ा आप हमें इन से लड़ने की इजाज़त दीजिये।

हजरत उस्माने गनी रजियल्लाहु तआला अन्हु ने गुलामों से फरमाया कि अगर तुम लोग मेरी राजा और खुशनूदी चाहते हो और मेरी नेअमत का हक अदा करना चाहते हो तो हथियार खोल दो और अपनी-अपनी जगहों पर जा कर बैठो और सुन लो कि तुम लोगों में से जो गुलाम भी हथियार खोल दे उस को मैं ने आजाद कर दिया। وَاللّٰهُ أَكْبَرُ यानी अल्लाह की कसम, खून्नेजी से पहले मेरा क़त्ल हो जाना मुझे ज़्यादा महबूब है इस से कि मैं खून्नेजी के बाद क़त्ल किया जाऊँ। मतलब यह है कि मेरी शहादत लिख दी गई है और अल्लाह के रसूल प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इस की बशारत मुझ को दे दी है। अगर तुम लोगों ने बलवाइयों से जंग भी की तो भी मैं ज़रूर क़त्ल कर दिया जाऊँगा। लिहाज़ा इनसे लड़ने में कोई फाइदा नहीं है। (तोहफए इस्ना अशरिया)

बलवाइयों का आप को शहीद कर देना

मुहम्मद बिन अबू बकर ने जब देखा कि दरवाजे पर ऐसा सख्ता पहेरा है कि अन्दर पहुंचना बहुत मुश्किल है तो उन्होंने ने हजरत उस्माने गनी रजियल्लाहु तआला अन्हु पर तीर चलाना शुरू किया, जिस में से एक तीर हजरत इमाम हसन रजियल्लाहु तआला अन्हु को लग गया, आप ज़ख्मी हो गए, एक तीर मरवान को भी लगा। मुहम्मद बिन तल्हा भी ज़ख्मी हो गए। और एक तीर से हजरत अली रजियल्लाहु तआला अन्हु के गुलाम कम्बर भी ज़ख्मी हो गए। मुहम्मद बिन अबू बकर ने जब इन लोगों को ज़ख्मी देखा तो उन को खौफ लाहिक हुआ कि बनी हाशिम अगर हजरत हसन और दूसरे लोगों को ज़ख्मी देख लेंगे तो वह बिगड़ जायेंगे इस तरह एक नई मुसीबत पैदा हो जाएगी। लिहाज़ा उन्होंने ने दो आदमियों के हाथ पकड़ कर उनसे कहा कि अगर बनी हाशिम इस वक़्त आ गए और उन्होंने ने हजरत हसन को ज़ख्मी हालत में देख लिया तो हम से उलझ पड़ेंगे और हमारा सारा मन्सबू खाक में मिल

जाएगा। लिहाजा हमारे साथ चलो, हम पड़ोस के मकान में पहुंच कर (हज़रत) उस्मान के घर में कूद पड़ेंगे और उन्हें क़त्ल कर देंगे। इस गुफ्तगू के बाद मुहम्मद बिन अबू बकर अपने दो साथियों के हमराह एक अंसारी के मकान में घुस गए और वहां से छत फांद कर हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मकान में पहुंच गए, इन लोगों के पहुंचने की दूसरे लोगों को ख़बर न हुई इस लिये कि जो लोग घर पर मौजूद थे वह छत पर थे, नीचे अमीरुल मोमिनीन के पास सिर्फ़ उन की अहलिया हज़रत नाइला रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बैठी हुई थीं, सब से पहले मुहम्मद बिन अबू बकर ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास पहुंच कर उन की दाढ़ी पकड़ ली तो अमीरुल मोमिनीन ने उन से फरमाया अगर तुम्हारे बाप हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तुझे मेरे साथ ऐसी गुस्ताख़ी करते हुए देखते तो वह क्या कहते, इस बात को सुन कर मुहम्मद बिन अबू बकर ने उन की दाढ़ी छोड़ दी लेकिन उसी दरमियान में उन के दो साथी आ गए जो अमीरुल मोमिनीन पर झपट पड़े और उन को निहायत बेदरदी के साथ शहीद कर दिया। *إِنَّ اللَّهَ وَآلَهُ رَاضُونَ بِهَا إِنَّ اللَّهَ لِلْعَالَمِينَ* इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

जब हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर हमला हुआ और दुश्मन उन को शहीद कर रहे थे, उस वक़्त आप की अहलिया मोहतरमा हज़रत नाइला रज़ियल्लाहु तआला अन्हा बहुत चीख़ीं, चिल्लाईं, लेकिन बल्ल्याइयों ने चूंकि बड़ा शोरो-गोगा कर रखा था इसी लिये आप की चीख़ व पुकार को किसी ने नहीं सुना। आप की शहादत के बाद वह कोठे पर गई और लोगों को बताया कि अमीरुल मोमिनीन शहीद कर दिये गए। लोगों ने नीचे उतर कर देखा तो हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का पूरा जिस्म खून आलूद था और उन की रूह परवाज़ कर चुकी थी।

बाज़ रिवायतों में है कि शहादत के वक़्त हज़रत उस्माने ग़नी

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कुरआन मजीद की तिलावत फरमा रहे थे जब तलवार लगी तो आयते करीमा: **فَيَكْبِتُكُمْ اللَّهُ** पर चन्द खून के कतरे पड़े और आप की बीवी साहिबा हज़रत नाइला रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने तलवार के वार को जब अपने हाथों से रोका तो उन की उंगलियां कट गई।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बरहमी

जब हज़रत अली, हज़रत तल्हा, हज़रत जुबैर, हज़रत सअद और दीगर सहाबा व अहले मदीना रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अज्मईन को आप की शहादत की खबर मिली तो सब के होश उड़ गए, आप के मकान पर आए, आप को शहीद देख कर सब ने **इन्ना तिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन** पढ़ा और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को इस सूरते हाल से इतना गुस्सा पैदा हुआ कि हज़रत इमाम हसन को एक तमांचा और हज़रत इमाम हुसैन ने सीने पर एक घूसा मारा और फरमाया कि: **كَيْفَ قُتِلَ أَمِيرُ الْمُؤْمِنِينَ وَأَنْتُمْ عَلَى الْبَابِ** यानी जबकि तुम दोनों दरवाज़ा पर मौजूद थे तो अमीरुल मोमिनीन कैसे शहीद कर दिये गए। फिर आप ने हज़रत तल्हा के साहिब जादे मुहम्मद और हज़रत जुबैर के साहिब जादे अब्दुल्लाह को भी सख्त सुस्त और बुरा-भला कहा।

जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मालूम हुआ कि कातिल दरवाज़े से नहीं दाखिल हुए थे बल्कि पड़ोस के मकान से कूद कर आए थे तो आप ने हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अहलिया मोहतरमा से दरियाफ्त फरमाया कि अमीरुल मोमिनीन को किस ने शहीद किया? उन्होंने ने कहा कि मैं उन लोगों को तो नहीं जानती जिन्होंने ने अमीरुल मोमिनीन को शहीद किया अल्बत्ता उन के साथ मुहम्मद बिन अबू बकर थे जिन्होंने ने अमीरुल मोमिनीन की दाढ़ी पकड़ी थी, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने मुहम्मद बिन अबू बकर को बुला कर क़त्ल के बारे में उन से दरियाफ्त फरमाया तो उन्होंने

ने कहा हज़रत नाइला सच कहती हैं, बेशक मैं घर के अन्दर ज़रूर दाखिल हुआ था और क़त्ल का इरादा भी किया था लेकिन जब उन्होंने ने मेरे बाप हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तज़्किरा किया तो मैं उन को छोड़ कर हट गया, मैं अपने फ़ेअल पर नादिम व शर्मिन्दा हूँ और अल्लाह तआला से तौबा व इस्तिग़फ़ार करता हूँ। खुदा की क़सम मैं ने उन को क़त्ल नहीं किया है। इब्ने असाकिर ने कनाना वग़ैरा से रिवायत किया है कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को जिस ने शहीद किया वह मिस्र का रहने वाला था, उस की आंखें नीली थीं, उस का नाम "हिमार" था।

(तारीख़ुल खुलफा)

बाज़ मोअरिख़ीन ने लिखा है कि आप के क़ातिल का नाम 'अस्वद' था। बहुत मुम्किन है कि मुहम्मद बिन अबू बकर के साथ दो बलवाई जो आप के मक़ान में कूदे थे उस में से एक का नाम 'हिमार' और दूसरे का नाम 'अस्वद' रहा हो। واللّٰهُ تَعَالٰی اعْلَم

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु 35 हिजरी माहे ज़िल-हिज्जा के अय्यामे तशरीफ़ में शहीद हुए जबकि आप की 82 साल की थी। आप के जनाजे की नमाज़ हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने पढ़ाई और हशे कौकब के मक़ाम पर जन्नतुल बक़ीअ में दफन किये गए।

दुरें मन्सूर कुरआं की सज़क भी

ज़ौज दो नूरे इफ़फत पे लाखों सलाम

यानी उस्मान साहिबे क़मीसे हुदा

हुल्ला पोशे शहादत पे लाखों सलाम

وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَى النَّبِيِّ الْكَرِيمِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ آلِهِ وَاصْحَابِهِ أَجْمَعِينَ

व सल्लल्लाहु तआला अलन् नबिय्यिल् करीम सैय्यिदिना मुहम्मदिन्

व अला आलिही व अस्हाबिही अज़्मैईन

अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली मुरतज़ा

कर्मल्लाहु तआला वज्हुहुल् करीम

الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين وعلى آله
واصحابه وازواجه وذرياته واهل بيته اجمعين اما بعد، فقد قال الله تعالى في القرآن
المعجيد والفرقان الحميد اعوذ بالله من الشيطان الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم-
مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ أَشِدَّاءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ تَرَاهُمْ رُكَّعًا
سُجَّدًا يَتَذَكَّرُونَ فَضْلًا مِنَ اللَّهِ وَرِضْوَانًا (پ: ۲۶، ع: ۱۲) صَدَقَ اللَّهُ مَوْلَانَا الْعَظِيمِ
وصدق رسوله النبي الكريم الامين- عليه وعلى آله افضل الصلوات واكمل التسليم-

एक बार हम सब मिल कर सारी काइनात के आका व मौला
जनाब अहमदे मुज्ताबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व
सल्लम के दरबारे गुहर बार में बुलंद आवाज़ से झूम-झूम कर दुरुद
शरीफ का नज़ाना और हदिया पेश करें।

صلى الله على النبي الامي وآله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاما عليك يا رسول الله

सल्लल्लाहु अलन् नबियिल् उम्मियि व आलिहि सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम सलातुव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

हज़रत! दुनिया में बेशुमार इंसान पैदा हुए जिन में से अक्सर ऐसे
हुए कि उन में कोई कमाल व खूबी नहीं और बाज़ लोग ऐसे हुए जो
सिर्फ चन्द खूबियां रखते थे मगर हज़रत अली मुरतज़ा कर्मल्लाहु
तआला वज्हुहुल् करीम की वह ज़ाते गरामी है जो बहुत से कमाल और
खूबियों की जामेअ है कि आप शेर खुदा भी हैं और दामादे मुस्तफा
भी, हैदरे करार भी और साहिबे जुल फिकार भी। हज़रत फातिमा ज़हरा
के शौहरे नामदार भी और हसनैन करीमैन के वालिदे बुजुर्गवार भी।
साहिबे सखावत भी और साहिबे शुजाअत भी। इबादत व रियाज़त वाले
भी और फसाहत व बलाग़त वाले भी। इल्म वाले भी और हिल्म वाले
भी। फातिहे खैबर भी और मैदाने खिताबत के शहसवार भी। गरजे कि

आप बहुत से कमाल व खूबियों के जामेअ हैं और हर एक में मुस्ताज व यगानए रोज़गार हैं। इसी लिये दुनिया आप को मज़हरुल अज़ाइब व यगानए रोज़गार से याद करती है और क़ियामत तक इसी तरह याद करती रहेगी।

मुरतज़ा शेरे हक़ अश्जउल अश्जईन
बाबे फज़लो-विलायत पे लाखों सलाम
शेरे शम्शीरे ज़न् शाहे ख़ैबर शिकन
परतवे दस्ते कुद़त पे लाखों सलाम

नाम व नसब

आप का नामे नामी “अली बिन अबी तालिब” और कुन्नियत “अबुल हसन व अबू तुराब” है। आप सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु त़आला अलैहि व सल्लम के चचा अबू तालिब के साहिब ज़ादे हैं यानी हुज़ूर के चचा ज़ाद भाई हैं। आप की वालिदा मोहतरमा का इस्मे नरामी फातिमा बिनते असद बिन हाशिम है। और यह पहली हाशमी छातून हैं जिन्होंने इस्लाम क़बूल किया और हिज़्रत फरमाई।

(तारीख़ुल खुलफ़ा:113)

आप का सिलसिलए नसब इस तरह है: अली बिन अबू तालिब बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्दे मनाफ़। आप 30 आम्मुल क़ील में पैदा हुए और ऐलाने नुबुव्वत से पहले ही मौलाए कुल जनाब ज़हमदे मुज्जबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु त़आला अलैहि व सल्लम की परवरिश में आए कि जब कुरैश कहत में मुब्तला हुए थे तो हुज़ूर ने अबू तालिब पर अयाल का बोझ हल्का करने के लिये हज़रत अली क़र्मल्लाहु त़आला वज्हुल करीम को ले लिया था इस तरह हुज़ूर के छाये में आप ने परवरिश पाई और उन्हीं की गोद में होश संभाला, आँख खुलते ही हुज़ूर का जमाले जहां आरा देखा, उन्हीं की बातें सुनीं और उन्हीं की आदतें सीखीं, इस लिये बुतों की नजासत से आप का चमन कभी आलूदा न हुआ। यानी आप ने कभी बुत परस्ती न की

और इसी लिये कर्मल्लाहु तआला वज्हुल करीम आप का लकब हुआ।
(तन्जीहुल मकानतुल हैदरिया वगैरा)

आप का कबूले इस्लाम

हजरत अली कर्मल्लाहु तआला वज्हुल करीम नौ उम्र लोगों में सब से पहले इस्लाम से मुशरफ हुए। तारीखुल खुलफा में है कि जब आप ईमान लाए उस वक्त आप की उम्रे मुबारक दस साल थी बल्कि बाज लोगों के कौल के मुताबिक नौ साल और बाज कहते हैं कि आठ साल और कुछ लोग इस से भी कम बताते हैं। और अल्ला हजरत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि तन्जीहुल मकानतुल हैदरिया में तहरीर फरमाते हैं कि बवक्त इस्लाम आप की उम्र आठ दस साल थी।

आप के इस्लाम कबूल करने की तपसील मुहम्मद बिन इस्हाक ने इस तरह बयान किया है कि हजरत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को और हजरत खदीजतुल कुबरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को रात में नमाज़ पढ़ते हुए देखा, जब यह लोग नमाज़ से फारिग हो गए तो हजरत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से पूछा कि आप लोग यह क्या कर रहे थे? हुजूर ने फरमाया कि यह अल्लाह तआला का ऐसा दीन है कि जिस को उस ने अपने लिये मुन्तखब किया है और उसी की तब्लीग व इशाअत के लिये अपने रसूल को भेजा है लिहाज़ा मैं तुमको भी ऐसे माबूद की तरफ बुलाता हूं जो अकेला है उस का कोई शरीक नहीं। और मैं तुम को उसी की इबादत का हुक्म देता हूं। हजरत अली कर्मल्लाहु तआला वज्हुल करीम ने कहा कि जब तक मैं अपने बाप अबू तालिब से दरियाफ्त न कर लूं इस के बारे में कोई फैसला नहीं कर सकता। चूंकि उस वक्त हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को राज़ फाश होना मनज़ूर न था इस लिये आप ने फरमाया ऐ अली! अगर तुम इस्लाम नहीं लाते हो तो अभी इस मामले

को पोशीदा रखो किसी पर ज़ाहिर न करो।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अगर्चे उस वक़्त रात में ईमान नहीं लाए मगर अल्लाह तआला ने आप के क़ल्ब में ईमान को रासिख़ कर दिया था, दूसरे रोज़ सुबह होते ही हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हुए और आप की पेश की हुई सारी बातों को क़बूल कर लिया और इस्लाम ले आए।

आप की हिज़्रत

सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने जब खुदाए तआला के हुक्म के मुताबिक़ मक्का मुअज़्ज़मा से मदीना तैयिबा की हिज़्रत का इरादा फरमाया तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बुला कर फरमाया कि मुझे खुदाए तआला की तरफ से हिज़्रत का हुक्म हो चुका है लिहाज़ा मैं आज मदीना ख़ाना हो जाऊंगा तुम मेरे बिस्तर पर मेरी सब्ज़ रंग की चादर ओढ़ कर सो रहो, तुम्हें कोई तकलीफ़ न होगी, कुरैश की सारी अमानतें जो मेरे पास रखी हुई हैं उनके मालिकों को देकर तुम भी मदीना चले आना।

यह मौक़ा बड़ा ही ख़ौफनाक और निहायत ख़तरे का था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मालूम था कि कुप्फ़ारे कुरैश सोने की हालत में हुज़ूर के क़त्ल का इरादा कर चुके हैं, इसी लिये खुदाए तआला ने आप को अपने बिस्तर पर सोने से मना फरमा दिया है। आज हुज़ूर का बिस्तर क़त्ल गाह है लेकिन अल्लाह के महबूब दानाए ख़िफ़ाया व गुयूब जनाब अहमदे मुज्ताबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के इस फरमान से कि “तुम्हें कोई तकलीफ़ न होगी, कुरैश की अमानतें देकर तुम भी मदीने चले आना” हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को पूरा यकीन था कि दुश्मन मुझे कोई तकलीफ़ नहीं पहुंचा सकेंगे, मैं ज़िंदा रहूंगा और मदीना ज़रूर पहुंचूंगा। लिहाज़ा सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का बिस्तर जो बज़ाहिर आज कांटों का बिछौना था वह हज़रत अली रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु के लिये फूलों की सेज बन गया, इस लिये कि उन का अकीदा था कि सूरज पूरब के बजाए पच्छिम से निकल सकता है मगर हुजूर के फरमान के खिलाफ नहीं हो सकता है।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैं रात भर आराम से सोया, सुबह उठ कर लोगों की अमानतें उन के मालिकों को सौंपना शुरू किया और किसी से नहीं छुपा। इसी तरह मक्का में तीन दिन रहा फिर अमानतों के अदा करने के बाद मैं भी मदीना की तरफ चल पड़ा। रास्ते में भी किसी ने मुझ से कोई तआरुज़ न किया यहां तक कि मैं कुबा में पहुंचा हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के मकान में तशरीफ फरमा थे, मैं भी वहीं ठहर गया।

एक बार फिर हम और आप सब मिल कर मक्का के सरकार मदीना के ताजदार दोनों आलम के मुख्तार जनाब अहमदे मुज्ताबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बारगाहे बेकस पनाह में बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ की डालियां पेश करें।

صلی اللہ علی النبی الامی والہ صلی اللہ علیہ وسلم صلاۃ وسلاما علیک یا رسول اللہ

सल्लल्लाहु अलन् नबियिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम सलातुव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

उखुवते रसूल

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बहुत सी खुसूसियात में से एक खुसूसियत यह भी है कि आप सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दामाद और चचाज़ाद भाई होने के साथ “अक्दे मुवाखात” में भी आप के भाई हैं जैसा कि तिर्मिज़ी शरीफ में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने जब मदीना तैयिबा में उखुवत यानी भाई चारा काइम किया कि दो-दो सहाबा को भाई-भाई बनाया तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रोते हुए

बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और अर्ज किया या रसूलल्लाह! आप ने सारे सहाबा के दरमियान उखुव्वत काइम की। एक सहाबी को दूसरे सहाबी का भाई बनाया मगर मुझ को किसी का भाई न बनाया, मैं यूँ ही रह गया, तो सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **أَنْتَ أَخِي فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ** यानी तुम दुनिया व आखिरत दोनों में मेरे भाई हो।

(मिशकात शरीफ:564)

आप की शुजाअत

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शुजाअत और बहादुरी शोहरए आफाक़ (मशहूरे ज़माना) है, अरब व अजम में आप की कुव्वते बाज़ू के सिक्के बैठे हुए हैं। आप के रुअब व दबदबे से आज भी बड़े-बड़े पहलवानों के दिल कांप जाते हैं। जंगे तबूक के मौके पर सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने आप को मदीना तैयिबा पर अपना नाइब मुकर्रर फरमा दिया था इस लिये उस में हाज़िर न हो सके बाकी तमाम ग़ज़वात व जिहाद में शरीक होकर बड़ी जांबाज़ी के साथ कुफ़फ़ार का मुकाबला किया और बड़े-बड़े बहादुरों को अपनी तल्वार से मौत के घाट उतार दिया।

जंगे बदर में जब हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अस्वद बिन अल-असद मख़ज़ूमी को काट कर जहन्नम में पहुंचाया तो उसके बाद काफ़िरो के लश्कर का सरदार उत्बा बिन रबीआ अपने भाई शैबा बिन रबीआ और अपने बेटे वलीद बिन उत्बा को साथ लेकर मैदान में निकला और चिल्ला कर कहा कि ऐ मुहम्मद! (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) अशराफे कुरैश में से हमारे जोड़ के आदमी भेजिये। हुज़ूर ने यह सुन कर फरमाया ऐ बनी हाशिम! उठो और हक़ की हिमायत में लड़ो जिस के साथ अल्लाह तआला ने तुम्हारे नबी को भेजा है। हुज़ूर के इस फरमान को सुन कर हज़रत हम्ज़ा, हज़रत अली और हज़रत उबैदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम दुश्मन की तरफ बढ़े, लश्कर का सरदार उत्बा, हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुकाबिल

हुआ और ज़िल्लत के साथ मारा गया। वलीद जिसे अपनी बहादुरी पर बड़ा नाज़ था वह हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुकाबले के लिये मस्त हाथी की तरह झूमता हुआ आगे बढ़ा और डींगें मारता हुआ आप पर हम्ला किया मगर शेरें खुदा अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने थोड़ी ही देर में उसे मार गिराया और जुलफिकारे हैदरी ने उसके घमंड को खाक व खून में मिला दिया। इस के बाद आप ने देखा कि उत्बा के भाई शैबा ने हज़रत उबैदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ज़ख्मी कर दिया है तो आप ने झपट कर उस पर हम्ला किया और उसे भी जहन्नम में पहुंचा दिया।

और जंगे उहुद में जबकि मुसलमान आगे और पीछे से कुप्फार के बीच में आ गए जिस के सबब बहुत से लोग शहीद हुए तो उस वक़्त सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम भी काफिरों के घेरे में आ गए और उन्होंने ने ऐलान कर दिया कि ऐ मुसलमानों! तुम्हारे नबी क़त्ल कर दिये गए, इस ऐलान को सुन कर मुसलमान बहुत परेशान हो गए यहां तक कि इधर उधर तितर बितर हो गए बल्कि उन में से बहुत से लोग भाग भी गए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि जब काफिरों ने मुसलमानों को आगे पीछे से घेर लिया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मेरी निगाह से ओझल हो गए तो पहले मैं ने हुज़ूर को ज़िन्दों में तलाश किया मगर नहीं पाया फिर शहीदों में तलाश किया वहां भी नहीं पाया तो मैं ने अपने दिल में कहा कि ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता कि हुज़ूर मैदाने जंग से भाग जाएं, लिहाज़ा अल्लाह तआला ने अपने रसूले पाक को आसमान पर उठा लिया। इस लिये अब बेहतर यही है कि मैं भी तल्वार लेकर काफिरों में घुस जाऊं यहां तक कि लड़ते-लड़ते शहीद हो जाऊं। फरमाते हैं कि मैं ने तल्वार लेकर ऐसा सख़्त हम्ला किया कि कुप्फार बीच में से हटते गए और मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को देख लिया तो मुझे बेइन्तिहा खुशी हुई और मैं ने

यकीन किया कि अल्लाह तआला ने फिरिश्तों के ज़रिये अपने हबीब की हिफाज़त फरमाई। मैं दौड़ कर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के पास जा कर खड़ा हुआ, कुप्फार गिरोह दर गिरोह हुज़ूर पर हम्ला करने के लिये आने लगे, आप ने फरमाया अली इन को रोको, तो मैं ने तन्हा उन सब का मुकाबला किया और उन के मुंह फेर दिये और कई एक का क़त्ल भी किया। उस के बाद फिर एक गिरोह और हुज़ूर पर हम्ला करने की नियत से बढ़ा आप ने फिर मेरी तरफ इशारा फरमाया तो मैं ने फिर उस गिरोह का अकेले मुकाबला किया। उस के बाद हज़रत जिब्रील ने आकर हुज़ूर से मेरी बहादुरी और मदद की तारीफ की तो आप ने फरमाया: **إِنَّ مَبْنِيَّ وَالْمَبْنِيَّ** यानी बेशक अली मुझ से है और मैं अली से हूँ। मतलब यह है कि अली को मुझ से कमाले कुर्ब हासिल है। नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के इस फरमान को सुन कर हज़रत जिब्रील ने अर्ज किया: **وَالْمَبْنِيَّ** यानी मैं तुम दोनों से हूँ।

सरकारे अक्वदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को न पा कर हज़रत अली का शहीद हो जाने की नियत से काफिरों के जत्थे में घुस जाना और हुज़ूर पर हम्ला करने वाले गिरोह दर गिरोह से अकेले मुकाबला करना आप की बेमिसाल बहादुरी और इन्तिहाई दिलेरी की ख़बर देता है साथ ही हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से आप के इश्क और सच्ची मुहब्बत का भी पता चलता है। **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** **وَارْضَاهُ** रज़ियल्लाहु तआला अन्हु व अर्ज़ाहु अन्ना।

हज़रत कअ्ब बिन मालिक अंसारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है वह फरमाते हैं कि जंगे खन्दक के रोज़ अम्र बिन अब्दे वुद (जो एक हज़ार सवार के बराबर माना जाता था) एक झण्डा लिये हुए निकला ताकि वह मैदाने जंग को देखे, जब वह और उस के साथ सवार एक मक़ाम पर खड़े हुए तो उस से हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि ऐ अम्र! तू कुरैश से अल्लाह की क़सम

देकर कहा करता था कि जब कभी मुझ को कोई शख्स दो अच्छे कामों की तरफ बुलाता है तो मैं उस में एक को जरूर इख्तियार करता हूं, उस ने कहा हां मैं ने ऐसा कहा था और अब भी कहता हूं, आप ने फरमाया कि मैं तुझे अल्लाह व रसूल (जल्ल जलालहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) और इस्लाम की तरफ बुलाता हूं, अम्र ने कहा मुझे इन में से किसी की हाजत नहीं, हज़रत अली ने फरमाया तो अब मैं तुझ को मुकाबले की दावत देता हूं और इस्लाम की तरफ बुलाता हूं। अम्र ने कहा ऐ मेरे भाई के बेटे! किस लिये मुकाबले की दावत देता है, खुदा की कसम मैं तुझ को कत्ल करना पसंद नहीं करता। हज़रत अली ने फरमाया लेकिन खुदा की कसम मैं तुझ को कत्ल करना पसंद करता हूं, यह सुन कर अम्र का खून गर्म हो गया और हज़रत अली की तरफ मुतवज्जह हुआ, दोनों मैदान में आ गए और थोड़ी देर मुकाबला होने के बाद शेर खुदा ने उसे मौत के घाट उतार कर जहन्नम में पहुंचा दिया।

और मुहम्मद बिन इस्हाक कहते हैं कि अम्र बिन अब्दे वुद मैदान में इस तरह पर निकला कि लोहे की जिरहें पहने हुए था और उस ने बुलंद आवाज़ से कहा, है कोई जो मेरे मुकाबले में आए, इस आवाज़ को सुन कर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खड़े हुए और मुकाबला के लिये हुज़ूर से इजाज़त तलब की, आप ने फरमाया बैठ जाओ, यह अम्र बिन अब्दे वुद है। दूसरी बार अम्र ने फिर आवाज़ दी कि मेरे मुकाबले के लिये कौन आता है? और मुसलमानों को मलामत करनी शुरू की, कहने लगा तुम्हारी वह जन्नत कहा हैं जिस के बारे में तुम दावा करते हो कि जो भी तुम में से मारा जाता है वह सीधे उस में दाखिल हो जाता है, मेरे मुकाबले के लिये किसी को क्यों नहीं खड़ा करते हो, दोबारा फिर हज़रत अली ने खड़े हो कर हुज़ूर से इजाज़त तलब की मगर आप ने फिर वही फरमाया बैठ जाओ। तीसरी बार अम्र ने फिर वही आवाज़ दी और कुछ अशआर भी पढ़े। रावी का बयान है

कि तीसरी बार हज़रत अली ने खड़े हो कर हुज़ूर से अर्ज किया कि या रसूलुल्लाह! मैं इस के मुकाबला के लिये निकलूंगा आप ने फरमाया कि यह अम्र है। हज़रत अली ने अर्ज किया चाहे अम्र ही क्यों न हो। तीसरी बार हुज़ूर ने आप को इजाज़त दे दी, हज़रत अली चल कर उसके पास पहुंचे और चन्द अश्आर पढ़े जिनका मतलब यह है:

ऐ अम्र! जल्दी न कर, जो आजिज़ नहीं है वह तेरे पास तेरी आवाज़ का जवाब देने वाला सच्ची नियत और बसीरत के साथ आ गया और हर कामियाब होने वाले को सच्चाई ही निजात देती है, मुझे पूरी उम्मीद है कि मैं तेरे जनाजे पर ऐसी ज़र्बें वसीअ़ से नौहा करने वालियों को काइम करूंगा कि जिस का जिक्र लोगों में बाकी रहेगा।

अम्र ने पूछा कि तू कौन है? आप ने फरमाया कि मैं अली हूं, उस ने कहा अब्दे मनाफ के बेटे हो? आप ने फरमाया कि मैं अली बिन अबी तालिब हूं, उस ने कहा ऐ मेरे भाई के बेटे! तेरे चचाओं में से ऐसे तो भी हैं जो उम्र में तुझ से ज्यादा हैं, मैं तेरा खून बहाने को बुरा समझता हूं। हज़रत अली ने फरमाया मगर खुदा की कसम मैं तेरा खून बहाने को क़तअन बुरा नहीं समझता, यह सुन कर वह गुस्से से तिलमिला उठा, घोड़े से उतर कर आग के शोला जैसी तलवार सौत ली, हज़रत अली की तरफ लपका और ऐसा ज़बर्दस्त वार किया कि आपने ढाल पर रोका तो तलवार उसे फाड़ कर घुस गई यहां तक कि आप के सर पर लगी और ज़ख्मी कर दिया, अब शेरें खुदा ने संभल कर उसके कंधे की रग पर ऐसी तलवार मारी कि वह गिर पड़ा और गुबार उड़ा, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने नारए तक्वीर सुना जिस से मालूम हुआ कि हज़रत अली ने उसे जहन्नम में पहुंचा दिया। शेरें खुदा की इस बहादुरी और शुजाअत को देख कर मैदाने जंग का एक-एक ज़र्ज़ा ज़बाने हाल से पुकार उठा:

शाहे मरदां शेरें यज़्दां कुव्वते परवरदिगार

لَأَقْتُلِي إِلَّا عِلَيَّ لَا سَيْفَ إِلَّا ذُو الْفِقَارِ

यानी हज़रत अली बहादुरों के बादशाह, खुदा के शेर और कुव्वते परवरदिगार हैं। उन के सिवा कोई जवान नहीं और जुलफिकार के अलावा कोई तल्वार नहीं।

एक बार हम सब लोग मिल कर बुलंद आवाज़ से सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम की बारगाह में दुरूद शरीफ का नज़्ज़ाना पेश करें।

صلی اللہ علی النبی الامی والہ صلی اللہ علیہ وسلم صلاۃ وسلاما علیک یا رسول اللہ

सल्लल्लाहु अलन् नबियिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम सलातुवुं व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

इसी तरह जंगे खैबर के मौका पर भी हज़रत अली रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु ने शुजाअत और बहादुरी के वह जौहर दिखाए हैं जिस का जिक्र हमेशा बाक़ी रहेगा और लोगों के दिलों में जोश व वलवला पैदा करता रहेगा।

खैबर का वह क़िला जो मुरहहब का पाए तख़्त था उस का फ़त्ह करना आसान न था, उस क़िला को सर करने के लिये सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम ने एक दिन हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु को झण्डा इनायत फरमाया और दूसरे दिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु को अता फरमाया लेकिन फातिहे खैबर होना तो किसी और के लिये मुक़द्दर हो चुका था इस लिये इन हज़रात से वह फ़त्ह न हुआ, जब इस मुहिम में बहुत ज़्यादा देर हुई तो एक दिन सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मैं यह झण्डा कल एक ऐसे शख्स को दूंगा जिस के हाथ खुदाए तअ़ाला फ़त्ह अता फरमाएगा, वह शख्स अल्लाह व रसूल को दोस्त रखता है और अल्लाह व रसूल (जल्ल जलालुहु व सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम) उस को दोस्त रखते हैं।

हुज़ूर की इस खुशख़बरी को सुन कर सहाबए किराम ने वह रात बड़ी बेकरारी में काटी, इस लिये कि हर सहाबी की यह तमन्ना थी ऐ

काश! रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम कल सुब्ह हमें झण्डा इनायत फरमा दें तो इस बात की सनद हो जाती कि हम अल्लाह व रसूल को महबूब रखते हैं और अल्लाह व रसूल हमें चाहते हैं और इस नेअमते उज्मा व सजादते कुब्रा (आला नेअमत व बड़ी खुशखबरी) से भी सरफराज हो जाते कि फातिहे खैबर बन जाते इस लिये कि वह सहाबी थे, वहाबी नहीं थे, उन का यह अकीदा हरगिज नहीं था कि कल क्या होने वाला है, हुजूर को उस की क्या खबर? बल्कि उन का अकीदा यह था कि अल्लाह के महबूब दानाए खिफाया व गुयूब जनाबे अहमदे मुज्जबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने जो कुछ फरमाया है वह कल होकर रहेगा, उस में ज़रा बराबर फर्क नहीं हो सकता।

जब सुब्ह हुई तो तमाम सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने उम्मीदें लिये हुए बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुए और अदब के साथ देखने लगे कि नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम आज किस को सरफराज फरमाते हैं। सब की अरमान भरी निगाहें हुजूर के लबे मुबाकर की जुबिश पर कुर्बान हो रही थीं कि सरकार ने फरमाया: **اَلَيْسَ عَلِيٌّ مِنْ اَبِي طَالِبٍ** यानी अली बिन अबी तालिब कहाँ हैं? लोगों ने अर्ज किया या रसूलल्लाह! वह आशोबे चश्म में मुब्तला हैं, उन की आंखें दुखती हैं, आप ने फरमाया कोई जाकर उन को बुला लाए, जब हज़रत रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अली लाए गए तो रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने उन की आंखों पर लुआबे दहेन लगा दिया तो वह बिल्कुल ठीक हो गई। हदीस शरीफ के अस्ल अल्फाज़ यह हैं: **بَيَضَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي عَيْنَيْهِ قَبْرًا** और उन की आंखें इस तरह अच्छी हो गईं गोया दुखती ही न थीं। फिर हुजूर ने उन को झण्डा इनायत फरमाया, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अर्ज किया या रसूलल्लाह! क्या मैं उन लोगों से उस वक़्त तक लड़ूँ जब तक कि वह हमारी तरह मुसलमान न हो जाएं, हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि

व सल्लम ने फरमाया कि नमी से काम लो, पहले उन्हें इस्लाम की तरफ बुलाओ और फिर बतलाओ कि इस्लाम कबूल करने के बाद उन पर क्या हुक्म हैं, खुदा की कसम अगर तुम्हारी कोशिश से एक शख्स को भी हिदायत मिल गई तो तुम्हारे लिये सुख ऊंटों से भी बेहतर होगा। (बुखारी, मुस्लिम, मिश्कात:564)

इस्लाम कबूल करने या सुलह करने के बजाए हजरत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मुकाबला करने के लिये मुरहहब यह रज्ज (जंगी अशआर) पढ़ता हुआ क़िला से बाहर निकला:

فَلَعَلِمْتُ خَيْرًا لِّي مُرَحَّبٌ

فَأَكْبَى السَّلَاحَ بَطْلُ مُحَرَّبٌ

यानी बेशक ख़ैबर जानता है कि मैं मुरहहब हूँ, हथियारों से लैस बहादुर और तजुर्बेकार हूँ। हजरत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस के जवाब में रज्ज का यह शअर पढ़ा:

أَنَا الَّذِي سَمَّيْنِي أُمِّي حَيَّةَ

كَلِمَةٍ غَائِبَاتٍ كَرِيهُو الْمَنْظَرَةِ

यानी मैं वह शख्स हूँ कि मेरी मां ने मेरा नाम “शेर” रखा है, मेरी सूरत झाड़ियों में रहने वाले शेर की तरह ख़ौफनाक है।

मुरहहब बड़े घमंड से आया था लेकिन शेर खुदा अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस ज़ोर से तल्वार मारी कि उस के सर को काटती हुई दांतों तक पहुंच गई और वह ज़मीन पर ढेर हो गया। उस के बाद आप ने फतह का ऐलान फरमा दिया।

हजरत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है उस रोज़ आप ने ख़ैबर का दरवाज़ा अपनी पीठ पर उठा लिया था और उस पर मुसलमानों ने चढ़ कर क़िला को फतह कर लिया था, आप ने वह दरवाज़ा फेंक दिया, जब लोगों ने उसे घसीट कर दूसरी जगह डालना चाहा तो चालीस आदमियों से कम उसे उठा न सके।

और इब्ने असाकिर ने अबू राफेअ से रिवायत की है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जंगे खैबर में क़िला का फाटक हाथ में लेकर उस को ढाल बना लिया, वह फाटक बराबर उन के हाथ में रहा और वह लड़ते रहे यहां तक कि अल्लाह तआला ने उन के हाथों खैबर को फल फरमाया। उस के बाद फाटक आप ने फेंक दिया। लड़ाई से फारिग होने के बाद हमारे साथ कई आदमियों ने मिल कर उसे पलटना चाहा मगर वह नहीं पलटा। (तारीख़ुल खुलफा:114)

एक बार आप हज़रत फिर बुलंद आवाज़ से दुरुद शरीफ पढ़ें।

صلى الله على النبي الامى واله صلى الله عليه وسلم صلا وسلاما عليك يا رسول الله

सल्लल्लाहु अलन् नबियिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम सलातुव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

आप का हुलिया

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जिस्म के फर्बा थे। अक्सर खोद (लोहे की टोपी) इस्तेमाल करने की वजह से सर के बाल उड़े हुए थे। आप निहायत कवी और मियाना कद माइल ब-पस्ती थे। आप का पेट दीगर अज्जा के ऐतबार से किसी कदर भारी था, मूठों के दरमियान का गोश्त भरा हुआ था। पेट से नीचे का जिस्म भारी था। रंग गंदुमी था। तमाम जिस्म पर लम्बे-लम्बे बाल आप की रीश मुबारक घनी और दराज़ थी।

मशहूर है कि एक यहूदी की दाढ़ी बहुत मुख़्तसर थी, ठोढ़ी पर सिर्फ़ चन्द गिन्ती के बाल थे। और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की दाढ़ी मुबारक बड़ी घनी और लम्बी थी, एक दिन वह यहूदी हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कहने लगा ऐ अली! तुम्हारा यह दावा है कि कुरआन में सारे उलूम हैं और तुम बाबे मदीनतुल इल्म हो तो बताओ कुरआन में तुम्हारी घनी दाढ़ी और मेरी मुख़्तसर दाढ़ी का भी ज़िक्र है, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया हां, सूरए अज्राफ में है: وَاللّٰهُ يَخْرُجُ بَيِّنَةً يَّادُنْ رَبِّهِ وَاللّٰهُ يَخْرُجُ الْكَلِمَ يَٰ

जो अच्छी ज़मीन है उस की हरियाली अल्लाह के हुक्म से ख़ूब निकलती है और जो ख़राब है उस में से नहीं निकलती मगर थोड़ी बमुश्किल। (पारा:8 रुकूअ:14)

तो ऐ यहूदी! वह अच्छी ज़मीन हमारी ठोढ़ी है और ख़राब ज़मीन तेरी ठोढ़ी।

मालूम हुआ कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इल्म बहुत वसीअ था कि अपनी घनी दाढ़ी और यहूदी की मुख़्तसर दाढ़ी का ज़िक्र आप ने कुरआन मजीद में साबित कर दिखाया और यह भी साबित हुआ कि सारे उलूम का ख़ज़ाना है। मगर लोगों की अक़लें उस के समझने से कासिर हैं। एक शाइर ने बहुत ख़ूब कहा है:

حَمِيعُ الْعِلْمِ فِي الْقُرْآنِ لَكِنْ

تَقَاصَّرَ عَنْهُ أَفْهَامُ الرِّجَالِ

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और अहादीसे करीमा

हज़रत अली कर्मल्लाहु तआला वज्हेहुल करीम की फज़ीलत में बहुत सी हदीसें वारिद हैं बल्कि इमाम अहमद रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फरमाते हैं कि जितनी हदीसें आप की फज़ीलत में हैं किसी और सहाबी की फज़ीलत में इतनी हदीसें नहीं हैं। बुख़ारी और मुस्लिम में हज़रत सअद बिन वक्कास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि ग़ज्वए तबूक के मौका पर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लाम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को मदीना तैयिबा में रहने का हुक्म फरमाया और अपने साथ नहीं लिया तो उन्होंने ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! आप मुझे यहां औरतों और बच्चों पर अपना खलीफा बना कर छोड़े जाते हैं तो सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लाम ने फरमाया: اَلَا تَكُونُ بَيْنَ مَرْثَلَةٍ خَاوُونَ مِنْ مُوسَى यानी क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि मैं तुम्हें इस तरह छोड़े जाता हूँ कि जिस तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने हज़रत हासून

अलैहिस्सलाम को छोड़ गए। अल्बत्ता फर्क सिर्फ इतना है कि मेरे बाद कोई नबी नहीं होगा।

मतलब यह है कि जिस तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने कोहे तूर पर जाने के वक़्त चालीस दिन के लिये अपने भाई हज़रत हारून अलैहिस्सलाम को बनी इस्राईल पर अपना ख़लीफ़ा बनाया था, इस तरह जंगे तबूक की रवानगी के वक़्त में तुम को अपना ख़लीफ़ा और नाइब बना कर जा रहा हूँ लिहाज़ा जो मर्तबा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के नज़दीक हज़रत हारून अलैहिस्सलाम का था वही मर्तबा हमारी बारगाह में तुम्हारा है। इस लिये ऐ अली! तुम्हें खुश होना चाहिये। तो ऐसा ही हुआ कि इस खुशख़बरी से हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तसल्ली हो गई।

राफ़जी इस हदीस शरीफ़ से हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का ख़लीफ़ा बिला फ़सल होने का इस्तिदलाल करते हैं जो सहीह नहीं, इस लिये कि हुज़ूर ने उन को ख़लीफ़ा मुतलक नहीं बनाया था बल्कि उनकी ख़िलाफ़त महेज़ ख़ानगी उमूर की निगरानी और अहल्लो-अयाल की देख-भाल के लिये थी। इसी सबब से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा को मदीना तैयिबा का सूबादार, हज़रत सिबाज़ अरफ़ता को मदीना मुनव्वरा का कोतवाल और हज़रत इब्ने उम्मे मक्तूम को अपनी मस्जिद का इमाम बनाया था।

(रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम)

मज़ीद जवाबात के लिये तोहफ़ा इस्ना अशरिया का मुतालिआ करें।

और हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: मुनाफ़िक़ मुहब्बत नहीं करता और मोमिन अली से बुग़ज़ व नफ़रत नहीं रखता।

(तिर्मिज़ी)

सुल्हानल्ला! हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की क्या ही बुलंद व बाला शान है कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने आप से मुहब्बत न करने को मुनाफिक होने की अलामत ठहराय और आप से बुग़ज़ व अदावत रखने को मोमिन न होने का मेअयार करार दिया यानी जो हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मुहब्बत न करे वह मुनाफिक है और जो उन से बुग़ज़ व अदावत रखे वह मोमिन नहीं।

और हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **مَنْ سَبَّ عَلِيًّا** यानी जिस ने अली को बुरा भला कहा तो तहकीक़ उस ने मुझ को बुरा भला कहा। (मिशकात)

यानी हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से इतना कुर्ब और नज़्दीकी हासिल है कि जिस ने उन की शान में गुस्ताखी व बेअदबी की तो गोया कि उस ने हुज़ूर की शान में गुस्ताखी व बेअदबी की। खुलासा यह है कि उन की तौहीन करना हुज़ूर की तौहीन करना है। **عَلَيْهِ السَّلَامُ** अल्लहयाजु बिल्लाहि तआला

और हज़रत अबुत तुफैल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि एक दिन हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक खुले हुए मैदान में बहुत से लोगों को जमा करके फरमाया कि मैं अल्लाह की कसम देकर तुम लोगों से पूछता हूँ कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने यौमे ग़दीर ख़ुम में मेरे मुतअल्लिक क्या इरशाद फरमाया था? तो उस मज्मअ से तीस आदमी खड़े हुए और उन लोगों ने गवाही दी कि हुज़ूर ने उस रोज़ फरमाया था: **مَنْ كُتِبَ مَوْلَاةً لِّعَلِيٍّ مَوْلَاةً لِّلَّهِ** यानी मैं जिस का मौला हूँ अली भी उस के मौला हैं। या इलाहल आलमीन! जो शख्स अली से मुहब्बत रखे तू भी उस से मुहब्बत रख और जो शख्स अली से अदावत रखे तू भी उस से अदावत रख। (तारीख़ुल ख़ुलफा)

और तबानी व बज़्ज़ार हज़रत जाबिर से और तिर्मिज़ी व हाकिम हज़रत अली से रिवायत करते हैं कि रसूले अकरम ने फरमाया: **أَمِينَةُ** यानी मैं इल्म का शहर हूँ और अली उस के दरवाज़ा हैं। अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि यह हदीस हसन है और जिन्होंने इस को मौजूज़ कहा है उन्होंने ने ग़लती की है। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:116)

और हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **مَنْ أَحَبَّ عَلِيًّا فَقَدْ أَحَبَّنِي** यानी जिस ने अली से मुहब्बत की उस ने मुझ से मुहब्बत की **وَمَنْ أَحَبَّنِي فَقَدْ أَحَبَّ اللَّهَ** और जिस ने मुझ से मुहब्बत की उस ने अल्लाह तआला से मुहब्बत की **وَمَنْ أَبْغَضَ عَلِيًّا فَقَدْ أَبْغَضَنِي** यानी जिस ने अली से दुश्मनी की उस ने मुझ से दुश्मनी की और जिस ने मुझ से दुश्मनी की उस ने अल्लाह से दुश्मनी की।

(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, बहवाला तबानी)

और बज़्ज़ार, अबू यअूला और हाकिम हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं उन्होंने ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मुझे बुलाया और फरमाया कि तुम्हारी हालत हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जैसी है कि यहूदियों ने उस ने यहां तक दुश्मनी की कि उन की वालिदा हज़रत मरयम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा पर तोहमत लगाई और नसारा ने उन से मुहब्बत की तो इस क़द्र हद से बढ़ गए कि उन को अल्लाह या अल्लाह का बेटा कह दिया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया तो कान खोल कर सुन लो, मेरे बारे में भी दो गिरोह हलाक होंगे, एक मेरी मुहब्बत में हद से तजावुज़ करेगा और मेरी ज़ात से उन बातों को मन्सूब करेगा जो मुझ में नहीं हैं। और दूसरा गिरोह इस क़द्र बुग़ज़ व अदावत रखेगा

لأنه حصل علم رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم بواسطة علي رضي الله عنه وبغيره لأن مدينة يكون لها في العادة ابواب ولا توجد مدينة لها باب واحد فمدينة العلم أوسع المدن بنبي أن يكون لها ابواب كثيرة. (حاشية تاريخ الخلفاء: 116)

कि मुझ पर बोहतान लगाएगा।

(तारीखुल खुलफा)

इस हदीस शरीफ की पेशीन गोई हर्फ बहर्फ सहीह हुई। बेशक हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बारे में दो फिरके गुम्राह होकर हलाक हुए, एक राफिज़ी और दूसरे खारिजी। राफिज़ी इस लिये हलाक हुए कि उन्होंने ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हद से बढ़ाया, यहां तक कि उन को खुदा कह दिया। (देखिये तोहफए इस्ना अशरिया बाबे अब्वल) और खारिजियों ने उन से इस कद्र बुगुज़ व अदावत रखा कि उन को काफिर कह दिया। معاذ الله رب العالمين

मआज़ल्लाहि रब्बल आलमीन

अबू तुराब

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की एक कुन्नियत अबू तुराब भी है जैसा कि शुरू में बताया जा चुका है। जब कोई शख्स आप को अबू तुराब कह कर पुकारता तो आप बहुत खुश होते थे और रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के तुल्फो- करम के मजे लेते थे इस लिये कि यह कुन्नियत आप को हुज़ूर ही से इनायत हुई थी, इस का वाकिआ यह है कि एक रोज़ आप मस्जिद में आ कर लेते हुए थे और आप के जिस्म पर कुछ मिट्टी लग गई थी कि इतने में रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मस्जिद में तशरीफ लाए और अपने मुबारक हाथों से आप के बदन की मिट्टी झाड़ते हुए फरमाया: فَمَا لَإِسْرَابٍ यानी ऐ मिट्टी वाले! उठो, उस रोज़ से आप की कुन्नियत अबू तुराब हो गई। (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु)

खुलफाए सलासा और हज़रत अली

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने खुलफाए सलासा में से हर एक की खिलाफत को बखुशी मंज़ूर फरमाया है और किसी की खिलाफत से इनकार नहीं किया है। जैसा कि इब्ने असाकिर ने हज़रत

हसन रजियल्लाहु तआला अन्हु के हवाले से लिखा है कि जब हज़रत अली रजियल्लाहु तआला अन्हु बसरा तशरीफ लाए तो इब्नुल कव्वा और कैस बिन उबादा रजियल्लाहु तआला अन्हुमा ने खड़े होकर आप से पूछा कि आप हमें यह बतलाइये कि बाज़ लोग कहते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने आप से वादा फरमाया था कि मेरे बाद तुम खलीफा होगे तो यह बात कहां तक सच है, इस लिये कि आप से ज़्यादा इस मामले में सहीह बात और कौन कह सकता है, आप ने फरमाया यह ग़लत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मुझ से कोई वादा फरमाया था जब मैं ने सब से पहले आप की नुबुव्वत की तस्दीक की तो अब मैं ग़लत बात आप की तरफ मन्सूब नहीं कर सकता। अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इस तरह का कोई वादा मुझ से किया होता तो मैं हज़रत अबू बकर सिद्दीक व हज़रत उमर रजियल्लाहु तआला अन्हुमा को हुज़ूर के मिम्बर पर न खड़ा होने देता, मैं उन दोनों को इन्हीं हाथों से क़त्ल कर डालता चाहे मेरा साथ देने वाला कोई न होता। यह तो सब लोग जानते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को अचानक किसी ने क़त्ल नहीं किया और न आप का यका यक विताल हुआ बल्कि कई दिन तक आप की तबीअत नासाज़ रही और जब आप की बीमारी ने ज़ोर पकड़ा और मोअज़्ज़िन ने आप को नमाज़ के लिये बुलाया तो आपने हज़रत अबू बकर सिद्दीक रजियल्लाहु तआला अन्हु को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म फरमाया और मुशाहेदा फरमाते रहे। मोअज़्ज़िन ने फिर आप को नमाज़ के लिये बुलाया, हुज़ूर ने फिर हज़रत अबू बकर सिद्दीक को नमाज़ पढ़ाने के लिये फरमाया। आप की अज्वाजे मुतहहरात में से एक ने (यानी हज़रत आइशा सिद्दीका रजियल्लाहु तआला अन्हु ने) हज़रत अबू बकर रजियल्लाहु तआला अन्हु को इमामत से बाज़ रखना चाहा तो आप ने नाराज़गी ज़ाहिर की और फरमाया कि तुम लोग तो यूसुफ़ अलैहिस् सलाम के ज़माने की

औरतें हो, अबू बकर से कहो कि वह लोगों को नमाज़ पढ़ाएं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का विसाल हो गया तो हम ने खिलाफत के मुतअल्लिक गौर करने के बाद फिर उन्हीं को अपनी दुनिया के लिये इख्तियार कर लिया जिस को प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हमारे दीन यानी नमाज़ के लिये मुन्तख़ब फरमाया था, चूँकि नमाज़ दीन की अस्त है और हुज़ूर दीन व दुनिया दांनों के काइम फरमाने वाले थे इस लिये हम सब ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हाथ पर बैअत कर ली। और सच्ची बात यही है कि वही उसके अहल भी थे। इसी लिये किसी ने आप की खिलाफत में इख्तिलाफ नहीं किया और न किसी ने किसी को नुक़सान पहुंचाने का इरादा किया और न किसी ने आपकी खिलाफत से रू-गर्दानी की, इसी बिना पर मैंने भी आपका हक़ अदा किया और आपकी इताअत की। मैं ने आप के लश्कर में शरीक होकर काफ़िरों से जंग की। माले ग़नीमत या बैतुल माल से जो आपने दिया वह हमने बख़ुशी क़बूल किया और जहां कहीं आप मुझे जंग के लिये भेजा मैं गया और दिल खोल कर लड़ा यहां तक कि उन के हुक्म से शरई सज़ाएं भी दीं यानी हुदूद जारी किये।

फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि जब हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के विसाल का वक़्त करीब आया तो उन्हीं ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपना ख़लीफा बनाया और वह हज़रत अबू बकर सिद्दीक के बेहतरीन जानशीन और सुन्नते नबवी पर अमल करने वाले थे, तो हम ने उन के हाथ पर बैअत कर ली। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ख़लीफा बनाने पर भी किसी शख्स ने बिल्कुल इख्तिलाफ नहीं किया और न कोई किसी को नुक़सान पहुंचाने के दरपै हुआ और एक फर्द भी आपकी खिलाफत से बेज़ार नहीं हुआ। मैं ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु

तअल्ला अन्हु के हुक्क भी अदा किये और पूरे तौर उनकी इताअत की और उनके लश्कर में भी शरीक होकर दुश्मनों से जंग की और उन्होंने जो कुछ मुझे दिया मैं ने खुशी से ले लिया। उन्होंने ने मुझे लड़ाइयों पर भेजा, मैं ने दिल खोल कर काफिरों से मुकाबला किया और आप के जमानए खिलाफत में भी अपने कोड़ों से मुर्जिमों को सजाएं दी।

हजरत अली रजियल्लाहु तअल्ला अन्हु ने अपना बयान जारी रखते हुए फरमाया कि फिर जब हजरत उमर रजियल्लाहु तअल्ला अन्हु के विसाल का वक़्त करीब आया तो मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तअल्ला अलैहि व सल्लम के साथ अपनी कराबत, इस्लाम लाने में सबक़त और अपनी दूसरी फज़ीलतों की जानिब दिल में गौर किया तो मुझे यह ख़्याल ज़रूर पैदा हुआ कि अब हजरत उमर रजियल्लाहु तअल्ला अन्हु को मेरी खिलाफत के बारे में कोई ऐतराज़ न होगा, लेकिन ग़ालिबन हजरत उमर को यह ख़ौफ़ हुआ कि वह कहीं ऐसा ख़लीफ़ा नामज़द न कर दें कि जिस के आमाज़ का खुद हजरत उमर रजियल्लाहु तअल्ला अन्हु को कब्र में जवाब देना पड़े, इस ख़्याल के पेशे नज़र उन्होंने ने अपनी औलाद को भी खिलाफत के लिये नामज़द नहीं फरमाया बल्कि ख़लीफ़ा मुकर्रर करने का फैसला 6 कुरैशियों के सुपुर्द किया जिन में से एक मैं भी था, जब उन 6 मिम्बरों ने इन्तिखाबे ख़लीफ़ा के लिये कमेटी तलब की तो मुझे ख़्याल पैदा हुआ कि अब खिलाफत मेरे सुपुर्द कर दी जाएगी, यह कमेटी मेरे बराबर किसी दूसरे को हैसियत नहीं देगी और मुझी को ख़लीफ़ा मुन्तख़ब करेगी, जब कमेटी के सब अपराद जमा हो गए तो हजरत अब्दुर रहमान बिन औफ़ ने हम लोगों से वादा लिया कि अल्लाह तअल्ला हम में से जिस को ख़लीफ़ा मुकर्रर फरमा दे हम सब उस की इताअत करेंगे और उस के अहक़ाम को खुशी से बजा लायेंगे। इस के बाद हजरत अब्दुर रहमान बिन औफ़ रजियल्लाहु तअल्ला अन्हु ने हजरत उस्मान रजियल्लाहु तअल्ला अन्हु के हाथ पर बैअत की, उस वक़्त मैं ने सोचा कि मेरी इताअत मेरी बैअत पर

गालिब आ गई और मुझ से जो वादा लिया गया था वह अस्ल में दूसरे की बैअत के लिये था। बहर हाल मैं ने हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हाथ पर भी बैअत कर ली और खलीफ़ अव्वल व दोम की तरह उन की इताअत भी कबूल कर ली, उन के हुक्क अदा किये, उनकी सर-कदर्गी में जंगें लड़ीं, उनके अतियात को कबूल किया और मुर्जिमों को शरई सज़ाएं भी दीं।

फिर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के बाद मुझे ख्याल पैदा हुआ कि वह दोनों खलीफ़ा जिन से मैं ने नमाज़ के सबब बैअत की थीं, विसाल फरमा चुके और जिन के लिये मुझ से वादा लिया गया था वह भी रुख़सत हो गए, लिहाज़ा यह सोच कर मैं ने बैअत लेनी शुरू कर दी, मक्का मुअज़्ज़ा व मदीना तैयिबा के बाशिंदों ने और कूफ़ा व बसरा के रहने वालों ने मेरी बैअत कर ली, अब खिलाफ़त के लिये मेरे मुकाबिल वह शख्स खड़ा हुआ है (यानी हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) जो कराबत, इल्म और सबक़ते इस्लाम में मेरे बराबर नहीं, इस लिये मैं उस शख्स के मुकाबिला में खिलाफ़त का ज़्यादा मुस्तहिक् हूँ। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:121)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के इस तपसीली बयान से वाज़ेह तौर पर मालूम हुआ कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपने बाद उन को खिलाफ़त के लिये नामज़द नहीं फरमाया था और न उन से इस किसम का कोई वादा फरमाया था, इसी लिये आप ने खुलफ़ाए सलासा की बैअत से इनकार नहीं किया और न उन की मुखलाफ़त की बल्कि हर तरह से उन का तआवुन किया और उनके अतियात को कबूल फरमाया।

दर अस्ल राज़ यह है कि अगर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की वफ़ात के बाद बिला फसल खलीफ़ा मुन्तख़ब हो जाते तो खुलफ़ाए सलासा (तीनों खलीफ़ा) महबूबे खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की

खिलाफत व नियाबत की नेअमत से सरफराज न हो पाते, सब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के अहद ही में इन्तेकाल कर कर जाते, हालां कि इल्मे इलाही में यह मुकद्दर हो चुका था कि वह तीनों हज़रत भी हुज़ूर की नियाबत से सरफराज होंगे। तो खुदाए तआला ने सहाबए किराम के दिलों में यह बात डाल दी कि उसी तरतीब से खलीफा मुत्तखब करें कि जिस तरतीब के साथ वह दुनिया से रुख़सत होने वाले हैं ताकि उन में से कोई हुज़ूर की नियाबत से महरूम न रहे।

रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अज्मईन

आप का इल्म

हज़रत अली कर्मल्लाहु तआला वज्हुल करीम इल्म के ऐतबार से उलमाए सहाबा में बहुत ऊंचा मक़ाम रखते हैं। सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बहुत सी हदीसें आप से मरवी हैं। आप के फतावा और फैसले इस्लामी उलूम के अन्मोल जवाहिर पारे हैं। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं कि हम ने जब भी आप से किसी मस्अला को दरियाफ्त किया तो हमेशा दुरुस्त ही जवाब पाया। हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के सामने जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का जिक्र हुआ तो आप ने फरमाया कि अली से ज़्यादा मसाइले शरइय्या का जानने वाला कोई और नहीं है। और हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मदीना तैयिबा में इल्मे फराइज़ और मुकद्दमात के फैसले करने में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से ज़्यादा इल्म रखने वाला कोई दूसरा नहीं था। और हज़रत सईद बिन मुसैय्यिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सहाबा में सिवाए हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के कोई यह कहने वाला नहीं था कि जो कुछ पूछना हो मुझ से पूछ लो। और हज़रत सईद बिन मुसैय्यिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से यह भी मरवी है कि जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में कोई

मुश्किल मुकद्दमा पेश होता और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मौजूद न होते तो अल्लाह तआला की पनाह मांगा करते थे कि मुकद्दमा का फैसला कहीं ग़लत न हो जाए। (तारीख़ुल खुल्फा)

मशहूर है कि हज़रत उमर फारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सामने एक ऐसी औरत पेश की गई कि जिसे जिना का हमल था, सबूते शरई के बाद आप ने उस के संगसार (पत्थर मारने) का हुक्म फरमाया। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने याद दिलाया कि हुज़ूर सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का फरमान है कि हामिला औरत को बच्चा पैदा होने के बाद संगसार किया जाए। इस लिये जिना करने वाली औरत अगर्चे गुनहगार होती है मगर उस के पेट का बच्चा बेकुसूर होता है। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की याद देहानी के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने फैसले से रुजूअ कर लिया और फरमाया: لَوْلَا عَلَىٰ لَهْلَاكَ عَمْرُ अगर अली न होते तो उमर हलाक हो जाता। अली की मौजूदगी ने उमर को हलाकत से बचा लिया। (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा)।

आप के फैसले

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के फैसले ऐसे अजीब व ग़रीब और नादिरे रोज़गार हैं कि जिन्हें पढ़ कर बड़े-बड़े अक़ल मन्दों और दानिश्वरों की अक़लें हैरान हैं। और यह सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दस्ते मुबारक और उन की दुआ की बरकत है। खुद हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मुझे यमन की जानिब काज़ी बना कर भेजना चाहा तो मैंने अर्ज किया या रसूलल्लाह! मैं अभी नातजुर्बे कार जवान हूँ, मामलात तय करना नहीं जानता हूँ और आप मुझे यमन भेजते हैं। यह सुन कर हुज़ूर ने मेरे सीने पर हाथ मारा और फरमाया: इलाहल आलमीन! इस के कल्ब की रौशन फरमा दे। और इस की ज़बान में तासीर अता फरमा दे, कसम है उस जात

की जो छोटे बीज से बड़ा दरख्त पैदा करता है, इस दुआ के बाद से फिर कभी मुझे किसी मुकद्दमा के फैसले में कोई तरदुद नहीं रहा, बगैर किसी शक व शुब्हा के मैं ने हर मुकद्दमे का तस्फिया कर दिया।

अब आप हज़रत सैयिदना हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के चन्द फैसले मुलाहेज़ा फरमाएं।

आका और गुलाम

हज़रत बरा बिन आजिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि यमन के एक शख्स ने अपने गुलाम को अपने लड़के के साथ कूफा भेजा, इत्तिफाक से रास्ते में दोनों ने झगड़ा किया, लड़के ने गुलाम को मारा और गुलाम ने उसे गालियां दीं, कूफा पहुंच कर गुलाम ने दावा किया कि यह लड़का मेरा गुलाम है और उसे बेचना चाहा, यह मुकद्दमा हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अदालत में पहुंचा, आप ने खादिम कम्बर से फरमाया कि इस कमरे की दीवार में दो बड़े-बड़े सूराख बनाओ और इन दोनों से कहो कि अपने-अपने सर इन सूराखों से बाहर निकालें। जब यह सब हो गया तो आपने फरमाया ऐ कुबुर, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की तल्वार लाओ, हज़रत कम्बर तलवार ले आए तो आप ने फरमाया फौरन गुलाम का सर काट लो, इतना सुनता ही गुलाम ने फौरन अपना सर अन्दर खींच लिया और दूसरा नौजवान अपनी हालत पर काइम रहा, इस तरह आप के इजलास में बगैर किसी गवाह व शहदत के फैसला हो गया कि आका कौन है और गुलाम कौन है, आपने गुलाम को सज़ा दी और उसे यमन भेज दिया।

(अशरए मुबश्शरा)

हकीकी मां

हज़रत सहल बिन सअद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि एक मर्तबा दो औरतें एक लड़के के मुतअल्लिक झगड़ा करती हुई हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास आईं, दोनों का कहना था कि यह लड़का हमारा है, आप ने पहले उन दोनों को बहुत

समझाया लेकिन जब उन की हंगामा आराई जारी रही तो आप ने हुक्म दिया कि आरा लाओ, उन्होंने ने पूछा कि आरा किस लिये मंगा रहे हैं? आप ने फरमाया कि इस लड़के के दो टुकड़े करके दोनों को आधा-आधा दूंगा, हकीकत में उस लड़के की जो मां थी, यह सुन कर बेकरार हो गई और उसके चेहरे से गमगीनी ज़ाहिर हुई, उस ने निहायत आजिजी से अर्ज किया, ऐ अमीरुल मोमिनीन मैं इस लड़के को नहीं लेना चाहती, यह इसी औरत का है, आप इसी को दे दीजिये मगर खुदा के वास्ते इस को क़त्ल न कीजिये, आप ने वह लड़का उसी बेकरार औरत को दे दिया और जो औरत ख़ामोश खड़ी रही आप ने उससे फरमाया कि तुम को शर्म आनी चाहिये कि तुम ने मेरे इजलास में झूठा बयान दिया, यहां तक कि उस औरत ने अपने जुर्म का इक़रार कर लिया। (अशरए मुबशशरा)

एक शख्स की वसियत

हज़रत ज़ैद बिन अक़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि एक मर्तबा एक शख्स ने मरते वक़्त अपने एक दोस्त को दस हज़ार दिरहम दिये और वसियत की कि जब तुमसे और मेरे लड़के से मुलाक़ात हो तो इसमें से जो तुम चाहो वह उसको दे दना। इत्तिफ़ाक़ से कुछ रोज़ बाद उस का लड़का वतन में आ गया, इस मौके पर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस शख्स से पूछा कि बताओ तुम मरहूम के लड़के को कितना दोगे? उस ने कहा एक हज़ार दिरहम, आप ने फरमाया कि अब तुम उस को नौ हज़ार दो, इस लिये कि जो तुम ने चाहा वह नौ हज़ार हैं और मरहूम ने यह वसियत की है कि जो तुम चाहो वह उस को दे देना। (अशरए मुबशशरा)

सत्तरा (17) ऊंट

हज़रत अली कर्मल्लाहु तआला वज्हुल करीम की ख़िदमत तीन शख्स आए, उन के पास 17 ऊंट थे, उन लोगों ने आप से अर्ज किया कि इन ऊंटों को आप हमारे दरमियान तक्सीम कर दें। हम में एक

शख्स आधे का हिस्सेदार है, दूसरा तिहाई का और तीसरा नवें हिस्से का। मगर शर्त यह है कि पूरे पूरे ऊंट हर शख्स को मिलें, काट कर तक्सीम न करें और न किसी से कुछ पैसा दिलाएं।

बड़े-बड़े दानिश्वर जो आप के पास बैठे हुए थे उन्होंने ने आपस में कहा यह कैसे हो सकता है कि पूरे-पूरे ऊंट हर शख्स को मिलें और वह काटे न जाएं, न किसी से कुछ पैसे दिलाए जायें। इस लिये कि जो शख्स आधे का हिस्सेदार है उसे 17 में से साढ़े आठ (8-1/2) मिलेगा और जो शख्स तिहाई का हकदार है वह 5-2/3 ऊंट पाएगा। 17 में से पूरा 6 उसे भी नहीं मिलेगा और जिस का हिस्सा नवां है, 17 में से वह भी दो से कम ही पाएगा। तो एक दो नहीं बल्कि तीन ऊंटों को जिन्हें किये बगैर 17 ऊंटों की तक्सीम इन लोगों के दरमियान हरगिज़ नहीं हो सकती।

मगर कुर्बान जाइये हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अक्ल व दानाई और उन की कुव्वते फैसला पर कि आप ने बिला तअम्मुल फौरन उन के ऊंटों को एक लाइन में खड़ा करवा दिया और अपने खादिम से फरमाया कि हमारा एक ऊंट इसी लाइन के आखिर में लाकर खड़ा कर दो, जब आप के ऊंट को मिला कर कुल 18 ऊंट हो गए, तो जो शख्स आधे का हिस्सेदार था आप ने उसे 18 में से 9 दिया और तिहाई हिस्से वाले को 18 में से 6, फिर नवें के हिस्सेदार को 18 में से दो दिया अपने ऊंट को फिर अपनी जगह पर भिजवा दिया।

इस तरह आप ने न तो कोई ऊंट काटा और न ही किसी को कुछ नक्द पैसा दिलवाया और 17 ऊंटों को उन की शर्त के मुताबिक तक्सीम फरमा दिया जिस पर किसी शख्स को कोई ऐतराज़ नहीं हुआ।

आप के इस फैसले को देख कर सारे हाज़िरीन दंग हो गए और सब बयक ज़बान पुकार उठे बेशक आप का सीना फज़ल व कमाल का ख़ज़ीना, हिकमत-अदालत का सफ़ीना और इल्मे नुबुव्वत का मदीना है।

आठ रोटियां

दो आदमी सफर में एक साथ खाना खाने के लिये बैठे, उन में से एक की पांच रोटियां थीं, दूसरे की तीन, इतने में एक शख्स उधर से गुज़रा, उस ने उन दोनों से सलाम किया, उन्होंने उस को भी अपने साथ खाने पर बिठा लिया और तीनों ने मिल कर वह सब रोटियां खाईं। खाने से फ़ारिग होकर उस तीसरे शख्स ने आठ दिरहम दिये और कहा कि आपस में बांट लेना, जब वह शख्स चला गया तो पांच रोटियों वाले ने कहा कि मैं पांच दिरहम लूंगा कि मेरी पांच रोटियां थीं और तुम तीन दिरहम लो कि तुम्हारी तीन ही थीं, तीन रोटी वाले ने कहा नहीं बल्कि आधे दिरहम हमारे हैं और आधे तुम्हारे इस लिये कि हम दोनों ने मिल कर रोटियां खाई हैं लिहाज़ा का दोनों का हिस्सा बराबर चार-चार दिरहम होगा। जब दोनों में मामला तय न हुआ तो इस झगड़े का फैसला कराने के लिये दोनों हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्दु के इज्लास में पहुँचे, आप ने सारा वाक़िआ सुनने के बाद तीन रोटी वाले से फरमाया कि तुम्हारा साथी जो तीन दिरहम तुम को दे रहा है ले लो, इस लिये कि तुम्हारी रोटियां कम थीं, तीन रोटियों वाले ने कहा कि मैं इस ग़ैर मुन्सिफ़ाना फैसले पर राज़ी नहीं हूँ। आप ने फरमाया यह ग़ैर मुन्सिफ़ाना फैसला नहीं है, हिसाब से तो तुम्हारा एक ही दिरहम होता है, उस ने कहा आप हिसाब हमें समझा दीजिये तो हम एक ही दिरहम ले लेंगे।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्दु ने फरमाया कान खोल कर सुनो! तुम्हारी तीन रोटियां थीं और उस की पांच। कुल आठ रोटियां हुईं। और खाने वाले कुल तीन थे तो उन आठ रोटियों के तीन-तीन टुकड़े करो तो कुल 24 टुकड़े हुए, अब उन 24 टुकड़ों को तीन खाने वालों पर तक्सीप करो तो आठ-आठ टुकड़े सब के हिस्से में आए, यानी आठ टुकड़े तुम ने खाए, आठ तुम्हारे साथी ने और आठ उस तीसरे शख्स ने। अब ग़ौर से सुनो! तुम्हारी तीन रोटियों के तीन-तीन टुकड़े

करें तो नौ टुकड़े बनते हैं और तुम्हारे साथी की पांच रोटियों तीन-तीन टुकड़े करें तो 15 टुकड़े बनते हैं, तो तुम ने अपने 9 टुकड़ों में से 8 टुकड़े खुद खाए और तुम्हारा सिर्फ एक टुकड़ा बचा जो उस तीसरे शख्स ने खाया लिहाजा तुम्हारा सिर्फ एक दिरहम हुआ। और तुम्हारे साथी ने अपने 15 टुकड़ों में से 8 खुद खाए और उस के 7 टुकड़े उस तीसरे शख्स ने खाए लिहाजा 7 दिरहम उस के हुए। यह फैसला सुन कर तीन रोटि वाला हैरान हो गया, मजबूरन उसे ही एक दिरहम लेना पड़ा और दिल में कहने लगा ऐ काश! मैं ने तीन दिरहम ले लिया होता तो अच्छा होता।

एक मर्तबा आप हज़रत फिर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ का नज़्मा और हदिया पेश करें।

صلى الله على النبي الامي واله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاما عليك يا رسول الله

सल्लल्लाहु अलन् नबियिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम सलातुव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

आप की करामतें

अमीरुल मोमिनीन हज़रत सैयिदना अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तज़ाला अन्हु से बहुत सी करामतों का जुहूर हुआ है, जिन में से चन्द करामतों को जिक्र आप लोगों के सामने किया जाता है।

हज़रत अब्दुर रहमान अल्लामा जामी रहमतुल्लाहि तज़ाला अलैहि तहरीर फरमाते हैं कि कूफा में एक रोज़ हज़रत अली रज़ियल्लाहु तज़ाला अन्हु ने सुबह की नमाज़ पढ़ने के बाद एक शख्स से फरमाया कि फुलां मक़ाम पर जाओ, वहां एक मस्जिद है जिस के पहलू में एक मक़ान बाक़ा है उस में एक मर्द एक औरत आपस में लड़ते हुए मिलेंगे, उन्हें हमारे पास ले आओ, वह शख्स वहां पहुंचा तो देखा बाक़ई ब्रह्म दोनों आपस में झगड़ा कर रहे हैं, आप के हुक्म के मुताबिक़ उन दोनों को साथ ले आया, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तज़ाला अन्हु ने फरमाया, आज रात तुम दोनों में बहुत लड़ाई हुई नौजवान ने कहा ऐ अमीरुल

मोमिनीन! मैं ने इस औरत से निकाह किया लेकिन जब मैं इसके पास आया तो इस की सूरत से मुझे सख्त नफरत हो गई, अगर मेरा बस चलता तो इस औरत को मैं उसी वक्त अपने पास से दूर कर देता, इस ने मुझ से झगड़ना शुरू कर दिया और सुबह तक लड़ाई होती रही, यहां तक कि आप का भेजा हुआ आदमी हमें बुलाने के लिये पहुंचा, हाजिरीन को आप ने जाने का इशारा फरमाया, वह चले गए, उसके बाद आप ने उस औरत से पूछा, तुम इस जवान को पहचानती हो? उस ने कहा नहीं, सिर्फ इतना जानती हूं कि यह कल से मेरा शौहर है, आप ने फरमाया अब तू अच्छी तरह जान लेगी, मगर सच सच कहना, झूठ कतई नहीं बोलना, उस ने कहा कि मैं वादा करती हूं झूठ हरगिज नहीं बोलूंगी, आप ने फरमाया कि तुम फुलां की बेटी फुलां हो? उस ने कहा हां हुजूर! मैं वही हूं, फिर आप ने फरमाया तुम्हारा चचाजाद भाई था जो तुमपर आशिक था और तू भी उस से बहुत मुहब्बत करती थी, उस ने इस बात का भी इक्कार किया, फिर आप ने फरमाया तू एक दिन किसी ज़रूरत से रात के वक्त घर से बाहर निकली तो उसने तुझे पकड़ कर तुझसे ज़िना किया और तू हमिला हो गई, इस बात को तू ने अपने बाप से छुपा रखा, उस ने कहा बेशक ऐसा ही हुआ था, आप ने फरमाया मगर तेरी मां सारा वाकिआ जानती थी और जब बच्चा पैदा होने का वक्त आया तो रात थी, तेरी मां तुझे घर से बाहर ले गई, तुझे लड़का पैदा हुआ, तू ने उसे एक कपड़े में लपेट कर दीवार के पीछे डाल दिया, इत्तिफाक से वहां एक कुत्ता पहुंच गया, जिस ने उसे सूंघा, तू ने उस कुत्ते को एक पत्थर मारा, जो बच्चे के सर पर लगा जिस से वह ज़ख्मी हो गया, तेरी मां ने अपने इज़ार बन्द से कुछ कपड़ा फाड़ कर उस के सर को बांध दिया फिर तुम दोनों वापस चली आई और तुम्हें उस लड़के का कोई पता न चला, उस औरत ने जवाब दिया हां हुजूर ऐसा ही हुआ था, मगर ऐ अमीरुल मोमिनीन! इस वाकिआ को मैं और मेरी मां के अलावा कोई तीसरा नहीं जानता था।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया जब सुबह हुई

तो फुलां कबीला उस लड़के को उठा कर ले गया और उस की परिवरिश की यहां तक कि वह जवान हो गया, कूफा शहर में आया और अब तुझ से शादी कर ली, फिर आप ने उस नौजवान से कहा अपना सर खोलो, उस ने अपना सर खोला तो ज़ख्म का असर ज़ाहिर था, आप ने फरमाया यह तुम्हारा लड़का है, खुदाए अज़्ज़ व जल्ल ने इसे हराम चीज़ से महफूज़ रखा, फरमाया ले, इसे अपने साथ ले जा, तू इस की बीवी नहीं मां है और यह तेरा शौहर नहीं बेटा है।

(शवाहिदुन नुबुच्चत)

इस वाकिआ से साफ ज़ाहिर है कि अल्लाह के महबूब बन्दे आम इंसानों की तरह नहीं होते बल्कि उन के अन्दर ऐसा कमाल होता है कि वह लोगों के सारे हालात जानते हैं। मौलाना रुम रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं: हाले तू दानंद यक-यक मू-बमू-जाकि पुर हस्तंद अज़ असरारे हू। यानी अल्लाह के महबूब तुम्हारे हाल से ज़र्ज़र्ज़ा आगाह हैं इस लिये कि उन के अन्दर असरारे रब्बानी भरे हुए हैं।

फुरात में तुगयानी

कूफा वालों ने आप से अर्ज़ किया ऐ अमीरुल मोमिनीन! इस साल दरियाए फुरात में तुगयानी के सबब हमारी खेतियां बरबाद हो रही हैं, क्या ही अच्छा हो अगर आप अल्लाह तआला से दुआ करें कि दरिया का पानी कम हो जाए, आप उठ कर मकान के अन्दर तशरीफ ले गए, सोग घर के दरवाजे पर आपका इन्तिज़ार कर रहे थे कि अचानक आप सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का जुब्बा पहने, इमामा सर पर बांधे और असाए मुबारक हाथ में लिये हुए बाहर तशरीफ लाए, एक घोड़ा मंगा कर उस पर सवार हुए और फुरात की तरफ रवाना हुए, अवाम व ख्वास में से बहुत से लोग आप के पीछे-पीछे चले, जब आप फुरात के किनारे पहुंचे तो घोड़े से उतर कर दो रकअत नमाज़ पढ़ी, फिर उठ कर असाए मुबारक हाथ में लिया और फुरात के पुल पर आ गए, उस वक़्त हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु

तअ़ाला अन्हुमा उनके साथ थे, आप ने अ़सा से पानी की तरफ़ इशारा किया तो पानी की सतह एक हाथ कम हो गई, आप ने फरमाया क्या इतना काफी है? लोगों ने कहा नहीं, आप ने फिर अ़सा से पानी की तरफ़ इशारा किया, पानी एक हाथ फिर कम हो गया, इस तरह जब तीन फिट पानी की सतह नीचे हो गई तो लोगों ने कहा या अमीरुल मोमिनीन! बस इतना काफी है। (शवाहिदुन नुबुव्वत)

सच फरमाया मौलाना रुम रहमतुल्लाहि तअ़ाला अलैह ने कि:

यादे ऊ गर मोनिस जानत बुवद

हर दो आलम ज़ेरे फरमानत बुवद

यानी खुदाए तअ़ाला की याद अगर तुम्हारी जान की साथी बन जाए तो दोनों आलम तुम्हारे पैरुकार हो जाएं।

पानी का चश्मा

जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु जंगे सिफ्फ़ीन में मशगूल थे, आप के साथियों को पानी की सख़्त ज़रूरत पड़ी, लोगों ने बहुत दौड़ धूप की भगर पानी दस्तयाब न हुआ, आप ने फरमाया और आगे चलो, कुछ दूर चले तो एक गिरजा नज़र आया, आप ने उस गिरजा में रहने वाले से पानी के मुतअल्लिक़ दरियाफ्त किया, उस ने कहा यहाँ से छे मील के फासले पर पानी मौजूद है, आप के साथियों ने कहा ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप हमें इजाज़त दीजिये शायद हम अपनी कुव्वत के ख़त्म होने से पहले पानी तक पहुँच जाएं, आप ने फरमाया इस की हाज़त नहीं, फिर अपनी सवारी को पच्छिम की तरफ़ मोड़ा और एक तरफ़ इशारा करते हुए फरमाया, यहाँ से ज़मीन खोदो, अभी थोड़ी ही ज़मीन खोदी गई थी कि नीचे एक बड़ा पत्थर ज़ाहिर हुआ जिसे हटाने के लिये कोई हथियार भी कारगर न हो सका, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु ने फरमाया कि यह पत्थर पानी पर बाँके है, किसी तरह इसे हटाओ, आप के साथियों ने बहुत कोशिश की

मगर उसे अपनी जगह से हिला न सके, अब शेर ख़ुदा ने अपनी आस्तीन चढ़ा कर, उंगलियां उस पत्थर के नीचे रख कर जोर लगाया तो पत्थर हट गया और उस के नीचे निहायत ठंडा, मीठा और साफ पानी ज़ाहिर हुआ जो इतना अच्छा था कि पूरे सफर में उन्होंने ने ऐसा पानी न पिया था, सब ने शिकम सैर होकर पिया और जितना चाहा भर लिया, फिर आप ने उस पत्थर को उठा कर चश्मह पर रख दिया और फरमाया इस पर मिट्टी डाल दो, जब राहिब ने यह देखा तो आप की खिदमत में खड़े होकर निहायत अदब से पूछा क्या आप पैगम्बर हैं? फरमाया नहीं, पूछा क्या आप फिरिशतए मुकर्रब हैं? फरमाया नहीं, पूछा तो फिर आप कौन हैं? फरमाया कि मैं सैयिदना मुहम्मदुर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का दामाद और उन का खलीफा हूँ, राहिब ने कहा कि हाथ बढ़ाइये ताकि मैं आप के हाथ पर इस्लाम कबूल करूं, आप ने हाथ बढ़ाया तो राहिब ने कहा: **أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ**

आप ने राहिब से दरियाफ्त फरमाया क्या वजह है कि तुम मुद्दत से अपने दीन पर काइम थे और अब तुम ने इस्लाम कबूल कर लिया, उस ने कहा हुज़ूर! यह गिरजा उसी हाथ पर फतह होना था जो इस चटान को हटा कर चश्मह निकाले। और हमारी किताबों में लिखा हुआ है कि इस चटान के हटाने वाला या तो पैगम्बर होगा और या तो पैगम्बर का दामाद, जब मैंने देखा कि आप ने इस पत्थर को हटा दिया तो मेरी मुराद पूरी हो गई और मुझे जिस चीज़ का इन्तिज़ार था वह मिल गई। जब राहिब से आप ने यह बात सुनी तो इतना रोए कि आप की दाढ़ी के बाल तर हो गए, फिर फरमाया सब तारीफ ख़ुदाए तआला के लिये है कि मैं उस के यहां भूला बिसरा नहीं हूँ बल्कि मेरा ज़िक्र उस की किताबों में मौजूद है। (शवाहिदुन नुबुव्वत)

अल्लाह तआला के महबूब बन्दों को मालूम होता है कि ज़मीन में कहां क्या चीज़ है और यह दर हकीकत इल्मे ग़ैब है जो सरकारे

अक़दस सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम के सदके व तुफैल में उन्हें हासिल होता है।

आप की खिलाफत

हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु की शहादत के बाद दूसरे रोज़ हज़रत तल्हा और हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हुमा के अलावा मदीना तैयिबा के सब रहने वालों ने आप के हाथ पर बैअत की, आप अमीरुल मोमिनीन हो गए। हज़रत तल्हा, हज़रत जुबैर और हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हुम ने बसरा पहुंच कर कातिलीने हज़रत उस्माने ग़नी से किसास लेने का मुतालेबा आप से शुरू किया और बहुत से लोग इस मुतालेबा में शरीक हो गए, हज़रत अली को इस बात की इत्तिला मिली तो आप भी इराक़ तशरीफ़ ले गए, बसरा रास्ते ही में पड़ता था, यहां “जंगे जुमल” हुई जिस में हज़रत तल्हा और हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हुमा शहीद हो गए, इन के अलावा और भी दोनों तरफ़ के आदमी काम आए। बसरा में आप ने 15 रोज़ कियाम फरमाया और फिर कूफ़ा तशरीफ़ ले गए।

आप के कूफ़ा पहुंचने के बाद हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु ने आप पर ख़ुरूज किया, उन के साथ शामी लश्कर था, कूफ़ा से हज़रत अली रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु भी बढ़े और सिप्फीन के मक़ाम पर कई रोज़ तक लड़ाई का सिलसिला जारी रहा, फिर यह जंग एक मुआहेदा पर ख़त्म हुई, तरफ़ैन के लोग अपने-अपने मक़ाम को वापस हो गए। हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु शाम को और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु कूफ़ा वापस चले गए।

जब आप कूफ़ा तशरीफ़ लाए तो एक जमाअत जिस को “ख़ारजी” कहा जाता है आप का साथ छोड़ कर अलग ही गई और आप की खिलाफत से इनकार करके لا حول ولا قوة الا بالله का नारा बुलंद किया, यहां तक कि आप से जंग करने के लिये लश्कर तैयार कर लिया, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु ने उनका सर कुचलने के लिये

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की सर करदगी में एक लश्कर रवाना फरमाया, तरफैन (दोनों गिरोह) में जंग हुई, खारजी शिकस्त खा कर कुछ तो अली मुरतज़ा के लश्कर में शामिल हो गए और कुछ भाग कर नहरवान चले गए और वहां पहुंच कर लूट मार शुरू कर दी, आखिर शेरे खुदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने वहां पहुंच कर उन को तहे तेग (क़त्ल) किया। (तारीख़ुल खुलफा)

खारजियों की साज़िश

तीन खारजी यानी अब्दुर रहमान बिन मुल्जिम, बरक बिन अब्दुल्लाह और अम्र बिन बुकैर मक्का मुअज़्ज़मा में जमा हुए और आपस में यह फैसला किया कि हम तीनों आदमी तीन अफराद हज़रत अली बिन अबी तालिब, मुआविया बिन अबी सुफियान और अम्र बिन आस को क़त्ल कर दें। चुनांचे इब्ने बल्जम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को, बरक ने हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को और अम्र बिन बुकैर ने हज़रत अम्र बिन अल-आस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को एक ही मुअय्यन तारीख़ पर क़त्ल करने का अहेद किया और यह तीनों बद बख़्त उन शहरों को रवाना हो गए जहां-जहां इन को अपने नामज़द करदा (किये हुए) शख्स को क़त्ल करना था। उन में सब से पहले इब्ने मुल्जिम कूफा पहुंचा, वहां खारजियों से राबता काइम करके अपना इरादा ज़ाहिर किया कि 17 रमज़ान 40 हिजरी की रात में हज़रत अली (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) को शहीद कर देगा।

इमाम सुददी फरमाते हैं कि इब्ने मुल्जिम एक खारजिया औरत पर आशिक हो गया था जिस का नाम क़ताम था उस ने अपना महर तीन हज़ार दिरहम, एक गुलाम एक बांदी और हज़रत अली (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) का क़त्ल रखा था। फरज़क़ शाइर ने अपने इन अशआर में इस की तरफ इशारा किया है।

فَلَمْ أَرَمَهْرًا سَاقَةً دُونَ سَاقَةٍ كَمَهْرٍ قَطَامٍ بَيْنَ غَيْرِ مُعْجَمٍ
ثَلَاثَةِ آلَافٍ وَعَبْدٌ وَفَيْسَةٌ وَضُرِبَ عَلَيَّ بِالْحُسَامِ الْمَصْمُومِ
فَلَمْ أَهْرَأْ عَلَى مِنْ عَلَيٍّ وَإِنْ غَلَا وَلَا تَفْكَ إِلَّا ذُنُوبَكَ إِنَّ بَلْعَمَ

यानी मैं ने किसी सखावत करने वाले को ऐसा महर देते नहीं देखा जैसा महर क़ताम का मुकर्रर हुआ, तीन हजार दिरहम, एक गुलाम, एक बांदी और हज़रते अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का क़त्ल, तो आप के क़त्ल से बढ़कर कोई महर नहीं हो सकता। और इब्ने मुल्जिम ने जो आप को धोके से क़त्ल किया तो इस से बढ़ कर कोई क़त्ल नहीं हो सकता।

आप की शहादत

हज़रत अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने 17 रमज़ानुल मुबाकर 40 हिजरी को अलस-सुबह (सुबह के वक़्त) बेदार होकर अपने बड़े साहिबज़ादे हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फरमाया आज रात ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ज़ियारत हुई, तो मैं ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! आप की उम्मत ने मेरे साथ कजरवी इख़्तियार की है और सख़्त नज़ाअ (झगड़ा) बरपा कर दिया है, हुज़ूर ने फरमाया कि तुम ज़ालिमों के लिये दुआ करो, तो मैं ने इस तरह दुआ की या इलाहल आलमीन! तू मुझे इन लोगों से बेहतर लोगों में पहुंचा दे और मेरी जगह इन लोगों पर ऐसा शख्स मुसल्लत कर दे जो बुरा हो। अभी आप यह बयान ही फरमा रहे थे कि इब्ने नबाह मोअज़्ज़िन आवाज़ दी अस्सलातु अस्सलातु, हज़रत अली नमाज़ पढ़ाने के लिये घर से चले, रास्ते में लोगों को नमाज़ के लिये आवाज़ दे देकर आप जगाते जाते थे कि इतने में इब्ने मुल्जिम आप के सामने आ गया और उस ने अचानक आप पर तल्वार का भर पूर वार किया, वार इतना सख़्त था कि आप की पेशानी कनपटी तक कट गई और तल्वार दिमाग़ पर जाकर ठहरी, शमशीर लगते ही आप ने फरमाया: فُتِكَ رَأْسِي يَا رَبِّ الْعَالَمِينَ यानी रब्बे क़अूबा की क़सम मैं कामयाब हो गया।

आप के ज़ख्मी होते ही चारों तरफ से लोग दौड़ पड़े और कातिल को पकड़ लिया। (तारीखुल खुलफा)

आप की वसियत

हज़रत उक्बा बिन अबी सहबा कहते हैं कि जब बदबख्त इब्ने मुल्जिम ने आप पर तल्वार का वार किया यानी आप ज़ख्मी हो गए तो हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रोते हुए आप की खिदमत में आए, आप ने उन को तसल्ली दी और फरमाया बेटे! मेरी चार बातों के साथ चार बातें याद रखना, हज़रत इमाम हसन ने अर्ज किया वह क्या हैं, फरमाइये, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इरशाद फरमाया: अव्वल सब से बड़ी तवंगरी (मालदारी) अक्ल की तवानाई है। दूसरे बेवकूफी से ज्यादा कोई मुफिलसी और तंगदस्ती नहीं। तीसरे गुरुर और घमंड सब से सख्त वहशत है। चौथे सब सं अज़ीम खुल्फ़ (आदत) करम है।

हज़रत इमाम हसन ने अर्ज किया कि दूसरी चार बातें भी बयान फरमाएं। आप ने इरशाद फरमाया कि अव्वल अहमक की सोहबत से बचो। इस लिये कि नफा पहुंचाने का इरादा करता है लेकिन नुकसान पहुंच जाता है। दूसरे झूटे से परहेज़ करो, इस लिये कि वह दूर को नज़्दीक और नज़्दीक को दूर कर देता है। तीसरे बखील से दूर रहो, इस लिये कि वह तुम से उन चीजों को छुड़ा देगा जिन की तुम को हाजत है। चौथे फाजिर से किनारा कश रहो, इस लिये कि वह तुम्हें थोड़ी सी चीज के बदले में फरोख्त कर डालेगा। (तारीखुल खुलफा)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ज़ख्मी होने के बावजूद जुमा व सनीचर तक बक़ैदे हयात रहे लेकिन इतवार के रोज़ आप की रूह बारगाहे अक्दस में परवाज़ कर गई। और यह भी रिवायत है कि 19 रमज़ान जुमा की शब में आप ज़ख्मी हुए और 21 रमज़ान शबे यक्शंबा (इतवार की रात) 40 हिजरी में आप की वफात हुई। **إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ** **إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ** इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि रजिऊन।

चार बरस, आठ माह, नौ दिन आप ने उमूरे ख़िलाफ़त को अंजाम दिया और 63 साल की उम्र में आप का विसाल हुआ। हज़रत इमाम हसन, हज़रत इमाम हुसैन और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम ने आप को गुस्त दिया और आप की नमाज़े जनाज़ा हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने पढ़ाई। आप के दफन से फारिग होने के बाद अमीरुल मोमिनीन के क़ातिल अब्दुर रहमान बिन मुल्जिम को हज़रत इमाम हसन ने क़त्ल कर दिया फिर उस के हाथ पैर काट कर एक टोकरे में डाल दिया और उस में आग लगा दी जिस से उस की लाश जल कर राख हो गई।

आप का मज़ारे मुबारक

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को रात के वक़्त दफन किया गया और एक मस्लहत से आप का मज़ार लोगों पर ज़ाहिर नहीं किया गया, इस लिये वह कहाँ है इस में अक्वाल मुख़्तलिफ हैं। अबू बकर बिन अयाश कहते हैं कि आप की क़ब्र शरीफ को इस लिये नहीं ज़ाहिर किया गया था कि ख़ारजी बद बख़्रा कहीं उस की भी बेहुर्मती न करें। शरीक कहते हैं कि आप के फ़र्ज़न्द हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने आप के जिस्मे मुबारक को दारुल अमारत कूफा से मदीना तैयिबा की तरफ मुन्तक़िल कर दिया था। मुबरद ने मुहम्मद बिन हबीब के हवाले से लिखा है कि एक क़ब्र से दूसरी क़ब्र में मुन्तक़िल की जाने वाली पहली नअ़श हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की थी। और इब्ने असाकिर सईद बिन अब्दुल अजीज़ से रिवायत करते हैं कि जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु शहीद हो गए तो आप के जिस्मे मुबारक को मदीना मुनव्वरा ले जाने लगे ताकि वहाँ रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के पहलू मुबारक में दफन करें, नअ़श एक ऊंट पर रखी हुई थी, रात का वक़्त था वह ऊंट रास्ते में किसी तरफ को भाग गया और उस का पता नहीं चला, इसी लिये अहले इराक़ कहते हैं कि आप बादलों में तशरीफ

फरमा हैं। बाज़ लोग कहते हैं कि तलाश व जुस्तुजू के बाद वह ऊंट सर ज़मीने तय में मिल गया और आप के जिस्मे मुबारक को उसी सर ज़मीन में दफन कर दिया गया।
(तारीखुल खुलफा:120)

आप की बीवियां और औलाद

हज़रत फातिमा ज़ह्रा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की वफात के बाद हज़रत अली ने मुख़ालिफ वक्ती में आठ औरतों से निकाह किया इस तरह आप की कुल नौ बीवियां हुईं जिन से 15 साहिब ज़ादगान और 17 साहिब ज़ादियां पैदा हुईं, उन सब के अस्माए मुबारका यह हैं:

बीवियां: हज़रत सैय्यिदा फातिमा, ख़ौला, लैला, उम्मुल बनीन, उम्मे वलद, अस्मा, उम्मे हबीब, उमामा, उम्मे सअद।

साहिब ज़ादगान: हसन, हुसैन, मोहसिन, मुहम्मद अकबर (अलमारुफ मुहम्मद बिन हनफिय्या), अब्दुल्लाह अकबर, अबू बकर, अब्बास अकबर, उस्मान, जाफर, अब्दुल्लाह असगर, मुहम्मद औसत, यहया, औन, उमर अकबर, मुहम्मद असगर।

साहिब ज़ादियां: उम्मे कुल्सूम, ज़ैनबुल कुबरा, रुकैया, उम्मुल हसन, रमलतुल कुबरा, उम्मे हानी, मैमूना, रमलतुस सुगरा, उम्मे कुल्सूम सुगरा, फातिमा, उमामा, ख़दीजा, उम्मुल ख़ैर, उम्मे सलमा, उम्मे जाफर, जुमाना, तकिया। *रिज़्यानुल्लाहि तआला अलैहि अज्मईन।*

आप के अक्वाले ज़र्री

आप के बहुत से अक्वाल हैं जो आबे ज़र से लिखने के काबिल हैं, उन में से चन्द यहां पेश किये जाते हैं।

① इल्म माल से बेहतर है। इल्म तेरी हिफाज़त करता है और तू माल की। इल्म हाकिम है और माल महकूम। माल खर्च करने से घटता है और इल्म खर्च करने से बढ़ता है।

② आलिम वही शख्स है जो इल्म पर अमल भी करे और अपने अमल

को इल्म के मुताबिक बनाए।

- ③ हलाल की ख्वाहिश उसी शख्स में पैदा होती है जो हराम कमाई छोड़ने की मुकम्मल कोशिश करता है।
- ④ तक्दीर बहुत गहरा समन्दर है उस में गोता न लगाओ।
- ⑤ खुश अख्लाकी बेहतरीन दोस्त है और अदब बेहतरीन मीरास है।
- ⑥ जाहिलों की दोस्ती से बचो कि बहुत से अकलमंदों को उन्होंने ने तबाह कर दिया।
- ⑦ अपना राज किसी पर जाहिर न करो कि हर खैर ख्वाह के लिये कोई खैर ख्वाह होता है।
- ⑧ इन्साफ करने वाले को चाहिये जो अपने लिये पसंद करे वही दूसरों के लिये भी पसंद करे।

صلی اللہ علی النبی الامی والہ صلی اللہ علیہ وسلم صلاۃ وسلاما علیک یا رسول اللہ

सल्लल्लाहु अलन् नबियिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम सलातुव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।



फज़ाइले अहले बैत

रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम

الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين وعلى اله الطيبين الطاهرين - فاعوذ بالله من الشيطان الرجيم بسم الله الرحمن الرحيم- إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا- (ب: २२, ع: १) صَدَقَ اللَّهُ مَوْلَانَا الْعَظِيمَ وَصَدَقَ رَسُولُهُ النَّبِيُّ الْكَرِيمَ وَنَحْنُ عَلَى ذَلِكَ لِمَنِ الشَّاهِدِينَ وَالشَّاكِرِينَ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ-

एक मर्तबा हम और आप सब लोग मिल कर बुलंद आवाज़ से मक्का के सरकार मदीना के ताजदार दोनों आलम के मालिक व मुख्तार जनाब अहमदे मुज्ज्ता मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दरबारे दुरर बार में दुरूदो-सलाम का नज़्ज़ाना और हदिया पेश करें।

صلى الله على النبي الامن واله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاما عليك يا رسول الله

सल्लल्लाहु अज़लन् नबियिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि
व सल्लम सलातुव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

आज हम अहले बैत किराम अला नबियिना अलैहिमुस सलातु वस्सलाम के मुतअल्लिक बयान करने की सज़ादत हासिल करना चाहते हैं। लिहाज़ा हम्द व सलात और आयते करीमा व दुरूद शरीफ पढ़ने की बरकत हासिल करने के बाद हम आप के सामने अहले बैत की शान में अज़ला हज़रत इमाम अहले सुन्नत फाज़िले बैरलवी अलैहिर रहमत वरिज़वान के भाई हज़रत हसन खां साहब रहमतुल्लाहि अलैहि की लिखी हुई एक मन्क़बत पेश करते हैं उसे समाज़त फरमाएं मगर इस से पहले एक मर्तबा और बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़ें.....::

किस ज़बान से हो मदह ख़्याने अहले बैत

मदह गोए मुस्तफा है मदह ख़्याने अहले बैत

उन की पाकी का खुदाएं पाक करता है बयां
 "आयए तत्हीर" से ज़ाहिर है शाने अहले बैत
 उन के घर में बे इजाज़त जिब्रील आते नहीं
 कद्र वाले जानते हैं इज्जो-शाने अहले बैत
 रज़म का मैदां बना है जल्वागाहे हुस्नो-इश्क
 करबला में हो रहा है इम्तिहाने अहले बैत
 फूल ज़ख्मों के खिलाए हैं हवाए दोस्त ने
 खून से सींचा गया है गुलिस्ताने अहले बैत
 हूरें करती हैं उरूसाने शहादत का सिंगार
 खूब रू दुल्हा बना है हर जवाने अहले बैत
 ऐ शबाबे फस्ले गुल यह चल गई कैसी हवा
 कट रहा है लहलहाता बोस्ताने अहले बैत
 किस शकी है हुक्ूमत हाए क्या अंधेर है
 दिन दहाड़े लुट रहा है कारवाने अहले बैत
 फातिमा के लाडले का आखिरी दीदार है
 हथ्र का हंगामा बरपा है मियाने अहले बैत
 वक्ते रुख्सत कह रहा है खाक में मिलता सुहाग
 लो सलाम आखिरी ऐ बेवगाने अहले बैत
 घर लुटाना सर कटाना कोई तुझ से सीख जाए
 जाने आलम हो फिदा ऐ खानदाने अहले बैत
 बे अदब गुस्ताख फिरके को सुना दे ऐ 'हसन'
 यूं कहा करते हैं सुन्नी दास्ताने अहले बैत

एक मर्तबा फिर बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ पढ़े: اللهم صل على سيدنا
 ومولانا محمد وآله واصحابه وبارك وسلم
 मौलाना मुहम्मदिवं व आलिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम।

बिरादराने मिल्लत! शुरू में जिस आयते करीमा के पढ़ने का शर्फ हम ने हासिल किया है यानी: **إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ** इस का तर्जमा यह है: ऐ अहले बैत यानी ऐ नबी के घर वालो! अल्लाह तआला तो यही चाहता है कि तुम से हर नापाकी दूर फरमा दे और तुम्हें पाक करके खूब सुथरा कर दे।

इस आयते करीमा में सरकारे आजम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के अहले बैत किराम की अजमत व फजीलत और उन के दर्जात और मरातिब का वाज़ेह तौर पर बयान है।

हज़रत इमाम अबू जाफर मुहम्मद बिन जरीर तबरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस आयते करीमा की तपसीर में फरमाते हैं कि ऐ आले मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) अल्लाह तआला चाहता है कि तुम से बुरी बातों और फुहश चीज़ों को दूर रखे और तुम्हें गुनाहों के मैल कुचैल से साफ रखे। (बरकाते आले रसूल तर्जमा अश्शफ़ुल मोवब्बद लिआलि मुहम्मद लिल-अल्लामा अन-नबहानी रहमतुल्लाहि अलैहि:31)

और सईद बिन क़तादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है उन्होंने ने फरमाया कि इस आयते करीमा से अहले बैत मुराद हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने हर बुराई से पाक रखा और अपनी मख़सूस रहमत से नवाज़े।
(बरकाते आले रसूल:31)

हज़रत अल्लामा इब्ने अतिया फरमाते हैं कि इस आयते मुबारका में जो रिज्स का लफज़ है वह गुनाह, अज़ाब, निजासतों और नकाइस के मज़ानी पर बोला जाता है। तो अल्लाह तआला ने यह सारी चीज़ें अपने प्यारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के अहले बैत से दूर फरमा दीं।
(बरकाते आले रसूल:32)

और इमाम जुहरी ने फरमाया कि रिज्स नापसंदीदा चीज़ को कहते हैं, चाहे वह अमल हो या ग़ैर अमल। तो मतलब यह हुआ कि अल्लाह तआला ने अहले बैत किराम से हर किस्म की ना पसंदीदा चीज़ें दूर फरमा दीं।
(बरकाते आले रसूल:32)

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की जानिब से तसरीह हो गई कि आयते मुबारका में अहले बैत से मुराद पंजतन पाक हैं।

(बरकाते आले रसूल:35)

बहर हाल अहले बैत से उम्महातुल मोमिनीन मुराद लेने वाले और पंजतन पाक मुराद लेने वाले दोनों गिरोह के पास दलाइल हैं लिहाजा जुमहूर उलमाए उम्मत ने फरमाया कि आयते मुबारका में अहले बैत से उम्महातुल मोमिनीन और पंजतन पाक दोनों मुराद हैं। और यह उन्होंने ने इस लिये फरमाया ताकि सारे दलाइल पर अमल हो जाए।

इस सिलसिले में हज़रत सदरुल अफाज़िल मौलाना सैय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने सवानेहे कर्बला में बहुत खूब लिखा है, वह फरमाते हैं कि दौलत सराए अक्बदस में सुकूनत रखने वाले इस में दाखिल हैं क्यों कि वहीं इसके मुखातब हैं, चूंकि अहले बैत नसब का मुराद होना मख़फ़ी था इस लिये आं सरवरे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपने इस फेअले मुबारक से (यानी चादर में लिप्टा कर) बयान फरमा दिया कि मुराद अहले बैत से आम हैं, ख्वाह बैते मस्कन के अहल हों जैसे कि अज़्वाज या बैते नसब के अहल बनी हाशिम व मुत्तलिब।

चुनांचे इमाम सअलबी ने फरमाया कि बाज़ हज़रात ने कहा अहले बैत से मुराद बनी हाशिम हैं। इस लिये कि बैत से मुराद नसब है। लिहाजा हज़रत अब्बास, हुज़ूर के दूसरे मुसलमान चचा और चचा जाद भाई सब अहले बैत में से होंगे। यह हज़रत जैद बिन अक़्कम रज़ियल्लाह तआला अन्हु का कौल है। जैसा कि तफ़्सीरे ख़ाज़िन वगैरा में है।

(बरकाते आले रसूल:41)

और अल्लामा ख़तीब ने अपनी तफ़्सीर में इस से भी ज़्यादा आम फरमाया। वह लिखते हैं कि अहले बैत में इख़िलाफ़ है और बेहतर वह है जो इमाम बक़ाई ने फरमाया कि अहले बैत वह सब हज़रात हैं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से ख़ास वाबस्तगी

रखते हैं। मर्द, औरतें अज्वाजे मुतहहरात, कनीजें और करीबी रिश्तेदार। इन में से जो शरूख ज़्यादा करीब होगा और रसूले अकरम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम से खास तअ़ल्लुक़ रखने वाला होगा, वह मुराद होने के ज़्यादा लाइक़ है। (बरकाते आले रसूल:41)

हज़रत इमाम बक़ाई के कौल की ताईद हदीस शरीफ से भी होती है कि तबरानी वगैरा कई मोहदिसीन की रिवायत में यूँ हैं कि हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हा ने चादर उठा कर अपना सर अन्दर दाख़िल कर लिया और अर्ज़ किया या रसूल्लाह! मैं भी आप लोगों के साथ हूँ तो हुज़ूर ने दो मर्तबा फरमाया: **أَنْتِ عَلَيَّ خَيْرٌ** यानी तुम भलाई पर हो। (बरकाते आले रसूल:38)

और बैहकी वगैरा की रिवायत में है कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली, हज़रत फातिमा और हसनैन रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हुम को अपनी काली कमली में लिप्टाया और आयते तत्हीर तिलावत फरमाई तो हज़रत वासिला बिन अल-अस्क़अ रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु जो अस्थाबे सुफ़फ़ा में से हैं, उन्होंने ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं भी आप के अहल में से हूँ तो हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **وَأَنْتِ مِنْ أَهْلِي** यानी हाँ तुम भी मेरे अहल में से हो। और एक रिवायत में है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **عَلَيْكُمْ يَوْمَئِذٍ** यानी सलमान हम में से अहले बैत में से हैं। (बरकाते आले रसूल:42)

इसी लिये इमामुल आरिफ़ीन शेख़े अक़बर मुहीउद्दीन बिन अरबी रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु फुतूहाते मक्किया के उन्नीसवें बाब में तहरीर फरमाते हैं कि कियामत तक सादाते किराम, हज़रत फातिमतुज़्ज़हारा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हा की औलाद और जो अहले बैत में से हैं मसलन हज़रत सलमान फारसी रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु सब इस ख़ासत के हुकम में दाख़िल हैं।

हज़रत अल्लामा नब्बहानी रहमतुल्लाहि अलैह तहरीर फरमाते हैं कि

शेखे अक्बर सूफिया के इमाम हैं, उन का इरशाद हुज्जत की हैसियत रखता है। (अशरफुल मोअब्बद लिआलि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम:13)

एक बार हम सब मिल कर बुलंद आवाज से रहमते आलम नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बारगाहे बेकस पनाह में दुखदो-सलाम का नज़ाना और हदिया पेश करें।

صلى الله على النبي الامى واله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاما عليك يا رسول الله

सल्लल्लाहु अलन् नबियिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम सलातुव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सारे अहले बैत चाहे अहले बैत नसब हों या अहले बैत सुक्ना या अहले बैत विलादत या और किसी और को अहले बैत में शामिल कर लिया गया हो सब इज्जत व अज़मत वाले हैं लेकिन हज़ूर जिन को हर खास मौका पर अलाहेदा करके फरमाते हैं वह यही चार नुफूसे कुदसिया हज़रत अली, हज़रत फातिमा, हज़रत हसन, और हज़रत हुसैन हैं रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम इसी लिये अहले बैत का लफ्ज़ इन्हीं चार हज़रात के लिये शाए व मशहूर है। अशअतुल लम्आत:4/681 में है: “इत्लाक़े अहले बैत बरीं चहार तने पाक शाए व मशहूर अस्त”।

अब आप हज़रात एक आयते करीमा और मुलाहेज़ा फरमा लें जिस से अहले बैते किराम की फज़ीलत व मंज़िलत ज़ाहिर होती है। पारा3 रुकूअ 13 में है: فَمَنْ حَاجَّكَ فِى يَوْمٍ مِّنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَ यानी ऐ महबूब! फिर जो लोग तुम से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में झगड़ा करें बाद इसके कि तुम्हारे पास उस का इल्म आ चुका है तो उन से फरमा दो कि आओ हम बुलाएं अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को और अपनी औरतों और तुम्हारी औरतों को और अपनी जानों और तुम्हारी जानों, को फिर हम मुबाहला करें यानी गिड़ गिड़ा कर दुआ मांगें तो झूठों पर अल्लाह की लअनत डालें।

इस आयते मुबारका का शाने नुजूल यह है कि नज़्ज़ान के ईसाइयों का एक वफ़द रसूले काइनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मुनाज़रा करने के लिये मदीना तैयिबा आया और हुज़ूर से कहा कि आप गुमान करते हैं कि ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के बन्दे हैं, आप ने फरमाया हां, बेशक वह अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल और उस के कलिमा हैं जो कुंवारी मरयम की तरफ इल्फ़ा किये गए, यह सुन कर ईसाई बहुत गुस्से में हुए और कहने लगे कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम)! क्या आप ने कभी बे बाप इंसान देखा है? इस से उन का मतलब यह था कि हज़रत ईसा अल्लाह के बेटे हैं (मआज़ल्लाह) हुज़ूर अलैहिस् सलातु वस्सलाम ने फरमाया कि हज़रत ईसा तो सिर्फ़ बग़ैर बाप ही के पैदा किये गए और हज़रत आदम अलैहिस् सलातु वस्सलाम तो मां और बाप दोनों के बग़ैर पैदा किये गए तो जब उन्हें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का बन्दा मानते हो तो हज़रत ईसा अलैहिस् सलाम को अल्लाह का बन्दा मानने में क्या तअज़्जुब है?

सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने वाज़ेह दलील के साथ हक़ को बयान फरमाया मगर ईसाई बराबर झगड़ते रहे और अपनी मुआनिदाना रविश से बाज़ न आए तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने यह आयते करीमा नाज़िल फरमाई और नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को हुक्म फरमाया कि ईसाइयों को मुबाहला की दावत दो।

जब रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के फरमान के मुताबिक़ नज़्ज़ान के ईसाइयों को मुबाहला की दावत दी और आयते करीमा पढ़ कर सुनाई तो ईसाई कहने लगे कि हम ग़ौर और मश्वरा कर लें फिर कल आप को जवाब देंगे, जब वह लोग जमा हुए तो उन्होंने ने अपने सब से बड़े पादरी और साहिबुर राय शख़्स आकिब से कहा कि ऐ अब्दुल मसीह! इस मामले में आप की क्या राय है? उस ने कहा ऐ जमाअते नसारा! तुम पहचान चुके हो

कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम) नबीए मुर्सल ज़रूर हैं तो अगर तुम ने उन से मुबाहला किया तो सब हलाक हो जाओगे, अब अगर ईसाइयत पर काइम रहना चाहते हो तो उन्हें छोड़ दो और घर को लौट चलो।

यह मश्वरा करने के बाद ईसाई हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हुए तो उन्होंने ने देखा कि हुज़ूर की गोद में इमाम हुसैन हैं और दस्ते मुबारक में इमाम हसन का हाथ है और हज़रत अली व हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हुमा हुज़ूर के पीछे हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम इन लोगों से फरमा रहे हैं कि जब मैं दुआ करूं तो तुम सब आमीन कहना, नज़ान के सब से बड़े पादरी अब्दुल मसीह ने जब इन हज़रात को देखा तो कहने लगा ऐ जमाअते नसारा! اِنِّیْ لَارِیُّ وَحُوْمَا لَوَسَّوْا اللّٰهَ اَنْ یُّرِیْلَ خِیْلًا مِّنْ مَّکَانِهِ یَانِیْ بَیْشَکِّ مِّنْ اِیْسَیْ यानी बेशक मैं ऐसे चेहरे देख रहा हूं कि अगर यह लोग अल्लाह तअ़ाला से पहाड़ को हटाने की दुआ करें तो अल्लाह तअ़ाला पहाड़ को उस की जगह से हटा दे। (तफसीरे ख़ाज़िन:1/360)

फिर पादरी ने कहा कि अगर इन से मुबाहला करोगे तो हलाक हो जाओगे और कियामत तक रूप ज़मीन पर कोई ईसाई बाकी न रहेगा।

ईसाइयों ने पादरी की बात मान ली और ज़िज़्या देना मन्ज़ूर कर लिया मगर मुबाहला के लिये हरगिज़ तैयार न हुए। रसूले काइनात सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कसम है उस ज़ात की कि जिस के कब्ज़ए कुद़त में मेरी जान है कि नज़ान वालों पर अज़ाब बिल्कुल करीब आ चुका था, अगर वह हम से मुबाहला करते तो बन्दरों और सुवरो की सूरत में मसूख कर दिये जाते और अज़ाबे इलाही की आग से जंगल जल जाते। नज़ान और वहां के रहने वाले चरिन्द व परिन्द तक नेस्त व नाबूद हो जाते और एक साल की मुद्दत में तमाम रूप ज़मीन के ईसाई हलाक व बरबाद हो जाते। (तफसीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान)

गौर कीजिये कि फरमाने खुदावन्दी के मुताबिक ईसाइयों से तय

यह हुआ था कि तुम अपने बेटों को लेकर निकलो और हम अपने बेटों को। तुम अपनी औरतों को लेकर मैदान में आओ और हम अपनी औरतों को और तुम खुद भी आओ और हम भी आएँ। इस मौके पर सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने पूरी दुनियाए इस्लाम में से जिन पाक और बरगुजीदा हस्तियों का इन्तिखाब फरमाया वह हज़रत अली, हज़रत फातिमा, हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन हैं रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम।

तिर्मिज़ी शरीफ की हदीस है हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के बारे में इरशाद फरमाया: **هَٰذَا بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ** यानी यह दोनों मेरे बेटे हैं। (मिशकात शरीफ:570)

यही वजह है कि जब मुबाहला के लिये अपने बेटों को लेकर मैदान में निकलना हुआ तो हसन करीमैन को लेकर आए और इस सबब से हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा आज तक इन्हे रसूलुल्लाह कहे जाते हैं और कियामत तक ऐसे ही कहे जायेंगे।

मुस्लिम शरीफ की हदीस है हज़रत सअद बिन वक्कास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो अशरए मुबशशरा में हैं उन का बयान है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जब इन हज़रात को हमूराह लेकर मुबाहला के लिये मकान से बाहर निकले तो यह फरमाया: **لَهُم** **هَٰذَا** यानी ऐ अल्लाह! यह लोग मेरे अहले बैत हैं।

(मिशकात शरीफ:568)

एक मर्तबा फिर आप हज़रात निहायत खुलूस व मुहब्बत के साथ सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उन की व्याल व अस्हाब और अहले बैते किराम पर बुलंद आवाज़ से दुरूदो-सलाम का नज़ाना पेश करें।

صلى الله على النبي الامى واله صلى الله عليه وسلم صلا وسلاما عليك يا رسول الله

सल्लल्लाहु अलन् नबियिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम सलातुर्व व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह ।

अहले बैते किराम की शान में और भी आयाते मुबारका नाज़िल हुई हैं। तफ्सीरे खाज़िन और मआलिमुत तंज़ील वगैरा में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा बीमार हुए तो सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और सहाबए किराम अयादत के लिये गए, किसी ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को यह मश्वरा दिया कि आप नज़्र मानें, अगर खुदाए तआला उन को शिफा अता फरमाए तो नज़्र पूरी कर दें। हज़रत अली ने तीन रोज़े रखने की मिन्नत मानी। इसी तरह हज़रत सैय्यिदा फातिमा और आप की कनीज़ फिज़्ज़ा ने भी तीन-तीन रोज़े रखने की नज़्र मानी, रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम। खुदाए अज़्ज़ व जल्ल ने हज़राते हसनैन को शिफा अता फरमाई, अब नज़्र पूरी करने का वक़्त आया, सब लोगों ने रोज़े रखे, मगर काशानए हैदरी में कोई चीज़ रोज़ा इफ़्तार करने के लिये न थी, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक यहूदी के यहां से थोड़ा जौ कर्ज के तौर पर बिलऐवज़ उज़्रत लाए, जौ का एक तिहाई हिस्सा पीसा गया और शाम के वक़्त रोटियां तैयार की गईं। जब इफ़्तार का वक़्त आया और रोटियां खाने के लिये सामने रखी गईं तो अचानक दरवाज़े पर एक शख्स ने आवाज़ दी कि ऐ अहले बैते रसूलल्लाह! मैं मिस्कीन हूं, भूका हूं, कुछ अल्लाह के नाम पर दीजिये। तो सब रोटियां उसे दे दी गईं और खुद सादा पानी पी-पी कर सब लोगों ने रोज़ा इफ़्तार किया। फिर दूसरे दिन एक तिहाई जौ की रोटियां बनाई गईं और जब अहले बैते किराम इफ़्तार के लिये बैठे तो फिर दरवाज़े पर दस्तक हुई, आवाज़ आई कि ऐ रसूलल्लाह के घराने वालो! मैं भूका हूं, यतीम हूं तो दूसरे रोज़ भी सब रोटियां उठा कर उसे दे दी गईं और सिर्फ पानी से रोज़ा

इफ्तितार कर लिया गया। तीसरे दिन फिर रोज़ा रखा गया और मा बकिया तिहाई जौ की रोटियां बनाई गई और जब इफ्तितार के वक़्त सब लोग खाने के लिये बैठे तो फिर एक साइल ने आवाज़ दी कि ऐ अहले बैते किराम! मैं असीर हूं, भूका हूं, तो तीसरे दिन भी जब कुल रोटियां उसे दे दी गई और सादा पानी पी-पी कर रोज़ा इफ्तितार किया गया तो अहले बैते रसूलुल्लाह की शान में यह आयाते मुबारका नाज़िल हुई:

وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلَى حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا إِذَا تَطْعَمُهُمْ يُؤْتِيهِمُ اللَّهُ أَثَرَهُ بِنِعْمَةِ رَبِّهِمْ إِذْ لَا تُشْكِرُ

और वह लोग खाना खिलाते हैं उस की मुहब्बत पर मिसकीन, यतीम और कैदी को। और उन से कहते हैं कि हम तुम्हें अल्लाह की रज़ा व खुश्नूदी के लिये खिलाते हैं। न हम तुम से कोई बदला चाहते हैं और न शुक्रिया। (पारा:29, रूकूअ:18)

अल्लाह! अल्लाह! यह है सख़ावत अहले बैते रसूलुल्लाह की जिस की मिसाल दुनिया में नहीं मिलती कि तीन दिन मुसलसल सिर्फ पानी पी-पी कर रोज़ा इफ्तितार करते हैं मगर साइलों को अपने दरवाज़े से महरूम नहीं फरमाते और उन पर यह बात भी वाज़ेह कर देते हैं कि इस भलाई का वह उन से कोई बदला नहीं तलब करेंगे बल्कि वह यह भी नहीं चाहते कि उन का शुक्रिया अदा किया जाए और लोगों के सामने उन की सख़ावत का चर्चा किया जाए इस लिये कि यह काम उन्होंने ने ख़ालिसन लि-वज्हिल्लाह सिर्फ अपने रब्बे करीम की रज़ा और खुश्नूदी हासिल करने के लिये किया है।

अहले बैत और अहादीसे करीमा

अहले बैते किराम की तारीफ व तौसीफ और उन की मदह व सताइश में सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बहुत सी अहादीस वारिद हैं, मुस्लिम शरीफ में है, सहाबिए रसूल हज़रत ज़ैद बिन अर्कम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि एक रोज़ रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मक्का मुअज़्ज़मा

और मदीना तैय्यिबा के दरमियान (मकामे जोहफा में) ग़दीरे खुम के पास खड़े होकर खुल्वा फरमाया तो पहले आप ने अल्लाह तआला की हम्दो-सना बयान की फिर आप ने हम लोगों को वअज़ो-नसीहत फरमाई उस के बाद आप ने इरशाद फरमाया। (अश्अतुल लम्आत:4/685 में है कि ग़दीर हीज़ आब व खुम नामे आं मौज़ू अस्त।)

ऐ लोगो! मैं इंसान हूँ, करीब है कि मेरे रब का भेजा हुआ फिरिश्ता यानी मलकुल मौत मेरे पास आए तो मैं खुदाए तआला के हुक्म को कबूल करूँ وَأَسْأَلُكُمْ الشَّفَاقِينَ और मैं तुम में दो नफीस और गरां कद्र चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ أُولَئِكَ كِتَابُ الْهُدَى وَالنُّورِ उन में से पहली चीज़ अल्लाह की किताब यानी कुरआन मजीद है जिस में हिदायत और नूर है तो खुदाए तआला की किताब पर अमल करो और उसे मज़बूती से थाम लो।

रावीए हदीस हज़रत ज़ैद बिन अर्कम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने कुरआने पाक के बारे में लोगों को उभारा और रग़बत दिलाई फिर उस के बाद आप ने इरशाद फरमाया: وَأَمَلْتُ بِكُمْ اللَّهُ فِي أَهْلِ بَيْتِي أَذْكُرْكُمْ اللَّهُ فِي أَهْلِ بَيْتِي यानी और दूसरी गरां कद्र चीज़ मेरे अहले बैत हैं, मैं तुम्हें अहले बैत के बारे में अल्लाह की याद दिलाता हूँ और उस से डराता हूँ। और इस जुम्ला को हुज़ूर ने दो बार फरमाया। मतलब यह है कि मैं ताकीद के साथ तुम लोगों को वसियत करता हूँ कि मेरे अहले बैत के बारे में अल्लाह तआला से डरो उन के हक की अदाइगी में हरगिज़ कोताही न करो। (मिशकात शरीफ:568)

और तिर्मिज़ी शरीफ में है हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैं ने हज्जतुल विदाअ में अरफा के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस हाल में देखा कि आप ऊंटनी पर सवार थे और खुल्वा दे रहे थे, मैं ने सुना आप यह फरमा रहे थे: يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي فَرَكْتُكُمْ مَالًا أَحْلَلْتُمْ بِهِ لَنْ تَخْلَوْا كِتَابَ اللَّهِ وَعِزَّتِي أَهْلُ بَيْتِي यानी ऐ लोगो! मैं

ने तुम्हारे दरमियान वह चीज़ छोड़ी है कि अगर तुम उस को पकड़े रहोगे तो कभी गुम्राह न होगे और वह चीज़ एक तो अल्लाह की किताब है और दूसरे मेरी औलाद व जुरियत मेरे अहले बैत।

(मिशकात शरीफ:569)

और तबरानी शरीफ में रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: لَا يُؤْمِنُ عَبْدٌ حَتَّىٰ أَكُونَ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ نَفْسِهِ وَتَكُونَ عِزَّتِي أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ دِينِهِ यांनी कोई बन्दा मोमिने कामिल नहीं हो सकता जब तक कि मुझे अपनी जान से, मेरी औलाद (हसनैन वगैरा) को अपनी औलाद से, मेरे अहल को अपने अहल से और मेरी जात को अपनी जात से ज़्यादा महबूब न रखे। (अशशर्फुल मोअब्बद:85)

और इमामे अहमद रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के हाथों को पकड़ कर फरमाया: مَنْ أَحَبَّنِي وَأَحَبَّ هَاتَيْنِ وَأَتَمَّ یاंनी जिस ने मुझ से मुहब्बत रखी और इन दोनों से और इन के वालिदैन से मुहब्बत रखी तो वह कियामत के दिन मेरे साथ मेरे दर्जा में होगा। (अशशर्फुल मोअब्बद:86)

यांनी पंजतन पाक से मुहब्बत रखने वाला बसूरते खिदमतगार हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दर्जा में दिखाई देगा, यह मतलब नहीं कि उसका मक़ाम भी वही होगा।

और हज़रत अबू ज़र्र रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कअूबा शरीफ का दरवाज़ा पकड़ कर फरमाया कि मैं ने नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को फरमाते हुए यह सुना है कि: لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ یاंनी आगाह हो जाओ कि मेरे अहले बैत तुम लोगों के लिये नूह (अलैहिस्सलाम) की कश्ती के मानिन्द हैं, जो शख्स कश्ती में सवार हुआ उस ने नजात पाई और जो कश्ती में सवार होने से पीछे रह गया वह हलाक हुआ।

(मिशकात शरीफ:573)

और हजरत उमर फारूक रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया: **أَصْحَابِي كَالنُّحُومِ فَبِأَيِّهِمْ أَتَّخِذْتُمْ أَخَذْتُمْ** यानी मेरे सहाबा सितारों के मानिन्द हैं, तो उन में से तुम जिस की इक्तिदा करोगे हिदायत पाओगे। (मिशकात शरीफ:554)

हजरत अल्लामा फख्रुद्दीन राजी अलैहिर रहमत वर-रिज्वा न फरमाते हैं कि बिहम्-दिल्लाहि तआला हम अहले सुन्नत व जमाअत मुहब्बते अहले बैत की कश्ती पर सवार हैं और हिदायत के चमकते हुए सितारे सहाबए किराम रिज्वानुल्लाहि तआला अलैहिम अज्मईन से हिदायत पाए। लिहाजा हम लोग कियामत की हवल नाकियों से और जहन्नम के अज़ाब से महफूज रहेंगे। (मिर्कात शरह मिशकात शरीफ:5/610)

मतलब यह है कि जो लोग मुहब्बते अहले बैत की कश्ती में सवार नहीं हुए जैसे खारजी कि उन्होंने ने मुहब्बत के बजाए अहले बैत से दुश्मनी की तो वह हलाक हो गए और राफज़ी जो उस कश्ती में सवार तो हुए मगर हिदायत के सितारे सहाबए किराम रजियल्लाहु तआला अन्हुम से हिदायत नहीं हासिल किये तो वह भी कुफ़्र व ज़लालत (गुमराही) की तारीकी में खो गए।

और हदीसे सहीह में है जिसे बहुत से अहले सुन्नत ने रिवायत किया है कि जब अबू लहब की साहिब जादी मक्का मुअज़्ज़मा से हिज़्रत करके मदीना तैयिबा तशरीफ लाई तो कुछ लोगों ने उन से कहा कि तुम्हारी हिज़्रत तुम्हें बेनयाज़ नहीं करेगी इस लिये कि तुम जहन्नम के ईधन की बेटी हो, उन्होंने ने यह बात रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से बयान की तो आप बहुत सख्त नाराज़ हुए फिर मिम्बर पर रौनक अफ़रोज़ हुए और फरमाया: **سَابِلُ أَقْوَامٍ يُؤْفِكُنِي فِي نَسَبِي** यानी उन लोगों का क्या हाल है जो मुझे मेरे नसब और मेरे रिश्तेदारों के बारे में अज़िय्यत (तक्लीफ) देते हैं, ख़बरदार! जिस ने मेरे नसब और रिश्तेदारों

को अज़िय्यत दी उस ने मुझे अज़िय्यत दी और जिस ने मुझे अज़िय्यत दी उस ने अल्लाह तआला को अज़िय्यत दी। (बरकाते आले रसूल:257)

और तबरानी व हाकिम हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि रसले काइनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **لَوْ أَنَّ رَجُلًا صَعِدَ بَيْنَ الرُّكْنِ وَالْمَقَامِ فَصَلَّى وَصَامَ ثُمَّ مَاتَ** यानी अगर कोई शख्स बैतुल्लाह शरीफ के एक गोशे और मकामे इब्राहीम के दरमियान चला जाए और नमाज़ पढ़े और रोज़े रखे फिर वह अहले बैत की दुश्मनी पर मर जाए तो वह जहन्नम में जाएगा। (अश्शफ़ुल मोअब्बद:92)

अहले बैत की दुश्मनी से खुदा की पनाह कि बैतुल्लाह शरीफ के साथ में मकामे इब्राहीम जैसी मुतबर्क जगह पर नमाज़ें पढ़ने वाला और रोज़े रखने वाला भी अगर अहले बैते रसूलुल्लाह से दुश्मनी रखता है तो वह भी जहन्नम का ईंधन बनेगा और कोई भी नेक अमल उसे खुदा के अज़ाब से नहीं बचा सकेगा। **अल्-इयाजु बिल्लाह**

एक मर्तबा फिर आप हज़रात निहायत अकीदत व मुहब्बत के साथ आंकाए दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उन की आल व अस्हाब व अहले बैत पर दुरुदो-सलाम की डालियां निछावर करें

صلى الله على النبي الامى واله صلى الله عليه وسلم صلا وسلاما عليك يا رسول الله
सल्लल्लाहु अलन् नबिय्यिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि
व सल्लम सलातुव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

अहले बैत और अकाबिरीन सलफ व ख़लफ के इरशादात

अकाबिरीन सलफ व ख़लफ रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अज़्मईन अहले बैत रसूल की तारीफ व तौसीफ में हमेशा रुतबुल लिसान रहे, लोगों को उन से मुहब्बत रखने की ताकीद फरमाते रहे और खुद उन से बेइन्तिहा मुहब्बत रखते थे।

इस उम्मत के सैयिदुल अकाबिरीन हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इरशाद फरमाते हैं कि: **جِلَّةُ قَرَابَةِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى**

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ صَلَوةٍ قَرَأْتُ يानी रसूले अकरम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम के रिश्तेदारों की खिदमत करना मुझे अपने रिश्ते दारों की सिला रहमी से ज़्यादा महबूब है। (अशशर्फुल मोअब्बद:87)

और अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु जो जलीलुल क़द्र सहाबी और साबिकीनल अब्वलीन में से हैं वह फरमाते हैं: حُبِّي يानी आले रसूल की एक दिन की मुहब्बत एक साल की इबादत से बेहतर है। (अशशर्फुल मोअब्बद:85)

सहाबिए रसूल के इस कौल से मालूम हुआ कि जो शख्स पूरी जिंदगी अहले बैत की मुहब्बत में गुज़ारेगा वह क़ियामत के दिन अज़ीम खूबियों वाला होगा।

हज़रत अल्लामा यूसुफ इस्माईल बिन नब्बहानी रहमतुल्लाहि तअ़ाला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु हज़रत इब्राहीम बिन अब्दुल्लाह महज़ बिन हसन बिन मुसन्ना बिन हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हुम की हिमायत की और लोगों को फत्वा दिया कि लाज़मी तौर पर उन के साथ और उन के भाई मुहम्मद के साथ रहें। कहते हैं कि इमामे आज़म रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु की कैदो-बन्द अस्ल में इसी बिना पर थी अगर्वे ज़ाहिर में सबब यह था कि उन्होंने ने काज़ी का मन्सब क़बूल करने से इनकार कर दिया था। (अशशर्फुल मोअब्बद:88)

और रिवायत है कि जाफर बिन सुलैमान ने जब इमामे मालिक रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु को कोड़े लगवाए और जो सज़ा देनी थी दी और उन्हें बेहोशी की हालत में उठा कर ले जाया गया, लोग आप के पास आए, जब इफ़ाका हुआ तो फरमाया: मैं आप लोगों को गवाह बनाता हूँ कि मैं ने मारने वाले को माफ कर दिया। बाद में आप से इस का सबब पूछा गया, तो फरमाया मुझे खौफ है कि मरने के बाद बारगाहे रिसालत में हज़िरी होगी तो मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम से हया आएगी कि मेरी वजह से आप की आल के एक फर्द से मुवाख़जा हो।

कहते हैं कि खलीफा मन्सूर ने हज़रत इमामे मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कहा कि मैं जाफर से आप का बदला दिलवाता हूँ। तो इमाम ने फरमाया खुदा की पनाह, ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता। खुदा की कसम जब चाबुक मेरे जिस्म से उठता था तो मैं उन्हें नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की वजह से माफ कर देता था।

(बरकाते आले रसूल:262)

और हज़रत अल्लामा नब्बहानी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत इमामे शाफई रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सरकारे अयदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की आले पाक से बहुत मुहब्बत करने के सबब इस हाल में बग़दाद में ले जाए गए कि उन के पैरों में बेड़ियां पड़ी थीं। बल्कि अहले बैते रसूलुल्लाह से उन की मुहब्बत यहां तक पहुंची कि कुछ लोगों ने उन्हें राफज़ी कह दिया तो आप ने उन को जवाब देते हुए फरमाया:

لَوْ كَانَ رَفَضًا حُبِّ الرَّسُولِ

لَكُنْتُمْ مِنَ الْفُقَرَاءِ إِنِّي رَافِضِي

यानी अगर आले रसूल की मुहब्बत ही का नाम राफज़ी होता है तो ज़िन्न व इंसान गवाह हो जाएं कि इस मज़्ना में बेशक मैं “राफज़ी” हूँ।

और जोशे अकीदत व जज़्बए मुहब्बत में अहले बैते रिसालत को मुखातब करते हुए फरमाते हैं:

يَا أَهْلَ بَيْتِ رَسُولِ الْمُؤْمِنِينَ

فَرَضَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ الْقُرْآنَ أَنْزَلَهُ

यानी ऐ रसूलुल्लाह के अहले बैत! आप लोगों की मुहब्बत अल्लाह तआला की तरफ से फर्ज़ है और यह हुक्म खुदाए जुल जलाल ने कुरआन मजीद में नाज़िल फरमा दिया है। और वह आयते करीमा यह है: قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَى यानी ऐ महबूब! तुम फरमाओ कि मैं इस पर तुम लोगों से कुछ उज़्रत नहीं मांगता मगर क़राबत की

मुहब्बत ।

(पारा:25,रुकूअ:3)

आले रसूल की अजमत व बुजुर्गी जाहिर करते हुए इमामे शाफई रजियल्लाहु तअाला अन्हु फरमाते हैं:

يَكُونُكُمْ مِنْ عَظِيمِ الْفَقْرِ أَتَكُمْ

مِنْ لَمْ يَصَلِّ عَلَيْكُمْ لِأَصْلَاةٍ

यानी ऐ आले रसूल! आप लोगों के लिये यह अजीम फख्र काफ़ी है कि जो शख्स आप पर दुरुद नहीं भेजता उस की नमाज़ नहीं होती ।

अल्लामा सब्बान ने फरमाया कि मतलब यह है कि आले रसूल पर दुरुद न पढ़ने वाले की नमाज़ कामिल नहीं होती और इमाम शाफई के मरजूह कौल के मुताबिक नमाज़ सहीह नहीं होती । (अशशफुल मोअब्बद:88)

और हज़रत अब्दुल वहाब शअरानी रहमतुल्लाहि तअाला अलैह सुनने कुबरा में फरमाते हैं कि मुझ पर अल्लाह तअाला के ऐहसानात में से एक यह है कि मैं सादाते किराम की बेहद ताज़ीम करता हूं, अगरचें लोग उन के नसब में तअन करते हों । मैं इस ताज़ीम को अपने ऊपर हक़ तसव्वुर करता हूं । इसी तरह उलमा और औलिया की औलाद की ताज़ीम शरई तरीक़े से करता हूं । फिर मैं सादात की कम अज़ कम इतनी ताज़ीम व तक्रीम करता हूं जितनी वालिए मिस्र के किसी भी नाइब या लश्कर के काज़ी की हो सकती है ।

सादाते किराम के आदाब में से यह है कि हम उनसे उम्दा बिस्तर, अज़ूला मर्तबा और बेहतर तरीक़े पर न बैठें । उन की मुतल्लका या बेवा औरत से निकाह न करें । इसी तरह किसी सैय्यद ज़ादी से निकाह न करें, हां अगर हम में से कोई शख्स यह समझता है कि हम उन की ताज़ीम का हक्के वाजिब अदा कर सकते हैं और उन की मरज़ी के मुताबिक़ अमल कर सकते हैं तो फिर उन से निकाह कर सकता है ।

(बरकाते आले रसूल:253)

और यही हज़रत अल्लामा अब्दुल वहाब शअरानी रजियल्लाहु तअाला अन्हु "अल्-बहरुल् मौरुद फिल-मवासीकि वल्-उहूद" में तहरीर

फरमाते हैं। हम से अहेद लिया गया है कि हम हरगिज़ सैय्यद जादी से निकाह न करें मगर उस वक़्त कि हम अपने आप को उन का खादिम तसव्वुर करें, क्योंकि वह नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की लख्ते जिगर हैं, जो शख्स अपने आप को उन का गुलाम तसव्वुर करे और यह अक्कीदा रखे कि अगर मैं उन की नाफरमानी करूंगा तो मैं नाफरमान गुलाम और गुनहगार हूंगा। तो वह निकाह करे वरना उसे लाइक नहीं है। जो शख्स तबरूक के लिये उन से निकाह करे उसे कहा जाएगा कि सलामती गुनीमत से मुकद्दम है यानी यह ख़तरा बहर हाल बाकी रहेगा कि मुम्किन है उन की ताज़ीम कमा हक्कहू अंदा न हो सके इस लिये बचना ही बेहतर है।

रही बरकत की बात तो वह निकाह किये बग़ैर उनकी ख़िदमत करने से भी हासिल हो सकती है। और फरमाते हैं कि हम से अहेद लिया गया है कि अगर हमारी बेटी या बहन का जहेज़ बेशुमार हो तो कोई ऐसे सैय्यद उस के निकाह का पैग़ाम दें जिन के पास उसके उन के महर और सुब्ह व शाम खाने के अलावा कुछ न हो तो हम उन से निकाह कर दें। और उन्हें मायूस न करें, क्यों कि फ़क़्र ऐब नहीं है जिस की बिना पर पैग़ामे निकाह रद कर दिया जाए बल्कि यह तो शराफ़त है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इस की आरज़ू की है बल्कि अपने रब्बे करीम जल्ला मजदुहू से दुआ की है कि आप को कियामत के दिन फुकरा व मसाकीन के ग़िरोह में उठाए। और दुआ की है कि ऐ अल्लाह! मेरे अहल का कूत बना यानी इतना खाना अता फरमा कि सुब्ह व शाम उस से कुछ न बचे।

तो जिस चीज़ को नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपनी औलाद और अहले बैत के लिये पसंद फरमाया वह इन्तिहाई फज़ीलत वाली है। लिहाज़ा जो शख्स नादार सैय्यद को अपनी बेटी का रिश्ता देने से इनकार करे उस पर खुदाए अज़्ज़ व जल्ल की नाराज़गी का खौफ़ है।

और अल्लामा शअरानी फरमाते हैं कि इसी तरह हम से अहेद लिया गया है कि जब हम रास्ते में किसी सैय्यद या सैय्यदा के पास से गुजरें जो लोगों से सवाल कर रहे हों तो हम उन्हें अपनी ताकत के मुताबिक़ पैसे, खाना या कपड़े पेश करें। या उन से अर्ज करें कि हमारे पास कियाम कीजिये ताकि हस्बे इस्तेताअत आप की जरूरियाते शरइय्या पूरी की जाएं। जो शख्स रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तअाला अलैहि व सल्लम की मुहब्बत का दावा रखता है उस के लिये यह बात किस कदर बुरी है कि वह आप की औलाद के पास से गुजरे और वह रास्ते में सवाल कर रहे हों मगर यह शख्स उन्हें कुछ पेश न करे।

(बरकाते आले रसूल:256)

एक मर्तबा आप हज़रात फिर बुलंद आवाज़ से तमाम आलम के मोहसिने आजम, रहमते आलम, नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तअाला अलैहि व सल्लम और उन की आल व अस्हाब और अहले बैत पर दुरूदो-सलाम की डालियां पेश करें।

صلى الله على النبي الامى واله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاما عليك يا رسول الله

सल्लल्लाहु अलन् नबियिल् उम्मियि व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम सलातुव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

खुसूसियात अहले बैत

अब आप हज़रात अहले बैते रसूलुल्लाह की वह खुसूसियात मुलाहेज़ा फरमाएं जो उन के अलावा किसी दूसरे में हरगिज़ नहीं पाई जाती हैं।

पहली खुसूसियत

पहली खुसूसियत है ज़कात का हराम होना। यानी अहले बैते किराम को ज़कात और सद्कए वाजिबा देना और लेना हराम है, अगर्चे वह मालिके निसाब न हों। मुस्लिम शरीफ में हज़रत मुत्तलिब बिन रबीआ रज़ियल्लाहु तअाला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम

सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **إِنَّ هَذِهِ الصَّلَاتُ أَتَمَّاهِي** यानी ज़कात के माल लोगों के मैल हैं और वह मुहम्मद और आले मुहम्मद बनी हाशिम के लिये जाइज़ नहीं। **सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम व रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हुम।** (मिशकात शरीफ:161)

हुज़ूर के इस कलाम में बेहतरीन तशबीह है कि आप ने ज़कात को औसाखुन नास यानी लोगों की मैल इस लिये फरमाया कि वह उन की आलूदगियों को पाक करती है और उन के अम्वाल व नुफूस को पाक करती है। खुदावन्दे कुददूस का इरशाद है: **خَلِّمْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِمْ** यानी ऐ महबूब! उन के माल में से ज़कात लो, उस ज़कात के ज़रिये उन को पाक व साफ करो। (पारा:11,रुकूअ:2)

और बुखारी व मुस्लिम में हज़रत अबू हु़रैरा रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु से मरवी है कि एक दिन हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु ने ज़कात की एक ख़ुज़ूर उठाई और मुंह में रख ली तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **كَغْ كَغْ** यानी छी छी, इसे फेंक दो, इस के बाद फरमाया: **مَا مَعَرَتْ أَلَا لَا كُلُّ الصَّدَقَةِ** क्या तुम्हें मालूम नहीं कि हम लोग ज़कात नहीं खाया करते। (मिशकात शरीफ:161)

और वलीए कबीर अब्दुल वहाब शअ़रानी रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु “अल्-बहरुल् मौरूद” में तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत फज़ल बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हुमा ने नबीए अकरम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम से अर्ज किया कि मुझे ज़कात वसूल करने पर मुकर्रर फरमा दें तो हुज़ूर ने उन से फरमाया: **مَعَاذَ اللَّهِ أَنْ أَسْتَعْمَلَكَ عَلَى عَسَاوٍ ذُنُوبِ النَّاسِ** यानी खुदा की पनाह कि मैं तुम्हें लोगों के गुनाहों के धोवन वसूल करने पर मुकर्रर कर दूं। (अश्शफ़ुल् मोअब्बद:35)

और तिमिज़ी और अबू दाऊद में हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम के आज़ाद करदा गुलाम हज़रत अबू राफ़ेअ रज़ियल्लाहु

तआला अन्हु से रिवायत है कि हुजूर ने बनू मख़ज़ूम के एक शख्स को ज़कात वसूल करने के लिये मुक़र्रर फरमा के भेजा तो उन्होंने ने अबू राफेअ से कहा कि आप भी मेरे साथ चलें ताकि आप को भी ज़कात में से कुछ हिस्सा हक्कुल मेहनत मिल जाए। हज़रत अबू राफेअ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि जब तक मैं हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम क ख़िदमत में हाज़िर होकर उन से दरियाफ्त न कर लूंगा आप के हम्राह इस काम के लिये न जाऊंगा।

इस गुप्तगू के बाद हज़रत अबू राफेअ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुजूर की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उस शख्स के साथ ज़कात वसूल करने के लिये जाने की इजाज़त तलब की तो हुजूर ने फरमाया: **الْمَنْعَةُ لِأَحِبِّ لَنَا وَأَوْلَى الْقَوْمِ مِنْ أَنْفُسِهِمْ** यानी ज़कात हम बनी हाशिम के लिये जाइज़ नहीं। और बनी हाशिम का आज़ाद करदा गुलाम बनी हाशिम ही हुक्म में हैं। जब हमारे लिये ज़कात जाइज़ नहीं तो हमारे आज़ाद करदा गुलाम के लिये भी जाइज़ नहीं। (मिशकात शरीफ: 161)

इसी लिय फ़िक्हे हनफी की किताबों में है कि बनी हाशिम को ज़कात नहीं दे सकते। न दूसरा कोई शख्स उन्हें दे सकता है, न एक हाशिमी दूसरे हाशिमी को, यहां तक कि बनी हाशिम के आज़ाद किये हुए गुलाम को भी नहीं दे सकते। बनी हाशिम से मुराद हैं हज़रत अली, हज़रत जाफर, हज़रत अक़ील और हज़रत अब्बास व हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब की औलाद। यानी इन सब की औलाद को ज़कात और सदकए वाजिबा देना जाइज़ नहीं। अल्बत्ता सदकए नाफिला और औकाफ की आमदनी इन को देना जाइज़ है।

दूसरी खुसूसियत

दूसरी खुसूसियत यह है कि अहले बैत हसब व नसब में सारे इंसानों से अफज़ल व अज़ला हैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से मरवी है कि रसूले करीम अलैहिस् सलातु व त्तस्लीम

ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद में से कबीलए कनाना को मुन्तख़ब फरमाया, कनाना में से कुरैश को और कुरैश में से बनी हाशिम को और बनी हाशिम में से मुझे मुन्तख़ब फरमाया। (बरकाते आले रसूल:91)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से मरफूअन रिवायत है कि अल्लाह तआला ने मख़्लूक पैदा फरमाई तो उस में से बनी आदम को मुन्तख़ब फरमाया फिर बनी आदम में से अरब को, अरब में से मुज़र को, मुज़र में से कुरैश को, कुरैश में से बनी हाशिम को फिर बनी हाशिम में से मुझे मुन्तख़ब फरमाया। तो मैं बेहतरीन लोगों से बेहतरीन लोगों की तरफ मुन्तक़िल होता रहा।

(बरकाते आले रसूल:91)

और इमामे अहमद उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिब्रीले अमीन ने मुझ से कहा कि मैं ने ज़मीन के मशरिफ़ व मगरिब (पूरब वच्छिम) उलट डाले लेकिन मैं ने मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से अफज़ल किसी को न पाया। अज़ला हज़रत फाज़िले बैरलवी अलैहिर रहमत फरमाते हैं:

यही बोले सिदरा वाले चमने जहां के थाले

सभी मैं ने छान डाले तेरे पाए का न पाया

तुझे यक ने यक बनाया

और हज़रत जिब्रील ने कहा कि मैं ने ज़मीन के मशरिफ़ व मगरिब छान डाले मगर मुझे बनी हाशिम से ज़्यादा फज़ीलत वाले किसी बाप के बेटे नहीं मिले।

(बरकाते आले रसूल:91)

और हज़रत जाफर सादिक़ अपने वालिदे माजिद हज़रत मुहम्मद बिन बाकर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत करते हैं, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मेरे पास जिब्रीले

अमीन आए और कहा या रसूलल्लाह! मुझे अल्लाह तआला ने भेजा, मैं ने ज़मीन के मशरिफ़ व मगरिब, नर्म ज़मीन और पहाड़ों में फिरा तो मैं ने अरब से अफज़ल कोई खानदान नहीं पाया। फिर मुझे हुक्म फरमाया तो मैं अरब में फिरा मुझे मुज़र से अफज़ल कोई कबीला नहीं मिला। फिर मुझे हुक्म दिया मैं मुज़र में फिरा तो मैं कनाना से अफज़ल कोई कबीला नहीं पाया। फिर मुझे हुक्म फरमाया तो मैं कनाना में फिरा तो मैं ने कुरैश से बेहतर कोई कबीला न पाया। फिर मुझे हुक्म दिया मैं कुरैश में फिरा तो मैं ने बनी हाशिम से अफज़ल कोई कबीला न पाया। फिर मुझे उन में से किसी के मुन्तख़ब करने का हुक्म दिया तो मैं ने आप से अफज़ल किसी को न पाया। (बरकाते आले रसूल:92)

और तब्रानी व दारे कुत्नी में है, सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि कियामत के दिन मैं अपनी उम्मत में सब से पहले अपने अहले बैत की शफाअत करूंगा फिर दूसरे लोगों की। और मैं जिस की पहले शफाअत करूंगा वह ज़्यादा फज़ीलत वाला है। (अश्शफ़ुल मोअब्बद:39)

यह तमाम हदीसों वाजेह तौर पर दलालत करती हैं कि अहले बैते किराम हसब व नसब में सब से अफज़ल व आला हैं। और इसी लिये दूसरे लोग निकाह में उन के कुफ़् व नहीं। हज़रत अल्लामा सुयूती रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ख़साइसे कुबरा में तहरीर फरमाते हैं कि नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की एक खुसूसियत यह है कि कोई मख़्लूक निकाह में आप के अहले बैत का हमसूर (बराबर) नहीं है। (बरकाते आले रसूल:93)

तीसरी खुसूसियत

तीसरी खुसूसियत यह है कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की रिश्तेदारी और नसब के आलवा कियामत के दिन हर रिश्तेदारी और नसब मुन्कतअ (ख़त्म) हो जाएगा। हदीस शरीफ़ है:

كُلُّ سَبَبٍ وَنَسَبٍ يَنْقَطِعُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلَّا سَبَبِيَّ وَنَسَبِيَّ (अशशर्फुल मोअब्बद:22)

रिवायते सहीहा से साबित है कि हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने लिये हज़रत अली मुरतज़ा कर्मल्लाहु तआला वज्हहु को हज़रत उम्मे कुल्सूम बिनते हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के निकाह का पैग़ाम दिया। हज़रत अली कर्मल्लाहु तआला वज्हहु ने उन की कम सिनी का उज़्र पेश किया और यह फरमाया कि मैं उन का निकाह अपने भाई हज़रत जाफर के साहिब ज़ादे के साथ करना चाहता हूँ। हज़रत फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इस्रार किया, फिर मिम्बर पर रौनक अफ़रोज़ हुए और फरमाया:

ऐ लोगो! मैं ने हज़रत अली से उनकी साहिब ज़ादी के बारे में इस लिये इस्रार किया है कि मैं ने नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से सुना है वह फरमाते थे: كُلُّ سَبَبٍ وَنَسَبٍ وَصَهْرٍ يَنْقَطِعُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلَّا سَبَبِيَّ وَنَسَبِيَّ وَصَهْرِي यानी कियामत के दिन मेरे तअल्लुक, नसब और रिश्ते के अलावा हर तअल्लुक, नसब और रिश्ता मुन्क़तअ हो जाएगा।

तो हज़रत अली कर्मल्लाहु तआला वज्हहु ने हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का निकाह हज़रत फारूके आजम से कर दिया, उन से हज़रत ज़ैद पैदा हुए जो जवान होकर इन्तेक़ाल किये। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु। (अशशर्फुल मोअब्बद:39)

इस हदीस और इसी तरह दूसरी हदीसों से मालूम हुआ कि रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के अहले बैत से रिश्ता काइम करने में बहुत फाइदा है।

एक शुब्ह और उसका जवाब

अगर कोई शख्स कहे कि बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपने चचा हज़रत अब्बास, अपनी फूफी हज़रत सफ़िया और दीगर अज़ीज़ व अक़ारिब से

फरमाया: لَا أَغْنِي عَنْكُمْ مِنَ الْوُفَا يानी मैं तुम्हें खुदा के अज़ाब से कुछ बेनयाज़ नहीं कर सकता, यहां तक कि अपनी लख्खे ज़िगर नूर नज़र हज़रत फातिमा ज़ह्रा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से फरमाया: بِفَاطِمَةٍ بِنْتِ مُحَمَّدٍ سَلَّمَ مَا شِئْتُ مِنْ مَالٍ لَا أَغْنِي عَنْكَ مِنَ الْوُفَا यानी ऐ फातिमा बन्ते मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) मेरे माल में से जो तुम चाहो मांग लो लेकिन खुदाए तआला का अज़ाब और उस की गिरफ्त हो तो मैं तुम को कोई फाइदा नहीं पहुंचा सकता। (भिश्कात शरीफ:460)

इस हदीस शरीफ का खुलासा यह हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अपने अहले बैत के काम नहीं आ सकते। और जब हुज़ूर अपने अहले बैत के काम नहीं आ सकते तो अहले बैत की रिश्तेदारी दूसरों के क्या काम आ सकती है?

इस श्रुद्धा के जवाब में हज़रत शेख अब्दुल हक मोहदिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि तहरीर फरमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का यह कलाम खुदाए तआला से खौफ दिलाने और डराने में इन्तिहाई मुबालगा है इस लिये कि अहले बैत की फज़ीलत व बुजुर्गी, उन के लिये हुज़ूर की शफाअत और उनका जन्नती होना अहादीसे सहीहा से साबित है। (अश्शतुल् तम्जात:4/272)

और मुहिब्बे तबरी ने यह जवाब दिया है कि हुज़ूर पुर नूर शाफिए यौमुन्-नुशूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अज़ खुद किसी के नफा व ज़रर (नुष़ान) के मालिक नहीं लेकिन अल्लाह तआला आप को अहले बैत और अज़ीज़ व अक़ारिब बल्कि तमाम उम्मत को शफाअत आम्मा और खास्ता से नफा पहुंचाने का मालिक बना देगा।

और बाज़ उलमा ने फरमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का यह खिताब उस वक़्त का है जबकि अल्लाह तआला ने आप को भी इस बात से आगाह नहीं फरमाया था कि आप की निस्बत फाइदा देने वाली है।

एक मर्तबा फिर आप लोग हुज़ूर पुर नूर शाफिए यौमुन्-नुशूर

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उन की आल व अस्हाब और अहले बैते किराम पर निहायत अक़ीदत व मुहब्बत के साथ बुलंद आवाज़ से दुरूदो-सलाम की डालियां पेश करें।

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ آلِهِ وَأَصْحَابِهِ وَآلِ بَيْتِهِ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ
अल्लाहुम्म सल्लि अला सैय्यिदिना मुहम्मदिव् व अला आलिही व
अस्हाबिही व अहलि बैतिही व बारिक व सल्लिम्।

हज़रत अल्लामा नब्बहानी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के नसब और उन की रिश्तेदारी का फाइदा बयान करने के बाद तहरीर फरमाते हैं कि जो शख्स नबीए करीम अलैहिस्-सलातु वल्लस्लीम की तरफ मन्सूब हो उसे मुनासिब नहीं कि जो कुछ ज़िक्क हो उस पर कुल्ली ऐतमाद करे और इल्म व अमल की ज़रूरत महसूस न करे। इस लिये कि यह सारी बातें उस के लिये हैं जो वाकई रसूले अक़रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से तअल्लुक रखता हो और आप के अहले बैत में से हो और इसका यकीन कैसे हो सकता है? इस लिये कि मुम्किन है कुछ औरतों से लगज़िश हुई हो। और यह भी हो सकता है कि आबा व अजदाद (बाप-दादा) में से किसी शख्स ने मन्सूब होने में ग़लत बयानी की हो अगर्चे यह ऐहतमाल ज़ाहिर के ख़िलाफ है लेकिन इसे बिल्कुल नज़र अंदाज़ भी नहीं किया जा सकता। अलावा अज़ीं अहले बैत के अकाबिर से मन्कूल है कि वह अल्लाह तआला की शदीद ख़शिyyət, उसके अज़ाब के अज़ीम ख़ौफ और मामूली कोताही पर बहुत ज़्यादा अप्सोस करने के खूगर (आदी) थे। (अशशर्फुल मोअब्बद:40)

और अल्लामा इब्ने हज़र मक्की रहमतुल्लाहि तआला अलैहि फरमाते हैं कि तमाम लोगों पर उमूमन और अहले बैत पर खुसूसन चन्द उमूर की रिआयत लाज़िम है। अव्वल उलूमे शरइय्या के हासिल करने का ऐहतमाम करना इस लिये कि इल्म के बग़ैर नसब का कामिल फाइदा नहीं है। दोम बाप दादा पर फख्र न करना और तक्वा व

परहेज़गारी के बगैर महेज़ उन पर ऐतमाद न करना इस लिये कि अल्लाह तआला ने फरमाया है: **اِنْ اُكْرِمْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ** यानी तुम में से बारगाहे इलाही में ज़्यादा मुअज़्ज़ज़ वह है जो ज़्यादा मुत्तकी हो।

(पारा:26,रुकूअ:14) (बरकाते आले रसूल, बहवाला अस्-सवाइकुल मुहर्रका:181)

चौथी खुसूसियत

चौथी खुसूसियत यह है कि सहाबए किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहि अजमईन के ज़माने में इस्तिलाह यह थी कि अशराफ का लफज़ सिर्फ अहले बैत पर बोला जाता था, दूसरों पर नहीं। फिर यह लफ़्ज़ हसनी और हुसैनी सादात के लिये मख्सूस हो गया। हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआला अलैह रिसालए ज़ैनबिय्यह में तहरीर फरमाते हैं कि सहाबए किराम के ज़माने में शरीफ (सैय्यद) का लफ़ज़ हर उस फ़र्द पर बोला जाता था जो अहले बैते रिसालत से हो, चाहे वह हसनी हो, हुसैनी या अल्वी। हज़रत मुहम्मद बिन हनफिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की औलाद में से हो या हज़रत अली कर्म्मल्लाहु तआला वज्हु की दीगर औलाद से और हज़रत जाफर या हज़रत अकील की औलाद से हो या हज़रत अब्बास की। रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम। फिर जब मिस्र में फातमी हज़रात तख़्त व ख़िलाफ़त के मालिक हुए तो उन्होंने ने शरीफ यानी (सैय्यद) का लफ़ज़ हज़रते हसन व हज़रते हुसैन की औलाद के साथ ख़ास कर दिया और मिस्र में आज तक यह इस्तिलाह जारी है। (अश्शफ़ुल मोअब्बद:40)

हज़रत अल्लामा नब्बहानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि इस वक़्त यह इस्तिलाह मशरिफ़ व मगरिब के इस्लामी शहरों में मशहूर है, जब अरबी में शरीफ का लफ़ज़ बोला जाएगा तो इस से हसनी या हुसैनी सैय्यद मुराद होंगे। बहुत से शहरों में यह इस्तिलाह भी आम है कि सैय्यद का लफ़ज़ सिर्फ़ हसनी और हुसैनी सादात पर बोला जाता है। जब यह लफ़ज़ बोला जाएगा तो इन के

सिवा कोई दूसरा मुराद नहीं होगा। यह अहले हिजाज के मा सिवा की इस्तिलाह है। अहले हिजाज की इस्तिलाह यह है कि शरीफ का इस्तेमाल हसनी सादात के लिये और सैय्यद का इस्तेमाल हुसैनी सादात के लिये करते हैं ताकि दोनों में वाजेह फर्क हो जाए। (अशशफुल मोअब्बद:41)

हज़रत अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि अगर कोई चीज़ अशराफ के लिये वक्फ की गई या उनके लिये वसियत की गई तो हज़रते हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की औलाद के अलावा दूसरा कोई उन में दाखिल न होगा। इस लिये कि वक्फ और वसियत का दारो-मदार शहर के उर्फ पर है। (अशशफुल मोअब्बद:41)

हज़रत अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि तआला अलैह का यह बयान हक है मगर अब शहरों का उर्फ बदल रहा है। हज़रत अल्लामा नब्बहानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि कुस्तुनिय्या में सैय्यद का लफज़ अशराफ के साथ खास नहीं है। इस शहर के सर्राफा बाज़ार में जाकर देखिये तो शायद ही कोई ऐसी मोहर नज़र आए कि जिस पर सैय्यद न लिखा हो सिवाए उस शख्स के जो सैय्यद सहीहुन् नसब हो या दीनदार व बा हया अदामी हो। अशराफ अपनी मोहरों में लफज़ सैय्यद नहीं लिखते इस खौफ से कि उन के नसब में लोगों को शुब्ह न हो जाए। (अशशफुल मोअब्बद:43)

यही हाल अन्करीब इस मुल्क में होने वाला है कि जो सैय्यद सहीहुन् नसब होगा वह अपने नाम के साथ सैय्यद नहीं लिखेगा, इस लिये कि अब बहुत से दूसरे लोग अपने को सैय्यद लिखने लगे हैं। तो वह अपने नसब को इश्तिबाह से बचाने के लिये अपने नाम के साथ सैय्यद लिखने से परहेज़ करेंगे, जैसे कि बहुत से लोगों ने जब अपने नाम के साथ अंसारी लिखना शुरू कर दिया तो मदीना तैयिबा का अंसारी खानदान जो इस मुल्क में है उस ने अंसारी लिखना छोड़ दिया।

जो लोग अपना नसब ग़लत बताते हैं वह इस हदीस शरीफ से

नसीहत हासिल करें जो बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिजी और नसई वगैरहम ने हज़रत अली करमल्लाहु तआला वज्हुल करीम से रिवायत की है कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया: **مَنْ أَدْعَى إِلَى غَيْرِ أَبِيهِ فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ لَا يَقْبَلُ اللَّهُ مِنْهُ قَرْضًا وَلَا نَفْلًا** यानी जो अपने बाप के अलावा दूसरे की तरफ अपने आप को मन्सूब करे, उस पर खुदा और सब फिरश्तों और सब आदमियों की लअूनत है। अल्लाह तआला कियामत के दिन उस का न फर्ज कबूल करेगा और नफल। (फतावा रजविय्यह:5/667)

पांचवीं खुसूसियत

पांचवीं खुसूसियत यह है कि अहले बैत में से जो बेअमल हों उन की ताज़ीम का हुक्म है। मुफ्ति ए आजम हिन्द हज़रत अल्लामा मुस्तफा रज़ा ख़ां अलैहिर रहमत वर-रिज़्वान तहरीर फरमाते हैं कि “सैय्यद से जब तक कुफ़ न सादिर हो वाजिबुत तअज़ीम है।” (हुज्जते दाहि़रा:11)

और यह इस लिये कि उन का गुनाह बख़्शा जाएगा और खुदाए अज़्ज़ व जल्ल उन की ग़लतियों से दरगुज़र फरमाएगा अगर्चे इस तरह कि उन्हें मौत से पहले तौबा की तौफीक अता फरमाए। इरशादे खुदावन्दी है: **إِنَّمَا يُرِيدُ اللَّهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيرًا** ऐ अहले बैत! अल्लाह तआला तो यही चाहता है कि तुम से हर नापाकी को दूर फरमा दे और तुम्हें पाक करके ख़ूब सुथरा कर दे। (पारा:22, रूकूअ:1)

और सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **إِنَّا نَاطِمَةٌ أَحْصَيْنَا فُرُجَهَا فَهَرَمَهَا اللَّهُ وَوَرَيْتُهَا عَلَى النَّارِ** यानी बेशक फातिमा ने अपनी पाक दामनी की हिफाज़त की तो अल्लाह तबारक व तआला ने उन्हें और उन की औलाद को जहन्नम पर हराम फरमा दिया।

(अशशर्फुल मोअब्बद:45)

अहले बैत के फासिक की इज़्ज़त उन के फिस्क और बेअमली की वजह से नहीं है बल्कि उन की मुबारक निस्बत की बिना पर है। और यह ख़ूबी जैसे कि उनके नेक लोगों में है वैसे ही उनके फासिक में

मौजूद है। यानी किसी का फासिक होना उसे अहले बैते नुबुव्वत से खारिज नहीं कर देगा। इस लिये कि अहले बैत के लिये मासूम होना शर्त नहीं। लिहाजा फिस्क उनके नसब में खलल अंदाज नहीं होगा अल्बत्ता सालेहीन के दरमियान उनके मक़ाम को कम कर देता है।

हज़रत अबू मुहम्मद फासी रहमतुल्लाहि तआला अलैह बयान फरमाते हैं कि मैं मदीना तैयिबा के बाज़ हुसैनी सैय्यिदों से बुग़ज़ रखता था क्यों कि मुझे मालूम था कि वह खिलाफ़े सुन्नत अफ़आल के मुरत्किब (काम करते) हैं, मैं एक दिन मस्जिदे नबवी में रौज़ए मुबारका के सामने सो गया, मुझे नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ज़ियारत हुई, हुज़ूर ने मुझ से मेरा नाम लेकर फरमाया क्या बात है मैं देखता हूँ कि मेरी औलाद से बुग़ज़ रखते हो? मैं ने अर्ज किया या रसूलल्लाह! खुदा की पनाह! मैं उन्हें नापसंद नहीं रखता, मुझे सुन्नत के खिलाफ़ उनका अमल ना पसंद है। हुज़ूर ने फरमाया क्या यह फिक्की मस्अला नहीं है कि ना फरमान औलाद नसब से वाबस्ता रहती है? मैं ने अर्ज किया हां, फरमाया यह ना फरमान औलाद है। हज़रत अबू मुहम्मद फासी फरमाते हैं कि जब मैं बैदार हुआ तो मेरे दिल से उन की अदावत दूर हो चुकी थी, फिर तो मैं उन में से जिस किसी से भी मिलता उन की ख़ूब ताज़ीम व तकरीम करता।

(बरकाते आले रसूल:104)

सैय्यद हज़रात मुलाहेज़ा फरमाएं कि रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सुन्नत के खिलाफ़ अमल करने वाले को ना फरमान औलाद फरमाया और जबकि आम वालिदैन की ना फरमानी गुनाहे कबीरा है तो सादात का अपने जदे करीम अलैहिस् सलातु वत्-तस्लीम की ना फरमानी पर क्या हाल होगा।

हज़रत अल्लामा इब्ने हज़र मक्की रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपने फतावा के खातिमा में तहरीर फरमाते हैं कि जिस शख्स की निस्बत नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के अहले

बैत और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के खानवादे से काइम हो उस का बड़ा जुर्म और दयानत व परहेज़गारी से आरी (खाली) होना उसे नसबे आली से खारिज नहीं कर देगा। इसी लिये बाज़ मुहक्क़ीन ने फरमाया कि (खुदा ना ख्वास्ता) अगर किसी सैय्यिद से जिना, शराब नौशी या चोरी सरज़द हो जाए और हम उस पर हद जारी करें तो उस की मिसाल ऐसी ही है जैसे किसी अमीर या बादशाह के पाँव को गिलाज़त लग जाए और उस का कोई खादिम उसे धो डाले।

(बरकाते आले रसूल:105)

खुलासा यह है कि जिस शख्स की सियादत यकीनी हो और उसका नसब साबित हो तो सियादत के पेशे नज़र उसकी ताज़ीम व तक्रीम की जाएगी और उसके ग़लत कामों पर ना पसंदीदगी ज़ाहिर की जाएगी। और अगर उसका नसब साबित नहीं है मगर वह उस नसब का दावेदार है और उस का झूठा होना मालूम नहीं है तो उस की तक्ज़ीब में तक्कुफ़ किया जाएगा कि हर शख्स अपने नसब का ज़िम्मेदार है अगर झूठ बोलता है तो मुस्तिहक्के लज़ूनत है, मगर दूसरे लोग उसे बग़ैर सुबूत झूठ नहीं कह सकते।

छठी खुसूसियत

छठी खुसूसियत यह है कि वह हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की औलाद होने के बा वजूद रसूले करीम अलैहिस् सलातु वत्तस्लीम की औलाद कहलाते हैं और सहीहुन नसब के साथ आप ही की तरफ मन्सूब हैं। इमाम तबरानी ने हदीस बयान की है कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **إِنَّ اللَّهَ عَزَّوَجَلَّ جَعَلَ ذُرِّيَّةَ كُلِّ نَبِيٍّ فِي صُلْبِهِ وَإِنَّ اللَّهَ تَعَالَى جَعَلَ ذُرِّيَّتِي فِي صُلْبِ عَلِيٍّ بْنِ أَبِي طَالِبٍ** यानी अल्लाह तआला ने हर नबी की औलाद उन की पुश्त में रखी और मेरी औलाद अली बिन अबी तालिब की पुश्त में रखी। (अश्शफ़ूल मोअब्बद:48)

और नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद

फरमाया कि हर मां की औलाद अपने पिद्री रिश्तेदारों की तरफ मन्सूब होती है, 'मा सिवा औलादे फातिमा के कि मैं उन का वली हूं और उन का असबा हूं। (बरकाते आले रसूल:110)

अस्आफुर रागिबीन में है कि यह खुसूसियत सिर्फ हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की औलाद के लिये है। दूसरी साहिब जादियों की औलाद के लिये नहीं है (यानी अगर उन की औलाद जिंदा रहती तो) उन के बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उन के बाप हैं और वह आप के बेटे हैं जिस तरह कि यह बात हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की औलाद के लिये कही जाती है। (बरकाते आले रसूल:110)

सात्वीं खुसूसियत

सात्वीं खुसूसियत यह है कि अहले बैत का ज़मीन में मौजूद होना ज़मीन वालों के लिये बाइसे अम्न है जैसा कि हदीस शरीफ में है कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया: **السُّحُومُ أَمَانٌ لِأَهْلِ السَّمَاءِ وَأَهْلُ بَيْتِي أَمَانٌ لِأَهْلِ الْأَرْضِ** यानी सितारे आसमान वालों के लिये बाइसे अम्न हैं और मेरे अहले बैत ज़मीन वालों के लिये बाइसे अम्न हैं। और एक रिवायत में हैं: **أَنَا وَآلِي** यानी मेरे अहले बैत मेरी उम्मत के लिये बाइसे अम्न हैं। (अश्शफुल मोअब्बद:46)

आठवीं खुसूसियत

आठवीं खुसूसियत यह है कि वह पहले जन्नत में दाखिल होंगे। इमाम सज़लबी हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं उन्होंने ने फरमाया कि मैं ने बारगाहे रिसालत में लोगों के हसद की शिकायत की तो हुज़ूर सैय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया "क्या तुम इस बात पर राजी नहीं कि तुम चारों में से चौथे हो? सब से पहले जन्नत में, मैं, तुम और हसनैन करीमैन दाखिल होंगे। हमारी अज़वाजे मुतहहरात (पाक बीवियां) हमारे बाएं

और दाएं होंगी और हमारी औलाद हमारी अज्वाज के पीछे होगी।

(बरकाते आले रसूल:109)

नवीं खुसूसियत

अल्लामा सब्बान ने उन की यह खुसूसियत शुमार की है कि जो शख्स उन में से किसी पर ऐहसान करेगा नबीए अक़रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम कियामत के दिन उसे बदला अता फरमाएंगे जैसा कि हुजूर ने इरशाद फरमाया कि जो शख्स वसीला हासिल करना चाहता है और यह चाहता है कि मेरी बारगाह में उस की कोई ख़िदमत हो जिस के सबब मैं कियामत के दिन उस की शफाअत करूं उसे चाहिये कि मेरे अहले बैत की ख़िदमत करे और उन्हें खुश करे।

(बरकाते आले रसूल:111, सवाइके मोहर्रका:107)

दस्वीं खुसूसियत

अल्लामा सब्बान ने फरमाया कि उन की खुसूसियत यह है कि उन की मुहब्बत दराज़िए उम्र और कियामत के दिन चेहरा सफ़ेद होने का सबब है। और उन का बुग़ज़ इस के बरअक्स असर रखता है। जैसा कि सवाइके मोहर्रका में हदीस शरीफ़ नक़ल की है कि नबीए अक़रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: “जो शख्स पसंद करता हो कि उस की उम्र दराज़ हो और अपनी आरज़ुओं से बहरावर हो, उसे मेरे बाद मेरे अहले बैत से अच्छी तरह पेश आना चाहिये। और जो मेरे बाद उन से अच्छी तरह पेश नहीं आएगा उस की उम्र क़तअ (कम) कर दी जाएगी। और कियामत के दिन इस हालत में मेरे पास आएगा कि उसका चेहरा सियाह होगा। (बरकाते आले रसूल:111)

दुआ है कि खुदाए अज़्ज़ व जल्ल हम सब लोगों को मुहिब्बीने अहले बैत के ग़िरोह में शामिल फरमाए और उनके जद्दे करीम अलैहि अफ़ज़लुस् सलातु व अक़मलुत्-तस्लीम की शफाअत नसीब फरमाए। आमीन।

पारा हाए सुहुफ गु चहाए कुदुस
 अहले बैते नुबुव्वत पे लाखों सलाम
 आबे तत्हीर से जिस में पौदे जमे
 उस रियाजे नजाबत पे लाखों सलाम
 खूने खैरु रुसुल से है जिन का खमीर
 उन की बैलौस तीनत पे लाखों सलाम

وصلی الله تبارک و تعالی و سلم علی النبی الکریم و علی اله و اصحابه و اهل بیتہ اجمعین

برحمتک یا رحیم الرحمن

वसल्लल्लाहु तबारक व तअला व सल्लम अलन्नबियिलु करीमि व
 अला आलिही व अस्हाबिही व अहलि बैतिही अज्मईन।
 बिरहमतिक या अर्हमर राहिमीन।



मनाकिबे अहले बैत

रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम

الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى خصوصاً على
سيد الورى نبينا محمد بن المصطفى وعلى آله واصحابه ذوى الدرجات العلى۔ اما بعد
فَاعْبُدُوا بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ۔ قُلْ لَا اسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا
اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى۔ (پ: ۲۵، ع: ۴) صَدَقَ اللّٰهُ العَلِیَّ العَظِیْمَ وصدق رسوله الامین
الکریم ونحن على ذالك لمن الشاهدين والشاكرين والحمد لله رب العالمین۔

एक मर्तबा हम और आप सब लोग मिल कर इन्तिहाई खुसूल व
मुहब्बत के साथ तमाम आलम के मोहसिने आजम, रहमते आलम, नूरे
मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दरबारे गुहर बार में
दुरुदो-सलाम की डालियां पेश करें।

صلى الله على النبي الامى وآله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاماً عليك يا رسول الله

सल्लल्लाहु अलन् नबिथिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व
सल्लम सलातव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

खुल्वा के बाद जिस आयते मुबारका को पढ़ने का शर्फ हमने
हासिल किया है आप हज़रत पहले उस का तर्जमा सिमाअत फरमाएं।
खुदावन्दे कुद्दुस का इरशाद है ऐ महबूब! قُلْ لَا اسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا तुम फरमाओ
कि मैं इस पर यानी तब्लीगे रिसालत और इरशाद व हिदायत पर तुम
से कुछ अज़्र नहीं मांगता اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى मगर कराबत की मुहब्बत।
यानी मैं तुम से कराबत की मुहब्बत का मुतालेबा करता हूं।

(पारा: 25, रूकूअ: 4)

हज़रत सदरुल अफाजिल मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन साहब
मुरादाबादी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि इस आयते
करीमा का शाने नुजूल हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा
से इस तरह मरवी है कि जब नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि
व सल्लम मदीना तैयिबा में रौनक अफरोज़ हुए और अंसार ने देखा कि

हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के जिम्मे मसारिफ बहुत हैं, माल कुछ भी नहीं, उन्होंने आपस में मश्वरा किया और हुजूर के हुक्क व ऐहसानात याद करके आप की खिदमत में पेश करने के लिये बहुत सा माल जमा किया और उस को लेकर खिदमते अक्दस में हाजिर हुए और अर्ज किया कि हुजूर की बदीलत हमें हिदायत हुई और हम ने गुमराही से नजात पाई। हम देखते हैं कि हुजूर के मसारिफ बहुत ज्यादा हैं इस लिये हम यह माल खुदामे अस्ताना की खिदमत में नज़ के लिये लाए हैं, कबूल फरमा कर हमारी इज़्ज़त अफज़ाई की जाए। इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। और हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने वह अमवाल वापस फरमा दीये। (तफसीर खज़ाइनुल इरफ़ान)

और हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआला अलैहि की मशहूर तस्नीफ़ दुर्गे मन्सूर में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से यूं मरवी है, अंसारी सहाबा फरमाते हैं कि अहले बैते नबुव्वत ने हम लोगों के कौलो-फेअल से फख़ महसूस किया तो हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि हमें तुम लोगों पर फज़ीलत हासिल है। जब यह बात रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को पहुंची तो आप उन लोगों की मज्लिस में तशरीफ ले गए और फरमाया ऐ गिरोहे अंसार! क्या तुम लोग बेइज़्ज़त नहीं थे, तो अल्लाह तआला ने तुम्हें मेरे ज़रिया इज़्ज़त अता फरमाई? अंसार ने अर्ज किया हां, या रसूलल्लाह! हुजूर ने फरमाया, क्या तुम मुझे जवाब नहीं देते? अंसार ने अर्ज किया हुजूर हम क्या कहें? फरमाया क्या तुम लोग यह नहीं कहते कि क्या आप की कौम ने आप को नहीं निकाल दिया था, तो हम ने आप को पनाह दी? क्या उन्होंने ने आप को नहीं झुठलाया था, तो हम ने आप की तस्दीक़ की? क्या उन्होंने ने आप को नहीं छोड़ दिया था तो हम ने आप की इमदाद की? हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इस तरह फरमाते रहे, यहां तक कि अंसार घुटने के बल खड़े हो गए और अर्ज किया: **أَمَّا وَمَا لِي أَيْدِي اللَّهِ وَرَسُولِهِ** यानी

हमारे माल और हमारी सब मिल्कियत अल्लाह और उसके रसूल के लिये हैं तो यह आयते मुबारका नाज़िल हुई **قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَىٰ** (अश्शफ़ुल मोअब्बद:72)

हज़रत ताऊस फरमाते हैं कि इसके बारे में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से पूछा गया उन्होंने ने फरमाया इस से नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के रिश्तेदार मुराद हैं। और मुकरिज़ी ने फरमाया मुफस्सिरीन की एक जमाअत ने इस आयत की तफसीर में फरमाया: ऐ हबीब! अपने पैरौकार मोमिनों को फरमा दो मैं तब्लीगे दीन पर तुम से कोई अज़्र नहीं मांगता सिवाए इस के कि तुम मेरे रिश्तेदारों से मुहब्बत रखो। हज़रत अबुल आलिया और हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं कि **قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَىٰ** यह नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के रिश्तेदार हैं। और अबू इस्हाक़ फरमाते हैं कि मैं ने हज़रत अम्र बिन शुऐब से इस आयते करीमा के बारे में पूछा उन्होंने ने फरमाया “कुर्बा से मुराद नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के रिश्तेदार हैं।” (बरकाते आले रसूल:220)

रहा यह सवाल कि रिश्तेदार से कौन से रिश्तेदार मुराद हैं तो अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती ने दुर्रे मन्सूर में और बहुत से दीगर मुफस्सिरीन ने इस आयते मुबारका की तफसीर करते हुए हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से नक़ल किया कि सहाबए किराम ने अर्ज किया या रसूलल्लाह! आप के कौन से रिश्तेदार हैं जिन की मुहब्बत हम पर वाजिब है? फरमाया, अली, फातिमा और उन की औलाद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम (अश्शफ़ुल मोअब्बद:72)

एक ऐतराज़ और उसका जवाब

अगर कोई शख्स कहे कि तब्लीगे वही पर कौम से मुआवज़ा तलाब करना जाइज़ नहीं इसी लिये पारा:19 सूरए शुअरा में कई जगहों पर

मुख्तलिफ अंबियाए किराम अलैहिमुस् सलातु वस्सलाम का यह ऐलान मजकूर है कि: مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ यानी उन्होंने ने अपनी कौमों से फरमाया कि मैं तब्लीगे वही और इरशादो-हिदायत पर तुम से कोई अज्र नहीं मांगता और जब दीगर अंबियाए किराम अलैहिमुस् सलातु वस्सलाम ने अपनी कौमों से किसी उज्रत का मुतालेबा नहीं किया और न किसी फाइदे की ख्वाहिश की तो सैयिदुल अंबिया जनाबे अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम जो तमाम नबियों और रसूलों से अफज़ल हैं उन्हें तब्लीगे दीन पर बदर्जए औला उज्रत नहीं तलब करनी चाहिये।

और फिर तब्लीग आप पर वाजिब थी जैसा कि अल्लाह तआला का इरशाद है: بَلِّغْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ यानी जो कुछ तुम्हारे रब की तरफ से तुम पर नाज़िल किया गया उसकी तब्लीग करो। (पारा:6 रूकूअ:14) और वाजिब के अदा करने पर उज्रत का तलब करना मुनासिब नहीं।

और फिर यहूदी और ईसाई वगैरा हमें तअना दे सकते हैं कि हमारे रहनुमाओं ने यह ऐलान किया مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ मैं तब्लीगे दीन पर तुम से कोई अज्र नहीं मांगता और तुम्हारे रसूल ने रिश्तेदारों की मुहब्बत का मुतालेबा करके अपनी मेहनत व मशक्कत का मुआवज़ा तलब किया जैसा कि आयते करीमा قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَى से ज़ाहिर होता है।

इस ऐतराज़ का जवाब यह है कि बेशक तब्लीगे वही पर अज्र तलब करना जाइज़ नहीं और हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने भी इरशादो-हिदायत पर अपनी कौम से किसी मुआवज़ा को तलब नहीं किया और न उनसे किसी फाइदे की ख्वाहिश की। जैसा कि पारा:23 रूकूअ:14 की आयते मुबारका है قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَلَا أَتَمِنُ يानी तुम फरमा दो कि मैं तब्लीगे दीन पर तुम से कोई अज्र नहीं मांगता और न मैं तकल्लुफ करने वालों में से हूँ। रहा आयते मुबारका में قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَى तो हज़रत अल्लामा इमामे राज़ी रहमतुल्लाहि

तअल्ला अलैहि फरमाते हैं कि यह उस कबील से है जो किसी कहने वाले ने कहा है:

لَا عَيْبَ فِيهِمْ غَيْرَ أَنَّ سُوءَ فَعْلِهِمْ

بِهِمْ أَمِنْ فِرَاقِ الدَّارِ عَيْنَ قُلُوبِهِمْ

यानी उन लोगों में अलावा इसके और कोई ऐब नहीं है कि उन की तल्लारों में ज़िरापोश दुश्मनों से टकराने के ससब दंदाने हैं। (यानी जबकि यह उन का ऐब है तो ऐब नहीं है, बल्कि खूबी है) इसी तरह आयते मुबारका का मतलब यह है कि मैं तुम से इस के सिवा कुछ अज़्र नहीं चाहता और यह हकीकत में अज़्र नहीं है। इस लिये मुसलमानों के दरमियान मुहब्बत वाजिब है जैसा कि अल्लाह तअल्ला ने इरशाद फरमाया: **وَالْمُؤْمِنُونَ وَالْمُؤْمِنَاتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ** यानी ईमान वाले मर्द और ईमान वाली औरतें एक दूसरे के दोस्त हैं। (पारा:10,रुकूअ:15) और सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तअल्ला अलैहि व सल्लम की हदीस -शरीफ है: **وَالْمُؤْمِنُونَ كَالْبَيْتِ إِذَا قُتِلَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا** यानी मुसलमान एक इमारत की तरह हैं जिस का हर एक हिस्सा दूसरे हिस्सा को ताकत व कुव्वत देता है और मदद पहुंचाता है। और जब मुसलमानों में बाहमी मुहब्बत वाजिब हुई तो अशरफुल मुस्लिमीन और उनके अकाबिर यानी अहले बैते किराम रिज़वानुल्लाहि तअल्ला अलैहि अजमईन की मुहब्बत बदर्जए औला वाजिब है। (तफसीरे इब्ने कसीर:7/390)

खुलासा यह हुआ कि मैं हिदायत व इरशाद पर कोई मुआवज़ा तलब नहीं करता लेकिन मेरे रिश्तेदारों की मुहब्बत जो तुम पर वाजिब है उस का ख्याल रखना।

और दूसरा जवाब यह है कि इस आयते करीमा में इस्तिस्ना मुन्कतिअ है यानी **قُلْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** पर कलाम पूरा हो गया, उस के बाद फरमाय **وَاللَّهُ يَتَذَكَّرُ** लेकिन मैं तुम्हें हुक्म देता हूं कि मेरे रिश्तेदारों से मुहब्बत करो। (तफसीरे ख़ाज़िन:6/122)

इमाम सुदी अबुद् दैलम से रिवायत करते हैं कि जब हज़रत इमाम

जैनुल आबिदीन अली बिन हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा को गिरफ्तार करके लाया गया और उन्हें दमिश्क के रास्ते में खड़ा किया गया तो वहां का एक बाशिन्दा आया और कहने लगा, खुदा का शुक्र है जिसने तुम्हें क़त्ल किया, तुम्हारा इस्तीसालो-खातिमा किया और फिले की सींग काट दी। हज़रत इमाम जैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस से फरमाया कि तू ने कुरआन पाक पढ़ा है? उस ने कहा हां, आप ने फरमाया, तू ने आले हा मीम पढ़ी है? उस ने कहा मैं ने कुरआन पढ़ा है लेकिन आले हा मीम नहीं पढ़ी, आप ने फरमाया तुम ने आयत **قُلْ لَا اسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ اَنْعَامًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبَىٰ** नहीं पढ़ी? उस ने कहा वह लोग आप ही हैं? आप ने फरमाया हां।

हज़रत अल्लामा नब्बहानी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इस वाकिआ को लिखने के बाद तहरीर फरमाते हैं कि मैं उस शख्स को ईमान वाला नहीं समझता हां, उस का ईमान बुतों और मस्नूई खुदाओं पर था इस लिये कि अल्लाह और उस के रसूल जल्ल जलालुह व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर ईमान रखने वालों की ज़बान से ऐसी बकवास सादिर नहीं हो सकती। उस शख्स के दिल में ईमान कैसे ठहर सकता है जो अहले बैते मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के शहीद किये जाने पर खुदा का शुक्र अदा करे। मैं अल्लाह व रसूल का उस मुल्हिद से ज़्यादा दुश्मन अबू जहेल को नहीं समझता।

(अशशर्फुल मोअब्बद:74)

हम कहते हैं इस ज़माने में भी ऐसे लोग बहुत हैं जो अहले बैते नुबुव्वत और खानदाने रिसालत से नफरत करते हैं, उन के फज़ाइल व मनाकिब नहीं सुन सकते, अगर कोई मुहब्बत वाला इन हज़रात की तारीफ व तौसीफ बयान करता है तो उन की पेशानी में बल पड़ जाते हैं, चेहरे का रंग बदल जाता है और फौरन यज़ीद ख़बीस की हिमायत के लिये खड़े हो जाते हैं, उसे हक़ पर बताते हैं और अमीरुल मोमिनीन व रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ उसे याद करते हैं और नवासए

रसूल हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर इक्तदार की हवस का इल्जाम लगाते हैं और उन्हें बागी करार देते हैं।

(अल-इयाजु बिल्लाहि तआला)

और वह लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के प्यारे महबूब दानाए ख़िफाया व गुयूब जनाब अहमदे मुज्ताबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शान में गुस्ताखियां व बेअदबी करते हैं, उन के इल्म को बच्चों, पागलों और जानवरों के इल्म के बराबर बताते हैं।

(हिफ़जुल ईमान:8)

और शैतान व मलकुल मौत से हुज़ूर का इल्म कम ठहराते हैं।

(बराहीने कातिआ:51)

तो ऐसे लोग अगर हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर इक्तदार की हवस का इल्जाम लगाएं और उन को बागी करार दें तो कोई तअज्जुब नहीं कि अल्लाह के प्यारों की तौहीन व गुस्ताखी यही उन का मज़हब है। हुज़ूर और उन के अहले बैत की मुहब्बत जो मदारे ईमान है, इस से उन के कुलूब (दिल) ख़ाली हैं, उन के दिलों में ईमान नहीं कि ईमान वाले कभी ऐसी बकवास नहीं कर सकते।

खुदाए अज़्ज़ व जल्ल उन को ईमान अता फरमाए, यज़ीद पलीद जैसे फासिक व फाजिर की मुहब्बत और हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बुग़ज़ व अदावत से उन के दिलों को पाक फरमाए और इमामे आली मक़ाम की मुहब्बत उन को नसीब फरमाए ताकि उन की समझ में आ जाए कि:

तेग़ बहरे इज़्ज़ते दीन अस्त व बस

मक्सदे ऊ हिफ़जे आईन अस्त व बस

बहरे हक़ दर खाको-खूं ग़ल्लीदा अस्त ..

पस बिनाए ला इलाह गरदीदा अस्त

(डॉ० इक़बाल)

एक मर्तबा फिर आप हज़रात बुलंद आवाज़ से रहमते आलम, नूरे

मुजस्सम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम की आल व अस्हाब पर दुरुदो-सलाम का नज़ाना पेश करें।

اللهم صل على سيدنا محمد وعلى آله واصحابه وازدك وسلم

अल्लाहुम्म सल्लि अला सैय्यिदिना मुहम्मदिंव व अला आलिही व
अस्हाबिही व बारिक् व सल्लिम।

आयते करीमा **قُلْ لَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ وَآخِرُ الْأَسْوَءَةِ فِي الْآرِثِي** की तफ्सीर में हज़रत अल्लामा इमामे राज़ी रहमतुल्लाहि तअ़ाला अलैहि तफ्सीर कश्शाफ से एक तवील हदीस नक़ल करते हैं कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **مَنْ مَاتَ عَلَى حُبِّ آلِ مُحَمَّدٍ** जो अहले बैत की मुहब्बत पर फौत हुआ उस ने शहादत की मौत पाई। और फरमाया: **الْأَوْثَمُ مَاتَ عَلَى حُبِّ آلِ مُحَمَّدٍ مَاتَ مَغْفُورًا** आगाह हो जाओ! जो शख्स अहले बैत की मुहब्बत में फौत हुआ वह इस हाल में फौत हुआ कि उस के गुनाह बख़्श दिये गए। फिर फरमाया: **لَاَوْثَمُ مَاتَ** सुन लो! जो शख्स अहले बैत की मुहब्बत पर फौत हुआ वह ताइब हो कर फौत हुआ। और फरमाया: **الْأَوْثَمُ مَاتَ عَلَى** खबरदार होकर सुन लो! जो शख्स अहले बैत की मुहब्बत पर फौत होगा वह मुकम्मल ईमान के साथ फौत होगा। फिर फरमाया: **الْأَوْثَمُ مَاتَ عَلَى حُبِّ آلِ مُحَمَّدٍ بَشْرَةً مَلَكَ الْمَوْتُ بِالْحَقِّ ثُمَّ** कान खोल कर सुन लो! जो शख्स अहले बैत की मुहब्बत पर फौत हुआ उसे हज़रत इज़ाईल अलैहिस् सलाम और फिर मुन्कर नकीर जन्नत की बशारत देते हैं। और फरमाया: **الْأَوْثَمُ مَاتَ عَلَى حُبِّ آلِ مُحَمَّدٍ يَرُثُ** आगाह हो जाओ! जो शख्स अहले बैत की मुहब्बत पर फौत हुआ उसे ऐसी इज़्ज़त के साथ जन्नत खाना किया जाता है जैसे दुल्हन दुल्हा के घर भेजी जाती है। फिर फरमाया: **الْأَوْثَمُ مَاتَ عَلَى حُبِّ آلِ مُحَمَّدٍ قُبِعَ لَهُ فِي قَبْرِهِ بَابٌ إِلَى الْجَنَّةِ** जान लो! जो शख्स अहले बैत की मुहब्बत पर फौत हुआ उस की क़ब्र में जन्नत के दो दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। और फरमाया: **الْأَوْثَمُ مَاتَ عَلَى حُبِّ آلِ مُحَمَّدٍ يَجْعَلُ اللَّهُ قَبْرَهُ مَرَارَ**

مَلَايَكَةُ الرَّحْمَةِ आगाह हो जाओ! जो शख्स अहले बैत की मुहब्बत पर फौत हुआ अल्लाह तआला उस की कब्र को मलाइकए रहमत की जियारत गाह बना देता है। फिर उस के बाद आकाए दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **الْأَوْثَمُنُ مَاتَ عَلَى حُبِّ آلِ مُحَمَّدٍ** खबरदार होकर सुन लो! जो शख्स अहले बैत की मुहब्बत पर फौत हुआ वह मस्तके अहले सुन्नत व जमाअत पर फौत हुआ।
(तफ्सीरे कबीर: 7/390)

यह सारी खूबियां और बशारतें उन लोगों के लिये हैं जो अहले बैते नुबुव्वत व खानदाने रिसालत से मुहब्बत रखते हैं। और जो लोग कि इन हजरात से दुश्मनी और बुग़ज़ व अदावत रखते हैं उन का हाल क्या होगा इस के बारे में सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं: **الْأَوْثَمُنُ مَاتَ عَلَى بُغْضِ آلِ مُحَمَّدٍ حَاءَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَكُونًا بَيْنَ عَيْنَيْهِ إِيسَ: مِنَ رَحْمَةِ اللَّهِ الْآَوْثَمُنُ مَاتَ عَلَى بُغْضِ آلِ مُحَمَّدٍ مَاتَ كَافِرًا الْآَوْثَمُنُ مَاتَ عَلَى بُغْضِ آلِ مُحَمَّدٍ لَمْ يَشْمُ رِاحَةَ الْحَيَةِ** यानी खबरदार होकर सुन लो! जो शख्स अहले बैत की बुग़ज़ व अदावत पर मरा, वह कियामत के दिन इस हाल में आएगा कि उस की दोनों आंखों के दरमियान लिखा होगा “अल्लाह तआला की रहमत से ना उम्मीद” और आगाह हो जाओ! जो शख्स अहले बैत के बुग़ज़ व अदावत पर मरा वह काफिर मरा। और कान खोल कर सुन लो! जो शख्स अहले बैत की बुग़ज़ व अदावत पर मरा वह जन्नत की खुशबू से महरूम कर दिया जाएगा।
(तफ्सीरे कबीर: 7/39)

पूरी हदीस शरीफ में आले मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम) का तर्जमा अहले बैत इस लिये किया गया कि अहले बैत के आले रसूल होने में किसी का इख़्तिलाफ नहीं और दूसरों का आले रसूल होना इख़्तिलाफी है।

हजरात अल्लामा इमाम राजी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि तहरीर फरमाते हैं, बाज़ लोगों ने कहा कि आल से मुराद आप के करीबी रिश्तेदार हैं और बाज़ लोगों ने कहा कि वह आप की उम्मत हैं। अगर

हम आल को करीबी रिश्तेदारों पर महमूल करें तो अहले बैत ही आले रसूल हैं और अगर उस उम्मत पर महमूल करें जिस ने आप की दअवत व तब्लीग को कबूल किया तो भी अहले बैत आले रसूल में दाखिल हैं। साबित हुआ कि वह बहर सूरत आले रसूल हैं। और दूसरों का हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की आल में दाखिल होना इख्तिलाफी है। (तफसीरे कबीर:7/39)

खुलासए कलाम यह है कि अहले बैते किराम की मुहब्बत में फीत होने वाला अल्लाह व रसूल का प्यारा है और उन की दुश्मनी में मरने वाला अल्लाह व रसूल का दुश्मन है। जल्ल जलालुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम।

अहले बैते नुबुव्वत में से हज़रत अली कर्मल्लाहु तआला वज्हुल करीम का मुफस्सल बयान हो चुका है। अब हज़रत फातिमा ज़हरा और हज़रते हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के कुछ फज़ाइल और हालात अलग-अलग मुलाहेज़ा फरमाएं।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा

नाम व लक़ब और साले पैदाइश

आप का नाम “फातिमा” और लक़ब “ज़हरा” व “बतूल” है। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की साहिब ज़ादियों में सब से छोटी लेकिन सब से ज़्यादा प्यारी और लाडली हैं। आप की पैदाइश के साल में इख्तिलाफ है, बाज़ लोगों ने कहा कि जब नबीए करीम अलैहि अफज़लुस् सलवाति व अक्मलुत तस्लीम की उम्र शरीफ 41 बरस की थी, आप पैदा हुईं। और कुछ लोगों ने लिखा है कि ऐलाने नुबुव्वत से एक साल कबल उन की विलादत हुई। और अल्लामा इब्ने जौज़ी ने तहरीर फरमाया है कि ऐलाने नुबुव्वत से पांच साल पहले जब ख़ानाए कअ़बा की तामीर हो रही थी, आप पैदा हुईं।

आप का निकाह

मशहूर रिवायत के मुताबिक 18 साल और बाज़ रिवायतों के मुताबिक साढ़े पन्द्रह साल की उम्र सन् दो हिजरी में उन का निकाह शेरे खुदा अली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ हुआ।

इमामे नसई की रिवायत है कि पहले हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने हज़रत फातिमा ज़ह्रा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से निकाह करने के बारे में पैग़ाम भेजा। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मन्ज़ूर नहीं फरमाया। फिर हज़रत अली कर्मल्लाहु तआला वन्हहुल करीम ने प्याम भेजा तो हुज़ूर ने उनका निकाह हज़रत अली से कर दिया। (मिशकात शरीफ:565)

महर कि जिस पर अक्वे अक्दस हुआ, चार सौ मिस्क़ाल चांदी थी यानी पूरे एक सौ साठ रुपये भर। (फ़तावा रज़वियह:5/325)

आप का जहेज़

शहंशाहे कौनैन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपनी प्यारी और लाडली बेटी को जो जहेज़ दिया वह बान की एक चारपाई थी और चमड़े का एक गद्दा जिस में रुई की जगह पर खजूर के पत्ते भरे हुए थे और एक छागल, एक मशक, दो चक्कियां और मिट्टी के दो घड़े। (सियरुस् सहाबियात:100)

अब तक हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के पास रहते थे, शादी के बाद अलग घर की ज़रूरत हुई तो हज़रत हारिसा बिन नोमान अंसारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपना एक मकान उन को दे दिया।

जब हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा उस नए घर में गईं तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम उन के यहां तशरीफ ले गए, दरवाज़ा पर खड़े होकर इजाज़त तलब की फिर अन्दर गए। एक बरतन में पानी मंगवा कर दोनों हाथ उस में डाला और वह पानी

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सीने और बाजू पर छिड़का फिर हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को बुला कर उनपर छिड़का और फरमाया कि मेरे खानदान में जो शख्स सब से बेहतर है मैं ने उस के साथ तुम्हारा निकाह किया है। (ज़रकानी वगैरा)

आप की घरेलू ज़िंदगी

शहंशाहे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की साहिब जादी होने के बावजूद हज़रते फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा अपने घर का कारोबार खुद करती थीं, झाड़ू अपने हाथ से देती थीं, खुद खाना पकाती थीं बल्कि चक्की भी अपने हाथ से पीसती थीं और मश्क में पानी भर कर लाया करती थीं जिस से हाथ पर छाले और बदन पर गट्टे पड़ गए थे। एक बार माले ग़नीमत में कुछ बांदी व गुलाम आए हुए थे, आप ने डरते डरते हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से घरेलू कारोबार के लिये एक लौंडी मांगी और हाथ के छाले दिखाए तो हुज़ूर ने फरमाया जाने पियर! बदर के यतीम बच्चे तुम से पहले इस के मुस्तहिक हैं। (सियरुस सहाबियात)

और एक रिवायत में यूँ है कि आप ने गुलाम तलब किया तो हुज़ूर ने फरमाया बखुदा ऐसा नहीं हो सकता कि मैं तुम्हें गुलाम अता कर दूँ और अहले सुफ्फा भूक के सबब पेट पर पत्थर बांध रहे हों। (बरकाते आले रसूल)

आप के फज़ाइल

हज़रत सैयिदा फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के फज़ाइल में बेशुमार हदीसों वारिद हैं जिन में से चन्द रिवायतें मुलाहेज़ा हों।

बुखारी और मुस्लिम की रिवायत है कि सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **فَاطِمَةُ بِضْعَةٌ مِنِّي لَمَنْ أَغْضَبَهَا أَغْضَبْتَنِي وَفِي رِوَايَةٍ أُخْرَى أَنِّي مَا أَرَاهَا وَتَوَدَّعْتُ مَا أَكَلَهَا** यानी फातिमा मेरे गोشت का एक टुकड़ा है

तो जिस शख्स ने उसे ग़ज़बनाक किया उस ने मुझे ग़ज़बनाक किया। और एक रिवायत में है कि नाराज़ करती है मुझ को वह चीज़ जो फातिमा को नाराज़ करती है और अज़िय्यत (तक्लीफ) देती है मुझ को वह चीज़ जो फातिमा को अज़िय्यत देती है। (मिशकात शरीफ:568)

लिहाज़ा जिस ने हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ज़हेर दिया और जिन लोगों ने हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को करबला के रेगिस्तान में शहीद किया उन लोगों ने बेशक हज़रत फातिमा को और हुज़ूर को अज़िय्यत दी। और हुज़ूर को अज़िय्यत देना अल्लाह को अज़िय्यत देना है। और अल्लाह व रसूल को अज़िय्यत (तक्लीफ) देने वाले पर दुनिया व आखिरत में अल्लाह की लअनत है। इरशादे खुदावंदी है: **إِنَّ الَّذِينَ يُؤْذُونَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ لَعَنَهُمُ اللَّهُ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ** यानी बेशक जो लोग अल्लाह और उस के रसूल को अज़िय्यत देते हैं दुनिया व आखिरत में उन लोगों पर अल्लाह की लअनत है और उन के लिये ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है।

(पारा:22, रुकूअ:4)

और नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं: **فَاطِمَةُ سَيِّدَةُ نِسَاءِ أَهْلِ الْحَقِّ** यानी हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जन्नती औरतों की सरादर हैं। (बुखारी शरीफ:1/532)

और इब्ने अब्दुल बर रिवायत करते हैं रसूले करीम अफज़लुस सलात व अकमलुत् तस्लीम ने हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फरमाया: **يَا بَيْتَةَ الْأَنْرَضِينَ أَنْتِ سَيِّدَةُ نِسَاءِ الْعَالَمِينَ** यानी ऐ बेटी! तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि तुम जहान की औरतों की सरदार हो? हज़रत फातिमा ने अर्ज किया: **يَا أَبَتِ فَايَزٍ مَنْزِلُكُمْ** अब्बा जान! फिर हज़रत मरयम का क्या मक़ाम है? हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **وَأَنْتِ سَيِّدَةُ نِسَاءِ عَالَمِيهَا** वह अपने ज़माने की सरदार हैं।

(अशशरफुल मोअब्बद:54)

अल्लामा नब्बहानी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि तहरीर फरमाते हैं

कि बहुत से मुहक्किनी जिन में अल्लामा तकीउद्दीन सुबुकी, अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती, अल्लामा बदरुद्दीन जरकशी और अल्लामा तकीउद्दीन मक्रेजी शामिल हैं, तसरीह फरमाते हैं कि हज़रत फातिमा जहान की तमाम औरतों से यहां तक कि हज़रत मरयम से भी अफ़ज़ल हैं।

(अश्शफ़ुल मोअब्बद:54)

और अल्लामा इब्ने दाऊद से जब इसके बारे में सवाल किया गया तो उन्होंने ने फरमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा को अपने जिस्म का टुकड़ा फरमाया तो मैं किसी को हुज़ूर के पारए जिस्म के बराबर नहीं करार दे सकता।

(बरकाते आले रसूल:122)

डॉ० इक़बाल ने बहुत खूब कहा है:

मरयम अज़ यक निस्बते ईसा अज़ीज़
व ज़ सेह निस्बत हज़रते ज़हरा अज़ीज़
नूर चश्मे रहमतुल् लिल् आलमीं
आं इमामे अव्वलीं व आखिरीं
बानवे आं ताजदारे हल् अता
मुरतज़ा, मुश्किल् कुशा, शेरे खुदा
मादरे आं मरकज़े परकारे इश्क
मादने आं फातिमा सालारे इश्क

और हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत अली कर्मल्लाहु तआला वज्हहुल करीम ने अर्ज किया या रसूलल्लाह! اَللّٰهُ اَحَبُّ اِلَيْكَ اَمَ فَاْتِمَةُ हम में कौन आप को ज़्यादा महबूब है मैं या फातिमा? हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: فَاْتِمَةُ اَحَبُّ اِلَيَّ مِنْكَ وَاَنْتَ اَعْرَضَ عَنْهَا फातिमा मुझे तुम से ज़्यादा महबूब है और तुम मेरे नज़दीक उन से ज़्यादा इज़्ज़त वाले हो। (अश्शफ़ुल मोअब्बद:53)

और हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि कियामत के दिन एक निदा करने वाला बातिने अर्श से

निदा करेगा: يَا أَهْلَ الْحَمَمِ تَكْسُوا رُؤُوسَكُمْ وَغَضُّوا أَبْصَارَكُمْ حَتَّى تَمُرَّ فَاطِمَةُ بَيْنَ مُحَمَّدٍ عَلَى الصَّرَاطِ यानी ऐ महशर वालो! अपने सरो को झुका लो और अपनी आंखों को बन्द कर लो ताकि फातिमा बिन्ते मुहम्मद सल्लल्लाहु तअलाला अलैहि व सल्लम पुल सिरात से गुजर जाएं, فَتَمُرُّ مَعَ سَبْعِينَ أَلْفَ حَارِيَّةٍ तो हजरत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तअलाला अन्हा सत्तर हजार हूरों के झुरमुट में बिजली की कौन्द की तरह पुल सिरात से गुजर जाएंगी। (सवाइके मुहर्रक़ा:116)

और इमामे नसई फरमाते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तअलाला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया: إِنَّ ابْنَتِي فَاطِمَةَ حَوْرَاءُ أَفْيُولُ لَمْ تَحِضْ وَلَمْ يَأْتِهَا يَمَنٌ يَمَنٌ यानी मेरी बेटी फातिमा इंसानी हूर है जिसे कभी हैज़ नहीं आया। (अश्शफुल मोअब्बद:54)

हजरत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तअलाला अलैह ख़साइसे कुबरा में तहरीर फरमाते हैं कि हजरत फातिमा रज़ियल्लाहु तअलाला अन्हा की ख़ुसूसियत यह है कि उन्हें कभी हैज़ नहीं आता था। जब उन के यहां बच्चा पैदा होता था तो एक घड़ी के बाद निफ़ास से पाक हो जातीं यहां तक कि उन की नमाज़ कज़ा न होती, इसी लिये उन का नाम ज़हरा रखा गया। और जब उन्हें भूक महसूस हुई तो नबीए अकरम सल्लल्लाहु तअलाला अलैहि व सल्लम ने उन के सीने पर दस्ते मुबारक रखा तो उस के बाद उन्हें भूक कभी महसूस नहीं हुई। जब उन के विसाल का वक़्त करीब आया तो उन्होंने ने खुद गुस्ल किया और वसियत की कि कोई उन्हें मुन्कशिफ न करे। चुनांचे हजरत अली रज़ियल्लाहु तअलाला अन्हु ने उन्हें उसी गुस्ल के साथ दफन कर दिया। (लेकिन फ़तावा रज़वियह:4/4 पर है कि आपको गुस्ल दिया गया)।

(बरक़ाते आले रसूल:123)

आप की वफ़ात

सरकारे अक़्दस सल्लल्लाहु तअलाला अलैहि व सल्लम के विसाल फरमाने का आप को ऐसा सख़्त सदमा हुआ कि इस वाक़िआ के बाद

कभी आप हंसती हुई नहीं देखी गई, यहां तक कि छः माह बाद 3 रमजानुल मुबारक 11 हिजरी मंगल की रात में आप ने वफात पाई इस तरह अल्लाह के महबूब दानाए खिफा व गुयूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की पेशीन गोई पूरी हुई कि मेरे खानदान में सब से पहले तुम ही आकर मुझ से मिलोगी।

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की तज़्हीज़ व तक्फ़ीन (कफन-दफन) में एक खास किस्म की जिदत की गई, इस लिये कि उस ज़माने में रेवाज यह था कि मर्दों की तरह औरतों का जनाज़ा भी बेपर्दा निकाला जाता था मगर हज़रत सैयिदा के मिज़ाजे अक्दस में चूँकि इन्तिहाई शर्म व हया थी इस लिये उन्होंने ने कबले वफात हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बीवी हज़रत अस्मा बिनते कैस रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से फरमाया कि खुले हुए जनाज़े में औरतों की बेपर्दगी होती है जिसे मैं नापसंद करती हूँ, तो उन्होंने ने हज़रत सैयिदा के लिये लकड़ियों का एक गहवारा बनाया जिसे देख कर आप बहुत खुश हुईं। औरतों के जनाज़े पर आज कल जो पर्दा लगाने का दस्तूर है इसकी इब्तिदा आप ही से हुई। हज़रत अली या हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने आप की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई और सहीह व मुख्तार कौल यही है कि आप जन्नतुल बक़ीअ में मदफून हुईं।

(मदारिजुन् नुबुव्वत वगैरा)

आप की औलाद

हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के छः औलाद हुईं। तीन साहिब ज़ादे, हज़रत हसन, हज़रत हुसैन और हज़रत मोहसिन और तीन साहिब ज़ादियाँ, हज़रत उम्मे कुल्सूम, हज़रत जैन्नब और हज़रत रुक़ैय्या रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम। हज़रत मोहसिन और हज़रत रुक़ैय्या तो बचपन ही में इन्तिक़ाल कर गए। हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का निकाह अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से हुआ जिन से एक साहिब ज़ाद हज़रत ज़ैद

और एक साहिब ज़ादी हज़रत रुक़ैय्या पैदा हुई। रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा। और तीसरी साहिब ज़ादी जो हज़रत ज़ैनब थीं उन का निकाह हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफर से हुआ। रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा।

सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की औलाद का सिलसिला कियामत तक हज़रत सैयिदा फातिमा ही के साहिब ज़ादगान से जारी रहेगा। रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम।

उस बतूल ज़िगर पारए मुस्तफा
हुजला आराए इफ्फत पे लाखों सलाम
जिस का आंचल न देखा महो-महर ने
उस रिदाए नज़ाहत पे लाखों सलाम
सैयिदा ज़हरा तैय्यिबा ताहिरा
जाने अहमद की राहत पे लाखों सलाम

अब कबूल इसके कि मैं निवासए रसूल हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का जिक्रे जमील करूँ आप सब हज़रत सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उन की आल व अस्हाब और अहले बैते किराम पर निहायत अक़ीदत व मुहब्बत के साथ एक बार बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ का नज़्मना पेश करें।

اللهم صل على سيدنا ومولانا محمد وعلى

واصحابه واهل بيته وبارك وسلم

अल्लाहुम्म सल्लि अला सैयिदिना व मौलाना मुहम्मदिं व अला आलिही व अस्हाबिही व अहलि बैतिही व बारिक् व सल्लिम।

☆☆☆

अमीरुल मोमिनीन हज़रत इमामे हसन

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

आप 15 रमज़ानुल मुबारक 3 हिजरी में पैदा हुए। रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फरमाया कि इस बच्चे का नाम रखो। उन्होंने ने अर्ज किया या रसूलल्लाह! इस का नाम आप रखें। हुज़ूर ने फरमाया मैं इस बच्चे का नाम वह रखूंगा जो खुदाए तआला फरमाएगा, तो हज़रते जिब्रील अलैहिस् सलाम नाज़िल हुए और अर्ज किया या रसूलल्लाह! खुदाए अज़्ज़ व जल इस साहिब ज़ादा की पैदाइश पर आप को मुबारकबाद पेश करता है और फरमाता है कि इस का नाम हज़रत हारून अलैहिस्सलाम के साहिब ज़ादे शब्बर का नाम रखो जिस के मअना हैं हसन। तो हुज़ूर ने आप का नाम हसन रखा और कुन्नियत अबू मुहम्मद। फिर पैदाइश के सातवें दिन आप का अक़ीका किया, बाल मुंडवाए और हुक्म फरमाया कि बालों के वज़न बराबर चांदी सदका की जाए।

(नुज़हतुल मजालिस वगैरा)

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का विसाल हुआ तो उस वक़्त आप की उम्र सिर्फ साढ़े सात साल की थी, इसके बा वजूद आप से बहुत सी हदीसों मरवी हैं। साहिबे तल्कीह ने आप का ज़िक्र उन सहाबा में किया है कि जिन से तेरह हदीसों रिवायत की गई हैं। साढ़े सात साल की उम्र ही क्या होती है, उस वक़्त इतनी हदीसों का याद रखना और नक़ल करना आप के हाफ़िज़े का कमाल है।

आप शक़ल व सूरत में अपने नाना जान प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से बहुत मुशाबह थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं: *أَحْسَنُ أَشْبَهَ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا تَيْنَ الصُّغُرَى إِلَى الرَّاسِ* यानी हज़रत हसन (रज़ियल्लाहु तआला अन्हु) सर से लेकर सीने तक रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से बहुत मुशाबह हैं,

وَالْحُسَيْنُ أَثْبَتَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَا كَانَ اسْفَلَ مِنْ ذَلِكَ और हज़रते हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के जिस्मे अक्दस के जेरीं (निचले) हिस्से से बहुत मुशाबह हैं। आला हज़रत रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं:

एक सीना तक मुशाबह एक वहां से पांव तक
हुस्ने सिबतैन उन के जामों में है नोशा नूर का
साफ शक्ले पाक है दोनों के मिलने से अयां
खते तौ अम् में लिखा है यह दो बरका नूर का

और इरशाद फरमाते हैं:

मादूम न था साया-ए-शाहे सकलैन
उस नूर की जल्वागाह थी ज़ाते हसनैन
तम्सील ने उस साए के दो हिस्से किये
आधे से हसन बने हैं, आधे से हुसैन

आप के फज़ाइल

हज़रत इमामे हसन मुज्ताबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के फज़ाइल में बहुत सी हदीसों मरवी हैं जिन में कुछ पेश की जाती हैं।

हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है उन्होंने ने फरमाया कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को देखा कि आप मिम्बर पर रौनक अपरोज़ हैं और हज़रत हसन आप के पहलू में हैं। आप कभी सहाबा की तरफ तवज्जोह फरमाते हैं और कभी उन की तरफ। और फरमाया: اِنِّى هَذَا سَيِّدٌ وَلَقَدْ لَعَلَّ اللَّهُ اَنْ मेरा बेटा यह सरदार है। उम्मीद है कि अल्लाह तआला इस के ज़रिये मुसलमानों के दो गिरोहों के दरमियान मुसालहत (सुलह) करा देगा। (बुखारी शरीफ: 1/530)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने फरमाया कि मैं ने देखा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम

सज्दे में होते और हज़रत हसन आते तो आप की गर्दने मुबारक या पुश्ते मुबारक पर सवार हो जाते तो आप उन्हें उतारते नहीं थे, वह खुद ही उतर जाते थे। और मैं ने देखा कि आप रुकूअ की हालत में होते तो अपने पैरों के दरमियान इतना फासिला कर देते कि हज़रत हसन उनके दरमियान से दूसरी तरफ गुज़र जाते। (अश्शफ़ुल मोअब्बद:60)

और हज़रत बिन बरा आजिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैं ने रसूले अक़रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को देखा कि आप हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपने कंधे पर बिठाए हुए हैं और दुआ फरमा रहे हैं: **اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اُجِئْتُ نَاجِئَةً** यानी ऐ अल्लाह! मैं इस से मुहब्बत रखता हूँ तू भी इस से मुहब्बत रख।

(बुखारी शरीफ:1/520)

और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है फरमाते हैं कि रसूले करीम अलैहि अफ़ज़लुस् सलातु व अक़मलुत् तस्लीम हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपने कंधे पर बिठाए हुए थे किसी सहाबी ने कहा: **يَعْمُ الْمَرْكَبُ رَكْبَتَ يَسْأَلُ** ऐ साहिब ज़ादे! तेरी सवारी बहुत अच्छी है। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **وَيَعْمُ الرَّايِبُ مُر** और सवार भी तो बहुत अच्छा है। यानी ऐ सहाबी! यह तो तू ने देखा कि सवारी कितनी अच्छी है लेकिन यह भी तो देख कि सवार कितना अच्छा है। (मिशकात शरीफ:571)

एक दिन हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास कुरैश और दीगर कबीलों के बड़े-बड़े लोग जमा थे, उन्होंने ने फरमाया: मुझे बताओ मां और बाप, चचा और फूफी, खाला और मामू नाना और नानी के ऐतबार से सब से ज़्यादा मोअज़्ज़ कौन शख्स है? हज़रत मालिक बिन अजलान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खड़े हुए और हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तरफ इशारा किया और फरमाया यह सब से अफ़ज़ल हैं। इनके वालिद अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली बिन तालिब हैं। इन की वालिदा सैयिदतुन्निसा हज़रत

फातिमा बिनते रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हैं। इनकी नानी उम्मुल मोमिनीन हज़रत खदीजा बिनते खुवैलिद हैं और नाना नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हैं। इनके चचा हज़रत जाफर हैं जो जन्नत में परवाज़ करते हैं और फूफी हज़रत उम्मे हानी बिनते अबी तालिब हैं और इनके मामूँ और खालाएँ रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साहिब ज़ादे और साहिब ज़ादियाँ हैं। फिर हज़रत मालिक बिन अजलान ने हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से पूछा क्या मैं ने सहीह कहा है? उन्होंने ने फरमाया हाँ, ऐ अल्लाह! यह सच है। (बरकाते आले रसूल:142)

हाकिम की रिवायत है कि हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने बग़ैर सवारी के पैदल 25 हज़ अदा फरमाए हालाँ कि अल्ला किस्म के ऊँट आप के हम्राह होते थे लेकिन आप उन पर सवार नहीं होते थे और पा प्यादा (पैदल) रास्ता तय फरमाते थे। (तारीखुल खुलफा)

आप सखावत में बेमिसाल थे कि बसा औकात एक शख्स को एक एक लाख दिरहम अता फरमा देते थे। इब्ने सअद अली बिन जैद से रिवायत करते हैं कि हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तीन बार आधा-आधा माल खुदा की राह में दे दिया और दो मर्तबा अपना पूरा माल अल्लाह के रास्ते में खर्च कर दिया। (तारीखुल खुलफा)

आप बहुत पड़े बुर्दबार और हलीमुत् तबअ् थे। इब्ने सअद रिवायत करते हैं कि मरवान जब मदीना मुनव्वरा में हाकिम था तो वह मिम्बर पर अलत् ऐलान हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बुरा भला कहता था और हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कमाले तहम्मुल के साथ उस की गुस्ताखियों को बर्दाशत कर लेते थे। और हज़रते हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और मरवान के दरमियाँ गुप्तगू हो रही थी कि उस गुस्ताख ने आप के सामने ही आप को बुरा भला कहना शुरू कर दिया मगर आप खामोश रहे। इस दरमियाँ मरवान ने अपने दाहिने हाथ से नाक साफ की तो हज़रत इमामे हसन

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस से फरमाया अप्सोस तुझे इतना भी नहीं मालूम कि दाहिना हाथ इस काम के लिये नहीं है, बाएं हाथ से नाक साफ करना चाहिये। यह सुन कर मरवान खामोश रहा।

(तारीखुल खुलफा)

अपनी बुराई सुन कर तो आप खामोश रहे लेकिन जब ग़लत बात आप ने देखी तो फौरन तंबीह फरमाई। यह आप की हक़ गोई है, ऐब जोई नहीं। बाज़ मुद्दइयाने इल्म (इल्म का दावा करने वाले) जो तरह-तरह की बुराइयों में मुब्तला हैं इस किस्म की तंबीह को ऐब जोई करार देते हैं। खुदाए अज़्ज़ व जल्ल उन्हें हक़ गोई और ऐब जोई का फर्क समझने की तौफीक़े रफीक़ बरख़्शे। आमीन।

ख़िलाफ़त और उस से दस्तबरदारी

हज़रत अली कर्म्मल्लाहु तआला वज्हेहुल् करीम की शहादत के बाद हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मस्नदे ख़िलाफ़त पर जल्वा अफ़रोज़ हुए। 40 हज़ार एहालियाने कूफ़ा (कूफ़ा वालों) ने आप के दस्ते हक़ परस्त पर बैअत की। आप 6 माह तक मन्सबे ख़िलाफ़त पर फाइज़ रहे। उस के बाद जब हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आप के पास कूफ़ा आए तो मन्द्रजा ज़ैल तीन शतों के साथ आप ने ख़िलाफ़त उन के सुपुर्द करना मन्ज़ूर फरमाया।

1- बर वक़्त अमीरे मुआविया ख़लीफ़ा बनाए जाते हैं लेकिन उन के इन्तेक़ाल के बाद इमाम हसन ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन होंगे।

2- मदीना शरीफ और हिजाज़ व इराक़ वगैरा के लोगों से हज़रत अली कर्म्मल्लाहु तआला वज्हेहुल् करीम के ज़माने के मुतअल्लिक़ कोई मुवाख़ज़ा और मुतालेबा नहीं किया जाएगा।

3- और हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़िम्मे जो दुयून (क़र्ज़) हैं उनकी सब की अदाइगी हज़रत अमीरे मुआविया करेंगे। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।

इन तमाम शर्तों को हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला

अन्हु ने कबूल किया तो आपस में सुलह हो गई और अल्लाह के महबूब दानाए खिफा व गुयूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का वह मोअजिजा जाहिर हुआ जो आप ने फरमाया था कि मेरा यह फर्जन्दे अरजुमन्द मुसलमानों की दो जमाअतों के दरमियान सुलह कराएगा।

हजरत इमामे हसन रजियल्लाहु तआला अन्हु ने इस सुलह के बाद तख्ते खिलाफत हजरत अमीरे मुआविया रजियल्लाहु तआला अन्हु के लिये खाली कर दिया। दस्त बरदारी का यह वाकिआ रबीउल् अव्वल 41 हिजरी में हुआ। (तारीखुल खुलफा)

खिलाफत से दस्त बरदार होना आप के बहुत से हम नवाओं (साथियों) को नागवार हुआ, उन्होंने ने तरह-तरह से आप पर नाराज़गी का इज़हार किया, यहां तक कि बाज़ लोग आप को "आरुल् मुस्लिमीन" कह कर पुकारते तो आप उन से फरमाते "अल्-आरु खैरुम् मिन्नारि" आर, नार से बेहतर है।

अमेरे खिलाफत हजरत मुआविया रजियल्लाहु तआला अन्हु को सुपुर्द करने के बाद आप कूफा से मदीना तैयिबा चले गए और वहीं कियाम पज़ीर रहे। जुबैर बिन नुफैर कहते हैं कि एक रोज़ मैं ने हजरत इमामे हसन रजियल्लाहु तआला अन्हु से अर्ज किया कि लोग कहते हैं कि आप फिर खिलाफत के ख्वास्तगार हैं, आप ने इरशाद फरमाया कि जिस वक़्त अरबों के सर मेरे हाथों में थे यानी अपनी जानें कुर्बान करने के लिये वह मुझ से बैअत कर चुके थे, उस ज़माने में हम जिस से चाहते उन को लड़ा देते, लेकिन मैं उस वक़्त महेज़ अल्लाह की रज़ामन्दी हासिल करने के लिये खिलाफत से दस्तबरदार हो गया और उम्मत मुहम्मदिया अला साहिबिहस् सलातु वत्तहिय्यह का खून नहीं बहने दिया। तो जिस खिलाफत से मैं सिर्फ अल्लाह की रज़ामन्दी हासिल करने के लिये दस्त बरदार हो गया हूं, अब लोगों की खुशी के लिये मैं उसे दोबारा नहीं हासिल कर सकता। (तारीखुल खुलफा)

आप की करामतें

आप की बहुत सी करामतों में से एक करामत यह है कि आप हज के लिये पैदल सफर कर रहे थे कि आप के पैरों में वरम आ गया, आप के किसी गुलाम ने अर्ज किया, काश आप किसी सवारी पर सवार हो जाएं ताकि वरम कम हो जाए, आप ने उस की दरख्वास्त कबूल न की और फरमाया जब तुम मंजिल पर पहुंचोगे तो तुम्हें एक हबशी मिलेगा जिस के पास कुछ तेल होगा, तुम उस से खरीद लेना।

जब मंजिल पर पहुंचे तो हबशी दिखाई दिया, हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने गुलाम से फरमाया यह है वह हबशी जिस के मुतअल्लिक मैं ने बताया था, जाओ और उस से तेल खरीद लाओ और कीमत अदा कर आओ, जैसे ही वह गुलाम हबशी के पास गया और उस से तेल तलब किया तो उस ने पूछा यह तेल किस के लिये खरीद रहे हो? गुलाम ने कहा हज़रत हसन के लिये, रज़ियल्लाहु तआला अन्हु, उस ने कहा मुझे उन के पास ले चलो, मैं उन का गुलाम हूं, जब वह हबशी आप की खिदमत में पहुंचा तो कहा मैं आप का गुलाम हूं, तेल की कीमत नहीं लूंगा, आप बस मेरी बीवी के लिये जो दर्दे-जेह में मुक्तता है, दुआ फरमाएं कि अल्लाह तआला उसे एक सहीहुल अज्जा बच्चा अता फरमाए, आप ने फरमाया अपने घर जाओ, अल्लाह तआला तुम्हें ऐसा ही बेटा अता फरमाएगा जैसा तुम चाहते हो, वह हमारा पैरूकार होगा, हबशी घर गया तो आप के फरमाने के मुताबिक बच्चा पैदा हुआ। (शवाहिदुन् नुबुव्वत:302)

आप की दूसरी मशहूर करामत यह है कि एक बार आप हज़रत जुबैर बिन अल्-अव्वाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के एक फर्जन्द के साथ सफर कर रहे थे कि आप का गुजर खजूरों के एक ऐसे बाग में हुआ कि जिस के सब दरख्त खुश्क हो गए थे, आप ने उसी बाग में डेरा डाल दिया। हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये बाग के एक दरख्त की जड़ में और इब्ने जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के

लिये दूसरे दरख्त की जड़ में फर्श बिछाया गया। हज़रत इब्ने जुबैर ने फरमाया ऐ काश! इस नख़िलस्तान में ताज़ा ख़जूरें होतीं जिन्हें हम खाते। हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया क्या ताज़ा ख़जूरें चाहते हो? हज़रत इब्ने जुबैर ने कहा हां, आप ने दुआ के लिये हाथ उठाया और ज़ेरे लब कुछ कहा जो किसी को मालूम न हुआ, फौरन ख़जूर का एक दरख्त तरी-ताज़ा और बार-आवर हो गया, उस में ताज़ा ख़जूरें लग गईं। उन का साथी शुतरबान बोला, वल्लाह! यह जादू है। हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया यह जादू नहीं है बल्कि फर्ज़न्दे रसूल की दुआए मुस्तजाब का असर है, फिर लोगों ने ख़जूरों को दरख्त से तोड़ा और सब ने ख़ूब शिकम सैर होकर खाया।

(शवाहिदुन् नुबुव्वत:303)

आप की शहादत

इब्ने सअद हज़रत इमरान बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ख़्वाब देखा कि उन की दोनों आंखों के दरमियान “कुल् हुवल्लाहु अंहद” लिखा हुआ है, जब आप ने यह ख़्वाब बयान फरमाया तो अहले बैत बहुत खुश हुए लेकिन जब हज़रत सईद बिन मुसैय्यिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के सामने यह ख़्वाब बयान किया गया तो उन्होंने ने फरमाया कि अगर आप को यह ख़्वाब सच्चा है तो आप की ज़िंदगी के सिर्फ चन्द दिन और बाकी रह गए हैं। यह ताबीर सहीह वाके हुई कि ऐसा ख़्वाब देखने के बाद आप सिर्फ चन्द रोज़ बक़्दै हयात रहे, फिर ज़हेर देकर शहीद कर दिये गए। (तारीख़ुल खुलफ़ा)

ज़हेर ख़ूरानी की तफ़सील यूं बयान की जाती है कि पहले आप को शहद में मिला कर ज़हेर दिया गया जिस से आप के शिकमे मुबारक में दर्द पैदा हुआ, रात भर आप माहिए बेआब (बिना पानी के मछली) की तरह तड़पते रहे, सुबह अपने जड़े अमज़द प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के रौज़ए मुनव्वरा पर हाज़िर हुए, दुआ

फरमाई तो खुदाए अज़्ज़ व जल् ने उन्हें शिफाए कुल्ली अता फरमाई ।

दूसरी बार आप को ज़हेर आलूद खजूरे खिलाई गई, 6-7 खजूरे खाते ही आप को सख्त घबराहट पैदा हुई, अपने भाई हज़रत सैयिदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मकान पर तशरीफ लाए और रात भर बेकरार रहे, सवेरे फिर अपने नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के रौज़ए मुकदसा पर हाज़िर हुए और दुआ फरमाई तो इस बार भी खुदाए तआला की रहमत और उस के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बरकत से ज़हेर का असर जाता रहा ।

बयान किया जाता है कि इस तरह आप को पांच बार ज़हेर हलाहल दिया गया मगर हर बार उस का असर जाइल होता रहा । छठी बार हीरे की कन्नी पिसी हुई आप की सुराही में डाली गई, जिस का पानी पीते ही ऐसा मालूम हुआ कि हलक से नाफ तक फट गया और दिल टुकड़े-टुकड़े हो गया, आप बेकरारी में मुर्गे बिस्मिल की तरह तड़पने लगे, मुसलसल कै होने लगी और दस्त भी जारी हुआ जिस के साथ जिगर और अंतड़ियों के टुकड़े कट कर गिरने लगे ।

वफात के करीब आप के भाई हज़रत सैयिदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आप की खिदमत में हाज़िर हुए और पूछा कि आप को ज़हेर किस ने दिया है? आप ने फरमाया कि तुम उसे कत्ल करोगे? हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया बेशक मैं उसे कत्ल करूंगा, आप ने फरमाया जिस के बारे में मेरा गुमान है अगर हकीकत में वही ज़हेर देने वाला है तो खुदाए जुलजलाल मुन्तकिमे हकीकी (सही इन्तेकाम लेने वाला) है और उस की गिरफ्त बहुत सख्त है । और जिस के बारे में मेरा गुमान है अगर वह ज़हेर देने वाला नहीं है तो मैं नहीं चाहता कि मेरी वजह से कोई बेगुनाह कत्ल किया जाए ।

सुब्हानल्लाह! हज़रत इमामे आली मकाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का फज़लो-कमाल कितना बुलंद व बाला है, आप सख्त तक्लीफ में

मुब्तला हैं, इस्हाले कबदी लाहिक है, आंतों के टुकड़े कट-कट कर निकल रहे हैं और नज़्ज़ की हालत हैं मगर उस वक़्त भी इंसफ का बादशाह अपने इंसफ व अदालत का न मिटने वाला नक्शा सफ़ह तारीख़ पर सबूत फरमाता है और उस की ऐहतियात इजाज़त नहीं देती कि जिस के बारे में गुमान है उस का नाम लेना ग़वारा किया जाए।

वफात के करीब हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने देखा कि हज़रत इमामे हसन को बेकरारी और घबराहट ज़्यादा है, तो आप ने उन की तसल्ली के लिये अर्ज़ किया कि ऐ बिरादरे मोहतरम! यह घबराहट और बेकरारी कैसी है? आप तो अपने नाना सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और अपने बाबा हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास जा रहे हैं, अपनी जद्दए करीमा (नानी जान) हज़रत ख़दीजतुल् कुबरा और वालिदए मोहतरमा हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से मिलेंगे और अपने मामूं हज़रत कासिम और हज़रत ताहिर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से भी मुलाकात करेंगे।

हज़रत इमामे हसन ने फरमाया बिरादरे अज़ीज़! मैं ऐसे अग्र में दाख़िल होने वाला हूं कि जिस की मिस्त में अब तक दाख़िल नहीं हुआ था और मैं अल्लाह की मख़्लूक में से ऐसी मख़्लूक देख रहा हूं कि जिस की मिस्त कभी नहीं देखा। (तारीख़ुल खुलफा)

45 साल छः माह चन्द रोज़ की उम्र में बमक़ाम मदीना तैयिबा 5 रबीउल अव्वल 49 हिजरी में आप ने वफात पाई और जन्नतुल बकीअ में हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पहलू में मदफून हुए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

वह हसन मुज्जबा सैयिदुल् अस्ख़िया
राकिबे दोशे इज़्ज़त पे लाखों सलाम
शहद ख़वारे लुआबे ज़बाने नबी
चाशनी गीर इस्मत पर लाखों सलाम

ज़हेर किस ने दिया

बाज़ लोगों ने लिखा है कि हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बीवी ने आप को ज़हेर दिया था मगर यह लिखना सहीह है या नहीं, इस के बारे में हज़रत सदरुल अफाज़िल मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने जो मोहक्क़क़ाना मज़्मून तहरीर फरमाया है वह मुलाहेज़ा फरमाएं। आप लिखते हैं कि मोवरीख़ीन ज़हेर ख़ूरानी की निस्बत जअ़दा बिनत अशअस बिन कैस की तरफ़ की है और उस को हज़रत इमाम की जौजा बताया है और यह भी कहा है कि यह ज़हेर ख़ूरानी बाग़वाए यज़ीद हुई है और यज़ीद ने उस से निकाह का वादा किया था, इस तमअ (लालच) में आकर उस ने हज़रत इमाम को ज़हेर दिया। लेकिन इस रिवायत को कोई सहीह सनद दस्तयाब नहीं हुई और बग़ैर किसी सनदे सहीह के किसी मुसलमान पर क़त्ल का इल्ज़ाम और ऐसे अज़ीमुश्शान क़त्ल का इल्ज़ाम किस तरह जाइज़ हो सकता है। कतए नज़र इस बात के कि रिवायत के लिये कोई सनद नहीं है और मोवरीख़ीन ने बग़ैर किसी मोतबर ज़रिया या मोअत्तमद हवाले के लिख दिया है, यह ख़बर वाकिआत के लिहाज़ से भी ना काबिले इल्मीनान मालूम होती है। वाकिआत की तहक्कीक़ खुद वाकिआत के ज़माने में जैसी हो सकती है, मुश्किल है कि बाद को वैसी तहक्कीक़ हो, खास कर जबकि वाकिआ इतना अहम हो। मगर हैरत है कि अहले बैते अतूहार के इस इमामे जलील का क़त्ल उस कातिल की ख़बर ग़ैर को तो क्या होती खुद हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को पता नहीं है। यही तारीख़ें बताती हैं कि वह अपने बिरादरे मोअज़्ज़म से ज़हेर दहिन्दा का नाम दरियाफ़्त फरमाते हैं, इस से साफ़ ज़ाहिर है कि हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ज़हेर देने वाले का इल्म न था। अब रही यह बात कि हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु किसी

का नाम लेते, उन्होंने ने ऐसा नहीं किया तो अब जुअदा को कातिल होने के लिये मुअय्यन करने वाला कौन है। हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को या इमामैन के साहिब जादों में से किसी साहब को अपनी आखिर हयात तक जुअदा की ज़हेर ख़ुरानी का कोई सबूत न पहुँचा न उन में से किसी ने उस पर शरई मुवाख़ज़ा किया।

एक और पहलू इस वाकिआ का काबिले लिहाज़ है वह यह है कि हज़रत इमाम की बीवी को ग़ैर के साथ साज़ बाज़ करने की शनीअ तोहमत के साथ मुत्तहिम किया जाता है यह एक बदतरीन तबर्रा है। अज़ब नहीं कि इस हिकायत की बुनियाद ख़ारजियों के इफ़्तिराआत हों जबकि सहीह और मोतबर ज़राए से यह मालूम है कि हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कसीरुत् तज़व्वुज (ज़्यादा निकाह करने वाले) थे और आप ने सौ के करीब निकाह किये और तलाक़ें दीं, अक्सर एक दो शब ही बाद तलाक़ दे देते थे। और हज़रत अमीरुल मोमिनीन अली मुरतज़ा कर्म्मल्लाहु तआला वज्हहुल करीम बार-बार ऐलान फरमाते थे कि इमामे हसन की आदत है, यह तलाक़ दे दिया करते हैं, कोई अपनी लड़की उन के साथ न ब्याहे, मगर मुसलमान बीबियाँ और उन के वालिदैन् यह तमन्ना करते थे कि कनीज़ होने का शर्फ़ हासिल हो जाए। उसी का असर थ कि हज़रत इमामे हसन जिन औरतों को तलाक़ देते थे वह अपनी बाकी जिंदगी हज़रत इमाम की मुहब्बत में शैदाना गुज़ार देती थीं और उनकी हयात का लम्हा-लम्हा हज़रत इमाम की याद और मुहब्बत में गुज़रता था, ऐसी हालत में यह बात बहुत बर्ईद है कि इमाम की बीवी हज़रत इमाम के फ़ैजे सोहबत की क़दर न करे और यज़ीद पलीद की एक तमए फासिद से इमामे ज़लील के क़त्ल जैसे सज़ा जुर्म का इरतिकाब करे। *वल्लाहु अज़लमू बिहकीकतिल् हाल* (सवानेह कर्बला)

ऐब या ख़ूबी

हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का अक्सर एक दो

शब ही के बाद तलाक दे देना ऐब नहीं था। अगर ऐब होता तो फिर कोई औरत उन के निकाह में आने को कबूल न करती और न किसी औरत के खानदान वाले इस पर राजी होते बल्कि यह हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की खूबी थी कि वह लोगों को अपने ज़रिये हुज़ूर पुर नूर शाफ़िए यौमुन् नुशूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की रिश्तेदारी से मुशरफ़ फरमाते थे और मुसलमान बीवियों को खातूने जन्नत हज़रत सैयिदा फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बहू होने की इज़्ज़त बख़्शते थे ताकि यह रिश्ता उन्हें कियामत के दिन काम आए और उन की बख़्शि़श का ज़रिया बन जाए। चुनांचे हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मोहदिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कसूरते तज़व्वुज का सबब दरियाफ्त किया गया तो आप ने फरमाया मैं चाहता हूँ कि बहुत से लोगों को मेरी वजह से पैगम्बरे खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से रिश्ता हो जाए जो कियामत के दिन उन्हें काम आए।

(फतावा अजीज़ियह:1/97)

और मुसलमान भी इसी लालच में अपनी लड़कियां उन के निकाह में देते थे। इब्ने सअद ने लिखा है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ऐलान फरमाया कि ऐ कूफा वालो! हसन के साथ अपनी बेटी की शादी मत करो कि वह तलाक देने के आदी हैं। यह सुनकर एक हमदानी ने कहा, खुदा की क़सम हम उन से अपनी बेटियों की शादी ज़रूर करेंगे जिसे वह चाहें रखें और जिसे चाहें तलाक दे दें।

(तारीखुल खुलफा:139)

एक मर्तबा फिर हम सब लोग मिल कर रसूले काइनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उन की आल व अस्हाब पर झूम-झूम कर दुरूदो-सलाम की डालियां निछावर करें।

اللهم صل على سيدنا ومولانا محمد وعلى الواسطه وبارك وسلم
 अल्लाहुम्म सल्लि अला सैय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिंव
 व अला आलिही व अस्हाबिही व बारिक् व सल्लिम्।

ताजीमे अहले बैत के चन्द वाकिआत

अब हम अहले बैते नुबुव्वत के चन्द वाकिआत आप के सामने पेश करते हैं जिन से जाहिर होगा कि सहाबए किराम और दीगर सल्फे सालिहीन व बुजुगानि दीन, अहले बैते नुबुव्वत की कैसी ताजीम व तकरीम करते थे।

हाफिज़ इब्ने हजर अस्कलानी ने इसाबा में फरमाया, यहया बिन सईद अंसारी उबैद बिन हुनैन से रिवायत करते हैं कि मुझ से हजरत इमामे हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने बयान किया कि मैं हजरत उमर फारूक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास गया, वह मिम्बर पर खुत्बा दे रहे थे। मैं मिम्बर पर चढ़ गया और कहा: **أُتِلَ عَنْ أَبِي** यानी मेरे बाप के मिम्बर से उतरिये और अपने बाप के मिम्बर पर जाइये। हजरत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया: **لَمْ يَكُنْ لِأَبِي مِمْبَرٌ** मेरे बाप का मिम्बर नहीं था। और मुझे पकड़ कर अपने पास बिठा लिया, मैं अपने पास पड़ी हुई कंकरीयों से खेलता रहा। जब आप मिम्बर से उतरे तो मुझे अपने घर ले गए, फिर मुझ से फरमाया कितना अच्छा हो अगर आप कभी-कभी तशरीफ लाते रहें।

(अशशर्फुल मोअब्बद:93)

और हजरत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि एक दिन मैं उन के पास गया, आप हजरत मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से तंहाई में बातें कर रहे थे और अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा दरवाजे पर खड़े थे, इब्ने उमर वापास हुए तो मैं भी उन के साथ वापस हो गया। बाद में जब हजरत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मुलाकात हुई तो उन्होंने ने फरमाया क्या बात है मैं ने आप को नहीं देखा। मैं ने कहा अमीरुल मोमिनीन ! मैं आया था, आप हजरत मुआविया से गुफ्तगू फरमा रहे थे, तो मैं अब्दुल्लाह बिन उमर के साथ वापस आ गया। उन्होंने ने फरमाया आप इब्ने उमर से ज्यादा हकदार हैं, हमारे सरो के बाल अब्दुल्लाह तआला ने

आप की बरकत से उगाए हैं।

(बरकाते आले रसूल:260)

अबुल फरह अस्फहानी उबैदुल्लाह बिन उमर क्वारीरी से रिवायत है कि हम से यहया इब्ने सईद ने सईद बिन अबान करशी से रिवायत की कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के पास तशरीफ ले गए वह नौ उम्र थे, उन की बड़ी-बड़ी जुल्फें थीं, हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उन्हें ऊंची जगह बिठाया, उन की तरफ मुतवज्जह हुए और उन की ज़रूरतें पूरी कीं, जब वह तशरीफ ले गए तो हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की कौम ने उनकी मलामत की कि आप ने एक नौ उम्र बच्चे के साथ ऐसा-ऐसा सुलूक किया, आप ने फरमाया कि मुझे से मोतबर आदमी ने बयान किया गोया कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ज़बान से सुन रहा हूं, आप ने फरमाया: *إِنَّمَا فَاطِمَةُ بَضْعَةٌ مِنِّي يُرِيئِي مَا يُرِيئُهَا* यानी फातिमा मेरी लख्ते जिगर हैं, उन की खुशी का सबब मेरी खुशी का बाइस है। और मैं जानता हूं कि अगर हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा तशरीफ फरमा होतीं तो मैं ने जो कुछ उन के बेटे के साथ किया है इस से वह ज़रूर खुश होतीं।

(बरकाते आले रसूल:261)

शैखे अक्बर सैय्यिदी मुहीउद्दीन इब्ने अरबी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपनी तस्नीफ “मुसामिरातुल अखियार” में अपनी सनदे मुत्तसिल से हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक से रिवायत करते हैं कि बाज़ मुतक़द्दिमीन को हज की बड़ी आरजू थी, उन्होंने ने फरमाया मुझे एक साल बताया गया कि हाजियों का एक काफिला बग़दाद शरीफ में आया है। मैंने उनके साथ हज के लिये जाने का इरादा किया, पांच सौ दीनार लेकर मैं बाज़ार की तरफ निकला ताकि हज की ज़रूरियात खरीद लाऊं, मैं एक रास्ते पर जा रहा था कि एक औरत मेरे सामने आई, उस ने कहा कि अल्लाह तआला तुम पर रहम फरमाए, मैं सैय्यद ज़ादी हूं, मेरी बच्चियों के लिये तन ढांपने का कपड़ा नहीं है और आज चौथा दिन है कि मैं ने कुछ नहीं खाया है, उस की गुफ्तगू मेरे दिल में उतर

गई, मैं ने वह पांच सौ दीनार उस के दामन में डाल दिये और उन से कहा कि आप अपने घर जाएं और इन दीनारों से अपनी जरूरियात पूरी करें। मैं ने अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया कि उस ने मुझ को एक सैय्यद जादी की इमदाद की तौफीक अता फरमाई और वापस आ गया। मैं कई साल हज कर चुका था। अल्लाह तआला ने इस बार हज पर जाने का शौक मेरे दिल से निकाल दिया, दूसरे लोग चले गए, हज किया और वापस चले आए। मैं ने सोचा कि दोस्तों से मुलाकात कर आऊं और उन्हें मुबारकबाद पेश कर दूं। चुनांचे मैं गया, जिस दोस्त से मिलता उसे सलाम करता और कहता कि अल्लाह तआला तुम्हारा हज कबूल फरमाए और तुम्हारी कोशिश की बेहतरीन जज़ा (बदल) अता फरमाए तो वह मुझ से कहता कि अल्लाह तआला तुम्हारा भी हज कबूल फरमाए। कई दोस्तों ने इसी तरह कहा और जब रात को सोया तो नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ज़ियारत हुई, आप ने फरमाया लोग तुम्हें हज की जो मुबारकबाद पेश कर रहे हैं उस पर तअज्जुब न करो, तुम ने मेरी एक कमज़ोर और ज़रूरतमंद बेटी की इमदाद की तो मैं ने अल्लाह तआला से दुआ की, उस ने हू बहू तुझ जैसा एक फिरिश्ता पैदा फरमाया जो हर साल तुम्हारी तरफ से हज करता रहेगा।

(बरकाते आले रसूल:263)

शैख अदवी ने अपनी किताब “मशारिकुल अन्वार” में इब्ने जौज़ी की तस्नीफ “मुल्तक़ित” से नक़ल किया कि बलख में एक अलवी क़ियाम पज़ीर (रहता) था, उस की बीवी और चन्द बेटियां थीं, कज़ाए इलाही से वह शख्स फौत हो गया। उन की बीवी कहती हैं कि मैं शमातते अज़दा (दुश्मनों की सख्ती) के खौफ से समरकंद चली गई, मैं वहां सख्त सर्दी में पहुंची, मैं ने अपनी बेटियों को मस्जिद में ले जाकर बिठा दिया और खुद खुराक की तलाश में निकल पड़ी, मैं ने देखा कि लोग एक शख्स के गिर्द जमा हैं, मैं ने उस के बारे में दरियाफ्त किया तो लोगों ने बताया कि यह रईसे शहर है, मैं उस के पास पहुंची और अपना हाले ज़ार बयान किया, उस ने कहा कि अपने अलवी होने पर

गवाह पेश करो, उस ने मेरी तरफ कोई तवज्जीह नहीं की, मैं मस्जिद की तरफ वापस चल पड़ी, मैं ने रास्ते में बुलंद जगह पर एक बूढ़ा बैठा हुआ देखा जिस के गिर्द कुछ लोग जमा थे। मैं ने पूछा यह कौन है? लोगों ने कहा यह मुहाफिज़े शहर है और मजूसी है। मैं ने सोचा मुम्किन है इस से कुछ फाइदा हासिल हो जाए। चुनांचे मैं उस के पास पहुंची अपनी सरगुज़िशत बयान की और रईसे शहर के साथ जो वाकिआ पेश आया था उसे भी बयान किया और उसे बताया कि मेरी बच्चियां मस्जिद में हैं और उनके खाने पीने के लिये कोई चीज़ नहीं है। उसने अपने गुलाम को बुलाया और कहा अपनी मालिका (यानी मेरी बीवी) से कह कि वह कपड़े पहन कर और तैयार होकर आ जाए। चुनांचे वह आ गई और उस के साथ चन्द कनीज़ें भी थीं, बूढ़े ने अपनी बीवी से कहा इस औरत के साथ फुलां मस्जिद में चली जा और उस की बेटियों को अपने घर ले आ, वह मेरे साथ गई और बच्चियों को अपने घर ले आई, शेख ने अपने घर में हमारे लिये अलग रिहाइशगाह मुकर्रर किया, गुस्ल का इन्तिज़ाम किया, हमें बेहतरीन कपड़े पहनाए और तरह-तरह के खाने खिलाए।

जब आधी रात हुई तो रईसे शहर ने ख्वाब में देखा कि कियामत काइम हो गई है और लिवाउल हम्द रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सरे अन्वर पर लहरा रहा है, आप ने उस रईस से ऐराज़ फरमाया, उस ने अर्ज किया हुजूर! आप मुझ से ऐराज़ फरमा रहे हैं हालां कि मैं मुसलमान हूं। नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: اَوَسَّ النَّبِيُّ عِنْدِي اَنَّكَ مُسْلِمٌ अपने मुसलमान होने पर गवाह पेश करो, वह शख्स हैरतजदा रह गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: तू ने उस अलवी औरत से जो कुछ कहा था उसे भूल गया, यह महल जो तुम्हारी निगाहों के सामने है, यह उस शेख का है जिस के घर में इस वक़्त वह औरत है।

रईस बेदार हुआ तो रो रहा था और अपने मुंह पर तमांचे मार रहा था। उस ने अपने गुलामों को उस औरत की तलाश में भेजा और खुद

भी तलाश में निकला, उसे बताया गया कि वह औरत मजूसी के घर में कियाम पजीर है, यह रईस उस मजूसी के पास गया और कहा वह अलवी औरत कहां है? उस ने कहा मेरे घर में है, रईस ने कहा उसे मेरे यहां भेज दो। शेख ने कहा यह नहीं हो सकता, रईस ने कहा मुझ से यह हजार दीनार ले लो और उसे मेरे यहां भेज दो। शेख ने कहा: لا والله، لا أقدر أن أفعل ذلك! कसम खुदा की! ऐसा नहीं हो सकता, अगरचें तुम लाख दीनार भी दो, जब रईस ने ज्यादा इस्सारा किया तो शेख ने उस से कहा जो ख्वाब तुम ने देखा है, मैंने भी देखा है और जो महल तुम ने देखा है वह वाकई मेरा है, तुम इस लिये मुझ पर फख्र कर रहे हो कि तुम मुसलमान हो, बखुदा वह अलवी खातून जैसे ही हमारे घर में आई, हम सब उनके हाथ पर मुसलमान हो गए, उन की बरकतें हमें हासिल हो चुकी हैं, मुझे ख्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की जियारत हुई, आप ने मुझ से फरमाया: هَذَا الْقُرْآنُ وَلَا مَلِكَ يَمْنَعُكَ مَعَهُ चूंकि तुम ने इस अलवी खातून की ताजीम व तक्रीम की है, इस लिये यह महल तुम्हारे लिये और तुम्हारे घर वालों के लिये है और तुम जन्नती हो। (बरकाते आले रसूल:267)

सैय्यिदी अब्दुल वहाब शअरानी रजियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं, सैय्यद शरीफ ने हजरत खत्ताब रहमतुल्लाहि तआला अलैहि की खान्काह में बयान किया कि काशिफुल बुहैरा ने एक सैय्यद को मारा, तो उसी रात ख्वाब में उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की इस हाल में जियारत हुई कि आप उस से ऐराज फरमा रहे हैं, उस ने अर्ज किया या रसूलल्लाह! मेरा क्या गुनाह है? फरमाया: تَضْرِبُنِي وَالْكَاشِفُ عَنْكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ तू मुझे मारता है हालां कि मैं कियामत के दिन तेरा शफीअ हूं। उस ने अर्ज किया या रसूलल्लाह! मुझे याद नहीं कि मैं ने आप को मारा हो, आप ने फरमाया: مَا ظَنُّكَ وَلَوْ كُنْتُ كَمَا تَقُولُ क्या तू ने मेरी औलाद को नहीं मारा? उस ने अर्ज किया हां, फरमाया: مَا ظَنُّكَ وَمَا ظَنُّكَ لَوْ كُنْتُ كَمَا تَقُولُ तेरी ज़र्ब मेरी ही कलाई पर पड़ी है। फिर आप ने अपनी

कलाई निकाल कर दिखाई, जिस पर वस्त्र था, जैसे कि शहद की मक्खी ने डंक मारा हो।
(बरकाते आले रसूल:267)

अल्लामा मुक्रेजी फरमाते हैं मुझ से रईस शमसुद्दीन मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह उमरी ने बयान किया कि मैं एक दिन काजी जमालुद्दीन महमूद अजमी की खिदमत में हाज़िर हुआ जो काहेरा के गवर्नर थे, वह अपने नाइबों और खादिमों के हमराह सैय्यद अब्दुर रहमान तबातिबी मोअज़्ज़िन के घर तशरीफ ले गए, उन से इजाज़त तलब की, वह अपने घर से बाहर आए, तो उन्हें गवर्नर के अपने यहां आने पर सख्त हैरत हुई, वह उन्हें अन्दर ले गए, हम भी उन के साथ अन्दर चले गए और सैय्यद अब्दुर रहमान के सामने अपने-अपने मर्तबा के मुताबिक बैठे, सब लोग जब इत्मीनान से बैठ गए तो गवर्नर ने सैय्यद साहब से कहा कि हज़रत मुझे माफ़ फरमा दीजिये, उन्होंने ने कहा जनाब! क्या चीज़ माफ़ कर दूं? उन्होंने ने कहा कल रात मैं क़िला पर गया और बादशाह यानी मलिक ज़ाहिर बरकूक के सामने बैठा तो आप तशरीफ़ लाए और मुझ से बुलंद जगह पर बैठ गए, मैं ने अपने दिल में कहा यह बादशाह की मज्लिस में मुझ से ऊंचे क्यों बैठे है? रात को मैं सोया तो मुझे नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ज़ियारत हुई, आप ने मुझ से फरमाया: يَا مُحَمَّدُ نَأْتِيكَ أَنْ تَجْلِسَ تَحْتَ وَلَدِي महमूद! तू इस बात से आर महसूस करता है कि मेरी औलाद से नीचे बैठे, यह सुन कर हज़रत सैय्यद अब्दुर रहमान रो पड़े और कहा जनाब मैं ऐसा कहा हूं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मुझे याद फरमाएं, यह सुनना था कि तमाम हाज़िरीन रो पड़े और सब की आंखें अशकबार हो गईं।
(बरकाते आले रसूल:269)

ताज़ीम आले रसूल से मुतअल्लिक आला हज़रत पेशवाए अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि का एक ईमान अपरोज़ वाकिआ रईसुल क़लम हज़रत अल्लामा अरशदुल कादिरि साहब दामत बरकातुहुम के अल्फाज़ में समाअत फरमाएं।

इमाम अहले सुन्नत की सवारी के लिये पालकी दरवाजा के सामने लगा दी गई थी, सैकड़ों मुश्ताकाने दीद (दीदार के ख्वाहिशमन्द) इन्तेज़ार में खड़े थे, वुजू से फारिग होकर कपड़े जेबे तन फरमाए, इमामा बांधा और आलिमाना वकार के साथ बाहर तशरीफ लाए। चेहरा अनवर से फज़लो-तक्वा की किरन फूट रही थी, शब्बेदार आंखों से फिरिश्तों का तक्हुस बरस रहा था, तल्लुअतो-जमाल की दिलकशी से मज्मअ पर एक रिक्कत अंगेज़ बेखुदी का आलम तारी था, गोया परधानों के हुजूम में एक शमअ फरोज़ा मुस्कुरा रही थी और अंदलीबाने शौक की अंजुमन में एक गुले रज्ना खिला हुआ था, बड़ी मुश्किल से सवारी तक पहुंचने का मौका मिला, पा बोसी का सिलसिला खत्म होने के बाद कहारों ने पालकी उठाई, आगे पीछे, दाहिने बाएं, नियाज़मंदों की भीड़ हमराह चल रही थी, पालकी लेकर थोड़ी ही दूर चले थे कि इमाम अहले सुन्नत ने आवाज़ दी, पालकी रोक दो।

हुक्म के मुताबिक पालकी रख दी गई, हमराह चलने वाला मज्मअ भी वहीं रुक गया, इज्तिराब की हालत में बाहर तशरीफ लाए, कहारों को अपने करीब बुलाया और भर्राई हुई आवाज़ में दरियापत्त किया आप लोगों में कोई आले रसूल तो नहीं है? अपने जदे आला का वास्ता, सच बताइये मेरे ईमान का जौके लतीफ “तने जाना” की खुशबू महसूस कर रहा है, इस सवाल पर अचानक उन में से एक शख्स के चेहरे का रंग फक हो गया, पेशानी पर गैरतो-पशेमानी की लकीरें उभर आईं, बेनवाई, आशुप्ता हाली और गरदिशे अय्याम के हाथों एक पामाल जिंदगी के आसार उस के अंग-अंग से आशकार थे, काफी देर तक खामोश रहने के बाद नज़र झुकाए हुए दबी ज़बान से कहा “मजदूर से काम लिया जाता है, ज्ञात पात नहीं पूछा जाता, आह! आप ने मेरे जदे अजला का वास्ता देकर मेरी जिंदगी का सरबस्ता राज फाश कर दिया, समझ लीजिये कि मैं उसी चमन का एक मुरझाया हुआ फूल हूं, जिस की खुशबू से आप की मशामे जां मुअत्तर है, रगों का खून नहीं बदल सकता, इस लिये आले रसूल होने से इनकार नहीं है लेकिन

अपनी खानुमा बरबाद जिंदगी को देख कर यह कहते हुए शर्म आती है, चन्द महीने से आप के इस शहर में आया हूँ, कोई हुनर नहीं जानता कि उसे अपना ज़रिये मआश बनाऊँ, पालकी उठाने वाले मजदूरों से राबता काइम कर लिया, हर रोज़ सवेरे उन के झुण्ड में आकर बैठ जाता हूँ और शाम को अपने हिस्सा की मजदूरी लेकर अपने बाल बच्चों में पहुँच जाता हूँ।

अभी उस की बात तमाम भी न हो पाई थी कि लोगों ने पहली बार तारीख़ का यह हैरत अंगेज़ वाकिआ देखा, आलमे इस्लाम के एक मुक्तदर इमाम की दस्तार उस के कदमों पर रखी हुई थी और वह बरसते हुए आंसुओं के साथ फूट-फूट कर इल्तिजा कर रहा था।

मोअज़्ज़ शहज़ादे! मेरी गुस्ताखी माफ़ कर दो, ला इल्मी में यह ख़ता सरज़द हो गई है, हाए ग़ज़ब हो गया, जिन के कफ़शे पा का ताज मेरे सर का सब से बड़ा ऐज़ाज़ है, उन के कांधों पर मैं ने सवारी की, कियामत के दिन अगर सरकार ने पूछ लिया “अहमद रज़ा क्या मेरे फ़र्ज़न्दों का दोशे नाज़नीं इसी लिये था कि वह तेरी सवारी का बोझ उठाएँ? तो मैं क्या जवाब दूंगा। उस वक़्त भरे मैदाने हश्म में मेरे नामूसे इश्क़ की कितनी बड़ी रुस्वाई होगी?

आह! उस हवलनाक तसव्वुर से कलेजा शक़ हुआ जा रहा है। देखने वालों का बयान है कि जिस तरह एक आशिके दिलगीर रूठे हुए महबूब को मनाता है, बिल्कुल उसी अंदाज़ में वक़्त का एक अजीमुल मर्तबत इमाम उसकी मिन्नत व समाजत करता रहा और लोग फटी आंखों से इश्क़ की नाज़ बरदारियों का यह रिक्कत अंगेज़ तमाशा देखते रहे।

यहां तक कि कई बार ज़बान से माफ़ कर देने का इक़रार करा लेने के बाद इमाम अहले सुन्नत ने फिर अपनी एक आखिरी इल्तिजाए शौक़ पेश की। चूँकि राहे इश्क़ में खूने जिगर से ज़्यादा वज़ाहत व नामूस की कुर्बानी अज़ीज़ है इस लिये ला शऊरी की इस तक्सीर का कफ़फ़ारा तभी अदा होगा कि तुम पालकी में बैठो और मैं उसे कांधे पर

उठाऊं।

इस इत्तिजा पर जज्बात के तलातुम से लोगों के दिल हिल गए, वुफूरे असर से फिज़ा में चीखें बुलंद हो गईं, हजार इनकार के बावजूद आखिर सैय्यद जादे को इश्क़े जुनूं खेज़ की जिद पूरी करनी पड़ी।

आह! वह मंज़र कितना रिक्कत आमेज़ और दिल गुदाज़ था, जब अहले सुन्नत का जलीलुल क़दर इमाम क़हारों की क़तार से लग कर अपने इल्म व फज़ल, जुब्बा व दस्तार और अपनी आलमगीर शोहरत का सारा ऐज़ाज़ खुश्नूदी हबीब के लिये एक गुमनाम मजदूर के क़दमों पर निसार कर रहा था।

शौकते इश्क़ का यह ईमान अपरोज़ नज़्ज़ारा देख कर पत्थरों के दिल पिघल गए, कुदूरतों का गुबार छट गया, गफ़्ततों की आंख खुल गई, दुश्मनों को भी मान लेना पड़ा कि आले रसूल के साथ जिस के दिल की अक़ीदत व इख़्लास का यह आलम है, रसूल के साथ उस की वारफ़्तगी का अंदाज़ा कौन लगा सकता है? अहले इंसाफ़ को इस हकीक़त के ऐतराफ़ में कोई तअम्मुल नहीं हुआ कि नज्द से लेकर सहारनपूर तक रसूले पाक के गुस्ताख़ों के ख़िलाफ़ अहमद रज़ा की बरहमी क़तअन हक़ बजानिब है।

सहराए हश्क़ के इस रूठे हुए दीवाने को अब कोई नहीं मना सकता, वफ़ा पेशा दिल का यह ग़ैज़ ईमान का बख़्शा हुआ है, नफ़्सानी हैजान की पैदावार नहीं।

है उन की इतर बूए गरीबां से मस्ते गुल

कली से चमन, चमन से सबा और सबा से हम

وصلی اللہ دوزک و معالی و سلم علی النبی الکریم و علی الہ واصحابہ و اهل بیتہ اجمعین برحمتک یا رحمن الرحیم

व सल्लल्लाहु तबारक व तअ़ाला व सल्लम अलन् नबि़य्यिल करीम
व अला आलिही व अस्हाबिही व अहलि बैतिही अज़्मईन। बिरहमतिक
या अर्हमर्राहिमीन।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत मुअविया

रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु

الحمد لله وكفى والصلوة والسلام على سيدنا محمد بن المصطفى وعلى
اله المجتبي واصحابه سنن النجا- اما بعد- فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ
الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ- وَكَلَّا وَعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى- (پ: ۲۷، ع: ۱۷) صَدَقَ اللّٰهُ الْعَلِيَّ الْعَظِيْمَ
وصدق رسوله النبی الکریم ونحن علی ذلک لمن الشاهدين والشاکرين والحمد لله
رب العالمین-

एक मर्तबा हम और आप सब लोग मिल कर मक्का के सरदार, मदीना के ताजदार, दोनों आलम के मालिक व मुख्तार जनाब अहमदे मुज्जबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम की बारगाहे बेकस पनाह में बुलंद आवाज़ से दुरूदो-सलाम का नज़ाना और हदिया पेश करें।

صلى الله على النبي الامى واله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاماً عليك يا رسول الله

सल्लल्लाहु अलन् नबियिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाहु अलैहि व
सल्लम सलातव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

इंसान को अपनी जान से मुहब्बत होती है, बीवी और बच्चों से प्यार होता है, मां बाप को चाहता है, भाई और दीगर अज़ीज़ व अक़ारिब से भी मुहब्बत करता है मगर सिर्फ इसी किस्म की चीज़ों से मुहब्बत करने वाला इंसान हो सकता है। एम.एल.ए. और एम.पी. हो सकता है। वज़ीरे आला और वज़ीरे आजम हो सकता है। गवर्नर और सदरे मम्लकत हो सकता है, मगर मुसलमान नहीं हो सकता। मुसलमान होने के लिये एक और ज़ाते गिरामी जनाब अहमदे मुज्जबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम से मुहब्बत करनी पड़ेगी, इस लिये कि:

मुहम्मद की मुहब्बत देने हक़ की शर्तें अव्वल हैं

इसी में हो अगर खामी तो सब कुछ ना मुकम्मल है

सरकारे अक्कदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं: لَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتَّىٰ أَكُونَ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِنْ وَالِدِهِ وَوَلَدِهِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ यानी तुम में का कोई मोमिन नहीं होगा यहां तक मैं उस के नज्दीक उस के बाप, उस की औलाद और सब लोगों से ज्यादा महबूब न हो जाऊं।

(बुखारी, मुस्लिम, मिश्कात:12)

और हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की मुहब्बत के लिये सारे सहाबा की मुहब्बत लाज़िम है, इस लिये कि तमाम सहाबा हुजूर के महबूब हैं और महबूब का महबूब, महबूब ही हुआ करता है। लिहाज़ा जो शख्स हुजूर से मुहब्बत का दावा करे और उन के सहाबा से मुहब्बत न करे वह झूठा है। नबीए अक्कम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं: اَللّٰهُ فِىْ اَصْحَابِىْ لَا تَجْعَلُوْهُمْ غَرَضًا يَنْ يَّعْدُوْا مَنَ اَحَبَّهُمْ فِىْ حَيِّىْ اَحَبَّهُمْ وَمَنْ اَبْغَضَهُمْ فِىْ غَضِّىْ اَبْغَضَهُمْ وَمَنْ اَدَاْعُمْ فَقَدْ اَدَاْنِىْ وَمَنْ اَذَى اَذَى اللّٰهِ وَمَنْ اَذَى اللّٰهُ يُوْشِكُ اَنْ اَحْبَهُمْ رِوَاہُ तिर्मिज़ी। यानी मेरे सहाबा के बारे में अल्लाह तआला से डरो, अल्लाह तआला से डरो। मेरे बाद उन्हें निशानए ऐतराज़ न बनाना, जिस ने उन से मुहब्बत रखी उस ने मेरी मुहब्बत के सबब उन से मुहब्बत रखी और जिस ने उन से बुग़ज़ रखा उस ने मेरे साथ बुग़ज़ के सबब उन से बुग़ज़ रखा और जिस ने उन्हें अज़िय्यत दी उस ने मुझे अज़िय्यत दी और जिस ने मुझे अज़िय्यत दी उस ने अल्लाह रब्बुल इज़ज़त को अज़िय्यत दी और जिस ने अल्लाह तआला को अज़िय्यत दी करीब है कि अल्लाह तआला उसे अपनी गिरफ्त में ले ले। (मिश्कात:554)

देखिये हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने वाज़ेह लफ्ज़ों में फरमा दिया कि मेरी मुहब्बत के सबब मेरे सहाबा से मुहब्बत होगी और मेरे बुग़ज़ के सबब मेरे सहाबा से बुग़ज़ होगा। यानी जो शख्स हुजूर से मुहब्बत रखता है वह उन के सहाबा से ज़रूर मुहब्बत करेगा और जो शख्स सहाबा से बुग़ज़ व अदावत रखता है वह हुजूर से बुग़ज़ व अदावत के सबब उन से बुग़ज़ व अदावत रखता है। लिहाज़ा हदीस शरीफ ने फैसला कर दिया कि जो शख्स हुजूर सल्लल्लाहु तआला

अलैहि व सल्लम से मुहब्बत का दावा करता है मगर उन के सहाबा से बुग़ज़ व अदावत रखता है वह झूठा है। इस लिये कि सहाबा से उस का बुग़ज़ व इनाद हुज़ूर से बुग़ज़ व इनाद के सबब है। अल्-इयाज़ु बिल्लाहि तआला

बाज़ लोग जो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मुहब्बत के दावेदार हैं वह बहुत से सहाबए किराम खुसूसन अमीरुल मोमिनीन हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बुग़ज़ व इनाद रखते हैं, खुल्लम खुल्ला उन की शान में गुस्ताखी व बेअदबी करते हैं और उन को निशानए ऐतराज़ बनाते हैं। इस लिये आज की मज्लिस में हम उन की हयाते तैयिबा पर रौशनी डालेंगे, उन के फज़ाइल व मनाकिब बयान करेंगे और उन पर किये गए ऐतराज़ात के जवाबात भी देंगे।

नाम व नसब

आप का नाम मुआविया और कुन्नियत अबू अब्दुर रहमान है। बाप की तरफ से आप का सिलसिला नसब यह है: मुआविया बिन अबू सुफियान सख़रा बिन हरब बिन उमैय्या बिन अब्दे शमस बिन अब्दे मनाफ। और माँ की तरफ से नसब यूँ है: मुआविया बिन हिन्द बिनते उल्बा बिन रबीआ बिन अब्दे शमस बिन अब्दे मनाफ। और अब्दे मनाफ नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के चौथे दादा हैं। इस लिये हुज़ूर का सिलसिलाए नसब यह है: इब्ने अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्दे मनाफ।

खुलासा यह हुआ कि हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वालिद की तरफ से पांचवीं पुश्त में और माँ की तरफ से भी पांचवीं पुश्त में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के नसब में आप के चौथे दादा अब्दे मनाफ से मिल जाते हैं। जिस से ज़ाहिर हुआ कि आप नसब के लिहाज़ से हुज़ूर के करीबी अहले कराबत में से हैं और रिश्ते में रसूले करीम अलैहिस् सलातु वत्तस्लीम

के हकीकी साले हैं इस लिये कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा बित्ते अबू सुफियान रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा जो हुज़ूर की जौजए मुतहहरा हैं वह हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की हकीकी बहन हैं, इस लिये आरिफ बिल्लाह मौलाना आरिफ रूमी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने अपनी मस्नवी शरीफ में आप को तमाम मोमिनो का मामूं तहरीर फरमाया है।

आप का कबूले इस्लाम

हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कब इस्लाम कबूल किया इस के बारे में हज़रत मुप्ती अहमद यार खां साहब अलैहि रहमा तहरीर फरमाते हैं, सहीह यह है कि अमीरे मुआविया खास सुलह हुदैबिया के दिन 6 हिजरी में इस्लाम लाए मगर मक्का वालों के खौफ से अपना इस्लाम छुपाए रहे, फिर फत्हे मक्का के दिन अपना इस्लाम जाहिर फरमाया। जिन लोगों ने कहा कि वह फत्हे मक्का के दिन ईमान लाए उन्होंने ने जुहूरे ईमान के लिहाज़ से कहा है। जैसे हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दरे-पर्दा जंगे बद्र के दिन ही ईमान ला चुके थे मगर ऐहतियातन अपना ईमान छुपाए रहे और फत्हे मक्का में जाहिर फरमाया। तो लोगों ने उन्हें भी फत्हे मक्का के मोमिनो में शुमार कर दिया, हालां कि आप कदीमुल इस्लाम थे, बल्कि बद्र में भी कुप्फारे मक्का के साथ मजबूरन तशरीफ लाए थे। इसी लिये नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया था कि कोई मुसलमान अब्बास को क़त्ल न करे, वह मजबूरन लाए गए हैं।

अमीरे मुआविया के हुदैबिया में ईमान लाने की दलील वह हदीस है जो इमाम अहमद ने इमाम बाकिर बिन इमाम जैनुल आबिदीन बिन इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से रिवायत फरमाया कि इमाम बाकिर से अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने फरमाया कि उन से अमीरे मुआविया ने फरमाया कि मैं ने हुज़ूर के

एहराम से फारिग होते वक़्त हुज़ूर के सर शरीफ के बाल मरवा पहाड़ के पास काटे।

नीज़ वह हदीस भी दलील है जो बुख़ारी शरीफ ने बरिवायत ताऊस अब्दुल्लाह बिन अब्बास से रिवायत फरमाई कि हुज़ूर की यह हजामत करने वाले अमीरे मुआविया हैं, और ज़ाहिर यह है कि हजामत उमरए क़ज़ा में वाक़ेअ हुई जो सुलह हुदैबिया से एक साल बाद 7 हिजरी में हुआ क्यों कि हज्जतुल वदाअ में नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने किरान किया था और कारिन मरवा पर हजामत नहीं कराते बल्कि मिना में दस्वीं ज़िल हिज्जा को कराते हैं। नीज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज्जे वदाअ में बाल न कटवाए थे बल्कि सर मुंडाया था, अबू तल्हा ने हजामत की थी तो ला मुहल्ला अमीरे मुआविया का यह हुज़ूर के सर के बाल तराशना उमरए क़ज़ा में फत्हे मक्का से पहले हुआ। मालूम हुआ कि अमीरे मुआविया फत्हे मक्का से पहले ईमान ला चुके थे। (अमीरे मुआविया पर एक नज़र: 47)

आप की वालिदा का अजीब व ग़रीब वाकिआ

ख़राइती ने हवातिफ में हुमैद बिन वहब के हवाले से बयान किया है कि फ़ाकिहा बिन मुगीरा कुरैशी के निकाह में एक औरत हिन्द बिनत उल्बा बिन रबीआ थी, फ़ाकिहा ने उठने बैठने के लिये एक नशिस्तगाह बनवा रखी थी, उस नशिस्तगाह में आने जाने की कोई रोक टोक नहीं थी। इत्तिफ़ाक़न एक रोज़ फ़ाकिहा और उस की बीवी हिन्द उस नशिस्तगाह में बैठे हुए थे, किसी ज़रूरत से कुछ देर के बाद फ़ाकिहा उठ कर बाहर चला गया और हिन्द अकेली रह गई। अचानक उस वक़्त एक शख्स आया और बैठक में दाख़िल हुआ लेकिन जब उस ने देखा कि वहां तन्हा एक औरत बैठी हुई है तो वह फौरन पलट पड़ा, उस के पलटते वक़्त फ़ाकिहा बाहर से वापस आ गया और उस ने मर्द को बाहर निकलते देख लिया तो फ़ाकिहा हिन्द के पास आया और

गुस्से से उस को ठोकरें मार कर पूछा कि तेरे पास यह कौन मर्द आया था? हिन्द ने कहा मैं ने किसी को भी नहीं देखा, हां तुम्हारे कहने से मुझे यह ख्याल होता है कि कोई आया था लेकिन फौरन वापस हो गया। फाकिहा ने कहा कि तू मेरे घर से निकल जा और अपने मां बाप के पास चली जा कि तू मेरे लाइक नहीं है। हिन्द अपने मां बाप के पास चली गई लेकिन लोगों में इस बात का खूब चर्चा हुआ। हिन्द के बाप ने एक रोज़ उस से कहा कि लोग तुझे हर तरफ मत्तूऊन करते हैं, तू मुझे सच्ची बात बता दे, अगर तेरा खाविन्द सच्चा है तो मैं उस को किसी शख्स के जरिये कत्ल करा दूंगा ताकि लोग इस तअना ज़नी से बाज़ आ जाएं। और अगर वह झूठा है तो चलो यह मामला यमन के किसी काहिन के पास पेश करें, यह सुन कर हिन्द ने अपनी पाक दामनी पर इस तरह कस्में खाना शुरू कर दीं जैसा कि अहंदा रिसालत में दस्तूर था।

जब हिन्द के वालिद उत्बा को यकीन हो गया कि हिन्द सच कह रही है तो उस ने फाकिहा को मजबूर किया कि चूंकि तुम ने मेरी बेटी पर जिना की तोहमत लगाई है इस लिये तुम अपने कबीले के लोगों को साथ लेकर किसी काहिन के पास चलो। चुनांचे फाकिहा बनू मखजूम को और उत्बा बनू अब्दे मनाफ को लेकर यमन की जानिब रवाना हुए। हिन्द के साथ उस की कई सहेलियां भी मौजूद थीं। जब काफिला यमन के करीब पहुंचा, तो हिन्द के चेहरे का रंग बदल गया, यह हाल देख कर उस के बाप ने कहा कि तेरे इस तगय्युरे रंग से साफ जाहिर है कि तू गुनहगार है। हिन्द ने कहा यह बात नहीं है बल्कि अस्त बात यह है कि आप मुझे एक ऐसे शख्स के पास ले जा रहे हैं जिस की बात कभी सहीह होती है और कभी ग़लत। अगर उस ने बिला वजह मुझ पर तोहमत लगा दी तो फिर मैं पूरे अरब में मुंह दिखाने के काबिल नहीं रहूंगी। उत्बा ने कहा कि मैं तेरा मामला काहिन के सामने पेश करने से पहले उस का इम्तिहान लूंगा। चुनांचे काहिन की सच्चाई का इम्तिहान लेने के लिये उस ने अपने घोड़े के कान में

जानवरों की वह बोली बोली जिस से घोड़ा गर्मा गया, उस वक़्त उत्बा ने उस के ज़कर के सूराख में गेहूँ का एक दाना रख कर ऊपर चमड़े की पट्टी बांध दी। फिर यह काफ़िला काहिन के पास पहुंचा। उस ने उन को खुश आमदेद कहा और उन की तवाजोअ के लिये ऊंट ज़िबह किया। दस्तरख़्यान पर उत्बा ने अपने मेज़बान काहिन से कहा कि हम आप के पास एक ज़रूरत से आए हैं लेकिन उस से पहले बगरजे इम्तिहान हम ने एक काम किया है पहले वह बता दीजिये, फिर हम अपना काम आप को बताएंगे। नुजुमी ने कहा “नरकल में गेहूँ का दाना” उत्बा ने कहा इस की वज़ाहत कीजिये, तब काहिन ने कहा तुम ने अपने घोड़े के ज़कर के सूराख में गेहूँ का दाना रखा है, उत्बा ने कहा आप ने बिल्कुल दुरुस्त कहा। अब असल मामला इन औरतों का है, आप इस मामले में ग़ौर कीजिये। वह एक औरत के पास आया और उस के कंधे पर हाथ रख कर कहा खड़ी-हो जा, फिर इसी तरह दूसरी और तीसरी औरत के पास आया यहां तक कि हिन्द की बारी आई, काहिन ने उस के कंधे पर हाथ मार कर कहा कि तू पाक व साफ़ है, तू ने ज़िना का इरतिकाब नहीं किया है और तू एक बादशाह ज़नेगी जिस का नाम मुआविया होगा। यह सुन कर हिन्द के शौहर फाकिहा ने हिन्द का हाथ पकड़ लिया मगर हिन्द ने उस का हाथ झटक दिया और कहा कि मुझ से दूर रहो, मैं कसम खा कर कहती हूं कि अगर काहिन की यह बात सच है कि मेरी किस्मत में बादशाह की मां बनना है तो वह तेरे सुल्ब से नहीं होगा। अल-हासिल हिन्द ने फाकिहा को छोड़ कर अबू सुफ़ियान से शादी कर ली और उन से हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पैदा हुए।

(तारीखुल खुलफा:135)

सहाबिए रसूल

हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सहाबिए रसूल हैं। और सहाबी वह खुश्नसीब मुसलमान है जिस ने ईमान की हालत में हज़ुरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को देखा और फिर

ईमान पर उस का खातिमा हुआ। और सहाबियत वह दर्जा है कि कोई शख्स ख्वाह कितना ही बड़ा वली और ग़ौस व कुतुब हो किसी सहाबी के दर्जा को हरगिज़ नहीं पहुंच सकता।

सहाबी की फज़ीलत में बहुत सी आयाते करीमा नाज़िल हुई हैं, जिन में से चन्द आप के सामने पेश की जाती हैं। पारा 27, रुकूअ 17 में है: **وَكَلَّمَ اللَّهُ الْحُسَيْنِ** अल्लाह तआला ने सारे सहाबा से भलाई यानी जन्नत का वादा फरमाया है। और पारा:11, रुकूअ:1 में है: **رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ** अल्लाह तआला सहाबए किराम से राज़ी है और वह अल्लाह तआला से राज़ी हैं। खुदाए तआला ने उन के लिये ऐसे बागात तैयार कर रखे हैं कि जिन के नीचे दरिया जारी हैं। वह लोग उन में हमेशा रहेंगे। वह बहुत बड़ी कामयाबी है। और पारा:28, रुकूअ:4 में है: **أُولَئِكَ هُمُ الصَّافُونَ** वही लोग सच्चे हैं। और इसी पारा:28, रुकूअ:4 में यह भी है: **أُولَئِكَ هُمُ** वही लोग कामयाब और फलाह याफ़ता हैं। और पारा:11, रुकूअ:6 में है: **أُولَئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ** वही लोग सच्चे ईमान वाले हैं। उन के लिये मग़फ़िरत और अज़े अज़ीम है। और पारा:18, रुकूअ:9 में है: **أُولَئِكَ مَرَّةٌ وَنَسَاءٌ** वह उन इल्ज़ामों से बरी हैं जो लोग कहते हैं, उन के लिये बख़्शि़श और अच्छी रोज़ी है।

यह सारी फज़ीलतें जो सहाबए किराम रिज़वानुल्लाह तआला अलैहि अज़्मईन के लिये कुरआने मजीद में वारिद हैं जैसे हर सहाबिए रसूल के लिये साबित हैं वैसे ही हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये भी साबित हैं।

सहाबा और अहादीसे करीमा

सहाबए किराम की फज़ीलत में बहुत सी हदीसे वारिद हैं। उन में से चन्द आप लोग मुलाहेज़ा फरमाएं। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं: **أَكْرَمُوا أَصْحَابِي وَلَهُمْ عِزَارُكُمْ** मेरे सहाबा

की इज्जत करो इस लिये कि वह तुम सब से बेहतर हैं। (मिशकात:554)

और नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं: **أَصْحَابِي كَالنُّحُومِ فَإِيَهُمْ اقْتَدَيْتُمْ (اعْتَدَيْتُمْ)** मेरे अस्थाब सितारों की तरह हैं, उन में से तुम जिस की इक्तिदा करोगे हिदायत पा जाओगे। (मिशकात:554)

और सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं: **لَا تَسُبُّوا أَصْحَابِي فَلَوْ أَنِّي أَخَذْتُكُمْ اتَّفَقُوا مِثْلَ أَخِيذِهَا مَا بَلَغَ مِنْ أَحَدِهِمْ وَلَا نَصِيفُهُ** ऐ मुसलमानों! तुम मेरे सहाबा को गाली न दो और न बुरा भला कहो। इस लिये कि तुम से अगर कोई उहद पहाड़ के बराबर सोना खर्च करे तो वह उनके किलो और आधा किलो गोहूं और जौ खर्च करने के बराबर नहीं हो सकता। (बुखारी, मुस्लिम, मिशकात:553)

और रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं: **لَا تَسُبُّوهُمْ لَعَنَ اللَّهُ مَنْ سَبَّهُمْ** सहाबा को गाली न दो और न उन को बुरा भला कहो, जो शरूख उन को गाली दे और बुरा भला कहे उस पर अल्लाह तआला की लअनत हो। (अशशफुल मोअब्बद:102)

और हुजुरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं, अल्लाह तआला ने मुझे मुन्तखब फरमाया, मेरे लिये अस्थाब मुन्तखब फरमाए और मेरे लिये उन में से वुजरा, अंसार और खुसर बनाए **فَمَنْ سَبَّهُمْ فَعَلِيَ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ لَا يَقْبَلُ اللَّهُ مِنْهُ صَرْفًا وَلَا عَدْلًا** रवाहुत्तबुरानी यानी जो शरूख उन्हें गाली दे और बुरा भला कहे, उस पर अल्लाह तआला और तमाम फिरश्तों और सारे इंसानों की लअनत। अल्लाह तआला उसका न फर्ज कबूल फरमाएगा और न नफ्त।

(अशशफुल मोअब्बद:102)

और रसूले काइनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं: **إِذَا رَأَيْتُمُ الَّذِينَ يَسُبُّونَ أَصْحَابِي فَقُولُوا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى فِرْسِكُمْ** जब तुम उन लोगों को देखो जो मेरे सहाबा को गालियां देते हों और उन को बुरा भला कहते हों तो कहो कि तुम्हारे शर पर खुदा की लअनत।

(मिशकात शरीफ:554)

और प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं: إِذَا كَرَأْتُمْ صَاحِبِي فَأَمْسِكُوا जब मेरे सहाबा का जिक्र किया जाए तो रुक जाओ यानी उन पर नुक्ता चीनी न करो। (अश्शफ़ुल मोअब्बद:103)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हुमा फरमाते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम के सहाबा को गाली न दो इस लिये कि उन का एक घड़ी में इबादत करना तुम्हारी तमाम ज़िंदगी की इबादत से बेहतर है।

(अश्शफ़ुल मोअब्बद:102)

हुज़ुरे अक्दस सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम की मुहब्बत के झूठे दावेदार जो उन के महबूब सहाबा को बुरा भला कहते हैं वह इन अहादीसे करीमा से सबक़ हासिल करें, अपनी ज़बानों को रोकें। किसी सहाबी को बुरा भला कह कर रसूले अकरम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम को ईज़ा (तक्लीफ़) न पहुँचाएं और न लअन्नत के मुस्तहिक़ बनें।

सहाबा और अक्वाले अइम्मा

हज़रत अल्लामा अलक़मी रहमतुल्लाहि तअ़ाला अलैहि तहरीर फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम ने हम पर वाजिब फरमाया कि हम सहाबा के इख़िलाफ़ात के बारे में अपनी ज़बान बन्द रखें, उन के दरमियान जो लड़ाइयां और इख़िलाफ़ात वाक़ेअ़ हुए जिन के सबब बहुत से सहाबा शहीद हुए, तो यह ऐसे खून हैं जिन से अल्लाह तअ़ाला ने हमारे हाथों को महफूज़ रखा, लिहाज़ा हम अपनी ज़बानों को उन से मुलव्विस नहीं करते। हमारा अक़ीदा यह है कि वह सब इस बारे में माज़ूर हैं, क्योंकि उन से जो कुछ सादिर हुआ वह उन के इज्तिहाद पर मबनी था और ज़न्नी मस्अले पर मुज्ताहिद अगर ख़ता भी करे तो मुस्तहिक़के सवाब है। (बरकाते आले रसूल:279)

अल्लामा मनावी रहमतुल्लाहि तअ़ाला अलैहि लिखते हैं कि अगर कोई मुल्हिद सहाबए किराम के दरपै हो और अल्लाह तअ़ाला ने उन्हें

और प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं:
 إِذَا كَرَأْتُمْ صَاحِبِي فَأَسْرِكُمْ وَأَنْتُمْ كَمَا كُنْتُمْ جَبَّارِينَ عَلَيْهِمْ جَبَّارِينَ عَلَيْهِمْ جَبَّارِينَ عَلَيْهِمْ
 यानी उन पर नुक़्ता चीनी न करो। (अश्शफ़ुल मोअब्बद:103)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हुमा फरमाते हैं कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम के सहाबा को गाली न दो इस लिये कि उन का एक घड़ी में इबादत करना तुम्हारी तमाम ज़िंदगी की इबादत से बेहतर है।

(अश्शफ़ुल मोअब्बद:102)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम की मुहब्बत के झूठे दावेदार जो उन के महबूब सहाबा को बुरा भला कहते हैं वह इन अहादीसे करीमा से संबक़् हासिल करें, अपनी ज़बानों को रोकें। किसी सहाबी को बुरा भला कह कर रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम को ईज़ा (तक्लीफ़) न पहुंचाएं और न लअ़नत के मुस्तहिक़् बनें।

सहाबा और अक़््वाले अइम्मा

हज़रत अल्लामा अलक़मी रहमतुल्लाहि तअ़ाला अलैहि तहरीर फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम ने हम पर वाजिब फरमाया कि हम सहाबा के इख़िलाफ़ात के बारे में अपनी ज़बान बन्द रखें, उन के दरमियान जो लड़ाइयां और इख़िलाफ़ात वाक़ेअ़ हुए जिन के सबब बहुत से सहाबा शहीद हुए, तो यह ऐसे खून हैं जिन से अल्लाह तअ़ाला ने हमारे हाथों को महफूज़ रखा, लिहाज़ा हम अपनी ज़बानों को उन से मुलव्विस नहीं करते। हमारा अक्कीदा यह है कि वह सब इस बारे में माज़ूर हैं, क्यो़ं कि उन से जो कुछ सादिर हुआ वह उन के इज्तिहाद पर मबूनी था और ज़न्नी मस्अले पर मुज्ताहिद अगर ख़ता भी करे तो मुस्तहिक्के सवाब है। (वाक़ाते आले रसूल:279)

अल्लामा मनावी रहमतुल्लाहि तअ़ाला अलैहि लिखते हैं कि अगर कोई मुल्हिद सहाबए किराम के दरपै हो और अल्लाह तअ़ाला ने उन्हें

जो इनआमात अता फरमाए हैं उन का इनकार करे तो यह उस की जहालत, महरूमियत, ना समझी और ईमान की कमी है। इस लिये कि अगर सहाबए किराम में कोई ऐब पाया जाए तो दीन की बुनियाद काइम नहीं रहेगी, क्यों कि वही हम लोगों तक दीन के पहुंचाने वाले हैं। जब नाफिलीन ही मजरूह हो गए तो आयात व अहादीस भी महल्ले तअन बन जायेंगी। और इस में लोगों की तबाही और दीन की बरबादी है। इस लिये कि नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद वही का सिलसिला मुन्कतअ हो चुका है और मुबल्लिग की तब्सीग के सहीह होने के लिये उस का मुत्तकी, परहेज़गार और आदिल होना जरूरी है।

(बरकाते आले रसूल:281)

और अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं, मुसलमान पर लाज़िम है कि नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सहाबा और अहले बैत का ऐहताराम करे, उनसे राजी हो, उनके फज़ाइल व हुक्क पहचाने और उन के इख़्तिलाफ से जुबान रोके। इस लिये कि उन में से किसी ने भी ऐसे अम्र का इरतिकाब नहीं किया जिसे वह हराम समझते हों बल्कि उन में से हर एक मुज्ताहिद है। पस वह सब ऐसे मुज्ताहिद हैं कि उन के लिये सवाब है, हक तक पहुंचने वाले के लिये दस सवाब और ख़ता करने वाले के लिये एक सवाब है। इकाब, मलामत और नक्स इन सब से मरफूअ है। यह बात अच्छी तरह ज़हेन नशीं कर ले वरना तू फिसल जाएगा और तेरी हलाकत व नदामत में कोई कसर न रह जाएगी।

(बरकाते आले रसूल:281)

अल्लामा लेक़ानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह जौहरा की शरह कबीर में तहरीर फरमाते हैं, उन लड़ाइयों का सबब यह था कि मुआमलात मुश्तबह थे, उनके शदीद इश्तिबाह की बिना पर उन में इज्तिहादी इख़्तिलाफ पैदा हो गया और उन की तीन किस्में हो गईं। एक किस्म पर इज्तिहाद से यह ज़ाहिर हुआ कि हक इस तरफ है और

मुख़ालिफ़ बागी है लिहाज़ा उन पर वाजिब था कि उन के अक्कीदे में जो हक़ पर था उस की इमदाद करते और बागी से जंग करते। चुनांचे उन्होंने ने ऐसा ही किया। जिस शख्स का यह हाल हुआ हो उसे जाइज़ नहीं कि इस अक्कीदे में जो लोग बागी हैं उन के साथ जंग के मौक़ा पर इमाम आदिल की इमदाद से किनारा कश हो।

दूसरी किस्म तमाम उमूर में पहली किस्म के बरअक्स थी। तीसरी किस्म वह थी जिन पर मुआमला मुश्तबह हो गया और वह हैरत में मुब्तला हो गए, उन पर किसी जानिब की तरजीह वाज़ेह न हुई तो वह दोनों फ़रीकों से अलग हो गए, उन के लिये यह अलाहेदगी ही वाजिब थी। इस लिये किसी मुसलमान से जंग उस वक़्त तक जाइज़ नहीं जब तक यह ज़ाहिर न हो जाए कि वह उस का मुस्तहिक़ है।

हासिले कलाम यह है कि वह सब मअज़ूर (उज़्र वाले) और माज़ूर (सवाब पाने वाले) हैं। इसी लिये अहले हक़ और वह हज़रात जो काबिले ऐतमाद हैं इस बात पर मुत्तफ़िक् हैं कि तमाम सहाबा आदिल हैं, उन की शहादत और रिवायत मक्बूल है। (बरकाते आले रसूल:282)

और अल्लामा इब्ने सुबुकी रहमतुल्लाहि तआला अलैह जवामिउल जवामेअ में तहरीर फरमाते हैं कि सहाबए किराम को गाली देने वाला खुदाए अज़्ज व जल् और उस के हबीबे अक़रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर किस कद्र जरी है और दीन की कितनी कम परवाह करता है, क्या उस ख़बीस ने उस पर खुदा की लअनत हो, यह गुमान किया है कि ऐसे हज़रात गाली के मुस्तहिक़ हैं और वह पाक व साफ़ और तारीफ़ का मुस्तहिक़ है? हरगिज़ नहीं। बखुदा उस के मुंह में पत्थर होना चाहिये। बल्कि जब उसका यह गुमान हो कि यह हज़रात गाली के मुस्तहिक़ हैं तो हमारा अक्कीदा उसके बारे में यह है कि वह जलाए जाने बल्कि उस से ज़्यादा सज़ा का मुस्तहिक़ है।

(बरकाते आले रसूल:283)

हदीस शरीफ में है **مَنْ سَبَّ أَصْحَابِي فَقَدْ كَفَرَ بِاللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ** यानी

जिस ने मेरे सहाबा को गाली दी और उन्हें बुरा भला कहा, उस पर अल्लाह तआला, तमाम फिरिश्तों और तमाम इंसानों की लअूनत है।

इस हदीस शरीफ की शरह में इमाम मनावी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि यह हुक्म उन सहाबा को भी शामिल है जो कल्लो-किताल में शामिल हुए इस लिये कि वह उन लड़ाइयों में मुज्ताहिद और तावील करने वाले हैं, लिहाजा उन्हें गाली देना गुनाहे कबीरा और उनको गुमराही या कुफ्र की तरफ मन्सूब करना कुफ्र है।

(बरकाते आले रसूल:283)

और काज़ी अयाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह शिफा शरीफ में तहरीर फरमाते हैं कि सहाबए किराम को गाली देना और उनकी तन्कीस हराम है। इस का मुरतकिब मलऊन है। “इमाम मालिक फरमाते हैं: जिस शख्स ने कहा कि उन में से कोई एक गुमराही पर था उसे कत्ल किया जाएगा और जिस ने इस के अलावा उन्हें गाली दी उसे सख्त सज़ा दी जाएगी।

(बरकाते आले रसूल:283)

यहां तक कि अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपने रिसाला “अल्-कामुल् हजर” में इस बात पर इत्तिफाक नक़ल किया है कि किसी सहाबी को गाली देने वाला फासिक है, अगर उसे वह हलाल न जाने और अगर वह हलाल जाने तो काफिर है। इस लिये कि इस तौहीन का अदना दर्जा यह है कि यह हराम और फिस्क है और हराम को हलाल जानना कुफ्र है जबकि दीन में उस का हराम होना बदाहतन मालूम हो और सहाबए किराम को गाली देने की हुर्मत इसी तरह है।

(बरकाते आले रसूल:282)

और हज़रत अल्लामा सअदुद्दीन तफ्ताज़ानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं, अहले हक़ का इस बात पर इत्तिफाक है कि तमाम उमूर में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हक़ पर थे और फरमाते हैं: وَالْخَوَاصُّ لَهُمْ كَلِمَةُ غَدْوَلٍ यानी तहकीक़ यह है कि तमाम सहाबा आदिल हैं। और सारी जंगों और इख़िलाफात तावील पर मब्नी हैं, इन

के सबब कोई भी अदालत से खारिज नहीं, इस लिये कि वह मुज्ताहिद हैं।

(अश्शर्फुल मोअब्बद:104)

यह अइम्मए किराम व उलमाए इज़ाम जो आसमाने हिदायत के आफताब व माहताब और दीन के सुतून हैं, इन के इरशादात और इन की नसीहतों पर अमल करो। हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु या सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के किसी दूसरे सहाबी को बुरा भला कह कर फासिक व फाजिर, मुरतकिबे हराम और मुस्तहिक्के सज़ा न बनो और न अपनी आकिबत बरबाद करो।

हज़रत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के फज़ाइल

हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की सहाबियत और क़राबत के अलावा और बहुत सी फज़ीलतें साबित हैं। जिन में से चन्द ज़िक्र की जाती हैं।

आप के फज़ाइल में बहुत सी अहादीसे करीमा वारिद हैं। हज़रत इरबाज़ बिन सारिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **اللَّهُمَّ عَلِّمْنَا مَعَاوَةَ الْكِتَابَ وَالْحِسَابَ وَفِي الْعَذَابِ** रवाहु अहमद फी मुस्निदिही। यानी ऐ अल्लाह! तू मुआविया को किताब (कुरआने करीम) और हिसाब का इल्म अता फरमा और इन्हें अज़ाब से बचा। (अन्नाहिया:14, तस्नीफ आरिफ बिल्लाह हज़रत अल्लामा अब्दुल अज़ीज़ फरहारवी, मोअल्लिफ नबरास शरह शर्हुल अक़ाइद अन्नसफी)।

और हज़रत अब्दुर रहमान बिन अबू अमीरा सहाबी मदनी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले काइनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये फरमाया: **اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ فَرَسًا مِّنْ فُرْسَانِ رَسُولِ اللَّهِ** रवाहुत्तिर्मिजी। ऐ अल्लाह! मुआविया को हादी और महदी बना दे यानी हिदायत याफ़ता और

हिदायत देने वाला बना दे। और इन के जरिये लोगों को हिदायत दे।

(मिशकात:579)

और खुदाए अज़्ज़ व जल् अपने प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम की दुआओं को कबूल फरमाता है। तो साबित हुआ कि हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु हादी भी हुए और महदी भी। और उनके जरिये लोगों को हिदायत भी हुई तो ऐसी ज़ात को बुरा भला कहना यकीनन अल्लाह व रसूल की नाराज़गी का सबब होगा।

और इब्ने अबी शैबा मुसन्नफ में व तबरानी मोअज़मे कबीर में अब्दुल मलिक बिन उमैर से रिवायत करते हैं, हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु ने कहा कि मुझ से सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **يَا مُعَاوِيَةُ إِذَا مَلَكَتْ فَاحِشِينَ** ऐ मुआविया! जब तुम बादशाह हो जाओ तो लोगों के साथ अच्छी तरह पेश आना।

(तारीखुल खुलफा:132)

इन्तिबाह

अवाम में जो मशहूर है कि “हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम ने देखा हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु यज़ीद को कंधे पर लिये जा रहे हैं तो हुज़ूर ने फरमाया: जन्नती, जहन्नमी को ले जा रहा है” यह सहीह नहीं है। इस लिये कि यज़ीद हुज़ूर अक्दस सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम के विसाल फरमाने के तक़रीबन 15 साल बाद सन् 25 हिजरी में पैदा हुआ। (सवानेहे करबला)

2- हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम के कातिबे वही भी रहे और कातिबे खुतूत भी। इमाम मुफ्ती हरमैन अहमद बिन अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद तब्री खुलासतुस् सियर में तहरीर फरमाते हैं कि नबीए अक्रम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम के 13 कातिब थे, खुलफाए अरबा, आमिर बिन फुहैरा, अब्दुल्लाह बिन अर्कम, उबैय बिन कअब, साबित

बिन कैस बिन शमास, खालिद बिन सईद बिन आस, हंजला बिन रबीअ अस्लमी, जैद बिन साबित, शुरहबील बिन हसनह और मुआविया बिन अबी सुफियान। रजियल्लाहु तआला अन्हुम। लेकिन इन लोगों में हज़रत अमीरे मुआविया और हज़रत जैद रजियल्लाहु तआला अन्हुमा इस खिदमत को ज़्यादा अंजाम देते थे।

अल्लामा कस्तलानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने बुखारी शरीफ की शरह में फरमाया कि हज़रत अमीरे मुआविया रजियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के कातिबे वही रहे।

(अन्नाहिया:16)

3- हज़रत मुल्ला अली क़ारी शरह मिश्कात में तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रजियल्लाहु तआला अन्हु जो हज़रत इमामे आजम अबू हनीफा रजियल्लाहु तआला अन्हु के मख्सूस शागिरदों में से हैं उन से पूछा गया कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ अफज़ल हैं या हज़रत मुआविया? रजियल्लाहु तआला अन्हुमा, तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रजियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया: **عَمَّا دَخَلَ فِي أَتَفِ قَرْسٍ مُعَاوِيَةَ جَيْنَ غَزَاوِي رِكَابِ رَسُولِ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَفْضَلُ مِنْ كَذَا عَمْرَيْنِ** हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ जिहाद के मौक़ा पर हज़रत अमीरे मुआविया रजियल्लाहु तआला अन्हु के घोड़े की नाक में जो गुबार दाख़िल हुआ वह उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ से अफज़ल है।

(अन्नाहिया:16)

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ वह हैं जिन को इमामुल हुदा कहा जाता है, खुलफ़ाए राशिदीन में पांचवें खलीफ़ा की हैसियत से उन को शुमार किया जाता है और जिन की ज़ियारत के लिये हज़रत ख़िज़र अलैहिस्सलाम आया करते थे मगर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक जैसे इमामे वक़्त जब हज़रत अमीरे मुआविया के घोड़े की नाक के गुबार को भी उन से अफज़ल बताते हैं, तो फिर हज़रत अमीरे मुआविया रजियल्लाहु तआला अन्हु की अज़मत व रिफ़अत (बुलंदी) का क्या

कहना, मगर अप्सोस कि आज कल वह लोग जिन की हकीकत कुछ भी नहीं वह हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से अफज़ल बनते हैं बल्कि उन की जात पर सब्बो शितम और तअन व तअन भी करते हैं। *अल्-इयाजु बिल्लाहि तआला।*

हज़रत अल्लामा काज़ी अयाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह लिखते हैं कि अल्लामा मआफी इब्ने इमरान अलैहिर रहमत वरिज़वान से एक शख्स ने कहा कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ हज़रत मुआविया से अफज़ल हैं, यह सुनते ही हज़रत अल्लामा इब्ने इमरान ग़ज़बनाक हो गए और फरमाया: لَا تَقَاسُ أَحَدِيَا صَحَابِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ यानी नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सहाबा पर किसी को क़ियास नहीं किया जाएगा। *مُعَاوِيَةُ صَاحِبُهُ وَصَهْرُهُ وَكَاتِبُهُ وَآيَةُ عَلَى وَحْيِ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ* हज़रत मुआविया नबीए करीम अलैहिस् सलातु वत्तस्लीम के सहाबी, उन के साले, उन के कातिब और खुदाए अज़्ज़ व जल्ल की वही पर नबीए करीम के अमीन हैं। (अन्नाहिया:17)

4- हज़रत अल्लामा शहाबुद्दीन ख़फ़ाजी नसीमुर रियाज़ शरह शिफाए इमाम काज़ी अयाज़ में तहरीर फरमाते हैं कि जो शख्स हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर तअन करे वह जहन्नमी कुत्तों से एक कुत्ता है। (अहकामे शरीअत:1/103)

5- सहाबए किराम, मुहदिसीने इज़ाम और उलमाए इस्लाम हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तारीफ व तौसीफ बयान करते हैं, बा वजूदे कि वह हज़रत अली कर्मल्लाहु तआला वज्हुल करीम के फज़ाइल व मनाकिब से ख़ूब वाकिफ थे और उन के माबैन जो वाकिआत रु-नुमा हुए, उन्हें अच्छी तरह जानते थे।

बुख़ारी शरीफ की हदीस है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से किसी शख्स ने कहा कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बारे में आप क्या कहते हैं जबकि फुलां मस्अले में उन्होंने ने यूं किया, तो आप ने फरमाया:

فَقِيَّةٌ उन्होंने ने ठीक किया, बेशक वह फकीह हैं। (मिशकात:112)

यानी हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुज्ताहिद हैं वह सवाब पायेंगे अगर ख़ता करेंगे। (मिर्कात शरह मिशकात:2/160)

देखिये रईसुल मुफस्सिरीन हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा जो अजिल्लाए (बुजुर्ग) सहाबा में से हैं और हज़रत अली कर्मल्लाहु तआला वज्हुल करीम के ऐसे खास हैं कि उन के दुश्मन पर बहुत सख्त हैं, वह हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की तारीफ़ करते हैं और उन को फकीह व मुज्ताहिद मानते हैं। तो कितने बद नसीब हैं वह लोग जो जलीलुल क़द्र सहाबिए रसूल के नक्शे क़दम को छोड़ कर शैतान की इत्तिबाअ (पैरवी) करते हैं यानी हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शान में बेजा कलिमात बोलते हैं और उनकी तौहीन व तन्कीस करते हैं। अल्-इयाजु बिल्लाहि तआला।

और हज़रत अल्लामा कस्तलानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह बुख़ारी शरीफ़ की शरह में तहरीर फरमाते हैं: مُعَاوِيَةُ ذُو السَّنَابِ الْحُمَيْ हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु बड़े मनाक़िब और बड़ी ख़ूबियों वाले हैं। (अन्नाहियह:17)

और हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह लिखते हैं: مُعَاوِيَةُ فَهُوَ مِنَ الْعُلُولِ الْفُضْلَاءِ وَالصَّحَابَةِ الْأَخْيَارِ हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अअदले फ़ुज़ला और बेहतरीन सहाबा में से हैं। (मिर्कात शरह मिशकात:2/517)

इसी लिये तमाम मोहद्दिसीने किराम हज़रत अमीरे मुआविया और दीगर सहाबए रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के दरमियान कोई तफ़रीक़ नहीं करते, जिस तरह दूसरे सहाबा के नामों के साथ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु लिखते हैं उसी तरह हज़रत अमीरे मुआविया के नाम के साथ भी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तहरीर फरमाते हैं।

6- हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुत्तकी,

आदिल और सिकह हैं इसी लिये हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर, हज़रत साइब बिन यज़ीद, हज़रत नोमान बिन बशीर और हज़रत अबू सईद खुदरी जैसे फकीह व मुज्ताहिद सहाबा ने आप से हदीसों की रिवायत की। इसी तरह हज़रत जुबैर, हज़रत अबू इदरीस खौलानी, हज़रत सईद बिन मुसैय्यिब, हज़रत खालिद बिन मअदान, हज़रत अबू सालेह बिन सम्मान, हज़रत हुमाम बिन उतबा और हज़रत कैस बिन अबू हाज़िम जैसे जलीलुल क़द्र ताबईन फ़ुक्हा और उलमा ने आप से हदीसों की रिवायतें लीं। अगर हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु में मकर व फरेब और फिस्क व फुजूर होता जैसा कि आज कल जाहिलों ने समझ रखा है तो यह बड़े-बड़े सहाबा व ताबईन हज़रात उन से हदीसों की रिवायतें हरगिज़ क़बूल न करते।

7- बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, नसई, बैहकी और तब्रानी वगैरा मुहदिसीने किराम ने हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत कर्दा हदीसों को क़बूल किया और अपनी अपनी किताबों में दर्ज किया। इन में खास कर इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम ऐसी मोहतात हस्तियां हैं कि अगर किसी रावी में ज़रा भी ऐब पाया तो उस की रिवायत लेने से इनकार कर दिया। तो इन बुजुर्गों का हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायतों का क़बूल कर लेना बबांगे दुहल (खुल्लम खुल्ला) ऐलान कर रहा है कि इन सब के नज़्दीक हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुत्तकी, आदिल और सिकह काबिले रिवायत हैं। हज़रत अली कर्मल्लाहु तआला वज्हुहुल करीम से इख़्तिलाफ़ के सबब मर्तबए अदालत से साक़ित नहीं हैं वरना यह हज़रात उन की रिवायतें हरगिज़ क़बूल न फरमाते।

8- हज़रत उमर फारूक़े आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत अमीरे मुआविया को दमिशक़ का हाकिम मुकर्रर किया और माज़ूल न

फरमाया, जबकि आप हाकिमों के हालात पर कड़ी निगाह रखते थे और ज़रा सी लगज़िश पर माज़ूल फरमा देते थे जैसे कि मामूली शिकायत पर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जैसी बुजुर्ग हस्ती को माज़ूल फरमा दिया।

तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जैसे सख्त गीर आदमी का हज़रत अमीरे मुआविया को दमिश्क का हाकिम मुकर्रर फरमाना और अपनी ज़ाहिरी हयात के आखिरी लम्हात तक उसी अहम उहदे पर उन्हें बारक़रार रखना हज़रत अमीरे मुआविया की अज़मत व रिफ़अत और उनकी अमानत व दियानत का खुल्लम खुल्ला इक़रार व ऐलान है।

9- हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने 6 माह उमूरे ख़िलाफ़त अंजाम देने के बाद हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ख़िलाफ़त सुपुर्द कर दी और उन के हाथ पर बैअत कर ली। फिर उन के सालाना वज़ीफ़े और नज़ाने क़बूल फरमाए। क़सम है वहदहू ला शरीक की अगर हज़रत अमीरे मुआविया बातिल परस्त होते तो हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु सर कटा देते मगर उन के हाथ में हाथ न देते। इस लिये कि:

مردّ هكّ بااتيل से हरगिज़ ख़ौफ़ खा सकता नहीं

सर कटा सकता है लेकिन सर झुका सकता नहीं

और फिर रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत इमाम हसन के इस फेअले मुबारक (अच्छे काम) की इन अल्फ़ाज़ में तारीफ़ फरमाई: **إِنِّي هَذَا سَيِّدٌ وَلَعَلَّ اللَّهَ أَنْ يُصَلِّحَ بِهِ بَيْنَ بَيْنِ الْمُسْلِمِينَ** मेरा बेटा यह सरदार है। उम्मीद है कि अल्लाह तआला इस के ज़रिये मुसलमानों की दो जमाअतों में सुलह करा देगा। (बुख़ारी शरीफ़: 1/530)

अब अगर कोई बद बख्त हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को ना अहल करार दे तो हज़रत इमामे हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर इल्ज़ाम आ जाएगा कि आप ने ना अहल को ख़िलाफ़त क्यों सुपुर्द की और उम्मत की बाग़ डोर उन के हाथ में क्यों

दी? जबकि यह सुपुर्दगी किल्लत व जिल्लत की वजह से नहीं थी इस लिये कि 40 हजार सिपाही जान कुर्बान करने की बैअत आप के हाथ पर कर चुके थे। (हाशिया बुखारी:1/530)

आप की सखावत

हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु में सखावत का वस्फ बहुत मुम्ताज़ था। आप लोगों को बड़े-बड़े इनाम व इकराम से नवाज़ते थे। हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की खिदमत अक्दस में गिरां कद्र (कीमती) नज़ाने पेश करते थे। हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह मिश्कात शरीफ की शरह में हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुरैदा से रिवायत करते हैं कि एक बार हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत अमीरे मुआविया के पास तशरीफ ले गए, उन्होंने ने आप से कहा: لَا جِزْيَتَكَ بِحَايِزَةٍ لَّمْ أُجْزِئْ بِهَا أَحَدًا مِّنْكَ, मैं आप की खिदमत में इतनी नज़ाना पेश करूंगा कि इस से पहले किसी को इतनी नज़ा नहीं दी है और न आइन्दा किसी दूसरे को दूंगा। फिर उन्होंने ने चार लाख दिरहम हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की खिदमत में पेश किया जिन्हें आप ने क़बूल फरमाया। (अन्नाहिया:27)

एक दिरहम साढ़े तीन माशा चांदी का होता था। चार लाख दिरहम कितनी चांदी हुई और मौजूदा भाव से उस का कितना रुपया हुआ आप लोग बआसानी जोड़ सकते हैं। इतनी बड़ी रक़म इस इफ़राते ज़र (रुपये पैसे की ज़्यादती) के ज़माना में, हो सकता है बाज़ लोग के नज़्दीक कोई खास वक़़त न रखती हो लेकिन उस ज़माना में जबकि एक पैसा बड़ी मेहनत करने के बाद मिलता था, चार लाख दिरहम बहुत बड़ी अहमियत रखता था।

इब्ने असाकिर की रिवायत में है कि जंगे सिफ्फीन के ज़माना में हज़रत अली कर्मल्लाहु तआला वज्हुल करीम के भाई हज़रत अक़ील ने आप से कुछ रुपया तलब किया, हज़रत अली ने नहीं दिया, उन्होंने ने

कहा आप इजाजत दीजिये कि मैं अमीरे मुआविया के पास चला जाऊं, हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया जाओ, जब हज़रत अकील हज़रत अमीरे मुआविया के पास गए, उन्होंने ने आप की बड़ी इज़्ज़त की और एक लाख दिरहम नज़ाना पेश किया। (सबाइके मुहर्म्मका81:)

अल्लामा मुहम्मद बिन महमूद आमली अपनी किताब नफाइसुल फुनून में तहरीर फरमाते हैं कि एक बार हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हाज़िरीने मज्लिस से फरमाया: **مَنْ أَشْفَرَانِي** जो शख्स हज़रत अली की तारीफ में उन के शान के लाइक शेअर कहेगा तो उसे मैं फी शेअर एक लाख दीनार दूंगा। एक दीनार साढ़े चार माशा सोने का होता है। हाज़िरीने शुअरा ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शान में अशआर कहे और खूब इनाम लिये। हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हर शेअर पर फरमाते थे: **عَلَى الْفَضْلِ** अली इस से भी अफज़ल हैं। यहां तक कि उसी मज्लिस में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शान में हज़रत अम्र बिन आस शाइर का एक शेअर आप को इतना ज़्यादा पसंद आया कि एक ही शेअर पर उस को सात हजार दीनार दिया। (अन्नाहिया:29)

इन वाकिआत से हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बेमिस्त सखावत के साथ यह बात भी अच्छी तरह वाज़ेह हो जाती है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और उन के खानदान वालों की आप के दिल में बड़ी इज़्ज़त थी।

तुयूरियात में सुलैमान मखज़ूम के हवाले से लिखा है कि एक बार हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दरबारे आम किया, जब तमाम लोग जमा हो गए तो आप ने फरमाया कि मुझे किसी अरबी शाइर के ऐसे तीन अशआर कोई सुनाए जिन में यह खूबी हो कि हर शेअर का मतलब उसी शेअर में पूरा हो जाता हो। लोग यह सुनकर खामोश रहे, इतने में हज़रत अबू खुबैब अब्दुल्लाह बिन जुबैर

रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम आ गए, हज़रत अमीरे मुआविया ने फरमाया लीजिये अरब के बिस्तार गो और फसीह शख्स आ गए, फिर आप ने कहा ऐ अबू ख़ुबैब! मैं इस ख़ूबी के तीन अशआर सुनना चाहता हूँ, हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि मैं सुनाऊंगा, लेकिन हर शेअर के बदले एक लाख दिरहम लूंगा, आप ने फरमाया मुझे मन्ज़ूर है पढ़ो, तो अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने यह अशआर पढ़े:

بَلَوْتُ النَّاسَ قَرْنًا بَعْدَ قَرْنٍ فَلَمْ أَرِ غَيْرَ خِيَالٍ وَقَالَ

मैं ने यके बाद दीगरे बहुत से लोगों से मुताकतें की हैं लेकिन मैं ने सिवाए गुद्दार व मक्कार और दुश्मनी करने वाले के किसी को नहीं देखा।

हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया, सच है। अब दूसरा शेअर पढ़ो। हज़रत अबू ख़ुबैब ने दूसरा शेअर यह पढ़ा:

وَلَمْ أَرِ فِي الْخَطُوبِ إِثْلًا وَقَمًّا وَأَصْعَبَ مِنْ مَعَادَاتِ الرِّجَالِ

मैं ने हवादिस और सऊबाते ज़माना में लोगों की दुश्मनी के सिवा और कुछ नहीं देखा, आप ने फरमाया सच है। फिर तीसरा शेअर पढ़ने के लिये कहा। तीसरा यह पढ़ा:

وَدُقْتُ مَرَاةَ الْأَخْيَاءِ طَرًّا فَمَا طَعِمَ أَمْرٌ مِنَ السُّؤَالِ

मैं ने हर चीज़ की तलखी को चखा है मगर किसी चीज़ के मांगने की तलखी से ज़्यादा कोई चीज़ तलख नहीं है।

हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया बिल्कुल सच है। फिर वादा के मुताबिक हज़रत अबू ख़ुबैब अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा को तीन लाख दिरहम अता फरमाया।

(तारीखुल ख़ुलफा:138)

आप हाकिम कैसे बने?

हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दमिशक के हाकिम यूं हुए कि जब हज़रत अबू बकर सिदीक रज़ियल्लाहु तआला

अन्हु के जमानए मुबारक में मुल्के शाम फतह हुआ तो आप ने दमिश्क का हाकिम हज़रत अमीरे मुआविया के भाई हज़रत यज़ीद बिन अबू सुफियान को मुकर्रर फरमाया, इत्तिफाक से अपने भाई के साथ हज़रत अमीरे मुआविया भी मुल्के शाम गए थे जो उन्हीं के पास रह गए थे, जब हज़रत यज़ीद बिन अबू सुफियान के इन्तेकाल का वक़्त करीब आया तो उन्हीं ने अपनी जगह हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को हाकिम मुकर्रर कर दिया। यह तकर्रर हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के जमानए ख़िलाफत में हुआ। आप ने उनके तकर्रर को बरकरार रखा और पूरे अहदे फारूकी में वह दमिश्क के हाकिम रहे। यहां तक कि हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने अहदे ख़िलाफत में हज़रत अमीरे मुआविया को पूरे मुल्के शाम का हाकिम बना दिया, इस तरह आप ने अहदे फारूकी व उस्मानी में बहैसियते हाकिम 20 साल तक हुक्मत की और फिर बाद में बहैसियते ख़लीफा 20 साल हुक्मरां रहे। (तारीख़ुल ख़ुलफा:132)

आप की आखिरी वसियत

अल्लामा अबू इस्हाक अपनी किताब नूरुल ऐन फी मशहदिल हुसैन में तहरीर फरमाते हैं कि जब हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की वफ़ात का वक़्त करीब आया तो यज़ीद ने पूछा अब्बा जान! आप के बाद ख़लीफा कौन होगा? तो आप ने फरमाया ख़लीफा तो तू ही बनेगा मगर जो कुछ मैं कहता हूं उसे ग़ौर से सुन, कोई काम हज़रत इमाम हुसैन के मश्वरा के बग़ैर मत करना, उन्हें खिलाए बग़ैर न खाना, उन्हें पिलाए बग़ैर न पीना। सब से पहले उन पर खर्च करना फिर किसी और पर। पहले उन्हें पहनाना फिर खुद पहनना। मैं तुझे हज़रत इमाम हुसैन, उन के घर वालों और उन के कुंबे बल्कि सारे बनी हाशिम के लिये अच्छे सुलूक की वसियत करता हूं।

ऐ बेटे! ख़िलाफत हमारा हक़ नहीं, वह इमाम हुसैन, उन के वालिद हज़रत अली और उन के अहले बैत का हक़ है, तुम चन्द रोज़

खलीफा रहना, फिर जब हजरत इमाम हुसैन पूरे कमाल को पहुंच जाए तो फिर वही खलीफा होंगे। या जिसे वह चाहें ताकि खिलाफत अपनी जगह पहुंच जाए। हम सब इमाम हुसैन और उनके नाना के गुलाम हैं, उन्हें नाराज़ न करना वरना तुझ पर अल्लाह व रसूल नाराज़ होंगे। तो फिर तेरी शफाअत कौन करेगा। (अमीरे मुआविया पर एक नज़र:94)

आप की वफात

अल्लामा ख़तीब तबरेज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि हजरत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की वफात माहे रजब सन् 60 हिजरी में लक़्वा की बीमारी से मक़ामे दमिश्क में हुई, जबकि आप की उम्र 78 साल थी।

(इक्माल फी अस्माइर् रिजाल)

हजरत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मरजे वफात में बार-बार फरमाते थे: **يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ كُنْتُ رَجُلًا مِنْ قُرَيْشٍ بَدَى طَوَى وَلَمْ أَرِ مِنْ هَذَا أَمْرٍ غَيْبًا** यानी एक काश! मैं कुरैश का एक मामूली इंसान होता जो ज़ी तुवा गांव में रहता और इन झगड़ों में न पड़ता, जिन में पड़ गया। और बवक़्ते वफात आप ने वसियत फरमाई कि मेरे पास हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की लुंगी, हुज़ूर की चादर और कुर्ता मुबारक है। कुछ उन के बाल और नाखूने अक़्दस के तराशे हैं, मुझे कफन में हुज़ूर का कुर्ता पहनाया जाए, हुज़ूर की चादर में लपेटा जाए, हुज़ूर की लुंगी मुझे बांध दी जाए और मेरे उन अज़्ज़ा पर जिन से सज्दा किया जाता है हुज़ूर के भुएं मुबारक और तराशे नाखूने अक़्दस रख दिये जाएं। और मुझे अर्हमुरा हिमीन के रहमो-करम पर छोड़ दिया जाए।

(मिर्कात शरह मिश्कात:5/628)

आप की करामतें

हजरत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु साहिबे करामत सहाबी हैं। चुनांचे किताब तत्हीरुल जिनान में फरमाया, सनद सहीह से रिवायत है कि जब हजरत अमीरे मुआविया को हजरत उस्माने ग़नी

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत की ख़बर पहुंची तो आप ने फरमाया कि मक्का वालों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को मक्का शरीफ से हिज़्रत करने पर मजबूर किया, तो वहां कभी ख़िलाफत न हुई और न आइन्दा होगी। और मदीना मुनव्वरा में ख़लीफतुल मुस्लिमीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को शहीद किया गया तो वहां से ख़िलाफत निकल गई, अब कभी वहां ख़िलाफत न होगी।

चुनांचे ऐसा ही हुआ कि इतना ज़माना गुज़र गया मगर आज तक हरमैन शरीफैन दारुल ख़िलाफत न बने। मक्का मुअज़्ज़मा में अगर्चे हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने ख़िलाफत का दावा किया था, मगर वह सिर्फ ख़िलाफत की सूरत थी हकीकत में ख़िलाफत न थी। लेकिन मदीना मुनव्वरा में आज तक सूरतन भी ख़िलाफत न हुई कि हज़रत सैय्यिदना अली मुरतज़ा कर्म्मल्लाहु तआला वन्हहुल करीम ने कूफा को अपना दारुल ख़िलाफत बनाया और उन के बाद किसी ख़लीफा ने मदीना मुनव्वरा को दारुल ख़िलाफत नहीं बनाया। और यह हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की खुली हुई करामत है। (अमीरे मुआविया पर एक नज़र:72)

और आप की दूसरी करामत यह है कि जब आप ने यज़ीद को अपना वली अहद मुकरर किया तो दुआ फरमाई ऐ मौला तआला! अगर यज़ीद इस का अहल न हो तो इस की सल्तनत को कामिल न फरमा। चुनांचे आप की दुआ के मुताबिक ही हुआ कि यज़ीद पलीद हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के बाद तीन साल कुछ माह ज़िंदा रहा मगर उस की सल्तनत पायए तक्मील को न पहुंच सकी। (अमीरे मुआविया पर एक नज़र:72)

और आप की एक करामत वह है जिसे आरिफ बिल्लाह मौलाना जलालुद्दीन मुहम्मद रूमी कुदिस सिरूहू ने अपनी मत्नवी शरीफ के दफ्तरे दोम में तहरीर फरमाया है।

दर खबर आमद कि खाले मोमिनां

बुवद अन्दर कसरे खुद खुफ्तए शबां

हदीस शरीफ में आया है कि मोमिनों के मामूं यानी हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु रात के वक़्त अपने महल में सोए हुए थे।

ना गहां मरदे वरा बेदार करद

चश्मे चूं बकुशा व पिन्हा गश्त मरद

अचानक एक शख्स ने उन को बेदार किया, जब आप की आंख खुली तो वह छुप गया, फिर आप ने पूरे कमरे में गौर से नज़र डाली, तो देखा कोई पर्दे के पीछे छुपने की कोशिश कर रहा है।

गुफ्त ही तू कीस्ती नामे तू चीस्त

गुफ्त नामम् फाश इब्लीसे शकी अस्त

आप ने फरमाया ऐ छुपने वाले! तू कौन है? और तेरा नाम क्या है? उस ने कहा मेरा ज़ाहिर नाम इब्लीसे शकी है। आप ने फरमाया तू ने मुझे क्यों बेदार किया?

गुफ्त हंगामे नमाज़ आखिर रसीद

सूए मस्जिद ज़ूद मी बायद दवीद

इब्लीस ने कहा कि नमाज़ का वक़्त ख़त्म हो रहा है। आप को मस्जिद में बहुत जल्द जाना चाहिये। आप ने फरमाया तू किसी मुसलमान को भलाई की तरफ़ हरगिज़ नहीं बुला सकता। यकीनन तेरी गरज़ कोई और होगी। उस ने कहा इसके अलावा मेरी कोई गरज़ नहीं है। मैं हमेशा अच्छे लोगों को भलाई की तरफ़ रहनुमाई करता हूं और बुरे लोगों की भी पेशवाई करता हूं।

बाग़ बानम शाख़े तर मी परवरम

शाख़ हाए खुश्क रा हम मी बुरम

मैं बाग़बान हूं, हरी शाख़ों की देख भाल करता हूं और सूखी टहनियों को काटता हूं।

गर तुरा बेदार करदम बहरे दी

खूए अस्ते मन् हमीं अस्त व हकी

बुक डिप
मोहम्मद अली रोड मोमिनपुरा नाग

अगर हम ने आप को दीन के लिये बेदार किया तो आप तअज्जुब न करें, हमारी पुरानी और खास आदत यही है।

आप ने फरमाया एक मक्कार! तू, और भलाई की तरफ रहनुमाई करे, यह सब फरेब की बातें हैं। सच बता कि तू ने हमें बेदार क्यों किया? जब तक तू सच्ची बात नहीं बताएगा, मैं तुझे जाने नहीं दूंगा, आखिर इब्नीस सच्ची बात बताने पर मजबूर हो गया।

अज्ज बुने दन्दाने बगुफ्तश ऐ फुलां

करद मत् बेदार मन् अज्ज बहरे आं

दबी ज़बान से उस ने कहा ऐ अमीरे मुआविया! बेदार करने का मक्सद यह है कि:

ता रसी अन्दर जमाअत दर नमाज

अज्ज पए पैगम्बरे दौलत फराज

आप पैगम्बरे इस्लाम अलैहिस्सलातु वस्सलाम के पीछे नमाज बा जमाअत अदा फरमा लें।

गर नमाज फौत मी शुद् ई ज़मां

मी ज़दी अज्ज दूदे दिल आहो-फगां

क्यों कि उस वक़्त अगर नमाज क़ज़ा हो जाती तो आप दिल से आहो-बुका करते।

आं तअस्सुफ व वां फगां वुआं नयाज

दर गुज़श्ती अज्ज दो सद रकअत नमाज

उस अफ़सोस करने, रोने और आजिज़ी करने से आप को दो सौ रकअत से ज़्यादा का सवाब मिल जाता। और ज़्यादा सवाब मिलने से मुझे तकलीफ़ हीती। इस लिये मैं ने आप को बेदार कर दिया।

मन् हुसूदम अज्ज हसद करमद् चुनीं

मन् अदव्वुम कारे मन् मकरस्तो-कीं

मैं हासिद हूँ, हसद से मैं ने ऐसा काम किया ताकि सवाब ज़्यादा

न मिलने पाए, मैं आप का दुश्मन हूँ, मेरा काम मक्कारी और फरेब है।

गुफ्त अक्नू रास्त गुफती सादिकी

अज्र तू ई आयद तू ई रा लाइकी

आप ने फरमाया अब तू ने सच कहा और अपने इस बयान में तू सच्चा है। तुझ से यही होगा और तू इसी लाइक है। इब्नीस जो किसी के कब्जे में नहीं आता है, वह हज़रत अमीरे मुआविया रज़िल्लाहु तआला अन्हु की गिरफ्त से नहीं निकल सका और न उनको फरेब दे सका। यह आप की वाज़ेह करामत है।

आप पर ऐतराज़ात के जवाबात

हज़रत अमीरे मुआवियार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ात पर कुछ लोग ऐतराज़ात करते हैं, हम उन के ऐतराज़ात को नक़ल करने के बाद अपने मुदल्लल जवाबात पेश करेंगे, आप लोग बग़ौर समाज़त फरमाएं।

पहला ऐतराज़

पहला ऐतराज़ यह है कि अमीरे मुआविया ने हज़ारों को क़त्ल किया और कराया। अगर यह हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से जंग न करते तो मुसलमानों का इतना क़त्ल न होता। और मोमिन को क़त्ल करने वाला हमेशा जहन्नम में रहेगा। खुदाए तआला का इरशाद है:

जो शख्स किसी मुसलमान को जान बूझ कर क़त्ल करे तो उस का बदला जहन्नम है जिस में वह हमेशा रहेगा। अल्लाह तआला उस पर ग़ज़ब और लअनत फरमाएगा और उस के लिये बड़ा अज़ाब तैयार कर रखा है। (पारा:5 सूअ:10)

وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَدِّيًا فَجَزَاءُ

جَهَنَّمَ خَالِدًا فِيهَا وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ

وَلَعْنَةُ وَالْعَذَابُ عَظِيمًا

(बारे: ५, रकوع: १०)

लिहाज़ा अमीरे मुआविया इस आयत के अहकाम में दाखिल हैं।

जवाब

इस ऐतराज़ के दो जवाब हैं, अव्वल इल्ज़ामी और वह यह है कि

फिर तो हज़रत आइशा सिद्दीका, हज़रत तल्हा और हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम पर भी यही इल्ज़ाम आइद हो सकता है, इस लिये कि इन लोगों ने भी हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से जंग की जिस में हज़ारों मुसलमान शहीद हुए। जबकि हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा का जन्मती होना ऐसा ही यकीनी है जैसा कि जन्मत का होना, इस लिये इनके जन्मती होने पर कुरआन की आयत शाहिद है। और हज़रत तल्हा और हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा भी कतअन जन्मती हैं इस लिये कि यह दोनों हज़रत अशरए मुबशशरा में से हैं।

इस ऐतराज़ का दूसरा जवाब तहकीकी है और वह यह है कि मोमिन के क़त्ल की तीन सूरतें हैं, एक तो यह कि उसके क़त्ल को हलाल समझे और यह कुफ़्र है, इस लिये मोमिन का क़त्ल हरामे क़तई है और हरामे क़तई को हलाल समझना कुफ़्र है और आयते करीमा में क़त्ल की यही सूरत मुराद है। इस लिये कि कुफ़्र वाला ही हमेशा जहन्नम में रहेगा न कि ईमान वाला। दूसरे यह कि मोमिन के क़त्ल को हलाल नहीं समझते मगर दुनियावी झगड़े में उसे क़त्ल कर दिया। यह कुफ़्र नहीं है बलिक फिस्क और गुनाहे कबीरा है, जैसे हलाल न समझते हुए शराब पीना और नमाज़ का क़सूदन तर्क करना। और तीसरी सूरत ख़ताए इज्तिहादी से एक मोमिन का दूसरे मोमिन को क़त्ल करना। यह न कुफ़्र है न फिस्क और हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की जंग इसी तीसरी किस्म में दाख़िल है। आप मुज्ताहिद थे जैसा हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के फरमान से पहले मालूम हो चुका है। और मुज्ताहिद अगर अपने इज्तिहाद में ख़ता करे तो उस पर कोई मवाख़ज़ा (पकड़) नहीं।

अगर हमारा यह जवाब मोअतरिज़ (ऐतराज़ करने) को तस्लीम नहीं तो फिर यही ऐतराज़ हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर भी होगा, उन्होंने ने भी हज़रत आइशा और हज़रत अमीरे मुआविया

रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की जंग में बेशुमार मोमिनों को क़त्ल किया और कराया। खुदाए अज़्ज़ व जल्ल समझने की तौफीक अतां फरमाए।

दूसरा ऐतराज़

यह कहा जाता है कि अमीरे मुआविया के दिल में अहले बैत से दुश्मनी थी, इस लिये उन्होंने अहले बैत को सताया। और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का फरमान है जिस ने अली को सताया उस ने मुझ को सताया। और अमीरे मुआविया ने अहले बैत से जंग की और हुज़ूर ने फरमाया जिस ने उन से जंग की उस ने मुझ से जंग की और सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से जंग करने वाला मोमिन कब हो सकता है।

जवाब

इस ऐतराज़ के भी दो जवाब हैं। अव्वल इल्ज़ामी और वह यह है कि हज़रत आइशा, हज़रत तल्हा और हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम पर भी यही ऐतराज़ वारिद होगा कि इन हज़रात ने भी हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से जंग की है बल्कि कोई मुख़ालिफ हज़रत अली के बारे में भी यही कह सकता है कि उन के दिल में हज़रत आइशा, हज़रत तल्हा और हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम से बुग़ज़ व अदावत थी। और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने तमाम सहाबा के बारे में फरमाया है: **لَا يَغُضُّ عَلَيْهِمْ** यानी जिस ने सहाबा से बुग़ज़ रखा, उस ने मेरे बुग़ज़ के सबब उन से बुग़ज़ रखा। गरज़ेकि हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर इस किस्म का ऐतराज़ करने से बहुत से सहाबा और अहले बैत पर ऐतराज़ वारिद होगा। खुदाए तआला ऐसे लोगों को हिदायत नसीब फरमाए।

अब इस ऐतराज़ का दूसरा जवाब तहकीकी है और वह यह है कि मुख़ालिफ़ते अहले बैत की तीन किस्में हैं। अव्वल हुज़र के अहले बैत

होने की बुनियाद पर उन से जलना और यह कुफ्र है, क्यों इस बुनियाद पर उन से जलना हुजूर से दुश्मनी की ख़बर देता है जो कुफ्र है। दूसरे किसी दुनियावी वजह से नाराज़ होना, अगर उस में नफ्सानियत शामिल है तो गुनाह है वरना नहीं। जैसे कि हज़रत अली व हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के माबैन ख़ानगी (घरेलू) मामलात में बारहा शक्र रंजी हुई है। तीसरे ख़ताए इज्तिहादी की बुनियाद पर अहले बैत से ना इत्तिफाकी हो जाए, यह न कुफ्र है और न गुनाह। हज़रत अमीरे मुआविया और हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा की तमाम जगें इसी तीसरी किस्म की थीं। इन सब के सीने एक दूसरे के कीने से पाक थे।

हज़रत इमामे अहमद बिन हंबल अपनी मुस्नद में रिवायत करते हैं कि एक शख्स ने हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से कोई मसअला पूछा, फरमाया: **إِسْأَلْ عَنْهَا عَلِيًّا فَهُوَ أَظْلَمُ** इस मसअले को हज़रत अली से पूछो कि वह बड़े आलिम हैं, उस ने कहा आप ही मसअला बता दें कि आप का जवाब मुझे उन के जवाब से ज़्यादा पसंद है। हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि तू ने बहुत बुरी बात कही है। क्या तू उन से नफरत करता है जिन की इज्ज़त हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम करते थे और जिन से हुजूर ने फरमाया: **أَنْتَ بِمَنْزِلَةِ هَارُونَ مِنْ مُوسَى إِلَّا أَنَّهُ لَا نَبِيَّ بَعْدِي** यानी ऐ अली! तुम मेरे लिये ऐसे हो जैसे हज़रत मूसा के लिये हज़रत हारून। लेकिन मेरे बाद कोई नबी नहीं है। फिर हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया ऐ मसअला पूछने वाले! सुन, हज़रत अली की अज़मत का यह हाल है कि जब हज़रत उमर फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को कोई मुश्किल मसअला दरपेश होता तो वह हज़रत अली से हल कराते थे। इतना फरमाने के बाद आप ने उस से फरमाया: **تُوْمَ لَا أَقَامَ اللَّهُ رَحْلَكَ** तू मेरे पास से उठ जा, अल्लाह तआला तेरे पैरों को कियाम नसीब न फरमाए। वह शख्स आप के यहां से वज़ीफा

पाता था मगर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शान में इस बेअदबी के सबब उस का नाम वज़ीफा पाने वाले रजिस्टर से ख़ारिज करवा दिया। (अन्नाहिया:27)

और मुहम्मद बिन महमूद आमली ने नफाइसुल फुनून में तहरीर फरमाया है कि हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की मज्लिस में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ज़िक्र किया गया तो आप ने फरमाया कि अली शेर थे, अली चौदहवीं रात का चांद थे और अली रहमते खुदा की बारिश थे। हाज़िरीन में से किसी शख्स ने पूछा कि आप अफ़ज़ल हैं या अली? तो आप ने फरमाया: **خُطُوطٌ مِنْ عَلِيٍّ خَيْرٌ مِنَ الْإِبْنِ سَفِيَّانَ** अली के नक्शे क़दम आले सुफियान से बेहतर है। (अन्नाहिया:28)

और शेख़ नूरुल हक़ बुख़ारी शरीफ के तर्जमा में तहरीर फरमाते हैं कि जंगे जमल के दिन हज़रत अली ने हज़रत तल्हा जो हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ थे उन की लाश को देखा तो हज़रत अली इस क़द्र रोए कि उन की दाढ़ी आंसुओं से तर हो गई। (अन्नाहिया:12)

और अल्लामा फरहारवी मोअल्लिफ नबरास लिखते हैं कि हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जंगे जमल से अलग होकर नमाज़ पढ़ रहे थे कि उसी हालत में हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के एक सिपाही अम्र बिन जरमूज़ ने उन को शहीद कर दिया और जब उन की तलवार हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को पेश की गई तो आप ने फरमाया मुझ से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया है: **بَشَرْتُ لِيَنَّ ابْنُ أَبِي صَوْبَةَ النَّارِ** इन्ने सफिया यानी हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के क़ातिल को जहन्नम की खुशख़बरी दे दो। यह सुन कर अम्र बिन जरमूज़ ने कहा ऐ अली! आप का मामला अजीब है, अगर हम आप से लड़ें तो जहन्नमी और आप की तरफ से लड़ें तो जहन्नमी। यह कह कर गुस्से में उस ने अपने पेट में तलवार घोंप कर खुद कुशी कर ली। (अन्नाहिया:13)

इन वाकिआत से वाजेह तौर पर मालूम हुआ कि सहाबए किराम में इख़िलाफ़ ज़रूर हुआ मगर वह एक दूसरे की इज्ज़त करते थे, एक दूसरे से मुहब्बत रखते थे, उन के सीने एक दूसरे के बुग़ज़ व अदावत और कीने से پاک थे जैसा कि भाई-भाई में इख़िलाफ़ हो जाता है, यहां तक कि नौबत लड़ाई तक पहुंच जाती है मगर एक दूसरे से बुग़ज़ व अदावत नहीं रखता। खुलासा यह कि इख़िलाफ़ और चीज़ है और बुग़ज़ व अदावत और चीज़ है। सहाबा का आपस में इख़िलाफ़ रहा मगर कीना और बुग़ज़ नहीं रहा।

इख़िलाफ़ की वजह

हज़रत अली और हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा में इख़िलाफ़ की वजह यह है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के घर को मिस्र के बलवाइयों ने घेर लिया, उन पर पानी बंद कर दिया और फिर उन को निहायत बेदर्दी के साथ शहीद कर दिया। इस के बाद मोहाजिरीन व अंसार के इत्तिफाके राय से जब अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मुकर्रर हुए तो उन से खूने उस्मान के किंसास (बदला लेने) का मुतालेबा किया गया, मगर वह बाज़ मस्तहतों की बिना पर कातिलीन से किंसास न ले सके। जब यह ख़बर मुल्के शाम में हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को पहुंची तो उन्होंने ने हज़रत अली करमल्लाह तआला वज्हुल करीम को पैग़ाम भेजा कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्माने ग़नी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का मदीना तैयिबा में शहीद कर दिया जाना बहुत अहम मामला है, लिहाज़ा जल्द से जल्द कातिलीन को पूरी सज़ा दी जाए और उन पर किंसास जारी किया जाए मगर हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मौजूदा हालात से मजबूर थे इस लिये वह कातिलीन को कोई सज़ा नहीं दे सके। अब्दुल्लाह बिन सबा का गिरोह जो इस फित्ने की जड़ था और

मुसलमानों को आपस में लड़ा कर इस्लाम की ताकत को कमजोर करना चाहता था, इन में से बहुत से लोगों ने मुल्के शाम पहुंच कर हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को यह यकीन दिलाया कि अली किसान लेने में कोताही कर रहे हैं, तो हज़रत अमीरे मुआविया ने मुसलसल कई कासिदों को भेज कर किसान का शिद्दत से मुतालेबा किया। और जब हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अब भी कातिलीन पर किसान जारी न कर सके तो अब हज़रत अमीरे मुआविया के दिल में यह बात जम गई कि अली खिलाफत के लाइक नहीं क्यों कि जब ऐसे अहम खून का वह किसान नहीं ले सकते और कातिलीन को कोई सज़ा नहीं दे सकते तो खिलाफत के दीगर उमूर वह क्या अंजाम दे सकते हैं। हज़रत अली से हज़रत अमीरे मुआविया के इख़िलाफ की अस्ल वजह यही है। और हज़रत आइशा वह हज़रत अली के माबैन भी इसी बुनियाद पर इख़िलाफ हुआ। रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम।

तीसरा ऐतराज़

तीसरा ऐतराज़ जो बहुत अहम समझा जाता है वह यह है कि अमीरे मुआविया ने अपनी ज़िंदगी में यज़ीद को अपना खलीफा मुकर्रर कर दिया, इस में उन्होंने ने तीन ग़लतियाँ कीं। अव्वल यह कि खलीफा का इन्तिखाब आम लोगों की राय से होना चाहिये, उन्होंने ने यज़ीद को खुद क्यों खलीफा बना दिया। दूसरे यह कि अपने बेटे को अपना जानशीन बनाना कानूने इस्लाम के खिलाफ है। तीसरे यज़ीद जैसे फाजिर व फासिक के हाथ में हुकूमत की बाग डोर दे देना उन का सब से बड़ा जुर्म है। करबला के सारे वाकिआत की ज़िम्मेदारी उन्हीं पर है, अगर वह यज़ीद को खलीफा न बनाते तो करबला ऐसी दर्दनाक वाकिआ न होता। और जब यज़ीद जैसे फाजिर व फासिक को नमाज़ का इमाम बनाना दुरुस्त नहीं तो उसे इमामुल मुस्लिमीन बनाना कैसे जाइज़ हो सकता है।

जवाब

इसका जवाब यह है कि खलीफा का अपनी जिंदगी में दूसरे को खलीफा बनाना जाइज़ है। इस लिये हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी जिंदगी में हज़रत उमर फारूक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को खलीफा मुक़र्रर किया था। रहा अपने बेटे को अपना जानशीन बनाना तो यह कुरआन व हदीस से मना नहीं। इसी लिये आज कल आम तौर पर सूफिया व मशाइख अपनी औलाद को अपना जानशीन बनाते हैं, जिन लोगों को बेटे को जानशीन बनाने पर ऐतराज़ है, वह कुरआन व हदीस से इस का ग़लत होना साबित करें। रही यह दलील कि खुलफाए अरबा में से किसी ने अपने बेटे को जानशीन मुक़र्रर नहीं किया, इस लिये यह ना जाइज़ है, तो यह दलील ग़लत है। इस लिये कि खुलफाए अरबा के न करने के सबब अगर ना जाइज़ हो जाए तो उन्होंने ने बहुत सा काम नहीं किया है, जैसे कुरआन मजीद पर ऐराब लगाना, हदीस शरीफ को किताबी शक्ल में जमा करना और फिक्ह की तदवीन वगैरा ये सब काम ना जाइज़ हो जायेंगे।

रहा यज़ीद का फिस्क व फुज़ूर तो यह कहीं साबित नहीं कि हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की जिंदगी में यज़ीद फासिक व फाजिर था और न यह साबित है कि उन्होंने ने यज़ीद को फासिक व फाजिर जानते हुए अपना जानशीन बनाया। यज़ीद का फिस्क व फुज़ूर दर अस्ल हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की वफात के बाद ज़ाहिर हुआ। और फिस्क ज़ाहिर होने के बाद फासिक करार दिया जाता है न कि पहले। देखिये इब्नीसे लईन पहले मुअल्लिमुल मलकूत (फिरिश्तों को पढ़ाने वाला) और इज़्ज़त व अज़्ज़मत वाला था, फिर जब उसे से कुफ़ ज़ाहिर हुआ तब उसे काफिर करार दिया गया। तो फिस्क ज़ाहिर होने से पहले यज़ीद को फासिक कैसे ठहराया जा सकता है और हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कैसे मौरिदे इल्ज़ाम हो सकते हैं।

अगर कोई रिवायत ऐसी हो जिस से यह साबित हो कि हज़रत अमीरे मुआविया को यज़ीद के फिस्क व फुज़ूर की ख़बर थी, इस के बा वजूद उन्होंने ने उसे अपना वली अहेद मुक़र्रर किया तो वह रिवायत झूठी है और उस का रावी कज़़ाब है, इस लिये कि वह सहाबी का फिस्क साबित करता है। जबकि सारे सहाबा का आदिल, मुत्तकी और परहेज़गार होना ज़म्हूर के नज़्दीक मुसल्लम है।

रही यह बात कि यज़ीद को ख़लीफ़ा बनाने के सबब करबला के सारे वाकिआत की ज़िम्मेदारी हज़रत अमीरे मुआविया पर है तो कोई कह सकता है, नहीं बल्कि हज़रत इमामे हसन पर है, इस लिये कि चालीस हज़ार सिपाही जिन्होंने ने जान कुर्बान करने की आप के हाथ पर बैअत की थी, अगर आप उन को लेकर हज़रत अमीरे मुआविया का मुक़ाबला करते तो उसी ज़माने में उन का क़त्ल क़मअ (खात्मा) हो जाता, यज़ीद को सारे ममालिके इस्लामिया का ख़लीफ़ा बनाने का सवाल ही नहीं रह जाता मगर इस के बजाए हज़रत इमामे हसन ने ख़िलाफ़त उन के सुपर्द कर दी और उन्होंने ने यज़ीद को अपना जानशीन बना दिया। तो दर अस्ल वाकिआते करबला की सारी ज़िम्मेदारी हज़रत इमामे हसन पर है।

और फिर कोई यह कहेगा कि हुज़ूर के चचा हज़रत अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बीवी हज़रत उम्मुल फज़ल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को जब बच्चा पैदा हुआ और वह हुज़ुरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में लेकर हाज़िर हुई तो हुज़ूर ने बच्चे का नाम अब्दुल्लाह रखा और फरमाया: اَدْعَيْ بِأَبِي الْخَلَفَاءِ هَذَا أَبُو الْخَلَفَاءِ حَتَّى يَكُونَ مِنْهُمْ السُّفَّاحُ यह ख़ुलफा के बाप को ले जा। फिर फरमाया: اَدْعَيْ بِأَبِي الْخَلَفَاءِ هَذَا أَبُو الْخَلَفَاءِ حَتَّى يَكُونَ مِنْهُمْ السُّفَّاحُ यह ख़ुलफा का बाप है, इन्हीं में सफ़्फ़ाह होगा, इन्हीं में से महदी। (दलाइलुन् नुबुव्वत बहवाला अदौलतुल मक्कियह:154)

देखिये हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की पीठ से कई पुश्त

के बाद पैदा होने वालों के बारे में बता दिया कि वह खलीफा होंगे और उन के नाम भी बता दिये। तो हुजूर सल्लल्लाहु तअला अलैहि व सल्लम खूब जानते थे कि हज़रत अमीरे मुआविया की पुश्त से यज़ीद पैदा होगा तो उन्होंने ने हज़रत अमीरे मुआविया से क्यों नहीं वसियत कर दी कि तुम यज़ीद को खलीफा हरगिज़ मत बनाना। और जब सारी बातों को जानते हुए हुजूर ने मना नहीं फरमाया तो वाकिआते करबला की सारी ज़िम्मेदारी उन्हीं पर है।

और फिर कोई बदबख्त यह भी कहेगा कि अल्लाह तअला ने यज़ीद को पैदा ही क्यों किया था और अगर पैदा कर दिया था तो हज़रत अमीरे मुआविया ही की ज़िंदगी में उस पर मौत वाफ़ेअ कर देता, मगर उस ने ऐसा नहीं किया तो इस में किसी की कोई ख़ता नहीं है। करबला के सारे खूनी वाकिआ की सारी ज़िम्मेदारी अल्लाह तअला पर है।

देखा आप लोगों ने कि ऐतराज़ करने वाले कहां से कहां तक पहुंचे कि हुजूर अक्वदस सल्लल्लाहु तअला अलैहि व सल्लम और खुदाए तअला को भी नहीं छोड़ा और उन पर भी ऐतराज़ कर दिया। लिहाज़ा ऐ हमारे सुन्नी भाइयो! सलामती इसी में है कि सहाबए किराम के माबैन जो इख़िलाफ़ात हुए हैं उन में बहस न करो, उन का मामला खुदाए तअला के सुपुर्द करो कि इस में पड़ने से ईमान जाने का अदेशा है।

गुनियतु तालिबीन जो शेख़ अब्दुल कादिर जीलानी हुजूर ग़ौसे पाक रज़ियल्लाहु तअला अन्हु की तस्नीफ़े मशहूर हैं, उस के पेज नं० 75 के इरशाद का तर्जमा यह है कि हज़रत अली कर्मल्लाहु तअला वज्हुल करीम ने हज़रत तल्हा, हज़रत जुबैर, हज़रत आइशा सिद्दीका और हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तअला अन्हुम से जो जंग की है उस के बारे में इमामे अहमद बिन हंबल रज़ियल्लाहु तअला अन्हु ने तसरीह फरमाई है कि इस में और सहाबा की तमाम जंगों में बहस करने से बाज़ रहना चाहिये, इस लिये अली मुरतज़ा उन सहाबा से जंग

करने में हक़ पर थे और जो कोई उन की इताअत से ख़ारिज हुआ और उन के मुक़ाबिल जंग आज़मा हुआ, उस ने इमामे बरहक़ से बगावत की लिहाज़ा उस से जंग जाइज़ हुई। और जिन लोगों ने अली मुरतज़ा से जंग की जैसे हज़रत तल्हा, हज़रत जुबैर और हज़रत अमीरे मुआविया तो उन्होंने ने हज़रत उस्मान के ख़ून के बदले का मुतालेबा किया जोकि ख़लीफ़े बरहक़ और मज़्लूम होकर शहीद किये गए। और हज़रत उस्मान के कातिलीन हज़रत अली की फौज में शामिल थे। लिहाज़ा इन में से हर एक सहीह तावील की तरफ़ गए।

और इसी गुनियतु तालिबीन के पेज नं० 178 पर है, सारे अहले सुन्नत इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि सहाबए किराम की जंगों में बहस से बाज़ रहा जाए और उन्हें बुरा कहने से परहेज़ किया जाए, उन के फ़ज़ाइल और उन की खूबियां ज़ाहिर की जाएं और उन बुजुर्गों का मामला ख़ के सुपुर्द कर दिया जाए। जैसे वह इख़िलाफ़ात जो हज़रत अली, हज़रत आइशा, हज़रत मुआविया, हज़रत तल्हा और हज़रत जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम में वाक़ेअ़ हुए।

और हज़रत इमामे आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़िक्क़हे अक्बर में फरमाते हैं: **قَوْلُهُمْ حَيْثُ لَا تَدْرُ الصَّحَابَةَ لَا يَخْبِرُ** यानी हम अहले सुन्नत तमाम सहाबा से मुहब्बत करते हैं और उन्हें भलाई से ही याद करते हैं।

और हज़रत मुजद्दिदे अल्फे सानी शेख़ अहमद सरहन्दी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि जो अकाबिरीने औलिया में से हैं इरशाद फरमाते हैं:

“ख़िलाफ़ व नज़ाए कि दर मियाने अस्हाब वाक़ेअ़ शुदा बूद महमूल बर हवाए नफ़्सानी नेस्त दर सोहबते ख़ैरुल बशर नुफ़ूसे ईशा बतज़िकिया रसीदा बूदंद”

जो झगड़े और लड़ाईयां सहाबए किराम में हुईं वह नफ़्सानियत की बिना पर न थीं इस लिये कि सहाबा के नुफ़ूस हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बरक़त से پاک हो चुके थे।

आप लोगों ने हज़रत ग़ौसे आज़म, हज़रत इमामे आज़म और हज़रत मुजद्दिदे अल्फे सानी रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम के इरशादाते मुबारका को सुन लिया। अगर वाकई इन बुजुर्गों के मानने वाले हैं और इन से मुहब्बत करने वाले हैं तो इन के फरमान पर अमल करें, सहाबए किराम की जंगों के मुतअल्लिक बहस न करें, उन के मामले को अल्लाह तआला के सुपुर्द करें। हज़रत अमीरे मुआविया और किसी सहाबी से बुग़ज़ व इनाद न रखें, सब से मुहब्बत करें और सब को भलाई ही से याद करें, किसी भी सहाबी पर लअून तअून न करें कि अल्लाह व रसूल की नाराज़गी का सबब है। जल्ल जलालहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व अला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन व बारका व सल्लम।



सय्यदुश् शुहदा हज़रत इमाम हुसैन

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

الحمد لله رب المشرقين ورب المغربين والصلاة والسلام على
 نبينا محمد الحسن والحسين وعلى آله واصحابه الذين فازوا في الدارين۔ اما بعد۔ فَأَعُوذُ
 بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ۔ قَدْ جَاءَ كُمْ مِنَ اللّٰهِ نُورٌ۔ صَدَقَ
 اللّٰهُ العَلٰى العَظِيمِ وصدق رسوله النبي الكريم ونحن على ذلك لمن الشاهدين
 والشاكرين والحمد لله رب العالمين۔

एक मर्तबा हमें और आप सब लोग मिल कर सारी काइनात के
 आका व मौला जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु
 तआला अलैहि व सल्लम के दरबारे दुररे बार में बुलंद आवाज़ से दुरूद
 शरीफ का नज़ाना और हदिया पेश करें।

صلى الله على النبي الامى وآله صلى الله تعالى عليه وسلم صلاوة سلاماً عليك يا رسول الله

सल्लल्लाहु अलन् नबियिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तआला

अलैहि व सल्लम, सलातव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

हम्दो-सलात के बाद कुरआने मुक़द्दस की आयते करीमा के जिस
 दुक़ड़े की तिलावत का शर्फ हम ने हासिल किया है। यानी: قَدْ جَاءَ كُمْ مِنَ
 اللّٰهِ نُورٌ उसका तर्जमा यह है: अल्लाह तआला की जानिब से तुम्हारे पास
 नूर आ गया। इस आयते करीमा में हमारे नबीए अक्रम सल्लल्लाहु
 तआला अलैहि व सल्लम को नूर फरमाया गया है। और नूर वह है जो
 खुद रौशन और चमकदार हो और दूसरों को रौशन व चमकदार बनाए।
 देखिये आपताब नूर है जो रौशन व ताबनाक है और जिस पर वह
 अपना अक्स डालता है उसे भी रौशन व ताबनाक बना देता है। मगर
 वह सिर्फ ज़ाहिर को चमकाता है। और हमारे आका व मौला प्यारे
 मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ऐसे नूर हैं जो ज़ाहिर व
 बातिन दोनों को चमकाते हैं, तो जो लोग कि इस नूर से चमके वह

खूब चमके। फिर उन में जो नूर की गोद में खेल कर बड़े हुए यानी निवाए रसूल सय्यदुश् शुहदा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तो वह ऐसे चमके कि अपने तो अपने अगियार (गैरों) की भी आंखें उन की चमक से चक्का चौंध हैं और यज़ीदियों की हज़ार मुखालफत के बावजूद इन्शा अल्लाहुर रहमान वह कियामत तक ऐसे ही चमकते रहेंगे।

صلى الله على النبي الامي و آله صلى الله تعالى عليه و سلم و صلاتك و سلامك يا رسول الله

सल्लल्लाहु अलन् नबियिल् उम्मियी व आलिही सल्लल्लाह तआला

अलैहि व सल्लम, सलातव् व सलामन् अलैक या रसूलल्लाह।

आप की विलादत (पैदाइश)

सैय्यदुश् शुहदा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की विलादते मुबारका 5 शाबान 4 हिजरी को मदीना तैयिबा में हुई। सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने आप के कान में अज़ान दी, मुंह में लुआबे दहन (थूक मुबारक) डाला और आप के लिये दुआ फरमाई फिर सातवें दिन आप का नाम हुसैन रखा और अक़ीका किया। हज़रत इमामे हुसैन की कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह और लक़ब "सिब्ते रसूल" व "रैहानतुर रसूल" है। हदीस शरीफ में है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि हज़रत हारून अलैहिस् सलाम ने अपने बेटों का नाम शब्बर व शब्बीर रखा और मैं ने अपने बेटों का नाम उन्हीं के नाम पर हसन और हुसैन रखा।

(सवाइके मुहर्रिका:118)

इसी लिये हसनैन करीमैन को शब्बर व शब्बीर के नाम से भी याद किया जाता है। सुर्यानी ज़बान में शब्बर व शब्बीर और अरबी ज़बान में हसन व हुसैन दोनों के मअ्ना एक हैं। और हदीस शरीफ में है कि: الْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ اسْمَانِ مِنْ أَهْلِ الْحَقِّ हसन और हुसैन जन्मती नामों में से दो नाम हैं। अरब के ज़मानए जाहिलिय्यत में यह दोनों नाम नहीं थे।

(सवाइके मुहर्रिका:118)

इब्नुल अज्राबी हज़रत मुफज़्ज़ल से रिवायत करते हैं कि अल्लाह तआला ने यह नाम मख़्फ़ी रखे यहां तक कि नबीए अक़रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपने नवासों का नाम हसन और हुसैन रखा।
(अश्शफ़ुल मोअब्बद:70)

हज़रत उम्मुल फज़ल बिन्तुल हारिस रज़ियल्लाहु तआला अन्हा यानी हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की चची हज़रत अब्बास बिन मुत्तलिब रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की अहलिया मोहतरमा एक दिन हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज किया या रसूलल्लाह! आज मैं ने एक ऐसा ख़्वाब देखा है जिस से मैं डर गई हूं, हुज़ूर अलैहिस् सलाम ने फरमाया तू ने क्या देखा है? उन्होंने ने अर्ज किया वह बहुत सख़्त है जिस के बयान करने की मैं अपने अन्दर जुअत नहीं पाती हूं। हुज़ूर ने फरमाया बयान करो तो उन्होंने ने अर्ज किया मैं ने यह देखा कि हुज़ूर के जिस्मे मुबारक का एक टुकड़ा काट कर मेरी गोद में रखा गया है। इरशाद फरमाया तुम्हारा ख़्वाब बहुत अच्छा है। इन्शा अल्लाह तआला फातिमा ज़हरा के बेटा पैदा होगा और वह तुम्हारी गोद में दिया जाएगा।

चुनांचे ऐसा ही हुआ, हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पैदा हुए और हज़रत उम्मुल फज़ल की गोद में दिये गए। (मिशकात:572)

आप के फज़ाइल

हज़रत इमामे हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के फज़ाइल में बहुत सी हदीसें वारिद हैं। आप हज़रात पहले उन हदीसों को समाअत फरमाएं जो सिर्फ आप के मनाकिब में हैं। फिर जो हदीसें कि दोनों शाहज़ादों के फज़ाइल को शामिल हैं वह बाद में पेश की जायेंगी।

तिर्मिज़ी शरीफ की हदीस है हज़रत याला बिन मुरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर पुर नूर सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: حُسَيْنٌ مِنِّي وَأَنَا مِنَ الْحُسَيْنِ हुसैन मुझ से

हैं और मैं हुसैन से हूँ। यानी हुसैन को हुजूर से और हुजूर को हुसैन से इन्तिहाई कुर्ब है गोया कि दोनों एक हैं तो हुसैन का जिक्र हुजूर का जिक्र है, हुसैन से दोस्ती हुजूर से दोस्ती है, हुसैन से दुश्मनी हुजूर से दुश्मनी है। और हुसैन से लड़ाई करना हुजूर से लड़ाई करना है।

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम व रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।

और सरकारे अक्दस इरशाद फरमाते हैं: **أَحَبُّ إِلَيْنَا مَنْ أَحَبَّ حُسَيْنًا** जिस ने हुसैन से मुहब्बत की उस ने अल्लाह तआला से मुहब्बत की।

(मिशकात:571)

इस लिये कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मुहब्बत करना हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से मुहब्बत करना है और हुजूर से मुहब्बत करना अल्लाह तआला से मुहब्बत करना है।

(मिर्कात शरह मिश्कात:5/605)

और हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि हुजूर अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिसे पसंद हो कि जन्नती जवानों के सरदार को देखे तो वह हुसैन बिन अली को देखे।

(नूरुल अब्सार:114)

और हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मस्जिद में तशरीफ लाए और फरमाया छोटा बच्चा कहां है? हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु दौड़ते हुए आए और हुजूर की गोद में बैठ गए और अपनी उंगलियां दाढ़ी मुबारक में दाखिल कर दीं, हुजूर ने उनका मुंह खोल कर बोसा लिया फिर फरमाया: **إِنِّي أَجِبُهُ فَأَجِبُهُ وَأَحِبُّ مَنْ يُحِبُّهُ** ऐ अल्लाह! मैं इस से मुहब्बत करता हूँ तू भी इस से मुहब्बत फरमा और उस से भी मुहब्बत फरमा कि जो इस से मुहब्बत करे। (नूरुल अब्सार:114)

मालूम हुआ कि हुजूर आकाए दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने सिर्फ दुनिया वालों ही से नहीं चाहा कि वह हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मुहब्बत करें बल्कि खुदाए

तआला से भी अर्ज किया कि तू भी इस से मुहब्बत फरमा और बल्कि यह भी अर्ज किया कि हुसैन से मुहब्बत करने वाले से भी मुहब्बत फरमा।

और हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैं ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को देखा कि वह हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लुआबे दहेन को इस तरह चूस्ते हैं जैसे कि आदमी खजूर चूस्ता है।
يَتَمَتَّرُ لِمَا بِلِ الْحُسَيْنِ كَمَا يَتَمَتَّرُ الرَّجُلُ التَّمْرَةَ (नूरुल अब्सार:114)

और मरवी है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा कअबा शरीफ के साये में तशरीफ फरमा थे, उन्होंने ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तशरीफ लाते हुए देखा तो फरमाया: هَذَا أَحَبُّ أَهْلِ الْأَرْضِ إِلَى أَهْلِ السَّمَاءِ الْيَوْمَ आज यह आसमान वालों के नज़्दीक तमाम ज़मीन वालों से ज़्यादा महबूब हैं। (अश्शफ़ुल मोअब्बद:65)

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने पैदल चल कर 25 हज किये। आप बड़ी फज़ीलत के मालिक थे और कसूरत से नमाज़, रोज़ा, हज, सदका और दीगर उमूरे ख़ैर अदा फरमाते थे।

(बरकाते आले रसूल:145)

हज़रत अल्लामा ज़ामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि एक रोज़ सैय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपने दाहिने और अपने साहिब ज़ादे हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अपने बाएं बिठाए हुए थे कि हज़रत ज़िब्रील अलैहिस्सलाम हाज़िर हुए और अर्ज किया या रसूलल्लाह! खुदाए जुल ज़लाल इन दोनों को आप के पास जमा न रहने देगा, इन में से एक को वापस बुला लेगा, अब इन दोनों में से जिसे आप चाहें पसंद फरमाए। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया अगर हुसैन रुख़सत हो जाएं तो उन की जुदाई में फातिमा व अली को तक्लीफ होगी और मेरी भी ज़ान सोज़ी

होगी और अगर इब्राहीम वफात पा जाएं तो ज्यादा गम मुझी को होगा, इस लिये मुझे अपना गम पसंद है। इस वाक़िआ के तीन रोज़ बाद हज़रत इब्राहीम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वफात पा गए।

इस के बाद जब भी हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आते, हुज़ूर मरहबा फरमाते, फिर उन की पेशानी को बोसा देते और लोगों से मुखातब होकर फरमाते मैं ने हुसैन पर अपने बेटे इब्राहीम को कुर्बान कर दिया है। (शवाहिदुन् नुबुव्वत:305)

अब वह रिवायतें मुलाहेज़ा फरमाएं जो दोनों साहिब ज़ादों के फज़ाइल पर मुश्तमिल हैं।

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **هَسَنٌ وَهُسَيْنٌ سَيِّدَا شَبَابِ أَهْلِ الْخَلْقِ** हसन और हुसैन जन्नती जवानों के सरदार हैं।

(मिशकात:570)

(ग़यासुल्लुग़ात में है **بِجَزْمِهِ أَجْوَلُ وَتَشْدِيدِهِ سَانِي جَوَانَا بَدْرٍ مَأْنَا هَمْ جَمْزُ شَابِ أَسْتَ أَجْ مُنْتَخَبٍ وَ سَرَاهٍ**)

और हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूले अकरम अलैहिस् सलातु व त्तस्लीम ने फरमाया: **إِلْحَسَنُ وَالْحُسَيْنُ مَنَا** हसन और हुसैन दुनिया के मेरे दो फूल हैं। (मिशकात:570)

और हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि एक रात मैं किसी ज़रूरत से सरवरे काइनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, आप बाहर तशीफ लाए तो किसी चीज़ को उठाए हुए थे जिसे मैं नहीं जान सका, जब अर्ज़े हाज़त से मैं फारिग हुआ तो दरियाफ्त किया हुज़ूर यह क्या उठाए हुए हैं, आप ने चादरे मुबारक हटाई तो मैं ने देखा कि आप के दोनों पहलुओं में हज़रत हसन और हज़रत हुसैन हैं। आप ने फरमाया: **هَٰذَا هَٰذَا** यह दोनों मेरे बेटे हैं और मेरे नवासे हैं। और फिर फरमाया:

اللَّهُمَّ إِنِّي أَحِبُّهُمَا فَأَحِبَّهُمَا وَأَحِبْ مَنْ يُحِبُّهُمَا ऐ अल्लाह! मैं इन दोनों को महबूब रखता हूँ, तू भी इन को महबूब रख और जो इन से मुहब्बत रखता है उन को भी महबूब रख। (मिशकात:570)

और हज़रत अबू हुदैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इस हाल में बाहर तशरीफ लाए कि आप एक कंधे पर हज़रत हसन और दूसरे कंधे पर हज़रत हुसैन को उठाए हुए थे यहां तक कि हमारे करीब तशरीफ ले आए और फरमाया: مَنْ أَحَبَّهُمَا فَقَدْ أَحَبَّنِي وَمَنْ أَبْغَضَهُمَا فَقَدْ أَبْغَضَنِي जिस ने इन दोनों से मुहब्बत की तो उस ने मुझ से मुहब्बत की और जिस ने इन दोनों से दुश्मनी की उस ने मुझ से दुश्मनी की। (अश्शफुल मोअब्बद:71)

हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं कि मैं हसन और हुसैन को लेकर हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हुई और अर्ज किया हुज़ूर! यह आप के दोनों नवासे हैं, इन्हें कुछ अता फरमाइये, तो हुज़ूर ने फरमाया: لَأَحْسَنَ हसन के लिये मेरी हैबत व सियादत है और हुसैन के लिये मेरी ज़ुर्त व सखावत है।

(अश्शफुल मोअब्बद:72)

हज़रत जाफर सादिक बिन मुहम्मद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सामने हज़रत हसन व हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा कम सिनी के ज़माने में एक दूसरे से कुश्ती लड़ रहे थे और हुज़ूर बैठे हुए यह कुश्ती मुलाहेज़ा फरमा रहे थे, तो हज़रत हसन से हुज़ूर ने फरमाया, हुसैन को पकड़ लो, हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने जब यह सुना तो उन्हें तअज्जुब हुआ और अर्ज किया अब्बा ज़ान! आप बड़े से फरमा रहे हैं कि छोटे को पकड़ लो, हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया दूसरी तरफ ज़िब्रील हुसैन से कह रहे हैं कि हसन को पकड़ लो। (नूरुल अब्सार:114)

यज़ीदी आंखें खोल कर देख लें कि हज़रत हसनैन करीमैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा का वह मक़ाम है कि हज़रत जिब्रील अलैहिस् सलाम आ कर उन के दरमियान कुश्ती लड़ा रहे हैं।

और हज़रत अल्लामा नसफी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि हसनैन करीमैन ने दो तख़्तियां लिखीं, हर एक ने कहा कि हमारी तहरीर अच्छी है, तो फैसले के लिये अपने बाप हज़रत अली कर्मल्लाहु तआला वज्हुल करीम के पास ले गए। आप बड़े-बड़े हैरत अंगेज़ फैसले फरमाते हैं, मगर यह फैसला फरमा न सके, इस लिये कि किसी साहिब जादे की दिल शिकनी मनज़ूर न थी, फरमाया कि अपनी मां के पास ले जाओ, दोनों शहजादे हज़रत फातिमा ज़हरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा कि अम्मा जान! आप फैसला फरमा दें कि हम में से किस ने अच्छा लिखा है? आप ने फरमाया कि मैं यह फैसला नहीं कर सकूंगी, इस मामले को तुम लोग अपने नाना जान के पास ले जाओ, शहजादे हुज़ूर अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आ गए और अर्ज़ किया कि नाना जान आप फैसला फरमा दें कि हम में से किस की तहरीर अच्छी है? सारी दुनिया का फैसला फरमाने वाले हुज़ूर ने सोचा कि अगर हसन की तहरीर को अच्छा कहूं तो हुसैन को मलाल होगा और हुसैन की तहरीर को उम्दा कहूं तो हसन को रंज होगा और किसी का रंजीदा होना उन्हें ग़वारा नहीं था, इस लिये आप ने फरमाया कि इस का फैसला जिब्रील करेंगे। हज़रत जिब्रील बहुक्मे रब्बे जलील नाज़िल हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! इस का फैसला खुदावन्दे कुद्दूस फरमाएगा, मैं उस के हुक्म से एक सेब लाया हूं, उस ने फरमाया कि मैं इस जन्नती सेब को तख़्तियों पर गिराऊं जिस तख़्ती पर यह सेब गिरेगा, फैसला हो जाएगा कि उस तख़्ती की तहरीर अच्छी है। अब दोनों तख़्तियां इकट्ठा रखी गईं और हज़रत जिब्रील अलैहिस् सलाम ने ऊपर से उन तख़्तियों पर सेब गिराया, अल्लाह तआला के हुक्म से

रास्ते ही में सेब कट कर आधा एक तख्ती पर और दूसरा आधा दूसरी तख्ती पर गिरा। इस तरह अहकमुल हाकिमीन जल्ल जलालुहू ने फैसला फरमा दिया कि दोनों शहजादों की तहरीरें अच्छी हैं और किसी एक की तहरीर को अच्छी करार देकर दूसरे की दिल शिक्नी गवारा न फरमाया।

(नुज्हतुल मजालिस:2/390)

खुदावन्दे कुदूस की बारगाह में हसनैन करीमैन रजियल्लाहु तआला अन्हुमा का यह मकाम है मगर अप्सोस कि मुख़ालिफीन को उनकी अजमत व रिफ़अत नज़र नहीं आती।

आप की शहादत की शोहरत

सैय्यिदुशु शुहदा हज़रत इमाम हुसैन रजियल्लाहु तआला अन्हु की पैदाइश के साथ ही आप की शहादत की शोहरत भी आम हो गई। हज़रत अली, हज़रत फातिमा ज़ह्रा और दीगर सहाबए किबार व अहले बैत के जां निसार रजियल्लाहु तआला अन्हुम सभी लोग आप के ज़मानए शीर ख़्वारगी (दूध पीने के ज़माना) ही में जान गए कि यह फर्ज़न्दे अर्जुमन्द जुल्म व सितम के हाथों शहीद किया जाएगा और इन का खून निहायत बेदर्दी के साथ ज़मीने करबला में बहाया जाएगा जैसा कि उन अहादीसे करीमा से साबित है जो आप की शहादत के बारे में वारिद हैं।

हज़रत उम्मुल फज़ल बिन्त हारिस रजियल्लाहु तआला अन्हा यानी हज़रत अब्बास रजियल्लाहु तआला अन्हु की जौजा फरमाती हैं कि मैं ने एक रोज़ नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होकर हज़रत इमाम हुसैन रजियल्लाहु तआला अन्हु को आप की गोद में दिया, फिर मैं क्या देखती हूँ कि हुज़ूर की मुबारक आंखों से लगातार आंसू बह रहे हैं, मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरे मां बाप आप पर कुर्बान हों यह क्या हाल है? फरमाया मेरे पास जिब्रील अलैहिस् सलाम आए और उन्होंने ने यह ख़बर पहुंचाई कि: اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ سَئِلُکَ بِرَبِّیْ هَلَّا मेरी उम्मत मेरे इस फर्ज़न्द की शहीद करेगी। हज़रत

उम्मुल फजल फरमाती हैं कि मैं ने अर्ज किया या रसूलल्लाह! क्या इस फर्जन्द को शहीद कर देगी? हुजूर ने फरमाया हां, फिर जिब्रील मेरे पास उस की शहादतगाह की मिट्टी भी लाएं। (मिशकात:572)

और इब्ने सअद व तबरानी हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से रिवायत करते हैं उन्होंने ने कहा कि हुजूर अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिब्रील ने मुझे ख़बर दी **إِنِّي أُنَبِّئُكَ بِأَنَّ ابْنَ أَبِي طَالِبٍ** मेरा बेटा हुसैन मेरे बाद अरजे तफ में क़त्ल किया जाएगा और जिब्रील मेरे पास वहां की यह मिट्टी भी लाए और मुझ से कहा कि यह हुसैन की ख्वाबगाह (मक़तल) की मिट्टी है। तफ करीब कूफा उस मक़ाम का नाम है जिस को करबला कहते हैं। (सवाइके मुहर्रिका:118)

और हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत हैं कि बारिश के फिरिश्ते ने हुजूर अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िरी देने के लिये खुदावन्दे कुदूस से इजाज़त तलब की, जब वह फिरिश्ता इजाज़त मिलने पर बारगाहे नुबुव्वत में हाज़िर हुआ तो उस वक़्त हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आए और हुजूर की गोद में बैठ गए, तो आप उनको चूमने और प्यार करने लगे, फिरिश्ते ने अर्ज किया या रसूलल्लाह! क्या आप हुसैन से प्यार करते हैं? हुजूर ने फरमाया हां, उस ने फरमाया **يَا رَسُولَ اللَّهِ إِنَّ ابْنَ أَبِي طَالِبٍ** आप की उम्मत हुसैन को क़त्ल कर देगी अगर आप चाहें तो मैं उन की क़त्लगाह (की मिट्टी) आप को दिखा दूँ। फिर वह फिरिश्ता सुख़ मिट्टी लाया जिसे उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा ने अपने कपड़े में ले लिया। और एक रिवायत में है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया ऐ उम्मे सलमह! जब यह मिट्टी खून बन जाए तो समझ लेना कि मेरा बेटा हुसैन शहीद कर दिया गया। हज़रत उम्मे सलमह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा फरमाती हैं कि मैं ने उस मिट्टी को शीशी में बन्द कर लिया जो हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु

तअ़ाला अन्हु की शहादत के दिन खून हो गई। (सवाइके मुहर्रिका:118)

और इब्ने सअ़द हज़रत शअ़बी से रिवायत करते हैं कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु जंगे सिफ्फीन के मौके पर करबला से गुज़र रहे थे कि ठहर गए और उस ज़मीन का नाम दरियाफ्त फरमाया, लोगों ने कहा कि इस ज़मीन का नाम करबला है, करबला का नाम सुनते ही आप इस क़द्र रोए कि ज़मीन आंसुओं से तर हो गई, फिर फरमाया कि मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक रोज़ हाज़िर हुआ तो देखा कि आप रो रहे हैं, मैं ने अर्ज किया या रसूलल्लाह! आप क्यों रो रहे हैं? फरमाया अभी मेरे पास जिब्रील आए थे, उन्होंने ने मुझे ख़बर दी **إِنَّ وَلَدِي الْحُسَيْنَ يُقْتَلُ بِسَاطِئِ الْفَرَاتِ بِمَوْضِعٍ يُقَالُ لَهُ كَرْبَلَا** मेरा बेटा हुसैन दरियाए फुरात के किनारे उस जगह पर शहीद किया जाएगा जिस को करबला कहते हैं। (सवाइके मुहर्रिका:118)

अबू नईम असूबग़ बिन नबाता रिवायत करते हैं उन्होंने ने फरमाया कि हम हज़रत अली रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु के साथ हज़रत हुसैन की क़ब्रगाह से गुज़रे तो आप ने फरमाया कि यह शहीदों के ऊंट बिठाने की जगह है और इस मक़ाम पर उन के कजावे रखे जायेंगे और यहां उन के खून बहाए जायेंगे। आले मुहम्मद सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम के बहुत से जवान इस मैदान में शहीद किये जायेंगे और ज़मीन व आसमान उन पर रोएंगे। (ख़साइसे कुब्रा:2/126)

इन अहदीसे करीमा से वाज़ेह तौर पर मालूम हुआ कि हुज़ूर पुर नूर सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम को हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु के शहीद होने की बार-बार इत्तिलाअ दी गई और हुज़ूर ने भी इस का बारहा ज़िक्र फरमाया और यह शहादत हज़रत इमाम हुसैन की अहदे तिफली ही में ख़ूब मशहूर हो चुकी थी और सब को मालूम हो गया था कि आप के शहीद होने की जगह करबला है बल्कि उस के चप्पे-चप्पे को पहचानते थे और उन्हें ख़ूब मालूम था कि शहदाए करबला के ऊंट कहा बांधे जायेंगे, उन का

सामान कहाँ रखा जाएगा और उन के खून कहाँ बहेंगे?

लेकिन नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम, हाँ वह नबी कि खुदावन्दे कुहूस जिन की रज़ा जोई फरमाता है **وَأَسْرَفَ بِعَثْرِكَ رَبُّكَ** जिन का हुक्म बहरो-बर में नाफिज़ है, जिन्हें शजरो-हजर सलाम करते हैं, चाँदा जिन के इशारों पर चला करता है, जिन के हुक्म से डूबा हुआ सूरज पलट आता है बल्कि बहुक्मे इलाही कौनैन के ज़र्ज़-ज़र्ज़ा पर जिन की हुक्मत है, वह नबी प्यारे नवासे के शहीद होने की खबर पाकर आंखों से आंसू तो बहाते हैं मगर नवासे को बचाने के लिये बारगाहे इलाही में दुआ नहीं फरमाते और न हज़रत अली व हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा अर्ज़ करते हैं कि या रसूलल्लाह! हुसैन की खबरे शहादत ने दिलो-जिगर पारा-पारा कर दिया, आप दुआ फरमाएं कि खुदाए अज़्ज़ जल्ल हुसैन को उस हादिसे से महफूज़ रखे। और अहले बैत, अज़्वाजे मुतहहरात और सहाबए किबार सब लोग हज़रत इमाम हुसैन के शहीद होने की खबर सुनते हैं मगर अल्लाह के महबूब प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बारगाह में कोई दुआ की दरख्वास्त पेश नहीं करता जबकि आप की दुआ का हाल यह है कि:

इजाबत का सेहरा इनायत का जोड़ा

दुल्हन बन के निकली दुआए मुहम्मद

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम

इजाबत ने झुक कर गले से लगाया

बढ़ी नाज़ से जब दुआ-ए-मुहम्मद

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बचाने के लिये दुआ नहीं फरमाई और न हुज़ूर से इस के बारे में किसी ने दुआ की दरख्वास्त पेश की, सिर्फ़ इस लिये कि हुसैन का इम्तिहान हो, उन पर तकालीफ व मसाइब

के पहाड़ टूटें और वह इम्तिहान में कामयाब होकर अल्लाह के प्यारे हों कि अब नबी कोई हो नहीं सकता तो नवासे रसूल का दर्जा इसी तरह बुलंद से बुलंद तर हो जाए और रजाए इलाही हासिल होने के साथ दुनिया व आखिरत में उन की अज़मत व रिफ़अत का बोल-बाला भी हो जाए।

एक ऐतराज़ और उसका जवाब

बाज़ गुस्ताख़ जो ऐतराज़ करते हैं कि जब रसूलुल्लाह अपने नवासे को क़त्ल से नहीं बचा सके तो दूसरे को किसी मुसीबत से क्या बचा सकते हैं, तो इसका जवाब यह है कि अल्लाह के महबूब प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने अपने नवासे हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को शहीद होने से बचाने की कोशिश ही नहीं फ़रमाई, इस लिये कि आप ने उनके लिये क़त्ल से महफूज़ रहने की दुआ ही नहीं की और जब आप ने उन को शहीद होने से बचाने की कोशिश ही नहीं फ़रमाई तो फिर यह कहना ही सिरे से ग़लत है कि वह अपने नवासे को क़त्ल से नहीं बचा सके। जैसे कि हमारा कोई आदमी दरिया में डूब रहा हो और हमारे पास डूबने से बचाने के लिये क़श्ती वगैरा तमाम सामान मुहैया हों मगर हम बचाने की कोशिश न करें, तो यह कहना ग़लत है कि हम बचा न सके। हां अगर हम बचाने की कोशिश करते और न बचा पाते तो अल्बत्ता यह कहना सही होता कि हम नहीं बचा सके। तो अल्लाह के महबूब सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अपने नवासे को बचाने की कुद़रत रखने के बावजूद उन को बचाने की कोशिश नहीं फ़रमाई, लिहाज़ा यह कहना ग़लत कि उन को नहीं बचा सके। खुदाए तआला समझ अता फ़रमाए।

और बाज़ गुस्ताख़ जो यह कहते हैं कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो सैयिदुल अंबिया के नवासे और सहाबी हैं जिन के दर्जा को बड़े से बड़ा वली और ग़ौस व कुतब नहीं पहुंच

सकता, जब यह अपनी और अपने अजीज व अकारिब की जान नहीं बचा सके तो दूसरा कोई ग़ौस व कुतब किसी की क्या मदद कर सकता है, तो इस ऐतराज़ का जवाब यह है कि सैय्यिदुश् शुहदा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मैदाने करबला में अपनी जान बचाने नहीं गए थे बल्कि अपनी जान देकर इस्लाम बचाने गए थे।

और जान बचाने का रास्ता तो आप के लिये हमेशा खुला हुआ था इस लिय कि जब जान बचाने के लिये हरामे क़तई का खाना पीना और झूठ बोलना जाइज़ हो जाता है तो आप जान बचाने की खातिर थोड़ी देर के लिये यज़ीद की झूठी बैअत कर लेते और जब दुश्मन की गिरफ्त से आज़ाद हो जाते तो इनकार कर देते। लेकिन हकीकत यह है कि इमामे आली मक़ाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को जान बचाना नहीं था बल्कि जान देकर इस्लाम को बचाना था।

और रही अजीज व अकारिब की जान बचाने की बात तो आप के जो अजीज व अकारिब मैदाने करबला में शहीद हुए उन की दुनियावी ज़िंदगी बस इतनी ही थी और जिस की ज़िंदगी ख़त्म हो जाती है उसे कोई बचा नहीं सकता। इरशादे खुदावन्दी है: **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ لَا تَبْدُلُ أَلْفًا بِأَلْفٍ وَلَا تَنْظُرُونَ** जब उनको मौत आएगी तो एक साज़त आगे पीछे नहीं होंगे।

(पारा:11,रुकूअ:1)

और इरशाद फरमाया: **وَلَنْ يُؤَخِّرَ اللَّهُ نَفْسًا إِذَا جَاءَ أَجَلُهَا** अल्लाह तआला किसी जान की मौत को हरगिज़ मोअख़्ख़र नहीं फरमाएगा जबकि उस का वक़्त आ जाएगा।

(पारा:28,रुकूअ:14)

अगर यह माकूल जवाब ऐतराज़ करने वालों की समझ में न आए तो वह दिन दूर नहीं जबकि वह यह भी कहेंगे कि अबियाए किराम का क़त्ल किया जाना कुरआने मजीद से साबित है। और जब अल्लाह तआला अपने महबूब अबिया को क़त्ल से नहीं बचा सका तो फिर किसी दूसरे की क्या मदद कर सकता है। (मआज़ल्लाह)

यज़ीद पलीद

यज़ीद हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का बेटा जिस की कुन्नियत अबू ख़ालिद है, उमैया ख़ानदान का वह बदबख़्त इंसान है जिस की पेशानी पर नवासेए रसूल, जिगर गोशए बतूल हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के क़त्ल का सियाह दाग़ है, जिस पर हर ज़माने में लोग मलामत करते रहे और रहती दुनिया तक ऐसे ही मलामत करते रहेंगे। यह बद बातिन और नंगे ख़ानदान 25 हिजरी में पैदा हुआ, इस की मां का नाम मैसून बिनत नजदत कलबी है। यज़ीद बहुत मोटा, बद नुमा, बद खुल्क, फासिक व फाजिर, शराबी, बदकार, ज़ालिम और बेअदब व गुस्ताख़ था। उस की बद कारियां और बेहूदगियां इन्तिहा को पहुंच गई थीं। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो हज़रत हंज़ला ग़सीलुल् मलाइका के साहिब जादे हैं वह फरमाते हैं: وَاللّٰهُ مَا خَرَجْنَا عَلَىٰ يَزِيدَ حَتَّىٰ حِفْنًا اَنْ تُرْمَىٰ بِالْهَجَارَةِ مِنَ السَّمَاءِ यज़ीद पर हम ने उस वक़्त हमले की तैयारी की जब हम लोगों को अदिशा हो गया कि उसकी बद कारियों के सबब हम पर आसमान से पत्थरों की बारिश होगी। इस लिये कि फिस्क व फुज़ूर का यह आलम था कि लोग अपनी मां, बहनों और बेटियों से निकाह कर रहे थे, शराबें पी जा रही थीं और दीगर मन्हिय्याते शरइय्या ऐलानिया रेवाज हो गया था और लोगों ने नमाज़ तरक कर दी थी। (तारीख़ुल ख़ुल्फा:142)

यज़ीद ने मदीना तैयिबा और मक्का मुकर्रमा की बेहुर्मती कराई, ऐसे शख़्स की हुक्मते गरग की जो पानी से ज़्यादा ख़तरनाक थी, अरबाबे फिरासत और अस्हाबे असुरार उस वक़्त से डरते थे जबकि इनाने सल्तनत उस शकी के हाथ में आई। इसी लिये 59 हिजरी में हज़रत अबू हु़रैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने दुआ की: اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ رَّأْسِ السَّيِّئِیْنَ وَاِمَارَةِ الصَّیِّیَانِ या रब मैं तेरी पनाह मांगता हूं 60 हिजरी के आगाज़ और लड़कों की हुक्मत से।

इस दुआला से मालूम होता है कि हजरत अबू हुदैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो हामिले असूरार थे, उन्हें मालूम था कि 60 हिजरी का आगाज़ लड़कों की हुक्मत और फिलों का वक़्त है। उन की यह दुआ कबूल हुई और उन्होंने ने 59 हिजरी में बमक़ाम मदीना तैयिबा रिहलत फरमाई। (सवानेहे करबला:81)

यज़ीद और अहादीसे करीमा व अक्वाले अइम्मा

रुयानी अपनी मुस्नद में सहाबिए रसूल हजरत अबू दरदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं, उन्होंने ने फरमाया कि मैं ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को यह इरशाद फरमाते हुए सुना: **أَوَّلُ مَنْ سَلَّ سُلَّةً رَجُلٌ مِنْ بَنِي أُمَيَّةَ فَالْأَوَّلُ** मेरी सुन्नत का पहला बदलने वाला एक शख्स बनी उमैया का होगा जिस का नाम यज़ीद होगा। (तारीखुल खुलफा:142)

और अबू यअूला अपनी मुस्नद में (बसनदे जईफ़) हजरत अबू उबैदा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं कि मेरी उम्मत हमेशा अदल व इंसाफ़ पर काइम रहेगी यहां तक कि पहला रख्ना अंदाज़ (रुकावट बनने वाला) बनी उमैया का एक शख्स होगा जिस का नाम यज़ीद होगा। (तारीखुल खुलफा:142)

और अल्लामा सबान तहरीर फरमाते हैं कि इमाम अहमद बिन हंबल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु यज़ीद के कुफ़ के काइल हैं और तुझे उन का फरमान काफ़ी है, उन का तक्वा और इल्म इस अम्र का मुतकाज़ी (यह चाहता) है कि उन्होंने ने यह बात इस लिये कही होगी कि उनके नज़्दीक ऐसे उमूरे सरीहा का यज़ीद से सादिर होना साबित होगा जो मौजिबे कुफ़ हैं। इस मामले में एक जमाअत ने उन की मुवाफ़िक़त की है मसलन इब्ने जौज़ी वगैरा। रहा उस का फिस्फ़ तो इस पर इत्तिफ़ाक़ है। बाज़ उलमा ने ख़ास उस के नाम से तअूनत को जाइज़ करार दिया है। (बरकाते आले रसूल:155)

और हज़रत अल्लामा सअदुद्दीन तफ़्ताज़ानी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के क़त्ल और अहले बैते नुबुव्वत की तौहीन व तज़लील पर यज़ीद की रज़ा व खुश्नूदी तवातुर से साबित है, लिहाज़ा हम उस की ज़ात के बारे में तवक्कुफ नहीं करेंगे (उसे बुरा भला कहेंगे) अल्बत्ता उस के ईमान के बारे में तवक्कुफ करेंगे (न उसे काफ़िर कहेंगे और न मोमिन)।

(शरह अकाइद नसफी:117)

मोहदिस इब्ने जौज़ी से पूछा गया कि यज़ीद को इमाम हुसैन का शहीद करने वाला कहना किस तरह सहीह है, जबकि वह करबला में शहादत के वाकिआ के वक़्त मुल्के शाम में था, तो उन्होंने ने एक शेअर पढ़ा जिस का तर्जमा यह है कि तीर इराक़ में था जबकि तीर मारने वाला जी सलम में था, ऐ तीर मारने वाले तेरा निशाना किस ग़ज़ब का था।

(अशशर्फ़ुल मोअब्बद:69)

नौफल बिन अबुल फुरात कहते हैं कि मैं एक रोज़ उमवी ख़लीफ़ा हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के पास बैठा हुआ था कि यज़ीद का कुछ ज़िक्र आ गया तो एक शख्स ने यज़ीद को अमीरुल मोमिनीन यज़ीद बिन मुअविया कहा, हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने उस शख्स से फरमाया कि तू उसे अमीरुल मोमिनीन कहता है। फिर आप ने हुक्म दिया कि यज़ीद को अमीरुल मोमिनीन कहने वाले इस शख्स को 20 कोड़े लगाए जायें।

(तारीख़ुल खुलफ़ा:142)

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उमैया ख़ानदान के एक फ़र्द हैं यानी मरवान के पोते और ख़लीफ़ा अब्दुल मलिक बिन मरवान के दामाद हैं, जिन के फज़्लो कमाल और तक्वा व परहेज़गारी के बारे में सिर्फ़ इतना बता देना काफ़ी है कि उन को खुलफ़ाए राशिदीन में शुमार किया जाता है। उन्होंने ने उस शख्स को कि जिस ने यज़ीद बद बख़्त को अमीरुल मोमिनीन कहा, कोड़े लगवाए और सज़ा दी।

इस वाकिआ से वह लोग जो आज कल यज़ीद की हिमायत करते हैं और उस को अमीरुल मोमिनीन कहते हैं, सबक हासिल करें और जान लें कि वह यकीनन सज़ा के मुस्तहिक हैं। अगर आज भी कोई हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जैसा होता तो उन्हें कोड़े ज़रूर लगवाता।

और आला हज़रत पेशवाए अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िल बैरलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं: “यज़ीद पलीद अलैहि मा यस्तहिककहू मिनल् अज़ीज़िल् मजीद, क़तअन यकीनन बइन्माए अहले सुन्नत फ़ासिक व फ़ाजिर व ज़री अलल्-कबाइर था। इस क़दर पर अइम्माए अहले सुन्नत का इतबाक व इत्तिफ़ाक है, सिर्फ़ उस की तक्फ़ीर व लअन में इख़्तिलाफ़ फरमाया। इमाम अहमद बिन हंबल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु और उन के अत्बाअ व मुवाफ़िकीन उसे काफ़िर कहते और ब तख़्सीस नाम उस पर लअनत करते हैं और आयते करीमा इस पर सनद लाते हैं: **فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوا فِى الْاَرْضِ** क्या करीब है कि **وَنُقْطِعُ عَوْرَةَ الرَّحْمٰنِكُمْ، اُولٰٓئِكَ الَّذِیْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاصْمُتْهُمْ وَاَعْلٰی اَبْصَارِهِمْ** अगर वालिए मुल्क हो तो ज़मीन में फ़साद करो और अपने नसबी रिश्ते काट दो, यह हैं वह लोग जिन पर अल्लाह ने लअनत फरमाई तो उन्हें बहरा कर दिया और उन की आंखें फोड़ दीं। (पारा:26, रूकूज़:7)

शक नहीं कि यज़ीद ने वालिए मुल्क होकर ज़मीन में फ़साद फैलाया, हरमैन तैय्यिबैन व खुद कअबा मुअज़्ज़मा व रौज़ए तैयिबा की सख़्त बेहुर्मतियां कीं, मस्जिदे करीम में घोड़े बांधे, उन की लीद और पेशाब मिम्बरे अत्हर पर पड़े, तीन दिन मस्जिदे नबवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम बेअज़ान व नमाज़ रही। मक्का व मदीना व हिजाज़ में हज़ारों सहाबा व ताबईन बेगुनाह शहीद किये। कअबा मुअज़्ज़मा पर पत्थर फेंके, ग़िलाफ़ शरीफ़ फाड़ा और जलाया। मदीना तैयिबा की पाक दामन पारसाएं तीन शबाना रोज़ अपने ख़बीस लश्कर पर हलाल कर दीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के

जिगर पारे को तीन दिन बे आबो-दाना रख कर मअ हम्राहियों के तेगे जुल्म से प्यासा जिबह किया। मुस्तफा सल्लल्लाहु तअला अलैहि व सल्लम की गोद में पाले हुए तने नाजनीन (नाजुक बदन) पर बादे शहादत घोड़े दौड़ाए गए कि तमाम उस्तुख्वाने (हड्डी) मुबारक चूर हो गए। सरे अनवर कि मुहम्मद सल्लल्लाहु तअला अलैहि व सल्लम का बोसागाह था, काट कर नेजा पर छड़ाया और मंजिलों फिराया। हरमे मोहतरम मुखद्दरात (पर्दा नशीन) मुश्कूए रिसालत कैद किये गए और बेहुर्मती के साथ उस खबीस के दरबार में लाए गए। इस से बढ़ कर कतए रहम और ज़मीन में फसाद क्या होगा। मलऊन है वह जो इन मलऊन हरकात को फिस्को-फुजूर न जाने। कुरआने अजीम पर सराहतन इस पर "लअन हुमुल्लाह" फरमाया। लिहाज़ा इमाम अहमद और उनके मुवाफिकीन उस पर लअनत फरमाते हैं। और हमारे इमामे आजम रजियल्लाहु तअला अन्हु लअन व तक्फीर से एहतियातन सुकूत कि उस से फिस्को-फुजूर मुतवातिर हैं कुफ़े मुतवातिर नहीं। और बहाले ऐहतमाल निस्बते कबीरा भी जाइज़ नहीं न कि तक्फीर और अमूसाल व बईदात मश्रूत बिअदम तौबा हैं: *लिकौलिही तअला* (जैसा कि अल्लाह तअला का फरमान है) فَسَوْفَ نَقُولُ لِلَّذِينَ ظَنُّوا أَنَّهُمْ وَفَّقُوا فِي الْكُفْرِ وَآلِ الْأَيْمَانِ (पारा:16, रुकूअ:7) और तौबा ता दमे गरगरा मक्बूल है और इस के अदम पर जज़्म नहीं और यही अहवत व अस्लम है मगर उस के फिस्को-फुजूर से इनकार करना औरइ इमामे मज़्लूम पर इल्ज़ाम रखना ज़रूरियात मज़हबे अहले सुन्नत के खिलाफ है और ज़लाल व बद-मज़हबी साफ है, बल्कि इंसाफन यह उस क़ल्ब से मुतसव्वर नहीं जिस में मुहब्बते सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तअला अलैहि व सल्लम का शम्मा हो। وَمَا عَلَّمُوا الْقُرْآنَ بِالْجُبَّةِ (फतावा रज़विय्यह:6/107-108)

और तहरीर फरमाते हैं "यज़ीद बेशक पलीद था, उसे पलीद कहना और लिखना जाइज़ है और उसे रहमतुल्लाहि तअला अलैह न कहेगा मगर नासिबी कि अहले बैते रिसालत का दुश्मन है।

(फतावा रज़विय्यह:6/114)

जलीलुल क़दर उलमाए मुहक्किनीन के बयानात से ख़ूब अच्छी तरह वाज़ेह हो गया कि यज़ीद कैसा था और उस ने कैसे-कैसे मज़ालिम ढाए हैं। और यह भी ज़ाहिर हो गया कि हम उसे क्या कह सकते हैं और क्या नहीं कह सकते। जो लोग कि इमामुल अइम्मा हज़रत सैयिदना इमामे आजम अबू हनीफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मानने वाले हैं और अपने को हनफी कहते हैं उन को चाहिये कि वह अपने इमाम के तरीक़े पर चलें यानी यज़ीद के बारे में लअून व तक्फ़ीर से ऐहतियातन सुकूत इस्तियार करें कि यही अस्लम है। और जो लोग कि उस के फ़ासिक व फ़ाजिर होने से इनकार करें और उस के लिये अमीरुल मोमिनीन व रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहें या इमामे मज़लूम सैयिदना हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर इज़ाम रखें, ऐसे लोगों को गुम्रहा व बद मज़हब, अहलेबैते नुबुव्वत का दुश्मन और ख़ारजी समझें, उनका बयान सुनने से परहेज़ करें और उन की किताबें पढ़ने से बचें।

हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फ़रमाते हैं कि बाज़ जाहिल जो कहते हैं कि इमाम हुसैन ने यज़ीद से बगावत की तो यह अहले सुन्नत व जमाअत के नज़्दीक बातिल है और इस तरह की बोली ख़ारजियों के हज़्यानात (बेहूदा बातों) में से है जो अहले सुन्नत व जमाअत से ख़ारिज हैं। (शरह फ़िक्हे अकबर:87)

यज़ीद और हदीसे कुस्तुनियह

यज़ीद पलीद जिस ने मस्जिदे नबवी और बैतुल्लाह शरीफ की सख़्त बेहुर्मती की, जिस ने हज़ारों सहाबए किराम व ताबईने इज़ाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम का बेगुनाह कत्ले आम किया, जिस ने मदीना तैयिबा की पाक दामन ख़्वातीन को अपने लश्कर पर हलाल किया और जिस ने जिगर गोशए रसूल हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तीन दिन बेआबो-दाना रख कर प्यासा ज़िबह किया।

ऐसे बद बख़्त और मरदूद यज़ीद को पैदाइशी जन्नती और बख़्शा बख़्शाया हुआ साबित करने के लिये आज कल कुछ लोग ऐड़ी चोटी

का जोर लगा रहे हैं, ऐसे लोग चाहे अपने को सुन्नी कहें या देवबन्दी लेकिन हकीकत में वह अहले बैते रिसालत के दुश्मन, खारजी और यज़ीदी हैं। उस बंद बख्त की हिमायत में वह लोग बुखारी शरीफ की एक हदीस पेश करते हैं जो हदीसे कुस्तुन्तुनियह के नाम से याद की जाती है, इन बातिल परस्त यज़ीदियों का मक्सद यह है कि जब यज़ीद की बख्शिश और उस का जन्मती होना हदीस शरीफ से साबित है तो इमाम हुसैन का ऐसे शख्स की बैअत न करना और उस के खिलाफ अलमे जिहाद बुलंद करना बगावत है और सारे फिल्ला व फसाद की जिम्मेदारी इन्हीं पर है। *नऊजु बिल्लाहि मिन् जालिक*।

यज़ीदी गिरोह जो हदीस पेश करता है वह यह है: *قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ* यानी नबीए अक़रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मेरी उम्मत का पहला लश्कर जो कैसर के शहर (कुस्तुन्तुनियह) पर हम्ला करेगा वह बख़्शा हुआ है। (बुखारी शरीफ:1/410)

और कैसर के शहर कुस्तुन्तुनियह पर पहला हम्ला करने वाला यज़ीद है लिहाज़ा वह बख़्शा बख़्शाया हुआ पैदाइशी जन्मती है।

यज़ीदी गिरोह की इस तक्रीर का जवाब यह है कि अल्लाह के महबूब दानाए ख़िफाया व गुयूब जनाब अहमदे मुज्ताबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का फरमाने हक़ है लेकिन कैसर के शहर कुस्तुन्तुनियह पर कब हम्ला किया इसके बारे में चार अक्वाल हैं: 49 हिजरी, 50 हि0, 52 हि0 और 55 हि0। देखिये कामिल इब्ने असीर:3/131, बिदाया निहाया:8/32, ऐनी शरह बुखारी:14/198 और इसाबा:1/405

मालूम हुआ कि यज़ीद 49 हिजरी से 55 हिजरी तक कुस्तुन्तुनियह की किसी जंग में शरीक हुआ, चाहे सिपह सालार वह रहा हो या हज़रत सुफियान बिन औफ और वह मामूली सिपाही रहा हो, मगर कुस्तुन्तुनियह पर इस से पहले हम्ला हो चुका था जिस के सिपह सालार हज़रत अब्दुर रहमान बिन ख़ालिद बिन वलीद थे और उन के साथ

हजरत अबू अय्यूब अंसारी भी थे रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम। देखिये हदीस की मोतमद व मशहूर किताब अबू दाऊद शरीफ पेज:340 और हजरत अब्दुर रहमान बिन खालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इन्तेक़ाल 46 या 47 हिजरी में हुआ, जैसा कि बिदाया निहाया:8/31, कामिलब इब्ने असीर:3/229 और असदुल गाबा:3/440 में है। मालूम हुआ कि आप का हम्ला कुस्तुन्तुनियह पर 46 या 47 हि० से पहले हुआ। और तारीख़ के औराक़ शाहिद हैं कि यज़ीद कुस्तुन्तुनियह की एक जंग के अलावा और किसी में शरीक नहीं हुआ, तो साबित हो गया कि हजरत अब्दुर रहमान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कुस्तुन्तुनियह पर पहला जो हम्ला किया था, यज़ीद उस में शरीक नहीं था तो फिर हदीस अव्वलु जैशिमू मिन् उम्मती में यज़ीद दाख़िल नहीं। और याद रखिये कि अबू दाऊद शरीफ सिंहाए सित्ता में से है, आम कुतुबे तारीख़ के मुक़ाबले में उसी की रिवायत को तरजीह दी जाएगी। रही यह बात कि हजरत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का इन्तेक़ाल उस जंग में हुआ कि जिस का सिपह सालार यज़ीद था तो इस में कोई ख़ल्जान नहीं इस लिये कि कुस्तुन्तुनियह का पहला हम्ला जो हजरत अब्दुर रहमान रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की सरकरदगी में हुआ, आप उस में शरीक रहे और फिर बाद में जब उस लश्कर में शरीक हुए कि जिस का सिपह सालार यज़ीद था तो कुस्तुन्तुनियह में आप का इन्तेक़ाल हो गया इस लिये कि कुस्तुन्तुनियह पर मुतअदिद बार इस्लामी लश्कर हम्ला आवर हुआ।

अगर यह तस्लीम भी कर लिया जाए कि कुस्तुन्तुनियह पर पहला हम्ला करने वाला जो लश्कर था उस में यज़ीद मौजूद था फिर भी यह हरगिज़ साबित नहीं होगा कि उस के सारे करतूत माफ़ हो गए और वह जन्नती है। इस लिये कि हदीस शरीफ में यह भी है: **لَا يَنْفِيَانِ فَيَصْفَحَانِ إِلَّا غَرَّكُمَا قَبْلَ أَنْ يَفْرَقَا** यानी जब दो मुसलमान आपस में मुसाफ़ा करते हैं तो जुदा होने से पहले उन दोनों को बख़्श दिया जाता है।

और हज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने यह भी इरशाद फरमाया: مَنْ فَطَرَنِي مَالِكًا لَمْ يَغْفِرْ لِي ذُنُوبِي जो माहे रमज़ान में रोज़ेदार को इफ्तार कराए उस के गुनाहों के लिये मगफिरत है।

(बैहकी, मिश्कात:174)

और सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की हदीस यह भी है: يُغْفَرُ لَأَمَّتِهِ فِي آخِرِ اللَّيْلِ فِي رَمَضَانَ (रोज़ा वगैरा के सबब) माहे रमज़ान की आखिरी रात में इस उम्मत को बख्श दिया जाता है।

(अहमद, मिश्कात:174)

अगर यज़ीद नवाज़ों की बात मान ली जाए तो इन अहादीसे करीमा का यह मतलब होगा कि मुसलमान से मुसाफहा करने वाले, रोज़ेदार का इफ्तार कराने वाले और माहे रमज़ान में रोज़ा रखने वाले सब बख्शे बख्शाए जन्नती हैं, अब अगर वह हरमैन तैयिबैन की बेहुर्मती करें, माफ, कअबा शरीफ को खोद कर फेंक दें माफ, मस्जिदे नबवी में ग़लाज़त डालें माफ, हज़ारों बेगुनाह को क़त्ल कर डालें माफ, यहां तक कि अगर सैयिदुल अबिया के ज़िगर पारों को तीन दिन का भूखा प्यासा रख कर ज़िबह कर डालें तो वह भी माफ और जो चाहें करें सब माफ। *نَعُوْزُ بِلِلّٰلَهِ مِنْ جَلَالِكَ*।

अगर किसी अमले खैर से सगीरा, कबीरा व अगले पिछले सब गुनाह माफ हो जाएं जैसा कि आज के यज़ीदियों ने समझा है तो दुनिया का निज़ाम दर्हम बर्हम हो जाएगा इस लिये कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान से मुसाफहा कर लेगा और उस के बाद जो चाहेगा करेगा, अगर कोई उसे सरज़निश करेगा तो कहेगा कि एक मुसलमान से मुसाफहा के सबब हमारा अगला पिछला सब गुनाह माफ हो गया है, हमें कुछ न कहो।

खुदाए अज़्ज़ व जल्ल यज़ीद नवाज़ों को सहीह समझ अता फरमाए और गुमराही व बद मज़हबी से बचने की तौफीकै रफीक बख्शे। आमीन

यज़ीद की तख़्त नशीनी और तलबे बैअत

हज़रत अमीरे मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की वफ़ात के बाद यज़ीद ने तख़्त नशीनी होते ही अपनी बैअत के लिये हर तरफ़ खुतूत व हुक्म नामे रवाना किये। मदीना मुनव्वरा के गवर्नर वलीद बिन उक्बा थे, उन को अपने बाप की वफ़ात की इत्तिलाअ की और लिखा कि हर ख़ास व आम से मेरी बैअत लो और हुसैन बिन अली, अब्दुल्लाह बिन जुबैर और अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) से पहले बैअत लो, इन सब को एक लम्हा मोहलत न दो।

मदीना मुनव्वरा के लोगों को अभी तक हज़रत अमीरे मुआविया के इन्तेक़ाल की ख़बर न थी, यज़ीद के हुक्म नामे से वलीद बहुत घबराया इस लिये कि इन हज़रात से बैअत लेना आसान नहीं था, उस ने मश्वरा के लिये मरवान बिन हिकम को बुलाया।

मरवान बिन हिकम वह शख्स है कि जब उस की पैदाइश हुई और हुज़ूर अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में तहनीक (कोई चीज़ चबा कर नर्म करके खिलाने) के लिये लाया गया तो हुज़ूर ने फरमाया: *هُوَ السَّوْرُغُ نَزَلَ الرَّزْغُ* (रवाहुल हाकिम फी सहीहिही) यह गिरगिट का बेटा गिरगिट है। (अन्नाहिया:45)

और बुख़ारी, नसाई और इब्ने अबी हातिम अपनी तफ़सीर में रिवायत करते हैं कि हज़रत आइशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया *لَعَنَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَكْمَرُونَ وَمَرُونَ فِي صَلْبِهِ فَمَرُونَ وَيُبِضُ مِنْ* यानी रसूले अक़रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने मरवान के बाप हिकम पर लअनत फरमाई जबकि मरवान सुल्बे पिदर में था तो वह भी लअनत से हिस्सा पाने वाला हुआ। (तारीख़ुल ख़ुलफ़ा:128)

वह मरवान कि उस को और उस के बाप को हुज़ूर अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने गिरगिट फरमाया और जिस के बाप पर हुज़ूर ने लअनत फरमाई बल्कि उस के बाप को शहर बदर

फरमा कर ताइफ में रहने का हुक्म फरमाया, ऐसे मरवान से भला खैर की उम्मीद क्या हो सकती है।

मदीना मुनव्वरा के गवर्नर वलीद ने जब मरवान से मश्वरा लिया तो उस ने कहा इन तीनों को इसी वक्त बुलाएं और बैअत के लिये कहें, अगर वह बैअत कर लें तो बेहतर वरना तीनों को कत्ल कर दें।

इस मश्वरा के बाद गवर्नर वलीद ने तीनों हज़रत को बुला भेजा, हज़रत इमाम हुसैन रजियल्लाहु तअला अन्हु अपने चन्द जवानों को साथ लेकर गए, मकान के बाहर उन को खड़ा कर दिया और फरमाया कि अगर तुम लोग सुनो कि मेरी आवाज़ बुलंद हो रही है तो फौरन अन्दर आ जाना और जब तक मैं बाहर न आ जाऊं, यहां से हरगिज़ न जाना।

फिर आप अन्दर तशरीफ ले गए, वलीद ने आप को हज़रत अमीरे मुआविया की वफात की ख़बर सुनाई और यज़ीद की बैअत के लिये कहा, आप ने फरमाया कि मेरे जैसा आदमी इस तरह छुप कर बैअत नहीं कर सकता, आप बाहर निकल कर सब लोगों से बैअत तलब करें तो उन के साथ मुझ से भी बैअत के लिये कहें।

वलीद अम्न पसंद आदमी था, उस ने कहा अच्छा आप तशरीफ ले जाइये। जब आप चलने लगे तो मरवान ने बरहम होकर वलीद से कहा कि अगर आप ने इस वक्त इन को जाने दिया और बैअत न ली तो फिर इनपर काबू न पा सकेंगे। अगर यह बैअत कर लें तो बेहतर वरना इन को कत्ल कर दो, यह सुन कर हज़रत इमाम हुसैन रजियल्लाहु तअला अन्हु खड़े हो गए और फरमाया ओ इब्नुज़ ज़रका क्या तू मुझे कत्ल करेगा या यह कत्ल करेंगे, खुदा की कसम तू झूठा और कमीना है, यह कह कर आप बाहर तशरीफ ले आए।

मरवान ने वलीद से कहा कि आप से मेरी बात नहीं मानी। खुदा की कसम अब आप इन पर काबू न पा सकेंगे। कत्ल करने का यह बेहतरीन मौका था जिस को आप ने जाए कर दिया। वलीद ने कहा अफ़सोस तुम मुझे ऐसा मश्वरा दे रहे हो जिस में मेरे दीन की तबाही

और रसूल का इनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लाम का विसाल मदीना मुनव्वरा में हुआ। मालूम हुआ कि सारे शहरों में आप को सब से ज्यादा प्यारा मदीना मुनव्वरा है। और जब हज़ूर को वह सब से ज्यादा प्यारा है तो हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को भी वही शहर सब से ज्यादा प्यारा है। मगर हालात ने इस महबूब के छोड़ने पर आपको मजबूर कर दिया, सफर की तैयारी मुकम्मल हो गई, ऊंटों पर कजावे कसे गए और अहले बैते रिसालत का यह छोटा सा मुकद्दस काफिला मदीनतुर रसूल की जुदाई के सद्मे से रोता हुआ घरों से निकल पड़ा। और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने नाना जान के रौज़ए अनवर पर आखिरी सलाम अर्ज करने के लिये हाज़िर हुए।

इमाम आली मक़ाम जब अपने नाना जान के आस्तानए मुकद्दस पर आखिरी सलाम के लिये हाज़िर हुए होंगे, उस वक़्त आप की कैफियत क्या हुई होगी, बिल्ला शुब्हा दीदए खूँबार ने अशके ग़म की बारिश की होगी और अर्ज किया होगा कि नाना जान! मैं आप का मुकद्दस शहर छोड़ रहा हूँ, वह शहर कि जो मुझे सब से ज्यादा अज़ीज़ और प्यारा है, इस लिये छोड़ रहा हूँ कि मेरा यहां रहना दुश्वार हो गया है, मैं जा रहा हूँ मुझे इजाज़त दीजिये।

और आप के नाना जान सैयिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लाम जिन्होंने आगोशे रहमत व मुहब्बत में आप की परवरिश की थी, उस वक़्त रौज़ए अनवर में उनका क्या हाल हुआ होगा, इसका तसव्वुर अहले मुहब्बत के दिलों को पाश-पाश (टुकड़े-टुकड़े) कर देता है।

आह! यह दिन कितने रंज व ग़म का दिन था कि ज़िगर गोशए रसूल फर्ज़न्दे अली व बतूल जिन का सब कुछ मदीना में है मगर आज वह मदीना से जा रहा है और हमेशा हमेश के लिये जा रहा है।

आप अल-विदाअ, ऐ नाना जान! अल-विदाअ कह कर रोते हुए वापस हुए और डूबते हुए दिल के साथ मदीना मुनव्वरा पर हसरत भरी निगाह डालते हुए मक्का मुअज़्ज़मा की जानिब रवाना हो गए। यह

वाकिआ 4 शाबान 60 हिजरी का है।

जब आप मक्का मुअज्जमा पहुंच गए और आप की तशरीफ आवुरी की लोगों को खबर हुई तो जूक दर जूक आप की खिदमत में लोग आने लगे और आप की ज़ियारत का शर्फ हासिल करने लगे।

मक्का मुअज्जमा में आप एक पनाह गुर्जी की हैसियत से मुक़ीम रहे, न आप ने यज़ीद के खिलाफ किसी से बैअत ली और न अपनी मुवाफक़त में कोई लश्करी ताक़त ही फ़राहम की।

कूफियों के खुतूत

कूफा शहर की बुनिया उस वक़्त पड़ी जबकि 14 हिजरी से 16 हि० तक कादसिया वगैरा में फ़तूहात के बाद मुसलमानों की फौज ने इराक़ में सुकूनत इख्तियार की और मदाइन की आबो-हवा उन के मुवाफिक़ न हुई तो सहाबिए रसूल हज़रत सअद बिन वक्कास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हुक्म से यह जगह तलाश की गई और मुसलमानों के लिये मकानात की तामीर हुई। फिर आप 17 हिजरी में अपनी फौज के साथ मदाइन से मुन्तक़िल होकर यहां मुक़ीम हुए। इस तरह कूफा शहर वुजूद में आया।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ज़माना ही से कूफा आप के शियओं और महबूबों का मरकज़ था, वहां के लोग हज़रत अमीरे मुआविया के अहदे ख़िलाफ़त ही में हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की खिदमत में तशरीफ़ आवुरी की अरज़ियां भेज चुके थे मगर आप ने साफ़ इनकार कर दिया था। अब जबकि कूफा वालों को मालूम हुआ कि अमीरे मुआविया का इन्तेक़ाल हो गया और इमामे आली मक़ाम ने यज़ीद की बैअत से इनकार कर दिया तो बरिवायत तारीख़ तबरी सुलैमान बिन सुरद के मकान में वहां के शिया जमा हुए, हज़रत अमीरे मुआविया के इन्तेक़ाल का ज़िक्र करके सब ने खुदा का शुक्र अदा किया, फिर सुलैमान ने सब से कहा कि मुआविया का इन्तेक़ाल हो गया है और हज़रत इमाम हुसैन ने यज़ीद की बैअत से

इनकार कर दिया है और मक्का चले गए हैं, आप लोग उनके और उनके बाप के शिया हैं, अगर उनके मददगार बन सकते हैं और उनके दुश्मनों से जंग कर सकते हैं तो उन को तशरीफ आवुरी के लिये खत लिखें और अगर कमजोरी या बुज़दिली का अदेशा हो तो धोका देकर उन की जान को खतरे में न डालें। सब ने बयक ज़बान कहा कि हम उन को धोका न देंगे बल्कि हम उनके दुश्मनों से लड़ेंगे और अपनी जानें उन पर कुर्बान कर देंगे। (तबरी:2/176)

चुनांचे पहला खत जो उन लोगों की तरफ से लिखा गया उस में हज़रत अमीरे मुआविया के इन्तेकाल और यज़ीद की वली अहदी का ज़िक्र करने के बाद तहरीर किया गया कि हमारे सर पर कोई इमाम नहीं है, आप तशरीफ लाइये, खुदाए तआला आप की बरकत से हमें हक़ की हिमायत नसीब फरमाए। दमिश्क़ का गवर्नर नोमान बिन बशीर यहां मौजूद है मगर हम उस के साथ नमाज़े जुमा में शरीक नहीं होते और न उस के साथ ईदगाह जाते हैं। जब हमें मालूम हो जाएगा कि आप तशरीफ ला रहे हैं तो हम उस को यहां से निकाल कर मुल्के शाम जाने पर मजबूर कर देंगे। (तबरी:2/177)

यह पहला खत अब्दुल्लाह बिन सुबैय हमदानी और अब्दुल्लाह बिन दाल के बदस्त रवाना किया गया जो इमामे आली मक़ाम की खिदमत में 10 रमज़ान 60 हिजरी को मक्का मुअज़्ज़मा पहुंचा। इस खत की रवांगी के बाद दो ही दिन के अरसे में 53 अरज़ियां और तैयार हो गईं जो एक दो तीन और चार आदमियों के दस्तख़त से थीं, यह सारे खुतूत तीन आदमियों के हाथ इरसाल किये गए। इस के बाद फिर कुछ मख़सूस लोगों ने अरज़ियां भेजीं और यह सब यके बाद दीगर थोड़े वक्फ़े से हज़रत की खिदमत में पहुंच गई। (तबरी:2/177)

कूफ़ा को हज़रत मुस्लिम की रवानगी

आखिरी खत जो हानी बिन हानी सुबैई और सईद बिन अब्दुल्लाह हनफी के बदस्त (हाथों) हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

को पहुंचा, उस के बाद आप ने कूफा वालों को लिखा कि तुम लोगों के बहुत से खुतूत हम तक पहुंचे जिन के मजामीन से हम मुत्तला हुए, तुम लोगों के जज्बात और अकीदत व मुहब्बत का लिहाज करते हुए बर वक्त हम अपने भाई चचा के बेटे मख्सूस व मोअत्तमद मुस्लिम बिन अकील को कूफा भेज रहे हैं, अगर इन्होंने लिखा कि कूफा के हालात साजगार हैं तो इन्शा अल्लाहु तआला मैं भी तुम लोगों के पास बहुत जल्द चला आऊंगा। (तबरी:2/178)

हज़रत सदरुल अफाज़िल मौलान सैयद मुहम्मद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी रहमतुल्लाहि अलैह तहरीर फरमाते हैं कि अगरचें इमाम की शहादत की खबर मशहूर थी और कूफियों की बे वफाई का पहले भी तज़रिबा हो चुका था मगर जब यज़ीद बादशाह बन गया और उस की हुक्मत व सल्तनत दीन के लिये खतरा थी और इस लिये उस की बैअत ना रवा थी और वह तरह-तरह की तदबीरों और हीलों से चाहता था कि लोग उस की बैअत करें, इन हालात में कूफियों का ब-पासे मिल्लत (समाज का लिहाज करते हुए) यज़ीद की बैअत से दस्त कशी करना और हज़रत इमाम से तालिबे बैअत होना इमाम पर लाज़िम करता था कि उन की दरख्वास्त कबूल फरमाएं। जब एक कौम ज़ालिम व फासिक की बैअत पर राज़ी न हो और साहिबे इस्तिहकाक अहल से दरख्वास्ते बैअत करे, उस पर अगर वह उन की इस्तिद्आ कबूल न करे तो इसके मअ्ना यह होते हैं कि वह उस कौम को उस जाबिर ही के हवाले करना चाहता है। इमाम अगर उस वक्त कूफियों की दरख्वास्त कबूल न फरमाते तो बारगाहे इलाही में कूफियों के इस मुतालेबा का इमाम के पास क्या जवाब होता कि हम हर चन्द दरपै हुए मगर इमाम बैअत के लिये राज़ी न हुए, बदीं वजह (इसी वजह से) हमें यज़ीद के जुल्म व तशहूद से मजबूर होकर उस की बैअत करनी पड़ी। अगर इमाम हाथ बढ़ाते तो हम उनपर जानें फिदा करने के लिय हज़िर थे। यह मस्अला ऐसा दर पेश आया जिस का हल बजुज़ इसके और कुछ

न था कि हज़रत इमाम उन की दावत पर लब्बैक फरमाएं। अगर्चे अकाबिर सहाबए किराम हज़रत इब्ने अब्बास, हज़रत इब्ने उमर, हज़रत जाबिर, हज़रत अबू सईद और हज़रत अबू वाकिद लैसी वगैरहुम हज़रत इमाम की इस राय से मुत्तफिक न थे और उन्हें कूफियों के अहद व मीसाक का ऐतबार न था। इमाम की मुहब्बत और शहादते इमाम की शोहरत इन सब के दिलों में इख़िलाज पैदा कर रही थी, गो कि यह यकीन करने की भी कोई वजह न थी कि शहादत का यही वक़्त है और इसी सफर में यह मरहला दर पेश होगा लेकिन अंदेशा मानेअू था। हज़रत इमाम के सामने मस्अले की यह सूरत दर पेश थी कि इस इस्तिदआ को रद करने के लिये उज़े शरई क्या है। इधर ऐसे जलीलुल क़दर सहाबा के शदीद इस्रार का लिहाज़, उधर अहले कूफा की इस्तिदआ रद फरमाने के लिये कोई शरई उज़ न होना हज़रत इमाम के लिये निहायत पेचीदा मस्अला था, जिस का हल बजुज़ इसके कुछ नज़र न आया कि पहले हज़रत इमाम मुस्लिम को भेजा जाए, अगर कूफियों ने बद अहदी व बेवफाई की तो उज़े शरई मिल जाएगा और अगर वह अपने अहद पर काइम रहे तो सहाबा को तसल्ली दी जा सकेगी।

(सवानेहे करबला:87)

हज़रत मुस्लिम कूफा में

हज़रत मुस्लिम के दो साहिब जादे मुहम्मद और इब्राहीम जो बहुत कम उम्र थे और अपने बाप के बहुत प्यारे बेटे थे, इस सफर में अपने मेहरबान बाप के साथ हो लिये। हज़रत मुस्लिम ने कूफा पहुंच कर मुख़्तार बिन उबैद के मकान पर कियाम फरमाया, शियआने अली हर तरफ से जूक दर जूक आकर बड़े जोशो-अक़ीदत और मुहब्बत के साथ आप से बैअत करने लगे, यहां तक कि एक हफ़्ता के अन्दर बारह हजार कूफियों ने आप के दस्ते मुबारक पर हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की बैअत की। हज़रत मुस्लिम को जब हालात खुशगवार नज़र आए तो आप ने इमाम हुसैन को ख़त लिख

दिया कि यहां के हालात साजगार हैं और अहले कूफा अपने कौलो-
करार पर काइम हैं, आप जल्द तशरीफ लाइये। सहाबिए रसूल हजरत
नोमान बिन बशीर जो उस ज़माने में कूफा के गवर्नर थे जब वह
हालात से बाख़बर हुए तो मिम्बर पर तशरीफ ले गए और हम्दो-सलात
के बाद फरमाया कि ऐ लोगो! यह बैअत यज़ीद की मरज़ी के खिलाफ
है, वह इस पर बहुत भड़केगा और फितना व फसाद बरपा होगा।
अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम हजरमी जो बनू उमैया के हवा ख़्वाहों (ख़ैर
ख़्वाहों) में से था, उठ खड़ा हुआ और कहा कि आप जो देख रहे हैं
सख़्तगीरी के बग़ैर उस की इस्लाह नहीं हो सकती, आप दुश्मन के
मुकाबले में बहुत कमज़ोर साबित हो रहे हैं, आप ने फरमाया कि
खुदाए तआला की फरमांबरदारी के साथ मेरा शुमार कमज़ोरों में हो यह
इस बात से बेहतर है कि उस की नाफरमानी के साथ मेरा शुमार
इज़्ज़त वालों में हो, यह फरमा कर आप मिम्बर से उतर आए,
अब्दुल्लाह हजरमी ने वहां से उठ कर यज़ीद को ख़त लिख दिया कि
मुस्लिम बिन अक़ील कूफा में आ गए हैं, शियों ने हुसैन बिन अली के
नाम पर उन से बैअत कर ली है, अगर आप कूफा बचाना चाहते हैं तो
किसी ज़बर्दस्त आदमी को हाकिम बना कर भेजिये जो आप के फरमान
के मुताबिक़ अमल कर सके। नोमान बिन बशीर या तो कमज़ोर हैं
और या तो जान बूझ कर कमज़ोरी दिखा रहे हैं। (तबरी:2/181)

अम्मार बिन उक्बा और उमर बिन सअद ने भी इसी मज़मून के
खुतूत यज़ीद को लिखे, इन खुतूत के पहुंचने पर यज़ीद सख़्त ग़ज़बनाक
हुआ, अपने खास दोस्तों को बुला कर उस ने मशवरा किया, उन लोगों
ने कहा कि कूफा का गवर्नर अब्दुल्लाह बिन ज़ियाद को मुकर्रर किया
जाए कि वह बहुत सख़्त आदमी है किसी की परवाह न करेगा, यज़ीद
उन लोगों के मशवरे पर अमल किया, कूफा के साबिक़ गवर्नर हजरत
नोमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को माज़ूल कर दिया और
अबैदुल्लाह बिन ज़ियादा जो बसरा का गवर्नर था, उसे कूफा का भी
गवर्नर बना दिया और हुक्म दिया वह फौरन कूफा पहुंच जाए, मुस्लिम

बिन अक़ील को गिरफ्तार करके शहर बदर कर दे या क़त्ल कर डाले। और हुसैन बिन अली आएँ तो उन से भी मेरी बैअत तलब करे, अगर वह बैअत कर लें तो बेहतर वरना उन को भी क़त्ल कर दे।

इब्ने ज़ियाद का कूफा आना

यज़ीद का हुक्म नामा पाते ही उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद ने अपने भाई उस्मान बिन ज़ियाद को बसरा में अपना जा नशीन मुक़र्रर किया और दूसरे दिन कूफा के लिये रवाना हो गया, क़ादसिया पहुंच कर अपने सिपाहियों को वहीं छोड़ दिया और अज़ राहे फरेब हिजाज़ी लिबास पहन कर ऊंट पर सवार हुआ और बीस आदमियों को अपने हमराह लेकर हिजाज़ी रास्ते से मगरिब और इशा के दरमियान कूफा में दाख़िल हुआ, रात के अंधेरे में इस मक़्रो-फरेब के साथ पहुंचने से उस का मतलब यह था कि इस वक़्त कूफियों में यज़ीद के खिलाफ़ एक लहेर दौड़ी हुई है लिहाज़ा ऐसे तौर पर दाख़िल होना चाहिये कि वह इब्ने ज़ियाद को पहचान न सकें और यह समझें कि हज़रत इमाम हुसैन तशरीफ़ ले आए ताकि अमन व आफ़ियत के साथ वह कूफा में दाख़िल हो जाए। चुनांचे ऐसा ही हुआ अहले कूफा जिन को हज़रत इमाम आली मक़ाम की आमद का इन्तिज़ार था, हिजाज़ी लिबास में हिजाज़ी रास्ते से साज़ो-सामान के साथ आता देख कर रात की तारीकी में हर शख्स ने यही समझा कि हज़रत हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा तशरीफ़ ले आए, सब ने नारा हाए मसरत बुलंद किया **مَرْحَبًا بِهِ** और **قَبِلَتْ خَيْرَ مَنْقَمٍ** कहते हुए उस के आगे पीछे चले, इब्ने ज़ियाद बद निहाद किसी को कुछ जवाब न देता था बल्कि आवाज़ों को सुनता और चेहरों को बग़ौर देखता हुआ चला जा रहा था, शोर सुन कर और भी लोग घरों से निकल आए और हर शख्स फ़र्ज़न्दे रसूल समझ कर आगे बढ़ने लगा, जब मजमा बहुत ज़्यादा हो गया और नौबत यहां तक पहुंची कि राह चलने में रुकावट होने लगी, उस वक़्त मुस्लिम बिन अम्र बाहली जो इब्ने ज़ियाद के साथ था उस ने पुकार

कर कहा “रास्ता छोड़ दो” यह अमीर उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद हैं, इन अल्फाज़ को सुन कर लोगों को बड़ा रंज हुआ, अप्सोस करते हुए सब अपने घरों को वापस हो गए और सिर्फ दस बीस आदमियों के साथ इब्ने ज़ियादा गवर्नर हाउस में दाखिल हुआ। (तबरी:2/184)

सुबह इब्ने ज़ियाद ने लोगों को जमा किया और उन के सामने यह तक्रीर की। ऐ लोगो! अमीरुल मोमिनीन यज़ीद ने मुझे कूफा का गवर्नर बनाया है और मुझे हुक्म दिया है कि मुतीब् और फरमांबरदार लोगों के साथ भलाई करूं और नाफरमानों के साथ सख्ती करूं। कान खोल कर सुन लो, मैं अमीरुल मोमिनीन के इस हुक्म पर सख्ती से अमल करूंगा। फरमांबरदारों के साथ मेहरबानी से पेश आऊंगा और नाफरमानों के लिये मेरी तलवार है, तुम लोग अपने और अपने अहलो-अयाल की जानों पर रहम करो।

इस तक्रीर के बाद इब्ने ज़ियाद ने हर कबीले के बड़े-बड़े लोगों को गिरफ्तार कर लिया और उन से तहरीरी ज़मानत ली कि तुम और तुम्हारे कबीले के लोग किसी मुखालिफ को अपने यहां पनाह नहीं देंगे, अगर किसी ने पनाह दे रखी है तो उसे पेश करेगा, जो ऐसा नहीं करेगा हम उसे क़त्ल करके उसी के दरवाजे पर लटका देंगे और उस के अहलो-अयाल को भी नहीं छोड़ेंगे।

इब्ने ज़ियाद की इस काररवाई के बाद कूफा वालों पर खौफ व हिरास छ गया और उन के ख्यालात में तेज़ी के साथ तबदीली पैदा होने लगी।

कूफा शहर में चूंकि यह मशहूर हो चुका था कि हज़रत मुस्लिम मुख्तार बिन अबू उबैदा के मकान पर ठहरे हुए हैं इस लिये अब आप ने वहां क़ियाम फरमाना मुनासिब न समझा और रात की तारीकी में मुहिब्बे अहले बैत हानी बिन उर्वा के मकान पर मुत्तकिल हो गए जो कबीलए मज़हज़ के सरदार थे। हानी ने आप को एक महफूज़ कमरा में छुपा के रखा और सिवाए मख़सूस और मोअतमद लोगों के दूसरों इस राज से मुत्तला न किया।

जासूस की जासूसी

इब्ने जि़याद को हज़रत मुस्लिम की तलाश थी मगर कोशिश के बावजूद वह उन की क़ियाम गाह का पता न लगा सका। आख़िर उस ने अपने शामी गुलाम मअक़ल को तीन हज़ार दिरहम देकर सुराग़ के लिये मुक़र्रर किया कि वह खुफ़िया तौर पर किसी न किसी तरह मुस्लिम का पता चलाए। गुलाम सीधा ज़ामा मस्जिद पहुंचा, इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त एक मुहिब्बे अहले बैत मुस्लिम बिन औसजा असदी मस्जिद के एक गोशे में नमाज़ पढ़ रहे थे, यह देर तक उनको देखता रहा, जब वह नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो यह गुलाम उनके पास गया और कहा कि मैं मुल्के शाम का रहने वाला हूं और अल्लाह के फज़लो-करम से अहले बैते नुबुव्वत का दोस्त हूं। मालूम हुआ है कि इस ख़ानदान के कोई बुजुर्ग कूफ़ा तशरीफ़ लाए हैं, यह तीन हज़ार दिरहम मेरे पास हैं, क्या आप उनका पता बता सकते हैं ताकि यह रक़म मैं उनकी ख़िदमत में नज़र कर दूं। मुस्लिम असदी ने कहा मस्जिद में और भी बहुत से लोग हैं, तुम मुझी से क्यों उनके बारे में दरियाफ़्त कर रहे हो? गुलाम ने कहा कि आप के चेहरे पर जो ख़ैर व बरक़त के आसार हैं उन से ज़ाहिर होता है कि आप ज़रूर अहले बैते रसूल के दोस्तों में से हैं, मुस्लिम असदी उसके फ़रेब में आ गए और कहा तुम ने ख़ूब पहचाना, मैं भी तुम्हारे भाइयों में से एक हूं, मेरा नाम मुस्लिम बिन औसजा है। फिर उसे हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील के पास ले गए, उस ने आप से बैअत की और तीन हज़ार दिरहम जो लाया था वह आपकी ख़िदमत में पेश किया। बैअत के बाद वह गुलाम रोज़ाना आप की ख़िदमत में सब से पहले आता, दिन भर रहता, हालात मालूम करता और जो कुछ देखता, सुनता रात के वक़्त उस की पूरी रिपोर्ट इब्ने जि़याद को पहुंचा देता।

हानी के इब्ने जि़याद से पुराने तअल्लुकात थे मगर कहीं इब्ने जि़याद को भनक न मिल गई हो कि हज़रत मुस्लिम हमारे यहां मुक़ीम हैं, इस डर से वह उस की मुलाक़ात को जाने से परहेज़ करते थे और

बीमारी के उज्र से घर बैठ गए थे। इब्ने ज़ियाद ने हानी के पास मुलाक़त का पैग़ाम भेजा। हानी ने कोई ख़तरा नहीं महसूस किया, इस लिये वह तन्हा इब्ने ज़ियाद के पास चले गए, वहां पहुंचे तो इब्ने ज़ियाद का रंग बदला हुआ पाया। आप ने सलाम किया तो उस ने जवाब नहीं दिया, कुछ देर आप खड़े रहे, उस के बाद उस ने बड़े गुस्से से कहा हानी तुम अमीरुल मोमिनीन यज़ीद के खिलाफ अपने घर को साजिशों का अड्डा बनाए हो, तुम मुस्लिम बिन अक़ील को बुला कर अपने घर में छुपाए हो, उन के लिये हथियार जमा करते हो, अपने मोहल्ले में उन की मदद के लिये आदमी इकट्ठा कर रहे हो और समझते हो कि यह सारी बातें मुझ से छुपी रहेंगी।

हानी ने पहले तो इन बातों से इनकार किया मगर जब इब्ने ज़ियाद ने मअक़ल गुलाम को बुला कर खड़ा कर दिया तो उन के होश उड़ गए, अब इनकार की गुंजाइश न रही तो उन्होंने ने कहा अस्ल हकीकत यह है कि मैं ने मुस्लिम बिन अक़ील को नहीं बुलाया बल्कि वह खुद मेरे यहां तशरीफ लाए तो मैं इनकार नहीं कर सका। इस तरह मैंने उन्हें मेहमान बना लिया और पनाह दे दी। मैं आप से पक्का वादा करता हूं कि मैं उन्हें अपने घर से निकाल दूंगा, आप मुझे इतनी मोहलत दीजिये कि मैं जाकर उन से कह के आ जाऊं कि आप मेरे घर से निकल कर जहां चाहें चले जाएं ताकि मैं पनाह देने की ज़िम्मेदारी से सुबुकदोश हो जाऊं। इब्ने ज़ियाद ने कहा खुदा की कसम जब तक तुम मेरे पास उनको हाज़िर न कर दो तुम यहां से नहीं जा सकते, हानी ने कहा खुदा की कसम मैं अपने मेहमान को क़त्ल करने के लिये तुम्हारे सुपुर्द कर दूं यह हरगिज़ नहीं हो सकता।

यहां तक कि बात और बढ़ी तो इब्ने ज़ियाद ने कहा तुम उन्हें सुपुर्द नहीं करोगे तो हम तुम्हारा सर क़लम कर देंगे। हानी ने कहा ऐसा हुआ तो तुम्हारे इर्द गिर्द भी तलवारें चमकेंगी, यह सुन कर इब्ने ज़ियाद आग बगोला हो गया और कहा अच्छा! तुम मुझे धमकी देते हो, फिर हानी के सर और मुंह पर डंडे मारना शुरू कर दिया, यहां

तककि उनका सर और चेहरा ज़ख्मी हो गया और सारा कपड़ा खून में लत-पत हो गया। एक सिपाही जो करीब में खड़ा था, हानी ने उस की तलवार पर हाथ डाला कि छीन लें मगर उस ने छुड़ा लिया, इब्ने ज़ियाद ने कहा अब तो अपना खून तुम ने मेरे लिये हलाल कर दिया, फिर सिपाहियों को हुक्म दिया कि इसे खींच कर ले जाओ और एक कमरे में बन्द कर दो। (तबरी:2/192)

शहर में यह अप्वाह फैल गई कि हानी क़त्ल कर दिये गए, इस अप्वाह के सुनते ही अम्र बिन हज्जाज जो हानी के निस्बती भाई थे कई हजार हथियार बन्द सवारों को लेकर गवर्नर हाउस का घेराव किया। अम्र बिन हज्जाज ने पुकार कर कहा कि मैं अम्र बिन हज्जाज हूं और मेरे साथ क़बीलए मज़हज के हजारों सवार हैं, हम ने इताअत से रू-गर्दानी नहीं की है, हमारे सरदार को क़त्ल कर दिया गया है, हम उस का इन्तिक़ाम लेंगे, फिर इन्तिक़ाम-इन्तिक़ाम का शोर बुलंद हुआ, इब्ने ज़ियाद इस सूरते हाल से बहुत घबरा गया, उस ने काज़ी शुरैह से कहा कि आप पहले हानी को देख लीजिये फिर उस के क़बीले वालों से कहिये कि हानी ज़िंदा हैं, उन के क़त्ल की अप्वाह ग़लत है। हानी अपने क़बीले के लोगों की आवाज़ें सुन रहे थे। काज़ी शुरैह जब उन के पास गए तो हानी ने उन से कहा कि मेरे क़बीले वालों से मेरा हाल बता कर कह दीजिये कि इस वक़्त अगर दस आदमी भी अन्दर आ जाएं तो मैं यकीनन छूट जाऊंगा। काज़ी साहब जब बाहर निकले तो इब्ने ज़ियाद का जासूस हुमैद बिन बकर असदी उन के साथ हो गया, इस लिये मजबूरन काज़ी साहब ने हानी का पूरा हाल उन के क़बीले से नहीं बताया बल्कि सिर्फ इतना कहा कि वह ज़िंदा हैं और बाज़ मस्लहतों की बिना पर नज़र बन्द कर दिये गए हैं। हानी के क़बीले वालों को काज़ी साहब की शहादत से जब मालूम हुआ कि हानी ज़िंदा हैं और उन के क़त्ल की अप्वाह ग़लत है तो वह सब मुत्मइन होकर वापस चले गए। (तबरी:2/194)

गवर्नर हाउस का घिराव

हज़रत सदरुल अफाजिल मौलाना मुहम्मद नईमुद्दीन साहब मुरादाबादी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि हज़रत मुस्लिम यह ख़बर पाकर बर आमद हुए और आप ने अपने मुतवस्सिलीन को निदा की, जूक दर जूक (गिरोह दर गिरोह) आदमी आने शुरू हुए और चालीस हज़ार की जमूइयत ने आप के साथ कसरे शाही का एहाता कर लिया, सूरत बन आई थी, हमूला करने की देर थी, अगर हज़रत मुस्लि हमूला करने का हुक्म देते तो उसी वक़्त क़िला फतह पाता। और इब्ने ज़ियाद और उस के हमूराही हज़रत मुस्लिम के हाथ में गिरफ्तार होते। और यही लश्कर सैलाब की तरह उमंड कर शामियों को तख़्तो-ताराज (तबाहो-बर्बाद) कर डालता और यज़ीद को जान बचाने की कोई राह न मिलती, नक्शा तो यही जमा था मगर कार बदस्त, कार कुनान क़द्रस्त, बंदों का सोचा क्या होता है, हज़रत मुस्लिम ने क़िला को एहाता तो कर लिया और बा वजूदे कि कूफियों की बद अहदी और इब्ने ज़ियाद की फरेब कारी और यज़ीद की अदावत पूरे तौर पर साबित हो चुकी थी। फिर भी आप ने अपने लश्कर को हमूले का हुक्म न दिया और एक बादशाहे दाद गुस्तर (इंसाफ करने वाले बादशाह) के नाइब की हैसियत से आप ने इन्तिज़ार फरमाया कि पहले गुफ्तगू से क़तए हुज्जत कर लिया जाए और सुलह का सूरत पैदा हो सके, तो मुसलमानों में खूँ रेज़ी न होने दी जाए, आप अपने इस पाक इरादे से इन्तिज़ार में रहे और अपनी एहतियात को हाथ से जाने न दिया, दुश्मन ने इस वक़फा से फ़ाइदा उठाया और कूफा के रुअसा व अम्राइद (बड़े-बड़े लोग) जिन को इब्ने ज़ियाद ने पहले से क़िला बन्द कर रखा था, उन्हें मजबूर किया कि वह अपने रिश्तेदारों और ज़ेरे अंसर लोगों को मजबूर करके हज़रत मुस्लिम की जमाअत से अलाहेदा कर दें। यह लोग इब्ने ज़ियाद के हाथ में कैद थे और जानते थे कि अगर इब्ने ज़ियाद को शिकस्त भी हुई तो वह क़िला फतह होने तक

उनका खातिमा कर देगा। इस खौफ से वह घबरा उठे और उन्होंने ने दीवारे क़िला पर चढ़ कर अपने मुतअल्लिकीन व मुतवसिसलीन से गुप्तगु की और उन्हें हज़रत मुस्लिम की रिफाक़त छोड़ देने पर इन्तिहा दर्जे का ज़ोर दिया और बताया कि अलावा इस बात के कि हुक्ूमत तुम्हारी दुश्मन हो जाएगी, यज़ीद नापाक तीनत तुम्हारे बच्चे-बच्चे को क़त्ल कर डालेगा, तुम्हारे माल लुटवा देगा, तुम्हारी जागीरें और मकान ज़ब्त हो जायेंगे। यह और मुसीबत है कि अगर तुम इमाम मुस्लिम के साथ रहे तो हम जो इब्ने ज़ियाद के हाथ में कैद हैं, क़िला के अन्दर मारे जायेंगे। अपने अंजाम पर नज़र डालो, हमारे हाल पर रहम करो, अपने घरों को चले जाओ। यह हीला कामयाब हुआ और हज़रत मुस्लिम का लश्कर मुन्तशिर होने लगा, यहां तक कि ता ब वक्ते शाम हज़रत मुस्लिम ने मस्जिदे कूफ़ा में जिस वक्ते मगरिब की नमाज़ शुरू की तो आप के साथ पांच सौ आदमी थे और जब आप नमाज़ से फारिग हुए तो आप के साथ एक भी न था। तमन्नाओं के इज़हार और इल्तिजाओं के तूमर (खुतूत) से जिस अज़ीज़ मेहमान को बुलाया था, उन के साथ यह वफ़ा की कि वह तन्हा हैं और उन की रिफाक़त के लिये कोई एक भी मौजूद नहीं। कूफ़ा वालों ने हज़रत मुस्लिम को छोड़ने से पहले ग़ैरत व हमिय्यत से क़तअ तअल्लुक किया और उन्हें ज़रा परवाह न हुई कि कियामत तक तमाम आलम में उनकी बेहिम्मती का शोहरा रहेगा और इस बुज़दिलाना बेमुरब्बती और ना मर्दी से वह रुस्वाए आलम होंगे। हज़रत मुस्लिम इस गुर्बत व मुसाफिरत में तन्हा रह गए, किधर जायें, कहां कियाम करें, हैरत है कि कूफ़ा तमाम मेहमान खानों के दरवाज़े मुक़फ़फ़ल थे, जहां से ऐसे मोहतरम मेहमानों को मदऊ करने के लिये रुसुल व रसाइल का तांता बंध गया था, कूफ़ा के वसीअ ख़िल्ले में दो चार गज़ ज़मीन हज़रत मुस्लिम के शब गुज़ारने के लिये नज़र नहीं आती, उस वक्ते हज़रत मुस्लिम को इमाम हुसैन की याद आती है और दिल तड़पा देती है, वह सोचते हैं कि मैं ने इमाम की जनाब में ख़त लिखा, तशरीफ़ आवुरी की इल्तिजा की है और इस

बद अहद कौम के इख्लास व अकीदत का एक दिलकश नक्शा इमामे आली मक़ाम के हुज़ूर पेश किया है और तशरीफ़ आवुरी पर ज़ोर दिया है, यकीनन हज़रत इमाम मेरी इल्तिजा रद न फरमायेंगे और यहां के हालात से मुत्मईन होकर मअ अहलो-अयाल चल पड़े होंगे। यहां उन्हें क्या मसाइब पहुंचेंगे और चमने ज़हरा के जन्नती फूलों को इस बेमेहरी (बेरहमी) की तपिश कैसी गज़द (तक्लीफ़) पहुंचाएगी, यह ग़ल अलग दिल को घायल कर रहा था और अपनी तहरीर पर शर्मिन्दगी व इन्फ़ेआल और हज़रत इमाम के लिये ख़तरात अलाहेदा बेचैन कर रहे थे और मौजूदा परेशानी जुदा दामनगीर थी। (सवानेहे करबला:92)

हज़रत मुस्लिम तौआ के घर में

हज़रत मुस्लिम अपनी इसी परेशानी के आलम में इधर उधर फिरने लगे, रात के अंधेरे में यूं ही चले जा रहे थे कि एक औरत जिस का नाम तौआ था, अपने दरवाज़े पर बैठी हुई नज़र आई जो अपने बेटे का इन्तिज़ार कर रही थी, आप ने उस से पीने के लिये पानी मांगा, औरत नेक ख़स्तत थी, वह गई और पानी लाई, आप बैठ गए और पानी पिया, वह बरतन रखने के लिये घर में गई और जब वापस आई तो देखा कि आप बैठे हैं, उस ने कहा आप तो पानी पी चुके, अब अपने घर जाइये, आप ने कोई जवाब नहीं दिया और बैठे रहे। जब उस ने दूसरी और तीसरी बार वही बात कही तो आप ने फरमाया कि ऐ अल्लाह की बन्दी! मेरा इस शहर में कोई घर नहीं है, मैं एक मुसाफ़िर हूं और सख़्त मुसाबत में मुक्ता हूं, क्या तुम मुझे पनाह दे सकती हो? शायद मैं कभी इसका बदला दे सकूं वरना अल्लाह व रसूल जल्ल जलालुहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम तुम्हें इस का बेहतरीन अन्न अता फरमाएंगे। औरत ने हैरान होकर दरियापत्त किया आप हैं कौन? और वाकिआ क्या है? फरमाया मैं मुस्लिम बिन अकील हूं, कूफ़ा वालों ने मेरे साथ ग़दारी की, मुझ से मदद का वादा किया और अब सब ने मेरा साथ छोड़ दिया, उस ने कहा मुस्लिम आप ही हैं?

फरमाया हां मैं वही हूं, इतना सुनना कि वह आप को मकान के अन्दर ले गई और अपने खास कमरे में आप के लिये फर्श बिछा दिया, फिर खाना लाई मगर आप ने तनावुल नहीं फरमाया।

थोड़ी देर बाद उस का लड़का आया, जब उस ने मां को उस के खास कमरे बार-बार आते जाते देखा तो वजह दरियाफ्त की, तौआ ने पहले छुपाने की कोशिश की लेकिन बेटे ने जब बहुत इस्रार किया तो उस को ज़ाहिर करना पड़ा मगर उस ने ताकीद कर दी कि खबर दार! यह राज किसी से ज़ाहिर मत करना। वह सुनकर चुप हो गया और रात गुज़रने का इन्तिज़ार करने लगा, लड़का शराबी और आवारा किस्म का था। (तबरी:2/198)

सुबह हुई तो उस लड़के ने मुहम्मद बिन अशअस के बेटे से जाकर बता दिया कि मुस्लिम बिन अकील हमारे घर में हैं, उस ने फौरन अपने बाप के ज़रिये इब्ने ज़ियाद को मुत्तलअ कर दिया, इब्ने ज़ियाद ने मुहम्मद बिन अशअस की सरकारदगी में फौज का एक दस्ता मुस्लिम की गिरफ्तारी के लिये रवाना कर दिया, हज़रत मुस्लिम ने जब घोड़े के टापों की आवाज़ सुनी तो समझ गए कि फौज मेरी गिरफ्तारी के लिये आ गई। आप तलवार लेकर फौरन कमरे से बाहर निकल पड़े, इतने में फौज घर के अन्दर पहुंच गई, आप ने ऐसा संख्त हमला किया कि सब को निकाल कर घर से बाहर कर दिया, वह लोग फिर अन्दर घुस आए, आप ने बड़ी बहादुरी से उन का मुकाबला किया, आप में और बुकैर बिन हुमरान अहमरी में तलवार चलने लगी, उस ने आप के चेहरे पर ऐसी तलवार मारी कि ऊपर का होंट कट गया, नीचे का होंट भी ज़ख्मी हुआ और सामने के दो दांत भी गिर गए और आप ने उस के सर पर ज़ख्मे कारी लगाया, जब दुश्मनों को यकीन हो गया कि इस तरह उन पर काबू पाना मुश्किल है तो सब भाग कर छत पर चले गए और ऊपर से मथर मारने लगे, इसके अलावा सेंठों मुट्ठे आग से जला कर फेंकने लगे, हज़रत मुस्लिम ने जब यह बुज़दिलाना तरीक़ा जंग देखा तो आप तलवार खींचे हुए घर से बाहर निकल आए और उन

लोगों से लड़ने लगे जो बाहर थे, मुहम्मद बिन अश्अस ने पुकार कर कहा कि आप के लिये अमान है मगर आप ने जंग जारी रखी और रज्ज पढ़ने लगे जिस के आखिरी मिसरे का मज्मून यह था कि “मुझे इस बात का अंदेशा है कि मुझ से झूठ बोलेंगे या मुझे धोका देंगे” मुहम्मद बिन अश्अस ने कहा नहीं आप से झूठ नहीं बोला जाएगा और न आप को धोका दिया जाएगा।

हज़रत मुस्लिम में अब जंग करने की ताकत नहीं रह गई थी, जख्मों से चूर थे और हांप रहे थे, इसी लिये उसी मकान की एक दीवार से टेक लगा कर खड़े हो गए, इब्ने अश्अस उनके पास आकर कहने लगा कि अमान है। आप ने कहा मेरे लिये अमान है, कहा हां अमान है। सब पुकार उठे कि हां आप के लिये अमान है, सिर्फ अम्र बिन अब्दुल्लाह सुलमी अलग हो गया और कहा मुझे इस मामले में कोई दखल नहीं। हज़रत मुस्लिम ने फरमाया कि देखो तुम लोगों ने मुझे अमान दी है, इस लिये मैं अपनी तलवार मियान में कर लेता हूं। अगर तुम लोग मुझे अमान न देते तो मैं अपने को तुम्हारे हवाले हरगिज़ नहीं करता, इतने में एक सवारी लाई गई जिस पर हज़रत मुस्लिम को बिठाया और गवर्नर हाउस की तरफ ले चले, रास्ते में आप की तलवार कमर से निकाल ली गई तो आप जिंदगी से मायूस हो गए और फरमाया यह पहली ग़दारी है, इब्ने अश्अस ने कहा मुझे उम्मीद है कि आप के साथ कोई ख़तरा नहीं पेश आएगा, आप ने फरमाया बस उम्मीद ही उम्मीद है और अमान जो तुम ने दी थी वह क्या हुई? फिर *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन* कहा और रोने लगे, अम्र बिन अब्दुल्लाह सुलमी जिस ने अमान से इत्तिफाक नहीं किया था, वह बोला कि जिस के लिये तुम खड़े हुए थे, उसे ख़तरा देख कर रोना नहीं चाहिये, आप ने फरमाया वल्लाह मैं अपनी जान के लिये नहीं रो रहा हूं, बल्कि मैं नवासेए रसूल हज़रत इमाम हुसैन और उन की औलाद के लिये रो रहा हूं।

हज़रत मुस्लिम और गवर्नर हाउस

मुहम्मद बिन अश्अस आप को लिये हुए गवर्नर हाउस के फाटक पर पहुंचा, आप को वहां बिठा दिया और खुद इजाज़त लेकर इब्ने ज़ियाद के पास गया, उस से लड़ाई की पूरी कैफियत बयान की और हज़रत मुस्लिम को अमान के साथ लाने का ज़िक्र किया, इब्ने ज़ियाद ने कहा कि तुम अमान देने वाले कौन होते हो, हम ने तुम्हें गिरफ्तार करने के लिये भेजा था, अमान देने के लिये नहीं भेजा था। अब इब्ने अश्अस में कुछ बोलने की जुरअत नहीं हुई वह चुप हो गया।

हज़रत मुस्लिम जब गवर्नर हाउस के दरवाज़े पर पहुंचे तो वहां बहुत से लोग अन्दर जाने की इजाज़त के इन्तिज़ार में मौजूद थे। और एक घड़ा ठंडे पानी से भरा हुआ दरवाज़े के करीब रखा हुआ था और आप बहुत प्यासे थे। फरमाया मुझे थोड़ा सा पानी पिला दो। मुस्लिम बिन अम्र बाहली ख़बीस ने कहा कि इस में से एक बूंद भी तुम को नहीं मिलेगा मगर अम्मारा बिन उक्बा ने अपने गुलाम से कहा कि मुस्लिम को पानी पिला दो, जब वह कटोरे में पानी भर कर लाया और आप ने उसे पीना चाहा तो मुंह से खून बहने लगा और पानी रंगीन हो गया, दोबारा उसी तरह हुआ, तीसरी दफा दो दांत टूट कर कटोरे में गिर गए, आप ने कटोरा रख दिया और फरमाया मालूम होता है कि अब पानी मेरी किस्मत से उठ चुका है।

इतनी देर में इब्ने ज़ियाद का आदमी आप को लेने के लिये आ गया, जब आप इब्ने ज़ियाद के पास पहुंचे तो दस्तूर के मुताबिक आप ने उस को सलाम नहीं किया, एक सिपाही ने कहा कि तुम अमीर को सलाम नहीं करते, आप ने फरमाया अगर अमीर मुझ को क़त्ल करना चाहता है तो उस को मेरा सलाम नहीं और अगर क़त्ल का इरादा नहीं है तो फिर उस को बहुत से सलाम होंगे। इब्ने ज़ियाद ने कहा अब तुम बच नहीं सकते, क़त्ल कर दिये जाओगे, आप ने फरमाया वाकई? उस ने कहा हां, आप ने फरमाया अच्छा मुझे इतना मौका दे दो कि मैं कुछ वसियत कर दूं, कहा हां वसियत कर दो। मुस्लिम ने लोगों पर निगाह

डाली तो उन में इब्ने सअद नज़र आया, आप ने उस से फरमाया कि तुम कुरैश खानदान के आदमी हो, मैं तुम से कुछ राज़ की बातें कहना चाहता हूँ, इन्हें तन्हाई में सुन लो। हुक्ूमत का चापलूस सुनने के लिये तैयार न हुआ, इब्ने ज़ियाद ने कहा सुनने में क्या हरज है, तो इब्ने सअद उठा और हज़रत मुस्लिम के साथ थोड़ी दूर जाकर ऐसी जगह बैठा जहाँ से इब्ने ज़ियाद का भी सामना था, आप ने उस से फरमाया एक बात यह कहनी है कि मैं ने कूफा में फुलां शख्स से सात सौ दिरहम कर्ज़ लिया है तुम उसे अदा कर देना और दूसरी बात यह है कि क़त्ल के बाद मेरी लाश को दफन कर देना। तीसरे हज़रत इमाम हुसैन के पास किसी को भेज कर मेरे वाकिआ की इत्तिलाअ कर देना ताकि वह वापस चले जाएं।

हज़रत मुस्लिम ने यह बातें इब्ने सअद से राज़ के तौर पर कही थीं मगर उस बंद बख़्त ने यह सारी बातें इब्ने ज़ियाद से कह दीं, फिर उन वसियतों के जारी करने के बारे में उस से दरियाफ्त किया, इब्ने ज़ियाद ने कहा कि कर्ज़ की अदाइगी के बारे में तुम्हे इख़्तियार है जो चाहो करो। और हुसैन के मुतअल्लिक यह है कि अगर वह हमारी तरफ नहीं आयेंगे तो हमें उन से कोई मतलब नहीं और अगर आयेंगे तो हम उन्हें भी नहीं छोड़ेंगे और लाश के बारे में हम तुम्हारी बात नहीं सुनेंगे जिस शख्स ने हमारी मुख़ालफ़त की और लोगों में इस क़दर इन्तिशार पेदा किया उस की लाश किसी रिआयत की मुस्तहिक नहीं। और एक रिवायत में यूँ है कि लाश के मुतअल्लिक उस ने कहा कि क़त्ल के बाद हमें उस से कोई सरोकार नहीं तुम जो चाहो करो। (तबरी:2/205)

हज़रत मुस्लिम और इब्ने ज़ियाद

इस के बाद हज़रत मुस्लिम और इब्ने ज़ियाद में जो गुप्तगुप्त हुई वह ख़ास तौर पर तवज्जोह के काबिल है। इस लिये कि इस से हज़रत मुस्लिम और उन को भेजने वाले हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मौक़फ की पूरी वज़ाहत हो जाती है और साफ तौर

पर जाहिर हो जाता है कि उन पर जो बग़ावत का इल्जाम लगाया जाता है वह सरा सर बातिल और ग़लत है।

वसियत के मुतअल्लिक इब्ने सअद को जवाब देने के बाद इब्ने ज़ियाद ने हज़रत मुस्लिम से कहा इब्ने अकील सब लोग यहां मुत्तहिद होकर अमन के साथ रहते थे और सब यकज़ान थे, तुम यहां इस लिये आए थे कि लोगों को परेशान करो, उन में तफ़िरका डालो और आपस में फ़साद कराओ ताकि एक जमाअत दूसरी जमाअत पर हमला करे और खूँ रेज़ी हो।

आप ने फरमाया नहीं हरगिज़ नहीं। मैं इस लिये नहीं आया था बल्कि कूफ़ा के लोगों ने कि तेरे बाप ने यहां के नेक लोगों को क़त्ल किया और उन का ख़ून बहाया और इस्लाम का तरीक़ा छोड़ कर उन के साथ कैसर व किसुरा की तरह पेश आया, तो हम इस लिये आए कि हम उनकी ग़लत आदात व अतवार की इस्लाह करें और उन को अदल व इंसाफ़ और तालीमाते कुरआन की दावत दें। इब्ने ज़ियाद ख़बीस ने कहा ओ बदकार! तू और तेरा यह दावा, तब तू मदीना में शराब पिया करता था तब तुझे अदल व इंसाफ़ और तालीमाते कुरआन का ख़्याल न आया। आप ने फरमाया मैं शराब पीता था? वल्लाह! खुदा ख़ूब जानता है कि तू कज़ाब है और तू भी जानता है कि मैं झूठ बोल रहा हूँ। शराब तो वह पियेगा जो बेगुनाह मुसलमानों का ख़ून पिया करता है, खुदाए तआला ने जिस का क़त्ल हराम किया उसे क़त्ल करता है, जिस ने कोई ख़ून नहीं बहाया उस का ख़ून बहाता है, बुग़ज़ व हसद और बद गुमानी की वजह से खूँ रेज़ी करता है, फिर इस तरह भूल जाता है जैसे कुछ किया ही नहीं। इब्ने ज़ियाद ने कहा खुदा मुझे मारे अगर मैं तुझे इस तरह क़त्ल न करूं कि इस्लाम में आज तक कोई उस तरह क़त्ल न हुआ हो। आप ने फरमाया बेशक इस्लाम में जो जुल्म आज तक न हुआ हो उस के ईजाद का तुझ से ज़्यादा मुस्तिहक़ कोई नहीं। बुरी तरह क़त्ल करना और बुरी तरह मुस्ला करना तेरा ही हिस्सा है और दुनिया भर में तुझ से बढ़ कर इसका कोई सज़ावार नहीं।

इन बातों को सुनकर ज़ालिम इब्ने ज़ियाद झुल्ला उठा आपके वालिद हज़रत अक़ील और हज़रत अली व हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को गालियां देने लगा तो आप बिल्कुल ख़ामोश हो गए। (तबरी:2/206)

आप की शहादत

अब ज़ालिम इब्ने ज़ियाद ने हुक्म दिया कि इसे महल की छत पर ले जाओ और बुरी तरह क़त्ल करने के बाद सर को धड़ के साथ नीचे गिरा दो ताकि हड्डियां चकना चूर हो जाएं। आप ने इब्ने अशअस की तरफ देख कर फरमाया कि तू ने मुझे अमान न दी होती तो खुदा की कसम मैं इस तरह अपने को हवाले न करता। अब मुझ को बचाने के लिये अपनी तलवार उठा और बरीउज़्ज़िमा हो मगर वह बिल्कुल ख़ामोश रहा। फिर आप ने इब्ने ज़ियाद से कहा अगर हमारे और तुम्हारे दरमियान कुछ भी क़राबत होती (यानी तेरा बाप ज़ियाद अबू सुफियान की सुल्ब से होता) तो मुझे तू क़त्ल न करता।

ज़ालिम इब्ने ज़ियाद ने बुक़ैर बिन हुमरान असदी को बुलाया जिस की तलवार से तौआ के घर में आप का होंट कटा था, जब वह आया तो इब्ने ज़ियाद ने हुक्म दिया कि कोठे पर ले जा कर इस का सर क़लम कर दो। जब हज़रत मुस्लिम को कोठे पर ले चले तो आप इन्तिहाई सब्र व सुकून के साथ तक्वीर व इस्तिग़फ़ार और दुरूद शरीफ पढ़ रहे थे और साथ में यह भी कह रहे थे कि खुदावन्द! हमारा और उन लोगों का इन्साफ तेरे हाथ है जिन्होंने हमें धोका दिया, हम से झूठ बाले और हमें ज़लील किया। बुक़ैर ने आप को शहीद कर दिया और सरे मुबारक को जिस्म के साथ नीचे फेंक दिया। *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।* (तबरी:2/207)

यह वाकिआ 3 ज़िल्-हिज्जा 60 हिजरी का है। (सवानेहे करबला:94)

हज़रत मुस्लिम की शहादत के बाद कूफ़ा वालों पर इस क़द्र ख़ौफ और दहशत छा गई कि लोग घरों से निकलना ख़तरनाक समझते थे।

हर तरफ सन्नाटा था और किसी को एक दूसरे की खबर न थी। यहां तक कि वही हानी बिन उर्वा जिन के कत्ल की अपवाह के सबब गवर्नर हाउस खिंची हुई तलवारों के घेरे में आ गया था, जब इब्ने ज़ियाद ने हुक्म दिया इसे बाज़ार में ले जा कर कत्ल करो और सिपाही हानी को मश्कें बांध कर ले चले तो वह पुकार-पुकार कर कहते कहां हैं मेरे क़बीलए बनी मज़हज़ के लोग, कहां हैं मेरे घर वाले, मेरी जान क्यों नहीं बचाते मगर एक आदमी भी नज़र नहीं आया जो हानी की मदद करता, जब उन्हें हर तरफ से मायूसी हुई तो ज़ोर लगा कर अपना हाथ रस्ती से खींच लिया और कहा अरे कोई लाठी नहीं, कोई छड़ी नहीं, कोई पत्थर नहीं, अरे क्या ऊंट की हड्डी भी नहीं कि मैं उसी को लेकर अपनी जान बचाने के लिये हाथ पांव मारूं। सिपाहियों ने फिर उन्हें रस्ती में बांध लिया और तुरकी गुलाम जिस का नाम रशीद था उसने आप को शहीद कर दिया। *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।*

(तबरी:2/208)

शहादत फर्जन्दाने हज़रत मुस्लिम

हज़रत मुस्लिम ने गवर्नर हाउस के घेराव या तौआ के घर क़ियाम के वक़्त बच्चों को काज़ी शुरैह के यहां पहुंचा दिया था जब इब्ने ज़ियाद को मालूम हुआ कि हज़रत मुस्लिम के साथ उन के दो बच्चे भी आए थे, तो उस ने पूरे शहर कूफ़ा में ऐलान करवाया कि जो शख्स मुस्लिम के बच्चों को छुपाएगा उसे सज़ा दी जाएगी और जो उन को हमारे पास लाएगा वह इनाम व इकराम पाएगा। इब्ने ज़ियाद के इस ऐलान को सुन कर काज़ी साहब घबरा गए, फौरन जादे रहा तैयार करवाया और अपने बेटे असद से कहा कि आज बाबुल इराक़ीन से एक काफ़िला मदीना मुनव्वरा की तरफ जाने वाला है, इन बच्चों को ले जा कर उसी काफ़िला में किसी मुहिब्बे अहले बैत के सुपुर्द कर दो और ताकीद कर दो कि इनको बहिफ़ाज़त मदीना मुनव्वरा पहुंचा दे, असद जब उन बच्चों को ले कर बाबुल इराक़ीन पहुंचा तो मालूम हुआ कि

काफिला थोड़ी देर पहले चला गया। वह बच्चों को लेकर उसकी राह पर बड़ी तेज़ी के साथ चला और जब काफिला की गर्द नज़र आई तो बच्चों को गर्द दिखा कर कहा देखो वह काफिला की गर्द नज़र आ रही है, तुम लोग जल्दी जा कर उस में मिल जाओ, मैं वापस जाता हूँ। यह कह कर वह वापस चला आया और बच्चे तेज़ी के साथ चलने लगे मगर थोड़ी देर बाद गर्द गाइब हो गई और उन्हें काफिला न मिला। नन्हे बच्चे उस तन्हाई में एक दूसरे से गले मिल कर रोने लगे और मां-बाप को पुकार-पुकार कर जी जान खोने लगे।

इब्ने ज़ियाद का ऐलान सुन कर मालो-ज़र की हवस रखने वाले सिपाही बच्चों की तलाश में निकले हुए थे, थोड़ी देर बाद उन्होंने ने बच्चों को पा लिया, पकड़ कर इब्ने ज़ियाद के पास पहुंचा दिया, उस ने हुक्म दिया कि इन बच्चों को उस वक़्त तक जेल में रखा जाए जब तक अमीरुल मोमिनीन यज़ीद से पूछ न लूं कि इन के साथ क्या सुलूक किया जाए।

जेल का दारोगा मशकूर नामी मुहब्बे अहले बैत था, उसे बच्चों की बेकसी पर बहुत तरस आया। उस ने फैसला कर लिया कि बच्चों की जान हर हाल में बचानी चाहिये चाहे अपनी जान चली जाए। चुनाचे उस ने रात के अंधेर में बच्चों को जेल से निकाला, अपने घर ला कर खाना खिलाया, अपनी अंगूठी बतौर निशानी दी और शहर के बाहर कादसिया की राह पर ला कर कहा कि तुम लोग इसी रास्ते पर चले जाओ, जब कादसिया पहुंच जाना तो कोतवाल से मिलना, हमारी अंगूठी दिखलाना और सारे हालात बताना, वह हमारा भाई है, तुम लोगों को बहिफाज़त मदीना मुनव्वरा पहुंचा देगा। दोनों बच्चे कादसिया के राह पर चल पड़े मगर चूँकि उन्हें भी इस नन्हीं उम्र में शहादत से सराफराज़ होना था इस लिये वह रास्ता भूल गए, रात भर चलते रहे और जब सुबह हुई तो घूम फिर के उसी जगह पहुंचे कि जाहां से कूफा के बाहर कादसिया के रास्ते पर चले थे। नन्हा सा कलेजा खौफ से दहल गया कि कहीं फिर कोई न पकड़ कर इब्ने ज़ियाद के पास पहुंच

दे, करीब में एक खोखला दरख्त नज़र आया, वहीं एक कुआं भी था, उसी दरख्त की आड़ में जाकर बैठ गए, थोड़ी देर बाद जब लौंडी पानी भरने आई और जब इन बच्चों को छुपे हुए बैठे देखा तो करीब आई और उनके नूरानी चेहरों में शाने शहजादगी देख कर कहा "शहजादो! तुम लोग कौन हो और यहां कैसे छुपे बैठे हो? उन्होंने ने कहा कि हम यतीम व बेकस हैं और राह भटके हुए मुसीबत ज़दा मुसाफिर हैं। लौंडी ने कहा कि तुम्हारे बाप का क्या नाम है? बाप का लफ्ज़ सुनते ही उनकी आंखों से आंसू जारी हो गए, उस ने कहा ग़ालिबन तुम लोग मुस्लिम बिन अकील के फ़र्जन्द हो, अब वह फूट-फूट कर रोने लगे, उसने कहा ग़म न करो, मैं उस बीबी की लौंडी हूं जो मुहिब्बे अहले बैत है, आओ चलो मैं उस के पास ले चलती हूं। दोनों साहिब जादे उस के साथ हो लिये, लौंडी उन को अपनी मालिका के पास ले गई और सारा वाकिआ बयान किया। उसे साहिब जादों की तशरीफ आवुरी पर बेइन्तिहा मसररत हुई, इस खुशी में उस नेक बीबी ने लौंडी को आज्ञाद कर दिया और साहिब जादों के साथ बड़ी मुहब्बत के साथ पेश आई, उन्हें हर तरह तसल्ली व तशप्फ़ी दी कि फ़िक्र न करो और लौंडी से कहा कि इनकी तशरीफ आवुरी का राज़ पोशीदा रखना, मेरे शौहर हारिस को न बताना।

इधर इब्ने ज़ियाद को जब मालूम हुआ कि मशकूर दारोगा जेल ने दोनों बच्चों को रिहा कर दिया है तो उस ने मशकूर को बुला कर पूछा कि तू ने मुस्लिम के बच्चों को क्या किया, उन्होंने ने कहा कि मैं ने अल्लाह व रसूल जल्ल जलालुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की रज़ा व खुश्नूदी के लिये उनको रिहा कर दिया है, इब्ने ज़ियाद ने कहा कि तू मुझ से डरा नहीं, उन्होंने ने कहा जो अल्लाह से डरता है वह किसी और से नहीं डरता। इब्ने ज़ियाद ने कहा तुझे उन बच्चों को रिहा करने में क्या मिला? उन्होंने ने कहा मुझे उम्मीद है कि उन को रिहा करने के सबब हुज़ूर पुर नूर सैयिद आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत फरमाएंगे, अल्बल्ला तू मुस्लिम

बिन अकील को शहीद करने के सबब इस नेअमत् से महरूम रहेगा। इब्ने जि्याद इस जवाब पर गजबनाक हो गया और कहा मैं अभी तुझे सख्त सजा देता हूं। उन्होंने ने कहा एक नहीं मशकूर की अगर हजार जानें हों तो सब इन पर कुर्बान हैं। इब्ने जि्याद ने जल्लाद से कहा इसे इतने कोड़े मारो कि मर जाए और फिर इस का सर तन से जुदा कर दो, जल्लाद ने जब कोड़े मारने शुरू किये तो मशकूर ने पहले कोड़े पर कहा बिस्मिल्लाहि रहमानि रहीम, दूसरे पर कहा इलाहल् आलमीन! मुझे सब्र अता फरमा। तीसरे पर कहा खुदावन्द! मुझे बख्श दे। चौथे पर कहा इलाहल् आलमीन! मुझे अहले बैते अतुहार के पास पहुंचा दे। फिर उस के बाद खामोश हो गए और जल्लाद ने अपना काम तमाम कर दिया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिकन।

उधर वह नेक बीबी दिल व जान से बच्चों की खिदमत में दिन भर लगी रही और हर तरह से उन की दिल जोई करती रही, फिर रात में खाना खिला कर उन को अलग एक कमरे में सुला कर वापस आई थी कि उस का शौहर हारिस आ गया, औरत ने पूछा आज दिन भर आप कहाँ रहे, हारिस ने कहा दारोगए जेल मशकूर ने मुस्लिम बिन अकील के बच्चों को कैद से रिहा कर दिया तो अमीर उबैदुल्लाह बिन जि्याद ने ऐलान किया कि जो शख्स उन को पकड़ कर लाएगा उसे बहुत इनाम दिया जाएगा, मैं उन्हीं बच्चों की तलाश में दिन भर परेशान रहा, यहां तक कि इसी भाग दौड़ में मेरा घोड़ा भी मर गया और मुझे उन की तलाश में पैदल चलना पड़ा, औरत ने कहा अल्लाह से डरो और अहले बैते नुबुव्वत के बारे में इस तरह का ख्याल दिल से निकाल दो, वह कहने लगा चुप रह, तुझे क्या मालूम जो शख्स उन बच्चों को पा जाएगा, उसे इब्ने जि्याद इनाम व इकराम से माला माल कर देगा, इसी लिये और भी बहुत से लोग उन बच्चों की तलाश में दिन भर लगे रहे, औरत ने कहा कितने बद नसीब हैं वह लोग जो दुनिया की खातिर उन यतीम बच्चों को दुश्मन के हवाले करने के लिये तलाश में लगे हुए हैं और दुनिया के ऐवज अपना दीन बरबाद कर रहे हैं, कल मैदाने महशर में वह रसूले खुदा को क्या मुंह दिखाएंगे। हारिस

का दिल सियाह हो चुका था, बीवी के समझाने का उस पर कुछ असर नहीं हुआ, कहा नसीहत की ज़रूरत नहीं, नफा व नुकसान मैं खुद समझता हूँ, चल तू खाना ला, वह खाना लाई और हारिस बद बख्त खा कर सो गया।

आधी रात के बाद बड़े भाई मुहम्मद ने ख्वाब देखा और बेदार होकर छोटे भाई को जगाते हुए कहा उठो अब सोने का वक़्त नहीं रहा, हमारी शहादत का भी वक़्त करीब आ गया है, अभी मैं ने ख्वाब में अब्बा जान को देखा कि वह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम, हज़रत अली मुरतज़ा, हज़रत फातिमा ज़ह्रा और हज़रत हसन मुज्ताबा (रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम) के साथ जन्नत की सैर कर रहे हैं और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम अब्बा जान से फरमा रहे हैं कि तुम चले आए और बच्चों को ज़ालिमों में छोड़ आए, अब्बा जान ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! वह भी अन्करीब आने ही वाले हैं। छोटे ने कहा भाई जान! मैं ने भी इसी तरह का ख्वाब देखा है, क्या सच मुच हम लोग कल सुबह क़त्ल कर दिये जायेंगे, हाए! एक दूसरे को ज़िबह होते हुए हम कैसे देख सकेंगे। यह कहा कर दोनों भाई एक दूसरे के गले में बाहें डाल कर लिपट गए और फूट-फूट कर रोने लगे। उन के रोने और चिल्लाने से हारिस बद बख्त की आंख खुल गई, ज़ालिम ने बीवी को जगा कर पूछा यह दच्चों के रोने की आवाज़ कहां से आ रही है? औरत बेचारी सहेम गई, उस ने कुछ जवाब न दिया, ज़ालिम ने खुद उठ कर चिराग जलाया और उस कमरे की तरफ गया जहां से आवाज़ आ रही थी, जब अन्दर दाखिल हुआ तो देखा दो बच्चे रोते-रोते बेहाल हो रहे हैं, पूछा तुम कौन हो? चूँकि वह इस घर को अपनी जाए पनाह समझे हुए थे इस लिये उन्होंने ने साफ कह दिया कि हम मुस्लिम बिन अक़ील के यतीम बच्चे हैं। ज़ालिम यह सुनते ही गुस्से से बेकाबू हो गया और कहा कि मैं सारा दिन दूँढते-दूँढते परेशान हो गया और तुम लोग हमारे ही घर में ऐश का बिस्तर जमाए हुए हो, यह कहते हुए आगे बढ़ा और निहायत

बेरहमी के साथ उन को मारना शुरू कर किया, दोनों भाई शिदते करब से चीखने लगे, औरत बेतहाशा दौड़ी हुई आई और हारिस के कदमों पर अपना सर रख कर निहायत आजिजी के साथ रोती हुई कहने लगी कि अरे यह फातिमा के राज दुलारे हैं, इनकी चांद जैसी सूरतों पर रहम खा, ले मेरा सर कुचल कर अपनी हवस की आग बुझा ले लेकिन फातिमा के जिगर पारों को बख्श दे। हारिस बद बख्त ने उसे इतने जोर की ठोकर मारी कि वह बेचारी एक खम्बे से टकरा कर लहू लहान हो गई, ज़ालिम बच्चों को मारते-मारते जब थक गया तो दोनों भाइयों की मश्कें कस दीं और जुल्फों को खींच कर आपस में एक दूसरे से बांध दिया, उस के बाद यह कहता हुआ कोठरी के बाहर निकल आया कि जिस कद्र तड़पना है सुबह तक तड़प लो, दिन निकलते ही मेरी चमकती हुई तलवार तुम्हें हमेशा के लिये मौत की नींद सुला देगी।

सुबह होते ही ज़ालिम ने तलवार उठाई, ज़हेर में बुझा हुआ खंजर संभाला और खूं ख्वार भेड़िये की तरह कोठरी की तरफ बढ़ा, नेक बख्त बीबी ने दौड़ कर पीछे से उस की कमर थाम ली। हारिस ने इतने जोर का उसको झटका दिया कि सर एक दीवार से टकरा गया और वह आह करके ज़मीन पर गिर पड़ी और जब वह कोठरी में दाखिल हुआ तो हाथ में नंगी तलवार और चमकता हुआ खंजर देख कर दोनों भाई कांपने लगे, बद बख्त ने आगे बढ़ कर दोनों भाइयों की जुल्फें पकड़ीं और निहायत बेदर्दी के साथ उन्हें घसीटता हुआ बाहर लाया, तक्लीफ से दोनों भाइ तिलमिला उठे, रो-रो कर फरियाद करने लगे लेकिन ज़ालिम को तरस न आया, सामान की तरह एक खच्चर पर लाद कर दरियाए फुरात की तरफ चल पड़ा और जब उस के किनारे पहुंचा तो उन्हें खच्चर से उतार कर मश्कें खोलीं और सामने खड़ा किया। फिर मियान से तलवार निकाला ही था कि इतने में उस की बीबी हांपती कांपती और गिरती पड़ती आ पहुंची। आते ही उस ने पीछे से अपने शौहर का हाथ पकड़ लिया और खुशामद करते हुए कहा खुदा के लिये अब भी मान जाओ, अहले बैते रिसालत के खून से अपना हाथ रंगीन

मत करो। देखो बच्चों की नन्ही जान सोखी जा रही है। तलवार सामने से हटा लो।

हारिस पर शैतान पूरी तरह सवार था, ज़ालिम ने बीवी पर वार कर दिया, वह ज़ख्मी होकर गिरी और तड़पने लगी, बच्चे यह मन्ज़ूर देख कर सहेम गए। अब बद बख्त अपनी खून आलूद तलवार लेकर बच्चों की तरफ बढ़ा, छोटे भाई पर वार करना ही चाहता था कि बड़ा भाई चीख उठा, खुदा के लिये पहले मुझे ज़िबह करो, मैं अपने भाई की तड़पती हुई लाश नहीं देख सकूंगा। और छोटें भाई ने सर झुकाते हुए कहा कि बड़े भाई के क़त्ल का मंज़ूर मुझ से नहीं देखा जा सकेगा, खुदा के वास्ते पहले मेरा ही सर क़त्ल करो।

ज़ालिम की तलवार चमकी, दो नन्ही चीखें बुलंद हुई और यतीम बच्चों के कटे हुए सर खून में तड़पने लगे। (नक्शे वफा वगैरा)

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

फूले नौ दो दिन बहारे जाफ़जा दिखला गए

हसरत उन गुंचों पे है जो बिन खिले मुरझा गए

कातिल का अंजाम

हारिस बद बख्त ने जब बच्चों को शहीद कर दिया तो उनकी लाशों को दरियाए फुरात में फेंक दिया और सरों को तोबड़े में रख कर ले गया और इब्ने ज़ियाद के सामने पेश किया, उस ने कहा इस में क्या है? हारिस ने कहा इनाम व इक्राम के लिये आप के दुश्मनों का सर काट कर लाया हूं। इब्ने ज़ियाद ने कहा यह मेरे दुश्मन कौन हैं? कहा मुस्लिम बिन अक़ील के फ़र्ज़न्द, इब्ने ज़ियाद यह सुनते ही ग़ज़बनाक हो गया और कहा कि तुझ को क़त्ल करने का हुक्म किस ने दिया था, कम बख्त मैं ने अमीरुल मोमिनीन यज़ीद को लिखा है कि मुस्लिम बिन अक़ील के फ़र्ज़न्द गिरफ्तार कर लिये गए हैं, अगर हुक्म हो तो मैं उन्हें आप के पास ज़िंदा भेज दूं। अगर यज़ीद ने ज़िंदा भेजने का हुक्म दिया

तो फिर मैं क्या करूंगा? तू मेरे पास उन को ज़िंदा क्यों नहीं लाया? हारिस ने कहा मुझे अंदेशा था कि शहर के लोग मुझ से छीन लेंगे। इब्ने ज़ियाद ने कहा अगर तुझे छीन लेने का अंदेशा था तो किसी महफूज़ जगह पर उन को ठहरा कर मुझे इत्तिलाअ कर देता, मैं सिपाहियों के ज़रिये भंगवा लेता। तू ने मेरे हुक्म के बग़ैर उन को कत्ल क्यों किया? फिर इब्ने ज़ियाद ने मज्मा पर निगाह डाली और एक शख्स जिस का नाम मकातिल था उस से कहा कि इस बद बख्त की गर्दन मार दे, चुनांचे हारिस की गर्दन मार दी गई और वह ख़सिरद दुनिया वल-आख़िरत का मिस्ताक हुआ। (रौज़तुश शुहदा:150)

न खुदा ही मिला न विसाले सनम
न इधर के रहे न उधर के रहे



करबला का खूनी मंज़र

हज़रत इमाम हुसैन की मक्का शरीफ से खानगी

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

الحمد لله الذى خلق الارض والسموات والصلاة والسلام على صاحب الفضل والشفاعات وعلى الحسين ورفقائه الذين فازوا بالشهادات - اما بعد - فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ - وَلَسْبَلُونَكُمْ بِشَيْءٍ مِنَ الْخَوْفِ وَالْجُوعِ وَنَقْصٍ مِنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ الَّذِينَ إِذَا أَصَابَهُمْ مُصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ - صَدَقَ اللّٰهُ الْعَلِىُّ الْعَظِيمُ وَصَدَقَ رَسُولُهُ النَّبِىُّ الْكَرِيمُ وَنَحْنُ عَلَى ذَلِكَ لَمِنَ الشَّاهِدِينَ وَالشَّاكِرِينَ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ -

एक मर्तबा हम और आप सब लोग मिल कर मक्का के सरकार मदीना के ताजदार दो आलम के मुख्तार जनाब अहमदे मुज्तबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उन की आल व अस्हाब पर अकीदत व मुहब्बत के साथ दुरूदो-सलाम की डालियां पेश करें।

اللهم صل على سيدنا ومولانا محمد معدن الجود والكرم وعلى آله واصحابه واولادك وسلم -

अल्लाहुम्मा सल्लि अला सैय्दिना व मौलाना मुहम्मदिम् मअ्दनिल् जूदि वल्-करम व अला आलिही व अस्हाबिही व बारिक् व सल्लिम्।

हम्दो-सलात और आयते करीमा व दुरूद शरीफ के पढ़ने की बरकत हासिल करने के बाद हम आप हज़रात के सामने पहले एक नज़्म के चन्द अशआर पेश करते हैं, उन्हें बग़ौर समाजत फरमाएं।

जो जवां बेटे की मैय्थित पर न रोया वो हुसैन

जो दहेकती रेत के बिस्तर पर सोया वो हुसैन

जिस ने अपने खून से दुनिया को धोया वो हुसैन

जिसने सबकुछ खो के फिर भी कुछ न खोया वो हुसैन

मर्तबा इस्लाम का जिस ने दोबाला कर दिया

खून ने जिसके दो आलम में उजाला कर दिया

शेर के मानिन्द जो मक़तल में आया वो हुसैन
जो बहत्तर ज़ख्म खा कर मुस्कुराया वो हुसैन
राहे हक़ में जिस ने अपना सर कटाया वो हुसैन
करबला में जिस ने अपना घर लुटाया वो हुसैन

ज़ेरे खंजर जिस का सज़्दा अज़्मते इस्लाम है
जिस का हर तेवर रसूले पाक का पैग़ाम है
अल्लाह! अल्लाह राकिबे दोशे पयम्बर वो हुसैन
फातिमा को नूरे दीदा जाने हैदर वो हुसैन
अज़्मतो-इख़लास व कुर्बानी का पैकर वो हुसैन
करबला के गाज़ियों का मीरे लश्कर वह हुसैन

पचमे हक़ ता अबद जिस का सलामी हो गया
ज़िंदए जावेद जिस का नामे नामी हो गया
दीन की खातिर थी जिस की ज़िंदगी वो हुसैन
कट गई इस्लाम में जिस की ज़वानी वो हुसैन
खुल्द में हक़ ने की जिस की मेहमानी वो हुसैन
मिल गई जिस को हयाते जावेदानी वो हुसैन

नामे नामी जिस का लौहे दहर पर मरकूम है
फर्श से ता अर्श जिस की अज़्मतों की धूम है

اللهم صل على سيدنا ومولانا محمد وعلى آله واصحابه وبارك وسلم
अल्लाहुम्मा सल्लि अला सैय्दिना व मौलाना मुहम्मदिन व अला
आलिही व अस्ताबिही व बारिक् व सल्लिम् ।

इंसान के लिये जहां पर मरना या शहीद होना मुक़द्दर होता है,
मिन जानिबिल्लाह ऐसे हालात व अस्बाब पैदा होते हैं कि हजार
रुकावटों के बावजूद इंसान आखिरी वक़्त में उसी जगह पर जाने के
लिये मजबूर हो जाता है। सैयिदुश शुहदा हज़रत इमाम हुसैन
रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का करबला में शहीद होना अज़ल में मुक़द्दर
हो चुका था, उन के लिये ऐसे हालात पैदा हुए कि अब करबला की

तरफ जाना उन का ज़रूरी हो गया। हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ख़त के आने के बाद इमाम आली मक़ाम को कूफ़ियों की दरख्वास्त कबूल करने में कोई मअकूल उज़्र बाकी न रहा तो आप इराक़ जाने के लिये तैयार हो गए और सफ़र के अस्बाब दुरुस्त होने लगे।

जब मक्का वालों को आप की तैयारी का इल्म हुआ तो उन्होंने ने आप का इराक़ की तरफ़ जाना पसंद न किया। जलीलुल क़दर सहाबा हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, हज़रत जाबिर, हज़रत अबू सईद खुदरी और हज़रत अबू वाकिद लैसी वगैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम आप के आए और अर्ज किया कि आप कूफ़ा हरगिज़ न जाएं कि वहां के लोग दिरहम व दीनार के बन्दे हैं। उन्होंने ने आप के वालिद हज़रत अली और आप के भाई हज़रत हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा के साथ खुली हुई गुदारी और बेवफ़ाई की है, उन का हाकिम उन पर मुसल्लत है और उसी की हुकूमत काइम है तो जान लीजिये कि कूफ़ा वाले आप को जंगो-जिदाल के लिये बुला रहे हैं। हमें अदेशा है कि वह लोग आप को धोका देंगे, झुठलाएंगे और आप को बेयारो-मददगार छोड़ देंगे बल्कि हुकूमते वक़्त से मिल कर आप पर हम्ला करेंगे और बुलाने वाले ही आप के सब से बड़े दुश्मन साबित होंगे। हज़रत इमाम ने फरमाया कि मैं खुदा से खैर का तालिब हूं, देखिये क्या होता है? (तबरी:2/211)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा ने जब आप से सफ़रे इराक़ को मुल्लवी करने के लिये कहा तो आप ने फरमाया: حَدَّثَنِي أَبِي أَنَّ لِمَكَّةَ كِتَابًا بِهِ مَسْجِلٌ حُرْمَتُهَا فَمَا أَحَبُّ إِلَيَّ أَنْ أَكُونَ لَهَا ذَلِكَ الْكِتَابُ मैं ने अपने वालिदे गिरामी हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से हदीस सुनी है कि एक मेंढा मक्का मुअज़्ज़मा की हुर्मत को हलाल कर देगा तो मैं वह मेंढा नहीं बनना चाहता। (सवाईके मुहर्रिका:120)

और यह भी रिवायत है कि जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने इस सफ़र से रोकने के लिये इस्रार किया और कहा कि आप मस्जिदे

हराम में रहिये, मैं आप की मदद के लिये लोगों को जमा करूंगा तो आप ने फरमाया कि अगर एक बालिशत भर मैं इस मस्जिद के बाहर कल्ल किया जाऊं तो वल्लाह मैं इस से बेहतर समझता हूँ कि एक बालिशत भर मस्जिद के अन्दर कल्ल किया जाऊं। बखुदा अगर मैं हशरातुल अर्ज के किसी सूराख में भी छुपूंगा तो लोग मुझे वहां से भी निकाल लेंगे और जो सुलूक मेरे साथ करना चाहते हैं, करेंगे। (तबरी:2/213)

गरज कि बड़े-बड़े सहाबए किराम आप को इस सफर से रोकने के लिये बहुत इस्रार करते रहे और आखिर तक यही कोशिश करते रहे कि आप मक्का मोअज्जमा से तशरीफ न ले जाएं मगर उन की कोशिशें कार आमद न हुई यहां तक कि इमाम आली मकाम 3 ज़िल हिज्जा 60 हिजरी को अपने अहले बैत और मवाली व खुदाम कुल 82 नुफूस के साथ मक्का शरीफ से इराक के लिये रवाना हो गए।

बात अस्ल में यह थी कि आप को गिरफ्तार होने का अदेशा था और यह राज उस वक़्त खुला जब फरज़दक शाइर से आप की रास्ते में मुलाकात हुई और उस ने पूछा कि फर्ज़न्दे रसूल! हज के दिन बिल्कुल करीब आ गए तो इतनी जल्दी आप ने किस लिये फरमाई कि हज भी न हो सका? इमाम ने जवाब दिया कि अगर मैं इतनी जल्दी न करता तो वहीं गिरफ्तार कर लिया जाता। (तबरी:2/214)

हज़रत के इस जवाब से मालूम हो गया कि अय्यामे हज करीब होने के बा वजूद आप मक्का मोअज्जमा से क्यों निकल पड़े। और यह भी वाजेह हो गया कि सहाबए किराम के इस्रार को कबूल न फरमाने का सबब क्या था, ज़ाहिरी वजह तो वही थी जो हज़रत इमाम ने फरज़दक से बयान फरमाई और हकीकत में शहादत की कशिश आप को करबला की तरफ खींचे लिये जा रही थी। आप का हाल उस वक़्त वही था जो किसी शाइर ने कहा है:

दो कदम भी नहीं चलने की है ताक़त मुझ में
इश्क़ खींचे लिये जाता है मैं क्या जाता हूँ

करबला जाने वाले अहले बैत

इस सफर में हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के तीन साहिब जादे आप के हम्राह थे। हज़रत अली औसत जिन को इमाम जैनुल आबिदीन कहते हैं। यह हज़रत शहर बानू के बतन से थे, उस वक़्त उन की उम्र 22 साल थी और बीमार थे। आप के दूसरे साहिब जादे अली अकबर थे जो यज़ला बिन्ते अबी मुरह के शिकम से हैं, उन की उम्र 18 बरस थी, यह करबला में शहीद हुए। इमाम आली मक़ाम के तीसरे फ़र्ज़न्द जिन्हें अली असगर कहते हैं, इनकी वालिदा कबीलए बनी कुज़ाआ से थीं। यह शीरख़्वार बच्चे थे। आप की एक साहिब जादी हज़रत सकीना भी हम्राह थीं जिन की निस्बत हज़रत कासिम के साथ हुई थी, उस वक़्त उनकी उम्र सात साल की थी। इनकी वालिदा इमरउल कैस इब्ने अदी की दुख़तर कबीलए बनी कलब से थीं। इनका अक़द हज़रत मुसअब बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के साथ हुआ। और करबला में हज़रत कासिम के साथ इनके निकाह होने की जो रिवायत मशहूर है वह ग़लत है। उन के साथ सिर्फ़ आप की निस्बत हुई थी, अक़द नहीं हुआ था।

और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की दो बीवियां आप के हम्राह थीं, एक शहर बानू दूसरी हज़रत अली असगर की वालिदा।

और हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के चारों नौजवान साहिब जादे हज़रत कासिम, हज़रत अब्दुल्लाह, हज़रत उमर और हज़रत अबू बकर इमाम आली मक़ाम के हम्राह थे जोकि करबला में शहीद हुए।

और हज़रत अली कर्मल्लाहु तआला वज्हेहुल करीम के पांच फ़र्ज़न्द हज़रत अब्बास बिन अली, हज़रत उस्मान बिन अली, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अली, हज़रत मुहम्मद बिन अली और हज़रत जाफ़र बिन अली हज़रत इमाम के हम्राह थे, सब ने शहादत पाई।

और हज़रत अक़ील के फ़र्जन्दों में से हज़रत मुस्लिम तो हज़रत इमाम के करबला पहुँचने से पहले ही कूफ़ा में शहीद हो चुके थे और तीन फ़र्जन्द हज़रत अब्दुल्लाह, हज़रत अब्दुर रहमान और हज़रत जाफ़र इमाम के हम्राह करबला हाज़िर होकर शहीद हुए।

और हज़रत जाफ़र तय्यार के दो पोते हज़रत मुहम्मद व हज़रत औन हज़रत इमाम के हम्राह हाज़िर होकर शहीद हुए। इनके वालिद का नाम अब्दुल्लाह बिन जाफ़र है। और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हकीकी भांजे हैं। इन की वालिदा हज़रत ज़ैनब, हज़रत इमाम की हकीकी बहन हैं।

साहिब ज़ादगाने अहले बैत में से कुल 17 हज़रात इमाम आली मक़ाम के हम्राह मर्तबए शहादत से सरफ़राज़ हुए और हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन, उमर बिन हसन, मुहम्मद बिन उमर बिन अली और दूसरे कम उम्र साहिब ज़ादे कैदी बनाए गए। (सवानेहे करबला)

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जब मक्का शरीफ से बाहर निकले तो हाकिमे मक्का अम्र बिन सईद के हुक्म से एक फौजी दस्ते ने शहर से बाहर आके आप को रोका और चाहा कि वापस चलें। हज़रत इमाम ने वापस होने से इनकार कर किया, नतीजा यह हुआ कि दोनों तरफ के लोगों में मार-पीट हुई, आप के साथी बड़ी बहादुरों से फौजी दस्ते की मुज़ाहमत को रोकने पर तैयार थे इस लिये उन लोगों को हटने पर मजबूर होना पड़ा और काफ़िला आगे खाना हो गया।

(तबरी:2/312)

जब आप मक़ामे सफ़ाह तक पहुँचे तो फरज़दक़ शाइर से मुलाकात हुए, आप ने उस से कूफ़ा वालों का हाल दरियाफ़्त फरमाया, कहा कि उन के दिल आप की तरफ हैं, लेकिन उन की तलवारें बनी उमैया के साथ होंगी। आप ने फरमाया तुम सच कहते हो लेकिन हर बात अल्लाह के हाथ में है वह जो चाहता है करता है। अगर अल्लाह ने हमारी ख़्वाहिशें के मुताबिक़ किया तो हम उस का शुक्र अदा करेंगे। और अगर क़ज़ाए इलाही हमारे मतलब के खिलाफ़ हुई तो इंसान के

लिये यही क्या कम है कि उस की नियत में खुत्तूस और उस के दिल में पारसाई हो। (तबरी:2/214)

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फरज़दक से गुप्तगू करने के बाद जब आगे बढ़े तो आप के भांजे हज़रत मुहम्मद व औन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा रास्ते में आकर आप से मिले और अपने वालिदे गिरामी हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफर तैय्यार रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का ख़त आप की ख़िदमत में पेश किया, उस में लिखा था कि मैं आप को खुदा का वास्ता देता हूँ कि आप मेरा ख़त देखते ही वापस चले आइये, इस लिये कि जहाँ आप जा रहे हैं वहाँ आप की हलाकत और आप के अहले बैत के तबाह होने का अंदेशा है, अगर खुदा नाख़्वास्ता आप हलाक हो गए तो दुनिया में अंधेरा छा जाएगा। आप हिदायत वालों के रहनुमा और मुसलमानों की उम्मीदों का मरकज़ हैं। सफर में जल्दी न कीजिये, इस ख़त के पीछे मैं भी आ रहा हूँ।

(तबरी:2/216)

साहिब ज़ादों के बदस्त (हाथों) ख़त रवाना करने के बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफर हाकिमे मक्का अम्र बिन सईद से जाकर मिले और उस से गुप्तगू करके इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये अमान का परवाना हासिल किया और हज़रत के इत्मीनान के लिये अम्र बिन सईद के भाई यहया बिन सईद को साथ में लेकर आप के पास पहुंचे, यहया ने ख़त पेश किया और आप ने उसे पढ़ा मगर वापस आने से इनकार किया, उन लोगों ने कहा आख़िर क्या बात है? आप इराक़ जाने पर इस कदर बज़िद क्यों हैं? हज़रत ने फरमाया मैं ने रसूलुल्लाह संल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत की है, आप ने उस ख़्वाब में मुझे जो हुक्म फरमाया है, मैं उसे ज़रूर पूरा करूंगा, चाहे उस में हमारा नुक़सान हो या फाइदा। उन लोगों ने कहा वह ख़्वाब क्या है? आप ने फरमाया वह ख़्वाब न अब तक मैं ने किसी से बयान किया है और न बयान करूंगा यहां तक कि अपने खुदा से जा मिलूं।

(तबरी:2/216)

छूट जाए अगर दौलते कौनैन तो क्या गम

छुटे न मगर हाथ से दामाने मुहम्मद

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम

इमाम आली मक़ाम ने अम्र बिन सईद की तहरीर की जवाब लिख कर उन के सुपुर्द किया। हज़रत अब्दुल्लाह कुछ मजबूरियों के सबब इस सफ़र में आप के साथ नहीं जा सकते थे, उन्होंने ने अपने साहिब ज़ादगान औन व मुहम्मद को आप के साथ रहने की हिदायत की और खुद वापस हो गए।

हज़रत कैस की शहादत

जब आप मक़ामे हाज़िर में पहुंचे तो अपने एक मुख़्तस कैसे बिन मसूहर सैदावी को ख़त देकर कूफ़ा ख़ाना फरमाया। ख़त का मज़मून यह था: हम्दे इलाही और सलाम के बाद मालूम हो कि मुस्लिम बिन अक़ील के ख़त से तुम लोगों के हालात की दुरुस्तगी और मेरी मदद पर तुम सब के मुत्तफ़िक़ होने का इल्म हुआ। मैं खुदाए तआला से दुआ करता हूँ कि हम पर ऐहसान करे और तुम लोगों को इस बात पर अज़े अज़ीम अता फरमाए। मैं मक्का मोअज़्ज़मा से ख़ाना हो चुका हूँ, जब मेरा ख़त पहुंचे तो अपना इन्तिज़ाम तुम लोग जल्दी दुरुस्त कर लेना, इस लिये कि मैं चन्द ही रोज़ में इन्शा अल्लाह तुम्हारे यहां पहुंचने वाला हूँ। वस्सलाम (तबरी: 2/223)

हज़रत कैस जब इमाम का ख़त लेकर क़ादसिया पहुंचे तो हसीन बिन उमैर जो इब्ने ज़ियाद के हुक्म से एक फौज के साथ पहले से नाका बन्द किये हुए था, उस ने कैस को गिरिफ़्तार करके इब्ने ज़ियाद के पास कूफ़ा भेज दिया, इब्ने ज़ियाद ने कहा अगर तुम अपनी जान बचाना चाहते हो तो गवर्नर हाउस की छत पर चढ़ कर हुसैन बिन अली के खिलाफ़ तक्रीर करो और उन को बुरा भला कहो, हज़रत कैस छत पर चढ़ गए और हम्दो-सलात के बाद फरमाया कि ऐ लोगो! रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के प्यारे नवासे हज़रत

हुसैन बिन अली इस वक़्त खल्फ़े खुदा में सब से बेहतरीन शख्स हैं, मैं उन्हीं का भेजा हुआ तुम लोगों के पास आया हूँ, तुम्हारा फर्ज़ है कि इन की मदद के लिये कदम आगे बढ़ाओ और इन की आवाज़ पर लब्बैक कहो। फिर हज़रत कैस ने इब्ने ज़ियाद और उस के बाप को बुरा भला कहा और हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के लिये दुआए ख़ैर की। इब्ने ज़ियाद आप की इस तक्रीर को सुन कर आग बगोला हो गया और हुक्म दिया कि इन्हें छत के ऊपर से ज़मीन पर गिरा दो कि इसके टुकड़े-टुकड़े हो जाएं, बेरहमों उन्हें नीचे गिरा दिया, जिस से उनकी हड्डियां चक्का चूर हो गई और वह इन्तेकाल कर गए। इस तरह हज़रत इमाम का यह सच्चा मुहिब आप पर कुर्बान हो गया। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु (तबरी:2/224)

ब्रे रहमत उनकी मरक़द पर गुहर बारी करे

हश्श में शाने करीमी नाज़ बरदारी करे

जब आप इस मंजिल से आगे बढ़े, एक कुएं आप की मुलाकात अब्दुल्लाह बिन मुतीअ से हुई, उन्हीं ने अर्ज़ किया या इब्ने रसूलिल्लाह! मेरे मां-बाप आप पर फिदा हों, आप इधर कैसे तशरीफ लाए? हज़रत इमाम ने अपने आने की वजह बयान फरमाई, उन्हीं ने कहा मैं आप को खुदा की कसम देता हूँ कि आप हुर्मते इस्लाम, हुर्मते रसूल और हुर्मते अरब को जाएं न कीजिये, आप कूफा हरगिज़ न जाइये, वहां आप यकीनन शहीद कर दिये जायेंगे। हज़रत ने फरमाया: **لَنْ يُصِيبَنَا** हमें वही मुसीबत पहुंच सकती है जो खुदाए तआला ने हमारे लिये मुक़द्दर फरमा दी है। (पारा:10, रुकूअ:13)

हज़रत जुहैर से मुलाकात

हज़रत इमाम जब आगे बढ़े और मक़ामे ज़रवद में आप ने किया म फरमाया, वहां कुएं के पास एक खेमा नज़र आया, मालूम हुआ कि यह जुहैर बिन कैन बजल्ली का खेमा है जो हज़ से फारिग होकर कूफा जा रहे हैं, शुरू में उन को अहले बैते रिसालत से कोई अकीदत न थी,

आप ने उनके पास पैग़ाम भेजा कि मैं तुम से मिलना चाहता हूँ, उन्होंने ने मिलने से इनकार करना चाहा, तो उन की बीवी ने कहा वाह! क्या ग़ज़ब की बात है कि फ़र्ज़न्दे रसूल आप को बुलाएं और आप उनसे मिलने के लिये न जाएं। बीवी की बात से मुतअस्सिर हो कर वह हज़रत के पास गए और बहुत जल्द खुश-खुश वापस होकर अपना खेमा और कुल साज़ व सामान आप की तरफ भेजवा दिया। उस के बाद अपनी बीवी को तलाक़ दे दी और उस से कहा कि अपने भाई के साथ माइके चली जाओ, फिर अपने साथियों से कहा, तुम में से जो मेरे साथ रहना चाहे रहे और जो चाहे चला जाए और यह समझ कर जाए कि यह मेरी आखिरी मुलाकात है। सब हैरान हो गए कि आखिर माजरा क्या है? आप ने कहा मैं तुम लोगों से बयान करता हूँ सुनो! जंगे बलंजर में खुदाए तआला ने हम को फतह अता फरमाई और बहुत सामाने ग़नीमत हाथ आया तो हज़रत सलमान फारसी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हम ये पूछा कि फतह और माले ग़नीमत से तुम को खुशी हुई? हम ने कहा हां बहुत खुशी हुई, उन्होंने ने फरमाया एक वक़्त आएगा तुम रसूले अक़रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के घर के जवानों के सरदार (हज़रत हुसैन) से मिलोगे और उन की मदद में उन के दुश्मनों से जंग करोगे, तो इस फतह और माले ग़नीमत से ज़्यादा खुशी हासिल करोगे। लिहाज़ा मैं तुम लोगों को अल्लाह के सुपुर्द करता हूँ।

फिर हज़रत जुहैर इमाम आली मक़ाम के साथ रहे यहां तक कि करबला आप के दुश्मनों से लड़ कर शहादत से सरफराज़ हुए।

(तबरी:2/225)

शहादते मुस्लिम की ख़बर

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को अभी तक कूफ़ा के हालात मालूम न हुए थे। जब आप मक़ामे सालबिया में पहुंचे तो बुक़ैर बिन शोबा असदी के ज़रिये आप को मालूम हुआ कि मुस्लिम बिन अक़ील और हानी बिन उर्बा दोनों शहीद कर दिये गए हैं और उन

की लाशों के पांव में रस्सियां बांध कर बाजारों में घसीटा गया। इस दर्दनाक खबर को सुनकर आप ने बार-बार *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन, रमतुल्लाहि अलैहिमा*। पढ़ा।

अब्दुल्लाह बिन सुलैम और मुजरी बिन मशअल असदी जो हज से फारिग होकर मकामे जरवद में हुसैनी काफिला से आकर मिले थे, उन्होंने ने इमाम आली मकाम से कहा कि खुदा के वास्ते आप अपनी और अपने घर भर की जान खतरे में न डालें, यहीं से वापस हो जाएं, इस लिये कि कूफा में आप का न कोई दोस्त है और न मददगार बल्कि हमें अदेशा है कि जो लोग आप को बुलाने वाले हैं वही आप के दुश्मन हो जाएंगे, यह सुनकर हजरत मुस्लिम के तीनों भाई खड़े हो गए और जोश में आकर कहा खुदा की कसम हम वापस नहीं होंगे, जब तक मुस्लिम के खून का बदला नहीं ले लेंगे और यह हम भी उनकी तरह कत्ल नहीं हो जायेंगे। हजरत ने असदियों की तरफ देख कर फरमाया इन लोगों के बाद जिंदगी में कुछ लुत्फ नहीं। आपके साथियों में से बाज़ लोगों ने कहा आप की और मुस्लिम की बराबरी नहीं। जब आप कूफा में पहुंच जायेंगे तो वहां के सब लोग आप की मदद के लिये दौड़ पड़ेंगे। हजरत ने इस ख्याल की ताईद नहीं फरमाई बल्कि खामोश रहे। (तबरी: 2/227)

फिर काफिला आगे बढ़ता रहा और अभी तक सब लोगों को हजरत मुस्लिम की शहादत की खबर न थी, जब आप मकामे जंबाला में पहुंचे तो उसी जग पर आप ने पूरे काफिला वालों से फरमाया कि हमें यह दर्द नाक खबर मिली है कि मुस्लिम बिन अकील शहीद कर दिये गए और हमारी इताअत के दावेदारों ने हमें छोड़ दिया। लिहाज़ा जो शख्स तुम में से वापस जाना चाहे वह चला जाए, हमारी तरफ से उस पर कोई इल्ज़ाम नहीं।

बहुत से अरब जो रास्ते में आपके साथ हो गए थे, इस ऐलान के सुनते ही तक्रीबन सब दाहिने पांव खाना हो गए और ज्यादा तर वही लोग बाकी रह गए जो मदीना तैयिबा से आपके साथ आए थे। (तबरी: 2/227)

हुर की आमद

मुहर्रम 60 हिजरी की पहली तारीख को जबकि आप कोहे जी हशम के दामन में पहुंच कर खैमा-ज़न हुए, हुर बिन यज़ीद तमीमी एक हजार लश्कर के साथ आप को गिरिफ्तार करने के लिये आ पहुंचा, दोपहर का वक़्त था, दुश्मन के घोड़े और सारे आदमी बहुत प्यासे थे, हज़रत इमाम हुसैन ने सब को पानी पिलवाया, ग़ालिब इस हमदर्दी के सबब हुर आप से कुछ कहने की ज़ुर्त न कर सका, यहां तक कि जब जुहर की नमाज़ का वक़्त आ गया और अज़ान पढ़ी गई तो आप ने हम्दो-सलात के बाद हुर और उस की फौज को मुखातब करते हुए इरशाद फरमाया ऐ लोगो! मैं खुदाए तआला की बारगाह में और तुम्हारे सामने अपनी सफाई पेश करता हूं कि मैं उस वक़्त तक तुम्हारी तरफ नहीं आया जब तक कि तुम्हारे खुतूत मेरे पास नहीं गए कि आप हमारी तरफ आइये, हमारा कोई इमाम नहीं है, शायद आप के सबब हम लोगों को खुदाए तआला हिदायत पर जमा फरमा दे, अब अगर तुम लोग अपनी बात पर काइम हो तो मैं आ ही गया हूं, तुम मुझ से अहेद करो ताकि मुझे इत्मीनान हो जाए तो मैं तुम्हारे शहर में चलूं। और अगर मेरा आना पसंद नहीं करते हो तो मैं जहां से आया हूं वहीं वापस चला जाऊंगा।

आप की इस तक्रीर के बाद ख़ामोशी रही, किसी ने कोई जवाब नहीं दिया, आप ने हुर से पूछा तुम हमारे साथ नमाज़ पढ़ोगे या अलग पढ़ना चाहते हो? हुर ने कहा आप नमाज़ पढ़ाइये हम सब आप के पीछे पढ़ेंगे। चुनांचे ऐसा ही हुआ, दोनों तरफ के लोगों ने हज़रत के पीछे नमाज़ आद की, उसके बाद आप अपने खेमे में तशरीफ ले गए।

(तबरी:2/230)

जब अस्फ़ का वक़्त हुआ तो हज़रत इमाम आली मक़ाम ने अपने साथियों को हुक्म दिया कि खाना होने के लिये सब तैयार हो जाएं। फिर खेमे से बाहर तशरीफ लाए और उस वक़्त भी दोनों गिरोहों ने

आप के पीछे नमाज़ पढ़ी, नमाज़ के बाद फिर आप ने मज्मू' की तरफ रुख किया और हम्दो-सलात के बाद फरमाया ऐ लोगो! अगर तुम तक्वा इख्तियार करोगे और हक वालों का हक पहचानोगे तो अल्लाह तआला की खुश्नूदी हासिल करोगे। जो तुम पर जुल्म व ज़्यादती के साथ हुक्म त करते हैं, हम अहले बैते नुबुव्वत उन के मुकाबले में खिलाफत के ज़्यादा मुस्तहिक् हैं, लेकिन अगर तुम लोग हम को पसंद नहीं करते हो और हमारे हक को नहीं पहचानते हो और तुम्हारी राय उस के खिलाफ हो गई जो तुम्हारे खुतूत से ज़ाहिर है तो मैं वापस चला जाऊंगा। हुर ने कहा बखुदा हमें नहीं मालूम कि वह कैसे खुतूत हैं जिन का आप जिक्र फरमा रहे हैं, आप ने खुतूत के थैले को मंगा कर सब के सामने उलट दिया, हुर ने कहा कि हम उन लोगों में से नहीं हैं जिन्होंने आप को यह खुतूत लिखे हैं। हम को तो यह हुक्म दिया गया है कि जहां भी आप मिल जाएं हम आप का साथ न छोड़ें यहां तक कि इब्ने ज़ियाद के पास पहुंचा दें। आप ने फरमाया इस मतलब के हासिल करने से तेरे लिये मर जाना ज़्यादा आसान है, फिर आप ने अपने साथियों को सवार होकर लौटने का हुक्म दिया, हुर ने वापस होने से रोका, आप ने फरमाया तुझ पर तेरी मां रोए, आखिर तेरा मतलब क्या है? हुर ने कहा खुदा की कसम अगर आप के अलावा कोई दूसरा अरब यह बात कहता तो मैं उस की मां को भी ऐसे ही कहता लेकिन आप की वालिदा माजिदा का जिक्र मैं भलाई के साथ ही करूंगा। इमाम ने फरमाया तू क्या चाहता है? उस ने कहा मैं आप को इब्ने ज़ियाद के पास ले जाना चाहता हूं। आप ने फरमाया खुदा की कसम यह नहीं होगा, उस ने कहा खुदा की कसम मैं भी आप को नहीं छोड़ूंगा, इसी तरह तकरार होती रही, आखिर में हुर ने कहा मुझे आप से लड़ने का हुक्म नहीं दिया गया है, मुझे तो सिर्फ यह हुक्म है कि मैं आप के साथ-साथ रहूं यहां तक कि आप कूफा पहुंच जाएं। अगर आप कूफा जाने से इनकार करते हैं तो जब तक कि मैं इब्ने ज़ियाद की राय न मालूम कर लूं, आप ऐसा रास्ता इख्तियार करें जो न कूफा

की तरफ जाता हो और न मदीना की तरफ। आप को उस की यह बात माकूल मालूम हुई, आप कादसिया और अजीब की राह से बाएं मुड़ कर चलने लगे, साथ-साथ हुर भी चलता रहा। (तबरी:2/232)

बाप और बेटे की गुफ्तगू

जब इमाम का काफिला कसर बनी मक़ातिल पहुंचा तो आप ने वहीं कियाम फरमाया, थोड़ी दूर पर हुर भी ठहरा, आधी रात के बाद आप ने साथियों से फरमाया कि पानी भर लो और चलो अभी थोड़ी देर चले थे कि ज़रा आंख लग गई, फिर चौंक गए और तीन बार फरमाया *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन*, *वल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन*, यह सुनकर आप के साहिब ज़ादे हज़रत इमाम जैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु आप के करीब आए और अर्ज किया अब्बा जान! इस वक़्त यह कलिमात ज़बान पर कैसे जारी हुए? फरमाया, अभी मेरी आंख लग गई थी, मैं ने देखा एक सवार कह रहा है कि यह लोग रास्ते पर चल रहे हैं और मौत इन की तरफ बढ़ रही है, मैं समझता हूं कि इस तरह हम को मौत की इत्तिलाअ दी गई है। साहिब ज़ादे ने कहा खुदाए तआला आप को हर बला से महफूज़ रखे, क्या हम हक़ पर नहीं हैं? आप ने फरमाया उस खुदाए जुल जलाल की क़सम जिस की तरफ सबको लौट कर जाना है, हम हक़ पर हैं। बहादुर साहिब ज़ादे ने कहा जब हम हक़ पर हैं तो ऐसी मौत की हमें कोई परवाह नहीं, आप ने फरमाया खुदाए तआला तुम्हें वह जज़ाए खैर अता फरमाए जो किसी बेटे को उस के बाप की तरफ से मिल सकती हो।

(तबरी:2/237)

जब आप का काफिला नैनवा में पहुंचा तो कूफा की तरफ से एक सवार आता दिखाई दिया, सब ठहर कर उस का इन्तिज़ार करने लगे, वह आया तो इमाम आली मक़ाम की तरफ मुतवज्जह नहीं हुआ, हुर को सलाम किया और उस को इब्ने ज़ियाद का खत दिया, जिस में लिखा था कि हुसैन को आगे बढ़ने से रोक दो और उन्हें चटियल मैदान

में उतरने पर मजबूर करो, जहां कोई पनाह की जगह न हो और न पानी हो, मैं ने कासिद को हुक्म दिया है कि वह तुम्हारे साथ रहे ताकि तुम्हारी कार गुजारी की हमें इत्तिलाअ दे और तुम से अलग न हो जब तक कि हमारे हुक्म पर अमल न हो जाए। हुर ने इमाम और उन के साथियों को खत के मजमून से मुत्तलअ किया, हज़रत ने फरमाया अच्छा हम को ज़रा आगे बढ़ कर सामने वाले गांव गाज़रिया या शफिय्या में ठहरने दो, हुर ने कहा हमें तो चटियल मैदान में ठहराने का हुक्म दिया गया है और निगरां हमारे साथ हैं, इब्ने ज़ियाद को हमारे तरजे अमल की इत्तिलाअ कर देगा। हुर के इस जवाब पर हज़रत इमाम के साथियों में जोश पैदा हो गया, हज़रत जुहैर बिन कीन ने कहा या इब्न रसूलिल्लाह! इन से जंग कर लेना हमारे लिये आसान है, बनिस्बत उन लोगों के जो इन के बाद आयेंगे, इस लिये कि वह इतने होंगे कि हम को उन से मुकाबले की ताकत न होगी। मगर हज़रत ने फरमाया हम अपनी तरफ से जंग की इब्तिदा नहीं करेंगे। फिर आप ने हुर से फरमाया अच्छा कुछ तो चलने दो, हुर खामोश रहा और आप बायीं तरफ चल पड़े।

जमीने करबला

अभी आप थोड़ा सा चले थे कि हुर के सिपाहियों ने आ कर रोक दिया और कहा बस यहीं उतर पड़िये, फुरात यहां से दूर नहीं है, आप ने पूछा इस जगह का नाम क्या है? लोगों ने कहा इस का नाम कर्बला है, इस लफज़ को सुनते ही आप घोड़े से उतर पड़े और फरमाया: **هَلِیْهِمْ** **كَرْبَلَاءُ مَوْضِعُ كَرْبٍ وَبَلَاءُ هَذَا مَسَاحُ رِجَالٍ وَمَحْطُ رِحَالٍ وَمَقْلُ رِحَالٍ** यह कर्बला है जो मक़ामे कर्ब व बला है, यही हमारे ऊंटों के बैठने की जगह है, यहीं हमारे माल व अस्बाब उतरेंगे और इसी मक़ाम पर हमारे साथ क़त्ल किये जाएंगे। यह मोहर्रम 61 हिजरी की दूसरी तारीख पंज शं'बा (जुमेरात) का दिन था।

(नूरुल अब्सार:117)

अब हुर ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को कर्बला में उतरने पर मजबूर कर दिया तो उस ने इब्ने ज़ियाद को इस

बात की इत्तिलाअ दी, यह वक्त वह था जबकि ईरान में बगावत हो गई थी जिस को फरव करने (दबाने) के लिये अम्र बिन सअद को चार हजार फौज का सरदार बनाया गया था और रैय की हुकूमत का परवाना लिख कर दिया गया था, इब्ने सअद अपनी फौज के साथ निकल कर अभी थोड़ी ही दूर पहुंचा था कि इब्ने ज़ियाद ने उसे वापस बुला कर हुक्म दिया कि पहले हुसैन की मोहिम सर करो, उस के बाद ईरान की तरफ रवाना हो। अम्र हज़रत सअद बिन वक्कास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो सहाबिए रसूल और अशरए मुबश्शरा में से हैं उनका बेटा था, वह नवासए रसूल हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की फज़ीलत से खूब वाकिफ था, इस लिये उस ने इब्ने ज़ियाद से कहा मुझे इस अम्र के लिये न भेजें, इब्ने ज़ियाद ने कहा अगर हुसैन के मुकाबले के लिये नहीं जाते हो तो रैय की हुकूमत से दस्तबरदार हो जाओ, इब्ने सअद ने इस मामले पर गौर करने के लिये एक दिन की मोहलत ली। फिर आखिर दुनियवी हुकूमत के लालच में आ कर इमाम आली मक़ाम से मुकाबले के लिये तैयार हो गया और वही चार हजार की फौज जो मुल्के ईरान जाने के लिये तैयार थी, उन्हें साथ लेकर तीसरी मुहर्रम को कर्बला पहुंच गया और फिर बराबर कुमक (मदद) पहुंचती रही यहां तक कि इब्ने सअद के पास 22 हजार का लश्कर जमा हो गया।

कितनी हैरत की बात है कि हज़रत इमाम अला जदिही व अलैहिस् सलाम के साथ कुल 82 आदमी हैं जिन में बीबियां और बच्चे भी हैं और फिर जंग के इरादे से भी नहीं आए थे, इसी लिये लड़ाई के सामान भी नहीं रखते थे, मगर अहले बैते नुबुव्वत की शुजाअत और बहादुरी का इब्ने ज़ियाद के दिल पर इतना असर था कि उन के मुकाबले के लिये 22 हजार का लश्करे जर्जर भेज दिया। दो गुनी, चौ गुनी, दस गुनी तो क्या सौ गुनी तादाद को भी काफी नहीं समझा। कूफा के तमाम काबिले जंग अपराद को कर्बला में भेज दिया, इस के बा वजूद लोगों के दिल खौफ ज़दा हैं और जंग आजमा दिलावरों के

हौसले पस्त हैं, आखिर मजबूरन उन को यह फैसला करना पड़ा कि लश्करे इमाम पर पानी बन्द कर दिया जाए, तब उन का मुकाबला किया जा सकेगा। चुनांचे इब्ने सअद ने अम्र बिन हज्जाज को पांच सौ सवारों के एक दस्ते के साथ दरियाए फुरात पर मुकर्रर कर दिया ताकि इमाम और उन के साथी पानी की एक बूंद न ले सकें। यह वाकिआ हज़रत इमाम अला जदिही अलैहिस्सलाम के शहीद होने से तीन दिन पहले का है। (तबरी:2/241)

इब्ने सअद ने हज़रत इमाम के आदमी भेजा कि इन से पूछो वह यहां क्यों आए हैं और क्या चाहते हैं? आप ने जवाब दिया कि तुम्हारे शहर कूफा के लोगों ने खुतूत लिख कर मुझे बुलाया है, अब अगर मेरा आना पसंद नहीं है तो मैं वापस चला जाऊंगा। इब्ने सअद ने अपना सवाल और हज़रत का जवाब लिख कर इब्ने ज़ियाद को भेज दिया, उस ने इब्ने सअद को जवाब में लिखा कि तुम हुसैन और उन के तमाम साथियों से कहो कि वह यज़ीद की बैअत करें, अगर वह बैअत कर लेंगे तो उस के बाद हम जो मुनासिब समझेंगे करेंगे, इब्ने सअद का जब यह ख़त मिला तो उस ने कहा कि मैं समझ गया इब्ने ज़ियाद का अमन व आफियत मनज़ूर नहीं।

इमाम और इब्ने सअद की मुलाक़ात

हज़रत इमाम अला जदिही व अलैहिस्सलाम ने इब्ने सअद को पैग़ाम भेजा कि आज रात में हम तुम से मिलना चाहते हैं, इब्ने सअद ने यह बात मान ली और रात के वक़्त बीस सवारों के साथ दोनों लश्करों के दरमियान आया, आप भी बीस सवारों के साथ तशरीफ ले गए, फिर दोनों ने अपने-अपने साथियों को अलाहेदा कर दिया और तन्हाई में देर तक गुफ्तुगू करते रहे, आखिर में हज़रत इमाम ने फरमाया कि मैं तीन बातें पेश करता हूँ, इन में से जिसे चाहो मेरे लिए मनज़ूर कर लो।

1- जहां से मैं आया हूँ वहीं मुझे वापस चले जाने दो।

2- मुझे किसी सरहदी मक़ाम पर ले चलो, मैं वहीं रह कर वक़्त गुज़ार लूंगा।

3- मुझ को सीधा यज़ीद के पास दमिश्क़ की तरफ़ जाने दो, इत्मीनान के लिये तुम भी मेरे पीछे-पीछे चल सकते हो, मैं यज़ीद के पास जा कर उस से बराहे रास्त अपना मामला तय कर लूंगा जैसे कि मेरे हज़रते हसन ने अमीरे मुआविया से तय किया था।

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का रवैया इतना नर्म और सुलझा हुआ था कि इब्ने सअद ने इक़रार किया आप सुलह के रास्ते पर हैं, उस ने बहुत खुश होकर इब्ने ज़ियाद को लिखा कि खुदाए तआला ने आग का शोअ्ला बुझा दिया और इत्तिफाक़ की सूरत पैदा फरमा दी और उम्मत के मामले को सुलझा दिया। फिर हज़रत इमाम की पेश की हुई तीनों बातें तहरीर कीं और आखिर में अपनी राय भी लिखी कि अब इख़िताफ़ की कोई वजह नहीं है और अब इस मामले को ख़त्म होना चाहिये। इब्ने ज़ियाद ने ख़त पढ़ कर कहा कि यह तहरीर ऐसे शख्स की है जो अपने अमीर का ख़ैरख्वाह और अपनी क़ौम का शफीक़ है। अच्छा मैं ने मनज़ूर कर लिया। यह सुन कर बद बख़्त शिम्र ज़िल जोशन उठ खड़ा हुआ और कहा क्या आप यह बात उनकी क़बूल करते हैं जबकि वह आप की ज़मीन पर उतरे हुए हैं और आप के पहलू में हैं। वल्लाह अगर वह आप की इताअत के बग़ैर यहां से चले गए तो दुव्वत व ग़लबा उन के लिये होगा और आजिज़ी और कमज़ोरी आप के लिये। मेरी राय में उन की ख्वाहिश कभी नहीं मनज़ूर करनी चाहिये इस लिये कि यह बहुत बड़ी ज़िल्लत और कमज़ोरी की निशानी है। होना यह चाहिये कि वह और उन के तमाम साथी आप के हुक्म पर सर झुका दें, फिर अगर आप उन्हें सज़ा दें तो आप को इसका हक़ है। और अगर माफ़ कर दें तो इस का भी इख़्तियार है। रही इब्ने सअद की बात तो खुदा की क़सम मुझे तो यह मालूम हुआ है कि हुसैन और वह रात-रात भर बैठे बातें किया करते हैं।

शिम्र ख़बीस की इस फ़िल्ता परवर तक़रीर से इब्ने ज़ियाद की राय

बदल गई, कहा तुम ने बेहतरीन मशवरा दिया है और फिर इब्ने सअद को लिखा कि मैं ने तुम्हें इस लिये नहीं भेजा है कि तुम हुसैन के बचाने की फिक्र करो और सिफारिशी बन कर उन की सलामती चाहो। देखो अगर हुसैन और उन के तमाम साथी मेरे हुक्म पर सर झुका दें तो उन को मेरे पास पहुंचा दो और अगर न मानें तो सब के सर काट कर मेरे पास भेज दो और हुसैन की लाश पर घोड़े दौड़ा कर रौन्द डालो इस लिये कि वह इसी के मुस्तहिक हैं। अगर तुम्हें यह मनज़ूर न हो तो हमारा लश्कर शिमेर के हवाले कर दो, वह हमारे हुक्म पर पूरा-पूरा अमल करेगा। यह खत उस ने शिमेर के सुपुर्द किया और ज़बानी कह दिया कि अगर इब्ने सअद मेरे हुक्म पर अमल न करे तो पहले तुम उस का सर काट कर मेरे पास भेज देना। (तबरी:2/244)

इब्ने सअद ने जब यह खत पढ़ा तो शिमेर से कहा कम बख्त तुम ने यह क्या किया? खुदा तुझे गारत करे, तू मेरे पास यह क्या लाया है? खुदा की कसम मैं समझता हूँ कि तू ने ही इब्ने ज़ियाद को मेरे मशवरे पर अमल करने से रोक दिया और इस बात का बिगाड़ दिया जिस के बनने की उम्मीद थी। खुदा की कसम हुसैन कभी इब्ने ज़ियाद के सामने सर नहीं झुका सकते। शिमेर ने कहा इन बातों को छोड़ो और यह बताओ कि दुश्मन को क़त्ल करोगे या लश्कर मेरे सुपुर्द करोगे?

इब्ने सअद जो दुनिया पर जान देने वाला और बद बख्ते अज़ली था उस ने कहा मैं लश्कर तुम्हारे सुपुर्द नहीं करूँगा बल्कि यह मुहिम मैं खुद ही सर करूँगा। चुनांचे उस ने फौरन हमले का हुक्म दे दिया। यह मुहर्रम की नवीं तारीख़ जुमेरात का दिन और शाम का वक़्त था। हज़रत इमाम अला ज़हिदी व अलैहिस्सलाम नमाज़े अन्न के बाद खेमा के दरवाज़े पर तलवार का सहारा लेकर घुटनों पर सर रखे बैठे थे कि आप की आंख लग गई थी, फौज के शोरो-गुल की आवाज़ सुनकर आप की बहन हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु तआला अन्हा पर्दे के पास आई और आप को जगा कर कहा देखिये दुश्मन के फौज की आवाज़

बहुत नज़दीक से आ रही है, आप ने सर उठाया और फरमाया मैं ने अभी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा, हज़ूर ने मुझ से फरमाया: **لَا تَزُوحُ إِلَيَّ** तुम हमारे पास आने वाले हो। हज़रत ज़ैनब यह ख़्वाब सुनकर बेकरार हो गई और रोते हुए कहा: **يَا رَسُولَ اللَّهِ** हाए मुसीबत! आप ने फरमाया सब्र करो, खामोश रहो, अल्लाह मालिक है। फिर इमाम ने हज़रत अब्बास से फरमाया पूछो इस वक़्त हमला का सबब क्या है? हज़रत अब्बास फौज के सामने आए और पूछा, जवाब मिला इन्हे ज़ियाद का हुक्म है कि आप लोग उस की इताअत करें और या तो लड़ने मरने के लिये तैयार हो जायें। हज़रत अब्बास ने उन के जवाब से इमाम आली मक़ाम को आगाह किया, आप ने फरमाया इन से कहो कि एक रात की मोहलत दें ताकि आज रात भर हम अच्छी तरह नमाज़ पढ़ लें, दुआ मांग लें और तौबा व इस्तिग़फ़ार कर लें। खुदाए तआला ख़ूब जानता है कि मैं नमाज़ और दुआ व इस्तिग़फ़ार से कितनी मुहब्बत रखता हूँ। जब हज़रत अब्बास ने फौज के दस्ते से कहा कि हमें एक रात की मोहलत दी जाए तो उन्होंने ने यह बात मान ली।

(तबरी:2/248)

साथियों में इमाम की तक़रीर

इस के बाद हज़रत इमाम अला जद्विही व अलैहिस्सलाम ने अपने साथियों को जमा किया और उन के सामने यह तक़रीर फरमाई:

“सब तारीफें खुदाए तआला के लिये हैं, आराम व तक़लीफ़ हर हाल में उस का शुक्र है। ऐ अल्लाह! मैं तेरा शुक्र बजा लाता हूँ, तू ने हमें (अहले बैते) नुबुव्वत की इज़ज़त अता फरमाई, कुरआन का इल्म दिया, दीन की समझ अता फरमाई और सुनने वाले कान, देखने वाली आंखें और दिले आगाह से माला माल फरमाया। उस के बाद हज़रत ने फरमाया मैं दुनिया में किसी के साथियों को अपने साथियों से ज़्यादा वफ़ादार व बेहतर नहीं जानता और न किसी के घर वालों को अपने घर वालों से ज़्यादा नेक़ूकार व सिला रहमी करने वाला देखता हूँ।

खुदाए तआला तुम सब को मेरी तरफ से जजाए खैर अता फरमाए, सुन लो! मैं यकीन रखता हूं कि इन दुश्मनों के हाथों कल हमारी शहादत है, मैं तुम को बखुशी इजाजत देता हूं कि रात का अंधेरा छाया हुआ है, इसी में जहां तुम लोगों का जी चाहे चले जाओ, मेरी तरफ से तुम पर कोई इल्जाम नहीं। यह लोग मेरे कल के दरपे हैं, जब मुझे कल कर लेंगे तो फिर किसी दूसरे की तरफ मुतवज्जह नहीं होंगे।”

इमाम आली मक़ाम की यह तक्रीर सुन कर सब से पहले हज़रत अब्बास फिर आप के दूसरे भाई, बेटे, भतीजे और भांजे सब ने एक ज़बान होकर कहा, क्या हम इस लिये चले जाएं कि आप के बाद ज़िंदा रहें? खुदा हमें ऐसा बुरा दिन न दिखाए।

इमाम ने पुकार कर कहा ऐ औलादे अक़ील! मुस्लिम का कल होना तुम्हारे लिये काफी है, तुम चले जाओ, मैं इजाजत देता हूं। उन लोगों ने कहा खुदा की कसम यह हम से हरगिज़ नहीं होगा, बल्कि हम आप के साथ दुश्मन से मुक़ाबला करेंगे यहां तक कि अपनी जानें आप पर कुर्बान कर देंगे, खुदाए तआला हमें वह ज़िंदगी न दे जो आप के बाद हो।

हज़रत मुस्लिम बिन औसजा असदी खड़े हुए और कहा हम आप को छोड़ कर चले जाएं, यह हम से हरगिज़ नहीं हो सकता। खुदा की कसम मैं इन दुश्मनों से नेज़ा के साथ जंग करूंगा यहां तक कि मेरा नेज़ा उन के सीनों में टूट जाए और तलवार चलाऊंगा जब तक कि उस का कब्ज़ा मेरे हाथ में रह सकेगा। खुदा की कसम अगर मेरे पास हथियार न होंगे तो मैं पत्थर मार-मार कर दुश्मनों से लड़ूंगा और इस तरह मैं अपनी जान आप पर निछावर कर दूंगा।

हज़रत सअद बिन अब्दुल्लाह हनफी ने कहा खुदा की कसम आप का साथ छोड़ कर हम नहीं जायेंगे जब तक कि खुदा की बारगाह में यह साबित न कर दें कि हम ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के नवासे की कैसी हिफाज़त की है। खुदा की कसम अगर

मुझे यह मालूम हो कि मैं कत्ल हो जाऊंगा फिर जिंदा किया जाऊंगा और फिर जीते जी जला दिया जाऊंगा और मेरी राख हवा में उड़ा दी जाएगी और इसी तरह सत्तर मर्तबा मेरे साथ होगा फिर मैं आप का साथ न छोड़ूंगा और यह तो एक ही मर्तबा कत्ल होना है फिर इसके बाद दाइमी इज्जत है जो कभी खत्म होने वाली नहीं है।

हज़रत जुहैर बिन कैन ने कहा खुदा की कसम मैं तो यह चाहता हूँ कि कत्ल किया जाऊँ फिर जिंदा किया जाऊँ और फिर कत्ल किया जाऊँ ऐसे ही मेरे साथ हजार मर्तबा हो मगर खुदाए तआला आप को और आप के नौजवानों को बचा ले — ग़रज़ कि इसी तरह आप के तमाम साथियों ने अपनी-अपनी अक़ीदत और जाँ निसारी ज़ाहिर की और सब का मतलब यही था कि यह हरगिज़ नहीं हो सकता है कि हम आप से जुदा हो जाएँ बल्कि हम अपने हाथों अपनी गर्दनों और पेशानियों से आप को बचाएंगे यहां तक कि अपनी जानें आप पर कुर्बान कर देंगे।

(तबरी:2/250)

इस के बाद आप और आप के तमाम साथियों ने नमाज़ व दुआ और तौबा व इस्तिग़फ़ार में सारी रात गुज़ार दी और इस के साथ ही खेमों की पुश्त पर ख़ल्क खोद कर लकड़ियाँ भर दीं ताकि जंग के वक़्त उन में आग लगा दी जाए तो दुश्मन पीछे से हम्ला न कर सके।



कर्बला में कियामते सुगरा दस्वीं मुहर्रम के दिल-दोज़ वाकिआत

आशूरा की रात खत्म हुई और दस्वीं मुहर्रम की कियामत नुमा सुबह नमूदार हुई। हज़रत इमाम अला ज़हिदी व अलैहिस्सलाम ने अहले बैत और अपने तमाम साथियों के हम्राह फज़ की नमाज़ निहायत खुशूअ व ख़ुजूअ के साथ अदा فرमाई, पेशानियों ने सज़्दे में ख़ूब मज़े लिये और ज़बानों ने तस्बीह व क़िराअत के ख़ूब लुफ़ उठाए। अब दस्वीं मुहर्रम का सूरज अन्करीब निकलने वाला है। हज़रत इमाम, उन के अहले बैत और तमाम साथी तीन दिन के भूके प्यासे हैं, एक लुक़्मा किसी की हलक़ से नीचे नहीं उतरा और न एक क़तरा पानी किसी को मयस्सर हुआ, ऐसे लोगों पर जुल्म व ज़फ़ा के पहाड़ तोड़ने के लिये 22 हज़ार का ताज़ा दम लश्कर मौजूद है, जंग का नक्क़ारा बजा दिया गया। आकाए दो आलम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम के लाल और अली व फातिमा के नौ निहाल को मेहमान बना कर बुलाने वाली कौम ने जानों पर खेलने की दअ्वत दी। हज़रत इमाम मैदाने कारज़ार (जंग) में तशरीफ़ ले गए और एक तक़रीर फरमाई। हम्दो-सलात के बाद आप ने फरमाया: ऐ लोगो! मेरे नसब पर ग़ौर करो, कि मैं कौन हूँ? फिर अपने ग़िरेबानों में मुंह डाल कर सोचो कि तुम्हारे लिये क्या मेरा खून बहाना जाइज़ है? क्या मैं तुम्हारे नबी का नवासा नहीं हूँ? क्या मैं उन के चचा ज़ाद भाई अली का फ़र्ज़न्द नहीं हूँ? जो आठ दस साल की उम्र में ईमान लाए। क्या सैय्यिदुश शुहदा हज़रत हमज़ा मेरे बाप के चचा और जाफ़र तैय्यार खुद मेरे ही चचा नहीं थे। क्या तुम में से किसी ने यह नहीं सुना है कि रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम ने मेरे और मेरे भाई के बारे में फरमाया है कि यह दोनों जन्नती जवानों के सरदार हैं। अगर तुम मेरी बात को सच समझते हो और हकीक़त में वह सच ही है, इस लिये कि मैं कभी झूठ

नहीं बोलता। और अगर तुम मेरी बात झूठी समझते हो तो अब भी इस्लामी दुनिया में जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी, अबू सईद खुदरी और अनस बिन मालिक वगैरा मौजूद हैं उन से पूछ लो — क्या यह हदीसों तुम्हें मेरा खून बहाने से रोकने के लिये काफी नहीं हैं?

शिमर बंद बख्त ने आप की तकरीर में मुदाखलत करते हुए कुछ बंद तमीजी की तो हबीब बिन मजाहिर ने उसे सख्त जवाब देते हुए कहा कि अल्लाह तआला ने तेरे दिल पर मोहर लगा दी है इस लिये तू नहीं समझ पा रहा है कि हज़रत इमाम क्या फरमा रहे हैं — शिमर और हबीब की गुफ्तुगू के बाद इमाम आली मक़ाम ने फिर फरमाया ऐ लोगो! अगर तुम्हें इस हदीस में शक है तो क्या इस में शुब्हा है कि मैं तुम्हारे रसूल का नवासा हूँ। खुदा की क़सम पूरब से लेकर पच्छिम तक पूरी दुनिया में मेरे सिवा कोई भी नबी का नवासा मौजूद नहीं है, न तुम में और न तुम्हारे सिवा दूसरी कौमों में। और मैं तो खुद तुम्हारे ही नबी का नवासा हूँ, ज़रा गौर तो करो कि मेरे क़त्ल पर तुम कैसे आमादा हो गए? क्या मैंने किसी को क़त्ल किया है? किसी का माल हलाक किया है? या किसी को ज़ख्मी किया है? जिस का बदला तुम मुझ से चाहते हो।

जब मुख़ालिफीन की तरफ से कोई जवाब नहीं मिला तो आप ने पुकार कर कहा ऐ शिब्स बिन रुबई! ऐ हजार बिन अबजर! ऐ कैस बिन अश्अस! ऐ यज़ीद बिन हारिस! क्या तुम लोगों ने ख़त लिख कर मुझे नहीं बुलाया था? उन्होंने ने कहा हम ने कोई ख़त आप को नहीं लिखा था। आप ने फरमाया तुम लोगों ने लिखा था और ज़रूर लिखा था। अच्छा फर्ज कर लो तुम ने नहीं लिखा था और तुम नहीं चाहते थे कि मैं इधर आऊँ तो मुझे छोड़ दो ताकि मैं किसी ऐसी जगह चला जाऊँ जहाँ अम्नो-अमान की ज़िंदगी बसर कर सकूँ। कैस बिन अश्अस ने कहा आप अपने कराबत दार यानी इब्ने ज़ियाद के सामने सर झुका दें फिर आप के साथ कोई ना पसंदीदा सुलूक नहीं होगा। आप ने फरमाया तुम ऐसा क्यों नहीं कहोगे, तुम मुहम्मद बिन अश्अस ही के भाई तो हो, क्या तुम्हारे लिये यह काफी नहीं कि मुस्लिम बिन अक़ील

के खून की जिम्मेदारी तुम पर है। खुदा की कसम मैं ज़िल्लत के साथ तुम्हारे हाथ में अपना हाथ हरगिज़ नहीं दूंगा और न गुलामों की तरह इताअत का इकरार करूंगा ---- मुखालिफीन के मानने की पहले ही से उम्मीद न थी मगर इमाम आली मक़ाम को अपना फर्ज पूरा करना था वह हो गया, फिर आप ऊंटनी बिठा कर उतर पड़े और उक्बा बिन समअान को हुक्म दिया कि इसे बांध दें। (तबरी:2/257)

हुर का शौके शहादत

जब अम्र बिन सअद जंग शुरू करने के लिये आगे बढ़ा तो हुर बिन यज़ीद ने उस से कहा खुदा तेरा भला करे क्या तू वाकई इन से जंग करेगा? इब्ने सअद ने कहा हां खुदा की कसम और ऐसी जंग कि जिस में सरो की बारिश होगी और हाथ क़लम होकर ज़मीन पर गिरेंगे। हुर ने कहा उन की पेश की हुई बातों में से कोई बात भी तुम लोगों को मनज़ूर नहीं, उस ने कहा खुदा की कसम अगर मुझे इख़्तियार होता तो मैं ज़रूर मनज़ूर कर लेता मगर क्या करूं? तुम्हारा हाकिम नहीं मानता। हुर यह सुन कर वहां से हट गया, नवासए रसूल से जंग के तसव्वुर ने उस के बदन पर कपकपी तारी कर दी और चेहरे पर परेशानी के आसार ज़ाहिर हुए तो मोहाजिर बिन औस उसी क़बीले का एक शख्स कहने लगा, हुर यह तुम्हारी क्या हालत है? तुम पर इस क़दर ख़ौफ व हिरास क्यों ग़ालिब है? मुझ से तो जब पूछा जाता कि कूफा में सब से ज़्यादा बहादुर कौन है तो मैं तुम्हारे सिवा किसी का नाम न लेता मगर इस वक़्त तुम्हारी अजीब हालत देख रहा हूं। आख़िर इस की क्या वजह है? हुर ने कहा यह नवासए रसूल से जंग है, अपनी आकिबत से लड़ाई है, मैं इस वक़्त जन्नत और दोज़ख के दरमियान खड़ा हूं मगर मैं जन्नत को किसी चीज़ के बदले नहीं छोड़ूंगा, चाहे मेरा जिस्म टुकड़े-टुकड़े करके आग में जला दिया जाए। यह कहते हुए उस ने अपने घोड़े को एड़ लगाई और इमाम आली मक़ाम की ख़िदमत में पहुंच गया --- अर्ज़ किया फ़र्जन्दे रसूल! मेरी जान आप पर कुर्बान, मैं

वही गुनहगार हूँ जिस ने आप को वापस जाने से रोका, रास्ते में आप के साथ-साथ रहा और इस जगह ठहरने पर मजबूर किया। कसम है उस खुदाए पाक की जिस के सिवा कोई माबूदे बरहक नहीं, मैं यह हरगिज़ नहीं समझता था कि आप की पेश की हुई बातों में से यह किसी एक को भी नहीं मानेंगे और नौबत यहां तक पहुंच जायेगी। वल्लाह अगर मुझे मालूम होता कि यह लोग आप की बात नहीं कबूल करेंगे तो मैं हरगिज़ उन का साथ न देता। अब मैं अपने किये पर शर्मिन्दा हूँ, खुदाए तआला की बारगाह में तौबा करता हूँ और अपनी जान आप के कदमों पर कुर्बान करने के लिये हाज़िर हूँ। क्या इस तरह मेरी तौबा कबूल हो जाएगी। हज़रत ने फरमाया हां, अल्लाह तआला तुम्हारी तौबा कबूल फरमाएगा और तुम्हें बख्श देगा। मुबारक हो, इन्शा अल्लाह दुनिया व आखिरत में हुर (आज़ाद) हो, घोड़े से उतरो, अर्ज़ किया आप की मदद के लिये मेरा घोड़े पर रहना उतरने से बेहतर है। अब मैं आखिरी वक़्त ही में (शहीद होकर) घोड़े से उतरूंगा। हज़रत ने फरमाया अच्छा जो तुम्हारा जी चाहे वही करो, खुदाए तआला तुम पर रहम फरमाए।

(तबरी:2/260)

कूफियों से हुर का खिताब

हज़रत इमाम अला जटिही व अलैहिस्सलाम से ख़ता माफ़ कराने के बाद हुर फौरन मैदान में आ गया और पहले मुलायम अल्फाज़ में कूफियों से कहा ऐ लोगो! हुसैन तीन बातें जो पेश करते हैं उन में किसी एक को तुम क्यों नहीं मनज़ूर कर लेते ताकि खुदाए तआला तुम को उन के साथ जंग में मुब्तला होने से बचा ले, कूफियों ने कहा हमारे सिपह सालार अम्र बिन सअद मौजूद हैं, उन से बात करो। इब्ने सअद ने कहा अगर मुझे इख़्तियार होता तो मैं ज़रूर मनज़ूर कर लेता, यह सुन कर हुर को गुस्सा आ गया और कहा ऐ कूफा वालो! खुदाए तआला तुम को ग़ारत करे कि तुम ने नवासए रसूल को बुलाया और जब वह आ गए तो तुम ने उन्हें दुश्मन के हवाले कर दिया। तुम कहते

ये कि हम इन पर अपनी जान कर्बान करेंगे और अब कत्ल करने के लिये इन्हीं पर हमला कर रहे हो, इन को तुम ने गिरिफ्तार कर लिया, चारों जानिब से इन को घेर लिया। तुम ने इन को खुदा की लम्बी चौड़ी ज़मीन में जिधर अमन कर रास्ता पाएं, उधर जाने से रोक दिया और अब वह तुम्हारे हाथ में कैदी की तरह हो गए हैं। तुम ने इनको, इन के अहले हरम को, इनके बच्चों को और इन के साथियों को दरियाए फुरात के उस बहते हुए पानी से रोक दिया जिसे यहूदी, नस्रानी और मजूसी तक पीते हैं बल्कि कुत्ते और सुवर भी उस में लोटते हैं मगर उसी पानी के लिये हुसैन और उनके अहलो-अयाल तड़प रहे हैं। तुम ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बाद उन की औलाद के साथ कैसा बुरा सुलूक किया है। अगर आज तुम अभी इसी दम तौबा नहीं करोगे और अपने इरादे से बाज़ नहीं आओगे तो कियामत के दिल खुदाए तआला तुम्हें भी प्यास से तड़पाएगा -- कूफियों के पास चूँकि इस तक्रीर का कोई जवाब न था इस लिये वह हुर पर तीर बरसाने लगे। हुर ने यह देख कर तक्रीर बन्द कर दी और चूँकि अभी जंग बाक़इदा शुरू नहीं हुई थी इस लिये वह वापस आ कर इमाम के सामने खड़े हो गए। (तबरी:2/260)

जंग की इब्तिदा

हुर के वापस आने के बाद अम्र बिन सअद ने फौज को आगे बढ़ाया और अपने गुलाम जुवैद को जो अलम्बरदार लश्कर था आवाज़ दी कि झण्डा मेरे करीब लाओ, वह उस के पास आ कर खड़ा हो गया, इब्ने सअद ने कमान में तीर जोड़ कर हुसैनी लश्कर की तरफ सर किया और अपनी फौज से पुकार कर कहा, गवाह रहना कि सब से पहला तीर मैं ने ही मारा है। सिपह सालार के इन अल्फाज़ को सुन कर उस के लश्कर में जोश व ख़रोश पैदा हो गया तो वह भी तीर बरसाने लगे। इस तरह जंग शुरू हो गई और अब दोनों तरफ के सिपाही निकल-निकल कर अपनी बहादुरी का जौहर दिखाने लगे। सब

से पहले यसार और सालिम जो ज़ियाद और इब्ने ज़ियाद के आज़ाद करदा गुलाम थे, कूफियों की तरफ से निकल कर मैदान में आए और मुकाबले के लिये बुलाया, इमाम आली मक़ाम के दो जां निसार साथी हबीब बिन मज़ाहिर और बुरैर बिन हुज़ैर उठ खड़े हुए मगर इमाम ने उन को रोक दिया। यह देख कर अब्दुल्लाह बिन उमैर कलबी जो अपनी बीवी उम्मे वहब के साथ इमाम की मदद के लिये करबाल में आ गए थे, खड़े हो गए और जंग की इजाज़त तलब की, हज़रत ने सर से पैर तक उन पर निगाह डाली, देखा जवान कवी हैकल है, फरमाया अगर तुम्हारा दिल चाहता है तो जाओ, यह तन्हा दोनों के मुकाबिल गए, उन्होंने ने पूछा तुम कौन हो? अब्दुल्लाह ने अपना नाम व नसब बयान किया, उन्होंने ने कहा हम तुम्हें नहीं जानते, हमारे मुकाबले में जुहैर बिन कैन, हबीब बिन मज़ाहिर या बुरैर बिन हुज़ैर को आना चाहिये था। यसार उस वक़्त सालिम से आगे बढ़ा हुआ था, अब्दुल्लाह ने कहा ओ फाहिशा के बेटे! तू मुझ से लड़ने में बेइज़्जती समझता है, यह कहते हुए यसार पर हम्ला किया और तलवार की ऐसी ज़र्ब लगाई कि वह एक ही वार में ठंडा हो गया। सालिम ने एक दम झपट कर हम्ला कर दिया, अब्दुल्लाह ने उस की तलवार को बाएं हाथ पर रोका, उंगलियां कट गईं मगर दाहिने हाथ से उस पर ऐसा वार किया कि उसे भी ढेर कर दिया और जोश में आ कर शेरूर पढ़ने लगे जिस का मतलब यह है कि अगर मुझे नहीं पहचानते हो तो पहचान लो मैं ख़ानदाने कलब का एक फ़र्जन्द हूं, मेरे हसब व नसब के लिये इतना काफी है कि कबीलए उलैम मेरा घराना है, मैं बड़ी कुव्वत वाला हूं और मुसीबत के वक़्त पस्त हिम्मती से काम लेने वाला नहीं हूं।

अब्दुल्लाह की बीवी को अपने शौहर की बहादुरी देख कर जोश आ गया, खेमा की एक चोब हाथ में ली और आगे बढ़ कर कहा मेरे मां बाप तुम पर कुर्बान, नवासरए रसूल की तरफ से लड़ते जाओ, वह अपनी बीवी के पास आए और चाहा कि उन्हें खेमा में पहुंचा दें मगर

वह मानने वाली नहीं थीं। अब्दुल्लाह के एक हाथ में तलवार थी, जिस से दुश्मन का खून टपक रहा था और दूसरे हाथ की उंगलियाँ कट गई थीं जिन से लहू बह रहा था, फिर भी उन्होंने ने पूरी कुव्वत के साथ बीबी को वापस करना चाहा मगर जोश में भरी हुई खातून ने अपना हाथ अब्दुल्लाह से छुड़ा लिया और कहा मैं तुम्हारा साथ हरगिज़ नहीं छोड़ूंगी, तुम्हारे साथ मैं भी जान दूंगी। इमाम आली मक़ाम ने आवाज़ दी, खुदाए तआला तुम दोनों को अहले बैते रिसालत की तरफ से जज़ाए ख़ैर अता फरमाए, बीबी तुम वापस चली आओ कि औरतों पर किताल वाजिब नहीं। हज़रत के हुक्म को सुन कर वह वापस आ गई।

(तबरी:2/262)

करबला में हज़रत इमाम की करामतें

दुश्मनों के गिरोह में एक शख्स घोड़ा कूदाता हुआ सामने आया जिस का नाम मालिक बिन उर्वा था, जब उस ने देखा कि लश्करे इमाम के गिर्द ख़ुन्दक़ में आग जल रही है और शोले बुलंद हो रहे हैं और इस तदबीर से अहले ख़ेमा की हिफाज़त की जा रही है तो उस गुस्ताख़ बद बातिन ने हज़रत इमाम से कहा ऐ हुसैन! तुम ने वहाँ की आग से पहले यहीं आग लगा ली है। इमाम आली मक़ाम अला जदिही व अलैहिस्सलाम ने फरमाया: **كَلْبَةُ بَنِي هَاشِمٍ** ऐ खुदा का दुश्मन! तू झूठा है, तुझे गुमान है कि मैं दोज़ख़ में जाऊंगा। हज़रत मुस्लिम बिन औसजा को उस बद बख़्त का यह जुम्ला बहुत नागवार हुआ और उन्होंने ने हज़रत इमाम से उस बद ज़बान के मुंह पर मीर मारने की इजाज़त चाही, आप ने उन्हें इजाज़त नहीं दी, मगर खुदाए तआला की बारगाह में हाथ उठा कर दुआ की या इलाहलू आलमीन! अज़ाबे नार से पहले इस गुस्ताख़ को दुनिया के अन्दर आग के अज़ाब में मुब्तला फरमा। इमाम का हाथ उठाना था कि उसके घोड़े का पांव एक सूराख़ में गया और वह घोड़े से गिरा, उस का पांव रकाब में उलझा, घोड़ा उसे लेकर भागा और आग की ख़ुन्दक़ में डाल दिया।

हज़रत इमाम ने सज्दए शुक्र किया, अपने परवरदिगार की हम्दो-सना की और अर्ज किया ऐ परवरदिगार! तेरा शुक्र है कि तू ने अहले बैते रिसालत के बद ख्वाह को सज़ा दी, हज़रत इमाम की ज़बान से यह जुम्ला सुन कर दुश्मनों की सफ में से एक और बेबाक ने कहा आप की पैगम्बरे खुदा सल्लल्लाहु तअल्ला अलैहि व सल्लाम से क्या निस्बत? यह कलिमा तो हज़रत के लिये इन्तिहाई तक्लीफदेह था, आप ने बारगाहे खुदावन्दी में अर्ज किया ऐ अल्लाह! इस बद ज़बान को फौरन ज़िल्लत में गिरिफ्तार कर, इमाम ने यह दुआ फरमाई और उस को कज़ाए हाजत की ज़रूरत पेश आई, वह घोड़े से उतर कर एक तरफ भागा और किसी जगह कज़ाए हाजत के लिये बरहना होकर बैठा, एक सियाह बिच्छू ने डंक मारा तो नजासत आलूदा तड़पता फिरता था, इस रुस्वाई के साथ पूरे लश्कर के सामने उस नापाक की जान निकली मगर सख्त दिलाने बेहमिय्यत (बेशर्मी) को गैरत न हुई।

और एक मुज़नी ने इमाम के सामने आ कर कहा ऐ इमाम! देखों तो दरियाए फुरात कैसा मौजें मार रहा है, खुदा की कसम खा कर कहता हूँ, तुम्हें इसका एक कतरा न मिलेगा और तुम प्यासे हलाक हो जाओगे। हज़रत इमाम ने उस के हक में फरमाया: **يَا رَبِّ اِنَّ عَطَشِي** या رب! इस को प्यासा मार। इमाम का यह फरमाना था कि मुज़नी का घोड़ा चमका, मुज़नी गिरा, घोड़ा भागा और मुज़नी पकड़ने के लिये उस के पीछे दौड़ा और प्यास उस पर ऐसी शिद्दत की ग़ालिब हुई कि अल्-अतश-अल्-अतश पुकारता था और जब पानी उस के मुंह से लगाते थे तो एक कतरा नहीं पी सकता था यहां तक कि उसी प्यास की शिद्दत में मर गया।

(सवानेहे करबला:106)

ऐ दिल बगीर दामने सुल्ताने औलिया

यानी हुसैन बिन अली जाने औलिया

फर्ज़न्दे रसूल को यह बात भी दिखानी थी कि उन की मक्बूलियत बारगाहे हक पर और उन के कुर्ब व मंज़िलत पर जैसे कि नूसूसे कसीरा और अहादीसे शहीरा शाहिद हैं ऐसे ही उन के ख़वारिक व

करामात भी गवाह हैं। अपने इस फज़ल का अमली इज़हार भी इतमासे हुज्जत के सिलसिले की एक कड़ी थी कि अगर तुम आंख रखते हो तो देख लो जो ऐसा मुस्तजाबुव दअ्वात है उस के मुकाबले में आना खुदा से जंग करना है, इस का अंजाम सोच लो और बाज़ रहो मगर शरारत के मुजस्समें इस से भी सबक न ले सके।

इमाम के साथियों की शुजाअत और शहादत

कूपी लश्कर से यज़ीद बिन मअ्कल निकला, इमाम आली मक़ाम की तरफ से बुरैर बिन हुज़ैर ने बढ़ कर उस के सर पर ऐसी कारी ज़र्ब लगाई कि तलवार यज़ीद की ख़ोद को काटती हुई दिमाग तक पहुंच गई और वह ढेर हो गया, इतने में रज़ी बुरैर से लिपट गया, दोनों में कुश्ती होने लगी, आखिर बुरैर रज़ी को गिरा कर उस के सीने पर सवार हो गए, रज़ी चिल्लाया तो कअ़ब दौड़ कर बुरैर की पीठ में नेज़ा मारा और वह शहीद हो गए — फिर इमाम आली मक़ाम की तरफ से हुर निकले उन के लिये मुकाबले के लिये यज़ीद बिन सुफ़ियान आया, हुर ने एक ही वार में उसे ढेर कर दिया। हुर के बाद नाफ़ेअ़ बिन हिलाल आगे बढ़े, उन के मुकाबले में मुज़ाहिम बिन हुरैस आया, नाफ़ेअ़ ने उसे भी मौत के घाट उतार दिया — अभी तक लड़ाई इसी अंदाज़ में हो रही थी कि दोनों तरफ से एक-एक जवान मैदान में आता लेकिन कूफ़ियों की तरफ से जो भी आता वह बच के न जाता, यह हाल देख कर अम्र बिन हज्जाज चिल्लाया, ऐ बेवकूफ कूफ़ियो! तुम्हें नहीं मालूम तुम किन लोगों से लड़ रहे हो, अरे यह सब मौत को जान से ज़्यादा अज़ीज़ रखते हैं, इन के मुकाबले में एक-एक करके हरगिज़ न आओ, अम्र बिन सअ़द ने उस की राय को पसंद किया और इस तरह लड़ाई करने से मना कर दिया। फिर अम्र बिन हज्जाज ने फौज के एक दस्ता के साथ इमाम आली मक़ाम के मैमना आम हमला कर दिया, कुछ देर तक जंग हुई जिस में हज़रत के एक जाँ निसार साथी मुस्लिम बिन औसजा शहीद हो गए।

उस के बाद शिमेर एक बड़ी जमाअत के साथ इमाम के मैसरा पर हमला आवर हुआ, और इस हमला के साथ ही यज़ीदी लश्कर चारों तरफ से इमाम के साथियों पर टूट पड़ा, बड़ी ज़बर्दस्त जंग हुई, इमाम के साथ कुल 32 सवार थे लेकिन जिधर वह रुख करते थे, कूफियों की सफ़ों को दरहम बरहम कर देते थे, यहां तक कि यज़ीदी लश्कर में भगदड़ मच गई। इब्ने सज़द ने फौरन पांच सौ तीर अंदाज़ों को भेजा, उन्होंने ने पहुंच कर हुसैनी लश्कर पर तीरों की बारिश कर दी जिस से तमाम घोड़े ज़ख्मी और बेकार हो गए लेकिन इमाम आली मक़ाम के जां निसार हिम्मत नहीं हारे, घोड़ों से उतर पड़े, बड़ी बहादुरी के व बेजिगरी के साथ लड़ते रहे और कूफियों के छक्के छुड़ा दिये। अय्यूब बिन मशरह कहता था खुदा की क़सम हुर बिन यज़ीद के घोड़े मैने तीर मारा जो, उस की हलक़ में उतर गया, बस वह गिर पड़ा और उस की पीठ पर से हुर इस तरह कूद पड़ा जैसे शेर। फिर वह तलवार खींच कर मैदान में आ गया और एक शेअर पढ़ा जिस का मतलब यह है कि अगर तुम ने मेरे घोड़े को बेकार कर दिया तो क्या हुआ, मैं हुर शेर बबर से ज़्यादा बहादुर और शरीफ हूँ। और वही इब्ने मशरह यह भी कहता था कि हुर की तरह तलवार चलाते हुए मैं ने किसी को नहीं देखा।

(तबरी:2/267)

जब जुहर का अव्वल वक़्त हो गया तो इमाम आली मक़ाम ने फरमाया कूफियों से कहो हमें नमाज़ पढ़ने की मोहलत दें, इस पर बद बख़्ता हसीन बिन नुमैर ने कहा तुम्हारी नमाज़ क़बूल न होगी। हबीब बिन मज़ाहिर ने जवाब दिया ओ गधे! तू समझता है कि फ़र्ज़न्दे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलेहि व सल्लम की नमाज़ क़बूल न होगी और तेरी क़बूल होगी, यह सुन कर इब्ने नुमैर आग बगूला हो गया, उस ने हबीब पर हमला कर दिया, हबीब ने अपने आप को बचा लिया और झपट कर उस के घोड़े के मुंह पर तलवार का ऐसा वार किया कि वह आगे दोनों पांव उठा कर खड़ा हो गया और इब्ने नुमैर उस की पीठ से नीचे गिर गया लेकिन कूफियों ने दौड़ कर उसे बचा लिया, फिर बहुत

से कूफियों ने हबीब को घेर लिया, वह देर तक उन से बड़ी बहादुरी के साथ लड़ते रहे लेकिन तन्हा एक बड़ी जमाअत का वह कब तक मुकाबला कर सकते थे। जब थक गए तो एक तमीमी ने आप पर नेजा से वार किया आप गिर गए और अभी उठ ही रहे थे कि इब्ने नुमैर ने आप पर तलवार मारी, आप फिर गिर गए और तमीमी ने घोड़े से उतर का आप का सर काट लिया।

हबीब की शहादत से इमाम आली मक़ाम के दिल पर बड़ा ज़बर्दस्त असर पड़ा, फरमाया कि मैं ने अपनी और अपने साथियों की जान को खुदाए तआला हवाले किया। हुंर ने जब इमाम को बहुत रंजीदा देखा तो रज्ज पढ़ते हुए मैदान में भिक्खुले साथ में जुहैर बिन कैन भी रहे, दोनों ने बहुत सख्त लड़ाई की, उन में से एक हमला करता और जब वह दुश्मनों में घिर जाता तो दूसरा हमला करके उसे बचा लेता, इसी तरह देर तक यह दोनों शमशीर ज़नी करते रहे, आखिर में बहुत बड़ी फौज ने हुंर को घेर लिया और वह शहीद कर दिये गए। अब जुहैर तन्हा रह गए लेकिन देर तक दुश्मनों का मुकाबला किया, फिर तलवार चलाते हुए वह भी शहीद हो गए। *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन्* (तबरी:2/271)

करबला वालों ने रौशन कर दिया इस्लाम को

शमूएं गुल होती गई और रौशनी बढ़ती गई

☆☆☆

हाशिमि जवानों की बेमिस्त बहादुरी और शहादत

करबला में इमाम आली मक़ाम अला जद्दिही व अलैहिस्सलाम के साथियों की वफादारी का यह भी एक बहुत बड़ा कारनामा रहा कि जब तक उन में एक भी बाकी रहा, इमामे पाक के भाई और बेटे भतीजे वगैरा किसी भी बनी हाशिम को उन्होंने ने लड़ने के लिये मैदान में नहीं जाने दिया बल्कि उन के किसी एक फर्द को कोई गज़न्द भी नहीं पहुंचने दिया। हालां कि इस दरमियान में कूफियों की तरफ से बड़ी

ज़बर्दस्त तीरों की बारिश भी हुई मगर इसके बावजूद एक ज़ख्म भी किसी हाशिमि जवान या बच्चे को लगने का तारीख़ में पता नहीं चलता।

इन सब की शहादत के बाद आप असदुल्लाहिल ग़ालिब के शेरों, फातिमा ज़हरा के दुलारों और सैय्यदुल अबिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के जिगर परो के लड़ने की बारी आई, उन के मैदान में आते ही बड़े-बड़े बहादुरों के दिल सीनों में लरज़ने लगे और उनकी असदुल्लाहि तलवारों के हमलों से शेर दिल बहादुर भी चीख़ उठे, उन्होंने ने ज़ब्र व हर्ब के वह जौहर दिखाए कि दुश्मनों के खून से पूरी ज़मीने करबला रंगीन हो गई और कूफियों को मानना पड़ा कि अगर इन लोगों पर तीन दिन पहले पानी बन्द न किया जाता तो हाशिमि ख़ानदान का एक-एक जवान पूरे लश्कर को तबाह व बर्बाद कर डालता।

औलादे अक़ील की शहादत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम बिन अक़ील इमाम आली मक़ाम से राहें हक़ में सर कटाने की इजाज़त तलब की, आप की आंखों में आंसू आ गए, फरमाया बेटा! मैं तुम्हें कैसे इजाज़त दे दूँ, अभी तुम्हारे बाप की जुदाई का दाग़ मेरे दिल से नहीं मिटा है, अर्ज़ किया मैं अपने बाप के पास जाने के लिये बेकरार हूँ। हज़रत ने उन का शौक़े शहादत देख कर इजाज़त दे दी, उस हाशिमि जवान ने मैदान में आ कर मुक़ाबला के लिये पुकारा, कूफी लश्कर से कुदामा बिन असद जो बड़ा बहादुर समझा जाता था वह आपसे लड़ने के लिये निकला, थोड़ी देर तक दोनों में तलवार चलती रही, आख़िर अब्दुल्लाह ने तलवार का ऐसा ज़बर्दस्त वार किया कि वह खीरे की तरह कट कर ज़मीन पर आ गया। फिर किसी की हिम्मत न हुई कि वह तन्हा आपके मुक़ाबले में आता। आप शेर बंबर की तर उनपर हमला आवर हुए, सफ़ों को दरहम बरहम करते हुए उन में घुस्ते चले गए, बहुतेरों को ज़ख्मी किया और कई एक को जहन्नम में पहुंचाया, आख़िर नौफल बिन मुज़ाहम हुमैरी ने आप को

नेजा मार कर शहीद कर दिया। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।

हज़रत जाफर बिन अक़ील अपने भतीजे अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम की शहादत के बाद अशकबार आंखों के साथ मैदान में आए और यह रज़ज़ (जंगी अश्ज़ार) पढ़ी कि मैं मक्का का रहने वाला हूँ, हाशिमी नस्ल और ग़ालिब घराने का हूँ। बेशक हम सारे कबीलों के सरदार हैं और हुसैन तमाम लोगों में सब से ज़्यादा पाकीज़ा हैं। फिर आप ने लड़ना शुरू किया और बहादुरी के साथ वह जौहर दिखाए कि बहुत से यज़ीदियों को खाक में मिला दिया, दुश्मन जब तलवार से उन का मुकाबला नहीं कर सके तो चारों तरफ से घेर कर तीरों की बारिश शुरू की, आखिर अब्दुल्लाह बिन अज़रा के तीर से शहीद होकर आप बहिश्ते बरी में जा पहुंचे — हज़रत अब्दुर रहमान बिन अक़ील अपने भाई को खाको-खून में ग़लतां देख कर बेचैन हो गए और भूके शेर की तरह कूफियों पर झपट पड़े, सफ़ों को दरहम बरहम कर दिया और दुश्मनों के खून से मैदान को लाला ज़ार बना दिया। आखिर उस्मान बिन ख़ालिद जुहनी और बशर बिन सौत हमदानी ने मिल कर आप को शहीद कर दिया — दोनों भाईयों की शहादत के बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन अक़ील शेर-बबर की तरह मैदान में कूद पड़े और शमशीर ज़नी के वह जौहर दिखाए कि बड़े-बड़े बहादुरों के दांत खड़े कर दिये और बहुत से कूफियों को जहन्नम में पहुंचा दिया। आखिर में उस्मान बिन असीम जुहनी और बशर बिन सौत हमदानी के हाथों शहीद हुए। रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम।

यह फ़क्रह काश नक्शे हर दरो-दीवार हो जाए

जिसे जीना हो मरने के लिये तैयार हो जाए

फ़र्ज़न्दाने अली की शहादत

औलाद हज़रत अक़ील के शहादत के बाद अब हज़रत अली मुश्किल कुशा के फ़र्ज़न्दों की बारी आई, हज़रत मुहम्मद बिन अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा जो अस्मा बिन्त ख़स्मिया के बतन से थे

इमाम आली मक़ाम से इजाज़त लेकर मैदान में आए, अपनी बहादुरी के जौहर दिखाए और बहुत से दुश्मनों को क़त्ल किया, आखिर कबीलए बनी अबान के एक शख्स ने आप को ज़ख्मी किया और जब आप ज़मीन पर गिर गए तो उस ने आप का सर तन से जुदा कर दिया। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।

अब हज़रते उस्मान बिन अली, हज़रते अब्दुल्लाह बिन अली और हज़रते जाफर बिन अली खड़े हुए। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के यह तीनों फ़र्ज़न्द उम्मुल बनीन के बतन से थे और इमाम आली मक़ाम अला जद्दिही व अलैहिस्सलाम के ऐसे वफादार व जां निसार थे कि जब शिमार उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद का ख़त लेकर करबला की तरफ रवाना हो रहा था तो अब्दुल्लाह बिन अबी महल जो उम्मुल बनीन का भतीजा था और जिस का शुमार कूफा के बड़े लोगों में था, इत्तिफाक से वह भी वहां मौजूद था, उस ने इब्ने ज़ियाद से कहा, हमारे ख़ानदान की एक लड़की के फ़र्ज़न्द हुसैन के साथ हैं, आप उन के लिये अमान नामा लिख दीजिये, इब्ने ज़ियाद ने उम्मुल बनीन के चारों फ़र्ज़न्द हज़रत अब्बास और उन तीनों हज़रात के लिये अमान नामा लिख दिया जिसे अब्दुल्लाह बिन अबी महल ने अपने आज़ाद करदा गुलाम के हाथ रवाना किया, वह अमान नामा लेकर इन हज़रात के पास पहुंचा और कहा कि आप के मामूं ज़ाद भाई ने आप लोगों के लिये इब्ने ज़ियाद से अमान नामा लिखवा कर भिजवाया है, उन चारों ग़ैय्यूर और बहादुर जवानों ने बयक ज़बान कहा हमारे भाई को हमारी तरफ से सलाम कह देना और कहना कि हम को इब्ने ज़ियाद की अमान की ज़रूरत नहीं, खुदाए तआला की अमान हमारे लिये काफी है — शिमार बिन जौशन उम्मुल बनीन ही के ख़ानदान का आदमी था, इब्ने ज़ियाद का ख़त अम्र बिन सअद को पहुंचाने के बाद उस ने भी जमाअते हुसैनी की तरफ खड़े होकर आवाज़ दी कि हमारी बहन के बेटे कहां हैं? उन हज़रात ने पूछा हम से क्या कहना चाहते हो? उस ने कहा तुम लोगों के लिये अमान है, उन मुजाहिदों ने जवाब दिया कि खुदा की फटकार हो तुझ

पर और तेरी अमान पर कि हमारे लिये अमान है और फर्जन्दे रसूल के लिये अमान नहीं। (तबरी:2:245)

फिर हज़रते अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के यह तीनों भाई एक-एक करके मैदान में जाते हैं और हर एक सैकड़ों कूफियों पर भारी पड़ते हैं। जोरे यदुल्लाहि से यज़ीदी लश्कर की सफ़ों को दरहम बरहम कर देते हैं और कुव्वते हैदरी के वह जौहर दिखाते हैं कि दुश्मनों के दांत खट्टे कर देते हैं। बिल आखिर बहुत से यज़ीदियों को क़त्ल और ज़ख्मी करने के बाद फर्जन्दे रसूल पर अपनी जानों को कुर्बान कर देते हैं। रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम।

वो आशिकाने दिलबर शहंशाहे ज़मन
वो कुश्तगाने ख़न्जर ददों-ग़म व मेहन
पुर ख़ून पड़े थे दश्ते मुसीबत में इस तरह
सेहने चमन में फूल बिखरते हैं जिस तरह

शहादत हज़रत कासिम

अब हाशिमि ख़ानदान के एक महकते हुए फूल हज़रते कासिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो हज़रते हसन मुज्ज्ताबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के फर्जन्द हैं, उन की उम्र 19 साल है और उन की शादी का रिश्ता इमाम आली मक़ाम की साहिब ज़ादी हज़रत सकीना से तय हो चुका है, वह हज़रत की खिदमत में दस्त बस्ता खड़े हैं और राहे हक़ में अपनी जान कुर्बान करने के लिये इजाज़त तलब कर रहे हैं, इमाम ने फरमाया बेटा! तुम मेरे भाई हसन मुज्ज्ताबा की यादगार हो, मैं किस तरह तुम्हें तीरों से छलनी होने और तलवारों से कटते की इजाज़त दूँ? अर्ज़ किया चचा जान! मुझे दुश्मनों से लड़ने की इजाज़त जरूर दीजिये और मुझे अपने ऊपर कुर्बान होने की सआदत से महरूम न कीजिये, जब हज़रत कासिम ने बहुत इस्सारा किया तो इमामे पाक ने रोते हुए उन्हें अपने सीने से लगया और रुख़्सत कर दिया।

दुश्मन के एक सिपाही का बयान है कि जब आप मैदाने जंग में

आए तो ऐसा मालूम हुआ कि जैसे चांद का एक टुकड़ा सामने नमूदार हो गया, उन के जिस्म पर जिरह भी न थी बल्कि सिर्फ एक पैराहन पहने हुए शौके शहादत के जोश से मैदान में आ गए और यजीदी लश्कर से फरमाया ऐ दीन के दुश्मनो! मैं कासिम बिन हसन बिन अली हूं, जिसे मेरे मुकाबले में भेजना हो भेजो, अम्र बिन सअद ने मुल्के शाम के एक नामी गरामी पहलवान अरज़क से कहा तुम इस के मुकाबले में जाओ, उस ने कहा मैं हरगिज़ नहीं जा सकता कि बच्चे के मुकाबले में जाना हमारी तौहीन है। इब्ने सअद ने कहा तुम इसे बच्चा न जानो, यह हसन का बेटा और फातिहे खैबर का पोता है, इस का मुकाबला आसान नहीं है। उस ने कहा कुछ भी हो मैं ऐसे बच्चे के मुकाबले में नहीं जा सकता, अल्बत्ता मेरे चार बेटे यहां मौजूद हैं, मैं उन में से एक को भेज देता हूं, अभी एक मिनट में उस का सर काट कर ले आया।

अरज़क का बड़ा बेटा ज़हेर में बुझी हुई कीमती तलवार चमकाता हुआ और बादल की तरह गरजता हुआ मैदान में आया और पहुंचते ही हज़रत कासिम पर वार किया, आप ने उस के वार से बच कर ऐसी तलवार मारी कि वह एक ही तलवार में ढेर हो गया, आप ने लपक कर उस की तलवार उठा ली, अब अरज़क का दूसरा बेटा अपने भाई को खाको-खून में तड़पता देख कर गुस्से में भरा हुआ सामने आया, आप ने पहले ही वार में नेज़ा मार कर उसे भी जहन्नम में पहुंचा दिया। अब तीसरा भाई गैज़ो-ग़ज़ब में भरा हुआ आगे बढ़ा और गालियां बकने लगा, आप ने फरमाया हम गालियों का जवाब गालियों से नहीं देते कि यह अहले बैते नुबुव्वत की शान के खिलाफ है अल्बत्ता हम तुझे तेरे भाइयों के पास अभी जहन्नम में पहुंचा देते हैं, यह कहते हुए आप ने उसे भी खीरे की तरह काट कर दो टुकड़े कर दिया। अब अरज़क का चौथा बेटा शेर की तरह गरजता हुआ हज़रत कासिम पर हमला आवर हुआ, आप ने उस के वार को बेकार कर दिया और उस के कंधे पर तलवार का ऐसा वार किया कि वह मुंह के बल ज़मीन पर आ गया और फिर पूरी ताकत के साथ उठना ही चाहता था कि आप

ने उस के सर को जिस्म से अलग कर दिया।

जब हाशिमि बहादुर ने चन्द मिनटों में अरज़क के चारों बेटों को मौत के घाट उतार कर उस के सारे गुरूर को खाक में मिला दिया तो वह गुस्से से कांपने लगा और जिन के मुकाबले में आना पहले वह अपनी तौहीन समझता था, अब उन से लड़ने के लिये बेकरार हो गया, हाथी की तरह चिंघाड़ता और शेर की तरह दहाड़ता हुआ मैदान में आ कर हज़रते कासिम को ललकारा कि लड़के तैयार हो जाओ, मौत तुम्हारे सर पर आ गई, आप ने फरमाया अरज़क! होश की दवा कर, तू औरों के लिये ताक़त का पहाड़ होगा, अभी तू ने हाशिमि बहादुरों को नहीं देखा है, हमारी रंगों में शेर ख़ुदा का खून है, तू हमारे नज़्दीक मक्खी और मच्छर से ज़्यादा हैसियत नहीं रखता, अरज़क यह तज़्ना सुन कर और भी आग बगूला हो गया और हज़रत कासिम पर नेज़ा से हमूला कर दिया, आप ने उस के वार को बेकार कर दिया, फिर आप ने भी नेज़ा से वार किया जो ख़ाली गया, इस तरह दोनों तरफ से कुछ देर नेज़ा बाज़ी हुई, उस के बाद अरज़क ने तलवार खींची तो आप ने भी तलवार निकाल ली, उस ने जब आप के हाथ में अपने बेटे की तलवार देखी तो कहा यह तलवार तो हमारे लड़के की है, तुम्हारे पास कहां से आ गई? आप ने हंस कर फरमाया तेरा बेटा मुझे यादगार के तौर पर यह तलवार इस लिये दे गया है ताकि मैं तुझे इसी से मौत के घाट उतार कर तेरे बेटों के पास पहुंचा दूं, यह सुन कर अरज़क गुस्से से बिफर गया और हज़रत कासिम पर हमूला करना ही चाहता था कि आप ने अल्-हरबु ख़ुदअतुन् के पेशे नज़र फरमाया कि अरज़क! हम तो तुझे निहायत तज़ुर्बाकार बहादुर समझते थे लेकिन तू निहायत अनाड़ी है कि घोड़े की जीन कसने का भी सलीका नहीं रखता। आप के इस तरह फरमाने पर जब वह झुक कर अपने घोड़े की जीन देखने लगा तो उसी वक़्त आप ने तलवार का ऐसा भरपूर वार किया कि वह दो टुकड़े होकर ज़मीन पर आ गया।

गिरा फौलाद का टुकड़ा ज़मीन पर सर निगूं होकर

तक़बुर बह गया ज़ख्मों के रस्ते मौजे खूं होकर

हज़रत कासिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अरज़क के घोड़े पर सवार हो गए और खेमे की तरफ आ कर हज़रत इमाम की खिदमत में अर्ज किया: **يَا غَمَّةُ الْعَطَشِ الْعَطَشِ** ऐ चचा जान! प्यास प्यास, चचा जान! अगर हमें थोड़ा सा पानी पीने को मिल जाए तो अभी हम इन सब को मौत के घाट के उतार दें। इमाम आली मक़ाम ने फरमाया बेटा! थोड़ी देर और सब्र करो, अन्करीब तुम नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के मुबारक हाथों से जामे कौसर पी कर सैराब हो जाओगे, उस के बाद तुम्हें कभी प्यास नहीं सताएगी। हज़रत कासिम फिर मैदान की तरफ पलट पड़े। इब्ने सअद ने कहा इस नौजवान ने हमारे कई नामी गरामी जवानों को क़त्ल कर दिया है लिहाज़ा अब इस के मुकाबले में तन्हा न जाओ, इसे चारों तरफ से घेर कर क़त्ल कर दो, दुश्मनों ने आप को चारों तरफ से घेरे में ले लिया और घमसान का लड़ाई शुरू हो गई, आप के जिस्म पर 27 ज़ख़्म आए, आखिर में शीस बिन सअद ने आप के सीने पर ऐसा नेज़ा मारा कि आप घोड़े से गिर पड़े और **يَا غَمَّةُ اُتْرُكِي** पुकारा, यानी ऐ चचा जान मेरी ख़बर गीरी फरमाइये, इमाम अपने भतीजे की दर्दनाक आवाज़ सुन कर दौड़ पड़े, देखा कि जिस्मे नाज़नीन ज़ख़्मों से चूर है, आप ने उन के सर को गोद में ले लिया और चेहरा अनवर से गर्द व गुबार साफ करने लगे, इतने में हज़रत कासिम ने आंखें खोल दीं और अपना सर इमामे पाक की गोद में पा कर मुस्कुराए फिर आप की रूह परवाज़ कर गई। रज़ियल्लाहु तआला अन्हु।

शहादत हज़रते अब्बास

अब वह वक़्त आ गया कि इमाम आली मक़ाम अल्ला जहिही व अलैहिस्सलाम के अलम बरदार हज़रते अब्बास बिन अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा इमामे पाक से मैदान में जाने की इजाज़त तलब कर रहे हैं और अर्ज करते हैं कि भाई जान! सारे भाई, भतीजे और भांजे तो भूके प्यासे जामे शहादत नोश कर लिये मगर अगर नन्हें-नन्हें शीर ख़्मार बच्चों का प्यास से तड़पना और उन का बिलकना मुझ से देखा

नहीं जाता, मुझे इजाजत दीजिये कि मैं जाकर फुरात से एक मश्कीज़ा पानी लाऊं और इन प्यासों को पिलाऊं, हज़रत की आंखें अशक़बार हो गईं, फरमाया भाई अब्बास! तुम ही मेरे अलमदार हो, अगर पानी लाने में तुम शहीद हो गए तो फिर मेरा अलम कौन उठाएगा और मेरे ज़ख्मे दिल पर मरहम कौन लगाएगा? अर्ज किया मेरी जान आप पर कुर्बान, मुझे पानी लाने की इजाजत ज़रूर दीजिये कि अब नन्हें बच्चों की प्यास की तक्लीफ़ मेरी कुव्वते बरदाश्त से बाहर है, बस आखिरी तमन्ना यही है कि साक़िए कौसर के ज़िगर पारों को चन्द घूंट पानी पिला कर मैं भी अपने भाइयों के पास पहुंच जाऊं। हज़रते इमाम ने अब्बास की तरफ से जब बहुत इस्रार देखा तो उन्हें सीने से लगाया और अशक़बार आंखों के साथ उन को इजाजत दे दी, वह एक मश्कीज़ा कांधे पर लटका कर घोड़े पर सवार हुए और फुरात की तरफ़ रवाना हुए।

यज़ीदी फौज ने जब हज़रते अब्बास को फुरात की तरफ़ आता हुआ देखा तो रोक दिया। आप ने फरमाया ऐ कूफ़ियो! खुदाए तआला से डरो और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम से शर्माओ, अप्सोस सद अप्सोस कि तुम लोगों ने बेशुमार ख़ुतूत भेज कर नवासे रसूल को बुलाया और जब वह सफर की मशक़तें उठा कर तुम्हारी ज़मीन पर जल्वा अफ़रोज़ हुआ तो उन के साथ तुम ने बेवफ़ाई की, दुश्मनों से मिल कर उन के तमाम रुफ़का (दोस्त व अहबाब) और अज़ीज़ व अकारिब को शहीद कर दिया, छोटे-छोटे बच्चों को एक-एक बूंद पानी के लिये तरसा रहे हो, सौचो कियामत के दिन नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को क्या मुंह दिखाओगे? कूफ़ियों ने जवाब दिया कि अगर सारी दुनिया पानी हो जाए तब भी हम तुम्हें पानी का एक क़तरा नहीं लेने देंगे, जब तक कि हुसैन यज़ीद की बैअत न कर लें, ज़ालिमों का यह जवाब सुन कर आप को जलाल आ गया, फरमाया हुसैन सर कटा सकते हैं लेकिन बातिल के सामने झुका नहीं सकते।

मर्दे हक़ बातिल से हरगिज़ ख़ौफ़ खा सकता नहीं

सर कटा सकता है लेकिन सर झुका सकता नहीं

फिर हज़रते अब्बास शेर की तरह उन पर झपट पड़े और तलवारे आबदार धुवांधार चलाने लगे यहाँ तक कि बहुत से दुश्मनों की मौत की नींद सुलाते हुए फुरात के करीब पहुँच गए, पानी के किनारे वाली फौज ने जब आप को देखा तो वह आहनी दीवार बन गई मगर शेरें खुदा का शेर मारते काटते और दुश्मनों की सफ़ों को चीरते फाड़ते आगे बढ़ा और घोड़े को फुरात में दाखिल कर दिया, मश्कीज़ा भरा और एक चुल्लू हाथ में पानी लेकर पीना चाहा कि नन्हे-नन्हे बच्चों का प्यास से तड़पना और बिलकना याद आ गया तो आप की गैरते ईमानी ने यह गवारा न किया कि साकिए कौसर के दुलारे अली और फातिमा के जिगर पारे तो प्यास से तड़पें और हम सैराब हो जायें, आप ने चुल्लू का पानी डाल दिया और भरा हुआ मश्कीज़ा बाएं कंधे पर लटकाए हुए निकल पड़े, चारों तरफ से शोर हुआ, रास्ता रोक लो, मश्कीज़ा छीन लो, पानी बहा दो कि अगर हुसैन के खेमे तक पानी पहुँच गया तो फिर हमारा एक सिपाही नहीं बचेगा, सब की औरतें बेवा हो जायेंगी और सारे बच्चे यतीम हो जायेंगे। और हज़रते अब्बास इस कोशिश में रहे कि किसी तरह अहले बैते नुबुव्वत के प्यासों तक यह पानी पहुँच जाए, जब दुश्मनों ने आपको चारों तरफ से घेर लिया तो आप ने बिफरे हुए शेर की तरह हम्ला करना शुरू कर दिया, लाशों पर लाश गिरने लगी और खून की नाली बहने लगी और शेरें खुदा के शेर ने साबित कर दिया कि मेरे बाजुओं में कुव्वते हैदरी और रगों में खूने अली है।

आप बराबर दुश्मनों को मारते काटते और चीरते फाड़ते हुए खेमए हुसैनी की तरफ बढ़ते चले जा रहे थे कि एक बद बख्त जिस का नाम ज़रारा था, पीछे से धोका देकर ऐसी तलवार चलाई कि हाथ कंधे से कट कर अलग हो गया, आप ने फौरन दाहिने कंधे पर मश्कीज़ा ले लिया और उसी हाथ से तलवार भी चलाते रहे कि फिर अचानक नौफल बिन अरज़क खबीस ने दाहिना बाजू भी काट कर अलग कर दिया, अब आप ने मश्कीज़ा को दांतों से पकड़ लिया मगर मश्कीज़ा का खेमए हुसैनी तक पहुँचना अल्लाह तआला को मनज़ूर न था, एक

बद बख्त का तीर मश्कीजे में ऐसा लगा कि पार हो गया और उस का सारा पानी बह गया, फिर जालिमों ने चारों तरफ से घेर कर आप को ज़ख्मों से चूर-चूर कर दिया यहां तक आप घोड़े की जीन से ज़मीन पर आ गए और **يَا أَعْلَاهُ أَكْرَمِي** फरमाया, यानी ऐ भाई जान मेरी ख़बर-गीरी फरमाइये। इमाम आली मक़ाम दौड़ कर तशरीफ लाए, देखा कि अब्बास अलमदार खून में नहाए हुए हैं और अन्करीब ज़ामे शहादत नोश करने वाले हैं, शिद्दते गुम से इमाम की ज़बान पर यह कलिमात जारी हुए **إِنَّا لَنَكْرَهُنَّ** अब मेरी कमर टूट गई। फिर अब्बास की लाश को आप उठा कर खेमा की तरफ ला रहे थे कि उन की रूह कफ़से उंसुरी से परवाज़ कर गई। **إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ**।

लूटा अजल ने शेर इलाही के बाग़ को
भाई के दिल से पूछिये भाई के दाग़ को

शहादत हज़रत अली अकबर

अब इमाम आली मक़ाम के सामने आप के लख्ते जिगर नूरे नज़र शबीहे पयम्बर हज़रत अली अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खड़े हैं और मैदाने जंग में जाने की इजाज़त तलब कर रहे हैं। आप ने मुहब्बत भरी निगाह अपने फर्ज़न्दे अर्जुमन्द पर डाली और फरमाया बेटा! मैं तुम्हें किस बात की इजाज़त दूँ? क्या तीरों से छलनी होने और तलवारों से कटने की इजाज़त दूँ? क्या मैं तुम्हें खाको-खून में ग़लतां होने (लोटने) की इजाज़त दूँ? बेटा! तुम न जाओ, मैं जाता हूँ कि यह लोग मेरे खून के प्यासे हैं, मुझे शहीद करने के बाद यह फिर किसी से तआरुज़ न करेंगे। अली अकबर ने अर्ज किया बाबा जान! मैं आप के बाद जिंदा नहीं रहना चाहता, मुझे भी बहिश्ते बरीं में नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के पास पहुंचा दीजिये। चहीता बेटा जिस की कभी कोई हट और ज़िद ऐसी न थी जो पूरी न की गई हो मगर आज तो वह गर्दन कटाने और खाको-खून में लोटने की इजाज़त तलब कर रहा है, इजाज़त दें तो किस तरह? और न दें तो उस का शीशए दिल चूर-चूर हो जाएगा और बाग़े रिसालत का गुले शादाब

रंजो-गम से कुमहला जाएगा। मगर जब बेटे का इस्सारा बहुत ज़्यादा बढ़ा तो इमाम आली मक़ाम की चारो-नाचार इजाज़त देनी ही पड़ी।

हज़रत अली अकबर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु मैदाने जंग में जाने के लिये तैयार हुए तो इमाम आली मक़ाम ने खुद अपने बेटे को घोड़े पर सवार किया, अस्लेहा अपने दस्ते मुबारक से लगाए, फौलादी टोपी सर पर रखी, कमर पर पटका बांधा, तलवार हमाइल की और नेज़ा अपने दस्ते अक्दस से उन के हाथ में दिया, बेटे ने अपने बाबा जान और खेमे में खड़ी हुई दुख रसीदा बीबियों को सलाम किया और मैदाने जंग की तरफ चल पड़े।

18 साल का यह हसीन जवान जिस का चेहरा ज़ेबा आकाए दो आलम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के जमाले जहां आरा का खुत्बा पढ़ रहा था और जिस का रूप ताबां हबीबे किब्रिया के जल्वा ज़ेबा की याद दिला रहा था, मैदाने कार ज़ार में पहुंच गया, असदुल्लाहि शेर ने सफे अज़्दा की तरफ नज़र की, जुलफिकारे हैदरी चमकाया और यह रज्ज पढ़नी शुरू की:

أَنَا عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنٍ بْنُ عَلِيٍّ تَحْرُقُ أَهْلُ الْبَيْتِ أَوْلَىٰ بِالنَّبِيِّ

यानी ऐ यज़ीदियो! जान लो कि मैं अली अकबर हूँ, मेरे बाप का नाम हुसैन है जो फातिहे खैबर अली हैदर के नूरे नज़र हैं और कान खोल कर सुन लो कि हम अहले बैते रिसालत हैं, अल्लाह के प्यारे रसूल से सारी दुनिया में हम से ज़्यादा कोई करीबी नहीं।

शहज़ादए आली वकार ने जिस वक़्त यह रज्ज पढ़ी होगी, मैदाने करबला का एक-एक चप्पा और रेगिस्ताने कूफा का एक-एक ज़रा कांप गया होगा मगर यज़ीदी जिन का दिल पत्थर से भी ज़्यादा सख्त था उन्होंने ने कोई असर न लिया और उन का सीना अहले बैते नुबुव्वत के कीने से पाक न हुआ।

फिर आप ने फरमाया ऐ ज़ालिमो! अगर तुम औलादे रसूल के खून के प्यासे हो तो जो शख्स तुम में से बहादुर हो उसे मैदान में भेजो, जोरे असदुल्लाहि देखना हो तो मेरे मुकाबला में आओ, मगर किस की

हिम्मत थी कि आगे बढ़ता और किस के दिल में ताबो-तवां थी कि तन्हा शेर ज़मां के सामने आता, जब बार-बार की ललकार के बावजूद कोई मुक़ाबला में नहीं आया तो आप ने खुद ही आगे बढ़ कर दुश्मनों की सफ़ों पर हमला कर दिया, जिस तरफ का रुख किया यज़ीदी लश्कर काई की तरह छटता चला गया और एक-एक वार कई-कई देव पैकर जवानों को गिरा दिया। कभी लश्कर के मैमना पर चमके तो उसे मुन्तशिर कर दिया और कभी पलट कर फौज के मैसरा पर झपटे तो उस की सफ़ों को दरहम बरहम कर डाला और कभी क़ल्बे लश्कर में गोता लगा कर शमशीर ज़नी का वह जौहर दिखाया कि कुश्तों के पुश्ते लगा दिये। हर तरफ शोर बरपा हो गया, बड़े-बड़े सोरमा हिम्मत हार गए और बड़े-बड़े बहादुरों के हौसले पस्त हो गए। हाशिमि शेर का हमला न था बल्कि क़हरे इलाही का एक अज़ाबे अज़ीम था जो यज़ीदियों पर नाज़िल हो गया था।

तेज़ धूप और तपते हुए रेगिस्तान में लड़ते-लड़ते जब प्यास से बकरार हो गए तो आप पलट कर इमाम आली मक़ाम की ख़िदमत में आए और अर्ज़ किया **يَا أَيُّهَا الْعَظَمَى** अब्बा जान! प्यास का बहुत ज़्यादा गुलबा है, अगर पानी का एक प्याला मिल जाए तो मैं इन सब को मौत के धाट उतार दूँ, मेहरबान बाप ने अज़ीज़ बेटे की प्यास देखी मगर यहां पानी कहाँ था तो इस तिश्नए शहादत को पिलाया जाता, दस्ते शफ़क़त से चेहरए गुलगू का गर्दो-गुबार साफ़ किया, अपनी अंगूठी दी कि इसे मुंह में रख लो और फरमाया बेटा! अब तुम्हारी सैराबी का वक़्त बहुत नज़्दीक आ गया है, अन्क़रीब तुम साक़िए कौसर नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दस्ते अक़्दस से कौसर का ऐसा जाम पियोगे कि उस के बाद कभी तुम्हें प्यास नहीं सताएगी।

शफ़ीक़ बाप की तसल्ली से कुछ तस्कीन हुई तो फिर आप मैदाने जंग में पहुंच गए और दुश्मनों के मुक़ाबिल हो कर पुकरा **قُلْ مِنْ شَأْنِي** है कोई जो मेरे सामने आए। अम्र बिन सअद ने तारिक़ बिन शीस पहलवान से कहा बड़े शर्म की बात है कि एक नौजवान अकेला मैदान

में है और तुम हज़ारों की तादाद में हो, उस ने पहली मर्तबा ललकारा और जब तुम में कोई मुकाबला में न गया तो उस ने खुद आगे बढ़ कर हमला किया। तुम्हारी सफ़ों को दरहम बरहम कर दिया और तुम्हारे बहुत से बहादुरों को तहे तेग़ कर दिया, भूका है, प्यासा है और धूप में लड़ते-लड़ते थक गया है, इस हाल में वह तुम्हें फिर ललकार रहा है, मगर तुम में से कोई उस के मुकाबला की ताक़त नहीं रखता, तुफ़ है तुम्हारे दावाएँ शुजाअत पर। अगर कुछ ग़ैरत है तो मैदान में पहुँच कर उस का मुकाबला कर और सर काट कर ले आ। तुम ने यह काम अंजाम दिया तो मैं वादा करता हूँ कि उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद से तुम्हें मूसिल की गवर्नरी दिला दूंगा। तारिक़ बद बख़्त गवर्नरी के लालच में फ़र्ज़न्दे रसूल का ख़ून बहाने के लिये दौड़ पड़ा और सामने पहुँचते ही शबीहे पयम्बर पर नेज़ा से हमला कर दिया, मगर हाशिमि शेर ने कमाले हुनरमन्दी से उस के वार को बेकार करके सीने पर ऐसा नेज़ा मारा कि पीठ से निकल गया और वह घोड़े से गिर गया, शहज़ादे ने उस को रौंद डाला। तारिक़ के बेटे अम्र बिन तारिक़ ने जब इस तरह अपने बाप को क़त्ल होते देखा तो वह गुस्से से आग़ बगूला हो गया और दौड़ कर अली अकबर पर हमला कर दिया। शहज़ादे ने एक ही वार में उस का काम तमाम कर दिया। अब तारिक़ का दूसरा बेटा तलहा बिन तारिक़ अपने बाप और भाई का बदला लेने के लिये शहज़ादए हुसैन पर टूट पड़ा, हज़रत अली अकबर ने उसे भी मौत के घाट उतार दिया। शहज़ादे की हैबत से पूरा यज़ीदी लश्कर थरा गया।

इब्ने सअद ने एक मशहूर बहादुर मिसरा बिन ग़ालिब को मुकाबला के लिये भेजा, वह नेज़ा तान कर हमला करना ही चाहता था कि आप ने उस के नेज़ा को तलवार से क़लम कर दिया और फिर उस के सर पर ऐसी तलवार मारी कि वह दो टुकड़े होकर ज़मीन पर गिर पड़ा। अब किसी में हिम्मत न रही कि वह तन्हा हाशिमि शेर के मुकाबिल आता। आखिर इब्ने सअद ने महकम बिन तुफ़ैल को हज़ार सवारों के साथ एक-बारगी हमला करने के लिये भेजा, उन बद बख़्तों ने आप को

चारों तरफ से घेर कर हमूले करना शुरू कर दिये, आप भी बराबर जवाबी हमूले करते रहे और दुश्मनों को खाँको-खून में मिलाते रहे लेकिन नेज़ा और तलवार की लगा तार ज़बों से आप का तने नाज़िनीन ज़ख्मों से चूर-चूर हो गया और चमनिस्ताने फातिमा का यह फूल अपने खून से रंगीन हो गया। बिल-आखिर आप पुश्ते जीन से रूए ज़मीन पर आ गए और पुकार कर *يَا بَنِي إِسْرَءِيلَ* ऐ अब्बा जान! मेरी ख़बर गीरी फरमाइये, इमामे आली मक़ाम घोड़ा बढ़ा कर मैदान में पहुंचे और शहज़ादे को उठा कर खेमा में लाए, सर को गोद में लिया और उनके चेहरए अनवर से खून आलूद गर्दो-गुबार साफ करने लगे कि इतने में अली अकबर ने आंखें खोल दीं, इमामे पाक के आखिरी दीदार से महज़ूज़ हुए फिर आंखें बन्द हो गई और बहिश्ते बरीं को खाना हो गए। *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।*

जहां भर के यज़ीदी को प्यामे मर्ग लाएगा
शहीदाने वफा का खून नाहक रंग लाएगा

शहादत हज़रत अली असगर

इमामे आली मक़ाम के छोटे फर्ज़न्द हज़रत अली असगर जो अभी बहुत कम उम्र और शीर ख़्वार हैं, प्यास से बेचैन हैं, तिश्नगी की शिद्दत से तड़प रहे हैं, भूकी प्यासी माँ के सीने में दूध खुश्क हो चुका है, खेमा में पानी का एक क़तरा नहीं है, छोटा बच्चा सूखी ज़बान बाहर निकालता है, बेचैनी में हाथ पांव मारता है और पेचो-ताब खा कर रह जाता है, माँ से बच्चे की यह हालत देखी न गई, गोद में लिये इमामे आली मक़ाम की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया मेरे सरताज! अब अली असगर की प्यास देखी नहीं जाती, इस नन्ही सी जान की बेचैनी कुव्वते बर्दाश्त से बाहर है, इस के रोने और तड़पने से कलेजा पाश-पाश हुआ जा रहा है, आप इसको गोद में लेकर जाइये और ज़ालिमों को दिखाइये, शायद उन संगदिलों को इस बच्चे की प्यास पर तरस आ जाए और पानी के चन्द घूंट इस को पिला दें।

इमामे आली मक़ाम उस नन्हें बच्चे को सीने से लगा कर सियाह दिल दुश्मनों के सामने तशरीफ ले गए और फरमाया ऐ मेरे नाना जान का कलिमा पढ़ने वालो! यह मेरा सब से छोटा बच्चा है जो प्यास से दम तोड़ रहा है, यह अपने नन्हें-नन्हें हाथों को तुम्हारी तरफ फैला कर तुम से पानी के चन्द घूंट तलब कर रहा है, अगर तुम्हारे नज़्दीक मुजरिम हूं तो मैं हूं, इस बच्चे का तो कोई जुर्म नहीं है, इस को तो पानी पिला दो। देखो प्यास की शिद्दत से इस की हालत कैसी हो रही है, अगर तुम लोगों के दिलों में कुछ भी रहम हो तो इस नन्हें बच्चे के लिये थोड़ा सा पानी दे दो।

इमामे आली मक़ाम की इस तक़रीर का ज़ालिमाने संगे दिल पर कोई असर नहीं हुआ और बेज़बान बच्चे पर उन को ज़रा भी रहम नहीं आया, पानी के बजाए एक बद बख़्ते अज़ली हुरमला बिन काहिल ने तीर का ऐसा निशाना बांध कर मारा कि अली असगर की हलक़ को छेदता हुआ इमाम के बाज़ू में पैवस्त हो गया, हज़रत इमाम ने तीर खींचा तो हज़रत अली असगर के गले से खून का फव्वारा उबलने लगा और बच्चे ने बाप के हाथों में तड़प कर जान दे दी।

ज़ख्मी ज़िगर ख़बीसों ने तोड़ा हुसैन का

बच्चा भी शीर ख़्वार न छोड़ा हुसैन का

इमामे आली मक़ाम ने हसरत भरी निगाह आसमान की तरफ उठाई और बारगाहे खुदावन्दी में अर्ज़ किया इलाहल आलमीन! हुसैन की यह नन्ही कुर्बानी भी क़बूल फरमा ले, फिर नन्हें शहीद की लाश को अपने कलेजे से लगा कर आहिस्ता-आहिस्ता ख़ेमे की तरफ रवाना हुए। और जब मां की गोद में अली असगर की लाश को दिया तो मां ने हाए मेरा लाल-कह कर लाश को कलेजे से लगा लिया और रोते हुए कहा बेटा! मेरा प्यारा बेटा! एक मर्तबा और अपनी मां के सोखे हुए पिस्तान में मुंह लगा ले, अब तुम को अपने सीने लगाना कभी नसीब न होगा। --- हाए अपसोस!

फूल तो दो दिन बहारे जां फज़ा दिखला गए
हसरत उन गुंचों पे है जो बे खिले मुरझा गए

ताजदारे करबला इमाम आली मक़ाम की शहादत

अब जिगर पारए रसूल, शहज़ादए बतूल, अली के नूरे ऐन, मोमिनों के दिल के चैन, जन्नती नौ जवानों के सरदार, मुजाहिदों के काफ़िलए सालार, इब्ने हैदरे करार, शहंशाहे करबला, पैकरे सब्रो-रज़ा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत का वक़्त आ गया, जब आप ने मैदाने जंग में जाने का इरादा फरमाया तो हज़रत ज़ैनुल आबिदीन अपनी बीमारी की नकाहत और कमज़ोरी के बावजूद नेज़ा लिये हुए हज़रत इमाम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया बाबा जान! पहले हमें मैदाने कार ज़ार में जाने और अपनी जान के निसार करने की इजाज़त दीजिये, मेरे होते हुए आप शहीद हो जाएं यह नहीं हो सकता, इमामे आली मक़ाम ने नूरे नज़र को अपनी आगोशे मुहब्बत में लिया, प्यार किया और फरमाया बेटा! मैं तुम्हें कैसे इजाज़त दे दूँ? अली अकबर भी शहीद हो गए, कासिम भी दुनिया से चले गए और तमाम अज़ीज़ व अक़ारिब जो हमराह थे सब राहे हक़ में निसार हो चुके, मैं तुम्हें इजाज़त दे दूँ तो ख़्वातीन अहले बैत का कोई महरम नहीं रह जाएगा, इन बेकस ग़रीबुल वतन को मदीना कौन पहुंचाएगा? तुम्हारी माओं बहनों की निगह दाश्त व ख़बर ग़ीरी कौन करेगा? मेरे प्यारे बेटे! तुम्हें ज़िंदा रहना है, तुम्हें शहीद नहीं होना है, वरना मेरी नस्ल किस से चलेगी? हुसैनी सादात का सिलसिला किस से जारी होगा? मेरे ज़द व पिदर की जो अमानतें मेरे पास हैं वह किस के सुपुर्द की जायेंगी? मेरे लख्ते जिगर! यह सारी उम्मीदें तुम्हारी ज़ात से बाबस्ता हैं, देखो मेरी तरह सब्रो-इस्तिक़ामत से रहना, राहे हक़ में आनी वाली हर तक्लीफ़ व मुसीबत की बर्दाश्त करना और हर हालत में अपने नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शरीअत और उन की सुन्नत की पैरवी करना। मेरे बाद तुम ही मेरे जा नशीन हो,

तुम्हें मैदाने कार ज़ार में जाने की इजाज़त नहीं — फिर इमामे आली मक़ाम ने उन को तमाम ज़िम्मेदारियों का हामिल किया (सौंपा), अपनी दस्तारे मुबारक उतार कर उन के सर पर रख दी और उन्हें बिस्तरे अलालत पर लिटा दिया।

अब इमामे पाक अपने खेमा में तशरीफ़ लाए, संदूक खोला, कुबाए मिसी जेबे तन फरमाई और तबरूकात में से अपने नाना जान सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अमामए मुबारक सर पर बांधा, सैय्यिदुश शुहदा हज़रत अमीरे हमज़ा की ढाल पुश्त पर रखी, शेर ख़ुदा की तलवारे जुल-फिकार गले में हमाइल की (लटकाई) और जाफरे तैय्यार का नेज़ा हाथ में लिया, इस तरह ताजदार करबला, पैकरे सब्रो-रज़ा सब कुछ राहे हक़ में कुर्बान करने के बाद अब अपनी जान नज़ करने के लिये तैयार हो गए, बीबियों ने जब इस मंज़र को देखा तो उन के चेहरों के रंग उड़ गए और आंखों से मोती टपकने लगे। हज़रते जैनब ने आंसू बहाते हुए कहा प्यारे भय्या! बीबियों ने दर्द में डूबी हुई आवाज़ से कहा हमारे सरताज! और हज़रते सकीना ने रोते हुए कहा बाबा जान! कहां जा रहे हो? इस जंगल में हमें किस के सुपुर्द करके जा रहे हो? जो दरिन्दे नन्हे अली असगर पर रहम नहीं खाए वह हमारे साथ क्या सुलूक करेंगे, फरमाया अल्लाह तुम लोगों का हाफिज़ व निगहबान है। फिर आप ने तमाम अहले खेमा को सब्रो-शुक की वसियत फरमाई और सब को अपना आखिरी दीदार दिखा कर घोड़े पर सवार हो गए।

फातिमा के लाडले का आखिरी दीदार है

हश्श का हंगामा बरपा है मियाने अहलेबैत

गरीबुल वतन और बेकस मुसाफिरो का दुख रसीदा काफिला हसरत भरी निगाहों से आप को देखता रहा। पर्दा नशीनाने हरम हसरतो-यास (हसरतो-उम्मीद) की ख़ामोश तस्वीरें बनी हुई खड़ी रहीं और सब की आंखों से अश्के ग़म के मोती टपकते रहे, मगर कोई चीज़ हज़रत इमाम के पांव की बेड़ी न बन सकी, आप ने सब को ख़ुदा के

हवाले किया और दुश्मनों के सामने पहुंच गए। कई दिन के भूके प्यासे हैं और बेटों, भाईयों, भतीजों और जां निसार साथियों के ग़म से निढाल हैं, इस के बावजूद पहाड़ों की तरह जमी हुई फौजों के मुकाबले में शेर की तरह डट कर खड़े हो गए और एक बलबला अंग्रेज़ रज़्ज़ पढ़ी जो आप के नसब और ज़ाती फज़ाइल पर मुश्तमिल थी, फिर आप ने एक फसीह व बलीग़ तक़रीर की, उस में आप ने हम्दो-सल्लात के बाद फरमाया ऐ लोगो! तुम जिस रसूल का कलिमा पढ़ते हो उसी रसूल का इरशाद है कि जिस ने हसन व हुसैन से दुश्मनी की उस ने मुझ से दुश्मनी की और जिस ने मुझ से दुश्मनी की उस ने अल्लाह तआला से दुश्मनी की। तो ऐ यज़ीदियो! अल्लाह से डरो और मेरी दुश्मनी से बाज़ आओ, अगर वाकई खुदा व रसूल पर ईमान रखते हो तो सोचो उस खुदाए शहीद व बसीर को क्या जवाब दोगे? और रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को क्या मुंह दिखाओगे? बेवफाओ! तुम ने मुझे खुतूत भेज कर बुलाया और जब मैं यहां आया तो तुम ने मेरे साथ ऐसा बुरा सुलूक किया कि मज़ालिम की इन्तहा कर दी, ज़ालिमो! तुम ने मेरे बेटों, भाईयों और भतीजों को खाको-खून में तड़पाया चमने ज़हरा के एक-एक फूल को काट डाला, मेरे तमाम साथियों को शहीद कर दिया और अब मेरे खून के प्यासे हो, अपने रसूल का घर वीरान करने वालो! अगर कियामत पर ईमान रखते हो तो अपने अंजाम पर गौर करो और अपनी आक़िबत पर नज़र डालो, फिर यह भी सोचो कि मैं कौन हूं? किस का नवासा हूं? मेरे वालिद कौन हैं? मेरी वालिदा किस की लख्त्ते जिगर हैं? मैं उन्हीं फातिमा ज़हरा का फर्ज़न्द हूं कि जिन के पुलसिरात पर गुज़रते वक़्त अर्श से निदा की जाएगी कि ऐ अहले महशर! अपने सरों को झुका लो और अपनी आंखें बन्द कर लो, हज़रत खातूने जन्नत सत्तर हज़ार हूरों के साथ गुज़रने वाली हैं। बे गैरतो! अब भी वक़्त है, शर्म से काम लो और मेरे खून से अपने हाथों को रंगीन मत करो।

हज़रत इमाम की तक़रीर सुन कर यज़ीदी लश्कर के बहुत से लोग

मुतअस्तिर हो गए और उन की आंखों से आंसू जारी हो गए लेकिन शिमेर वगैरा बंद बख्त खबीसों ने कोई असर न लिया बल्कि जब उन्होंने लश्करियों पर हज़रत इमाम की तक़रीर का कुछ असर देखा तो शोरो-गुल मचाना शुरू कर दिया कि आप या तो यज़ीद की बैअत कर लें और या तो जंग के लिये तैयार हो जायें, इस के अलावा हम कुछ सुनना नहीं चाहते। इमाम ने फरमाया ऐ बंद बातिनो! मुझे ख़ूब मालूम है कि तुम्हारे दिलों पर शकावत व बंद बख़्ती की मोहर लग चुकी है और तुम्हारी गैरते ईमानी मुर्दा हो चुकी है लेकिन मैं ने यह तक़रीर सिर्फ़ इतमामे हुज्जत के लिये की है ताकि तुम यह न कह सको कि हम ने हक़ और इमामे बरहक़ को नहीं पहचाना था। अल्लहुमु लिಲ್ಲाह! मैं ने तुम्हारा यह उज़र (बहाना) ख़त्म कर दिया। अब रहा यज़ीद की बैअत का सवाल? तो यह मुझ से हरगिज़ नहीं हो सकता कि मैं बातिल के सामने सर झुका दूँ।

मैं हक़ बातिल से हरगिज़ ख़ौफ़ खा सकता नहीं
सर कटा सकता है लेकिन सर झुका सकता नहीं

इमामे आली मक़ाम ने जब देखा कि यह बंद बख़्त मेरे क़त्ल का वबाल अपनी गर्दन पर ज़रूर लेंगे और मेरा ख़ून बहाने से किसी तरह बाज़ नहीं आयेंगे तो आप ने फरमाया अब तुम लोग जो इरादा रखते हो पूरा करो और जिसे मेरे मुक़ाबला के लिये भेजना चाहते हो भेजो। बड़े बड़े मशहूर बहादुर जो शेर ख़ुदा के शेर से मुक़ाबला के लिये महफूज़ रखे गए थे, उन में से इब्ने सअद ने सब से पहले तमीम बिन कहतबा को हज़रत इमाम से जंग करने के लिये भेजा, जो मुल्के शाम का नामी गरामी पहलवान था, वह ग़ुरूर व तम्किनत (घमन्ड) से हाथी की तरह झूमता हुआ और अपनी बहादुरी की डींगें मारता हुआ हज़रत के सामने आया और पहुंचते ही आप पर हमला करना चाहा, अभी उस का हाथ उठा ही था कि शेर ख़ुदा के शेर ने जुलफ़िक़ारे हैदरी से ऐसा जंचा तुला वार किया कि उस का सर जिस्म से उड़ा दिया और उसके घमन्ड को खाक में मिला दिया।

फिर यज़ीद अबतही बड़े कर्रो-फर के साथ आगे बढ़ा और चाहा कि इमाम के मुकाबिल बहादुरी का जौहर दिखा कर यज़ीदियों की जमाअत में अपनी शाबाशी हासिल करे और इनाम व इकराम का मुस्तहक़ बने। आप के सामने पहुंच एक नारा मारा और कहा कि शाम व इराक़ के बहादुराने कोह शिकन में मेरी बहादुरी का गुलगुला (चर्चा) है, मैं रूम व मिस्र में शोहरए आफाक हूं, बड़े-बड़े बहादुरों को आंख झपकते मौत के घाट उतारता हूं, सारी दुनिया के लोग मेरी शुजाअत व बहादुरी का लोहा मानते हैं और मेरे सामने भेड़ बकरी की तरह भागते हैं, किसी में मुझ से मुकाबला की ताकत नहीं, आज तुम मेरी कुव्वत और मेरे दाव पेच को देखो। इमामे आली मक़ाम ने फरमाया तू मुझे जानता नहीं, मैं अपनी रगों में हाशिमि खून रखता हूं, फातिहे खैबर, शेर ख़ुदा, अली मुशिकल कुशा का शेर नर हूं, तुम जैसे ना मर्दों की मेरी निगाह में कोई हकीकत नहीं, मेरे नज़्दीक मक्खी और मच्छर से ज़्यादा तेरी हैसियत नहीं, शामी जवान यह सुन कर आग बगूला हो गया और फौरन घोड़ा कुदा कर आप पर तलवार का वार कर दिया, हज़रत इमाम ने उस के वार को बेकार कर दिया और फिर झपट कर उस की कमर पर ऐसी तलवार मारी कि वह खीरे की तरह कट कर दो टुकड़े हो गया और मुंह के बल ज़मीन पर गिर पड़ा।

गिरा फौलाद का टुकड़ा ज़मीं पर सर निगूँ होकर

तकबुर बह गया ज़ख्मों के रस्ते मौजे खूँ होकर

बदर बिन सुहैल यमनी इस मंज़र को देख कर गुस्से से लाल पीला हो गया और इब्ने सअद से कहा तुम ने किन गंवारों को हुसैन के मुकाबला में भेज दिया जो दो हाथ भी जम कर मुकाबला नहीं कर सके, मेरे चारों बेटों में से किसी एक को भेज दे, फिर देख अभी मिंटों में हुसैन का सर काट कर लाते हैं, इब्ने सअद ने उस के बड़े बेटे को इशारा किया वह घोड़ा कुदाता हुआ इमाम आली मक़ाम के सामने पहुंच गया, आप ने फरमाया बेहतर होता कि तेरा बाप मुकाबला में आता ताकि वह तुझे खाको-खून में तड़पता हुआ न देखता। फिर आप

ने जुलफिकारे हैदरी से एक ही वार में उस का काम तमाम करके जहन्नम में पहुंचा दिया।

बदर ने जब अपने मशहूर शहसवार बेटे को इस तरह ज़िल्लत के साथ क़त्ल होता हुआ देखा तो गैज़ो-ग़ज़ब का पुतला बन कर दांत पीसते हुए घोड़ा दौड़ा कर इमाम के सामने आया और पहुंचते ही नेज़ा से वार किया, आप ने उस के नेज़ा को क़लम कर दिया, उस ने फौरन तलवार संभाली और कहा हुसैन! देखना मैं वह शमशीर मारूंगा हूँ कि अगर पहाड़ पर मारूँ तो वह सुर्मा बन जाए, यह कहते हुए इमाम पर तलवार चला दी। आप ने उस के वार को ख़ाली कर दिया और उस पर जुलफिकार का ऐसा भरपूर हाथ मारा कि बदर का सर कट कर गेंद की तरह दूर जाकर गिरा।

इस तरह शाम व इराक़ के एक से एक बहादुर हज़रते इमाम के मुक़ाबिल आते रहे मगर जो भी सामने आया आप ने उसे मौत के घाट उतार दिया, कोई उन में से ज़िंदा बच कर वापस नहीं गया। शेर खुदा के शेर ने तीन दिन का भूका प्यासा होने के बावजूद शूजाज़त व बहादुरी के वह जौहर दिखाए कि ज़मीने करबला में बहादुराने कूफ़ा व शाम का खेत बो दिया। किसी के सीने में नेज़ा मारा और पार निकाल दिया, किसी को नेज़ा की अनी (नोक) पर उठा कर ज़मीन पर पटक दिया, उस की हड्डियां टूट गयीं, किसी का पटका पकड़ कर ज़मीन पर गिरा दिया और घोड़े की टापों से उसको रौंद डाला, किसी की कमर पर तलवार मारी तो वह दो टुकड़े होकर ज़मीन पर गिरा, किसी की गर्दन पर जुलफिकारे हैदरी चलाई तो उस का सर बेल की तरह लढ़कता हुआ चला गया और किसी के सर पर तलवारे आबदार मारी तो जीन तक कट गया।

गरज़ कि इमामे आली मक़ाम ने दुश्मनों की लाशों का अंबार लगा दिया। बहादुराने शाम व इराक़ के खूनों से करबाला के प्यासे रेगिस्तान को सैराब कर दिया। बड़े-बड़े सफ़ शिकन बहादुर काम आ गए और मशहूर जंगू पहलवान मौत के घाट उतर गए, आप की हैबत व

शुजाअत से दुश्मनों के दिल थरा गए और बड़े-बड़े घमडियों के छक्के छूट गए, दुश्मनों के लश्कर में शोर बरपा हो गया कि जंग का यह अंदाज रहा तो हमारी जमाअत का एक सिपाही बच कर नहीं जा सकेगा, सबकी औरतें बेवा हो जायेंगी और सारे बच्चे यतीम हो जायेंगे। लिहाजा अब मौका मत दो और चारों तरफ से घेर कर हमला करो।

रूबाह सफत यजीदी जब दस्त बदस्त की जंग में बुरी तरह शिकस्त खाए तो उन्होंने ने यही तरीका इस्तिथार किया कि हजारों ने चारों तरफ से घेर कर हमला करना शुरू कर दिया।

वो गुल एजारे फातिमा खारों में घिर गया

तन्हा अली का लाल हजारों में घिर गया

अब सैकड़ों तलवारें बयक वक्त चमकने लगीं, पचासों नेजे आपस में टकराने लगे और दुश्मन बढ़-बढ़ कर इमाम पर वार करने लगे। इधर आप की तलवार जलाले हैदरी की तस्वीर और ला सैफ इल्ला जुलफिकार की तपसीर बनी हुई थी, आप तेगे आबदार (चमचमाती हुई तलवार) के जौहर दिखा रहे थे, जिस तरफ हमला करते परे के परे काट डालते और दुश्मनों के सरों को इस तरह उड़ाते जैसे बादे खज्जों के झोंके पत्ते गिराते हैं।

इब्ने सअद को जब इस तरह की जंग में भी कामयाबी की उम्मीद नजर न आई तो उस ने हुक्म दिया कि चारों तरफ से तीरों का मींह बरसाया जाए और जब खूब जख्मी हो जायें तब नेजों से हमला किया जाए, तीर अंदाजों ने आप को चारों तरफ से घेर लिया और बयक वक्त हजारों तीर कमानों से छूटने लगे और तीरों की बारिश शुरू हो गई, थोड़ा इस कदर जख्मी हो गया कि उस में काम करने की ताकत न रही, मजबूरन हजरत इमाम को एक जगह ठहरना पड़ा, हर तरफ से तीर आ रहे हैं और इमाम मजलूम का जिस्मे अक्दस तीरों का निशाना बना हुआ है, तने नाजनीन जख्मों से चूर और लहू लुहान हो रहा है। बेवफा कूफियों ने जिगर पारए रसूल, फर्जन्दे बतूल को मेहमान बुला कर उन के साथ यह सुलूक किया, यहां तक कि जहेर में बुझा हुआ

एक तीर आप की उस मुक़द्दस पेशानी पर लगा जिसे रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने हज़ारों बार चूमा था, तीर लगते ही चेहरा अनवर पर खून का धारा बह निकला, आप ग़श खा कर घोड़े की जीन से फर्श ज़मीन पर आ गए, अब ज़ालिमों ने नेज़ों से हमला किया, शैतान सिफत सनान ने एक ऐसा नेज़ा मारा जो तने अक़्दस के पार हो गया। तीर और नेज़ा व शमशीर के 72 ज़ख़्म खाने के बाद आप सज्दे में गिरे और अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए वासिले बहक़ हो गए। 56-साल 5 माह 5 दिन की उम्र में, जुमा के दिन मुहर्रम की दस्वी तारीख़ 61 हिजरी मुताबिक़ 680 ई० को इमामे आली मक़ाम ने इस दारे फ़ानी से रिहलत फरमाई। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

यज़ीदियों ने समझा कि हम ने हुसैन का मार डाला और वह मर गए लेकिन ज़मीने करबला का ज़र्ज़र ज़बाने हाल से हमेशा यह पुकारता रहेगा कि ऐ हुसैन!

तू जिंदा है वल्लाह तू जिंदा है वल्लाह

मेरी चश्मे आलम से छुप जाने वाले

नज़र बिन ख़रशा आप के सरे मुबारक को तने अक़्दस से जुदा करने के लिये आगे बढ़ा मगर इमाम आली मक़ाम की हैबत से उस के हाथ कांप गए और तलवार छूट गई। फिर बद बख़्ते अज़ली खौली बिन यज़ीद, सनान बिन अनस, शिबल बिन यज़ीद या शिमर ख़बीस ने आप के सरे अक़्दस को तने मुबारक से जुदा किया।

शाह अस्त हुसैन बादशाह अस्त हुसैन

दीन अस्त हुसैन दीने पनाह अस्त हुसैन

सर दाद न दाद दस्त दर दस्ते यज़ीद

हक्का कि बिनाए ला इलाह अस्त हुसैन

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

ऐ हुसैन

बैकल बलराम पुरी

कलिमए तौहीद है तेरी शहादत ऐ हुसैन
तू न होता तो न रह जाती सदाकत ऐ हुसैन
तेरी कुर्बानी ने ज़िंदा कर दिया इस्लाम को
वो रहेगा ता अबद तेरी बदौलत ऐ हुसैन
तालिबाने मंज़िल अम्नो-सुकू के वास्ते
तेरी कुर्बानी हुई शम्ए हिदायत ऐ हुसैन
मिल्लते इस्लाम को मिलता है एक दर्से हयात
कैसे भूलें हम तेरा यौमे शहादत ऐ हुसैन
एहतमाल आने का है फिर से यज़ीदियत का दौर
फिर जहाने नौ को है तेरी ज़रूरत ऐ हुसैन
हाल मेरा कुछ भी हो मेरा अक़ीदा है यही
बद़शवाएगी मुझे तेरी मुहब्बत ऐ हुसैन

रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

एक मर्तबा हम और आप सब लोग मिल कर मक्का के सरकार
मदीना के ताजदार दो आलम के मुख्तार जनाब अहमदे मुज्ताबा मुहम्मद
मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम और उन की आल व
अस्हाब पर अक़ीदत व मुहब्बत के साथ दुरुदो-सलाम की डालियां पेश करें।

اللهم صل على سيدنا ومولانا محمد وعلى آله وأصحابه وأئمة ودارك وستر

अल्लाहुम्मा सल्लि अला सैय्दिना व मौलाना मुहम्मदिवं व अला आलिही
व अस्हाबिही व अहलि बैतिही व बारिक् व सल्लिम्।

रहमते आलम को सदम-ए-जानकाह

वाकिए करबला से नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम पर जो सदमा जांकाह गुजरा और उन के कल्बे नाजुक को जो दुख पहुंचा वह अंदाज़ व कियास से बाहर है। हज़रत सलमह जो हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के आज़ाद कर्दा गुलाम हज़रत अबू राफ़ेअ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की जौजा हैं, वह बयान फरमाती हैं कि मैं उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमह रज़ियल्लाहु तआला अन्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुई तो देखा कि वह रो रही हैं, मैं ने अर्ज किया आप रोती क्यों हैं? उन्होंने ने फरमाया मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा कि उन के सरे मुबारक और रीशे अक़दस (दाढ़ी) पर गर्दों-गुबार है, मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! आप का यह क्या हाल है? फरमाया मैं अभी हुसैन की शहादतगाह पर गया था।

(मिशकात शरीफ:570)

और हज़रते अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं कि मैं एक रोज़ दोपहर के वक़्त ख़्वाब में हुज़ूर आकाए दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के जमाले जहां आरा के दीदार से मुशरफ़ हुआ, मैं ने देखा हुज़ूर के बाले मुबारक चेहरए अनवर पर बिखरे हुए गर्द आलूद हैं और दस्ते अक़दस में खून से भरी हुई एक बोतल है, मैंने अर्ज किया या रसूलुल्लाह! मेरी जान आप पर फिदा और मेरे मां-बाप औप पर कुर्बान हों, यह बोतल कैसी है? और इस कद्र रंजो-माल क्यों है? इरशाद फरमाया कि इस बोतल में मेरे नूरे नज़र हुसैन और उनके जां निसार साथियों का खून है, जिसे मैं आज सुबह से उठा रहा हूं और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाते हैं कि मैं ने उस वक़्त और तारीख़ का याद रखा, कुछ दिनों के बाद जब ख़बर आई तो मालूम हुआ कि हज़रत हुसैन उसी वक़्त शहीद किये गए थे।

(रवाहुल बैहकी, नूरुल अबसार:120)

उस हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम

खास्सए रब्बे दावर पे लाखों सलाम
मालिके हौजे कौसर पे लाखों सलाम
नूरे ऐने पयम्बर पे लाखों सलाम
तिशनए आबे खंजर पे लाखों सलाम

उस शहीदे दिलावर पे लाखों सलाम

उस हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम

जिस को झूला फिरिश्ते झुलाते रहे
लौरियां दे के नूरी सुलाते रहे
जिस को कंधों पे आका बिठाते रहे
जिस पे सफ्फाक खंजर चलाते रहे

उस शहीदों के अप्सर पे लाखों सलाम

उस हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम

जो जवानाने जन्नत का सालार है
जिस का नाना दो आलम का सरदार है
जो सरापाए महबूबे गुफफार है
जिस का सर दश्त में जेरे तलवार है

उस सदाकत के पैकर पे लाखों सलाम

उस हुसैन इब्ने हैदर पे लाखों सलाम

वाकिआत बादे शहादत

الحمد لله رب العالمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين وعلى آله
 واصحابه الذين قاموا بنصرة الدين المتين۔ اما بعد، فاعوذ بالله من الشيطان الرجيم
 بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ۔ وَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظَّالِمُونَ۔ (پ: ۱۳، ع: ۱۹)
 صَدَقَ اللَّهُ وَصَدَقَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ تَبَارَكَ وَتَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ تَسْلِيمًا كَثِيرًا كَثِيرًا۔

सब लोग मिल कर बजावाजे बुलंद तमाम आलम के मोहसिने
 आजम रहमते आलम नूरे मुजस्सम जनाब अहमदे मुज्जबा मुहम्मद
 मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की बारगाहे बेकस पनाह
 में दुरुद शरोफ का नज़ाना और हदिया पेश करें।

صلى الله على النبي الامي واله صلى الله عليه وسلم صلاة وسلاماً عليك يا رسول الله

سَلِّمْ عَلَى النَّبِيِّ وَالْأَهْلِ وَالْحَقِّ وَالْحَقِّ وَالْحَقِّ وَالْحَقِّ وَالْحَقِّ وَالْحَقِّ وَالْحَقِّ وَالْحَقِّ وَالْحَقِّ
 سَلِّمْ عَلَى النَّبِيِّ وَالْأَهْلِ وَالْحَقِّ وَالْحَقِّ وَالْحَقِّ وَالْحَقِّ وَالْحَقِّ وَالْحَقِّ وَالْحَقِّ وَالْحَقِّ

जब इंसान को अल्लाह तआला का खौफ नहीं होता और हुकूमते
 वक़्त का अदेशा नहीं रहता फिर अपनी नेक नामी व बद नामी की भी
 परवाह नहीं करता तो अजीम से अजीम तर गुनाह करने और बड़ा से
 बड़ा जुल्म ढाने से भी वह नहीं डरता। यही हाल यजीदियों का हुआ कि
 खुदाए तआला का खौफ उन के दिलों में नहीं था और हुकूमते वक़्त के
 अदेशा का सवाल ही नहीं पैदा होता कि उसी के हुक्म से अहले बैते
 रिसालत पे जुल्मो-जफ़ा का पहाड़ तोड़ने के लिये भेजे ही गए थे और
 उन्हें इस बात की भी परवाह नहीं थी कि दुनिया वालों की निगाह में
 हम ज़लील व रुस्वा हो जायेंगे। फिर उन्हें किसी तरह का जुल्म का
 ढाने कोई चीज़ मानेज़ न हुई। ——— नवासए रसूल जिगर गोशए बतूल
 को सिर्फ बेदरदी के साथ शहीद करने पर उन्होंने ने इक्तिफा नहीं किया
 बल्कि आप के जिस्मे अक़दस से कपड़े भी उतार लिये और घोड़ों की
 टापों से आप की लाशे मुबारक को पामाल करके हड्डियों को चकना
 चूर भी किया, फिर खेमा की तरफ बढ़े, तमाम अस्बाब और सारा

सामान लूट लिया। यहां तक कि पर्दा नशीन ख्वातीन के सरो से चादरें खींच लीं और खेमों को भी जला कर राख कर दिया। (तबरी:2/286)

जल गया खेमए अतहर लेकिन
दीन पर आंच नहीं आने दी
मरहबा जुर्तते इब्ने हैदर
सर दिया, बात नहीं जाने दी

इमामे आली मक़ाम का सरे मुबारक खौली बिन यज़ीद के हाथ इब्ने-ज़ियाद के पास भेजा गया और बाकी शुहदा के सर कैस इब्ने अश्अस और शिमेर वगैरा के साथ रवाना किये गए। खुद इब्ने सअद उस रोज़ करबला में ठहर गया और 11 मुहर्रम की सुबह को अपनी फौज के तमाम मक्तूलीन को जमा किया, उन पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और दफन कर दिया मगर शुहदाए राहे हक़ की लाशों को ऐसे ही बेगोरो-कफन पड़ी रहने दिया फिर पर्दा नशीन ख्वातीन जो बीमार जैनुल आबिदीन और चन्द छोटे बच्चों के साथ खुले आसमान के नीचे रात भर मैदान में पड़ी रहीं उन्हें कैदी बना कर कूफा की तरफ रवाना हुआ।

यज़ीदी फौज के एक सिपाही का बयान है कि जब हज़रत ज़ैनब अपने भाई हज़रत हुसैन की लाश से गुज़रीं तो इन्तिहाई दर्द के साथ रोते हुए कहा **وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ** आप पर अल्लाह और मलाइका, मुक़रबीन का दुरूदो-सलाम हो, हुसैन मैदान में पड़े हुए हैं, खून में डूबे हुए हैं और तमाम अजुज़ा टुकड़े-टुकड़े हैं, **وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ** आप की बेटियां कैद में जा रही हैं, आपकी औलाद क़त्ल की गई, हवा उनकी लाशों पर खाक उड़ा रही है, हज़रत ज़ैनब के इन अल्फाज़ को सुन कर दोस्त व दुश्मन सब रोने लगे। (तबरी:2/283)

फिर जब करबला से यज़ीदी लश्कर चला गया तो कबीलाए बनू असद जो करीब के गांव गाज़िरया में रहता था, हज़रत इमाम और उन के साथियों की लाशों को आ कर दफन किया।

इमाम का सरे अनवर और इब्ने ज़ियाद

इमाम आली मक़ाम का सरे अनवर जब कूफ़ा पहुंचा और भरे दरबार में इब्ने ज़ियाद के सामने एक तश्त में रखा गया, उस वक़्त ज़ालिम इब्ने ज़ियाद के हाथ में छड़ी थी जिस से वह आप के लबों और दांतों को ठोकर देने लगा। सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के बूढ़े सहाबी हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उस वक़्त वहां मौजूद थे, इस गुस्ताखी को देख कर तड़प उठे और रोते हुए फरमाया छड़ी को हटा ले, खुदा की कसम मैं ने अपनी आंखों से रसूल अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को देखा है कि वह इन लबों और दांतों को चूमा करते थे और फिर वह ज़ारो-क़तार रोने लगे। इब्ने ज़ियाद ने कहा खुदा तुझे ख़ूब रुलाए, अगर तू बुद्धि न होता और तेरी अक्ल ख़राब न हो गई होती तो मैं तेरी गर्दन मार देता। हज़रत ज़ैद वहां से उठे और यह कहते हुए चले गए कि गुलाम ने गुलाम को हाकिम बना दिया, जिस ने सारे बन्दगाने खुदा को अपना ख़ाना ज़ाद बना दिया। ऐ कौमे अरब! आज से तुम सब गुलाम हो गए, तुम ने फ़र्ज़न्दे रसूल को क़त्ल किया और मरजाना के बेटे को अपना हाकिम बना लिया जो अच्च्यों को क़त्ल कर रहा है और बुरों को गुलाम बना रहा है। तुम ने ज़िल्लत को ग़वारा कर लिया और जो ज़िल्लत को ग़वारा करे उस पर खुदा की मार हो। (तबरी:2/287)

एक जां निसार की और शहादत

ऐतान हुआ कि लोग बड़ी मस्जिद में जमा हो जाएं, जब बहुत से लोग वहां इकट्ठा हो गए तो इब्ने ज़ियाद बद निहाद मस्जिद में गया और मिम्बर पर खड़े होकर कहा, अल्लाह का शुक्र है जिस ने हक़ और अहले हक़ की मदद की, अमीरुल मोमिनीन यज़ीद बिन मुआविया और उन के साथियों को कामयाबी अता फरमाई और उन को फत्हो-नुस्रत से सरफराज़ किया और कज़़ाब इब्ने कज़़ाब हुसैन बिन अली और उन

के गिरोह को शिकस्त दी और उन को हलाक किया। (मआज़ल्लाह सुम्म मआज़ल्लाह) जब उस बद बख्त ने हज़रत इमाम हुसैन और उन के वालिदे गरामी हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा को कज़्ज़ाब कहा तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन अफीफ अज़दी जो मुहिब्बे अहले बैत थे, दोनों आंखों से माज़ूर थे और सारा दिन ज़िक्रो-फिक और नमाज़ पढ़ने के लिये मस्जिद में गुज़ारते थे, वह इब्ने ज़ियाद की गुस्ताखी को बर्दाश्त न कर सके, बेताब होकर खड़े हो गए और फर्ते ग़ज़ब से कांपते हुए फरमाया ओ इब्ने मरजाना! तू ही कज़्ज़ाब इब्ने कज़्ज़ाब है और जिस ने तुझे हाकिम बनाया वह भी कज़्ज़ाब है। हुसैन सच्चे, उनके बाप सच्चे, उन के नाना सच्चे। तुम लोग औलादे रसूल के क़त्ल के मुजरिम हो और बातें सिद्दीकीन जैसी करते हो। इब्ने ज़ियाद ने कहा इसे पकड़ लो, सिपाहियों ने गिरिफ्तार कर लिया, इब्ने अफीफ की कौम के बहुत से लोग वहां मौजूद थे, उन्होंने ने उन को छुड़ा लिया, मगर ज़ालिम इब्ने ज़ियाद को उन का खून बहाए बगैर चैन न आया, घर से बुलवा कर उन को क़त्ल किया और शाहराहे आम पर उनकी लाश को दार (सूली) पर लटका दिया, इस तरह कौसर की साहिल पर एक जां निसार का और इज़ाफा हुआ। (तबरी:2/289)

फिर इब्ने ज़ियाद बद निहाद ने इमामे आली मक़ाम के सरे मुबारक को कूफा के कूचा व बाज़ार में फिरवाया और इस तरह अपनी बेगैरती व बेहयाई का मुज़ाहरा किया। उस के बाद हज़रत इमाम और उनके तमाम जां निसार शुहदाए किराम के सरों को और असीराने अहले बैत को एक जमाअत के हमूराह शिम्बर वगैरा की सर-करदगी में यज़ीद पलीद के पास इस हालत में रवाना किया कि हज़रत जैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हाथ पांव को जंजीरों में जकड़ दिया गया था और बीबियों को ऊंटों की नंगी पीठों पर बिठाया गया था और ज़ालिम ने हुक्म दिया था कि सरों को नेज़ों पर छड़ाए हुए आबादियों में से होकर गुज़रना ताकि लोगों को इब्रत हो और आइन्दा कोई यज़ीद की मुख़ालफ़त पर आम़ादा न हो।

गैबी शेअूर

जब अशिकया की जमाअत इमामे आली मक़ाम के सरे मुबारक को लेकर पहली मंज़िल पर एक गिरजा घर के पास रात गुज़ारने के लिये उतरी और बरिवायत अल्लामा सब्बान शराब पी रही थी, तो एक लोहे का क़लम ग़ैब से नमूदार हुआ, जिस ने खून से यह शेअूर लिखा:

اَرْجُوا اِنَّهُ قَتَلَتْ حُسَيْنًا شَفَاعَةُ حَبْلِهِ يَوْمَ الْحِسَابِ

यानी जिन्होंने ने हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को शहीद किया है क्या वह इस बात की उम्मीद रखते हैं कि उन के नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम क़ियामत के दिन उन की शफ़ाअत करेंगे?

और बाज़ रिवायतों में है कि दीवार पर यह शेअूर पहले से लिखा हुआ था। बद बख़्तों ने जब देखा, तो बहुत मुतअज्जिब हुए और गिरजा घर के राहिब से पूछा कि यह शेअूर किस ने लिखा है और कब का लिखा हुआ है? राहिब ने कहा किस ने लिखा है यह तो मुझे मालूम नहीं अल्बत्ता इतना जानता हूँ कि तुम्हारे नबी के ज़माने से पांच सौ बरस पहले का लिखा हुआ है।

राहिब ने जब शहीदों के सरों को नेज़ों पर और चन्द बीबियों और बच्चों को बहालते असीरी देखा तो उस के दिल पर बहुत असर हुआ और दरियाफ्त करने पर जब पूरा हाल उस को मालूम हुआ तो कहा मजज़ल्लाह! तुम लोग कितने बुरे आदमी हो कि अपने नबी की औलाद की क़त्ल किये हो और फिर उन के बाल बच्चों को कैदी बनाए हो।

राहिब का क़बूले इस्लाम

फिर राहिब ने उन बद बख़्तों से कहा कि अगर रात भर अपने नबी के नवासे का सर हमारे पास रहने दो तो हम तुम्हें दस हज़ार दिरहम देंगे। वह लोग इस पर राज़ी हो गए, राहिब ने रक़म अदा करके हज़रत का सरे मुबारक लिया और अपने मख़सूस कमरा में ले गया, फिर

सरे अनवर, चेहरए मुबारक और मुकद्दस जुल्फों और दाढ़ी के बालों पर जो गर्दो-गुबार और खून वगैरा जमा हुआ था, धोया और इत्रो-काफूर लगाया और बड़ी ताजीमो-तकरीम के साथ अपने सामने रख कर उस की जियारत करने लगा। खुदाए अज़्ज व जल्ल उस के इस अदब से राजी हुआ, उस ने अपनी रहमत के दरवाजे खोल दिये, राहिब रोने लगा और उस की निगाहों से पर्दे उठ गए, उस ने देखा कि सरे अक्दस से आसमान तक नूर ही नूर है, जब उस ने सरे मुबारक की यह करामत देखी तो सिदक दिल से **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ** ता इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह पढ़ कर मुसलमान हो गया और सुबह को सर उन के हवाले कर दिया।

बद बख्त जब वहां से चल कर दूसरी मंज़िल पर पहुंचे और दिरहमों को तक्सीम करने के लिये थैलियों के मुंह को खोला तो देखा कि सब दिरहम ठेकरी हो गए। और उनके एक तरफ यह आयते करीमा लिखी हुई है: **وَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهُ غَايَةً عَمَّا يَمْشِي الظَّالِمُونَ** ज़ालिम जो जुल्म करते हैं खुदाए तआला को उस से गाफिल हरगिज़ न जानो। (पारा:13, रूकूअ:19)

और दूसरी तरफ यह आयते मुबारका तहरीर थी **وَمَنْ يَعْلَمْ الْغَيْبَ ظَلَمُوا إِلَى** जुल्म करने वाले अन्करीब जान लेंगे कि वह किस करवट पल्टा खाएंगे। (पारा:19, रूकूअ:15)

बाजे बजे

जब यज़ीद पलीद को मालूम हुआ कि असीराने करबला और इमाम हुसैन वगैरा का सर अन्करीब दमिश्क पहुंचने वाला है तो उस ने पूरे शहर को आरास्ता करने और सब को खुशी मनाने का हुक्म दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के एक सहाबी हज़रत सहल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तिजारत के लिये मुल्के शाम आए हुए थे, जब वह दमिश्क शहर में दाखिल हुए तो उन्होंने ने देखा कि सब लोग खुशी मनाते और बाजे बजाते हैं, उन्होंने ने लोगों से उस की वजह पूछी तो बताया गया कि अहले इराक ने हुसैन इब्ने अली के सर को

यज़ीद के पास हदिया भेजा है, तमाम अहले शहर उसी की खुशी मना रहे हैं। हज़रत सहल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने एक आह भरी और पूछा कि हज़रत हुसैन का सर कौन से दरवाज़ा से लायेंगे? कहा बाबुस साअत से, आप उस की तरफ तेज़ी से बढ़े और बड़ी दौड़ धूप के बाद अहले बैत तक पहुंच गए। आप ने देखा कि एक सर जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सरे मुबारक से बहुत ज़्यादा मुशाबह है नेज़ा पर चढ़ा कर रखा गया है, उसे देख कर आप बइख़्तियार रो पड़े, अहले बैत में एक ने पूछा कि तुम हम पर क्यों रो रहे हो? हज़रत सहल ने पूछा आप का नाम क्या है? फरमाया मेरा नाम सकीना बिनते हुसैन है, उन्होंने ने फरमाया और मैं आप के नाना जान सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का सहाबी हूँ, अगर मेरे लाइक कोई खिदमत हो तो हुक्म फरमाइये, हज़रत सकीना ने फरमाया मेरे वालिद के सरे अनवर को सब से आगे करा दीजिये ताकि लोग उधर मुतवज्जह हो जाएं और हम से दूर रहें। हज़रत सहल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने चार सौ दिरहम दे कर हज़रत इमाम के सरे मुबारक को मस्तूरात से दूर करा दिया। (तज़्किरा:107)

इस वाक़िआ से मालूम हुआ कि मुहर्रम के दिनों में बाजे बजाना हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दुश्मन यज़ीदियों की सुन्नत है, आप के मुहिब्बीन का घर तो मातम कदा बना हुआ था, उन के यहां इस मौक़ा पर बाजा बजने का तो कोई सवाल ही नहीं पैदा होता। अल्बत्ता इमाम की शहादत की खुशी में यज़ीदियों ने बजाया था मगर अब इमामे आली की मुहब्बत के दावेदार बजाते हैं। खुदा तआला उन्हें समझ अता फरमाए और यज़ीदियों की सुन्नत पर अमल करने से बचाए। आमीन।

इमाम का सरे मुबारक और यज़ीद

काफ़िलए इराक़ में से जो शख़्स सब से पहले यज़ीद से मिला वह जुहर बिन कैस था, जब उस ने शहादते हुसैन की ख़बर यज़ीद को

सुनाई तो वह आबदीदा हो गया और कहा कि मैं तुम्हारी इताअत से उस वक्त खुश होता कि तुम ने हुसैन को कल्ल न किया होता। (तबरी:2/290) फिर शिमर ज़िल जौशन और मुहज़्ज़र बिन सअलबा आइज़ी सब को लिये हुए यज़ीद पत्नीद के दरवाज़े पर पहुँचे, मुहज़्ज़र ने बुलंद आवाज़ से कहा हम अमीरुल मोमिनीन के दरबार में बद तरीन और मलामत ज़दा शख़्स का सर लेकर आए हैं (मआज़ल्लाह सुम्म मआज़ल्लाह) यज़ीद ने यह सुन कर कहा सब से बदतर और मलामत ज़दा वही शख़्स है जिस को मुहज़्ज़र की मां ने जना है, फिर वह अन्दर दाख़िल हुए और इमाम आली मक़ाम के सरे मुबारक को यज़ीद के सामने तश्त में रखा, यज़ीद सरे अनवर की तरफ़ मुतवज्जह हुआ और कहा ऐ हुसैन! वल्लाह अगर तुम्हारा मामला मेरे हाथ में पड़ता तो मैं तुम को कल्ल न करता। मरवान का भाई यहया बिन हिकम उस वक्त यज़ीद के पास मौजूद था उस ने दो शेर पढ़े जिस का मतलब यह है कि इब्ने ज़ियाद कमीना और खोटे नसब वाले से इस लश्कर की क़राबत ज़्यादा है जो ज़मीने तुफ़ के पहलू में कल्ल किया गया, सुमैया की नस्ल तो संगरेज़ों की तादाद के बराबर हो गई और बिन्ते रसूलुल्लाह की नस्ल बाकी न रही। यज़ीद ने यह सुन कर यहया के सीने पर हाथ मारा और कहा ख़ामोश। (तबरी:2/291)

फिर यज़ीद पत्नीद ने इमाम आली मक़ाम के लबों और दांतों को छड़ी लगाते हुए कहा अब हमारी और इनकी मिसाल ऐसी है जैसा कि हसीन बिन अल्-हमाम शाइर ने कहा है कि हमारी क़ौम ने तो इंसाफ़ करने से इनकार कर दिया था लेकिन इन तलवारों ने इंसाफ़ कर दिया जिन से खून टपकता था।

रसूले अक्रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के एक सहाबी हज़रत अबू बरज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु वहां मौजूद थे, उन्होंने ने फरमाया ऐ यज़ीद तुम अपनी छड़ी हुसैन के दांतों और लबों से लगा रहे हो जिन को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम चूसा

करते थे, सुन लो! कियामत के दिन तुम्हारा हथ्र इब्ने ज़ियाद के साथ होगा और हुसैन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के साथ होंगे, यह कह कर वह दरबार से उठे और चले गए। (तबरी:2/291)

पहले जो जिक्र किया गया कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत की ख़बर सुन कर यज़ीद रोने लगा और फिर उस ने यह कहा कि ऐ हुसैन! वल्लाह अगर तुम्हारा मामला मेरे हाथ में पड़ता तो मैं तुम को क़त्ल न करता, इन बातों से बज़ाहिर यह मालूम होता है कि वह हज़रत इमाम हुसैन के क़त्ल से राज़ी न था लेकिन हालात बताते हैं कि यह उस की सियासत थी ताकि हमारी बद नामी न हो, इस लिये कि अगर वह वाकई राज़ी न होता तो ज़ालिम इब्ने ज़ियाद और इब्ने सअद वगैरा कातिलीने इमाम हुसैन से ज़रूर मुवाख़ज़ा करता और उन को सज़ा देता।

मदीना मुनव्वरा को वापसी

सहाबिए रसूल हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु जो हज़रत मुस्लिम बिन अक़ील के साथ कूफा में सख़्ती न करने के सबब गवर्नरी से माज़ूल कर दिये गए थे, यज़ीद ने उन्हें अहले बैते रिसालत हमदर्द समझ कर बुलाया और कहा कि हुसैन के अहलो-अयाल को इज़्ज़त व ऐहतियाम के साथ मदीना पहुंचाने का इन्तिज़ाम करो और फिर अपने को क़त्ले हुसैन से बरी साबित करने के लिये हज़रत ज़ैनुल आबिदीन को तन्हाई में बुला कर कहा कि खुदा इब्ने ज़ियाद पर लअन्ते करे, वल्लाह अगर बराहे रास्त आप के वालिद का और मेरा सामना हो जाता तो वह जो कुछ फरमाते मैं मनज़ूर कर लेता और उन को क़त्ल करना हरगिज़ गवारा न करता लेकिन जो खुदा को मनज़ूर था वह हुआ, अब आप मदीना तशरीफ ले जाइये, मुझे वहां से ख़त लिखते रहियेगा और जिस चीज़ की ज़रूरत होगी मुझे ख़बर कीजियेगा। (तबरी:2/293)

हज़रत नोमान बिन बशीर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हम्राह 30

आदमियों का हिफाजती दस्ता किया गया, वह अहले बैत को लेकर मदीना मुनव्वरा रवाना हुए और रास्ता भर निहायत ताजीम व तक्रीम के साथ पेश आते रहे। मदीना तैयिबा के लोगों को बाकिए करबला की खबर पहले ही पहुंच चुकी थी, जब यह लुटा हुआ काफिला शहर में दाखिल हुआ तो तमाम अहले मदीना, हज़रत मुहम्मद बिन हनफिय्या, उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा और खानदान की दीगर औरतें सब रोती हुई निकल पड़ीं, काफिला सीधे हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम के रौज़ए मुक़द्दसा पर हाज़िर हुआ। हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु जो अभी तक सब्रो-ज़ब्ब के पैकर बने हुए खामोश थे, जैसे ही उन की नज़र कब्रे अनवर पर पड़ी और अभी इतना ही कहा था, दादा जान! अपने नवासे का सलाम क़बूल फरमाइये कि उन के सब्र का पैमाना छलक उठा और वह इस तरह दर्द के साथ रोए और हालात बयान करने शुरू किये कि कोहराम बरपा हो गया और कियामत का नमूना काइम हो गया।

सैय्यिदुश शुहदा हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु का सरे अनवर कहा दफन किया गया इस में इख़्तिलाफ है, मशहूर यह है कि असीराने करबला के साथ यज़ीद ने आप के सरे मुबारक को मदीना तैयिबा रवाना किया जो सैय्यिदा हज़रत फातिमा ज़हरा या हज़रत इमाम हसन मुज्ताबा के पहलू में दफन किया गया। रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हुमा।

करबला के बाद यज़ीद की ख़बासत

मदीना मुनव्वरा पर चढ़ाई

हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तअ़ाला अन्हु की ज़ाते मुबारका यज़ीद की आज्ञादियों के लिये बहुत बड़ी रुकावट थी, आप की शहादत के बाद वह बिल्कुल ही बेलगाम हो गया, फिर तो हर किस्म की बुराइयों का बाज़ार गर्म हो गया। जिना, लेवातत, हराम कारी, भाई बहन का निकाह, सूद और शराब वगैरा अलानिया तौर पर राइज हो गए और नमाज़ों की पाबंदी उठ गई। फिर उस की शैतानियत यहां तक

पहुंची कि 63 हिजरी में मुस्लिम बिन उक्बा को बारह या बीस हजार लश्कर के साथ मदीना मुनव्वरा और मक्का मुअज्जमा पर हमला करने के लिये भेजा, उस बाद बख्त लश्कर ने मदीना मुनव्वरा में वह तूफान बरपा किया कि अल्-अमान वल्-हफीज, कत्लो-गारत गरी और तरह-तरह के मज़ालिम का बाज़ार गर्म किया, लोगों के घरों को लूट लिया, सात सौ सहाबा को बेगुनाह शहीद किया और ताबईन वगैरा को मिला कर कुल दस हजार से ज़्यादा शहीद किया। लड़कों को कैद कर लिया और यहां तक जुल्म किया कि वहां की पाक दामन पारसा औरतों को तीन शबाना रोज़ अपने ऊपर हलाल कर लिया। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम के रौज़ए मुक़द्दसा की सख्त बेहुरमती की, मस्जिदे नबवी में घोड़े बांधे, उन की लीद और पेशाब मिम्बरे अतहर पर पड़े, तीन रोज़ तक मस्जिदे नबवी में लोग नमाज़ से मुशरफ न हो सके, सिर्फ हज़रत सईद बिन मुसैय्यिब जो किबारे ताबईन में से थे पागल बन कर वहां हाज़िर रहे, आखिर में ज़ालिमों ने उन को गिरिफ्तार कर लिया मगर फिर दीवाना समझ कर छोड़ दिया। ख़बीस लश्कर ने एक नौजवान को पकड़ लिया, उस की मां ने मुस्लिम बिन उक्बा के पास आकर फरियाद की और उस की रिहाई के लिये बड़ी आजिज़ी मिन्नती की, मुस्लिम ने उस के लड़के को बुला कर गर्दन मार दी और सर उसकी मां के हाथ में देते हुए कहा कि तू अपने ज़िंदा रहने को ग़नीमत नहीं समझती कि बेटे को लेने आई है।

एक शख्स को जब कत्ल किया गया तो उसकी मां उम्मे यज़ीद बिन अब्दुल्लाह बिन रबीआ ने कसम खाई कि अगर मैं कुद़रत पाऊंगी तो इस ज़ालिम मुस्लिम को ज़िंदा या मुर्दा जालाऊंगी। जब वह ज़ालिम मदीना मुनव्वरा में कत्लो-गारत के बाद मक्का मुअज्जमा की तरफ़ मुतवज्जह हुआ ताकि वहां जाकर अब्दुल्लाह बिन जुबैर और वहां के उन लोगों का भी काम तमाम करे जो यज़ीद के खिलाफ़ हैं, तो इत्तिफ़ाक़न रास्ता में उस पर फ़ालिज गिरा और वह मर गया। उस की जगह यज़ीद के हुक्म के मुताबिक़ हुसैन बिन नुमैर सुकूनी काइदे

लश्कर बना, मुस्लिम को उन्होंने ने वहीं दफन कर दिया। जब यह खबीस लश्कर आगे बढ़ गया तो उस औरत को मुस्लिम के मरने का पता चला, वह कुछ आदमियों को साथ लेकर उस की कब्र पर आई ताकि उस को कब्र से निकाल कर जलाए और अपनी कसम पूरी करे। जब कब्र खोदी तो क्या देखा कि अज़दहा उस की गर्दन से लिपटा हुआ उस की नाक की हड्डी पकड़े चूस रहा है, यह देख कर सब के सब डरे और उस औरत से कहने लगे, खुदाए तआला खुद ही इसके आमाल की सज़ा इस को दे रहा है और उस ने अज़ाब का फिरिश्ता उस पर मुसल्लत कर दिया है अब तू इसको रहने दो, उस औरत ने कहा नहीं, खुदा की कसम मैं अपने अहद और कसम को पूरा करूंगी और उस को जला कर अपने दिल को ठंडा करूंगी, मजबूर होकर सब ने कहा अच्छा फिर इस को पैरों की तरफ से निकालना चाहिये, जब उधर से मिट्टी हटाई तो क्या देखा कि उसी तरह पैरों की तरफ भी एक अज़दहा लिपटा हुआ है, फिर सब ने उस औरत से कहा अब इसको छोड़ दे, इस के लिये यही अज़ाब काफी है। मगर वह औरत न मानी, वुजू करके दो रकअत नमाज़ अदा की और अल्लाह तआला के हुज़ूर में हाथ उठा कर दुआ मांगी इलाही! तू ख़ूब जानता है इस ज़ालिम पर मेरा गुस्सा मेहज़ तेरी रज़ा के लिये है, मुझे यह कुद़्रत दे कि मैं अपनी कसम पूरी करूं और उस को जालाऊं। यह दुआ करके उस ने एक लकड़ी सांप की दुम पर मारी, वह गर्दन से उतर कर चला गया, फिर दूसरे सांप को मारी वह भी चला गया, तब उन्होंने ने मुस्लिम की लाश को कब्र से निकाला और जला दिया। (शामे करबला:245)

फज़ाइले मदीना मुनव्वरा

हज़रत सअद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया لَا يَكُونُ أَهْلُ الْمَدِينَةِ أَحَدٌ إِلَّا نَسَّاعٌ كَمَا نَسَّاعُ الْبَلَحِ فِي الْمَاءِ जो शख्स अहले मदीना से मकरो-फरेब करे या जंग करे तो वह इस तरह पिघल जाएगा जैसे पानी में नमक

पिघलता है।

(बुखारी शरीफ:1/252)

हज़रत सअद बिन वक्कास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि रसूले अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया لَمْ يَكُنْ أَحَدًا مِّنْ أَهْلِ الْمَدِينَةِ بِسُرٍّ إِلَّا آذَاهُ اللَّهُ فِي النَّارِ ذُوبَ الرِّصَاصِ जो मदीना मुनव्वरा वालों के साथ बुराई का इरादा करेगा, खुदाए तआला उस को दोज़ख की आग में रांगा की तरह पिघलाएगा। (मुस्लिम शरीफ:1/122)

और हज़रत साइब बिन खल्लाद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया कि مَنْ آذَى أَهْلَ الْمَدِينَةِ طَائِفًا مِّنْ أَهْلِ اللَّهِ وَكَانَتْ عَلَيْهِ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْكَافِرَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ لَا يَقْبَلُ اللَّهُ مِنْهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ صِرَافًا وَلَا عَدْلًا जिस ने अहले मदीना को अपने जुल्म से ख़ौफ ज़दा किया, खुदाए तआला उसे ख़ौफ में मुब्तला करेगा, उस पर अल्लाह, मलाइका और सब लोगों की लअनत है। और कियामत के दिन अल्लाह तआला न उस की फर्ज़ इबादत कबूल फरमाएगा और न नफ़्त। (कंजुल उम्मात:13/214)

इन अहादीसे करीमा से मालूम हुआ कि जो अहले मदीना को डराए, उन से जंग करे और उन पर जुल्म ढाए बल्कि उन से बुराई का इरादा भी करे तो खुदाए तआला उसे जहन्नम की आग में रांगा की तरह पिघलाएगा और उस पर अल्लाह तआला उस के फिरिशतों और तमाम इंसानों की लअनत है। और उस की कोई इबादत चाहे वह फर्ज़ हो या नफ़्त, खुदाए तआला कबूल नहीं फरमाएगा।

मक्का मुअज़्ज़मा पर हम्ला

मस्लिम बिन उक्बा की हलाकत के बाद हसीन बिन नुमैर जो शामी लश्कर का सिपह सालार मुकर्रर हुआ, उस ने मक्का मुअज़्ज़मा पहुंच कर हम्ला कर दिया, अहले मक्का और हिजाज़ वाले यज़ीद पत्नीद की बैअत तोड़ कर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से बैअत कर चुके थे, उन की फौज ने लश्करे यज़ीद का मुकाबला किया और सुबह से शाम तक लड़ाई जारी रही, मगर फतह व

शिकस्त का कोई फैसला न हुआ, दूसरे दिन हसीन बिन नुमैर मिन्जनीक जो पत्थर फेंकने की मशीन होती है, उसे कूहे अबू कुबैस पर नसब करके पत्थर बरसाना शुरू किया, संगबारी से हरम शरीफ का मुबारक सेहन पत्थरों से भर गया और उस के सद्मा से मस्जिदें हराम के सुतून टूट गए। कअबा शरीफ की दीवारें शिकस्ता हो गईं और छत गिर गई। शामी पत्थर बरसाने के साथ रूई, गंधक और राल के गोले भी बना-बना कर और जला-जला कर फेंकने लगे जिस से खानए कअबा में आग लग गई, उस का गिलाफ जल गया, और वह दुंबा जो हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम के फिदया में कुर्बान किया गया था उस की सींग तबरूक के तौर पर कअबा शरीफ में महफूज़ थी, वह भी जल गई। हरम शरीफ के बाशिंदों का घर से निकलना दुश्वार था, तकरीबन दो माह तक वह सख्त मुसीबत में मुब्तला रहे, यहां शामी लश्कर कअबा शरीफ की बेहुर्मती में लगा हुआ था उधर शहरे हमस में पांच रबीउल अब्वल 64 हिजरी को 39 साल की उम्र में यज़ीद हलाक हो गया।

सब से पहले यह ख़बर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर को मिली, उन्होंने ने बुलंद आवाज़ से पुकार कर कहा ऐ शामी बद बख़्तो! तुम्हारा गुमराह सरदार यज़ीद हलाक हो गया, तो अब क्यों लड़ रहे हो? शामियों ने पहले इस बात को हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर के फरेब पर महमूल किया लेकिन तीसरे दिन जब उन्हें साबित बिन कैस नखई ने कूफा से आकर यज़ीद के मरने की ख़बर सुनाई तो उन्हें यकीन हुआ, अब उनके हौसले पस्त हो गए और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर की फौज के हौसले बुलंद हो गए, वह शामियों पर टूट पड़े, और शामी खाइब व खासिर होकर भागे इस तरह अहले मक्का को उन के शर से नजात मिली।

यज़ीद पलीद ने कुल तीन बरस सात महीने तक हुक्मत की, जब वह करियए हवारिय्यीन में हलाक हुआ तो उस की मौत पर इब्ने उर्वा ने चन्द अशज़ार कहे जिन के मअना यह हैं ऐ बनी उमैया! तुम्हारे बादशाह की लाश हवारिय्यीन में पड़ी है, मौत ने ऐसे वक़्त में आ कर

उस को मारा जबकि उस की तकिया के पास कूड़ा और शराब का मशकीज़ा सर बमोहर लबा लब भरा हुआ रखा था और उस के नशा से मस्त होने वाले पर एक गाने वाली सारंगी लिये रो रही थी जो कभी बैठ जाती और कभी खड़ी हो जाती थी।

यज़ीद की मौत के बाद

हिजाज़ व यमन और इराक़ व ख़ुरासान वालों ने यज़ीद की मौत के बाद अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दस्ते मुबारक पर बैअत की और शाम व मिस्र के लोगों ने यज़ीद के बेटे मुआविया को उस का जा नशीन मुकर्रर किया। मुआविया अगर्चे यज़ीद पलीद का बेटा था मगर नेक व सालेह था और बाप के बुरे कामों से नफ़रत करता था। बीमारी की हालत में उसे तख़्त पर बिठाया गया, जो आखिरी दम तक बीमार ही रहा, न उस ने किसी तरफ़ फौज कशी की और न कोई दूसरा अहम कारनामा अंजाम दिया यहां तक कि सिर्फ़ चालीस रोज़ या दो तीन माह की हुकूमत के बाद 21 साल की उम्र में इन्तिकाल कर गया। आखिर वक़्त में लोगों ने उस से कहा कि किसी को ख़लीफा नामज़द कर दें, मुआविया ने जवाब दिया कि मैं ने ख़िलफ़त में कोई हलाक़त नहीं पाई तो फिर इस तलख़ी में किसी दूसरे को क्यों मुक़्तला करूं?

मुआविया बिन यज़ीद की मौत के बाद शाम व मिस्र के लोगों ने भी हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के दस्ते मुबारक पर बैअत कर ली। कुछ दिनों बाद मरवान ने खुफिया साज़िशों के ज़रिये मिस्र व शाम पर कब्ज़ा जमा लिया, जब वह मरने लगा तो अपने बेटे अब्दुल मलिक को अपना जा नशीन बना दिया, जिस के बारे में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा फरमाया करते थे लोग बेटे पेदा करते हैं, लेकिन मरवान ने अपना बाप पैदा किया।

अब्दुल मलिक दानिशमन्द, फकीह और कुरआन व हदीस का जानने वाला और तख़्त नशी होने से पहले बहुत बड़ा आबिद व जाहिद

था। और मदीना मुनव्वरा के इबादत गुज़ार लोगों में उस का शुमार होता था मगर वह बाद में बद आमाल हो गया। यहया गुस्तानी का बयान है कि अब्दुल मलिक अक्सर हज़रत उम्मे दरदा सहाबिया रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के पास बैठा उठा करता था। एक दिन उम्मे दरदा ने फरमाया ऐ अमीरुल मोमिनीन! मैं ने सुना है कि तुम इबादत गुज़ार होने के बाद शराब खोर बन गए हो, उस ने जवाब दिया कि शराब खोर होने के साथ साथ खूं ख्वार भी हो गया हूं। (तारीखुल खुलफा:146)

कातिलीने इमामे हुसैन का इब्रतनाक अंजाम

अब्दुल मलिक के ज़मानए खिलाफत में कूफा पर मुख्तार बिन उबैद सकफी को तसल्लुत हासिल हुआ, उस ने कहा कि मैं कातिलीने हुसैन में से एक को भी दुनिया में चलते फिरते नहीं रहने दूंगा। अगर मैं ऐसा न करूं तो मुझे पर अल्लाह व रसूल की लअन्नत है। फिर उस ने लोगों से कहा मुझे हर उस शख्स का नाम व पता बताओ जो हज़रत हुसैन के मुकाबले में करबला गया था। लोगों ने बताना शुरू किया और मुख्तार ने एक-एक को कत्ल करना और सूली पर लटकाना शुरू कर दिया।

इब्ने सअद का कत्ल

मुख्तार ने एक दिन कहा कि मैं कल एक शख्स को कत्ल करूंगा कि उस से तमाम मोमिनीन और मलाइका मुक़रबीन भी खुश होंगे। हसीम बिन अस्वद नखई उस वक़्त मुख्तार के पास बैठा हुआ था, वह समझ गया अम्र बिन सअद कल मारा जाएगा, मकान पर आ कर उस ने अपने बेटे को रात में इब्ने सअद के पास भेज कर इत्तिलाज़ कर दी तुम अपनी हिफाज़त का इन्तिज़ाम करो, मुख्तार कल तुम्हें कत्ल करना चाहता है मगर मुख्तार चूँकि अपने खुर्रुज के इब्दिदाई ज़माने में इब्ने सअद से निहायत ही अज़लाक के साथ पेश आता था इस लिये उस ने कहा मुख्तार हमें कत्ल नहीं करेगा।

दूसरे दिन सुबह को मुख्तार ने इब्ने सअद को बुलाने के लिये आदमी भेजा, उस ने अपने बेटे हफस को भेज दिया, मुख्तार ने उस से

पूछा तेरा बाप कहां है? उस ने कहा वह खल्वत नशीन हो गया है, अब घर से बाहर नहीं निकलता। मुख्तार अब वह रैय की हुक्मत कहां है जिस के लिये फर्जन्दे रसूल का खून बहाया था, अब क्यों उस से दस्त बरदार होकर घर में बैठा है? हज़रत हुसैन की शहादत के दिन वह क्यों खाना नशीन नहीं हुआ था? फिर मुख्तार ने अपने कोतवाल अबू अम्मा को भेजा कि इब्ने सअद का सर काट कर ले आए, वह इब्ने सअद के पास गया और उसका सर काट कर अपनी कुबा के दामन में छुपा कर मुख्तार के पास लाया और उस के सामने रख दिया, मुख्तार ने हफस से पूछा पहचानते हो यह सर किस का है? उस ने इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ी, फिर कहा यह मेरे बाप का सर है, और अब इनके बाद जिंदगी में कोई मज़ा नहीं, मुख्तार ने कहा तुम ठीक कहते हो, और तुम जिंदा भी नहीं रहोगे, फिर उसे भी क़त्ल करा दिया। और कहा बाप का सर हुसैन का बदला है और बेटे का सर अली अकबर का। अगरचें यह दोनों उन के बराबर नहीं हो सकते, खुदा की कसम अगर मैं कुरैश के तीन दस्ते भी क़त्ल कर डालूं तब भी वह सब हुसैन की उंगलियों के बराबर नहीं हो सकते। फिर मुख्तार ने दोनों के सर हज़रत मुहम्मद बिन हनफिय्या रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास भेज दिया। (तबरी:2/83)

खूली बिन यज़ीद को क़त्ल के बाद जला दिया गया

खोला वह बद बख्त इंसान है जिस ने इमाम आली मक़ाम के सरे अनवर को जिस्मे अक्दस से जुदा किया, मुख्तार ने अपने कोतवाल अबू उमरा को चन्द सिपाहियों के साथ उस की गिरफ्तारी के लिये भेजा, उन लोगों ने आकर खूली के घर को घेर लिया, जब उस बद बख्त को मालूम हुआ तो वह एक कोठरी में छुप गया और बीवी से कह दिया कि तुम लाइल्मी ज़ाहिर कर देना, कोतवाल ने उस के घर की तलाशी का हुक्म दिया, उस की बीवी बाहर निकल आई, उस ने पूछा कि तुम्हारा शौहर कहां है? चूंकि जिस वक़्त से खूली हज़रत हुसैन का

सर लाया था वह उस की दुश्मन हो गई थी, इस लिये उस ने ज़बान से तो कहा मुझे मालूम नहीं वह कहाँ है भगर हाथ के इशारे से उस के छुपने की जगह बता दी, सिपाही उस के मक़ाम पर पहुंचे तो देखा कि सर पर एक टोकरा रखे हुए ज़मीन पर चपका हुआ है, उस को गिरफ्तार करके ला रहे थे कि मुख्तार कूफ़ा की सैर के लिये निकला था, रास्ते में मिल गया उस के हुक्म से खूली के घर वालों को बुला कर उन के सामने शाहराहे आम पर क़त्ल किया गया फिर उसे जलाया गया, जब तक उस की लाश जल कर राख नहीं हो गई मुख्तार खड़ा रहा।

(तबरी:2/81)

अज़ मुकाफाते अमल गाफिल मशौ

गंदुम अज़ गंदुम बरुयद जौ ज़ जौ

शिमर क़त्ल के बाद कुत्तों के हवाले किया गया

मुस्लिम बिन अब्दुल्लाह ज़ियाबी का बयान है कि जब हज़रत हुसैन के मुकाबले में करबला जाने वालों को पकड़-पकड़ कर मुख्तार क़त्ल करने लगा तो हम और शिमर ज़िल जौशन तेज़ रफ्तार घोड़ों पर बैठ कर कूफ़ा से भाग निकले, मुख्तार के गुलाम ज़रबी ने हमारा पीछा किया, हम ने अपने घोड़ों को बहुत तेज़ी से दौड़ाया लेकिन ज़रबी हमारे करीब आ गया, शिमर ने हमसे कहा तुम घोड़े को ऐड़ देकर हम से दूर हो जाओ, शायद यह गुलाम मेरी ताक में आ रहा है, हम अपने घोड़े को खूब तेज़ी से भगा कर शिमर से अलग हो गए, गुलाम ने पहुंचते ही उस पर हमला कर दिया, पहले तो शिमर उस के वार से बचने के लिये घोड़े को कावा देता (घुमाता) रहा और जब ज़रबी अपने साथियों से दूर हो गया तो शिमर ने एक ही वार में उस की कमर तोड़ दी, जब मुख्तार के सामने ज़रबी लाया गया और उस को वाकिअ मालूम हुआ तो उस ने अगर यह मुझ से मशवरा करता तो मैं कभी इसे शिमर पर हमला करने का हुक्म न देता।

ज़रबी को क़त्ल करने के बाद शिमर कलतानिया गांव में पहुंचा जो

दरिया के किनारे वाफ़ा था, उस ने गांव के एक किसान को बुला कर मारा पीटा और उसे मजबूर किया कि मेरा यह खत मुस्तअब बिन जुबैर के पास पहुंचाओ। उस खत पर यह पता लिखा था। शिमर ज़िल जौशन की तरफ से अमीर मुस्तअब बिन जुबैर के नाम। किसान उस के खत को लेकर रवाना हुआ, रास्ते में एक बड़ा गांव आबाद था, जहां कोतवाल अबू उमरा चन्द सिपाहियों के हम्राह जंगी चौकी काइम करने के लिये आया हुआ था, यह किसान उस गांव के किसान से मिल कर शिमर ने जो उस के साथ ज़्यादती की थी उस को बयान कर रहा था कि एक सिपाही उन के पास से गुज़रा, उस ने शिमर के खत और उसके पता को देखा, पूछा कि शिमर कहां है? उस ने बता दिया, मालूम हुआ कि 15 किलो मीटर के फासिला पर है, अबू उमरा फौरन अपने सिपाहियों को लिये हुए शिमर की तरफ चल पड़ा।

मुस्लिम बिन अब्दुल्लाह का बयान है कि मैं रात में शिमर के हम्राह था, मैं ने उस से कहा बेहतर है कि हम लोग इस जगह से रवाना हो जायें, इस लिये कि हमें यहां डर मालूम होता है, उस ने कहा कि मैं तीन दिन के पहले यहां से नहीं जाऊंगा। और तुम्हें खौफ़ ग़ालिबन मुख़्तार कज़़ाब की वजह से है, तुम उसे मरऊब हो गए हो, हम यहां ठहरे थे वहां रीछ बहुत ज़्यादा थे, अभी ज़्यादा रात नहीं गुज़री थी और मुझे बराबर नींद नहीं आई थी कि घोड़ों की टापों की आवाज़ आई, मैं ने अपने दिल में कहा कि रीछ होंगे, मगर जब आवाज़ तेज़ हो गई तो मैं उठ कर बैठ गया, अपनी आंखों को मलने लगा और कहा यह रीछों की आवाज़ हरगिज़ नहीं हो सकती, इतने में उन्होंने ने पहुंच कर तक्बीर कही और हमारी झोपड़ियों को घेरे में ले लिया, हम अपने घोड़े छोड़ कर पैदल ही भागे, वह लोग शिमर पर टूट पड़े, जो पुरानी चादर ओढ़े हुए था और उस के बरस की सफेदी चादर के ऊपर से नज़र आ रही थी, वह कपड़े और ज़िरह वगैरा भी नहीं पहन सका, उसी चादर को ओढ़े हुए नेजे से उन का मुकाबला करने लगा, अभी हम थोड़ी ही दूर गए थे कि तक्बीर की आवाज़ के बाद हम ने सुना कि

अल्लाह ने ख़बीस को क़त्ल कर दिया। फिर उन लोगों ने उस के सर को काट कर लाशों को कुत्तों के लिये फेंक दिया। (तबरी:2/75)

हाथ पांव काट कर तड़पने के लिये छोड़ दिया गया

अब्दुल्लाह बिन दयास जिस ने मुहम्मद बिन अम्मार बिन यासिर को क़त्ल किया था, उस ने इमाम आली मक़ाम के कातिलीन में से मुख़्तार को चन्द आदमियों के नाम बता दिये, जिन में अब्दुल्लाह बिन उसैद जुहनी, मालिक बिन नुसैर बद्दी और हमल बिन मालिक महारबी भी थे, यह सब उस ज़माने में कादसिया में रहते थे। मुख़्तार ने अपने सरदारों में से एक सरदार मालिक बिन अम्र नहदी को उन की गिरफ्तारी के लिये चन्द सिपाहियों के साथ भेजा, उस ने जाकर उन सब को गिरफ्तार कर लिया और इशा वक़्त लेकर मुख़्तार के पास पहुँचा। मुख़्तार ने उन लोगों से कहा कि ऐ अल्लाह व रसूल व आले रसूल के दुश्मनो! हुसैन बिन अली कहाँ हैं? मुझे हुसैन की ज़ियारत कराओ ज़ालिमो! तुम ने उस मुक़द्दस ज़ात को क़त्ल किया जिन पर नमाज़ में तुम्हें दुरूद भेजने का हुक्म दिया गया है, उन्होंने ने कहा अल्लाह आप पर रहम करे, हमें उन के मुक़ाबले में ज़बर्दस्ती भेजा गया था, हम जाने के लिये राज़ी नहीं थे, आप हम पर ऐहसान करें और छोड़ दें। मुख़्तार ने कहा तुम ने नवांसए रसूल पर ऐहसान नहीं किया, उन पर तुम्हें रहम नहीं आया, तुम ने उन्हें और उनके बच्चों को प्यासा रखा, पानी नहीं पीने दिया और आज हम से ऐहसान तलब करते हो। फिर बद्दी से कहा तुम ने हज़रत इमाम हुसैन की टोपी उतारी थी? अब्दुल्लाह बिन कामिल ने कहा जी हाँ, यही वह शख्स है जिस ने उनकी टोपी के उतारी थी। मुख़्तार ने हुक्म दिया दोनों हाथ पांव काट कर इसको छोड़ दिया जाए ताकि इसी तरह तड़प तड़प कर यह मर जाए, चुनांचे उस के हुक्म पर अमल किया गया, बद्दी के हाथों और पैरों से खून का धारा बहता रहा यहां तक कि वह मर गया, उसके बाद जुहनी और महारबी को भी क़त्ल करा दिया। (तबरी:2/79)

हकीम बरहना करके तीरों का निशाना बनाया गया

हकीम बिन तुफैल ताई वह बदनसीब इंसान है जिस ने करबला में हज़रत अब्बास अलमदार के लिबास व अस्तेहा पर कब्ज़ा किया था और हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तीर मारा था। मुख्तार ने अब्दुल्लाह बिन कामिल को उस की गिरफ्तारी के लिये चन्द सिपाहियों के साथ भेजा, वह पकड़ कर उसे मुख्तार की तरफ चला, हीकम के घर वाले अदी बिन हाकिम के पास फरियादी हुए कि आप मुख्तार से सिफारिश करके उस को छोड़ा दें, मुख्तार अदी की बहुत क़दर किया करता था, वह सिफारिश के लिये मुख्तार के पास पहुंच गए, वह अदी के साथ इज़्ज़त से पेश आया और उन्हें अपने पास बिठाया, अदी ने अपने आने की गरज़ बयान की, मुख्तार ने कहा ऐ अबू ज़रीफ़! क्या आप कातिलीने हुसैन के लिये भी सिफारिश करते हैं? उन्होंने ने कहा कि हकीम पर झूठा इल्ज़ाम लगाया गया है। मुख्तार ने कहा अच्छा तो हम उसे छोड़ देंगे।

सिपाहियों को रास्ते में मालूम हुआ कि अदी मुख्तार के पास हकीम की सिफारिश के लिये गए हैं, उन्होंने ने अपने सरदार इब्ने कामिल से कहा कि मुख्तार अदी की सिफारिश क़बूल कर लेंगे। और यह ख़बीस बच जाएगा। हालांकि आप इसके जुर्म से बख़ूबी वाकिफ़ हैं। लिहाज़ा बेहतर है कि हम ही उसको क़त्ल कर दें, इब्ने कामिल ने उन्हें इजाज़त दे दी, वह लोग हकीम को एक घर में ले गए, उस की मशक़े बंधी हुई थीं, उसे एक जगह खड़ा किया और कहा तू ने हज़रत अब्बास बिन अली के कपड़े उतारे थे, हम तेरी ज़िंदगी ही में तेरे सारे लिबास उतारते हैं, चुनांचे उन लोगों ने उसे बिल्कु नंगा कर दिया, फिर कहा तू ने हुसैन को तीर मारा था, हम भी तुझे तीरों का निशाना बनाते हैं, यह कह कर उन्होंने ने तीरों से मार-मार उसे हलाक कर दिया।

इब्ने कामिल ने आकर मुख्तार को हकीम के क़त्ल की इत्तिहाज़ दी, मुख्तार ने कहा मेरे पाए लाए बग़ैर तुम ने उसे क्यों क़त्ल कर

दिया? देखो यह अदी उस की सिफारिश के लिये आए हैं। और यह इस बात के अहल हैं कि इन की सिफारिश कबूल की जाए, इब्ने कामिल आप के शियिए मेरी बात नहीं मानी तो मैं मजबूर हो गया, अदी ने कहा एक दुश्मने खुदा! तू झूठ बोलता है, तू ने जाना कि मुख्तार मेरी सिफारिश कबूल कर लेंगे, इस लिये तू ने उसे रास्ता ही में कत्ल कर दिया। इस के अलावा और तुझे कोई खतरा नहीं था, इब्ने कामिल भी अदी को जवाब में बुरा-भला कहना चाहता था मगर मुख्तार ने उंगली अपने मुंह पर रख कर उसे खामोश रहने की हिदायत की, अदी मुख्तार से खुश और इब्ने कामिल से नाराज़ हो कर चले आए।

(तबरी:2/86)

नेज़ों से छेद-छेद कर मारा गया

बनी सदा का एक बद बख्त जिस का नाम अम्र बिन सुबैह था वह कहाँ करता था, मैं ने हुसैन के साथियों को तीर से जख्मी किया है मगर किसी को कत्ल नहीं किया है, सब लोगों के सो जाने के बाद मुख्तार ने उस की गिरफ्तारी के लिये सिपाहियों को रवाना किया, जब वह इब्ने सुबैह के मकान पर पहुंचे तो वह अपनी छत पर बेखबर सो रहा था, उस की तलवार उस के सरहाने रखी थी, सिपाहियों ने उसे गिरफ्तार कर लिया और उस की तलवार पर कब्ज़ा कर लिया, वह कहने लगा अल्लाह इस तलवार का बुरा करे कि यह मुझ से किस कद्र करीब थी, और अब कितनी दूर हो गई, सिपाहियों ने रात ही में उसे मुख्तार के सामने पेश किया, मुख्तार ने हुक्म दिया कि सुबह तक इसे कैद में रखो, फिर सुबह को दरबारे आम किया, जब बहुत से लोग जमा हो गए और इब्ने सुबैह उस के सामने लाया गया, तो निहायत दिलेरी से भरे दरबार में कहने लगा ऐ गिरोहे कुप्फारो-फुज्जार! अगर इस वक़्त मेरे हाथ में तलवार होती तो तुम को मालूम हो जाता कि मैं बुज़दिल और कमज़ोर नहीं हूँ, अगर मैं तुम्हारे अलावा किसी और के हाथ से कत्ल किया जाता तो यह बात मेरे लिये बाइसे मसरत होती। इस लिये कि मैं तुम को बद तरीन मख्लूक समझता हूँ, ऐ काश! इस

वक्त मेरे हाथ में तलवार होती तो मैं थोड़ी देर तुम्हारा मुकाबला करता, इस के बाद इब्ने सुबैह ने इब्ने कामिल की आंख पर एक घूसा मारा, इब्ने कामिल हंसा और उस का हाथ पकड़ कर कहने लगा कि यह शख्स कहता है कि मैं ने अहले बैते रिसालत को तीरों से जख्मी किया है तो अब इसके बारे में आप हमें क्या हुक्म देते हैं? मुख्तार ने कहा नेजे लाओ और इसे नेजों से छेद-छेद कर मारो, चुनांचे नेजों से छेद-छेद कर उसे हलाक किया गया। (तबरी:2/88)

कातिल को ज़िंदा जला दिया गया

बनी जुनुब का एक शख्स जिस का नाम जैद इब्ने रकाद था, उस बंद बख्श ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुस्लिम बिन अकील को तीर मारा था जो उन की पेशानी में लगा था, उन्होंने ने पेशानी को बचाने के लिये उस पर अपना हाथ रख लिया मगर तीर ऐसा लगा कि हाथ भी पेशानी के साथ पैवस्त हो गया और जब कोशिश के बा वजूद उन का हाथ पेशानी से जुदा नहीं हो सका तो उन्होंने ने बारगाहे इलाही में दुआ की या इलाहत आलमीन! हमारे दुश्मनों ने जैसा हमें ज़लील किया है तू भी उन को ऐसे ही ज़लील कर, और जिस तरह उन्होंने ने मुझे क़त्ल किया है तू भी उन को क़त्ल कर। जैद इब्ने रकाद ने उन के पेट में एक तीर मारी जिस से वह शहीद हो गए। वह कहा करता था कि उन के पेट का तीर तो मैं ने आसानी से निकाल लिया मगर जो तीर पेशानी पर लगा कोशिश के बा वजूद वह नहीं निकल सका।

मुख्तार ने अब्दुल्लाह बिन कामिल को उस की गिरफ्तारी के लिये रवाना किया, इब्ने कामिल सिपाहियों के साथ पहुंच कर उस पर दूट पड़ा, वह भी एक बड़ा बहादुर आदमी था, तलवार लेकर उन का मुकाबला किया, इब्ने कामिल ने अपने सिपाहियों से कहा इसे नेजा और तलवार से हलाक न करो बल्कि तीर और पत्थर से मारो, सिपाहियों ने इस कदर तीर और पत्थर मारा कि वह गिर गया। इब्ने कामिल ने कहा देखो अगर जान बाकी हो तो इसे बाहर लाओ, चूंकि अभी जान बाकी

थी तो उसे बाहर निकाला गया, इब्ने कामिल ने आग लगा कर उसे जिंदा जला दिया।
(तबरी:2/87)

इब्ने ज़ियादा बद निहाद का इब्रतनाक अंजाम

अब्दुल्लाह बिन ज़ियाद वह बद निहाद इंसान है जो यज़ीद की तरफ से कूफा का गवर्नर मुक़र्रर किया गया था, उसी बद बख़्त के हुक्म से हज़रत इमाम और आप के अहले बैत को तमाम ईज़ाएं (तक्लीफ़ें) पहुंचाई गईं। यही इब्ने ज़ियाद मूसिल में तीस हज़ार फौज के साथ उतरा। मुख्तार ने इब्राहीम बिन मलिक उश्तुर उस के मुकाबला के लिये एक फौज को लेकर भेजा, मूसिल से तक्रीबन 25 किलो मीटर के फासला पर दरियाए फुरात के किनारे दोनों लश्क़रों में मुकाबला हुआ और सुबह से शाम तक खूब जंग रही, जब दिन ख़त्म होने वाला था और आफ़ताब करीबे ग़रूब था उस वक़्त इब्राहीम की फौज ग़ालिब आई, इब्ने ज़ियाद को शिकस्त हुई और उस के हमराही भागे, इब्राहीम ने हुक्म दिया कि फौजे मुख़ालिफ़ में से जो हाथ आए उसे जिंदा न छोड़ा जाए। चुनांचे बहुत से लोग हलाक किये गए, इसी हंगामे में इब्ने ज़ियाद भी फुरात के किनारे मुहर्रम की दस्वीं तारीख़ 67 हिजरी में मारा गया और उस का सर काट कर इब्राहीम के पास भेजा गया। इब्राहीम ने मुख्तार के पास कूफा में भिजवाया, मुख्तार ने दारुल अमारत कूफा को आरास्ता किया और अहले कूफा को जमा करके इब्ने ज़ियाद का सरे नापाक उसी जगह रखवाया जिस जगह उस मगरूर हुकूमत और बन्दए दुनिया ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का सरे मुबारक रखा था। मुख्तार ने अहले कूफा को खिताब करके कहा ऐ अहले कूफा! देख लो कि हज़रत इमाम हुसैन के खूने नाहक़ ने इब्ने ज़ियाद को न छोड़ा, आज इस ना मुराद का सर इस ज़िल्लत व रुस्वाई के साथ यहां रखा हुआ है, छः साल हुए हैं, वही तारीख़ है, वही जगह है, खुदावन्दे आलम ने इस मगरूर फिरऔन ख़िसाल को ऐसी ज़िल्लत व रुस्वाई के साथ हलाक किया। इसी कूफा और इसी दारुल अमारत

में इस बेदेन के कत्ल व हलाक पर जश्न मनाया जा रहा है।

(सवानेह करबला:151)

तिर्मिजीं शरीफ की हदीस में है कि जिस वक़्त इब्ने जिंयाद और उस के सरदारों के सर मुख्तार के सामने ला कर रखे गए तो एक बड़ा सांप नमूदार हुआ, उस की हैबत से लोग डर गए, वह तमाम सरों में फिरा, जब अबैदुल्लाह बिन जिंयाद के सर के पास पहुंचा तो उस के नथने में घुस गया और थोड़ी देर ठहर कर उस के मुंह से निकला, इस तरह तीन बार सांप उस के सर के अन्दर दाखिल हुआ और गाइब हो गया।

(नूरुल अबसार:124)

जुलम की टहनी कभी फलती नहीं

नाव कागज़ की कभी चलती नहीं

मुख्तार का दअ्वए नुबुव्वत

मुख्तार ने हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के कातिलीन के बारे में बड़ा शानदार कारनामा अंजाम दिया लेकिन आखिर में वह दअ्वए नुबुव्वत करके मुरतद हो गया (अल्-इयाजु बिल्लाहि तआला) कहने लगा कि मेरे पास जिब्रीले अमीन आता है और मुझ पर खुदाए तआला की तरफ से वही लाता है, मैं बतौर नबी मबक़स हुआ हूँ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को जब उस के दअ्वए नुबुव्वत की ख़बर मिली तो आप ने उस की सर कूबी (सर कुचलने) के लिये लश्कर रवाना फरमाया जो मुख्तार पर ग़ालिब हुआ और माहे रमज़ान 67 हिजरी में उस बद बख्त को कत्ल किया।

(तारीखुल खुलफा:146)

कातिलीने इमामे हुसैन पर तरह-तरह के अज़ाब

जो लोग हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुकाबले में करबला गए और उन के कत्ल में शरीक हुए उन में से तक़रीबन छे: हजार कूफी तो मुख्तार के हाथों हलाक हुए और दूसरे लोग तरह-तहर के अज़ाब में मुब्तला हुए। उलमाए किराम फरमाते हैं कि उन में से

कोई नहीं बचा कि जो आखिरत के अज़ाब से पहले इस दुनिया में सज़ा न पाई हो, उनमें से कुछ तो बुरी तरह क़त्ल किये गए, कुछ अंधे और कोढ़ी हुए और कुछ लोग सख़्त किस्म की आफ़तों में मुब्तला हो कर हलाक हुए।

हज़रत अबुश शैख़ फरमाते हैं कि एक मजलिस में कुछ बैठे हुए आपस में यह बातें कर रहे थे कि हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की क़त्ल में जिस ने भी किसी तरह की कोई मदद की वह मरने से पहले किसी न किसी अज़ाब में ज़रूर मुब्तला हुआ, एक बुद्ध जो उसी मजलिस में था उसने कहा मैं ने भी तो मदद की थी मगर मैं किसी अज़ाब में नहीं मुब्तला हुआ, इतना कहने के बाद वह चिराग़ दुरुस्त करने के लिये खड़ा हुआ तो उस की आग ने बुझे को पकड़ लिया, उस का पूरा बदन जलने लगा, वह आग-आग चिल्लाता रहा, यहां तक कि दरियाए फुरात में कूद पड़ा मगर आग बुझी नहीं और वह उसी में जल कर हलाक हो गया। इसी किस्म का एक वाकिआ इमाम सुदी से भी मन्कूल है, उन्होंने ने फरमाया: **وَاللّٰهُ لَا يَخْلُقُ شَيْئًا إِلَّا وَهُوَ يُعَذِّبُهُ** खुदा की क़सम मैं ने उस को देखा वह इस तरह जल रहा था जैसे कोयला। (सवाइके मुहर्रक़ा:120)

और इमाम वाक़दी से रिवायत है कि एक शख़्स जो लश्करे यज़ीद के साथ था मगर उस ने किसी को क़त्ल नहीं किया था, वाक़िए करबला के बाद वह अंधा हो गया, उस से उस का सबब दरियाफ्त किया गया, उस ने कहा मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा कि वह आस्तीने मुबारक चढ़ाए हुए और हाथ में नंगी तलवार लिये हुए खड़े हैं, हुज़ूर के सामने एक चमड़ा बिछा हुआ है और दस कातिलीने हुसेन ज़िबह किये हुए पड़े हैं, जब आप की निगाह मुझ पर पड़ी तो बहुत लज़्ज़त मलामत की और खून में डुबा कर एक सलाई मेरी आंखों में फेर दी उसी वक़्त से मैं अंधा हो गया। (सवाइके मुहर्रक़ा:120)

और हज़रत अल्लामा इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि तआला अलैह

तहरीर फरमाते हैं कि यजीद के लश्कर का वह सिपाही कि जिस ने हज़रत इमाम हुसैन के सररे मुबारक को अपने घोड़े की गर्दन में लटकाया था, कुछ दिनों के बाद लोगों ने देखा कि उस को चेहरा बहुत ज़्यादा काला हो गया है, तो उस से पूछा कि तेरा चेहरा तो बहुत ज़्यादा खूबसूरत था फिर इतना ज़्यादा काला कैसे हो गया? उस ने कहा जिस रोज़ मैं ने हज़रते हुसैन के सर को अपने घोड़े की गर्दन में लटकाया उसी रोज़ से हर रात को दो आदमी मेरे पास आते हैं और मुझे पकड़ कर ऐसी जगह पर ले जाते हैं, जहां बहुत सी आग होती है, मुझे मुंह के बल उस आग में डाल कर निकालते हैं, इस वजह से मेरा मुंह इतना ज़्यादा काला हो गया है। रावी का बयान है कि वह शख्स बहुत बुरी मौत मरा।

(सवाइके मुहर्मा:120)

मुंह सुवर जैसा हो गया

अल्लामा बारज़ी हज़रत मन्सूर से रिवायत करते हैं कि उन्होंने ने मुल्के शाम में एक ऐसे शख्स को देखा जिस का मुंह सुवर जैसा था, उन्होंने ने उस से उस की वजह दरियाफ्त की तो उस ने बताया कि वह रोज़ाना हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु पर एक हज़ार मर्तबा और जुमा के दिन चार हज़ार मर्तबा उन पर और उन की औलाद पर लअनत भेजा करता था। तो एक रात उस ने ख़्वाब में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को देखा और उस ने लम्बा ख़्वाब बयान किया, उस में एक बात यह भी थी कि हज़रत इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु उसके लअनत भेजने की हुज़ूर की खिदमत में शिकायत की तो आप ने उस पर लअनत फरमाई और उस के मुंह पर थूक दिया, तो उस का मुंह सुवर (खिन्ज़ीर) जैसा हो गया और वह लोगों के लिये नसीहत बन गया।

(सवाइके मुहर्मा:120)

गर खुदा ख़्वाहद कि पर्दा कस दर्द

मैलश अन्दर तअनए नेकां बुरद

और अल्लामा इब्ने हज़र मक्की रहमतुल्लाहि तआला अलैह नकल

फरमाते हैं कि एक बुद्धे ने बयान किया कि मैं ने हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को ख्वाब में देखा कि आप के सामने एक तश्त रखा हुआ है जो खून से भरा है, लोग आप के सामने लाए जा रहे हैं और उस खून से उन की आंखों में लगा रहे हैं, यहां तक कि मैं भी हाज़िर किया गया तो मैं ने अर्ज किया या रसूलल्लाह! मैं उन के मुकाबले में नहीं गया था, हुजूर ने फरमाया तू उस की तमन्ना तो रखता था, फिर आप ने मेरी तरफ उंगली से इशारा फरमाया तो उस वक्त से मैं अंधा हो गया। (सवाइके मुहर्का:120)

और मरवी है वह बद बख्त जिस ने कि हज़रत अली असगर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के हलक में तीर मारा था वह इस मुसीबत में गिरफ्तार हुआ कि उस के पेट की तरफ ऐसी सख्त गर्मी पैदा हुई कि गोया आग लगी है और पीठ की तरफ ऐसी सर्दी कि खुदा की पनाह। इस हालत में उस के पेट पर पानी छिड़कते, बरफ रखते और पंखा झलते मगर ठंडक पैदा न होती और पीठ की तरफ आग जला कर गर्मी पहुंचाने की कोशिश करते मगर कुछ फाइदा न होता और वह प्यास-प्यास चिल्लाता तो उस के लिये सत्तू, पानी और दूध लाया जाता लेकिन पांच घड़ा भी उस को पिलाया जाता तो वह पी लेता और फिर भी प्यास-प्यास चिल्लाता ही रहता, यहां तक कि इसी तरह पीते-पीते उस का पेट फट गया। (सवाइके मुहर्का:121)

और हज़रत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि तआला अलैह मुहाज़रात व मुहावरात में तहरीर फरमाते हैं कि कूफा में चेचक की बीमारी एक साल ऐसी हुई कि जो लोग हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को क़त्ल करने के लिये गए थे, डेढ़ हज़ार औलाद उन की चेचक से अंधी हो गई। (नूरुल अब्सार:124)

हाकिम हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं कि: **أَوْحَى اللَّهُ إِلَى مُحَمَّدٍ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنِّي قَتَلْتُ بِحَنِيٍّ أَيْنَ زَكْرِيَّا سَيِّدِينَ** यांनी खुदा तआला ने रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के पास वही भेजी कि मैं ने यहया

बिन ज़करिया के ऐवज़ सत्तर हजार को मारा और ऐ महबूब तुम्हारे नवासे के ऐवज़ सत्तर हजार और सत्तर हजार यानी एक लाख चालीस हजार को मारुंगा। (ख़साइसे कुबुरा:126)

चुनांचे बहुत से लोगों को मुख्तार के हाथों मारा और बेशुमार लोगों को तरह-तरह की मुसीबतों और आफतों से हलाक किया। और फिर कई हजार अब्बासी सल्तनत के बानी अब्दुल्लाह सफ़फ़ाह के हाथों मारे गए इस तरह वादए इलाही पुरा हुआ और कुल एक लाख चालीस हजार मारे गए।

एक ऐतराज़ और उस का जवाब

इमाम आली मक़ाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुकाबले में सिर्फ़ 22 हजार का लश्कर मैदाने करबला गया था तो एक लाख चालीस हजार क्यों मारे गए, इतने लोगों ने क्या गुनाह क्या था?

इस ऐतराज़ का जवाब यह है जो लोग हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के क़त्ल में शरीक हुए उन के मुजरिम होने के साथ वह लोग भी मुजरिम हुए जो क़त्ले हुसैन पर राज़ी थे लिहाज़ा कातिलीने हुसैन के साथ वह मारे गए। अगर्वे उनके हम्राह करबला नहीं गए थे। अबू दाऊद शरीफ की हदीस है सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **إِذَا مِلَّتِ الْعَظِيمَةُ فِي الْأَرْضِ مَنْ** **شَهِدَهَا كَرِهَهَا كَأَن كَمَنْ شَهِدَهَا** यानी जब किसी जगह कोई गुनाह किया जाए तो जो शख्स वहां हाज़िर हो मगर उसे बुरा समझता हो तो वह उस आदमी के मिस्ल है जो वहां मौजूद नहीं और जो शख्स वहां मौजूद न हो लेकिन उस पर राज़ी हो तो वह उस आदमी के मिस्ल है जो वहां मौजूद हो। (मिशकात शरीफ:436)

मजालिसे मुहर्रम के फाइदे

मजालिसे मुहर्रम से कई फाइदे हासिल होते हैं, अव्वल यह कि हदीस शरीफ में है **عَنْ ذِكْرِ الصَّالِحِينَ تَزُولُ الرُّوحَةُ** सालिहीन के ज़िक्र के वक़्त रहमते इलाही का नुज़ूल होता है। और खुलफ़ाए राशिदीन और इमामैन

करीमैन हज़रात हसन व हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम जो सालिहीन के इमाम व पेशवा हैं उन के ज़िक्र के वक़्त तो कसीर रहमतें नाज़िल होंगी। जिन से इन मज्लिसों में शिरकत करने वाले खास तौर पर फैज़याब होते हैं। और दूसरा फाइदा यह है कि इन के ज़िक्र को सुन कर अल्लाह के महबूब सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की मुहब्बत और उन की इताअतो-फरमां बरदारी का जज़्बा पैदा होता है। और तीसरा फाइदा यह है कि हज़रात इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु का तज़िक़रा दीनो-मज़्हब की हुर्मत काइम रखने के लिये मैदान में निकलना और ऐलाए कलिमतुल हक़ (हक़ की आवाज़ बुलंद) करना तरह-तरह की मुसीबतों को बर्दाश्त करना और सब्रो-तहम्मुल का दामन न छोड़ना, तीन दिन का भूका प्यास रहने और छोटे-छोटे बच्चों के रोने बिलकने के बा वजूद हक़ की हिमायत करना और बातिल के सामने न झुकना अज़ीजों की लाशें खाको-खून में तड़पती हुई देख कर भी हर्फें शिकायत ज़बान पर न लाना, हर हाल में राज़ी बरज़ाए इलाही रहना और मक़ामे सिदको-सफ़ा में साबित क़दम रहना, इन बातों के सुनने से दिल में इमामे आली मक़ाम की अज़्मतो-मुहब्बत पैदा होती है और दीनो-मज़्हब की इज़्ज़तो-हुर्मत बाकी रखने के लिये जान व माल की कुर्बानी देने का जज़्बा पैदा होता है। — और चौथा फाइदा यह है कि दुनिया के लिये कूफियों का अपनी आक़िबत बर्बाद करना अहले बेते रिसालत की तौहीन करना, उन को सताना और ईज़ा पहुंचाना, फिर तरह-तरह की आफतों और मुसीबतों में मुब्तला होना और क़त्ले हुसैन के ऐबज एक लाख चालीस हज़ार का मारा जाना इन बातों के सुनने से इब्रतो-नसीहत हासिल होती है। और अल्लाह वालों की शान में गुस्ताख़ी व बेअदबी करने से बचने की तौफीक़ होती है। — और पांचवां फाइदा यह भी है कि अशरए मुहर्रम में इमाम से झूठी मुहब्बत का दावा रखने वालों ने जो तरह-तरह की ख़ुराफ़ात और ना जाइज़ बातें राइज कर रखी हैं, मज्लिसों की बरक़त से लोग उन में शामिल होने से बच जाते हैं।

दुआ है कि खुदाए अज़्ज़ व जल्ल हमें और आप को इसी तरह हर साल मजालिसे मुहर्रम मुन्अकिद करने, बुजुर्गों का जिक्रे जमील सुनने सुनाने और उन से इब्रतो-नसीहत हासिल करने की तौफीके रफीक बख्शे और अल्लाह के महबूब बन्दों को सताने, उन की शान में गुस्ताखी व बेअदबी करने से महफूज़ रखे। और कियामत के दिन नबिय्यीन, सिद्दीकीन, शुहदा और सालिहीन के दामने करम के साय में हम लोगों का हश्र फरमाए। आमीन

بحرمة النبي الكريم الامين عليه وعلى اله وافضل الصلوة واكمل التسليم

बिहुर्मतिन् नबिय्यिल् करीमिल् अमीनि अलैहि व अला आहिली व
अफज़लुस् सलवाति व अक्मलुत्तस्लीमि।

फज़ाइले आशूरा

आशूरा यानी मुहर्रम की दस्वीं तारीख बड़ी अज़मतो-बुजुर्गी वाली और फज़लो-शर्फ वाली है। इस लिये बहुत से अहम वाकिआत इस तारीख से मुतअल्लिक् हैं। हज़रत शैख अब्दुर रहमान सफूरी रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपनी मशहूर किताब नुज़हतुल मजालिस में तहरीर फरमाते हैं कि इसी रोज आसमानो-ज़मीन और कलम की तख़्तीक हुई। हज़रत आदम व हव्वा अला निबिय्यना व अलैहिमस् सलातु वस्सलाम पैदा हुए और आदम अलैहिस्सलाम की तौबा कबूल हुई। हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती जूदी पहाड़ पर लगी। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम मर्तबए खुल्लत से सरफराज़ किये गए। चालीस साल बाद हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम से हज़रत यूसुफ अलैहिस्सलाम मिले। हज़रत इद्रीस अलैहिस्सलाम आसमान पर उठाए गए। हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम सेहत याब हुए। हज़रत यूनस अलैहिस्सलाम मछली के पेट से निकले। हज़रत दाऊद अलैहिस् सलाम की तौबा कबूल हुई। हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम को सल्तनत अंता हुई। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान पर उठाए गए। हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का अक्द हज़रत खदीजा

रज़ियल्लाहु तआला अन्हा से हुआ और इसी रोज़ कियामत भी काइम होगी। (नुज़हतुल मजालिस:1/181)

साबित हुआ कि मुहर्रम की दस्वीं तारीख़ खुदाए तआला के नज़्दीक बड़ी अज़मत व फज़ीलत वाली है। इसी लिये आप ने अपने प्यारे हबीब जनाब अहमदे मुज्ज्ता मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की महबूब नवासे के लिये भी इसी तारीख़ को मुन्तख़ब फरमाया।

आशूरा के आमाल

आशूरा के दिन रोज़ा रखना सुन्नत है और बहुत फज़ीलत रखता है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम मदीना तशरीफ लाए तो यहूदियों को देखा कि वह आशूरा के दिन रोज़ा रखते हैं, आप ने उन से फरमाया यह कैसा दिन है जिस में तुम लोग रोज़ा रखते हो? उन्होंने ने कहा यह वह अज़मत वाला दिन है जिस में अल्लाह ने मूसा अलैहिस्सलाम और उन की कौम को नजात दी और फिरऔन को उस की कौम के साथ डुबो दिया, मूसा अलैहिस्सलाम ने शुक्रिया में रोज़ा रखा, हम भी रखते हैं। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया हम मूसा अलैहिस्सलाम के तुम से ज़्यादा हक़दार हैं। तो आशूरा का रोज़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने भी रखा है और इस रोज़ा का हुक्म भी फरमाया है। (ख़ुज़ारी:1/268, मुस्लिम:1/359)

और हज़रत अबू क़तादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया **صِيَامُ يَوْمِ عَاشُورَاءَ أَحْتَسِبُ عَلَى اللَّهِ أَنْ يُكَفِّرَ السَّنَةَ الَّتِي قَبْلَهُ** मुझे अल्लाह से उम्मीद है कि वह आशूरा के रोज़ा को पिछले साल भर के गुनाह का कफ़ारा बना दे।

(मुस्लिम, मिश्कात:179)

और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से मरवी है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने आशूरा के दिन का रोज़ा रखा और इस के रोज़ा का हुक्म फरमाया तो सहाबा ने

अर्ज किया या रसूलुल्लाह! यह वह दिन है कि जिस की यहूद और ईसाई ताजीम करते हैं, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तअलाला अलैहि व सल्लम ने फरमाया **لَيْسَ بَيْنَكَ إِلَى غَايِلِ لَأَسْوَئِ النَّاسِ** अगर मैं साले आइन्दा दुनिया में बाकी रहा तो नवीं मुहर्रम का भी रोज़ा रखूंगा। (मुस्लिम, मिश्कात:179)

इसी लिये फुक्हाए किराम फरमाते हैं कि सुन्नत यह है कि मुहर्रम की नवीं और दस्वीं दोनों तारीख़ को रोज़ा रखें।

और सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तअलाला अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं कि **مَنْ صَلَّى يَوْمَ عَاشُورَاءَ أَرْبَعَ رَكَعَاتٍ بَقِيَ فِي كُلِّ رَكَعَةٍ فَاتِحَةُ الْكِتَابِ وَقُلْ هُوَ اللَّهُ** यानी जो शख्स आशूरा के दिन चार रकअतें इस तरह पढ़े कि हर रकअत में सूरए फातिहा के बाद कुल हुवल्लाहु अहद पूरी सूरत 11 मर्तबा पढ़े तो अल्लाह तअलाला उस के पचास बरस के गुनाह माफ़ फरमा देगा और उस के लिये नूर का मिम्बर बनाएगा। (नुज्हुतुल मजालिस:1/181)

और हज़रत इब्ने मस्कूद रज़ियल्लाहु तअलाला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तअलाला अलैहि व सल्लम इरशाद फरमाते हैं: **مَنْ وَشَّعَ عَلَى عَاشُورَاءَ لَمْ يَزَلْ فِي سَعَةِ سَائِرَةِ سَنَةٍ** जो शख्स आशूरा के दिन अपने घर वालों पर खाने पीने में कुशादगी करेगा, साल भर तक बराबर कुशादगी में रहेगा। (मा सबत बिस्सुन्नह:10)

हूर और हुलए बहिश्ती

हज़रत शैख़ अब्दुर रहमान सफ़ूरी रहमतुल्लाहि तअलाला अलैहि तहरीर फरमाते हैं कि मिस्र में एक शख्स रहता था जिस के पास सिर्फ़ एक कपड़ा था जो उस के बदन पर था, उस ने आशूरे के दिन हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु तअलाला अन्हु की मस्जिद में फज़्र की नमाज़ पढ़ी, वहां का दस्तूर यह था कि औरतें आशूरा के दिन उस मस्जिद में दुआ के लिये जाया करती थीं, एक औरत ने उस शख्स से कहा अल्लाह के नाम पर मुझे कुछ मेरे बाल बच्चों के लिये दे दीजिये, उस शख्स ने कहा अच्छा मेरे साथ चलो, घर पहुंच कर उस ने अपने बदन

से कपड़ा उतारा और दरवाजा की दराज़ से उस औरत को दे दिया। औरत ने दुआ दी **اَللّٰهُمَّ اِنِّكَ اَنْتَ اَللّٰهُمَّ** खुदाए तआला तुम्हें जन्नत की हूले पहनाए।

उस शख्स ने उसी रात एक निहायत खूबसूरत हूर देखी जिस के हाथ में एक उम्दा खुशबूदार सेब था, हूर ने उस सेब को तोड़ा तो उस में एक हूला निकला, उस शख्स ने हूर से पूछा कि तू कौन है? उस ने कहा मैं तेरी जन्नत की बीवी आशूरा हूं, फिर वह शख्स नींद से बेदार हो गया, और सारे घर को खुशबू से महकता हुआ पाया। वुजू करके दो रकअत नमाज़ पढ़ी और बारगाहे इलाही में दुआ की **اَللّٰهُمَّ اِنِّكَ اَنْتَ اَللّٰهُمَّ** या इलाहल आलमीन! अगर वाकई वह जन्नत में मेरी बीवी है तो मेरी रूह को कब्ज़ कर ले और मुझे उस के पास पहुंचा दे। खुदाए तआला ने उस की दुआ कबूल फरमाई और उसी वक़्त मर गया। (नुज़हतुल मजालिस:1/182)

इमामे आली मक़ाम की नज़्मो-नियाज़ करना

सबील लगाना, उनके लिये खिचड़ा पकाना

और शर्तबत वगैरा पिलाना बाइसे सवाब व बरक़त है

हज़रत सअद बिन उबादा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि वह सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरी मां का इन्तेक़ाल हो गया है तो उन के लिये कौन सा सदका अफज़ल है? **اَللّٰهُمَّ** हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने फरमाया पानी (बेहतरीन सदका है, तो हुज़ूर के इरशाद के मुताबिक) हज़रत सअद ने कुआं खुदवाया और (अपनी मां की तरफ मन्सूब करते हुए) कहा यह कुआं सअद की मां के लिये है (यानी इस का सवाब उन की रूह को मिले)। (मिशकात शरीफ:169)

इस हदीस शरीफ से वाज़ेह तौर पर साबित हुआ कि हज़रत इमाम

हुसैन और दीगर शुहदाए करबला रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को सवाब पहुंचाने की गरज़ से सबील लगाना और खिचड़ा वगैरा पकाना, फिर यह कहना कि खिचड़ा और सबील इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की है, शरअन कोई कबाहत नहीं। जैसा कि जलीलुल कद्र सहाबी हज़रत सअद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु ने कुआं खुदवाने के बाद फरमाया कि यह कुआं सअद की मां के लिये है।

और शाह अब्दुल अजीज़ मोहिद्दसे देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि जो खाना कि हज़राते हसनैन करीमैन को नियाज़ करें, उस पर फातेहा, कुल और दुरूद शरीफ पढ़ने से तबरूक हो जाता है और इस का खाना बहुत अच्छा है। (फतावा अजीज़िया:1/78)

और इरशाद फरमाते हैं अगर मालीदा और चावलों की खीर किसी बुजुर्ग के लिये फातेहा कि लिये ईसाले सवाब की नियत से पका कर खिलाएं तो कोई मुज़ायक़ा (हरज) नहीं जाइज़ है। (फतावा अजीज़िया:1/50)

फिर चन्द सतर बाद फरमाते हैं अगर फातेहा किसी बुजुर्ग के नाम से किया गया, तो मालदारों को भी उस में से खाना जाइज़ है।

अल्बत्ता ताज़िया का चढ़ा हुआ खाना और मिठाई वगैरा नहीं खानी चाहिये। अज़ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं:

हज़रत इमाम के नाम की नियाज़ खानी चाहिये और ताज़िया का चढ़ा हुआ न खाना चाहिये। फिर दो सतर बाद तहरीर फरमाते हैं: ताज़िया पर चढ़ाने से हज़रत इमाम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की नियाज़ नहीं हो जाती और अगर नियाज़ देकर चढ़ाएं या चढ़ा कर नियाज़ दिलाएं तो उस के खाने से ऐहतराज़ चाहिये।

(रिसाला ताज़िया दारी:5)



ताज़िया दारी उलमाए अहले सुन्नत की नज़र में

हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ मोहम्मिसे देहलवी

रहमतुल्लाहि तआला अलैह

“ताज़िया दारी दर अशरए मुहर्रम अशरए मुहर्रम में ताज़िया दारी और व साख़ान ज़राइह व सूरत वग़ैरा कब्र व सूरत वग़ैरा बनाना जाइज़ दुरुस्त नीस्त।” (फ़तावा अज़ीज़िया:1/75) नहीं।

फिर चन्द सतर के बाद तहरीर फरमाते हैं:

“ताज़िया दारी कि हमूचू मुब्त दियां ताज़िया दारी जैसा कि बद् मज़हब मी कुन्द बिदअत अस्त व हमूचुनी करते हैं बिदअत है। और ऐसे ही साख़तन् ज़राइह व सूरते कुबूर व ताबूत, कब्रों की सूरत और अलम अलम वग़ैरा ई हमू बिद अत अस्त वग़ैरा यह भी बिदअत है और व ज़ाहिर अस्त कि बिद अत और ज़ाहिर है कि बिदअते सैय्यिह है। सैय्यिह अस्त।” (फ़तावा अज़ीज़िया:1/75)

और तहरीर फरमाते हैं:

“ई चोबहा कि साख़ता ऊस्त यह ताज़िया जोकि बनाया जाता है काबिले ज़ियारत नेस्तंद बल्कि इस काबिल है कि इसे नीस्त व काबिले इज़ाला अंद चुनांचे दर नाबूद किया जाए जैसा कि हदीस शरीफ में आया है कि तुम में से हदीस शरीफ आमदा:

من رأى منكم منكراً فليغيره بيده فإن لم يستطع فليأمنه فإن لم يستطع فليقلبه وذلك أضعف الإيمان - رواه مسلم

(फ़तावा अज़ीज़िया:1/76)

जो शख्स कोई बात ख़िलाफ़े शरअ देखे तो उसे अपने हाथ से ख़त्म करे और अगर हाथ से ख़त्म करने की कुद़रत न हो तो ज़बान से मना करे और अगर ज़बान से भी मना करने की कुद़रत न हो तो दिल से बुरा जाने और यह सब से कमज़ोर ईमान है।

किसी तरह ताजिया दारी की मदद करना कैसा है?

इस सवाल के जवाब में तहरीर यह भी जाइज़ नहीं है इस लिये फरमाते हैं:

“ई हम जाइज़ नीस्त चिरा कि इआनत बर मअसियत मी शवद व इआनत बर मअसियत गैर जाइज़।”

(फतावा अजीज़िया:1/77)

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बैरलवी

रहमतुल्लाहि तआला अलैहि

ताजिया की असल इस कद्व थी कि रौज़ए पूर नूर हुज़ूर शहज़ादए गुलगूं कुबा हुसैन शहीदे जुल्मो-जफा सलवातुल्लाहि तआला व सलामहू अला जदिहिल् करीम व अलैहि की सहीह नक़ल बना कर ब नियते तबर्क मकान में रखना, इस में शरअन कोई हरज न था। कि तस्वीर मकानात वगैरहा हर गैर जानदार की बना कर रखना सब जाइज़ और ऐसी चीज़ें कि मुअज़्ज़िमाने दीन की तरफ मंसूब हो कर अज़मत पैदा करें, उन की तमूसात ब नियते तबर्क पास रखना क़तअन जाइज़ जैसे सदहा साल से तबकन् फतबकन् अइम्माए दीन व उलमाए मोअत्तमदीन नअलैन शरीफैन हुज़ूर सैयिदुल कौनैन सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के नक़शे बनाते और उन के फवइदे जलीला व मनाफ़ेए जज़ीला में मुस्तक़िल रिसाले तस्नीफ़ फरमाते हैं। इश्तिबाह हो इमाम अल्लामा तिलमसानी की फत्हुल मुताल वगैरा मुतालेआ करे। मगर जहां बेख़िरद ने इस अस्ले जाइज़ को बिल्कुल नीस्त व नाबूद करके सदहा खुराफात तराशीं कि शरीअते मुतहहरा से अल्-अमान वल्-हफीज़ की सदाएं आईं। अव्वत तो नक़शे तअज़िया में रौज़ए मुबारक की नक़ल मलहूज़ न रही, हर जगह नई तराश नई गढ़त जिसे उस नक़ल से कुछ इलाफ़ा न निस्बत। फिर किसी में परियां किसी में बुराक किसी में और बेहूदा तमतराक़, फिर कूचा बकूचा व दस्त बदस्त इशाअते गुम के लिये उन का ग़श्त और उन के गिर्द सीना ज़नी और मातम साज़ी की शोर

अफगानी, कोई उन तस्वीरों को झुक-झुक कर सलाम कर रहा है, कोई मशगूले तवाफ, कोई सज्दा में गिरा है, कोई इन मायए बिद्आत को मआज़ल्लाह जल्वागाहे हज़रत इमाम अला जहिदी व अलैहिस्सलाम वस्सलाम समझ कर उस अबरक पन्नी से मुरादे मांगता, मन्तें मानता है, हाजत रवा जानता है। फिर बाकी तमाशे बाजे ताशे मदों, औरतों का रातों को मेल और तरह-तरह के बेहूदा खेल इन सब पर तुरा हैं।

गरज अशरए मुहर्रमुल हराम कि अगली शरीअतों से इस शरीअते पाक तक निहायत बा बरकत व महल्ले इबादत ठहरा हुआ था, इन बेहूदा रुसूमात ने जाहिलाना और फासिकाना मेलों का ज़माना कर दिया। फिर वबाले इब्तिदाअ का वह जोश हुआ कि खैरात को भी बतौर खैरात न रखा, रिया व तफाखुर अलानिया होता है। फिर वह भी यह नहीं कि सीधी तरह मोहताजों को दें बल्कि छतों पर बैठ कर फेंकेंगे। रोटियां ज़मीन पर गिर रही हैं, रिज़्के इलाही की बेअदबी होती है। पैसे रेत में गिर कर गाइब होते हैं, माल की इज़ाअत हो रही है मगर नाम तो हो गया कि फुलां साहब लंगर लुटा रहे हैं।

अब बहारे अशरा के फूल खिले, ताशे, बाजे बजते चले, तरह-तरह के खेलों की धूम बाज़ारी, औरतों का हर तरफ हुजूम, शहवानी मेलों की पूरी रुसूम, जशन यह कुछ और इस के साथ ख़्याल वह कुछ कि गोया यह साज़्जा तस्वीरें बिऐनिहा हज़राते शुहदा रिज़्जानुल्लाहि तआला अलैहिम के जनाजे हैं। कुछ नोचा उतार बाकी तोड़ ताड़ दफन कर दिये। यह हर साल इज़ाअते माल के जुर्म व वबाले जुदागाना रहे। अल्लाह तआला सदका हज़रात शुहदाए करबला अलैहिमुर् रिज़्जान वस्सना का हमारे भाइयों को नेकियों की तौफीक बख़्शे और बुरी बातों से तौबा अता फरमाए। आमीन

अब कि ताज़िया दारी इस तरीक़ए ना मरज़िय्या का नाम है क़तअन बिद्अत व ना जाइज़ व हराम है। हां अगर अहले इस्लाम जाइज़ तौर पर हज़रात शुहदाए किराम अलैहिमुर् रिज़्जान की अरवाहे

तैयिबा को ईसाले सवाब की सआदत पर इख्तिसार करते तो किस कदर खूब व महबूब था। और अगर नज़रे शौके व मुहब्बत में नक़ल रौज़ए अनवर की भी हाजत थी तो उसी कदर जाइज़ पर क़नाअत करते कि सहीह नक़ल बगरज़ तबरूक व ज़ियारत अपने मकानों में रखते और इशाअते ग़म व तसन्नूअ अलम व नौहा व मातम कुनी व दीगर उमूरे शनीआ व बिद्आते क़तइय्या से बचते, इस कदर में भी कोई हरज न था। मगर अब इस नक़ल में भी अहले बिद्आत से एक मुशाबहत और तअज़िया दारी की तोहमत का ख़दशा और आइन्दा अपनी औलाद या अहले ऐतिक़ाद के लिये इब्तिलाए बिद्आत का अंदेशा है और हदीस में आया है: **من كان يومئذ بالله واليوم الآخر فلا يقف مواقف التهم** और **اتقوا مواضع التهم**

लिहाज़ा रौज़ए अक्दस हुज़ूर सैयिदुश शुहदा की ऐसी तस्वीर भी न बनाए बल्कि सिर्फ़ कागज़ के सहीह नक़शे पर क़नाअत करे। और उसे बक़स्दे तबरूक बे आमैज़श मन्हिह्यात अपने पास रखे। जिस तरह हरमैन मोहतरमैन से कअूबाए मोअज़्ज़मा और रौज़ए आलिया के नक़शे आते हैं। या दलाइलुल ख़ैरात शरीफ़ में कुबूर पुर नूर के नक़शे लिखे हैं। **والسلام على من اتبع الهدى والله تعالى وسبحانه اعلم** हैं।

(इअलियल इफादतु फी तअज़ियतिल हिन्द व बयानिश शहादत:3)

और तहरीर फरमाते हैं:

तअज़िया ममनूअ है, शरअ में कुछ अस्ल नहीं। और जो कुछ बिद्आत इन के साथ की जाती हैं सख़ा ना जाइज़ हैं। तअज़िया पर जो मिठाई चढ़ाई जाती है अगरचे हराम नहीं हो जाती मगर उस के खाने में जाहिलों की नज़र में एक अग्र ना जाइज़ की वक़अत बढ़ाने और उस के तरक में उस से नफ़रत दिलानी है। लिहाज़ा न खाई जाए। ढोल बजाना हराम है। तअज़िया की तअज़ीम बिद्आत। तअज़िया बनाना ना जाइज़ है।

(फतवा रज़विय्यह:10/189, 3/258, 6/186)

हज़रत सदरुश शरीआ अल्लामा अमजद अली साहब रहमतुल्लाहि तआला अलैह, मुसन्निफ बहारे शरीअत

ताजिया दारी के वाकिआत करबला के सिलसिले में तरह-तरह के ढांचे बनाते हैं और उन को हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के रौज़ए पाक की शबीह कहते हैं, कहीं तख्त बनाए जाते हैं, कहीं ज़रीह बनती है और अलम और शद्दे (झण्डे) निकाले जाते हैं, ढोल, तोशे, किस्म-किस्म के बाजे बजाए जाते हैं। तअज़ियों का बहुत धूम धाम से गश्त होता है। आगे पीछे होने में जाहिलिय्यत के से झगड़े होते हैं, कभी दरख्त की शाखें की शाखें काटी जाती हैं, कभी चबूतरे खुदवाए जाते हैं। तअज़ियों से मिन्नतें मानी जाती हैं, सोने चांदी के अलम चढ़ाए जाते हैं। हार फूल नारियल चढ़ाए जाते हैं। वहां जूते पहन कर जाने को गुनाह जानते हैं बल्कि इस शिद्दत से मना करते हैं कि गुनाह पर भी ऐसी मुमानअत नहीं करते। छतरी लगाने को बहुत बुरा जानते हैं। तअज़ियों के अन्दर दो मस्तूई कब्रें बनाते हैं, एक पर सब्ज गिलाफ, और दूसरी पर सुर्ख गिलाफ डालते हैं, सब्ज गिलाफ वाली को हज़रत सैयिदना इमाम हसन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की कब्र और सुर्ख गिलाफ वाली को हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की कब्र या शबीहे कब्र बताते हैं और वहां शर्बत मालीदा वगैरा पर फातेहा दिलवाते हैं। यह तसव्वुर करके कि हज़रत इमाम आली मक़ाम के रौज़ा और मुवाजहे अक़दस फातेहा दिला रहे हैं।

फिर यह ताजिये दस्वीं तारीख़ को मस्तूई करबला में जा कर दफन करते हैं। गोया यह जनाज़ा था जिसे दफन कर आए, फिर तीजा, दसवां, चालीसवां सब कुछ किया जाता है और हर एक खुराफात पर मुश्तमिल होता है। हज़रत कासिम रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की मेहन्दी निकालते हैं गोया उन की शादी हो रही है और मेहन्दी रचाई जाएगी। और इसी ताजिया दारी के सिलसिले में कोई पैक बनता है जिस के कमर से घुंघरू बंधे हुए होते हैं गोया यह हज़रत इमाम आली मक़ाम

का कासिद और हरकारा है जो यहां से खत लेकर इब्ने जियाद या यजीद के पास जायेगा और वह हरकारों की तरह भागा फिरता है। किसी बच्चा को फकीर बनाया जाता है, उस के गले में झोली डालते और घर-घर उस से भीक मंगवाते हैं, कोई सक्का (पानी पिलाने वाला) बनाया जाता है, छोटी सी मशक उस के कंधे से लटकती है, गोया यह दरियाए फुरात से पानी भर लाएगा। किसी अलम पर मशक लटकती है और उस पर तीर लगा हुआ होता है, गोया कि यह हज़रत अब्बास अलमदार हैं कि फुरात से पानी ला रहे हैं, और यज़ीदियों ने मशक को तीर से छेद दिया है। इसी किस्म की बहुत सी बातें की जाती हैं। यह सब लगव व खुराफात हैं। इन से हरगिज़ हज़रत सैयिदना इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु खुश नहीं। यह तुम खुद गौर करो कि उन्होंने ने ऐहयाए दीन व सुन्नत के लिये यह जबर्दस्त कुर्बानियां कीं और तुम ने मआज़ल्लाह इस को बिद्अत का ज़रिया बना लिया।

बाज़ जगह इसी तअज़िया दारी के सिलसिले में बुराक बनाया जाता है जो अजब किसम का मुजस्समा होता है कि कुछ हिस्सा इंसानी शक्ल का होता है और कुछ हिस्सा जानवर का सा। शायद यह हज़रत इमाम आली मक़ाम की सवारी के लिये एक जानवर होगा। कहीं दुलदुल बनता है, कहीं बड़ी-बड़ी कब्रें बनती हैं। बाज़ जगह आदमी रीछ बंदर लंगूर बनते हैं। और कूदते फिरते हैं, जिन को इस्लाम तो इस्लाम इंसानी तहज़ीब भी जाइज़ नहीं रखती। ऐसी बुरी हरकत इस्लाम हरगिज़ जाइज़ नहीं रखता। अप्सोस कि मुहब्बत अहले बैते किराम का दावा और ऐसी बेजा हरकतें। यह वाकिआ तुम्हारे लिये नसीहत था और तुम ने उस को खेल तमाशा बना लिया।

इसी सिलसिले में नौहा व मातम भी होता है और सीना कोबी होती है, इतने जोर-जोर से सीना कूटते हैं कि वर्म हो जाता है, सीना सुर्ख हो जाता है बल्कि बाज़ जंजीरों और छुरियों से मामत करते हैं कि सीने से खून बहने लगता है। तअज़ियों के पास मरसिया पढ़ा जाता है और तअज़िया जब गश्त को निकलता है, उस वक़्त भी उस के आगे

मरसिया पढ़ा जाता है, मरसिया में गुलत वाकिआत नज़्म किये जाते हैं। अहले बैत किराम की बेहुर्मती और बेसब्री और जज़अ व फज़अ का ज़िक्र किया जाता है और चूँकि अक्सर मरसिया राफज़ियों ही के हैं, बाद में तबर्रा भी होता है मगर इस रौ में सुन्नी भी इसे बेतकल्लुफ पढ़ जाते हैं और उन्हें इस का ख़्याल भी नहीं होता कि क्या पढ़ रहे हैं। यह सब नाजाइज़ और गुनाह के काम हैं। (बहारे शरीअत: 16/247-248)

एक फतावा मअ तस्दीकाते उलमाए अहले सुन्नत

(यह फतावा मअ तस्दीकात 1388 में बशकल पोस्टर शाए हो चुके हैं)

सवाल नं० 1- (अलिफ): मुख्वजा ताज़िया दारी जाइज़ है या ना जाइज़? (बा): अलम और शदे (झण्डे) निकालना नीज़ ताज़िया को शबे आशूरा गली कूचा में गश्त कराना फिर उसे दसवीं मुहर्रम को मस्तनूई (बनावटी) करबला में ले जाकर दफन करना, पहली मुहर्रम से ढोल व ताशा बजाना फिर आशूरा के दिन ताज़िया के आगे-आगे बाजा बजाते हुए उसे मस्तनूई करबला तक ले जाना शरअन कैसा है? नीज़ ताज़िया दारी, अलम और शदे (झण्डे) की अस्ल क्या है?

सवाल नं० 2- ढोल, ताशे और शुदे वगैरा कौं मस्जिद या फिनाए मस्जिद में रखना शरअन कैसा है? नीज़ मस्जिद या फिनाए मस्जिद में रखे हुए ढोल, ताशे, अलम और शुदे को बाहर निकाल कर फेंक देने वाला शरअन मुजरिम होगा या नहीं? *بينوا توجروا بذيّنو توجروا*

जवाब नं० 1:- (अलिफ) ताज़िया दारी मुख्वजा हिन्द ना जाइज़ व बिद्रअते सैय्यिअह व हराम है। *والتفصيل في اعالى الافادة والله تعالى اعلم*

(बा) यह सब ना जाइज़ व हराम, कातिले अहले इस्लाम और जब यह ना जाइज़ और हराम हैं तो इन की अस्ल क्या हो सकती है? हां अगर साइल की मुराद यह हो कि यह किस की नक़ल है, जिस की नक़ल हो उस की अस्ल करार दी जाए तो नज़रे गाइर में ऐसा मालूम होता है कि अलम और शुदे जो नेज़ों और झण्डों की शकल में होते हैं ग़ालिबन यज़ीदी फौज के उस फेअल की नक़ल है जो उन्होंने ने करबला

में जुल्मी- जफा के पहाड़ तोड़ने के बाद इमाम आली मक़ाम का सरे मुबारक नेजों पर कूफा की गलियों में बतौर शादियाना व मुबारकबादी घुमाया था। **والله تعالى اعلم** **وَلَلَّاهُ تَجَالَا اَزْلَم**।

जवाब नं० २:- यह वाहियात व खुराफात चीजें सब ना जाइज़ हैं तो जहां भी रखें ना जाइज़ ही हैं। और मस्जिद या फिनाए मस्जिद में बदर्जए औला ना जाइज़ और इन चीजों को मस्जिद से निकाल कर फेंकने वाला सवाब पाएगा, क्योंकि उस ने ना जाइज़ चीज़ को दफअ किया और हदीस **من رأى منكم منكراً فليغيره بيده** पर अमल किया। **والله تعالى اعلم ثم رسول الله عليه وسلم**

मुहम्मद अहमद जहांगीर खां गुफिर लहू व लिअबवैहिल मन्नान

मुफ्ती मरकज़ अहले सुन्नत, मंजरे इस्लाम, बरेली शरीफ

तस्दीक़ात मज़हरे इस्लाम बरेली शरीफ

- 1- अल्-जवाबु सहीहुन — मुहम्मद मुस्तफा रज़ा खां (मुफ्तिए आजम हिन्द)
- 2- तक्द असाब मन अजाब -- काज़ी मुहम्मद अब्दुर रहीम बस्तवी
- 3- सहहल जवाब -- तहसीन रज़ा गुफिर लहू
- 4- अल्-जवाबु सहीहुन -- मुहम्मद आजम
- 5- अल्-जवाबु सहीहुन -- मुज़फ्फर हुसैन गुफिर लहू

मंजरे इस्लाम बरेली शरीफ

- 6- अल्-जवाबु सहीहुन -- मुफ्ती सैयद मुहम्मद अफज़ल हुसैन गुफिर लहू
- 7- सहहल जवाब -- मुहम्मद एहसान अली उफिया अन्हु मुज़फ्फर पुरी
- 8- अल्-जवाबु सवाब -- गुलाम मुज्तबा अशरफी
- 9- अल्-जवाब हुवल जवाब -- सैयद मुहम्मद आरिफ रज़वी नानपारवी
- 10- अल्-जवाबु सहीहुन वल्-मुजीबु नजीहुन् -- खलीलुर रहमान रज़वी
- 11- अल्-जवाबु सहीहुन -- मुहम्मद फैज़ अहमद उफिय अन्हु सिद्दीकी
- 12- अल्-जवाबु सहीहुन -- मुहम्मद उमर कादरी ओझा गंजवी बस्तवी

जबल पुर

- 13- हिन्दुस्तान की मुरव्वजा ताज़िया दारी बिला शुब्हा बिद्आत व

ममनूआत का एक ऐसा मजमूआ है कि उस की जितनी मजम्मत की जाए कम है। उलमाएँ वाइज़ीन मुक़र्रिरीन, मशइखे तरीक़त और सज्जादा नशीन हज़रात को अमली तौर पर अपने-अपने हलक़ए असर में اذع الى سبيل ربك بالحكمة والموعظة الحسنة وحادلهم بالتي هي احسن और دفع بالتي هي احسن السيئة के तरीक़े से काम लेकर आहिस्ता-आहिस्ता मुर्व्वजा तअज़िया दारी की बिद्आत व ममनूआत व मुहर्रमाते शरइय्यह को मिटाने की कोशिश करे। मुफ़्ती साहब का यह जवाब बिल्कुल हक़ व सवाब और वाजिबुल अमल बिला इरतियाब है। वहुव तअ़ाला अज़लम

कतबहू फकीर अब्दुल बाकी मुहम्मद बुरहानुल

अल्-कादरी अर-रज़वी अस्सलामी गुफिर लहू

मुम्बई

14- अल्-जवाबु सहीहुन व सवाबुन् वल्-फाज़िलुल मुजीब मुसीबुन् व मसाबुन्----- फकीर अबुल हसनैन आले मुस्तफा

अल्कादरी अल्बरकाती अन्नूरी गुफिर लहू

15- अल्-जवाबु सहीहुन् -- अस्सैयद हामिद अशरफ

अल्-अशरफी अल्-ज़ीली (कछौछवी)

16- अल्-जवाबु सहीहुन् -- मुईनुद्दीन दानिश अमीन गुफिर लहू टोंकी

17- अल्-जवाबु हक्कुन -- ख़ादिम मुहम्मद सलीम गुफिर लहू रज़वी

मुल्तान - पाकिस्तान

18- अल्-जवाबु सहीहुन् -- फकीर मुहम्मद हसन अली अर-रज़वी

अल्-कादरी गुफिर लहू ख़ामिद मदरसा ग़ौसिया अनवारे रज़ा मेलसी मुल्तान

जावरा - ज़िला रतलाम

19- अल्-जवाबु सहीहुन व सवाबुन -- वल्लाहु व रसूलुहु अज़लम जल्ल

जलालहू व सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम

फकीर अबुत ताहिर मुहम्मद तय्यब अली कादरी गुफिर लहू

मुफ़्तिए शहर जावरा (रतलाम)

मुरादाबा

20- ताज़िया, अलम और शुद्दे की अस्ल के मुतअल्लिक अदमे तहकीक़

की बिना पर मैं खामोश व साकित हूँ और वल्लाहु तआला अज़लम
बिस् सवाब कहकर कर गुज़र जाता हूँ। इस के अलावा जवाब में तहरीर
करदा उमूर के साथ मुझे पूरा-पूरा इत्तिफाक है। जवाबात सहीह हैं।

अल्-अब्दुल मुज़निब मुहम्मद हबीबुल्लाह गुफिर लहू नईमी अल्-अशरफी

21- अल्-जवाबु सहीहुन् -- मुहम्मद यूनस उफिय अन्हु

(मोहतमिम जामिआ नईमिया)

22- मा अजाबल मुजीब फहुस् सहीह -- अल्-फकीर मुहम्मद अय्यूब खां

अल्-हबीबी अन्-नईमी

23- अल्-जवाबु सहीहुन् -- मुहम्मद तरीकुल्लाह खादिम जामिआ नईमिया

24- अल्-जवाबु सहीहुन् -- अल्-अब्द मुहम्मद हाशिम गुफिर लहू।

25- अल्-जवाबु सहीहुन् व सवाबुन् -- अब्दुल हकीम मुहम्मदी

कादरी नईमी गुफिर लहू

मालवा - इन्दौर

26- लकद असाब मन् अजाब-वल्लाहु सुब्हानहू तआला अज़लम

बिस्सवाब-- मुहम्मद रिज़वानुर रहमान अल्-फारुकी मुफ्ती मालवा

मुज़फ्फर पुर - बिहार

27- अल्-जवाबु सहीहुन् -- मुहम्मद मुतीउर रहमान नूरी

मदरसा नूरुल हुदा पुखरेरा

28- अल्-जवाबु सहीहुन् बिला इरतियाब --

मुहम्मद मुशताक अहमद गुफिर लहू बाथवी

29- अल्-जवाबु सहीहुन् व सवाबुन् -- मुहम्मद अतहर हुसैन बाथवी

नागपुर

30- अल्-जवाबु मुसीबुन् -- मुहम्मद अब्दुर रशीद गुफिर लहू (मुफ्ति जामिआ)

31- अल्-जवाबु सहीहुन् -- मुहम्मद अब्दुल हफीज़ गुफिर लहू

32- अल्-जवाबु व सवाबुन् -- अबुल मजद मुहम्मद जैनुल आबिदीन गुफिर लहू

33- अल्-जवाबु सहीहुन् -- मुहम्मद अब्दुल हकीम रज़वी अशरफी

34- अल्-जवाबु सहीहुन् -- मुहम्मद शफी रज़वी गुफिर लहू

मुबारक पुर - ज़िला आजमगढ़

35- अल्-जवाबु सहीहुन् -- अब्दुल अजीज़ उफिय अन्हु सदरुल मुदरिसीन अशरफिया

36- अल्-जवाबु सहीहुन् -- अब्दुर रऊफ गुफिर लहू मुदरिस अशरफिया

37- अल्-जवाबु सहीहुन् -- अब्दुल मन्नान आजमी (मुफ्ती अशरफिया)

38- सहहल् जवाब -- मुहम्मद यहया गुफिर लहू खादिम दारुल उलूम अशरफिया

अमरोहा - ज़िला मुरादाबाद

39- अल्-जवाबु सहीहुन् मअ साइरि फुरुइहा वल्-मुजीबु मुसाबुन्-
फकीर मुहम्मद खलील काज़मी उफिय अन्हु अमरोहवी

राय बरेली

40- अल्-जवाबु सहीहुन् -- अब्दुत तव्वाब सिद्दीकी पक्सरावां, राय बरेली

कछौछा शरीफ

41- अहले सुन्नत व जमाअत के नज़दीक ताज़िया दारी कह कर जिन मरासिम को मुराद लिया जाता है उन के मुन्करात अग्रे मुन्कर ही हैं, मसलन इज़ाअत माले मुस्लिम व अस्बाबे तअय्युश व तफरीह ब बयान मक़ज़ूबात व औहामें फासिदा वगैर ज़ालिक और यह वह मुन्करात हैं जिन का मुन्कर होना मन्सूस है। नीज़ मस्जिद व फिनाए मस्जिद को हर तरह के तअय्युश व तफरीह से पाक रखना ज़रूरी है।

वल्लाहु अअलम बिस्सवाब।

सैयद मुहम्मद मुख्तार अशरफ सज्जादा नशीन कछौछा शरीफ

42- अल्-जवाबु सहीहुन् -- सैयद मुज़फ्फर हुसैन कछौछवी।

टांडा - ज़िला फैज़ाबाद

43- अल्-जवाबु सहीहुन् -- अब्दुल अजीज़ अशरफी उफिय अन्हु

44- अल्-जवाबु सहीहुन् -- फकीर मुहम्मद तय्यब खां गुफिर लहू
मुदरिस मदरसा मंज़रे हक़

- 45- अल्-जवाबु सहीहुन् -- मुहम्मद अय्यूब कादरी उफिय अन्हु
 46- अल्-जवाबु सहीहुन् व सवाबुन् -- मुहम्मद कुदरतुल्लाह आरिफ रज़वी

इलतेफात गंज - ज़िला फैज़ाबाद

- 47- अल्-जवाबु सहीहुन् -- अब्दुर रऊफ अशरफी
 48- अल्-जवाबु सहीहुन् -- अहकर अब्दुल मतीन दुलमौवी
 49- अल्-जवाबु सहीहुन् -- मुहम्मद जमील अहमद अलयार अलवी शमीम बस्ती
 50- अल्-जवाबु सहीहुन् -- मुहम्मद समीअ कादरी अलयार अलवी

बलराम पुर - ज़िला गोंडा

- 51- अल्-जवाबु सहीहुन् वल्लाहु तअ़ाला अज़लम -- मुहम्मद शरीफुल हक़
 अमजदी जामिआ अरबिया अनवारुल कुरआन बलराम पुर।

अमरडोभा - बस्डेला ज़िला बस्ती

- 52- अल्-जवाबु सहीहुन् -- अल्अब्द सखावत अली उफिय अन्हु
 तनवीरुल इस्लाम
 53- अल्-जवाबु सहीहुन् -- निजामुद्दीन उफिय अन्हु
 54- अल्-जवाबु सहीहुन् -- मुहम्मद अबुल लैस उफिय अन्हु
 55- अल्-जवाबु सहीहुन् -- मुहम्मद ज़हूर अहमद रज़वी उफिय अन्हु
 56- अल्-जवाबु सहीहुन् -- अब्दुश शकूर मुदरिस तदरीसुल इस्लाम बस्डेला
 57- अल्-जवाबु हक्कुन -- मुहम्मद इस्माईल अतहर बस्ती

बराउं शरीफ - ज़िला बस्ती

- 58- अल्-जवाबु सहीहुन् -- मुहम्मद सिद्दीक़ अहमद सज्जादा नशीन
 आस्ताना आलिया यार अलविया
 59- अल्-जवाबु सहीहुन् -- गुलाम जीलानी उफिय अन्हु
 (शैखुल हदीस फैजुर रसूल)
 60- अल्-जवाबु सहीहुन् -- बदरुद्दीन अहमद अल्कादरी रज़वी
 61- अल्-जवाबु सहीहुन् -- मुहम्मद यूनस नईमी अशरफी

- 62- कद सहहल् जवाब -- अबुल बरकात अल्-अब्द मुहम्मद नईमुद्दीन
अहमद उफिय अन्हु
- 63- लकद असाब मन् अजाब -- जलालुद्दीन अहमद अमजदी
- 64- अल्-जवाबु हक्कुन व सवाबुन -- मुहम्मद साबिर कादरी नसीम बस्तवी
- 65- अल्-जवाबु सहीहुन् -- अली हसन नईमी अशरफी
- 66- अल्-जवाबु सहीहुन् -- मुहम्मद हनीफ कादरी
- 67- अल्-जवाबु सहीहुन् -- मुहम्मद मोहसिन चिश्ती यारअलवी
- 68- अल्-जवाबु सहीहुन् -- नूर मुहम्मद कादरी औझा गंजी
- 69- जवाब सहीह है -- मुहम्मद नूरुल हक् खादिम हजरत शाह साहब किब्ला

भाव पुर - जिला बस्ती

- 70- अल्-जवाबु सहीहुन् -- अल्अब्द मुहम्मद हलीम कादरी यारअलवी
- 71- अल्-जवाबु हक्कुन -- मुहम्मद समीउल्लाह कादरी
- 72- अल्-जवाबु सहीहुन् -- अब्दुल जब्बार कादरी
- 73- अल्-जवाबु सहीहुन् -- अब्दुल जब्बार कादरी चरखवी

बढ़या - जिला बस्ती

- 74- अल्-जवाबु सहीहुन् -- मुहम्मद सिद्दीक कादरी नेपाली
- 75- अल्-जवाबु सहीहुन् -- अब्दुल जब्बार अशरफी मवी

खुदाए अज़्ज़ व जल्ल मुसलमानों को हजरत इमाम
हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के मक्सदे शहादत को
समझने और मुहर्रम की जुमला बिद्आत व खुराफात
से बचने की तौफीके रफीक बख्शे आमीन

وصلی الله تعالی وسلم علی النبی الکریم وعلی اله واصحابه وازواجه واهل بیته اجمعین

برحمتک یا ارحم الراحمین

वसल्लल्लाहु तआला व सल्लम अलन्नबियिल करीमि व अला
आलिही व अस्थाबिही व अज्वाजिही व अहलि बैतिही अज्मईन,
बिरह मतिक या अरहमर राहिमीन।

हालाते मुसन्निक (बकलम खुद)

पैदाइश:- 1352 हि० मुताबिक 1933 ई० में जिला बस्ती (यू०पी०) की मशहूर आबादी ओझा गंज में मेरी पैदाइश हुई जो शहरे बस्ती से 20 किलो मीटर पच्छिम फैजाबाद रोड पर महाराज गंज से 3 किलो मीटर दक्खिन है।

नाम व नसब:- जलालुद्दीन अहमद बिन जान मुहम्मद बिन अब्दुर रहीम बिन गुलाम रसूल बिन जियाउद्दीन अहमद बिन मुहम्मद सालिक बिन मुहम्मद सादिक बिन अब्दुल कादिर बिन मुराद अली। *ग़फ़रल्लाहु तआला लहुम् वलि साइरिल मुस्लिमीन।*

खानदानी हालात:- आखिरुज जिक जिला फैजाबाद कछौछा मुकदसा के करीब बड़हड़ इलाका के मशहूर व मारुफ राजपूत खानदान के एक फर्द थे जो मुराद सिंह के नाम से याद किये जाते थे, वह इस्लाम की खूबियों से मुतअस्तिर होकर ईमान की दौलत से सरफराज हुए तो मुराद अली कहलाए। खानदान वालों ने दबाव डाल कर इस्लाम से बरगस्ता करना चाहा तो आबाई वतन छोड़ कर जिला फैजाबाद अकबर पुर के करीब कस्बा शहजाद पुर में सुकूनत इख्तियार कर ली। उन की औलाद में से जियाउद्दीन मरहूम शहजाद पुर छोड़ कर ओझा गंज जिला बस्ती में आकर आबाद हो गए।

मेरे वालिद जान मुहम्मद मरहूम अरसए दराज तक अपने घर फी सबीलिल्लाह बच्चों को मज़हबी तालीम देते रहे। जिंदगी भर बिला तंख्वाह जामा मस्जिद में नमाज़े पंजगाना और जुमा व ईदैन की इमामत फरमाते रहे, बड़े मुत्तकी व परहेजगार थे। आज भी आबादी के लोग उन के तक्वा व परहेजगारी को याद करते हैं और उन का तज्किरा बड़े ऐहतियाम से करते हैं। 20 जिल हिज्जा 1370 हि० मुताबिक 1951 ई० को मेरे आलिम होने से 8 माह कबल उन का इन्तेकाल हो गया।

वालिदए मोहतरमा बीबी रहमतुन निसा एक दीन दार घराने की

लड़की थीं। नमाज़ और सुबह तिलावते कुरआन मजीद की बहुत पाबंद थीं। दुआए गंजुल अर्श उन को जबानी याद थी जिसे वह रोज़ाना पढ़ा करती थीं। 14 जुमादल ऊला 1399 हि० मुताबिक 12 अप्रैल 1979 ई० को मैं उन के भी ज़ाहिरी साय से महरूम हो गया — खुदाए अज़्ज़ व जल्ल उन की कब्रों पर रहमतो-अनवार के फूल बरसाए।

इन लोगों ने मेरी तालीम के बारे में जो आला किरदार पेश किया है इस ज़माने में उस की मिसाल मिलनी मुश्किल है कि मैं इन लोगों के बुढ़ापे का अकलौता बेटा था मगर पहली बार जब मैं नागपूर गया तो ढाई साल के बाद आया, इस दरमियान मैं इन लोगों ने मेरे पास घर आने के बारे में ख़त लिखना तो बड़ी बात है संदेसा तक न भेजा ताकि मेरी तामील का नुक़सान न हो। *फजज़ाहुमल्लाहु तआला ख़ैरल् जज़ा।*

इस तसव्वुर से मेरी आंखें अशक़बार हो जाती हैं कि मेरे चार बेटे बक़ैदे हयात हैं मगर उन में से किसी की ढाई माह तक की जुदाई भी मेरे लिये शाक़ है तो मेरे वालिदैन् ने बुढ़ापे के अकलौते बेटे की ढाई साल तक जुदाई किस दिल व जिगर के साथ बर्दाश्त की होगी।

तहसीले इल्म:-नाजिरा और हिफ़्ज़े कुरआन की तालीम अपने वालिद के शागिर्द मक़ामी मौलवी मुहम्मद ज़करिया साहब मरहूम से हासिल की। सात साल की उम्र में कुरआन मजीद नाजिरा ख़त्म किया। और 1363 हि० मुताबिक 1944 ई० यानी साढ़े दस साल की उम्र में हिफ़्ज़ मुकम्मल कर लिया। फ़ारसी आमद नामा ज़िला फैज़ाबाद इलतेफ़ात गंज के मौलाना अब्दुर रऊफ़ साहब से पढ़ी और फ़ारसी की छोटी बड़ी बारह किताबों की तालीम शुऐबुल औलिया हज़रत शाह मुहम्मद चार अली साहब किब्ला रहमतुल्लाहि तआला अलैह के पीर ज़ादा मौलाना अब्दुल बारी साहब मरहूम से हासिल की और अरबी की इब्तिदाई किताबें उन्हीं से पढ़ीं।

1366 हि० मुताबिक 1947 ई० हंगामे के फ़ौरन बाद मैं तहसीले इल्म के लिये नागपूर चला गया। दिन भर काम करता जिस से 25-30

रुपये माहाना अपने वालिदैन् की खिदमत करता और अपने खाने पीने का इन्तेज़ाम भी करता और बाद मग़रिब अपने दस साथियों के हमूराह तक़रीबन 12 बजे रात तक हज़रत अल्लामा अरशदुल कादरी साहब किब्ला दामत बरकातहुमुल आलिया से मदरसा इस्लामिया शमसुल उलूम बकरा मंडी मोमिन पुरा में दर्से निज़ामिया की तालीम हासिल करता और बाद नमाज़े फ़ज़्र व अस्त्र एक कारी से किराजत पढ़ता रहा। इस तरह नागपूर में मेरी तालीम का सिलसिला जारी रहा।

24 शाबान 1371 हि० मुताबिक 19 मई 1952 ई० को 18 साल की उम्र में हज़रत अल्लामा अरशदुल कादरी साहब किब्ला दामत बरकातहुमुल कुदसिया ने दस साथियों के हमूराह मुझे भी सनदे फराग़त अता फरमाई। इस तरह ओझा गंज की तारीख़ में हम सब से पहले कारी और फारिगुत् तहसील अंतिम हुए।

ज़मानए तालिब इल्मी का एक अहम वाकिआ

फारिगुत् तहसील होने से दो साल क़ब्ल माहे रमज़ानुल मुबारक 1369 हि० मुताबिक 1950 ई० में हम नागपूर से तरावीह में कुरआन मजीद सुनाने के लिये डीसाई गंज वारसा ज़िला चांदा गए, वहां एक साहब जिन का नाम इस्माईल उमर सिपाही था, एक फर्म के मुलाज़िम थे, नमाज़ वगैरा के पाबंद थे और गुलसितां बोस्तां तक फारसी पढ़े हुए थे, वह हमारी बड़ी क़दर करते थे। रमज़ानुल मुबारक के बाद वह अपने वतन धौरा जी (गुजरात) जाने वाले थे।

चूँकि उस ज़माने में नागपूर की कारोबारी हालत ठीक नहीं थी। दिन भर मेहनत से काम करने के बावजूद अपने इख़राजात के साथ वालिदैन् की माहाना खिदमत करने में हमें दुश्वारी पेश आ रही थी, मैं बहुत परेशान था इस लिये इस्माईल उमर सिपाही के साथ अहमदाबाद जाने के लिये इस ख़्याल से तैयार हो गया कि मेरे यहां के बहुत से लोग वहां मिलों में काम करते हैं, मैं भी जा के किसी मिल में काम करूंगा।

ईद हो गई, हम अहमदाबाद का सफर करने के लिये निकल पड़े, नागपूर पहुंच कर हम ने अपना तमाम सामान अपने रफीके सफर इस्माईल उमर सिपाही के सुपुर्द करते हुए कहा कि आप स्टेशन चलें मैं अपने उस्तादे गिरामी हज़रत अल्लामा अरशुदल कादरी साहब किब्ला से मुलाकात करके आता हूँ।

जब मैं हज़रत अल्लामा की खिदमत में हाज़िर हुआ और उन को अपने इरादे से आगाह किया तो उन्होंने ने फरमाया कि अहमदाबाद मत जाओ, जिस तरह भी हो सके यहीं रहो। पहले ज़माने में लोगों ने तहसीले इल्म के लिये बड़ी-बड़ी मशक्कतें झेली हैं और मुसीबतें बर्दाश्त की हैं अगर तुम मिल में जाकर काम करोगे तो जो कुछ तुम ने अब तक पढ़ा है सब बरबाद हो जाएगा, मिल मज़दूर और सिर्फ हाफिज जी होकर रह जाओगे। यह वाकिआ उस ज़माने का है जबकि अहमदाबाद में दारुल उलूम शाह आलम काइम नहीं हुआ था।

मैं ने हज़रत अल्लामा की नसीहत मान ली, अहमदाबाद जाने का इरादा दिल से बिल्कुल निकाल दिया और स्टेशन जाकर इस्माईल उमर सिपाही साहब से कहा आप जाइये मैं नहीं जाऊंगा। और फिर अपना सामान लेकर मैं वापस आ गया।

खुदावन्दे कुद्दूस का मैं लाख-लाख शुक्र अदा करता हूँ कि उस ने मेरे दिल में उस्ताद का ऐसा ऐहतिराम बख्शा कि मैं ने उन की इजाज़त के बग़ैर अहमदाबाद का सफर करना मुनासिब न समझा और फिर जो कुछ उन्होंने ने इरशाद फरमाया उसे तस्लीम कर लिया। अगर मेरे दिल में उस्ताद का ऐसा ऐहतिराम न होता तो उन से मिले बग़ैर मैं चला जाता या अगर मुलाकात भी कर लेता तो जबकि मैं पूरा सामान स्टेशन पहुंचा चुका था उन की नसीहत पर अमल न करता तो बेशक आज मैं मिल मज़दूर होता, इस तरह मेरी ज़िंदगी तबाह व बरबाद हो जाती और वह हाल होता कि जिस के तसक्कुर से मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं और मैं कांप जाता हूँ।

और अल्लहमु लिल्लाह मैं उन लोगों में से नहीं हूँ कि जब तक उस्ताद का मोहताज रहे उन की इज्जत करे और जब किसी काबिल हो जाए तो गद्दारी और बेवफाई पर उतर आए और अजिय्यत पहुंचाए बल्कि आज भी मैं अपने असातिजा की बहुत इज्जत करता हूँ और उस्ताजी व शागिर्दी के रिश्ते को अहसन तरीके से निभाने की कोशिश करता हूँ। हज़रत अल्लामा अरशदुल कादरी साहब किब्ला दामत बरकातहुमुल आलिया 17 सफरुल मुजफ्फर 1401 हि० मुताबिक 26 दिसम्बर 1980 ई० के एक मक्तूब में खादिम को मुख़ातब करते हुए तहरीर फरमाते हैं

“कई सौ उलमा में सिर्फ़ तन्हा आप की ज़ात है जिस ने शागिर्दी और उस्ताजी का रिश्ता निभाया है और अब तक निभाह रहा है और नई नस्ल की खुद सरी, सरकशी और ऐहसान फरामोशी से खुदा की पनाह!”

शर्फ़े बैअत:- चूँकि मुझे शुरू ही से मसाइले शरइय्या जानने का बड़ा शौक था इस लिये इब्तिदा ही से बहारे शरीअत और उस के मुसन्निफ़ हज़रत सदरुश शरीआ रहमतुल्लाहि तआला अलैह से मैं बड़ी अक़ीदत रखता था, फिर जब हज़रत अल्लामा अरशदुल कादरी साहब किब्ला दामत बरकातहुमुल कुदसिया से मालूम हुआ कि हज़रत सदरुश शरीआ अज़ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बैरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के ख़लीफ़ा हैं तो 29 जुमादल ऊला 1367 हि० मुताबिक 1948 ई० में हज़रत से शर्फ़े बैअत हासिल किया और सिलसिलए रज़विया में दाख़िल हो गया। अल्बत्ता बाज़ मसालेह के पेशे नज़र मैं ने अब तक किसी से ख़िलाफ़त नहीं ली वरना साजिद अली खां साहब, किसी मक्सद से हुज़ूर मुप्तिए आज़मे हिन्द किब्ला रहमतुल्लाहि तआला अलैह की जब ख़िलाफ़त आम तौर पर तक्सीम कर रहे थे मैं भी आसानी के साथ उन से हासिल कर लेता।

आला हज़रत से अक़ीदत:- आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा

और अल्हम्दु लिल्लाह मैं उन लोगों में से नहीं हूँ कि जब तक उस्ताद का मोहताज रहे उन की इज्जत करे और जब किसी काबिल हो जाए तो गद्दारी और बेवफाई पर उतर आए और अजिय्यत पहुंचाए बल्कि आज भी मैं अपने असातिजी की बहुत इज्जत करता हूँ और उस्ताजी व शागिर्दी के रिश्ते को अहसन तरीके से निभाने की कोशिश करता हूँ। हज़रत अल्लामा अरशदुल कादरी साहब किब्ला दामत बरकातहुमुल आलिया 17 सफरुल मुजप्फर 1401 हि० मुताबिक 26 दिसम्बर 1980 ई० के एक मक्तूब में खादिम को मुखातब करते हुए तहरीर फरमाते हैं

“कई सौ उलमा मैं सिर्फ तन्हा आप की ज्ञात है जिस ने शागिर्दी और उस्ताजी का रिश्ता निभाया है और अब तक निभाह रहा है और नई नस्ल की खुद सरी, सरकशी और ऐहसान फरामोशी से खुदा की पनाह!”

शर्फे बैअत:- चूँकि मुझे शुरू ही से मसाइले शरइय्या जानने का बड़ा शौक था इस लिये इब्तिदा ही से बहारे शरीअत और उस के मुसन्नफ हज़रत सदरुश शरीआ रहमतुल्लाहि तआला अलैह से मैं बड़ी अक़ीदत रखता था, फिर जब हज़रत अल्लामा अरशदुल कादरी साहब किब्ला दामत बरकातहुमुल कुदसिया से मालूम हुआ कि हज़रत सदरुश शरीआ अज़ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के खलीफा हैं तो 29 जुमादल ऊला 1367 हि० मुताबिक 1948 ई० में हज़रत से शर्फे बैअत हासिल किया और सिलसिलए रज़विया में दाखिल हो गया। अल्बत्ता बाज़ मसालेह के पेशे नज़र मैं ने अब तक किसी से ख़िलाफत नहीं ली वरना साजिद अली खां साहब किसी मक्सद से हुज़ूर मुफ़्तए आजमे हिन्द किब्ला रहमतुल्लाहि तआला अलैह की जब ख़िलाफत आम तौर पर तक्सीम कर रहे थे मैं भी आसानी के साथ उन से हासिल कर लेता।

आला हज़रत से अक़ीदत:- आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा

बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह अगर्चे बहुत से उलूम व फुनून के माहिर थे लेकिन उन में फकाहत का वस्फ सब से मुस्ताज़ है और मुझे फिकह से ज़्यादा शगुफ है इस लिये मैं आप से बहुत ज़्यादा अक़ीदत रखता हूँ और आप के तहकीकी फतावा के मुतालिआ से रोज़ बरोज़ मेरी अक़ीदत बढ़ती जा रही है यहां तक कि मैं फ़ाज़िलीने फैज़ुर रसूल और दीगर नौ जवान उलमा को नसीहत करता रहता हूँ कि अपने ईमान व अमल को संवारने और हकीकत में आलिमे दीन बनने के लिये आला हज़रत की तस्नीफ़ात का ज़्यादा से ज़्यादा मुतालेआ करें।

बहुत से लोग ऐसे भी हैं जो उन की अक़ीदत का दम भरते हैं लेकिन हिन्दुस्तान की मुख्यजा तअज़िया दारी हराम होने के मुतअल्लिक उन का फत्वा नहीं मानते। कुछ मज़ाभीर के साथ क़व्वाली हराम होने के बारे में उनकी तहकीक़ नहीं तस्लीम करते और बाज़ वह हैं जो बात-बात पर अज़ला हज़रत का नाम लेते हैं लेकिन ओझड़ी ना जाइज़ होने के मुतअल्लिक उनका फत्वा मानने से इनकार करते हैं मगर अल्हम्दु लिल्लाह मैं उन लोगों में से हूँ कि उन की हर तहकीक़ को मानता हूँ और उन के हर फत्वा पर सरे तस्लीम ख़म करता हूँ। अल्बत्ता मैं इस दर्जे का अक़ीदत मन्द नहीं हूँ कि सिर्फ़ उन्हीं की लिखी हुई नअ्त शरीफ पसंद करूं बल्कि मैं हर उस नअ्त को पढ़ना और सुनना पसंद करता हूँ कि जिस में कोई शरई ख़राबी न हो।

तदरीस:-फारिगुत् तहसील होने से चन्द माह क़बल हमने दुबोलिया बाज़ार जो ओझा गंज से दक्खिन पांच किलो मीटर पर है एक दीनी मदरसा काइम कर दिया था। दस्तार बन्दी के बाद फिर इसी मदरसा में तदरीसी ख़िदमात अंजाम देने लगा और जब मुझे वहां अपनी तरक्की की राहें मसूदूद नज़र आईं तो ज़िल कअ़दा 1373 हि० मुताबिक़ 1954 ई० में मुस्तअफी होकर हज़रत अल्लामा अरशदुल कादरी साहब क़िब्ला की तलब पर मैं जमशेद पुर (बिहार) चला गया मगर चूँकि जामिआ फ़ैज़ुल उलूम में बर वक़्त किसी मुदरिस की ज़रूरत न थी इस लिये

मुझे एक मक्तब मे पढ़ाने के लिये मुक़र्रर किया गया तो मैं दिल बरदाश्त हो कर तक़रीबन पांच माह बाद हज़रत अल्लामा की इजाज़त से घर चला आया।

जुमादल ऊला 1374 हि० मुताबिक़ जनवरी 1955 ई० में शुऐबुल औलिया हज़रत शाह मुहम्मद यार अली साहब किब्ला और शेर बेशए सुन्नत हज़रत मौलाना हशमत अली खां साहब किब्ला अलैहिमुर् रहमत वर-रिज़्जान की इजाज़त से मदरसा कादरिया रज़विया भाव पुर ज़िला बस्ती का मुदरिस मुक़र्रर हुआ मगर डेढ़ साल बाद वहां के इख़िलाफात से आजिज़ होकर इस्तिअफा दे दिया। इसी दरमियान शुऐबुल औलिया हज़रत शाह साहब किब्ला ने मक्तब फैज़ुर रसूल को दारुल उलूम बना दिया तो मैं हज़रत की तलब पर बराऊं शरीफ चला आया। और यकुम ज़िल हिज्जा 1375 हि० मुताबिक़ 10 जुलाई 1956 ई० से दारुल उलूम फैज़ुर रसूल का मुदरिस हो गया और ता दमे तहरीर तक़रीबन 33 साल हो गए इसी इदारे में दीनी ख़िदमात अंजाम दे रहा हूं। दरमियान में दूर व नज़्दीक के बहुत से बड़े-बड़े इदारों ने ऊंचा दर्जा और बहुत ज़्यादा मुशाहरा पेश किया मगर हम ने शुऐबुल औलिया जैसे मोहसिन का आस्ताना छोड़ना किसी कीमत पर ग़वारा न किया।

तरीक़ए तदरीस:-मक्तब के छोटे बच्चों के बारे में हमारा तरीक़ए तदरीस यह रहा कि काइदा पढ़ने वाले को ۱ ज़ाल, ۲ ज़ा और ۳ ज़ा को ۮ जीम की आवाज़ से हम हरगिज़ नहीं पढ़ने देते थे। शुरू ही में दुरुस्त करा देते थे, उर्दू के ऐतबार से जब तक हरफों की अदाइगी सही न हो जाती आगे नहीं पढ़ने देते थे। इसका फाइदा यह होता कि फिर हरफों को सहीह आवाज़ से पढ़ने के लिये कभी टोकना नहीं पड़ता था।

मुदरिसीन का यह समझना सहीह नहीं कि आगे चल कर खुद बखुद ठीक हो जाएगा इस लिये कि ग़लत बुनियाद पड़ जाने के बाद फिर उस की दुरुस्तगी में सख़्त दुश्वारी होती है। तजर्बा शाहिद है कि मकातिब से जो लड़के ۱ ज़ाल, ۲ ज़ा और ۳ ज़ा को ۮ जीम की

आवाज़ से पढ़ कर आते हैं, बार-बार टोके जाने और फिर मुसलसल सज़ा पाने के बावजूद कई-कई साल तक दुरुस्त नहीं कर पाते और बाज़ तो फारिगुत् तहसील आलिम भी हो जाते हैं मगर उन के हुरूप को अदाइगी सहीह नहीं हो पाती और हज़रत शैख सअदी रहमतुल्लाहि तआला अलैह का यह शेअर उन के ऊपर पूरे तौर पर सादिक आता है:

खिशते अब्वल चूं नहद मेअमार कज

ता सुरैय्या मी स्वद दीवार कज

और मुदर्रिसीन का यह उज़्र भी ग़लत है कि छोटे बच्चे ज़ा वगैरा की अदाइगी पर कादिर नहीं हो पाते। इस लिये कि मैं ने एक मदरसा के छोटे बच्चों का इम्तिहान लिया, सारे लड़के ३ ज़ाल, ३ ज़ा और ५ ज़ा को ८ जीम ही की आवाज़ से पढ़ते रहे। मुदर्रिसीन ने वही उज़्र बयान किया कि कोशिश के बावजूद उन को सहीह पढ़ना नहीं आता, हम ने कहा आप लोगों का यह उज़्र वही लोग सहीह मान सकते हैं जिन्होंने ने कभी मक्ताब नहीं पढ़ाया है, हम नहीं तस्लीम कर सकते। आइन्दा साल अगर लड़कों ने ऐसा ही पढ़ा तो हम सब को फेल कर देंगे। नतीजा यह हुआ कि दूसरे साल सब सहीह हो गए।

बच्चों को रटा कर पढ़ाना भी ग़लत है, जब तक कि बच्चे हरफों को पहचान न लें, सबक पढ़ाने से पहले मुरक्कब अल्फाज़ के एक-एक हर्फ को अलग-अलग उन से पूछना चाहिये, हम ऐसा ही किया करते थे। इस का फाइदा यह होता है कि बच्चों का पिछला भूलता नहीं और पढ़े हुए को फिर से सबकन् सबकन् पढ़ने का सवाल ही नहीं पैदा होता।

और मक्ताब के छोटे बच्चों को हम रोज़-मर्रा पेश आने वाले मसाइल ज़बानी बता दिया करते थे, दाहिने हाथ से खाने पीने, बायें हाथ से नाक साफ करने, इस्तिंजा के ढेला सुखाने और उसी हाथ से आबदस्त लेने की ताकीद करते थे। और खड़े होकर पानी पीने और क़िब्ला की तरफ मुंह या पीठ करके पाखाना पेशाब करने से सख्ती के

साथ मना करते थे। और लड़कों में ऐलान करते रहते थे कि अगर कोई बच्चा इस के खिलाफ करे तो हमें बताओ उस का नतीजा यह होता था कि लड़के बचपन ही से इस्लामी तौर तरीके के पाबंद और आदी हो जाते थे।

ऐ काश! सारे मुदर्रिसीन ऐसे ही करते तो आज सिर्फ मक्ताब का पढ़ा हुआ मुसलमान भी दाहिने हाथ से इस्तिजा का ढेला सुखाता हुआ और क़िब्ला की तरफ मुंह या पीठ करके पाखाना या पेशाब करता हुआ नज़र न आता। बल्कि इस्लामी तौर व तरीका से दुरुस्त व आरास्ता होता लेकिन आज कल बहुत से मुदर्रिसीन सिर्फ नौकरी करते हैं, इस्लाम की बातों को फ़ैलाने का ज़ब्बा नहीं रखते। यहां तक कि अक्सर मुदर्रिसीन जो दीनी मदरसा में पढ़ाते तो हैं मगर लड़कों को दीनियात की तालीम नहीं देते, सिर्फ उर्दू और हिसाब व किताब वगैरा पढ़ा कर पास कर देते हैं और ग़लत सलत क़ुरआन मजीद पढ़ा कर बच्चों के घर वालों से इनाम पा जाने को बहुत बड़ी कामयाबी समझते हैं।

खुदाए अज़्ज़ व जल्ल उन्हें इस्लाम का सहीह ज़ब्बा अता फरमाए और अपनी तंज़्वाहों को हलाल करने की तौफीक़े रफीक़ बख़्शे। आमीन

बड़े तलबा:- दारुल उलूम के तलबा को हमारे पढ़ाने का तरीका यह है कि तस्हीलुल मसादिर, नहवमीर और मीज़ान बल्कि सर्फ में पंज-गंज, इल्मुस् सीगा और फुसूले अक्बरी तक के लड़कों का पिछला सबक सुनने के बाद ही आगे पढ़ाते हैं और जो याद नहीं करता उसे मुनासिब सज़ा देते हैं जिस का फाइदा यह होता है कि दूसरे रोज़ वह सबक याद करके लाता है।

हम छोटी किताबें पढ़ने वाले तलबा को भी चालीस पचास मिनट की पूरी घंटी पढ़ाते हैं, सिर्फ चन्द मिनट नहीं पढ़ाते बल्कि घंटी के ख़त्म होने तक पूछते रहते हैं और मुख़्तलिफ़ मसादिर से फेअलों की गर्दान कराते हैं अल्बत्ता नहवमीर पढ़ने वालों को काफ़िया व शर्हें जामी की बहेस और मंतिक के इब्तिदाई बच्चों को कुत्बी व मुल्ला हसन की

बातें नहीं बताते, जिस दर्जा का तालिब इल्म होता है उसी ऐतबार से उस के सामने मसाइल पेश करते हैं अपनी मालूमात नहीं बल्कि तलबा की मालूमात के लिहाज से उन के सामने तकरीरें करते हैं।

मुतवस्सित और मुत्तही किताबें पढ़ने वालों की जमाअत में अक्सर ऐसे तलबा होते हैं जो तालीम के नाम पर मदरसों में खाते और घूमते हैं, किताबों को मुतालिआ करना तो बड़ी बात है उसे हाथ भी नहीं लगाते। फिर बज़ाहिर आलिम की लेकिन हकीकत में आठ दस साल मदरसा में खाने की दस्तार लेते हैं और काम का नहीं सिर्फ नाम का मौलाना होकर कौम के लिय बोझ बनते हैं।

इस खराबी को दूर करने के लिये हम ने यह तरीका ईजाद कर रखा था कि पूरी जमाअत के हर तालिब इल्म को कम ज़्यादा तादाद के ऐतबार से दो-दो या एक-एक सतर इबारत रोज़ाना पढ़नी पड़ेगी और अव्वल व आखिर या दरमियान में जहां जिस से चाहेंगे पढ़वायेंगे। इस सूरत में हर लड़के को इबारत पढ़ने के लिये रोज़ाना मेहनत करनी पड़ती इस लिये कि जो ऐसा न करता वह बहुत बुरा भला कहा जाता और सज़ा भी पाता।

यह तरीका बेइन्तिहा मुफीद साबित हुआ लेकिन तलबा ने हमारी सख़ी के बहुत से फरज़ी किस्सों का परचार किया और हमें बहुत बदनाम किया तो इस तरह इबारत पढ़वाना हम ने बन्द कर दिया। अब यह दस्तूर है कि हर तालिब इल्म से एक-एक रोज़ नम्बरवार इबारत पढ़वाते हैं और दरमियान में एक दो सर्फ़ी नहवी मस्अला भी पूछ लिया करते हैं। यह सूरत भी औसतन मुफीद है कि हर तालिब इल्म को कुछ रोज़ बाद इबारत पढ़नी पड़ती है। सिर्फ़ चन्द मख़सूस तालिब इल्मों से हमेशा इबारत पढ़वाना दूसरों को नाम का आलिम बनाना और उनकी ज़िंदगी बरबाद करना है।

और आम तौर पर जो यह दस्तूर है कि इबारत पढ़ने में अगर लड़का गुलती करता है तो फौरन उसे बता दिया जाता है, यह तरीका

भी सहीह नहीं। मेरा दस्तूर यह है कि बताता नहीं हूँ बल्कि सिर्फ आगे पढ़ने से रोक देता हूँ, फिर अगर वह दुरुस्त कर लेता है तो उस को वजह भी बतानी पड़ती है कि ऐसा क्यों पढ़ा इस लिये कि बसा औकात (बगैर समझे हुए) सिर्फ अंदाजे से इबारत सहीह कर लेता है या जम्मा से रोक दिया तो फल पढ़ देता है और वह भी सहीह नहीं हुआ तो कसूरा पढ़ देता है और जब वजह बतानी पड़ती है तो उस के जेहन को काम करना पड़ता है जिस से इस्तिअदाद बढ़ती है और मसाइल हल करने की सलाहियत पैदा होती है।

बाज़ लोगों का ख्याल है कि गवर्नमेन्ट के इम्तिहान में तलबा को जो नक़ल कराके पास कराया जाता है इस सबब से वह जी इस्तिअदाद बनने की कोशिश नहीं करते कि मेहनत के बगैर वह आलिम व फाज़िल हो जाते हैं।

अगर्चे नक़ल कराने का भी मैं सख़्त मुख़ालिफ़ हूँ लेकिन तलबा के जी इस्तिअदाद होने की यह वजह सहीह नहीं, इस लिये कि देवबंदी वगैरा भी गवर्नमेन्ट के इम्तिहान में यही तरीका इस्तिअदाद करते हैं और उन के लड़के हमारे तलबा की बनिस्बत जी इस्तिअदाद होते हैं।

मेरे नज़्दीक इस ख़राबी की अस्त वजह यह है कि तलबा पर सख़्ती नहीं की जाती इसी लिये सुन्नियों के वह मदरिस जो इल्हाक़ नहीं हैं और उन के तलबा गवर्नमेन्ट के इम्तिहान से आलिम व फाज़िल नहीं होते वह भी बा सलाहियत नहीं बनते। शहर बस्ती के बस स्टेशन पर एक देवबंदी तालिब इल्म मिला जो दरमियान साल पूरे सामान के साथ अपने घर जा रहा था, उस ने बताया कि शशमाई इम्तिहान में सिर्फ़ एक किताब के अन्दर फेल हो जाने के सबब मुझे मदरसा से ख़ारिज कर दिया गया जबकि मैं ख़ुराकी भी दिया करता था।

और हमारे यहां हाल यह है कि सालाना इम्तिहान में फेल होने के बावजूद तालिब इल्म को ख़ारिज कर देना तो बहुत बड़ी बात है मामूली सज़ा भी नहीं दी जाती और न उन को जी इस्तिअदाद बनाने की कमा

हक्कूहू कोशिश की जाती है, आम तौर पर सिर्फ तंख्याह बनाने के लिये नौकरी की जाती है।

इफ़ता:- 24 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1377 हि० मुताबिक 1957 ई० को 24 साल की उम्र में पहला फ़त्वा लिखा फिर 25 साल तक मुल्क और बैरुने मुल्क पाकिस्तान और हालैंड वगैरा से आए हुए हजारों सवालालत के जवाबात बड़ी मेहनत से लिखे जो फैज़ुर रसूल के अलावा दूसरे मोवक्कर माहनामों में भी अर्सए दराज़ तक शाए होते रहे और क़द्र की निगाहों से देखे गए।

यह हमारे लिये निहायत मसरत की बात है कि मदीना मुनव्वरा जो मज्हबे इस्लाम का मंबअ व मरकज़ है वहां के बाज़ लोगों ने भी फ़त्वा के लिये हमारी तरफ़ रुजूअ किया जिन का मुदल्लल जवाब लिख कर रवाना किया।

रबीउल अव्वल 1403 हि० मुताबिक 1983 ई० में दिमागी कमज़ोरी के सबब फ़त्वा नवीसी से मुस्तअफी होकर अब दारुल उलूम फैज़ुर रसूल के सिर्फ़ शोबए तालीम की ख़िदमत अंजाम दे रहा हूं।

फ़तावा फैज़ुर रसूल की तरतीब का काम जारी है, कोशिश है कि मेरी जिंदगी में छप कर मंज़रे आम पर आ जाए ताकि मेरी दिमागी काविशें जाए न हों इस लिये कि जो कौम अअ्ला हज़रत पेशवाए अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी और सदरुश शरीआ हज़रत अल्लामा मुहम्मद अमजद अली आज़मी रहमतुल्लाहि अलैहिमा जैसी अहम शख़्सियतों के सारे फ़तावे छपवा कर अब तक मंज़रे आम पर न ला सकी, उस कौम से हम जैसे लोगों के फ़तावा छपवाने की उम्मीद रखना ग़लत है।

☆☆☆

फ़तावा नवीसी की जिंदगी के चन्द वाकिआत:- मुफ़्ती का काम है फ़त्वा देना और तहकीक़े वाकिआ के बाद फैसला करना काज़ी का काम है। लेकिन चूँकि आज कल फ़त्वा को आम तौर पर फैसला समझा जाता है और बहुत से लोग अज़ राहे फ़रेब ग़लत सवाल बना

कर अपने मतलब के मुवाफिक फत्वा लेने की कोशिश करते हैं इसलिये मैं हत्तल इम्कान वाकिआ की तहकीक भी कर लिया करता था।

ज़िला गोंडा कस्बत उतरीला के इलाका से एक शख्स आया, उस ने बयान दिया कि लोग कहते हैं कि तुम ने अपनी बीवी को तीन तलाक दी है मगर मुझे नहीं मालूम कि मैं ने ऐसा किया है, इस लिये कि मैं गुस्सा में होश व हवास खो बैठा था तो इस सूरत में मेरी बीवी पर तलाक पड़ी या नहीं? हम ने कहा कसम के बगैर तुम्हारा ऐसा हैरत अंगेज़ बयान कि तुम ने तलाक दी और तुम्हें खबर ही नहीं हम हरगिज़ नहीं तस्लीम कर सकते। इस लिये कि हम बहुत से मक्कार देख चुके हैं। उसने बड़ी बेबाकी से कहा एक नहीं सात कुरआन शरीफ अपने सर पर रख कर भी हम कसम खा सकते हैं कि हमारा बयान सहीह है।

हम ने जान लिया कि यह आदमी कुरआन मजीद उठा कर झूठी कसम खा लेगा लेकिन किसी बुजुर्ग के मज़ार पर हाथ रख कर अग़लब यह है कि यह झूठी कसम खाने की जुअत नहीं कर सकेगा। हम ने कहा शुऐबुल औलिया हज़रत शाह मुहम्मद यार अली साहब किस्स रहमतुल्लाहि तआला अलैह के मज़ार पर हाथ रख कर तू कसम के साथ अपना यह बयान दे सकता है, उस ने कहा हां बिल्कुल दे सकता हूँ।

मैं ने उसको वुजू करने का हुक्म दिया, वुजू के बाद उस को मज़ार शरीफ के पास ले जा कर पहले बाहर ही खड़ा किया और कहा सोच लो, अब भी वक़्त है, अगर तुम झूठी कसम खाए और कोढ़ी या अंधे हो गए तो ज़िंदगी तुम्हारी तबाह हो जाएगी, उस ने कहा मेरा बयान सहीह है मैं कसम खाने के सबब कोढ़ी या अंधा नहीं हूँगा। आप जिस तरह चाहें मुझ से कसम खिला सकते हैं।

अब मैं उसे अन्दर ले गया और कहा कि मज़ार शरीफ पर हाथ रख कर कहो कि मैं कसम खा कर बयान देता हूँ कि मैं ने होश व हवास की दुरुस्तगी में तलाक नहीं दी है अगर मेरा यह बयान ग़लत हो तो मैं कोढ़ी और अंधा हो जाऊँ।

अब उस के चेहरा से घबराहट जाहिर हुई, यहां तक कि वह कांपने लगा और मज़ार शरीफ पर हाथ रख कर झूठा बयान देने की हिम्मत नहीं कर सका। देर तक खामोश खड़ा रहा।

मैं ने कहा तुझे क्या हो गया, अब मज़ार शरीफ पर हाथ रख कर बयान क्यों नहीं देता, मगर वह चुप हज़ार चुप, आखिर जब मैं उसे बाहर लाया तो उस ने इक़रार कर लिया कि मैं ने होश व हवास की दुरुस्तगी में तलाक़ दी है।

ज़िला गोंडा का एक शख्स जो बराऊं शरीफ का मुरिद था वह हमारे साथ भी बड़ा हुस्ने ऐतिक़ाद रखता था, जब कभी मैं उस की आबादी में जाता तो एक खादिम की तरह मेरे साथ रहता और नज़ाना वगैरा से हर मुम्किन खिदमत करता।

तुलसी पुर के इलाक़े से वह एक औरत को भगा लाया और मुझ से कहा कि इस का शौहर वहाबी मुरतद है। इस का निकाह आप मेरे साथ पढ़ दीजिये। मैं ने इनकार किया, उस ने कहा किसी दूसरे ही को पढ़ाने की इजाज़त दे दीजिये। मैं ने इजाज़त देने से भी इनकार किया और कहा कि मैं कैसे यकीन कर लूं कि इस का शौहर वहाबी मुरतद है? उस ने कहा आप आदमी भेज कर तहकीक़ कर लीजिये।

अब दो आदमी जो बज़ाहिर परहेज़गार थे, तहकीक़े हाल के लिये भेजे गए, वापस आकर उन्होंने ने बयान दिया कि हम दोनों ने उस की आबादी के बहुत लोगों से मालूम किया तो यही तहकीक़ हुआ कि उस का शौहर वहाबी मुरतद है — मगर मैं ने अब भी निकाह की इजाज़त न दी और यह कह कर चला आया कि मैं फैजुर रसूल के दीगर उलमा से मशवरा करने के बाद ही कोई फैसला कर सकूंगा।

इत्तिफाक़ से मेरे वहां से आने के चन्द रोज़ बाद आस्तानए ग़ार अलविया बराऊं शरीफ के सज्जादा नशीन उस आबादी में तशरीफ़ ले गए जिस की बीबी अग़वा की गई थी, उसे मालूम हुआ कि जो शख्स मेरी बीबी को भगा कर ले गया है उस के पीर उस की आबादी में

आए हुए हैं, तो वह आकर सज्जादा नशीन से मिला और अपना मामला पेश किया और सज्जादा नशीन ने शख्से मजकूर को बुला कर बहुत डांटा फटकारा और हुक्म दिया कि फौरन उस की बीवी उस के सुपुर्द कर दो और अलानिया तौबा व इस्तिगफार करो।

शख्से मजकूर ने कहा कि यह वहाबी मुरतद है, इस के साथ इस औरत का निकाह मुन्अकिद ही नहीं हुआ, उसने कहा मैं अल्हम्दु लिल्लाह अहले सुन्नत व जमाअत से हूँ, वहाबी मुरतद नहीं हूँ, तमाम जरूरियाते अहले सुन्नत को मानता हूँ। जिस बात के मुतअल्लिक आप चाहें मुझ से इकरार ले सकते हैं। मगर मैं अब इस औरत को नहीं ले जाऊंगा और फिर वह तलाक़ देकर चला गया।

हमारी आबादी ओझा गंज के करीब एक गांव है। वहां का एक शख्स कानपुर से एक शादी शुदा औरत को भगा कर लाया, ईद अजहा के मौका पर जब ओझा गंज के लोगों को मालूम हुआ तो उस का बाइकाट किया गया, वह अपनी जिल्लत मिटाने के लिये कानपुर गया और भगाई हुई औरत के शौहर व गवाहान के दस्तख के साथ तलाक़ नामा लाकर पेश किया। मेरे दिल ने फैसला किया कि यह तलाक़ नामा फरजी है, शख्से मजकूर के भाई जो मौलवी कहे जाते हैं उन्होंने ने कहा आप इस तहरीर को सहीह क्यों नहीं मानते? हम ने कहा जो आदमी दूसरे की औरत को भगा सकता है वह फरजी तलाक़ नामा भी बना सकता है, हम ऐसे शख्स की लाई हुई तहरीर बिला तहकीक़ नहीं मान सकते।

चन्द रोज़ बाद मौलाना मुहम्मद अलाउद्दीन ओझा गंजवी कानपुर जाने लगे तो हम ने उन से तलाक़ नामा की तहकीक़ के लिये कहा, उन्होंने ने मजकूरा औरत के शौहर से मुलाक़ात की उस ने बताया कि न मैं ने तलाक़ नामा लिखा है न किसी से लिखवाया है, न मुझे उस का कुछ इल्म है। अल्बत्ता एक शख्स ने मुझ से सादा कागज़ पर यह कह कर दस्तख़ लिया है कि तुम को मिल में मुलाजमत दिलवाई जाएगी, हो सकता है कि उसी कागज़ को तलाक़ नामा बना लिया गया हो।

ज़िला बस्ती तहसील डोमरिया गंज का एक शख्स आया और कमरा में दाखिल होते ही मुसाफ़हा के साथ पांच रुपये नज़ाना पेश किया हम ने कहा आज यह नज़ाना कैसा? उस ने कहा बस ऐसे ही दिल में आया कि आज आप को नज़ाना पेश करूं, ख़ैर हम ने क़बूल कर लिया।

जब वह खाना वगैरा से फारिग हुआ तो एक सवाल पर भावपुर ज़िला बस्ती और तुलसीपुर ज़िला गोंडा के मुफ्तियों का फत्वा दिखाया, सवाल यह था कि हालते जुनून में ज़ैद ने तलाक़ दी, वाक़ेअ़् हुई या नहीं? जवाबात का खुलासा यह था कि जब जुनून की हालत में तलाक़ दी है तो नहीं वाक़ेअ़् हुई, कि हालते जुनून के किसी फेअ़ल पर शरई हुक्म नहीं लगता यहां तक कि इस हालत के कलिमाते कुफ़ पर भी आदमी काफिर नहीं होता।

शख़्से मज़कूर ने बताया कि वह मामला हमारा ही है, दरमियान में हम पागल हो गए थे, फिर उस ने अपने पागल होने के बारे में गोरखपुर के एक मशहूर डाक्टर का सर्टीफिकेट भी दिखलाया।

हम ने कहा दो जगह के मुफ्तियों का फत्वा तो आप को मिल गया फिर यहां आने की तकलीफ आप ने क्यों उठाई? कहा मेरी बीवी कहती है कि जब तक बराऊँ शरीफ का फत्वा नहीं लाओगे हम नहीं मानेंगे। हम ने कहा अगर यह बात है तो हम भी फत्वा लिख देंगे।

फिर हम ने इस तरह लिखना शुरू किया कि अगर ज़ैद ने हालते जुनून में तलाक़ दी है तो नहीं वाक़ेअ़् हुई और अगर होश व हवास की दुरुस्तगी में दी है तो वाक़ेअ़् हो गई।

उस ने कहा जबकि मैं आप को अपने पागल होने के बारे में दिमाग़ के एक मशहूर डाक्टर का सर्टीफिकेट दिखा रहा हूं तो आप को यूँ लिखना चाहिये कि जब ज़ैद ने हालते जुनून में तलाक़ दी है तो नहीं वाक़ेअ़् हुई, हम ने कहा इस तरह वह लोग लिखेंगे जिन को फत्वा नवीसी का तजर्बा नहीं है। हम ऐसा हरगिज़ नहीं लिख सकते। रही

पागल होने के बारे में सर्टीफिकेट की बात तो आप अपने पागल होने के मुतअल्लिक एक डाक्टर का सर्टीफिकेट दिखा रहे हैं, आप जिस के बारे में कहें मैं उसके मुतअल्लिक दस डाक्टरों के सर्टीफिकेट मंगवा कर दिखला सकता हूँ।

जब उस ने देखा कि पांच रुपया नज़ाना के नाम पर रिश्तत देने के बावजूद काम नहीं बना तो उसका तीन गुना वसूल करने के लिये हम से 15 रुपये की किताबें उधार ले गया और बार-बार तकाज़ा के बावजूद कई बरस तक नहीं दिया। यहां तक कि उस के लड़के ने आजिज़ होकर अपनी तरफ से अदा किया।

जो लोग कि ज़ाहिरी परहेज़गारी के फरेब में आ जाते हैं, औरतों को इग़्वा करने वालों की बातों को मान लेते हैं और उन के लिए हुए तलाक़ नामा वमैरा बिला चूं चिरा सहीह तस्तीम कर लेते हैं वह इन वाकिअत से इब्रत हासिल करें। और ख़ूब याद रखें कि दुनिया बहुत मक्कार हो गई है, उन की बातों में न आएं। हत्तल इम्कान मामला की तहकीक़ कर लें और तहरीर में हलाल व हराम जाइज़ व ना जाइज़ और तलाक़ के वुकूअ और अदमे वुकूअ दोनों पहलुओं को वाज़ेह तौर पर लिखें।

तस्नीफो-तालीफ़:-दसों-तदरीस और फत्वा नवीसी की मसूफियात के बावजूद हम ने शुरू ही से तस्नीफो-तालीफ़ का सिलसिला भी जारी रखा है। सब से पहले गुल्दस्ता मसूनी यानी मौलाना रुम रहमतुल्लाहि तआला अलैह की मसूनी शरीफ़ का इन्तिखाब मअ् तर्जमा व मुख्तसर तशरीह लिखी फिर दीगर किताबें मआरिफ़ुल कुरआन, अनवारे शरीअत उर्फ़ अच्छी नमाज़, हज व ज़ियारत, मुहक्काना फैसला, बागे फिदक और हदीसे क़िरतास, ज़रूरी मसाइल, बच्चों के लिये दीनी तालीम का सुन्नियत अफ़रोज़ सिलसिला, नूरानी तालीम चहार हिस्से, अनवारुल हदीस और अलगाजुल फ़िक़ह उर्फ़ फ़िक्ही पहेलियां, फिर उसके बाद ज़ेरे नज़र किताब खुत्बाते मुहर्रम मुरत्तब की। इन तमाम तस्नीफात में अनवारुल उदीस और अलगाजुल फ़िक़ह सब से ज़्यादा अहम समझी

जाती है।

और हिन्दुस्तान में चूँकि उर्दू दां तबका रोज़ बरोज़ कम होता जा रहा है इस लिये दूसरों ने अपनी मज़हबी किताबें बहुत पहले हिन्दी में छपवा कर पूरे मुल्क में फैला दीं जिस से इस्लाम व सुन्नियत को ज़बर्दस्त नुक़सान पहुँच रहा है, उन की किताबें पढ़ कर लोग गुमराह होते जा रहे हैं मगर हमारी जमाअत के लोगों ने इस की तरफ़ तवज्जोह नहीं की।

खुदाए तआला का शुक्र है उस ने हम को तौफीक़ अता फरमाई कि अहले सुन्नत व जमाअत में सब से पहले हम ने 1400 हि० मुताबिक़ 1980 ई० में अनवारे शरीअत उर्फ़ अच्छी नमाज़ को हिन्दी में छपवाया जो बेइन्तिहा मक़बूल हुई। उस के बाद लोगों की तवज्जोह इस तरफ़ हुई और बहारे शरीअत हिस्सा अव्वल वग़ैरा हिन्दी में छप कर मंजुरे आम पर आ गईं। और हम ने अनवारे शरीअत के बाद मुहक्किफ़ाना फैसला फिर अनवारुल हदीस को भी हिन्दी में कर दिया, जिस से अहले सुन्नत व जमाअत के हिन्दी दां तबका को बहुत फाइदा पहुँच रहा है। الحمد لله على ذلك

दूसरों की बनिस्बत हमारी जमाअत में तस्नीफो-तालीफ़ का काम बहुत कम हो रहा है इस लिये जो लोग इस काम की सलाहियत रखते हैं वह अगर शुरू में कुछ काम करते भी हैं तो बाद में उसे छोड़ कर वज़ीफ़ा पीरी मुरीदी और तावीज़ नवीसी में लग जाते हैं मगर मैं ने दीन की तक्वियत और इस्लाम व सुन्नियत की तब्लीग़ के लिये किताबों की तस्नीफ़ और उसकी नशरो-इशाअत को सब से ज़्यादा अहम समझा इस लिये कि किताबें हर सूबा और हर शहर के मुसलमानों को आसानी से पहुँच जायेंगी, जिन से वह अपने ईमान व अमल को संवारेगें और पीरी मुरीदी से चाहे हम पक्के दुनिया दार हो जाएं लेकिन मुरीद लोग हमें वली ज़रूर बना देंगे। जिस से उर्स भी होगा, मगर इस से हम को और हमारी औलाद को फाइदा पहुँचेगा और तस्नीफो-तालीफ़ से पूरी क़ौम मुस्तफीद हो सकेगी।

आला हजरत इमाम अहले सुन्नत फाजिल बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि दीन की इशाअत और बद मजहबियत की रोक थाम के लिये दिन रात कलम चलाते रहे, आज भी वह बियत और देवबंदियत हर तरह से मजबूत हो रही है और पढ़ा लिखा तबका उन से मुतअस्सिर होता चला जा रहा है इस लिये हर सुन्नी आलिम दीन पर लाज़िम है कि वह अपनी सलाहियत के मुताबिक बद मजहबियत की रोक थाम के लिये कलम चलाए और सिर्फ पीरी मुरीदी को इस के लिये काफी न समझे। कि अज़ला हजरत के ज़माने में भी पीरों की कमी नहीं थी। मगर सुन्नियत का बोल बाला उन के कलम चलाने से ही हुआ।

हम ने मक्का मोअज़्ज़मा और मदीना तैयिबा के मुकामाते मुक़दसा पर यह दुआ की इलाहल आलमीन! हम को और हमारी औलाद को खुलूस के साथ दीने मतीन की बेश अज़ बेश ख़िदमत की तौफीकें रफीक अता फरमा। और आज भी मुबारक मौकों पर यह दुआ करते रहते हैं।

खुदाए तआला का लाख लाख शुक्र है कि उस ने हमारे हक़ में यह दुआ क़बूल फरमाई कि हम ख़िदमते दीन ही के ज़ब्बे से किताबें लिखते और उसकी नश्रो-इशाअत करते हैं और जो लोग यह समझते हैं कि हम हुसूले ज़र के लिये ऐसा कर रहे हैं, वह बद गुमानी के गुनाहे कबीरा में मुब्तला हैं। अगर मक़सद रुपया कमाना होता तो हमारी तस्नीफ़ करदा किताबों का यह मिजाज़ न होता कि बद मजहब उसे हाथ नहीं लगाता है, और ग़लती से अगर ख़रीद लेता है तो पढ़ने के बाद अप्सोस करता है और कभी फुहश गालियों से भरा हुआ ख़त भी लिखता है।

कुतुब ख़ाना अमजदिया:—किताबों के ज़रिये मजहब की इशाअत बहुत ठोस और मुस्तहक़म होती है इस लिये बद मजहब अपनी बद मजहबी फैलाने के लिये तक़रीबन हर शहर में कुतुब ख़ाना काइम किये हुए हैं और उस के ज़रिये हर घर में अपनी किताबें पहुंचा कर लोगों को गुमराह कर रहे हैं मगर अहले सुन्नत व जमाअत के लोगों की

तबज्जोह इस तरफ नहीं इसी लिये पूरे मुल्क में सुन्नियों का कोई ऐसा कुतुब खाना नहीं जो काबिले जिक्र हो। सिर्फ चन्द मकामात पर छोटे-छोटे कुतुब खाने हैं जो अपनी बिसात के मुताबिक काम कर रहे हैं। मुम्बई में भिंडी बाज़ार जैसी मैन जगह और देहली में जामा मस्जिद का ऐरिया सुन्नी कुतुब खानों से खाली है जिस से सुन्नियत को बहुत नुक्सान पहुंच रहा है मगर सुन्नियों की आंख नहीं खुलती और उन्हें नज़र नहीं आता।

मुम्बई के एक रज़वी आलिम जो बहुत से ताजिरो को बतौरे मुज़ारबत बड़ी-बड़ी रकमें देते हैं, मैं ने उन से कहा कि भिंडी बाज़ार जहां हजारों मुसलमान रोज़ाना किताबें खरीदने के लिये आते हैं वहां अहले सुन्नत व जमाअत का कोई कुतुब खाना नहीं है जिस की अशद ज़रूरत है। सुन्नी मुसलमान मुतर्जम कुरआन मजीद लेना चाहता है और बद मज़हब अपने लोगों का तर्जमा उसे पकड़ा देते हैं बल्कि बाज़ लोग जो अअला हज़रत का तर्जमा सराहतन तलब करते हैं मगर पढ़े हुए नहीं होते हैं उन्हें भी अपने मौलवी का तर्जमा दे देते हैं। इस लिये भिंडी बाज़ार में आप एक कुतुब खाना काइम कर दीजिये।

मेरी इन बातों ने उन के ऊपर ऐसा असर किया जैसे किसी ज़ख्मी शेर को छेड़ दिया जाए, उनके चेहरा का रंग बदल गया, वह गुस्सा से भरे हुए बोलने लगे, उस ज़माने में जबकि हज़ार बहुत वक़अत रखता था इन्हीं हाथों से मैं ने फुलां मौलवी को सत्तर हज़ार रुपया प्रेस और कुतुब खाना काइम करने के लिये दिया, इतना रुपया कितनी परेशानियों से इकट्ठा हुआ वह मैं ही जानता हूं, मगर क़ौम का पैसा लेकर वह खा गए और कुछ नहीं किया।

मैं ने कहा मैं आप से कुछ मांगता नहीं हूं बल्कि मज़हब की इशाअत और सुन्नियत को नुक्सान पहुंचने से बचाने के लिये चाहता हूं कि आप खुद भिंडी बाज़ार में सुन्नी कुतुब खाना काइम कर दें। मगर आज तक उन्होंने ने इस की तरफ कोई तबज्जोह नहीं की।

और भी हम ने कई लोगों से कुतुब खाना काइम करने की

कोशिश करते हुए कहा कि आप लोग हर तरह का रोज़गार करते हैं, कुतुब खाना क्यों नहीं चलाते कि इस से दीन का काम भी होगा और आप की ज़रूरियात के लिये दो पैसा मिलता भी रहेगा। और आप खिदमतें दीन की नियत से ऐसा करेंगे तो सवाब भी मिलेगा, मगर दुनिया दार तो दुनिया दार किसी दीन दार की समझ में भी नहीं आया।

हिन्दुस्तान के एक मशहूर मुक़र्रि जिन की तक्रीरें अक्सर मुम्बई में होती रहती हैं और कसीर मजमू होता है, हम ने उन से कहा कि भिंडी बाज़ार मुम्बई में एक सुन्नी कुतुब खाना काइम करवाने के लिये हम ने बहुत कोशिश की मगर कामयाब नहीं हुए, उन्होंने ने कहा अगर हम कह दें तो हो जाएगा, हम ने कहा इसी लिये तो आप से ज़िक्र किया है आप कह देंगे तो यकीनन वहां एक बड़ा कुतुब खाना हो जाएगा, जिस की अशद ज़रूरत है मगर न मालूम उन के पेशे नज़र क्या मस्तहत थी कि आज तक उन्होंने ने इस सिलसिले में होंट हिलाना गवारा न किया।

हिन्दुस्तान के बहुत से शहरों में और खुद मुम्बई में ऐसे-ऐसे बड़े-बड़े इदारे हैं जो लाखों रुपया बैंकों में रखने को बड़ी कामयाबी समझते हैं और इस पर फख़ करते हैं कि फुलां की सदरत व निज़ामत के ज़माने में सिर्फ़ इतना बैंक बैलंस रहा और हमारे वक़्त में इतना ज्यादा हो गया।

यानी इस्लाम के नाम पर रुपया वसूल करने के बाद बैंक को नफ़ा पहुंचाया जाता है और इस्लाम की बातों को आम करने के लिये मुसलमानों का पैसा इस्तेमाल नहीं किया जाता, न उनके ईमान व अमल को संवारने के लिये काम में लाया जाता है। अल्बत्ता बाज़ मदरसा वाले आमदनी के लिये मार्केट और होटल वगैरा बनवाते हैं, प्रेस व कुतुब खाना काइम नहीं करते। यही वजह है कि बद मज़हबों की अहम किताबें हिन्दुस्तान की पन्द्रह ज़बानों में शाए हो रही हैं और अहले सुन्नत व जमाअत की बहारे शरीअत जैसी अहम किताब अभी

तक सिर्फ उर्दू में भी सहीह नहीं मिल पा रही थी। खुदाए तआला कादरी बुक डिपो नौ महला मस्जिद बरेली शरीफ का भला करे कि उस की कोशिशों से अब सहीह बहारे शरीअत उर्दू में मिलने लगी।

बद मज़हब मौलवियों के पास जब पैसा होता है तो वह प्रेस व कुतुब खाना काइम करके अपना मज़हब फैलाता है और सुन्नी मौलवी जब खुशहाल होता है और उस के पास रकम पस्मांद होती है तो वह समझाने के बावजूद इस तरफ तवज्जोह नहीं करता, बल्कि बैंक में जमा करके उस को फाइदा पहुंचाता है, किसी दूसरी चीज़ की दुकान दारी करता है, बस और टेक्सी चलवाता है या मुर्गी और मछली पालता है और इस तरह के कामों में तरक्की कर जाने को अपने लिये बहुत बड़ी कामयाबी समझता है। हालांकि आलिम की कामयाबी हकीकत में यह है कि वह दीन के कामों में तरक्की करे, इस लिये कि गाए का दूध देखा जाता है उस की चाल नहीं देखी जाती, गाए की चाल कितनी ही अच्छी हो मगर दूध न दे तो बेकार है और घोड़ी की चाल देखी जाती है न कि उस का दूध। मतलब यह है कि जो चीज़ जिस काम के लिये होती है उसी में तरक्की उस की कामयाबी होती है तो आलिमे दीन जो दीनी कामों के लिये हुआ करता है, उस के बजाए दुनियावी कामों में तरक्की करे तो वह ऐसा ही जैसे कोई गाए दूध के बजाए अच्छी चाल वाली हो।

खुदाए तआला का शुक्र है कि उस ने अगर हम को कुछ पैसा अता फरमाया तो अपने दीन की तक्वियत और उस की नशरो-इशाअत के लिये हमें कुतुब खाना अमजदिया काइम करने की तौफीक अता फरमाई जो अपनी बिसात के मुताबिक दीन की हर मुम्किन खिदमत कर रहा है कि मुल्क व बैरूने मुल्क के बेशुमार लोग इस की शाए कर्दा किताबों से फाइदा उठा रहे हैं और अपने ईमान व अमल को संवार रहे हैं।

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के सदके व तुफैल में हमारी इस दीनी खिदमत को भी कबूल फरमाए।

एक और अहम खिदमते दीन:- कुरआन मजीद के इब्तिदाए नुजूल से आज तक उस की किताबत व तबाअत की सेहत का हर अहेद में बहुत ऐहतिमाम किया गया है और उस को गलत छपने से बचाने के लिये हमेशा हर मुम्किन कोशिश की गई है। लेकिन इस ज़माने के चन्द दुनिया दार नाशिरीन ज़्यादा से ज़्यादा नफा खोरी के लिये निहायत गैर ज़िम्मेदारी व ला परवाई से कसीर गलतियों के साथ कुरआन मजीद छाप कर शाए कर रहे थे और मुल्क व बैरुने मुल्क जहां तक कुरआन मजीद फैलाया जा रहा था हर जगह बेशुमार उलमा व हुम्फाज़ मौजूद रहे मगर किसी ने इस पर कोई तवज्जोह नहीं की।

और यह अजीब बात है कि गलतियां तर्जमा रज़विय्या ही के मतन में पाई गई, ग़ालिबन इस लिये कि अहले सुन्नत व जमाअत को हिन्दुस्तान में इस तर्जमा वाला कुरआन नहीं मिल पा रहा था और पूरी कौम इस के लिये बहुत बेचैन थी तो नाशिरीन ने सोचा कि चाहे जैसे छपवा दिया जाएगा, सुन्नी अवाम व ख्वास सब ले लेंगे और थोड़े ही खर्च में ज़्यादा नफा हासिल हो जाएगा।

सब से पहले एक कुतुब ख़ाने के मतबूआ कुरआन मजीद के मतन में हमें पचास गलतियां मिलीं। फिर इसी कुतुब ख़ाने के छपवाए हुए दूसरे नुस्खे में 145 गलतियों ज़ाहिर हुईं। उस के बाद दूसरी कम्पनी के मतबूआ कुरआन में 40 गलतियां पाई गईं। फिर तीसरे बुक डिपो के छपवाए हुए में 56 गलतियां मिलीं। इस के बाद चौथे कुतुब ख़ाने के मतबूआ में 75 गलतियां ज़ाहिर हुईं। फिर पांचवीं कम्पनी के शाए कर्दा कुरआन में 34 गलतियां पाई गईं। और फिर मेरी तस्हीह के बा वजूद उस के दूसरे एडीशन के नुस्खे में 23 गलतियां मिलीं। इस के बाद छठे इदारे के मतबूआ में 68 गलतियां ज़ाहिर हुईं, जिन की तस्हीह तपसील के साथ माहनामा पासबान इलाहाबाद, माहनामा अज़ला हज़रत बरेली शरीफ और माहनामा फैज़ुर रसूल बराऊं शरीफ के मुख़्तलिफ शुमारों में शाए की गईं। साथ ही हम ने सुबूत के साथ यह भी ऐलान किया कि

तर्जमा रज़विय्या मज़ तफ़सीर सदरुल अफ़ज़िल के साथ कुरआन मजीद के मज़ामीन की जो फेहरिस्त शाए की जा रही है, वह खुला हुआ फरेब है। नाशिरीन को ऐसी फेहरिस्त के साथ कुरआन मजीद छपवाने से मना किया जाए और न मानें तो उन का बायकाट किया जाए। लेकिन आज तक हमारे इस ऐलान पर किसी ने कोई ध्यान नहीं दिया और कुतुब खाने वाले बराबर उसी झूठी फेहरिस्त को शाए कर रहे हैं जो मुफीद होने के बजाए सुन्नियों के लिये बेइन्तिहा मुज़िर है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के हाज़िर व नाज़िर होने, गैरुल्लाह से मदद मांगने और इन के अलावा दीगर मुख़लफ़ फीह मसाइल के मुतअल्लिक़ फेहरिस्त में जो आयाते मुबारका लिखी गई हैं, मुख़ालिफीन के सामने जब सुन्नी अवाम उन को पेश करेंगे और कुरआन मजीद के तर्जमा व तफ़सीर में फेहरिस्त के मुताबिक़ उन का ज़िक़ नहीं पाएंगे तो उस के बाद उन का जो हाल होगा वह ज़ाहिर है कि सुन्नी उलमा से वह बदज़न हो जायेंगे, उन को फरेबकार और मक्कार ठहरायेंगे। और मुख़ालिफीन आसानी के साथ उन को अपनी जमाअत में शामिल कर लेंगे।

यह ग़लती सब से पहले बरेली शरीफ़ की कुरआन कम्पनी ने की है जैसा कि उस के एक ज़िम्मेदार मिम्बर ने मुझ से खुद बयान किया कि हम लोगों ने मजीद इफ़ादियत के लिये कुरआन मजीद के साथ उस के मज़ामीन की फेहरिस्त भी शाए की है और दूसरा सुबूत यह है कि तफ़सीर सदरुल अफ़ज़िल के साथ फेहरिस्त होने का ऐलान सब से पहले इसी कम्पनी ने किया। देखिये माहनामा नूरी किरन बरेली शरीफ़ शुमारा नवम्बर 1972 ई0।

अस्त वाकिआ यह है कि वह तफ़सीर नूरुल इरफ़ान की फेहरिस्त है जो तफ़सीर ख़ज़ाइनुल इरफ़ान के साथ ज़म कर दी गई है, इस लिये मज़ामीन उस के मुताबिक़ नहीं।

मैं ने कुतुब ख़ाना इशाअतुल इस्लाम देहली पर फेहरिस्त की फरेब

कारी दिखाने के बाद बहुत दबाव डाला कि वह कुरआन मजीद बिला फेहरिस्त वाला छापे, उस ने एक ऐडीशन ऐसा ही तबअू किया लेकिन दुनिया दार कुतुब फरोशों ने सुन्नी अवाम को बेवकूफ बनाने के लिये फिर उस कुतुब खाने को उसी फेहरिस्त के साथ कुरआन मजीद छपवाने पर मजबूर कर दिया।

तबाअत कुरआन मजीद के अगलात की तस्हीह रिसालों में छपवाने के सबब अक्सर नाशिरीन से हमारे तअल्लुकात खराब हो गए, इसी लिये हम ने इस मज्मून के शुरू में उन को दुनिया दार लिखा इस लिये कि अगर वह दीनदार होते और कुरआन की ग़लत-तबाअत के सबब उन्हें कुछ भी अपनी आकिबत के खराब होने का अंदेशा होता तो शुक गुज़ार होने के बजाए हम से नाराज़ न होते बल्कि वह खुद हमारी तस्हीह को कसीरुल इशाअत माहनामों में बार-बार शाए करते यहां तक कि जितने लोगों के पास उन के शाए कर्दा नुस्खे हैं वह सब आगह हो जाते और कुरआन की ग़लत ख़्यानी से बच जाते। मगर उन्होंने ने ऐसा इस लिये नहीं किया कि उन को अपनी नफा खोरी में कमी का अंदेशा था।

दुनियवी सिला:—इस तस्हीह का हमें दुनियवी सिला यह दिया गया कि जब कुतुब खाना इशाअतुल इस्लाम देहली ने हमारी तस्हीह के मुताबिक कुरआन मजीद छपवाया तो साथ ही उस ने यह ऐलान भी किया कि मुफ्ती जलालुद्दीन अमजदी की तस्हीह के मुताबिक इसे तबअू करवाया गया है। मगर फिर भी उस में इम्ला की बाज़ ग़लतियां रह गई थीं, जिस पर लंदन से एक साहब ने मुहासबा करते हुए गुस्ताखियों से भरा हुआ ख़त लिखा कि जब आप की निगरानी में कुरआन मजीद तबअू हुआ तो यह ग़लतियां कैसे रह गईं? हालां कि मेरी निगरानी में नहीं छपा था, बल्कि जो ग़लतियां हमें नज़र आईं सिर्फ उनकी तस्हीह हम ने माहनामों में शाए कर दी थी।

और कुतुब खाना इशाअतुल इस्लाम के उसी ऐलान पर कश्मीर के बाज़ लोगों को यह ग़लत फहमी हो गई कि तपसीर खज़ाइनुल

इरफान के साथ जो फेहरिस्त शाए की जा रही है वह हम ने मुरत्ताब की है जिस से सुन्नियत को नुकसान पहुंच रहा है तो एक गुस्ताख ने बिला तहकीक बद तमीजियों से भरा हुआ खत लिखा हालां कि हम खुद उस फेहरिस्त के ग़लत होने के ऐलान माहनामों में कर चुके हैं।

और हिन्दुस्तान के एक मशहूर मुफ्ती ने कहा कि आप बिला वजह नाशिरीन के पीछे पड़े हुए हैं, यह सारी ग़लतियां तो उसी नुस्खे में पाई जाती हैं जो हज़रत सदरुल अफाज़िल ने छपवाया था।

इस का मतलब यह हुआ कि जब हज़रत सदरुल अफाज़िल के शाए कर्दा नुस्खे में यह सारी ग़लतियां पाई जा रही हैं तो उस की तस्हीह न की जाए बल्कि कियामत तक उसे बाकी रहने दिया जाए।

बरी अक्लो-दानिश बबायद गिरीस्त

और फिक्हे हनफी की अज़ीम किताब बहारे शरीअत में गुमराह कुन तहरीफ की मज़मूम हरकत की गई कि उस के मुस्बत मसाइल को मन्फी और मन्फी को मुस्बत बना कर छापा गया लेकिन उस के मुतअल्लिक किसी ने कलम नहीं उठाया और न कुछ लिखा, हम ने चन्द ग़लतियां बतौर सुबूत पेश करते हुए उस के खिलाफ मज़ामीन लिखे जो माहनामा पासबान इलाहाबाद शुमारा मार्च 1979 ई० और माहनामा फैजुर रसूल बराऊं शरीफ शुमारा अप्रैल 1979 ई० में शाए हुए, अगर ऐसा न किया गया होता तो कुछ दिनों बाद मुखालिफीन उस के मुसन्निक फकीहे आजमे हिन्द हज़रत सदरुश शरीआ अल्लामा हकीम अबुल ओला मुहम्मद अमजद अली साहब किब्ला रहमतुल्लाहि तआला अलैह की जात सतूदा सिफात पर कीचड़ उछालते और उन्हें बदनाम करने की नापाक कोशिश करते। ——— खुदावन्दे कुद्दूस इस खिदमत को भी कबूल फरमाए और हमें अज़े जज़ील व जज़ाए जलील अता फरमाए। आमीन

आम हालात हक गोई व बेबाकी

आईने जवां मरदां हक गोई व बेबाकी

अल्लाह के शेरों को आती नहीं रुबाही

उलमाए दीन का हक-गो और बेबाक होना ज़रूरी है, उन पर लाज़िम है कि बातिल से न डरें और बिला खौफ लौमते लाइम हक को बयान करें। जिस के अन्दर यह जौहर नहीं है वह हकीकत में वारिसे अंबिया कहलाने का मुस्तहिक नहीं।

अल्हम्दु लिल्लाह! हम ने बड़ी-बड़ी ताक़त रखने वालों, बड़े-बड़े पीरों और बड़े-बड़े दौलतमन्दों की परवा किये बगैर बहुत से मौकों पर हक-गोई की है जिस में से चन्द अहम वाकिआत यह हैं।

दहरियों के मुक़ाबले में हक-गोई

बिहमदिल्लाहि तआला हमारा वतन ओझा गंज वहाबियों, देवबंदियों और राफज़ियों वगैरा से पाक है लेकिन कुछ लोग कम्यूनिज़म से मुतअस्सिर होकर दहरिया हो गए। अल्लाह व रसूल जल्ल जलालहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम का इनकार किया उन की शान में गुस्ताखियां और बे अदबियां कीं। और यह वह लोग थे कि जिन के बाप पहले ज़मीनदार थे और हमारी हरय्या तहसील के सब से बड़े हकीम और डाक्टर थे, इस लिये वह लोग रुपये पैसे से बहुत मज़बूत थे और बाप की साबिका ज़मीनदारी व मौजूदा डाक्टरी सबब पूरे इलाके में बड़ा असर रखते थे।

जब उन गुस्ताखियों की आवाज़ हमारे कानों में आई तो अगवें हमारी इल्मी व माली पोजीशन उस ज़माने में कमज़ोर थी और हमारे मुख्तिसीन भी बहुत कम थे मगर हम ने उन के खिलाफ खुल्लम खुल्ला तक्रीरें करनी शुरू कर दीं और हर जुमा, हर महफिले मीलाद और

मुहर्रम शरीफ की हर मजलिस में बराबर उन का रद करने लगे।

एक बार दहरियों के बड़े बाप आए उन्होंने ने कहा हमारे घर वाले तो बहुत खराब होते चले जा रहे हैं, हमारा फुलां भतीजा कहता है कि कुरआन पुराना हो गया अब वह अमल के काबिल नहीं रह गया।

(मआज़ुल्लाहि रब्बुल आलमीन)

कुरआन मजीद की हक्कानियत बयान करने के लिये उन्होंने ने मौलाद शरीफ की महफिल का इन्डिक़ाद किया, हम ने उस में हाज़िर होकर कुरआन मजीद के मुनज़ज़ल मिनल्लाह होने और हमेशा के लिये उस के मशअले हिदायत होने पर अक्ली व नक्ली दलाइल के अंबार लगा दिये और दहरियों के दरवाज़े ही पर उन का बहुत सख्त रद किया।

हमारी तक़रीरों के जवाब में उन्होंने ने और उन के घर वालों ने मौलवियों की बुराई करनी शुरू की कि फुलां मौलवी ने यह ग़लत काम किया और फुलां मौलवी ने यह बुराई की। आबादी के लोगों ने उन को यह जवाब दिया कि मगर हमारे यहां के मौलाना साहब में तो इस किसम का कोई ऐब नहीं है किसी जगह के किसी मौलवी ने अगर कोई बुराई की होगी तो उस का ज़िम्मेदार वही होगा।

जब इस तरह उन को कामयाबी नज़र न आई तो उन्होंने ने धमकी देनी शुरू की कि धानेदार से कह कर परेशान करायेंगे। और तरह-तरह के मुकद्दमों में फंसा कर हालत खराब कर देंगे। हम ने कहा अगर वह ऐसा करेंगे तो हम हर जुमा को एक एक मुस्लिम आबादी में जाकर उनके खिलाफ तक़रीर करेंगे और उन के तमाम उयूब बयान करके तशत अज़ बाम करेंगे और इस तरह हम उन को ज़लील करेंगे कि इलाक़ा में मुंह दिखाने के काबिल न रहेंगे।

ज़िला बस्ती छावनी के रईस जनाब रियासत अली खां साहब मरहूम (खुदाए तआला उन की क़ब्र पर रहमतों के फूल बरसाए) वह शुऐबुल औलिया हज़रत शाह मुहम्मद यार अली साहब किब्ला रहमतुल्लाहि तआला अलैह के मख़सूस मुरीद थे और मेरे मुखलिसीन में से थे मैं ने उन से दहरियों की धमकी का ज़िक्र किया कि वह लोग

मुझे मुकद्दमात में परेशान करने को कहते हैं, उन्होंने ने कहा आप उन से दबियेगा नहीं, अगर जरूरत पड़ेगी तो हम छावनी से लेकर बस्ती तक रुपये बिछा देंगे, मगर दहरियों को ऐसा करने की जुअत न हुई यहां तक कि वह ओझा गंज से मुत्तकिल होकर दूसरे मकामात पर चले गए और दहरियत का फित्ना बिल्कुल खत्म हो गया।

हमारा खानदान जो ओझा गंज में सब से ज्यादा फैला हुआ है और तरह-तरह के लोगों पर मुश्तमिल है, दहरिये भी इसी खानदान के अपराध हैं मगर सारी कराबत और तमाम रिश्तों पर इस्लाम का रिश्ता बाला है, जब वह मुसलमान नहीं रह गए और दहरिया होकर मुस्तद हो गए जो काफिरों की बदतरीन किसम है तो हम ने तकरीबन 25 बरस से मुकम्मल उन का बायकाट कर रखा है। न उन की शादी वगैरा में हमारे घर का कोई फर्द शरीक होता है और न हम अपने घर की किसी तकरीब में उन को मदऊ करते हैं।

अपने अजीज वो हैं जिन्हें वो अजीज हैं

हम को हैं वो पसंद जिन्हें आएंगे वो पसंद

सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम

मगर अपसोस कि ओझा गंज के बाज मौलवी उन दहरियों से शीरो-शकर की तरह मिलते हैं और उन की शादी व गमी में शरीक हो कर हमारे किये हुए पर पानी फेरने की कोशिश करते हैं। खुदाए अज्ज व जल्ल उन्हें हुक्मे शरीअत के मुताबिक दहरियों से दूर रहने की तौफीक रफीक बख्शे। आमीन

ओझा गंज के डाक्टर जमीरुल हसन मरहूम जो पुराने जमाने के जमीनदार थे, यूनानी, ऐलोपैथिक, हम्पूपैथिक और आयुर्वेदिक वगैरा हर तरह से लोगों का इलाज करते थे, जिन की डाक्टरी और तबाबत की पूरे इलाका में धूम मची हुई थी और कुर्बो-जवार के बड़े-बड़े बरहमन और ठाकुर हाजिर होकर उन को सलाम किया करते थे। उन्होंने ने बाज अहम अकाइदे इस्लामी की तज़्हीक की और मज़ाक उड़ाया तो अगर्चे वह हमारे खानदानी चचा थे और बड़े असरात रखते थे मगर इस बुनियाद पर हम

ने उन का बाइकाट कर दिया। शादी वगैरा के मौका पर वह बराबर हमारे घर को दअवत देते और मिठाई वगैरा भिजवाते लेकिन हम उन की दअवत को रद्द कर देते और मिठाई को बपास कर देते।

इसी तरह तक़रीबन दस साल तक वह अपनी सारी तक़रीबात में बुलाते रहे और हम जाने से इनकार करते रहे, यहां तक कि वह मरजुल मौत में मुब्तला हो गए, तो हमें अक्सर याद करने लगे, लोगों ने हम से कहा वह आप को बहुत याद करते हैं। हम ने कहा याद करने दो, वह मर जाएंगे मगर हम उन के करीब न जायेंगे।

जब उन की सेहत बहुत ज्यादा खराब हुई तो लोगों ने कहा, वह आप का ज़िक्र बहुत करते हैं और आप से मिलना चाहते हैं मगर आने से माजूर हैं, मैं ने कहा, मैं उन से मिल सकता हूं, बशर्ते कि वह तौबा करने के लिये तैयार हों।

एक शख्स उन के घर गया और आकर बताया कि वह तौबा करने के लिये तैयार हैं, मैं फौरन उन के पास गया, उन्होंने ने बखुशी तौबा और तज्दीदे ईमान किया। मैं ने उन से कहा कि आप अपनी औलाद को ताकीद कर दीजिये कि वह इस्लाम के खिलाफ कुछ न बोलें और अक़ीदा सहीह रखें कि बद अमली तो किसी हद तक बर्दाश्त की जा सकती है मगर बद ऐतिकादी नहीं बर्दाश्त की जा सकती, तो उन्होंने ने मेरी मौजूदगी ही में अपने लड़कों को इस्लामी अकाइद पर मजबूती के साथ काइम रहने की वसियत फरमाई।

उन के घर के बाज़ लोगों को उन का तौबा और तज्दीदे ईमान बुरा मालूम हुआ, जिस के खिलाफ उन से कुछ कहलवाना चाहा मगर उन्होंने ने कुछ न कहा और अपनी तौबा पर काइम रहे यहां तक कि इस वाकिआ के तक़रीबन एक माह बाद रमज़ान शरीफ के मुबारक महीने में इन्तेक़ाल कर गए।

खुदाए अज़्ज़ व जल्ल उन्हें अपनी मग़फ़िरत से नवाज़े और क़ियामत के दिन सरकारे अक्वदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के दामने करम का साया नसीब फरमाए। आमीन

मुम्बई में हक-गोई

एक साल माहे मुहर्म्म में मुम्बई वालों की दजूवत पर मैं कुरैश नगर कुरला में वअज़ कह रहा था, दौराने तकरीर मुझे ख़बर दी गई कि फौजदार सेठ का इन्तेक़ाल हो गया, शख़्से मज़कूर बस्ती ज़िला का रहने वाला था, मेरा बड़ा मुख़्लिस था और मुहर्म्म कमेटी कुरैश नगर कुरला के एक ख़ास मिम्बर का चचा था। जनाज़ा गुस्त व कफन के बाद कुरला मोहल्ला की एक मस्जिद में रखा गया और मुझे जनाज़ा की नमाज़ पढ़ाने के लिये ले जाया गया, जब मुझ से मस्जिद की तरफ़ मुड़ने के लिये कहा गया तो मैं ने कहा इधर कहाँ? लोगों ने कहा जनाज़ा इसी मस्जिद में पढ़ना है, हम ने कहा जनाज़ा मस्जिद में पढ़ना जाइज़ नहीं, हम वहाँ नहीं पढ़ सकते, जनाज़ा बाहर लाइये, लोगों ने कहा मुम्बई में सब मौलाना मस्जिद में नमाज़े जनाज़ा पढ़ाते हैं, इस लिये कि शहर में मस्जिद के बाहर जनाज़ा पढ़ाने के लिये जगह नहीं है।

हम ने कहा हाँ मुम्बई में जल्सा व कच्वाली के लिये जगह है, यहाँ तक कि सनीमा व सर्कस और हर किसम के लहवो-लइब के लिये भी जगह है मगर नमाज़े जनाज़ा के लिये जगह नहीं है, हम मस्जिद में नहीं पढ़ा सकते, जो लोग पढ़ाते हैं वह ना जाइज़ करते हैं।

कुछ लोगों ने कहा कि हुज़ूर मुफ़्तए आजम हिन्द क़िल्बा, सैय्यिदुल उलमा हज़रत मौलाना सैयद आले मुस्तफा साहब क़िल्बा और महबूबुल उलमा हज़रत मौलाना मुफ़्ती महबूब अली ख़ां साहब क़िल्बा (रहिमहुमुल्लाह) मस्जिद में नमाज़े जनाज़ा पढ़ाते रहे और आप ना जाइज़ कहते हैं, हम ने कहा आप लोग बड़ी-बड़ी शख़्सियतों का नाम लेकर हम को दबाने की कोशिश मत कीजिये, हम कहाँ तहकीक़ करने जायें कि यह हज़रत पढ़ाते थे या नहीं। आप लोग दो बातों में से एक बात कीजिये या तो मुझ से फ़िक़ह की मोतबर किताबों में ना जाइज़ देख लीजिये और या तो आप लोग जाइज़ दिखा दीजिये, बाकी हम कोई तीसरी बात सुनने के लिये तैयार नहीं।

कुछ लोग जिला बस्ती के एक बहुत बड़े सेठ को लाए, जो दारुल उलूम फैजुर रसूल की बतौर इमदाद हर साल बड़ी रकम दिया करते थे कि शायद उनके दबाव से मस्जिद में नमाजे जनाजा पढ़ा दें, उन्होंने ने कहा चलिये पढ़ा दीजिये ---- मुम्बई में सब पढ़ाते हैं। हम ने कहा जिस मुम्बई में पले हाउस के सोना पुर (कब्रिस्तान) को दुकान बना लिया गया और मुसलमान मुदों के सीनों पर रोजाना घन गिराया जात है मगर किसी मुसलमान के कान पर जूं नहीं रेंगती, आप उस मुम्बई का नाम लेते हैं और हम किताब की बात करते हैं। मेरे इस जवाब पर वह खामोशी के साथ चले गए और हमारी हक-गोई से वह इस कद्र मुतअस्सिर हुए कि उस के बाद जब भी मिले पहले से ज्यादा इज्जत के साथ पेश आए।

गुरजे कि हम किसी तरह नमाजे जनाजा मस्जिद में पढ़ाने के लिये तैयार न हुए और बराबर कहते रहे कि हमें जाने दीजिये, आप लोग किसी और से पढ़वा लीजिये, मगर हमारी इस बात के जवाब में फौजदार मरहूम का भतीजा यही कहता रहा कि हम किसी और से नहीं पढ़वायेंगे, चचा साहब आप को बहुत मानते थे, इस लिये उन की नमाजे जनाजा आप ही को पढ़ानी है और जब हम कहते जनाजा मस्जिद के बाहर निकालिये तो वह दौड़ कर मस्जिद में जाता मगर जनाजा निकालने में कामयाब न होता। मालूम हुआ कि मस्जिद के मुसल्लियान यह कहते हैं कि अगर नमाजे जनाजा मस्जिद में न पढ़ी गई तो न हम जनाजा की नमाज पढ़ेंगे और न मिट्टी देंगे और वह लोग ऐसा इस लिये कह रहे थे कि उन के इमाम साहब 32 साल से मस्जिद में नमाजे जनाजा पढ़ रहे थे, आज जनाजा मस्जिद में अगर बगैर नमाज हुए उस के निकल जाने में इमाम साहब की तौहीन हो रही थी।

जब मरहूम के भतीजे ने देखा कि दोनों तरफ से बहुत सख्ती पैदा हो गई है तो उस ने लोगों से हाथ जोड़ कर रोते हुए कहा कि पंचो साहिबो! हम तो जाहिल आदमी हैं, कुछ जानते नहीं, अल्बत्ता हम यह

जानते हैं कि हमारे चचा साहब हज़रत मुफ्ती साहब क़िब्ला को बहुत मानते थे अगर वह बराऊँ शरीफ में होते तो हम इस मौका पर उन्हें बुलाने नहीं जाते और जबकि वह यहां मौजूद हैं अगर वह जनाज़ा नहीं पढ़ाएंगे तो चचा मरहूम को तक्लीफ होगी। इस बात पर मुसल्लियाने मस्जिद नर्म पड़ गए और जनाज़ा मस्जिद के बाहर निकाला गया तो हम ने नमाज़ पढ़ाई।

एक बड़े बाबा

मुम्बई वह शहर है कि जिस की हर गली में दादा और बाबा पाए जाते हैं। उन्हीं में से एक बाबा ऐसे हैं जिन को मुम्बई के बाज़ लोग बड़ा बाबा मानते हैं, जनाज़ा में वह भी शरीक थे, नमाज़े जनाज़ा मस्जिद में जाइज़ और ना जाइज़ होने की बात जब हो रही थी तो उस वक़्त वह कुछ नहीं बोले लेकिन सुबह सवेरे हमारी मुख़ालिफ़त के लिये उठ खड़े हुए, हम पर फ़िल्ता अंगेज़ी का इल्ज़ाम लगाया और हमारे ख़िलाफ़ फ़त्या लेने की कोशिश की मगर जब उलमाए अहले सुन्नत ने भरपूर हमारी ताईद फरमाई और यह उन से मायूस हुए तो फिर कुरैश नगर कुरला की मुहर्रम कमेटी के ज़रिये हम को स्टेज से हटाने की कोशिश की और जब इस में भी कामयाब न हुए तो फौजदार मरहूम के तीजे की मज़्लिस में हम को फ़िल्ता अंगेज़ कह कर अपने मुख़िासीन के सामने सख़्त बरहमी ज़ाहिर की। यानी जो हुक्मे शरअ के ख़िलाफ़ कर रहे हैं वह सुलह पसंद हैं और हम ने शरीअत के हुक्म पर अमल किया तो हम फ़िल्ता अंगेज़ और काबिले मलामत हो गए।

ख़ुलासा यह कि नाम निहाद बाबा ने हुक्मे शरअ की मुख़ालिफ़त की और अअ़ला हज़रत इमाम अहले सुन्नत फ़ाज़िले बैरलवी रहम-तुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं कि सच्चे मज्ज़ूब की पहचान यह है कि वह शरीअते मुतहहरा का मुकाबला नहीं करेगा। (अल-मलफूज़:2/80)

और जब मज्ज़ूब की यह पहचान है तो ग़ैर मज्ज़ूब वली की बदर्ज़ए औला यही पहचान है कि वह कभी हुक्मे शरअ की मुख़ालिफ़त नहीं कर सकता।

बड़े बाबा कल्ब मुम्बई में रहते हैं, दाढ़ी रोज़ मुंडाते हैं और दूसरों को मुंडाने का हुक्म भी देते हैं। शुऐबुल औलिया रहमतुल्लाहि तआला अलैह के एक मुरीद जो बाबा के मोअत्किदीन में से हैं, उन्होंने ने बयान किया कि एक डाक्टर जो हुज़ूर मुफ़्तए आज़मे हिन्द किब्ला रहमतुल्लाहि तआला अलैह के मुरीद हैं, उन्होंने ने बाबा के इशारे पर दाढ़ी मुंडा ली और बराबर मुंडा रहे हैं, मुझ से भी बाबा ने कहा कि दाढ़ी मुंडा लो, तो मैं ने जवाब दिया कि आप अपने हाथ से उस्तुरा उठा कर मूँडने वाले को दीजिये और हुक्म कीजिये कि वह मेरी दाढ़ी मूँडे तो मैं इस सूरत में दाढ़ी मुंडा लूंगा। तम्म कलामुहू

सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम ने बार-बार दाढ़ी बढ़ाने का हुक्म फरमाया इसी लिये कोई मुहब्बत वाला दाढ़ी मुंडाना गवारा नहीं करता कि जब उस्ताज़ और मां बाप के हुक्म पर अमल न करने से उन को तकलीफ़ होती है तो महबूबे काइनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के हुक्म पर अमल न करने से उन को भी यकीनन तकलीफ़ होगी।

इसी लिय फ़ुकहाए किराम ने दाढ़ी मुंडाने को हराम करार दिया है। दुर्रे मुख्तार मअ शामी:5/261 में है **مَحْرَمٌ عَلَى الرَّجُلِ قَطْعَ لِحْيَتِهِ** आदमी पर दाढ़ी काटना, मुंडाना हराम है। और अज़ला हज़रत रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि दाढ़ी मुंडाना हराम है। (फ़तावा रज़विय्यह:6/168) और हज़रत सदरुश शरीआ रहमतुल्लाहि तआला अलैह लिखते हैं कि दाढ़ी बढ़ाना सुनने अबियाए साबिकीन से है, मुंडाना या एक मुश्त से कम करना हराम है। (बहारे शरीअत:16/164)

मगर शख़्से मजकूर जो अलानिया फेअले हराम का इरतिकाब करता है और दूसरों को हराम पर अमल करने का हुक्म भी देता है, उस को नज़ाना वसूल करने वाले मौलवी और तिजारत के लिये रुपया पाने वाले सेठों ने मुम्बई का कुतब मशहूर कर रखा है हालां कि इरशादे खुदावन्दी है: **إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ لَكُمْ شَيْئًا** यानी अल्लाह के वली सिर्फ़ मुत्तकी लोग

हैं (पारा:9, रुकूअ:18) और फेअले हराम का मुरतकिब मुत्तकी नहीं हो सकता तो ऐसा शख्स वली भी नहीं हो सकता।

यहां तक कि शुऐबुल औलिया किब्ला रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाया करते थे कि अगर कोई हवा में उड़ता जा रहा हो और बुजुर्गी का दावा रखता हो मगर शरीअत का पाबंद न हो तो मैं उसे कुछ नहीं समझता, बल्कि यहां तक फरमाते थे कि मेरे नज्दीक वह इस्तिजा के ढेले के बराबर भी वकअत नहीं रखता, मगर उन के बाज मुरीदीन भी अपने पीर की बातों को पसे पुश्त डाल कर उस फासिके मोअलिन को बहुत बड़ा वली करार देते हैं और दलील में यह पेश करते हैं कि हजरत मुजाहिदे मिल्लत मौलाना हबीबुर रहमान साहब किब्ला रहमतुल्लाहि तआला अलैह बाबा की ताजीम किया करते थे।

लेकिन हमें इस बयान का सहीह होना तस्लीम नहीं, इस लिये कि बहुत से लोग जब कोई ग़लत काम करते हैं तो ऐतराज़ करने वालों का मुंह बन्द करने के लिये झूठा बयान दे देते हैं कि फुलां बुजुर्ग ने ऐसा किया है।

माहे रमज़ान 1368 हि0 मुताबिक 1949 ई0 ज़मानए तालिब इल्मी में हम नाग भेड़ ज़िला चांदा (महाराष्टर) में तरावीह पढ़ाने के लिये गए जो नागपूर से साठ मील यानी 96 किलो मीटर पर है, फिर दरमियान साल किसी तातील के मौका पर हम ने अपने एक साथी को लेकर बतौर तफरीह नाग भेड़ गए, मगरिब की नमाज़ पढ़ाने के लिये हम ने उसी को खड़ा किया, उस ने कसूर पढ़ाई, यानी शरई मुसाफिर होने के सबब मगरिब की नमाज़ तीन रकअत के बजाए दो ही रकअत पढ़ाई, जब शोर हुआ कि मगरिब की नमाज़ में कसूर नहीं है तो उस ने कहा बहारे शरीअत के मुसन्नफ हजरत सदरुश शरीआ रहमतुल्लाहि तआला अलैह के साथ मैं रहा हूं, उन्होंने ने हमेशा सफर में मगरिब की नमाज़ दो ही रकअत पढ़ाई है, इस जवाब को सुन कर सब लोग खामोश हो गए।

एक मौलाना जो ज़िला गोंडा के रहने वाले थे और एक बड़े मदरसे

के सदर मुदरिस भी हैं वह एक ग़लती में मुस्तला थे, मुम्बई कुरला गफूर खां स्टेट की गौसिया मस्जिद में जब लोगों ने उन पर ऐतराज किया तो उन्होंने ने कहा कि सैय्यिदुल उलमा हज़रत मौलाना आले मुस्तफा साहब किब्ला इस को जाइज़ करार देते हैं, उस ज़माने में हज़रत सैय्यिदुल उलमा किब्ला रहमतुल्लाहि तआला अलैह बा हयात थे, मैं ने फौरन उन की कियाम ग़ाह मस्जिद खड़क पर जा कर उन से मुलाकात की और पूछा कि हज़रत फुला चीज़ को जाइज़ करार देते हैं? उन्होंने ने फरमाया *मआज़ल्लाह ला हौला वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह*, भला मैं ऐसी चीज़ को जाइज़ करार दे सकता हूँ।

यहां भी ऐसा ही मामला है कि अपनी ग़लती पर पर्दा डालने के लिये लोगों ने मुजाहिदे मिल्लत किब्ला का नाम लेते हैं और अगर यह तस्लीम भी कर लिया जाए कि उन्होंने ने उस फासिक मोअलिन की ताज़ीम की है जिस से उस का बुजुर्ग होना साबित होता है तो सवाल यह पैदा होता है कि यह तो रहा उन का अमल मगर इस के बारे में उन का कौल क्या है? इस लिये कि कौल के मुकाबला में अमल मरजूह होता है जैसा कि उसूले हदीस का काइदा है। और अगर उस के मुतअल्लिक हज़रत का कोई कौल नहीं है तो जो शरीअत का कौल है वही उन का भी कौल मानना पड़ेगा। इस लिये कि शरीअत के खिलाफ वह कौल कर ही नहीं सकते।

और शरीअत का फरमान यह है कि ऐसे शख्स की ताज़ीम नहीं की जाएगी बल्कि बुराई बयान की जाएगी ताकि लोग उस के फरेब से बचें। जैसा कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फाज़िल बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि हदीस में है नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम फरमाते हैं:

क्या फाजिर को बुरा कहने से परहेज करते हो लोग उसे कब पहचानेंगे, फाजिर की बुराइयां बयान करो कि लोग उस से बचें। (फ़तावा रज़विय्यह: 3/251)

أَرَعَبُونَ عَنْ ذِكْرِ الْفَاجِرِ مَنَى يَعْرِفُهُ النَّاسُ
أَذْكُرُ الْفَاجِرَ بِمَافِيهِ يَحْتَلُوهُ النَّاسُ۔

और आला हज़रत रहमतुल्लाहि तआला अलैह रहुल मोहतार से नक़ल फरमाते हैं اما الفاسق فقد عللوا كراهة تقديمه فانه لا يهتم لامر دينه وبان في تقديمه للإمامة تعظيمه وقد وجب عليهم اهانتته شرعاً (फतावा रज़विह: 3/148)

तबक़ए मलामतियह

बाज़ लोगों का ख़्याल है कि बाबा तबक़ए मलामतियह के बुजुर्ग हैं यानी दाढ़ी इस लिये मुंडाते हैं ताकि लोग उन की मलामत करें और उन को बुरा समझें।

हम कहते हैं कि मलामत की तीन किस्में हैं, जैसा कि शैखुल मशाइख सुल्तानुल आरिफीन हज़रत दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाहि तआला अलैह तहरीर फरमाते हैं कि एक यह कि वह सीधा चले, दूसरे यह कि वह क़स्द करे, तीसरे यह कि वह तर्क करे।

पहली किस्म की सूरत यह है कि एक शख्स काम करता है और उमूरे दीनिया में कामिल ऐहतियात बरतता है और मोआमलात में मुराआत से काम लेता है मगर ख़ल्क फिर भी उस पर मलामत करती है क्यों यह लोगों की आम आदत है, मगर वह शख्स किसी की परवाह नहीं करता।

दूसरे यह कि कोई शख्स लोगों में साहिबे इज़्ज़तो-शर्फ होने के साथ उन में मशहूर भी हो और उस का दिल इज़्ज़त की तरफ माइल भी हो, इस के बा वजूद वह यह चाहे कि उन से जुदा होकर यादे इलाही में मद्द हों जाएं और क़स्दन ऐसी राह इख़्तियार करे जिस से मख़्लूक उस पर मलामत करे और ऐसे अमल से शरीअत में भी ख़लल न बाक़े हो मगर लोग उस से नफरत करने लगें और उस से मुतनफ़िफ़र होकर जुदा हो जाएं।

और तीसरी किस्म यह है कि दिल में तो कुफ़्रो-ज़लालत से तबई नफरत भरी हो, बज़ाहिर शरीअत की मुताबअत न करे और ख़्याल करे कि मलामती तरीका पर ऐसा करता हूं और यह मलामत का तरीका उस की आदत बन जाए इस के बा वजूद वह दीन में मज़बूत और

रास्त-रौ हो लेकिन जाहिर तौर पर बगरजे मलामत निफाक व रिया के तौरो-तरीक पर दीन की खिलाफ वरजी करे और मख्लूक की मलामत से बेखौफ हो, वह हर हाल में अपने काम से काम रखे, ख्वाह लोग उसे जिस नाम से चाहें पुकारें।

(कशफुल महजूब उर्दू:94)

हजरत दाता के इन जुम्लों को फिर से पढ़िये कि कस्दन ऐसी राह इख्तियार करें जिस से मख्लूक उस पर मलामत करे और ऐसे अमल से शरीअत में भी खलल न वाकैअ हो --- बजाहिर शरीअत के मुताबअत न करे --- जाहिर तौर पर बगरजे मलामत निफाक व रिया के तौरो-तरीक पर दीन की खिलाफ वरजी करे।

यानी तबकए मलामतियह का बुजुर्ग कस्दन ऐसी राह इख्तियार करता है जिस से मख्लूक उस पर मलामत करे मगर उस के अमल से शरीअत में खलल नहीं वाकैअ होता हो; बजाहिर शरीअत की मुताबअत नहीं करता, सिर्फ लोगों के देखने में दीन की खिलाफ वरजी करता है लेकिन हकीकत में उस का अमल शरीअत के खिलाफ नहीं होता।

हजरत बायजीद बुस्तामी

मशहूर बुजुर्ग हजरत बायजीद बुस्तामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह रमजान शरीफ के महीने में सफर कर रहे थे, जब एक शहर के करीब पहुंचे तो वहां बड़ा शोहरा हुआ कि हजरत बायजीद तशरीफ ला रहे हैं। शहर के बहुत से लोग इस्तिक्बाल के लिये निकल पड़े और बड़ी ताजीम व तकरीम के साथ अपने शहर में लाए। हजरत ने जब लोगों की खातिर व मदारात को मुलाहेजा फरमाया तो उन का दिल भी मशगूल हो गया और वह यादे इलाही से बाज़ रहने के सबब परेशान खातिर हो गए, जब बाज़ार में आए तो रोटी निकाल कर वहीं खाने लगे, यह देख कर सब लोग उन से बरगश्ता हो गए और उन्हें तन्हा छोड़ कर चले गए कि यह कैसे बुजुर्ग हो सकते हैं जो रोज़ा भी नहीं रखते।

(कशफुल महजूब उर्दू:96)

मगर चूँकि हजरत मुसाफिर थे और मुसाफिर को रोज़ा न रखने की

इजाजत है इस लिये आप का रोटी खाना हकीकत में शरीअत के खिलाफ नहीं था, सिर्फ ज़ाहिर में खिलाफ था, जिस के सबब लोग आप से बरगश्ता हो गए और आप का जो मकसद था पूरा हो गया।

हज़रत दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाहि तआला अलैह इस वाकिआ के बाद तहरीर फरमाते हैं कि इस ज़माना में मलामत की रविश इख़्तियार करने के लिये कोई ग़लत काम करने की ज़रूरत होती थी और ऐसी बात ज़ाहिर करनी पड़ती थी जो अवाम के मंशा व मिजाज़ के खिलाफ हो। लेकिन आज अगर कोई चाहे कि उसे मलामत की जाए तो दो रकअत नफल शुरू करके उसे ख़ूब तूल दे दे या दीन की मुकम्मल पैरवरी शुरू कर दे ताकि तमाम लोग उसे रियाकार और मुनाफ़िक कहने लगें।

और तहरीर फरमाते हैं कि जो शख्स तर्क के तरीका पर मलामत इख़्तियार करे और कोई काम खिलाफे शरीअत करके यह कहे कि यह अमल मैं ने हुसूले मलामत के लिये किया है तो यह खुली हुई ज़लालत व गुमराही है और ज़ाहिरी आफत व सच्ची हवा परस्ती है।

(कशफुल महजूब उर्दू:96)

खुलासा

हज़रत दाता गंज बख़्श रहमतुल्लाहि तआला अलैह की तहरीरों का खुलासा यह हुआ कि तबकए मलामतियह का दावेदार अगर कोई काम खिलाफे शरीअत करे और यह कहे कि मैं ने यह काम हुसूले मलामत के लिये किया है तो यह खुली हुई ज़लालत व गुमराही और सच्ची नफ्स परस्ती है। अल्बत्ता उन में बाज़ बुजुर्ग ज़ाहिर में कुछ अमल शरीअत के खिलाफ करते हैं, लेकिन हकीकत में वह खिलाफ नहीं होता।

और हज़रत दाता गंज बख़्श ऐसे बुजुर्ग हैं कि जब आप लाहौर में मस्जिद तामीर करवा रहे थे, लोगों ने कहा कि इस का किब्ला ग़लत है, मगर आप ख़ामोश रहे, फिर जब मस्जिद मुकम्मल हो गई तो आप ने लोगों को बुलाया और खुद नमाज़ पढ़ाई, उस के बाद फरमाया देखो

कअबा किस तरफ है, तो लाहौर ही की ज़मीन से सब को कअबा नज़र आ गया।

(हदाइकुल हनफिया:198)

यानी हज़रत दाता साहब रहमतुल्लाहि तआला अलैह वह बुजुर्ग है कि लाहौर से कअबा शरीफ को देख रहे थे, और जब ज़रूरत पड़ी तो दूसरों को भी दिखा दिया। तो हमें ऐसे बुजुर्ग का फरमान काफी है कि तबकए मलामतियह का कोई बुजुर्ग हकीकत में खिलाफे शरीअत काम नहीं करता, सिर्फ ज़ाहिर में खिलाफ नज़र आता है।

हज़रत मख़्दूम समनानी

हिन्दुस्तान के मशहूर बुजुर्ग हज़रत मख़्दूम अशरफ जहांगीर समनानी कछौछवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाते हैं कि एक गरोह मलामतिया बुजुर्गों का है जो फराइज़ और वाजिबात व सुन्नत तो बजाए खुद अहम हैं मगर वह मुस्तहब्बात बल्कि नवाफिल तक की पाबंदी बेहद ज़रूरी जानते हैं, उन को कभी कज़ा नहीं करते। लेकिन इस के बावजूद वह अपनी इबादतों को इस तरह छुपाते हैं जैसा बुरा आदमी अपनी बद किरदारी को, उन की कोशिश रहती है कि उन के हुस्ने अमल से कोई भी बाख़बर न होने पाए।

(महबूबे यज़दानी:106)

इस सिलसिले में हज़रत मख़्दूम साहब ने एक वाकिआ बयान फरमाया कि मैं सबज़्वाज़ जा रहा था, रास्ते में मुझे एक निहायत हसीन बाग़ मिला, वस्त में शानदार खेमा नसब था, जिस में एक खूबसूरत नौजवान और हसीन औरत पहलू बपहलू बैठे थे, सामने गुलाबी (शराब की सुराही) रखी थी, और हसीना ज़ाम बकफ उस नौजवान से खुश मज़ाक कर रही थी, मैं ने जब उन को देखा तो बयक नज़र ख़्याल हुआ कि यह लोग नफ्स के गुलाम बन कर किस तरह अपने को तबाह कर रहे हैं, लेकिन जब मेरी और उन की निगाहें चार हुई तो उन का हाल रौशन हुआ कि वह औरत उन की मनकूहा बीवी है, और सुराही में शराब के बजाए शर्बत है और खुद बदौलत मलामती गरोह के बुलंद मर्तबा बुजुर्ग हैं।

(महबूबे यज़दानी:107)

हजरत मख्दूम साहब रहमतुल्लाहि तआला अलैह के फरमान से भी अच्छी तरह वाजेह हो गया कि तबकए मलामतिया का बुजुर्ग फराइज व वाजिबात को बड़ी चीज है, वह सुनन व मुस्तहब्बात बल्कि नवाफिल का भी सख्त पाबंद होता है, अल्बत्ता अपनी इबादत को छुपाता है और कभी जाहिर में उस का फेअल अगर्वे शरीअत के खिलाफ मालूम होता है लेकिन हकीकत में वह मुत्तबए शरीअत होता है।

आज एक दाढ़ी मुंडाने वाले को गरोहे मलामतिया का बुजुर्ग तस्लीम किया जा रहा है और उस की बुजुर्गी का दिंदूरा पीटा जा रहा है तो वह दिन दूर नहीं जबकि बेनमाजी यहां तक तवाइफ के कोठों पर घूमने वाला भी तबकए मलामतिया के बुजुर्ग होने का दावा करेगा और कहेगा कि मैं भी अल्लाह के वलियों में से एक वली हूं। अल्-इयाजु बिल्लाहि तआला

खतरनाक गुलती

याद रखना चाहिये कि हर गुलत तरीका की इब्तिदा बहुत मामूली होती है, मगर एक नस्ल से दूसरी नस्ल और दूसरी से तीसरी तक पहुंचते पहुंचते वही छोटी सी इब्तिदा एक खतरनाक गुलती बन जाती है।

सरे चश्मा शायद गिरिफ्तन ब मील

चूं पुर शुद नशायद गुजिश्तन ब पील

यह एक बहुत बड़ा फिल्ला है मगर बड़े-बड़े हक-गोई का दावा रखने वाले किसी मस्लहत से खामोश हैं सिर्फ मुलाकात न करने और सलाम न कहलवाने को काफी समझते हैं, उस के खिलाफ न कुछ बोलते हैं और न कुछ लिखते हैं बल्कि उस की तारीफ करते हैं हालांकि हदीस शरीफ में है:

जब फिल्ने जाहिर हों और हर तरफ
बे दीनी फैलने लगे और ऐसे मौका
पर आलिमे दीन अपना इल्म जाहिर
न करे और अपनी किसी मस्लहत

إِذَا ظَهَرَتِ الْفِتْنَةُ أَوْ قَالَ الْبِدْعُ وَلَمْ يُظْهِرِ الْعَالِمُ
عِلْمَهُ فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ
لَا يَقْبَلُ اللَّهُ مِنْهُ صَرْفًا وَلَا عَدْلًا

या मफाद के तालच में खामोश रहे तो उस पर अल्लाह की और तमाम फिरिश्तों की और सारे इंसानों की लअनत है, अल्लाह न उस का फर्ज कबूल करेगा और न उसकी नफल। (संवाइके मुहर्रका:2, अल्-मलफूज हिस्सा:4)

और सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तअाला अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

जब फासिक की तारीफ की जाती है

إِذَا مَدَّحَ الْفَاسِقُ غَضِبَ الرَّبُّ

तो अल्लाह तअाला गुज़ब फरमाता

और अर्श इलाही कांपने लगता है।

وَاهْتَزَلَتِ الْعَرْشُ-

(बैहकी, अनवारुल हदीस:419)

और जबकि यह परचार किया जा रहा है कि बड़े-बड़े मुत्तकी परहेज़गार और हक-गो उलमा बाबा के खिलाफ कुछ नहीं बोलते बल्कि उन से खुसूसी तअल्लुकात रखते हैं तो बाबा यकीनन पहुंचे हुए बुजुर्ग हैं अगर वह ग़लत होते तो ऐसे-ऐसे उलमा खामोश न रहते — इस सूरत में शख़्से मज़कूर के मुतअल्लिक आलिमों का हुक्म शरअ के ज़ाहिर न करने और उससे खुसूसी तअल्लुकात रखने का गुनाह और भी शदीद हो जाता है।

अगर बाबा वकई बुजुर्ग हैं तो नज़ाना वसूल करने वाले मौलवी इसे शरीअत की रौशनी में वाजेह करें ताकि हम जैसे लोग जो ग़लत फहमी में मुब्तला है वह भी बाबा से कुछ फाइदा हासिल करें।

मुद्दा पूरा किया

बाबा को हमारे इस बयान से चीं-बजबीं नहीं होना चाहिये इस लिये कि जब वह गरोहे मलामतिया के बुजुर्ग हैं जैसा कि उन के हवा ख्वाहों का बयान है तो मैं ने उन का मुद्दा पूरा किया इस लिये कि इस तबका के बुजुर्गों का मक्सद ही यह होता है कि लोग उन को बुरा भला कहें और उन की मलामत करें।

और मोअ्तकिदीन को भी नाराज़ नहीं होना चाहिये कि मैं उन के मलामती बाबा की ऐने तमन्ना किसी हद तक पूरी कर रहा हूं। और अपने इस मज़मून को हज़रत शेख़ सअ्दी रहमतुल्लाहि तअाला अलैह

के इस शेअर पर खत्म कर रहा हूँ

खिलाफे पयम्बर कसे रह गुज़ीद
कि हरगिज़ ब मंज़िल न ख्वाहद रसीद

ऐब जोई और गीबत

जब किसी के शरई ऐब की गिरिफ्त की जाती है और उस के खिलाफ कुछ कहा जाता है तो वह ऐब जोई और गीबत का इल्ज़ाम लगाता है, हालां कि दाढ़ी मुंडाना, नमाज़ न पढ़ना, तर्क जमाअत का आदी होना, वहाबियों, देवबंदियों या दहरियों से दोस्ती रखना, उन से शादी ब्याह करना वगैरा इन बातों के खिलाफ बोलना और लिखना ऐब जोई नहीं है। इस लिये कि पोशीदा ऐबों को तलाश करना ऐब जोई है और जो बुराई अलानिया की जाती है, उस की मुख़ालफ़त करना हक़-गोई ऐब जोई नहीं — उन में बाज़ मुद्इए इल्म भी होते हैं, जो हक़-गोई है और ऐब जोई का फर्क नहीं समझते और या तो समझते हैं मगर अज़ राहे फरेब बुराई रोकने वाले ही को गुनहगार साबित करने की नाकाम कोशिश करते हैं।

और फासिके मुअल्लिन या बद मज़हब की बुराई करना जाइज़ है बल्कि अगर लोगों को उस के शर से बचाना मक्सूद हो तो सबाब मिलने की उम्मीद है। (बहारे शरीअत: 16 बयान गीबत बहवाला रहुल मोहत्तार)

और तहरीर फरमाते हैं:

जो शख्स अलानिया बुरा काम करता हो और उस को इस बात की कोई परवाह नहीं कि लोग उसे क्या कहेंगे तो उस शख्स की उस बुरी हरकत का बयान करना गीबत नहीं मगर उस की दूसरी बातें जो जाहिर नहीं हैं उन को जिक्र करना गीबत है। हदीस में है जिस ने हया का हिजाब अपने चेहरा से हटा दिया उस की गीबत नहीं।

(बहारे शरीअत बहवाला रहुल मोहत्तार)

देवबंदी घर में हक़-गोई

बस्ती ज़िला में फैज़ाबाद रोड पर एक आबादी विक्रम जोत है वहां

पर एक सख्त किसम का देवबंदी बाले नाम का रहता था जो बहुत बड़ा दौलतमन्द था और किसी ज़माने में वह देवबंदी मौलवियों को इकट्ठा करके सुन्नियों से मुनाज़रा करा चुका था, जिस में सुन्नियों की तरफ से मुनाज़रा के ज़िम्मेदार बानी फैज़ुर रसूल हज़रत शाह मुहम्मद यार अली किब्ला रहमतुल्लाहि तआला अलैह थे।

बाले, दोबोलिया बाज़ार के हाजी रमज़ान अली सेठ के यहां लड़की का रिश्ता करना चाहता था। यह उस ज़माना की बात है जबकि मैं दोबोलिया बाज़ार में था और उस वक़्त भी मैं देवबंदियों के यहां शादी करने से लोगों को सख्ती के साथ मना किया करता था।

बाले को मालूम हुआ कि देवबंदी होने के सबब रमज़ान सेठ हमारे यहां रिश्ता नहीं करेंगे तो उस ने अपने को सुन्नी साबित करने के लिये हमें मीलाद शरीफ पढ़ने की दअवत दी, मैं वक़्ते मुकर्ररा पर विक्रम जोत पहुंच गया, वहां के हाजी अब्दुल सत्तार जो बराऊं शरीफ के मुरीद थे, उन्होंने ने बताया कि बाले सख्त किसम का देवबंदी है, हम ने उन्हें ताकीद की कि जितने सुन्नी हैं सब को लेकर मीलाद शरीफ में अव्वल वक़्त पहुंच जाइये, ताख़ीर हरगिज़ न कीजिये।

एक बड़े हाल में मीलाद शरीफ का इन्तेज़ाम हुआ, हाजी अब्दुल सत्तार सारे सुन्नियों को लेकर सब से पहले पहुंच गए, हम ने सामईन से दरयाफ्त किया, आप लोग ईमान के बारे में तक़ीर सुनना चाहते हैं या अमल के? सारे सुन्नियों ने बयक ज़बान कहा हम ईमान के बारे में तक़ीर सुनना चाहते हैं, और देवबंदियों ने कहा अमल के मुतअल्लिक़ बयान करें।

हम ने सूरए अस्र को मौजूए सुखन बनाया, तफ़्ज़ "आमनू" पर तक़ीर करते हुए देवबंदियों के कुफ़ियात बयान किये और उन का सख्त रद किया। फिर आख़िर में "व अमिलुस्-सालिहात" के मुतअल्लिक़ भी रौशनी डाली और सलातो-सलाम पर मीलाद शरीफ का इख़िताम हुआ।

इस वाफ़िआ की ख़बर हाजी अब्दुल सत्तार ने हज़रत शुऐबुल औलिया रहमतुल्लाहि तआला अलैह को पहुंचाई, जिस से आप बहुत खुश हुए और मुलाकात होने पर बड़ी इज़्ज़त अफ़ज़ाई फरमाई यहां तक कि

यही हक-गोई तीन चार साल बाद फैजुर रसूल में आने का सबब बनी।

शहजाद पुर में हक-गोई

ज़िला फैजाबाद की मशहूर आबादी अकबर पुर के मुत्तसिल शहजाद पुर है, वहाँ का एक पीर ज़िंदगी भर मुरीदों से अपना सज्दा कराता रहा, और मौत के बाद वह सब क़ब्र का सज्दा करते हैं, बल्कि क़अ्बा शरीफ की तरह हर चहार जानिब से क़ब्र की तरफ मुंह करके नमाज़ भी पढ़ते हैं *अल्-इयाज़ु बिल्लाहि तआला।*

यह बातें आम तौर पर मशहूर हैं लेकिन वक़्त के बड़े-बड़े शेख़ुल हदीस, बुलंद पाया मुफ़्ती, शख़्से मज़कूर के उर्स में शरीक होते रहे और रस्मी तक़रीरें करके नज़ाने वसूल करते रहे।

इत्तिफ़ाक़ से 1391 हि० में मुझे भी उर्स के तक़रीरी प्रोग्राम में शिरकत की दअ्वत दी गई, मैं वहाँ पहुंचा तो मालूम हुआ कि गाज़ीपुर के एक मशहूर आलिम, फैजाबाद के एक बड़े ख़तीब और लखाही ज़िला गोंडा के एक मौलाना भी बहैसियत मुक़र्रिर आए हुए हैं। साथ ही वहाँ की ख़ुराफ़ात का भी इल्म हुआ।

तीनों मुक़र्रिरीन ने पहले तक़रीरें कर लीं और आख़िर में हमें तन्हा स्टेज पर छोड़ कर चले आए, इस मौक़ा पर हमारी हक-गाई का सख़्त इम्तिहान था मगर हम ने तय कर लिया था कि हक़ ज़ाहिर किये बग़ैर नहीं रहेंगे चाहे जो कुछ हो जाए। बहुत करेंगे नज़ाना नहीं देंगे, गुस्ताख़ी करेंगे या मारेँगे बल्कि क़त्ल भी कर देंगे तो कोई परवाह नहीं कि खुदाए तआला के नज़्दीक इस से हमारा दर्जा और बुलंद हो जाएगा। हम ने ताज़ीमे नबवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम को मौजूए सुखन बनया, इसी ज़िम्न में ग़ैरुल्लाह के लिये सज्दए तअब्बुदी का कुफ़ होना और ताज़ीमी सज्दा का सख़्त हराम व ना जाइज़ होना वाज़ेह लफ़्ज़ों में बयान किया।

मजमूअ जिस में अक्सर मुरीदीन ही थे, उस में इन्तिशार पैदा हुआ, मैं वअज़ बन्द करके क़ियाम गाह की तरफ चला, मेरे पीछे बहुत से मुरीदीन आए और गुस्ताख़ी के साथ इस बात पर मजबूर करने लगे

कि आप सज्दए ताजीमी के जाइज होने का ऐलान करें, हम ने कहा यह हरगिज नहीं हो सकता, जो चीज ना जाइज व हराम है, मैं उस के जाइज होने का ऐलान कभी नहीं कर सकता। कहने लगे फिर ना जाइज होने ही को आप साबित कर दीजिये, हम ने कहा कि यहां किताबें लेकर हम नहीं आए हैं, लिख कर भेज देंगे, कहा फुलां आलिम ने भी वादा किया था मगर बरसों गुज़र गए! उन्होंने ने कुछ नहीं लिख कर भेजा। हम ने कहा कि मैं फुलां आलिम नहीं हूँ, आप लोगों ने उन को देखा, अब हम को भी देख लीजियेगा। बहर हाल उन लोगों ने गुस्ताखियों और धमकियों ही पर इक्तिफा किया, आगे नहीं बढ़े और फिर चले गए।

सुबह हम को सिर्फ वापसी किराया भर का नज़ाना दिया गया मगर हम ने ऐलाने हक कर दिया। पेशावर मुकर्रिं का तरीका नहीं इख्तियार किया और नज़ाना पाने के लालच में या मुरीदीन के खौफ से कित्माने हक नहीं किया, इस पर खुदा का शुक बजा लाए।

गाज़ीपुरी और गौंडवी मौलवी ख़ल्ते जलसा से पहले ही यह कह कर चले गए थे कि बराऊं शरीफ का मुफ्ती खामोश नहीं रहेगा, इनके खिलाफ ज़रूर बोलेगा जिस से फिल्ला होगा, मगर फैज़ाबाद के ख़तीब अकबर पुर से फैज़ाबाद तक हमारे साथ रहे जो बार-बार कहते रहे कि आप की वजह से इस साल नज़ाना आधा हो गया, वरना हर साल इतना मिलता रहा।

खुदाए अज़्ज व जल्ल ऐसे पेशावर मुकर्रिं को हिदायत नसीब फरमाए। नज़ाना की ऐसी लालच दिलों से निकाल दे और बिला खौफ ऐलाने हक की तौफीके रफीक बख़्शे। आमीन

बराऊं शरीफ पहुंच कर हम ने फौरन हुर्मते सज्दा पर 16 सफ़हात का एक रिसाला बनाम “सज्दए ताजीम” लिखा जो आला हज़रत इमाम अहले सुन्नत फाज़िल बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह के रिसालए मुबारक “अज़्जुबदतुज्जकिया फी हुर्मति सुजूदित तहि्य्ह” से माखूज़ रहा फिर उसे जल्द ही छपवा कर पांच सौ की तादाद में ले जा कर अकबर पुर चौराहे पर मुफ्त तक्सीम कर दिया और शहज़ाद पुर के

गद्दी नशीन को रजिस्टरी कर दिया जो आज भी चन्द फतावा के साथ ज़रूरी मसाइल में शाए हो रहा है।

तक़रीर और उस का नज़ाना

तक़रीर करने के लिये तो हम मुल्क के तूल व अरज़ बिहार, बंगाल, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, आंध्राप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्रा और यूपी के मुख्तलिफ मक़ामात व रियासत नैपाल में गए मगर मक्सुद नज़ाना नहीं रहा बल्कि मुसलमानों के अक्कीदे और उन के आमाल की इस्लाह मक्सुद रही, इसी लिये हम ने कभी किसी से नज़ाना तय नहीं किया बल्कि जो भी दिया गया हम ने उसे ख़ामोशी से रख लिया यहां तक कि बाज़ मक़ामात पर इतना कम नज़ाना दिया गया कि जिस का कभी तसव्वुर नहीं किया जा सकता था मगर हम ने फिर भी बिला ऐतराज़ कबूल किया।

ज़िला बस्ती बांसी के पूरब एक मौज़ा कमहरिया है जो बराऊं शरीफ से तक़रीबन 25 किलो मीटर पर वाका है, वहां एक हाजी साहब का इन्तेक़ाल हुआ, चूंकि उन का लड़का उस आबादी का बहुत बड़ा सेठ था, इस लिये जनाज़ा में कई चहाबी और देवबंदी मौलवी भी शरीक हुए, बाद दफन सेठ ने ऐलान किया कि जितने लोग जनाज़े में शरीक हैं, फुलां दिन सब लोगों को खाने की दावत है, इस के अलावा और भी बहुत से लोगों को शादी ब्याह की तरह मदऊं किया गया।

कमहरिया के सब लोग अपने को सुन्नी ही कहते थे मगर बद मज़हबों का उन पर पूरा तसल्लुत था, उन में एक साहब सुन्नियत का दर्द रखते थे जिन को अब्दुल्लाह मियां कहा जाता था उन्होंने ने सेठ को इस बात पर राजी कर लिया कि दावत के मौका पर बराऊं शरीफ के किसी आलिम की तक़रीर हो जाए, इस के लिये मुझे उन्होंने ने दावत दी।

यह उस ज़माने की बात है जबकि बराऊं शरीफ से बांसी जाने के लिये बस वगैरा की सहूलत नहीं थी, हम ने एक तालिब इल्म को किराए की साइकल लाने के लिये बांसी भेजा, वह 15 किलो मीटर पैदल जा कर साइकल लाया, हम उसी से कमहरिया गए, शादी की

तरह मैथियत की दावत जो वाकई बिदअत सैथिया है, ऐसी दावत खाने के लिये बात-बात पर बिदअत की रट लगाने वाले वहाबी और देवबंदी सात मौलवी पहले से मौजूद थे।

जब मैं पहुंचा तो कुरआन ख्यानी हो रही थी, हम ने शीरीनी मंगा कर उस के साथ तिलावते कुरआन का ईसाले सवाब किया तो उन में के दो मौलवी यह कह कर चले गए कि बराऊं के आलिम आए हैं अब यहां नियाज़ फातेहा होगा और तीन मौलवी खाने के बाद गए। बाकी बचे दो मौलवी। उन्होंने ने हमारे पास खबर भिजवाई कि हम भी तक्रीर करेंगे और हम लोगों का बयान बाद में होगा, हम ने कहलवाया कि आप लोगों को खाने की दावत थी, जब खा चुके तो अपने-अपने घर जाइये, तक्रीर के लिये तो सिर्फ हम बुलाए गए हैं, मगर वह नहीं गए और आखिर में तक्रीर करने पर बज़िद रहे, बड़ी गुप्तो-शुनीद के बाद इब्तिदा ही में बयान करने पर राजी हुए।

मीलाद शरीफ का प्रोग्राम ज़मीन पर ही रहा, मैं सामने की एक छत पर उन लोगों की तक्रीर सुनने के लिये चला गया और उन के खास- खास जुमले नोट करता रहा, दोनों ने अहले सुन्नत व जमाअत के मोअतकिदात का सख्त रद किया और सुन्नी कहलाने वाले सब लोग खामोशी से सुनते रहे। उन में एक मौलवी अपनी तक्रीर खत्म करके फौरन चला गया और दूसरे ने अपने बयान को बहुत तवील किया गालिबन इस लिये ताकि मजमा थक कर चला जाए और बराऊं शरीफ के आलिम की तक्रीर ही न हो सके, वह ज़िल्लत व रुस्वाई के साथ यहां से वापस हो जाएं।

अब्दुल्लाह मियां बार-बार सेठ से कहते थे कि इन की तक्रीर बंद करवाइये और जिन को आप ने वज़ा ही के लिये बुलाया है अब उन का बयान करवाइये, मगर वह ऐसा न कर सका, यहां तक कि रात के 12 बज गए मगर मेरी तक्रीर नहीं शुरू हो सकी और मजमा उठता चला जा रहा था, इस लिये अब बयान होने की उम्मीद भी नहीं रह गई थी जिस के सदमा से मेरी हालत अजीबो-गरीब हो गई थी।

आखिर उस मौलवी ने 12 बज कर 10 मिनट पर अपनी तक्रीर खतम की और कुर्सी छोड़ कर बीच की बिछी हुई चारपाई पर बच्चों की तरह पांव फैला कर बंद तहजीबी से बैठा, मैं नीचे उतर कर कुर्सी पर आया और हम्दो-सलात के बाद खिलाफे आदत बुलंद आवाज़ से उन दोनों की तक्रीरों का रद्द करना शुरू कर दिया, वह दरमियान में बोल पड़ा और अपनी तार्द में कुरआन मजीद की एक आयत करीमा तिलावत की मगर ग़लत पढ़ी, मैं ने डांट कर कहा ठीक से पढ़ो तुम ने ग़लत पढ़ा, तुम मुझ को सिर्फ मौलवी मत समझना, मैं 30 पारा का हाफिज़ भी हूँ जितनी आयतें तुम ने तक्रीर में पढ़ी हैं सब ग़लत पढ़ी हैं, फिर से पढ़ो, मगर वह दोबारा पढ़ न सका और बहुत ज़लील व रुस्वा हुआ। और इस वाकिआ का वहां के सारे मुसलमानों पर बहुत अच्छा असर पड़ा कि जब तक बराऊं शरीफ के मौलाना नहीं थे तमाम आयतें पढ़ कर सुना रहे थे और उन के सामने एक आयत भी सहीह नहीं पढ़ सके।

इतना सब कुछ होने के बा वजूद जब हम सुबह चलने लगे तो सेठ ने हमें एक रुपया नज़ाना पेश किया जो साइकल के किराए को भी काफी न था मगर हम ने बिला ऐतराज़ ले लिया और फिर उस के बाद भी जब बुलाया हम इस्लाम और सुन्नियत की खातिर बराबर गए, वहाबियों और देवबादियों के यहां शादी ब्याह करने और उन के पीछे ईद ग़ैरा की नमाज़ पढ़ने से रोक दिया। कई लड़कों को तालीम के लिये फैज़ुर रसूल बराऊं शरीफ में दाखिला करवाया, यहां तक कि अब अल्हम्दु लिल्लाह! कमहरिया में कई सुन्नी आलिम हो गए जिस से वहां की सुन्नियत महफूज़ हो गई और एक अच्छा दीनी मदरसा भी काइम हो गया जिस में कुर्बो-जवार और आबादी के सारे मुसलमान के बच्चे इस्लाम व सुन्नियत की तालीम हासिल कर रहे हैं।

सण्डीला का वाकिआ

ज़िला हरदोई का सण्डीला एक मशहूर क़स्बा है, वहां के जनाब इरशाद हुसैन साहब सिद्दीकी इस्लाम और सुन्नियत की खिदमत का

बहुत अच्छा जज्बा रखते हैं। लखनऊ की एक इस्तिफाकी मुलाकात में उन पर ज़ाहिर हुआ कि मैं सुन्नी आलिम हूँ, उन्होंने ने कहा कि मैं एक जलसा करना चाहता हूँ क्या आप उस में तकरीर के लिये आ सकते हैं? मैं ने जवाब दिया कि आ जाऊंगा। उन्होंने ने पूछा कि नज़ाना क्या लेंगे? मैं ने कहा जो भी आप दे देंगे मुझे उस पर कोई ऐतराज़ न होगा, मगर शायद किसी पेशावर मुकिरिर से कभी उन को पाला पड़ा था, उन्होंने ने मामला की सफाई के लिये कहा कि हम किराया वगैरा कुछ नहीं देंगे। जब आप तशरीफ लायेंगे तो सौ रुपये पेश करेंगे, हम ने कहा आप बिल्कुल मुतमईन रहिये हमें कोई ऐतराज़ न होगा, आप जो कुछ पेश करेंगे हम बखुशी कबूल कर लेंगे।

जलसा में हमारे अलावा और कोई दूसरा आलिम नहीं मदद किया गया, इसी तरह वह साल में तीन चार जलसा करते हैं जिस में सिर्फ एक आलिम को दावत देते हैं। यह तरीका बहुत उम्दा है कि थोड़े खर्च में जलसा हो जाता है और साल में कई बार इस्लाम व सुन्नियत की तब्लीग हो जाती है। ऐ काश! छोटी जगहों के दूसरे लोग भी यही तरीका इस्तिफाकार करते।

मैं तारीखे मुअय्यना पर सण्डीला पहुंच गया और अकाइद व आमाल पर तकरीबन दो घंटे तकरीर की, वापसी के वक़्त वादा के मुताबिक उन्होंने ने सौ रुपये पेश किये, वज़अ तंख्वाह और बराऊं शरीफ से सण्डीला तक आमदो-रफ्त किराए में पूरी रकम सर्फ हो गई और हम यह पहले ही से जानते थे। लेकिन इस्लाम व सुन्नियत की तब्लीग के जज्बे से हम ने दावत कबूल की थी।

इसी तरह उन्होंने ने हमें कई बार दावत दी और हम बराबर जाते रहे और उसी तरह नज़ाना पेश करते रहे और हम बखुशी कबूल करते रहे यहां तक कि वह हमारे हुस्ने अख्लाक से बहुत मुतअस्सिर हुए और उन्होंने ने अपने मदरसे के लिये जो बहुत कमज़ोर हालत में चल रहा था हम से एक आलिम तलब किया, हम ने फैजुर रसूल के एक होनहार फाज़िल को वहां पहुंचा दिया जिन की कोशिशों ने सिद्दीकी साहब के

हौसले और बुलंद कर दिया, थोड़े ही अरसे में मदरसा बहुत तरक्की कर गया और जब मेरे ईसार का उनको ऐहसास हुआ तो मदरसा का पुराना नाम बदल कर मेरी खुशी के लिये मुरशिदी सदरुश शरीआ रहमतुल्लाहि तआला अलैह के नाम पर उस का नाम दारुल उलूम अमजदिया रखा। अब मोहल्ला किसान टोला में उस की शानदार इमारत हो गई। कई आलिम व हाफिज़ और कसीर तलबा तालीम व तअल्लुम में मस्रूफ हैं और इस्लाम व सुन्नियत की खूब इशाअत हो रही है। فالحمد لله على ذلك

☆☆☆

ओझा गंज की ग़लत बातें और उन की इस्लाह

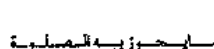
हमारी जाए पैदाइश ओझा गंज में ग़ैर मुस्लिमों की आबादी ज़्यादा है और मुसलमानों के तक्रीबन 50 घर हैं, दाइमी बाज़ार है, जहां हर वक़्त ज़रूरत की चीज़ें मिल जाती हैं। दो मस्जिदें और एक मदरसा भी अच्छी हालत में चल रहा है बर वक़्त पूरी आबादी में कुल दस फारिगुत्त तहसील मौलवी हैं, जहां सब से पहले मैं सनद याफ़ता आलिम हुआ, बाकी मेरे शगिर्द या शगिर्द के शगिर्द हैं।

ओझा गंज की पहली तालीमी हालत

ओझा गंज में मौलवी मुहम्मद ज़करिया साहब मरहूम अपने घर एक मकतब कायम किये हुए थे और ख़ालिसन लिंवज़्हिल्लाह बड़ी तवज्जोह से पढ़ाते थे। कुरआन मजीद, नाज़ेरा और कुछ उर्दू की तालीम देते थे मगर लिखना नहीं सिखाते थे, इस लिये कि वह खुद लिखना नहीं जानते थे, तीन लड़कों ने उन से कुरआन मजीद का हिफ़ज़ भी किया जिन में से एक मैं भी हूँ।

उर्दू में नूर नामा, अहद नामा, शाने रहमत, शाने कुद़रत और दुल्हन नामा पढ़ाई जाती थीं। फ़िक्ह में देवबंदियों की किताबें राहे नजात और मिफ़ताहुल जन्नह दाख़िले दर्स थीं। कुछ लोग शरअ मुहम्मदी मनज़ूम भी पढ़ लेते थे। बाज़ घरों में मीलाद शरीफ की कुछ किताबें क़ससुल

अंबिया और मुहर्रम की मजालिस में पढ़ने के लिये अनासिरुश शहादतैन और इसी किस्म की दूसरी चन्द किताबें पाई जाती थीं। मेरे आलिम होने तक फिक्ह की अजीम किताब बहारे शरीअत का एक हिस्सा भी आबादी में दाखिल नहीं हुआ था, ग़ालिबन लोगों को इस का इल्म ही नहीं था।

कुर्बो-जवार में बल्कि हरय्या के पूरब तहसील में सब से ज्यादा पढ़े लिखे ओझा गंज ही के लोग माने जाते थे। इसी लिये मुख्तलिफ मकामात पर यहां के आदमी ईदैन और जुमा की नमाज़ पढ़ाने के लिये जाया करते थे मगर फिक्ह की इस्तिलाह में सब उम्मी थे यानी कोई उन में  (जिस मिक्दार से नमाज़ दुरुस्त हो सके उतनी मिक्दार) कुरआन मजीद पढ़ने वाला नहीं था यहां तक कि किसी को  शीन,  सीन,  काफ,  काफ, और  फा,  फ़ की तबीज़ नहीं थी, ऐसे ही हम को भी पढ़ाया गया था जिस की इस्लाह इलतेफ़ात गंज के असातेज़ा ने भी नहीं की। जब हज़रत अल्लामा अरशदुल कादरी साहब किब्ला दामत बरकात हुमुल कुदसिया की दर्सगाह में दाखिल हुआ तो उन्होंने ने इस तरफ तवज्जोह दिलाई, ग़लत बोलने पर बार-बार तंबीह करते रहे और दुरुस्तगी पर ज़ोर देते रहे। एक बार पुरानी आदत के मुताबिक़ फ़ुक़हा के बजाए मेरी ज़बान से फ़ुक़हा निकला तो इस क़दर नाराज़ हुए कि मैं रोने लगा यहां तक कि क़िराअत सीख कर हम ने सहीह किया, फिर अपने उस्ताज़ मौलवी मुहम्मद ज़करिया साहब के हुरूफ को दुरुस्त कराया और अब तो अल्हम्दु लिल्लाह हमारी कोशिशों से ओझा गंज में कई कारी भी हो गए हैं।

ओझा गंज में शादी की रस्में

ओझा गंज में जब किसी के यहां शादी होती थी तो एक महीना पहले उस के यहां दफाली के यहां से ढोल आ जाती थी और आबादी भर की मुस्लिम औरतें जमा हो कर 12 बजे रात तक गाती बजाती थीं, और बाज़ घरों में औरतें नाचती भी थीं। यहां तक कि हमारा घर भी

गाने बजाने से पाक नहीं था। हमारी शादी के वक़्त जब ढोल लाने की बात आई तो हम ने निहायत सख़्ती से मना किया और कहा कि ढोल आएगी तो हम उसे चाकू से फाड़ देंगे, जो लाएगा वही उस का ज़िम्मेदार होगा। फिर ढोल नहीं आई और ओझा गंज की तारीख़ में यह पहली शादी हुई जिस में गाना बजाना नहीं हुआ। फिर हम दूसरों को भी सख़्ती से मना करते रहे, यहां तक कि पूरी मुस्लिम आबादी से यह ख़राबी दूर हो गई, सिर्फ़ चन्द आदमी जो नीच किसम के हैं, उन के यहां रह गई है उम्मीद कि आहिस्ता-आहिस्ता उन के घर से भी ख़त्म हो जाएगी।

बारातों में भी तरह-तरह के बाजे ले जाते थे और दूसरों से भी मंगाए जाते थे, यहां तक कि आबादी के मुत्सलमानों ने अंग्रेज़ी बाजे की एक गोल बना रखी थी जो ओझा गंज में और दूसरी जगहों पर पैसा लेकर बजाने के लिये जाया करती थी। अल्लहु लिल्लाह! हमारी फेहमाइश से यह ख़राबियों भी दूर हो गई। और अब यह मिजाज़ बन गया है कि मुम्बई का एक सेठ जो इसी इलाक़ा का रहने वाला है वह ज़बर्दस्ती बारात में बाजा लाना चाहता था तो हम ने मुत्सलमानों को उस के खिलाफ़ इतना उभारा कि वह मारने के लिये तैयार हो गए यहां तक कि उस को ओझा गंज में बाजा लाने की हिम्मत नहीं हुई।

बारात वाले दुल्हन के लिये जो कपड़ा वगैरा लाते थे, उसे घर के अन्दर पहुंचाने के लिये नाई या दूसरा कोई ना मेहरम जाता था, औरतें पहले से कालिख वगैरा तैयार करके रखती थीं, सामान उतारते ही उस को लगाने के लिये टूट पड़ती थीं, जिस के जवाब में बसा औकात वह भी औरतों पर हाथ चला दिया करता था। *अल्लुइयाज़ु बिल्लाहि तआला।*

दुल्हा बारातियों के साथ दुल्हन के दरवाज़े पर सलाम करने के लिये जाया करता था जिस में दुल्हा और घर की औरतों के दरमियान दरख़्तों की टहनियों से बाकाइदा मार होती थी और बाज़ औरतें चना, मटर या कटिदार फल भी दुल्हा के चेहरे पर मारती थीं, यह बेहूदा रस्में भी ख़त्म हुई।

ओझा गंज के लोग पन पिलाई और भत पकाई के नाम पर बारातियों को पानी पिलाने और उन को खाना खिलाने की मजदूरी दुल्हा के घर वालों से वसूल किया करते थे, हम ने बहुत गैरत दिलाई और कहा कि इसे बन्द करो। और अगर इस में पंच का नुक़सान है तो हर बारात की पन पिलाई और भत पकाई जब तक हम जिंदा हैं हम से वसूल कर लिया करो। अल्लहु लिल्लाह! यह ग़लत तरीका भी ख़त्म हुआ।

और ओझा गंज के लोग दावते वलीमा जानते ही नहीं थे, अल्बत्ता बारात की रवानगी से पहले मुस्लिम आबादी के सारे मर्दों को और ख़ानदान के पूरे अपराध को खाना खिलाना ज़रूरी था। इसे पंच का खाना कहा जाता था और जो शरूअ इतने लोगों को खिलाने की ताक़त नहीं रखता था, उसे पंच को जमा करके माफी मांगनी पड़ती थी। हम ने शबे जुफ़ाफ के बाद दावते वलीमा करने को बताया तो पंच का खाना बन्द हो गया और सब लोगों को खिलाने की ताक़त न होने की सूरत में माफी मांगना भी ख़त्म हो गया और अब बिफज़लिही तअ़ाला ओझा गंज में शादी वगैरा की सारी तक्रीबात इस्लामी तौर तरीके से होने लगीं। और हमारी सारी कोशिशें बार-आवर हो गईं।

बद-मज़हबों से रिश्ता

वहाबी और देवबंदी जो अल्लाह व रसूल जल्ल जलालहू व सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम और औलियाए किराम व बुजुर्गाने दीन की शान में गुस्ताखी व बेअदबी करते हैं वह अहले सुन्नत व जमाअत के यहां शादी ब्याह करने की ज़्यादा कोशिश करते हैं इस लिये कि इस तरह वह अपने रिश्तेदार के घर बद-मज़हबी फैलाने में आसानी के साथ कामयाब हो जाते हैं और वह सुन्नी जो अल्लाह व रसूल और अबियाए किराम व औलियाए इज़ाम से झूठी मुहब्बत का दावा रखते हैं उन की जाहिरी नरमी को देख कर रिश्ता कायम करने के लिये तैयार हो जाते हैं और यह नहीं जानते कि सांप ऊपर से नर्म होता है लेकिन उस के अन्दर ज़हरे कातिल होता है, बल्कि बद-मज़हब से

तअल्लुक सांप से ज़्यादा नुक़सान देह है इस लिये वह जान लेता है और यह ईमान पर डाका ज़नी करता है। इसी लिये सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

अगर बद मज़हब बीमार पड़ें तो उन की अयादत न करो, गर मर जायें तो उनके जनाज़े में शरीक न हो, उन से मुलाकात हो तो उनको सलाम न करो, उनके पास न बैठो, उनके साथ पानी न पियो, उनके साथ खाना न खाओ, उनके साथ शादी ब्याह न करो, उनके जनाज़े की नमाज़ न पढ़ो और न उनके साथ नमाज़ पढ़ो।

إِنْ مَرِضُوا تَلَاَعُوْهُمُ وَإِنْ مَاتُوا فَلَا تُشْهِدُوْهُمْ وَإِنْ لَقِيتُمُوْهُمْ فَلَا تُسَلِّمُوا عَلَيْهِمْ وَلَا تَحَالِسُوْهُمْ وَلَا تُشَارِبُوْهُمْ وَلَا تَأْكُلُوْهُمْ وَلَا تَنَاجِحُوْهُمْ وَلَا تُصَلُّوا عَلَيْهِمْ وَلَا تُصَلُّوا مَعَهُمْ -

(मुस्लिम शरीफ बहबलाल अनवारुल हदीस:103)

जो लोग हकीकत में अल्लाह व रसूल और आंबिया व औलिया को दोस्त रखते हैं वह उन के दुश्मनों को दुश्मन ही समझते हैं और उन से सख़्त नफरत करते हैं इस लिये कि दोस्त का दुश्मन, दुश्मन ही होता है -- अपने और अपने बाप दादा के दुश्मन से शादी ब्याह न करना और अल्लाह व रसूल के दुश्मनों से रिश्ता कायम करना ईमान वाला कभी ग़वारा ही नहीं कर सकता।

जो लोग दुनिया कमाने के लिये मौलवी-गीरी और पीरी मुरीदी करते हैं और पैसे की फ़िक्र में रहते हैं, सुन्नियत की परवाह नहीं करते वह सिर्फ़ डरामाई और रस्में तक्रीरें करते हैं मगर ईमान के डाकू जिस रास्ते से सुन्नियों के घरों में घुस का ईमान पर डाका ज़नी कर रहे हैं और सुन्नियत को बहुत ज़बर्दस्त नुक़सान पहुंचा रहे हैं, उस रास्ते को बन्द नहीं करते, बद मज़हबों से नफरत नहीं दिलाते और न उनके यहां शादी ब्याह करने से रोकते हैं बल्कि बाज़ सुन्नी कहलवाने वाले मौलवी और पीर उस में खुद ही मुब्तला हो जाते हैं जिसे सुन्नी अवाम सनद बनाते हैं और उन के यहां रिश्ता करके गुम्राह और बद मज़हब हो जाते हैं। अल-इयाज़ु बिल्लाहि तअ़ाला।

ओझा गंज के बाज़ मुसलमान भी वहाबियों और देवबंदियों से शादी कर रहे थे, मैं ने होश संभालते ही उन को मना किया और फिर कुछ दिनों बाद ऐलान कर दिया कि ख़बर दार! अब कोई उन के यहां रिश्ता न करे, अगर करेगा तो उस पर सख़्ती की जाएगी। और हर तरह से उस का इस्लामी बाइकाट किया जाएगा।

इस ऐलान को अरसा गुज़र गया मगर अल्हम्दु लिल्लाह! उस वक़्त से अब तक ओझा गंज के मुसलमानों की कोई शादी किसी बद मज़हब के यहां नहीं हुई जिस से इस आंबादी सुन्नियत रोज़ बरोज़ निखरती ही चली गई। अल्बत्ता अब कुछ ना आकिबत अंदेश जिन के लिये हमारी दुआ है कि उन्हें दीन की समझ हासिल हो वह अपनी बेवकूफी से ओझा गंज में एक ऐसे पीर को लाना चाहते हैं जिस ने अपने लड़का और लड़की दोनों की शादी बद मज़हब के यहां की है जिस का नतीजा यह है कि बहुत से मुसलमान इस मामले में उस पीर की इतिबाज़ करके अपने घरों में बद मज़हबी का बीज बो रहे हैं, अगर ओझा गंज के लोग भी उन से बैअत हुए और अपने पीर के नक़्शे क़दम पर चलते हुए बद मज़हबों से रिश्ते कायम किये तो मेरी ज़िंदगी भर का कमाया हुआ दीनी मिज़ाज मलिया-मेट हो जाएगा। और आहिस्ता-आहिस्ता ओझा गंज से सुन्नियत का जनाज़ा निकल जाएगा।

उस पीर के बाज़ हवा ख़्वाह कहते हैं कि उन्होंने ने अपने रिश्तेदारों को सुन्नी बना लिया है, तो उन्होंने ने अपने ही जैसा सुन्नी बनाया है कि जो बद मज़हबों के यहां शादी ब्याह करने पर राज़ी हो गए या उस से कम? खुदाए तआला ही ज़्यादा जानता है मगर यह मशहूर करना कि उन्होंने ने सुन्नी बना लिया है, सुन्नियत के लिये और ज़्यादा नुक़सान देह है इस लिये कि पहले उनके मुरीद मौलवियों को बद मज़हबों के यहां रिश्ता करने से बआसानी रोका जा सकता था और अब तो वह यह कहेंगे कि जैसे हमारे पीर साहब ने सुन्नी बना लिया है, हम भी बना लेंगे और फिर अवाम उस मौलवी के अमल को सनद बना कर बदमज़हबों के यहां रिश्ता करेंगे और अपने घर की सुन्नियत को तबाह

कर देंगे — अक़लमंदों ने कहा है कि जिस चीज़ का नतीजा देर में जाहिर हो उस से गुफ़्तत बरतना जिहालत की निशानियों में से है।

ओझा गंज की ताज़िया दारी

ओझा गंज में मुरव्वजा ताज़िया दारी बड़ी धूम धाम से होती थी, कई लोग अपने जाती खर्च से तन्हा ताज़िया बनाते थे और दोनों मस्जिदों के दरवाज़ों पर भी मोहल्ले वालों के पंचायती ताज़िये रखे जाते थे जिन में हमारे वालिद क़िब्ला मरहूम के अलावा सारे मुसलमान चन्दा दिया करते थे। ताज़ियों को इमाम साहब का रौज़ा कहा जाता था हालांकि उन में कोई आप के रौज़ए मुबारका की नक़ल नहीं होता था बल्कि ग़ैर मुस्लिमों के मन्दिरों की तरह हुआ करता था।

ताज़ियों को एक माह पहले से बनाना शुरू करते थे और बाजे के साथ निहायत शान से चौक पर रखते थे। दसवीं रात को बाजा गाजा और मर्दों औरतों के मज़्लूत मजमा के साथ बाज़ार में ग़श्त करते थे फिर 10 मुहर्रम को ताज़िया उठने पर बहुत बड़ा मेला हो जाता था। दूसरे मवाज़ेआत के भी ताज़िये आते थे और हर बड़ा आदमी यह चाहता था कि हमारा ताज़िया सूरज के मुक़ाबिल हो ताकि उस में चमक ज़्यादा हो और उस के लिये अय्यामे जाहेलियत जैसे झगड़े करते थे, यहां तक कि 10 वीं मुहर्रम को जब दफन करने के लिये ताज़िया उठता था तो बाज़ औरतें चौक पर पानी डाल कर उस की गीली मिट्टी अपने माथे पर लगाती थीं और फिर हाथों की चूड़िया तोड़ कर देर तक बैठ कर रोती रहती थीं।

इन खुराफ़ात को देख कर भला मैं कब ख़ामोश रह सकता था। मैं ने उन्हें बताया कि इस तरह की ताज़िया दारी ना जाइज़ हराम और बिदअते सैय्यिअह है, जिन लोगों को ताज़िया के मामले में इस क़दर गुलू था, भला वह मेरे इस बयान को कैसे बर्दाश्त कर सकते थे, सब मेरे खिलाफ हो गए और मुझ को वहाबी कहने लगे और बहुत से फ़र्ज़ी क़िस्से बयान होने लगे कि फुलां जगह एक आदमी ने ताज़िया रखना बन्द कर दिया तो उस का जवान बेटा मर गया और फुलां जगह

ताजिया न रखने पर ऐसा-ऐसा वाकिआ हुआ।

मगर मैं उन लोगों के खौफ दिलाने से बिल्कुल नहीं डरा, हर साल ताजिया दारी के खिलाफ बराबर तक़रीरें करता रहा और उन के फर्ज़ी किस्ती का जवाब यूँ देता रहा कि अगर ताजिया दारी बन्द कर देने पर जवान बेटा के मरने और बड़े-बड़े नुक़सानात होने का वाकिआ सहीह होता तो मैं जबकि उस का सख़्त मुख़ालिफ़ हूँ और उसे बन्द करवाता हूँ मुझे मेरे बेटों के साथ ज़मीन में ज़िंदा धंस जाना चाहिये था हालाँकि मैं हर लिहाज़ से रोज़ बरोज़ तरक्की कर रहा हूँ और ताजिया दार दिन बदिन पस्ती ही में जा रहे हैं बल्कि कई एक उनमें नरबंस (मुक़तिउन नस्ल) हो कर मिट गए और बाकी लोगों की हालत रोज़ बरोज़ ख़राब होती चली जा रही है।

ताजिया, अलम और शदे यहाँ तक कि ढोल का भी इतना ऐहताराम था कि उन को मस्जिदों में रखा जाता था। एक बार छोटी मस्जिद के रखे हुए अलम व शदे में उस के चिराग़ से न मालूम कैसे आग लग गई कि जिस से मस्जिद भी जल गई कि उस ज़माने में वह खपरेल (सफ़ाला पोश) थी, मगर आग बुझाने के बाद मा बक़िया अलम व शदे फिर उसी मस्जिद में रख दिये गए, मैं कहीं बाहर था, आने के बाद जब इस वाकिआ की ख़बर हुई तो अलम व शदे मस्जिद के बाहर कीचड़ में फिंकवा दिया और ढोल निकलवा कर पैरों की ठोक़रों से बहुत दूर करवा दिया।

इस वाकिआ से पूरी आबादी के मुसलमानों में आग लग गई मगर कोई मेरे क़रीब नहीं आया। अल्बत्ता इमाम आली मक़ाम के झण्डे की तौहीन का मुझ पर इल्ज़ाम लगाया गया, मौलाना नूर मुहम्मद ने मेरे मशवरा पर बरेली शरीफ़ से फत्वा मंगाया, मुफ़्ती साहब ने झण्डा फिंकवाने वाले को गुनहगार ठहराने के बजाए सवाब पाने वाला क़रार दिया, मैं ने उस फत्वा पर अहले सुन्नत के 75 उलमा और मशाइक़ वग़ैरा से दस्तख़त लेकर 1388 हि० में पोस्टर की शकल में शाए कर

दिया जिस की नक़ल इस किताब में भी हालाते मुसन्नफ़ से पहले शामिल की जा रही है।

ओझा गंज में ताजिया दारी अगर्वे अब भी जारी है मगर पहले वाली बातें अब नहीं रह गईं। बहुत सी जिहालतें दूर हो गईं और ज़ोर टूट चुका है। उम्मीद है कि आहेस्ता-आहेस्ता बिल्कुल ख़त्म हो जाएगी।

ख़्वाजा ख़िज़र का तेवहार

ओझा गंज में ख़्वाजा ख़िज़र का तेवहार इस तरह होता था कि दफाली ढोल और रबाना लेकर मुस्लिम आबादी में आते और एक-एक दरवाज़ा पर गाते बजाते, फिर जब औरतें गेहूं का मीठा दलिया पकाने के बाद बन संवर कर तैयार हो जातीं तो दफाली हर घर से औरतों को दलिया सर पर रखवा कर गाते बजाते हुए मस्जिदों के दरवाज़े तक पहुंचाते, फिर जब पूरी मुस्लिम आबादी का दलिया इकट्ठा हो जाता तो नौ जवान बहू बेटियां बेपर्दा अपने-अपने सरो पर दलिया लिये हुए बाज़ार से गुज़रतीं। दफाली क़दम-क़दम पर ठहरते और ख़ूब गाते बजाते और हाथ सर से ऊपर उठा-उठा कर औरतें दफाली को पैसा देतीं जबकि पर्दा ही के लिये नमाज़ की तक्बीरे तहरीमा के वक़्त कान तक भी हाथ उठाने से उन को मना किया गया है।

यह सारी बुराइयां बीच बाज़ार में होती थीं। और ग़ैर मुस्लिम दो रोया खड़े होकर तमाशा देखते थे मगर मुस्लिम जिम्मेदारान जो साथ में होते थे औरतों की यह हालत देख कर इतना भी नहीं कह सकते थे कि यह मेला बाज़ार के बजाए बाहरी रास्ते से नदी तक जाए। हमारे वालिद साहब किब्ला मरहूम सिर्फ़ इतना किया करते थे कि अपने घर की औरतों को नहीं जाने देते थे इस लिये हमारे घर यह तेवहार भी नहीं होता था अल्बत्ता कभी वह और अक्सर मौलवी मुहम्मद ज़करिया साहब मरहूम साल में एक बार इसी तेवहार के रोज़ दरिया के करीब शहीद बाबा के मज़ार के नाम पर शीरीन के लिये चन्दा करते और अन्न की नमाज़ पढ़ कर मेले के बाद दरिया पर जाते। मगर वहां सब

को मज़ार का होना तस्लीम नहीं था।

जब मैं ने होश संभाला तो लोगों को बताया कि अगर वाकई वहां मज़ार हो और हम ज़ियारत के लिये न जायेंगे तो गुनहगार नहीं होंगे कि मज़ार की ज़ियारत हम पर फर्ज व वाजिब नहीं। और अगर मज़ार न हो तो हदीस शरीफ **لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى زَوَّارِيهِ** के मुताबिक ज़ियारत करने के सबब हम अल्लाह की लअूनत के मुस्तहिक होंगे। लिहाज़ा भलाई की सूरत ज़ियारत न करने ही में है — मेरे इस बयान पर उस की ज़ियारत ख़त्म हो गई।

फारिगुत् तहसील होने के बाद अपने इब्तिदाई दौर में एक साल इस तेवहार के दिन मैं घर ही पर था और नमाज़े जुमा के बाद मेला निकलने वाला था, मैं ने उस के खिलाफ नमाज़ से पहले सख्त तक्रीर की और लोगों को गैरत दिलाई कि आप की बहू बेटियां बेपर्दगी और बेहयाई के साथ बीच बाज़ार से गुज़रती हैं मगर आप लोगों को शर्म नहीं आती, बड़े अप्सोस की बात है। ख्वाजा खिज़र की नियाज़ अपने घर दिलवाइये और अगर दरिया के किनारे दिलवाना चाहें तो मर्द लेकर जायें औरतें हरगिज़ न जाएं।

मेरे इस बयान को लोगों ने मान लिया और अपने-अपने घर जा कर औरतों को सख्ती से मना कर दिया मगर पुश्तहा पुश्त की रस्म यका यक बन्द होती देख कर लीडर किसम की औरतें बहुत परेशान हुईं और हमारी बात को रद्द करने के लिये बड़ी कोशिशें कीं लेकिन अल्हम्दु लिल्लाह! वह कामयाब न हुई और यह हयासोज़ तरीका हमेशा के लिये ख़त्म हो गया।

मां-बाप का खाना

मां-बाप के मरने पर ओझा गंज में उन का खाना शादी ब्याह की तरह बड़ी धूम धाम से किया जाता था जिस में तमाम अजीज़ व अकारिब और सारे रिश्तेदारों को जमा किया जाता था। कुछ खानदानी फकीरों को और खास तौर से बिरादरी को खाना खिलाया जाता था। मौत ही के दिन से लोग उस खाने का इन्तेज़ार शुरू कर देते, अगर किसी की

जानिब से खिलाने में ताखीर होती तो वह कहीं बोलने का हक नहीं रखता था। लोग उसे फौरन ताना देते कि तू क्या बात करता है तेरा बाप मर गया और तू अभी तक बिरादरी को खाना नहीं खिला सका।

अगर कोई शख्स खिलाने की ताकत नहीं रखता तो बिरादरी के दबाव और उन की ताना ज़नीं से बचने के लिये मजबूरन कर्ज़ लेकर खाना करना पड़ता और अगर कर्ज़ लेकर भी कोई आदमी खिलाने की ताकत नहीं रखता तो मुसलमानों की भरी पंचायत में खड़े हो कर वह पंच से माफी मांगता, जिस पर यह कहा जाता कि माफी नहीं मिलेगी, लोगों के यहां तुम ने खाया है तो तुम्हें भी सब को खिलाना पड़ेगा। जब बहुत देर तक हाथ जोड़ कर वह पंच से आजिजी मन्नती करता और अपनी मजबूरियां बयान करता तो बादिले नाख्वास्ता उसे माफ कर दिया जाता मगर वह पूरी आबादी में निहायत ज़लील व रुस्वा हो जाता।

चूंकि इस तरह मैथ्यित के घर वालों से खाना वसूल करना हराम व ना जाइज़ है इस लिये मैं ने इस की सख्त मुख़ालेफ़त की मगर ताना ज़नी के ख़ौफ़ से लोग छोड़ने की हिम्मत नहीं कर पा रहे थे। लेकिन जब मेरे वालिदैन् का इन्तेक़ाल हुआ तो मैं ने खाना नहीं किया बल्कि ईसाले सवाब के लिये बड़ी मस्जिद में इलैक्ट्रिक लगवाई, इस तरह लोगों को बिरादरी के जुल्म से नज़ात मिल गई। उस ने अपना हक़ ख़त्म कर दिया माफी मांगने का सवाल नहीं रह गया, खुद इख़्तियारी हो गया और न खिलाने की सूरत में ताना ज़नी करने और ऐब निकालने की बात बिल्कुल ख़त्म हो गई।

अब ओझा गंज के लोग अक्सर यह खाना नहीं करते और जो करते हैं वह रिया व तफ़ाख़ुर और नाम व नमूद के लिये करते हैं इस लिये कि अगर सवाब मक्सूद होता तो जिस में ज़्यादा सवाब है वह काम करते, पेट भरों को खाना न खिलाते बल्कि किसी ग़रीब व लाचार बेवा की इमदाद करते, सदक़ए ज़ारिया में खर्च करते, तामीरे मस्जिद में लगाते या तालिब इल्मे दीन को देते कि एक के बदले कम से कम सात सौ का सवाब है। देखिये फ़तावा रज़विय्यह:4/500

लिहाजा ओझा गंज, गुजरात व मुम्बई वगैरा के वह तमाम लोग जो ज़्यादा सवाब का काम छोड़ कर हजारों रुपया खिलाने पर खर्च करते हैं और कहते हैं कि हम सवाब ही की नियत से ऐसा करते हैं वह झूठ बोलते हैं, इस लिये कि अगर उनका मक्सद सिर्फ सवाब होता तो वह पेट भरों को खाना न खिलाते बल्कि जिस में ज़्यादा सवाब है वह काम करते।

ओझा गंज की कुछ और इस्लाहें

इस आबादी में पहले कुर्बानी का गोश्त आम तौर पर काफिरों को भी दिया जाता था, जिस में नाई, धोबी और चमार भी शामिल होते थे और ओझा गंज के पुराने ज़मीनदार बरहमन जो अब भी आबादी में बाअसर है उन को खास तौर से दिया जाता था, इस लिये उस के खिलाफ बोलना बड़ा मुश्किल काम था मगर अल्लाह व रसूल जल्ल जलालहू व सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम के भरोसे पर हम ने हुक्मे शरअ सुना ही दिया कि काफिरों को कुर्बानी का गोश्त देना जाइज़ नहीं। इस रुकावट से ग़ैर मुस्लिमों में बड़ी खलबली पैदा हुई और जब हम से पूछा गया कि आप ने रोका है तो हम ने जवाब दिया कि हम नहीं रोकते बल्कि हमारा मज़हब रोकता है और जैसा आप का धर्म जितनी इजाज़त देता है उतना ही बताव आप हमारे साथ करते हैं वैसे ही हमारा मज़हब जितनी बातें जाइज़ ठहरता है उस से ज़्यादा हम आप के साथ करने से मजबूर हैं। अल्लहुमु लिज्जल्लाह! ओझा गंज से यह ना जाइज़ तरीका दूर हो गया।

और बाज़ लोग जो कहते हैं कि काफिरों को कुर्बानी का गोश्त देना जाइज़ है। फतावा आलमगीरी में लिखा है तो यह उन की ग़लत फहमी है, इस किताब में सिर्फ ज़िम्मी काफिरों को देना जाइज़ लिखा है और यहां के काफिर ज़िम्मी नहीं हरबी हैं जैसा कि रईसुल फुकहा हज़रत मुल्ला जीवन रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने ज़मानए मुग़लिया में तफसीराते अहमदिया:300 पर तहरीर फरमाया है: ان هم الاحرى ومايقبلها الا العالمون

और फतावा आलमगीरी की अस्ल इबारत यह है: *يُهب منها ما شاء للغنى والفقير*
 والمسلم والذمي كذا فى الغياثة ।

जामा मस्जिद के इमाम होने की हैसियत से कुर्बानी का जानवर सिर्फ हमारे वालिद साहब जिबह किया करते थे और उस का सर व पाया उन का हक माना जाता था, चूँकि इब्तिदा ही से मेरे अन्दर इस्लाह का जज़्बा पाया जाता था तो फारिगुत् तहसील होने से बहुत पहले हम ने ऐलान कर दिया कि बेहतर है अपनी कुर्बानी का जानवर अपने हाथ से आप लोग खुद जिबह करें और खुद न कर सकें तो जिस से चाहें करवा सकते हैं, इमाम का जिबह करना ज़रूरी नहीं और कुर्बानी का सर व पाया जिबह करने वाले का हक नहीं, आप जिसे चाहें दे सकते हैं और अपने काम में भी ला सकते हैं।

इस ऐलान के बाद अब कुर्बानी का जानवर जिस से चाहते हैं लोग जिबह करवाते हैं और उस के सर व पाया का हकदार जिबह करने वाले को नहीं ठहराते।

पूरी आबादी के मुसलमान ओझड़ी और आतें बिला तकल्लुफ खाते थे, हम ने उस के ना जाइज़ होने का ऐलान किया और आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह व दीगर उलमाए अहले सुन्नत के फत्वे सुबूत में पेश किये तो जो लोग हुक्मे शरअ के पैरौ हैं, उन्होंने ने खाना छोड़ दिया और कुर्बानी के जानवर की ओझड़ी और आतें ज़मीन में दफन कर देते हैं और कोई भंगी ले जाना चाहता है तो उसे मना नहीं करते जैसा कि फतावा रज़विय्यह:6/167 पर है मगर जो लोग कि शरअ के बजाए अपने बाप दादा के पैरौ हैं वह अब भी पोशीदा तौर पर खाते रहते हैं।

शबेक़्द्र में इशा की नमाज़ के लिये सात अज़ान कही जाती थीं और ईदैन की भी अज़ान होती थी जिस में नहीं मालूम क्या क्या अल्फाज़ कहे जाते थे। हम ने शबेक़्द्र की इशा की भी एक अज़ान जारी की और ईदैन की अनोखी अज़ान को बन्द करवा के सिर्फ दो

बार अस्सलातु जामिअतुन् कहने की इजाजत दी।

सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तअलाला अलैहि व सल्लम और सहाबए किराम के ज़मानए मुबारका में खुत्बा की अज़ान मस्जिद के बाहर दरवाज़ा ही पर हुआ करती थी जैसा कि हदीस की मोतबर व मशहूर किताब अबू दाऊद शरीफ:1/162 पर हदीस मौजूद है लेकिन कुछ ज़माने के बाद यह अज़ान मस्जिद के अन्दर मिम्बर के पास होने लगी। फिर इसे हदीस शरीफ के मुताबिक मस्जिद से बाहर लाने में जगह-जगह फिले व फसाद हुए मगर हम ने ओझा गंज में ऐसी तरकीब इख्तियार की जिस से बग़ैर किसी ऐतराज़ व फसाद के निहायत आसानी के साथ यह अज़ान भी मस्जिद के बाहर होने लगी।

आज से 25-30 साल पहले हम ने जहाँ भी पूछा कि मुर्दे को लुंगी कहां से कहां तक दी जाती है तो भालूम हुआ कि नाफ से पैर तक यहां तक कि यही हाल बराऊं शरीफ में भी था। और जब हम ने फिक्ह की मोतबर किताबों के हवाले से बताया कि मुर्दा की लुंगी सर की चोटी से पैर तक होनी चाहिये तो लोग सुन कर हैरत ज़दा हो गए और फिर हम ने अनवारुल हदीस में कफन की आम ग़लतियों पर इन्तेबाह लिखा जिस से बहुत लोगों ने इस्लाह की।

ओझा गंज में भी मुर्दा को लुंगी नाफ ही से दी जाती थी और मैथियत के दोनों हाथ करवटों में रखने के बजाए काफ़िरों की तरह सीने पर रखे जाते थे, इन के अलावा और बहुत सी ग़लतियां कफन व दफन के बारे में राइज थीं जिन को हम ने दुरुस्त किया। छोटे बच्चे की क़ब्र में तख़्ता की जगह पर पका हुआ खपड़ा रखा जाता था, हम ने इसे मना किया कि पक्की ईंट की तरह इस में भी आग का असर पाया जाता है और बाद दफन क़ब्र पर अज़ान कहना जारी किया।

ओझा गंज में आम तौर पर लोगों का वुजू और सज्दा सहीह नहीं था कि धोए जाने वाले अज़ा का कुछ हिस्सा धोते थे और कुछ सिर्फ भिगा कर छोड़ देते थे, उस पर पानी नहीं बहाते थे। और सज्दे में दोनों पांव की उंगलियों में से किसी का पेट ज़मीन पर नहीं लगता था जबकि

एक उंगली का पेट ज़मीन पर लगाना फर्ज़ और दोनों पांव की तीन-तीन उंगलियों का पेट लगाना वाजिब है। हम ने इन ख़राबियों से लोगों को आगाह किया और सहीह तरीक़े से वुजू करने और नमाज़ पढ़ने का ढंग बताया। इसी लिये हमारे हिफ़ज़ व नाज़ेरा के उस्ताज़ मौलवी मुहम्मद ज़करिया मरहूम कहा करते थे कि हम आप के उस्ताज़ नहीं हैं बल्कि आप हमारे उस्ताज़ हैं कि वुजू और नमाज़ वगैरा का सहीह तरीक़ा हम ने आप ही से सीखा है।

मुल्क के बहुत से बड़े-बड़े शहर जहां साल में कई शानदार जलसे होते हैं और बेशुमार उलमा की तक्रीरें होती हैं, वहां की औरतें इस मस्अले से बेख़बर थीं कि मर्दों की तरह उन को भी बिला उज़्र सारी नमाज़ें बैठ कर पढ़ना जाइज़ नहीं है। वह हर हाल में फर्ज़ व वाजिब तमाम नमाज़ें बैठ ही कर पढ़ती थीं और सख़्त गुनहगार होती थीं। हम ने जगह-जगह अपनी तक्रीरों में इस मस्अला को बयान किया जिस से दीनदार तबक़ा बहुत ममनून हुआ। और फिर अनवारुल हदीस व अनवारे शरीअत में इस मस्अले को वज़ाहत के साथ लिखा जिस से अल्लाह की बहुत सी नेक बंदियों ने अपनी फर्ज़ नमाज़ों को ख़र्बाद होने से बचाया। दीगर मक़ामात की तरह ओझा गंज में भी यह ख़राबी पाई जाती थी, *अल्हम्दु लिल्लाह!* इस की भी दुरुस्तुगी हुई।

आझा गंज का मज़हबी मेअ्यार बुलंद करने के लिये जो काम हम ने किये हैं उन में से दोनों मसाजिद की पुख़्ता तामीर भी है। छोटी मस्जिद अलम व शद्दे की आग से जल जाने के बाद 1385 हि० मुताबिक़ 1965 में तामीर हुई जिस में ज़्यादा से ज़्यादा अपनी तरफ़ से रक़म लगाने और ख़ालिसन् लिक्वज़हिल्ला अहमदाबाद और मुम्बई व भेवंडी वगैरा से चन्दा फराहम करने की ज़िम्मेदारी हम ने ली और हिसाब व किताब, मटेरियल की फराहमी और मज़दूरों की निगरानी वगैरा का काम मुल्लाह मुहम्मद हुसैन और मुहम्मद यासीन ने अंजाम दिया।

बड़ी मस्जिद जो अभी तक खपड़ेल (सफ़ाला पोश) थी वह भी बहुत बोसीदा हो गई थी उस को भी शहीद करने से चार पांच साल

क़बल आबादी में चन्दे का आगाज़ किया और हम ने तक्मील तक हर साल एक माह की तंख्वाह देने का वादा किया जो अल्हम्दु लिल्लाह! अब तक पूरा किया। मुम्बई के कुछ अहले खैर हज़रात से भी इमदाद हासिल की और आबादी के लोगों ने काफी दिलचस्पी ली, छत लगने तक का इन्तेज़ाम इरफ़ान अहमद और उन के बाप रमज़ान अली ने किया। फिर सफ़ाई करवाने और ख़ूबसूरत मीनारा व उम्दा फर्श बनवाने का काम मौलवी सलाहुद्दीन ने अंजाम दिया। और अज़ीज़ गिरामी मौलाना सैयद मुहम्मद अनवर विश्ती जीद मज्दहुम साहिब ज़ादा सज्जादा नशीन आस्तानए आलिया फफूंद शरीफ ज़िला इटावा ने तामीरे जदीद के तारीखी मादे यह इस्तिख़राज किये:

قَالَ الْإِمَامُ الْأَمَامُ مَنْ بَنَى لِلَّهِ مَسْجِدًا بَنَى اللَّهُ لَهُ يَتَاغَى الْحَقَّ

कालल इमामुल उममि मन् बना लिल्लाहि मस्जिदन् बनल्लाहु लहु वैतन् फिल जन्नति

14 ————— हिज० ————— 5

जामा मस्जिद ओझा गंज बसई व कोशिश मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद साहब अमजदी

19 ————— ई० ————— 85

पुरानी रस्में

बाप दादा से पुरानी रस्में जो चाली आती हैं, जाहिल अवाम को उन से बाज़ रखना और उन्हें बन्द करवाना बड़ा मुश्किल काम है। इस लिये ओझा गंज की बहुत सारी गुलत रस्मों की इस्लाह में हमें बड़ी-बड़ी मुश्किलात का मुक़ाबला करना पड़ा। तरह-तरह की अज़ियतें उठानी पड़ीं और किस्म-किस्म के दिलख़राश जुमले सुनने पड़े। उन में से एक यह भी है कि मैं जब भी ओझा गंज में किसी गुलत बात से मना करता तो पीठ पीछे यह कहा जाता कि नए-नए मौलवी और नया-नया मस्अला। पहले भेरे पास इस बात का कोई जवाब नहीं था। मैं सुनने के बाद पेचो-ताब खा के रह जाता। आखिर में ने इस का जवाब तलाश कर लिया और तक्रीरों में बयान किया कि नए-नए मौलवी और नया-नया मस्अला, पीठ पीछे यह कहना औरतों का काम है। अगर

आप वाकई मर्द हैं तो टांडा यहां से करीब है वहां चले जाएं और जिस बात को मैं ना जाइज कहता हूं उस को किसी मौलवी से जाइज लिखवा लाएं या बरेली शरीफ से फत्वा मंगा लें और घर में बैठ कर औरतों की तरह बात करना छोड़ दें।

मेरे इस बयान के बाद फिर इस किस्म की बातें सुनने में नहीं आईं। मगर अवाम जो पुश्तहा पुश्त से गुलतियों में मुब्तला थे, उन्हें उन बातों का छोड़ना बहुत शाक गुजरा, इस लिये उन के दिलों में हमारी तरफ से तक्लीफ पैदा हो गई और मुस्लिम आबादी के जिम्मेदारान हमारी इस्लाह से अपनी तौहीन महसूस किये और फिर हर तरह की तरक्की देख कर हमारे हसद में मुब्तला हो गए।

हसद

किसी की नेमत देख कर जलना और यह चाहना कि इसके बजाए यह बात मुझे हासिल हो, इसे हसद कहते हैं। हदीस शरीफ के मुताबिक हसद ऐसा गुनाह है जो हासिद की नेकियों को इस तरह जलाता है जैसे आग लकड़ी को الْحَسَدُ يَأْكُلُ الْحَسَنَاتِ كَمَا يَأْكُلُ النَّارُ الْحَطَبَ (अबू दारुद शरीफ:2/316)

अल्लाह तआला का मुझ पर कुछ ऐसा फजले अजीम हुआ कि दूर व नजदीक के बहुत से लोग मेरे हसद में मुब्तला हुए यहां तक कि तक्वा व परहेजगारी का दावा रखने वाले भी इस में गिरफ्तार हो गए और तरह-तरह की अज़िब्यतें पहुंचाईं। लेकिन उन में ओझा गंज वालों को सब से ज्यादा हसद हुआ, जिन में बदलू नाम का एक शरीफ आदमी पेश-पेश रहा, इन लोगों ने मेरे एक पड़ोसी को (जिस से उस के घर वाले भी परेशान रहते हैं) उभार दिया तो उस ने हमें खूब सताया।

और हमारे मकान के बिल्कुल मुत्तसिल एक खाली पड़ी हुई ज़मीन थी जिसे गैर ममलूका समझ कर हम ने कब्ज़ा कर लिया और दीवार खड़ी करके अपने घेरे में ले लिया। फिर जब बाद में ज़ाहिर हुआ कि यह ज़मीन ओझा गंज के मशहूर खानदान धाकड़ की है तो हम ने अपना कब्ज़ा हटाना चाहा, उन लोगों ने कहा यह हमारे कोई खास

काम की नहीं है जब दीवार खड़ी हो गई तो उस को न गिराइये, हम ज़मीन की मुनासिब कीमत ले लेंगे।

यह उस ज़माने की बात है जबकि ज़मीन की ज़्यादा क़दर नहीं थी और ओझा गंज में पांच सौ रुपये बीघा में मज़रूआ ज़मीन फरोख्त होती थी, यह भी मज़रूआ ज़मीन का छुटा हुआ हिस्सा था, हम ने कहा आप लोग हजार रुपया बीघा के हिसाब से पैसा ले लीजियेगा। इस लिये कि कुल एक ही बिस्वा ज़मीन थी, उन लोगों ने कहा ठीक है ले लिया जाएगा।

फिर जब हम ने कीमत लेने के लिये बारहा तकाज़ा करना शुरू किया तो उस ख़ानदान के लोगों ने जवाब दिया कि अच्छा हो जाएगा, आप परेशान न हों। आखिर में उन को एक शख्स ने समझा दिया कि ज़मीन की कीमत मत लो इस लिये कि तुम ग्यारह बारह हिस्से दार हो, थोड़ा-थोड़ा पैसा पाओगे, इस से बेहतर यही है कि आलिमे दीन हैं बग़ैर कीमत ऐसे ही बतौर नज़ाना दे दो। उन लोगों ने यही किया और हम ने उन की नज़ कबूल कर ली लेकिन लिखाया नहीं और यह भूल हम से इस बुनियाद पर हुई कि उन लोगों के मूरिसे आला धाकड़ हमारे वालिद साहब और दूसरे पढ़े लिखे लोगों की बड़ी इज़्ज़त करते थे और उन के साथ बड़ा हुस्ने ऐतकाद रखते थे, यहां तक कि उन्होंने ने अपने बेटों की वसिय्यत की थी कि मैं बहुत गुनहगार आदमी हूं, मुझे क़ब्रिस्तान में रास्ता पर दफन करना, मुझ को यकीन है कि कोई अल्लाह का मुत्तकी परहेज़गार बन्दा मेरे ऊपर से कभी गुज़र जाएगा तो मेरी बख़्शिश हो जाएगी। मगर यह अजीब इत्तिफाक़ है कि उन की क़ब्र के निशानात मिटने से पहले जिस रास्ते पर वह दफन किये गए थे वह रास्ता ही बन्द हो गया।

मुझे यकीन था कि बग़ैर कीमत ज़मीन दे देने के बाद उस ख़ानदान का कोई फ़र्द उस के बारे में फिर कोई बात नहीं करेगा। मैं ने आयते करीमा مَلِكُ حُرَّةِ الْإِحْسَانِ وَالْإِحْسَانِ (ऐहसान का बदला ऐहसान ही है) के मुताबिक़ उन लोगों के साथ हर मुमकिन तरीक़ा से भलाई करनी

शुरू की और बहुत दिनों तक हमारे और उन के दरमियान तअल्लुकात खुशगवार रहे। लेकिन जब हम ने अपना मकान पुख्ता बना लिया तो कुछ शरीफों के तन बदन में हसद की आग भड़क उठी और उन्होंने ने अपना कलेजा ठंडा करने के लिये धाकड़ खानदान को बेहका दिया तो वह लोग जोकि उन में गुलत हैं उन्होंने ने कहना शुरू कर दिया हमारी ज़मीन पर ज़बर्दस्ती कब्ज़ा कर लिया, हम ने उन से कहा कि जब तुम अपनी कही हुई बात से फिर गए तो अब ज़मीन की कीमत मौजूदा भाव से ले लो मगर हासिदीन ने उन्हें लेने नहीं दिया और बने हुए पुख्ता मकान के ढाने में हमारा बहुत नुक़सान था, इस लिये यह मामला ऐसा ही पड़ा रह गया।

नोट: किताब में वाकिआ शाए होने के बाद धाकड़ खानदान ने मजबूर होकर ज़मीन की कीमत ले ली। अल्-अमजदी

लोगों के हसद की हमारे पास कोई दवा नहीं है इस का इलाज सिर्फ वही है जो हज़रत शेख सअदी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने तज्वीज़ फरमाया है कि:

ब मीर ता ब रही ऐ हसूद कीं रंजेस्त

कि अज़ मशक्कत ऊ जुज़ बमर्ग नतवां रस्त

यानी ऐ हसद करने वाले तू मर जा इस लिये कि हसद ऐसी बीमारी है कि उस की तक्लीफ से मौत के बग़ैर तुम छुटकारा नहीं पा सकते। (गुलसिता)

मिज़ाज में शिद्दत

मेरे बारे में आम तौर पर कहा जाता है कि मिज़ाज में शिद्दत है ग़ालिबन इस लिये कि मैं तलबा पर सख्ती रखता हूँ। उज़े माकूल के बग़ैर मकान पर ज़्यादा रोज़ ठहरने वालों को मुनासिब सज़ा देता हूँ। हर तालिब इल्म को अपनी बारी पर इबारत पढ़ने पर मजबूर करता हूँ और मेहनत न करने वालों को बहुत सख्त सुस्त कहता हूँ। किब्ला की सिमत पेशाब करने वाले, दाहिने हाथ से इस्तिंजा का ढेला सुखाने वाले, लोगों के सामने पायजामे का पायचा उठा कर पेशाब करने वाले, खड़े

होकर पानी पीने वाले, बायें हाथ से खाने पीने वाले या दाहिने हाथ से नाक साफ करने वाले किसी तालिब इल्म को दूर से भी देख लेता हूं तो उसे बुला कर तंबीह करता हूं और अगर झूठ बोलता है कि मैं ने ऐसा नहीं किया तो कुछ न कुछ उसे जरूर सज़ा देता हूं। ना समझ तलबा की नज़र में महबूब बनने के लिये उन की ग़लतियों से सर्फ़ नज़र नहीं करता हूं बल्कि पहले नमी से उन्हें समझाता हूं और नहीं मानते तो फिर सख़्ती करता हूं मगर इतनी नमी नहीं इख़्तियार करता कि जो सुस्ती से ताबीर हो और न इतनी सख़्ती करता हूं कि जिसे जुल्म कहा जाए इसी लिये फैज़ुर रसूल की 32 साला तदरीसी ज़िंदगी में कभी तलबा ने मेरे खिलाफ़ महाज़ नहीं बनाया और न कभी इस्त्राइक की, जबकि बाज़ दूसरे लोग कि जिन के मिज़ाज की शिद्दत नहीं मशहूर है उन के खिलाफ़ कई बार तलबा की इस्त्राइक हो चुकी है।

मेरी सख़्ती से बहुत से लोगों को फाइदा पहुंचा कि अच्छी तालीम और उम्दा तरबियत से आरास्ता होकर कामयाब ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं। अगर मेरे अन्दर ज़्यादा नमी होती तो हमारे लड़के भी बर्बाद हो जाते, न बा सलाहियत आलिम बनते और न किसी दर्सगाह में पढ़ाने के काबिल होते, सिर्फ़ नाम के मौलाना बनते।

और मेरे मिज़ाज की सख़्ती ही का नतीजा है जो ओझा गंज के मुसलमानों की इस्लाह हुई, दहरियत का ख़ातिमा हुआ और बद मज़हबियत से महफूज़ रहा, वरना इस आबादी में भी अब तक वहाबियत घुस गई होती।

कुछ और बातें

मुल्की सियासत बल्कि ओझा गंज की सियासत से भी मेरा कोई तअल्लुक नहीं है यहां तक कि एम.एल.ए. एम.पी. और प्रधान वगैरा किसी को होश संभालने के बाद से अब तक मैं ने कभी वोट नहीं दिया और न अपने घर वालों को देने देता हूं कि उन के गुलत कामों की ज़िम्मेदारी हमारे ऊपर भी आ जाएगी।

रेडियो खरीदना मेरे नज़्दीक ना जाइज़ नहीं है, उस का गुलत इस्तेमाल ना जाइज़ है और सहीह इस्तेमाल बहुत कम लोग कर पाते हैं इस लिये आज तक मैं ने उसे अपने घर में नहीं दाखिल होने दिया, न खुद खरीदा और न शादी ब्याह में लड़की वाले को देने दिया। बल्कि टेपरेकार्ड भी नहीं लिया, इस खौफ से कि मैं टेपरेकार्ड खरीदूंगा तो मेरे लड़के रेडियो लाकर गाना सुनेंगे और मैं रेडियो खरीदूंगा तो मेरे लड़के टेलीवीज़न और वी.डी.ओ. लाकर अमजदी मंज़िल को सनेमा घर बना देंगे।

मैं ने खुशहाली के बावजूद अपने किसी लड़के को अंग्रेज़ी नहीं पढ़ाई और न इंशा अल्लाह तआला किसी को पढ़ाऊंगा बल्कि हर एक को नाइबे रसूल ही बनाने की कोशिश करूंगा। और उन लोगों की राह कभी नहीं इख्तियार करूंगा कि जो दस साल तक ज़कात व ख़ैरात खा कर इल्मे दीन हासिल किये और पूरे ज़मानए तालिब इल्मी में एक-एक पैसे के मोहताज रहे। फिर आलिम होने के बाद जब किसी मस्जिद या मदरसा के मुलाज़िम होकर खुशहाल हो गए तो अपने घर वालों को अंग्रेज़ी पढ़ा कर काफ़िरों की वज़अ क़तअ का दिलदादा बनाया, उन्हें फ़ासिकों का लिबास पहनाया और अपने घर से इस्लामी तौरो-तरीका निकाल कर उसे मगरिबी तहज़ीब का गहवारा बना दिया।

अगर कोई इस्लाम व सुन्नियत की तब्लीग़ व इशाअत और मज़हबी किताबों का तर्जमा करने की नियत से अंग्रेज़ी ज़बान पढ़े तो हम उस के मुख़ालेफ़ नहीं हैं कि हदीस शरीफ़ इन्नमलू अअमालु बिन्निय्यात के मुताबिक़ इस नियत से किसी भी ज़बान को हासिल करेगा तो सत्राव पाएगा।

हम मौजूदा अंग्रेज़ी कोर्स के मुख़ालिफ़ हैं जिस स उमूमन पढ़ने वालों को ज़ेहन ख़राब हो जाता है, मज़हबी आज़ादी पैदा हो जाती है, माहौल बदल जाता है और बसा औकात नौबत यहां तक पहुंचती है कि एक दो पुश्त के बाद घर में दहरियत की बुनियाद पड़ जाती है --- जिस राह पर चलने वाले अक्सर हलाक़ हो जाएं ऐसा रास्ता बनाने

वाले और उस पर चलने वाले दोनों बेवकूफ हैं।

सहाबए किराम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम अज्मईन के ज़मानए मुबारका में रूमी और ईरानी वगैरा के सनह राइज थे मगर उन्होंने ने उन में स किसी को नहीं इख्तियार किया बल्कि इस्लाम और मुसलमानों की भलाई के लिये सनह हिजरी को जारी किया जिसे आज का मुसलमान मिटाने पर तुला हुआ है और उस को दुनिया से नेस्त व नाबूद कर देना चाहता है कि अवाम तो अवाम अक्सर उलमा व मशाइख भी अंग्रेज़ी ही तारीख़ व सनह लिखते व बोलते हैं। और सिर्फ़ गवर्नमेन्ट के कागज़ात में नहीं बल्कि अपने निजी मामलात शादी ब्याह और मख़मूस खुतूत में भी इस्लामी तारीख़ व सनह को छोड़ कर सिर्फ़ अंग्रेज़ी पर इक्तेफ़ा करते हैं, मैं इसे सख़्त ना पसंद करता हूँ।

और मुसलमानों के वह खुतूत कि जिन के पते उर्दू से बिल्कुल ख़ाली होते हैं और वह बैजक कि जिन में अंग्रेज़ी गिन्तियां इस्तेमाल की जाती हैं उन्हें भी देख कर मुझ को तक्लीफ़ होती है। इसी लिये कुतुब ख़ाना अमजदिया बराऊं शरीफ़ और मदरसा अमजदिया अरशदुल उलूम औज़ा गंज का सारा हिसाब व किताब इस्लामी तारीख़ व सनह और उर्दू की गिन्तियों के साथ लिखा जाता है।

खुदाए अज़्ज़ व जल्ल सारे मुसलमानों को तौफीक़ अता फरमाए कि वह तमाम बातें जो इस्लाम व मुसलमानों की इन्फ़ेरादियत को बाकी रखने वाली हैं, उन्हें हमेशा जारी रखें और अपनी ग़फ़लत व लापरवाही से उन को मिटाने की कोशिश न करें। आमीन

फैजुर रसूल से मुझे बहुत मुहब्बत है इसी लिये मैं अक्सर बराऊं शरीफ़ में ही रहता हूँ, बक़द्रे ज़रूरत अपने मकान पर जाता हूँ और घर का इन्तेज़ाम देख कर फौरन वापस आ जाता हूँ। हर 15 दिन पर जुमेरात को तदरीस से फुर्सत पा कर जाता हूँ और जुमा को सुबह 9-10 बजे बराऊं शरीफ़ के लिये रवाना हो जाता हूँ। जब कि मेरे तमाम अहलो-अयाल वतन ही में रहते हैं और 32 बरस में कभी एक

दिन के लिये भी बराऊं शरीफ नहीं आए — और ओझा गंज से बराऊं शरीफ के लिये 5 सवारियों से 94 किलो मीटर का सफर करना पड़ता है।

मूसलाधार बारिश, लू के थपेड़े और सख्त से सख्त सर्दी भी हमें अब तक अपने प्रोग्राम के मुताबिक सफर करने से नहीं रोक सकी। मैं अपने इरादे पर बहुत सख्ती से अमल करता हूँ, यहां तक कि मेरी अहलिया बीमार थीं और हालत बहुत ज्यादा नाजुक थी मगर मैं अपने प्रोग्राम के मुताबिक वतन से चल पड़ा और अभी रास्ता ही में था, बराऊं शरीफ नहीं पहुंचा था कि इन्तेकाल हो गया। और मेरी वालिदा सख्त अलील थीं उन के दम टूटने का इन्तेज़ार किया जा रहा था मगर मैं अपने इरादे के मुताबिक घर से निकल पड़ा और अभी एक घंटा भी नहीं गुजरा था कि वह दुनिया से रुख्सत हो गई।

और रबीउल आखिर 1407 हि० में हमारा सब से छोटा लड़का जो मेरे ओझा गंज पहुंचने के दिन थोड़ी-थोड़ी देर पर घर से निकल कर मेरा रास्ता देखता है, वह चेचक के बुखार में मुक्ताला था और बेहोशी जैसी कैफियत तारी थी कि मेरा घर पर पहुंचना भी वह नहीं जान सका मगर मैं अपने इरादे के मुताबिक दूसरे दिन घर वालों को यह तसल्ली देकर चला आया कि घबराने की ज़रूरत नहीं अच्छा हो जाएगा। और जब बराऊं शरीफ पहुंच कर सख्त उलझन हुई तो एक तालिब इल्म को ओझा गंज भेज कर खैरियत मालूम की।

इसी इरादा की पुख्तगी के सबब ज़िंदगी भर में कभी मुझ से वादा खिलाफी नहीं हुई, मैं ने जब भी किसी से वादा किया तो वक्त पर किसी न किसी तरह ज़रूर पहुंच गया और बराऊं शरीफ हमेशा तातील व रुख्सत के मुताबिक ही हाज़िर हुआ। 32 बरस में कभी एक दिन की ताखीर से नहीं पहुंचा। बहुत से लोग तातीले कलां में दो मोह अपने वतन में रहने के बा वजूद वक्त पर बराऊं शरीफ नहीं पहुंच पाते और मैं पूरे माहे रमज़ान में मुम्बई तरावीह पढ़ा कर दारुल उलूम खुलने से एक रोज पहले ही बराऊं शरीफ हाज़िर हो जाया करता था। एक बार

मुम्बई से रिजर्व टिकट मिलने में दुश्वारी हुई तो खतमें तातील के दिन ओझा गंज पहुंचा और एक घंटा मकान पर रह कर शाम तक बराऊं शरीफ आ गया।

अराकीने फैजुर रसूल का हाल यह है कि जो लोग एक हफ्ता की रुख्सत लेकर जाते हैं अगर वह दो तीन हफ्ता पर आते हैं तो उन से भी ऐहतारामन यह मुतालेबा नहीं करते कि आप इतनी ताखीर से क्यों आए? तो मैं अराकीन के दबाव से वक़्त पर नहीं हाज़िर होता हूं बल्कि निगाह में वक़्त की कद्र और उस की पाबंदी है इस लिये ऐसा करता हूं।

कभी झूठे बीमार बन कर रुख्सते अलालत नहीं ली, इसी लिये दारुल उलूम के कानून के मुताबिक 32 साला ख़िदमात की तद्वरीबन 14 माह की रुख्सते अलालत महफूज़ है। बाज़ लोगों ने बारहा समझाया कि हर साल की पूरी रुख्सते अलालत लेकर ख़त्म कर दिया करो। लेकिन हम कभी इस की ज़ुरअत नहीं कर सके और हमेशा खुदाए तआला से डरते रहे झूठा बीमार बनने से कहीं ऐसा न हो कि वह हकीकत में बीमार कर दे और आक़िबत ख़राब होने का ख़ौफ़ अलग से दामनगीर रहा। हदीस शरीफ में है:

لَا تَمَارِضُوا فَمَرَضُوا فَمَوْتُوا فَتَلْعَلُوا النَّارَ

झूठे बीमार मत बनो कि हकीकत में बीमार हो जाओगे और मर जाओगे तो जहन्नम में जाओगे। (अल्-मलफूज़: 4/35)

अल्बत्ता साढ़े दस साल की उम्र से पहले हिफज़ करने के ज़माने में एक मर्तबा हम भी बीमार बने थे, इस लिये कि हमारे बाज़ साथी अक्सर दर्दे सर का बहाना बना कर घर बैठ रहते और फिर खेलते रहते, तो उन्हें देख कर हम भी एक दिन मक्तब नहीं गए और दर्दे सर का बहाना बना कर बैठ गए मगर फिर ऐसी उलझन पैदा हुई कि घर पर ही पढ़ना शुरू कर दिया और जब तक वालिद साहब को सुना कर सबक नहीं ले लिया चैन नहीं आया।

नमाज़ के लिये गैबी ताईदें

मैं दीनदार घराने में पैदा हुआ और मेरे वालिदैन् नमाज़ के सख्त पाबंद थे, इस लिये मैं बहुत बचपन ही से नमाज़ पढ़ने लगा था और शुऐबुल औलिया हज़रत शाम मुहम्मद यार अली साहब किस्सा अलैहिर रहमत वर्-रिज़वान जिन की नमाज़ तो नमाज़, जमाअत तो जमाअत सफर व हज़र में 48 साल तक तकबीरे ऊला भी नहीं फौत हुई, उन की चौदह साला सोहबत ने मुझ को और नमाज़ का पाबंद बना दिया। फिर 1396 हि० में हज्जे बैतुल्लाह और सरकारे अक्दस सल्लल्लाहु तअल्ला अलैहि व सल्लम के आस्तानए मुबारका की हाज़िरी के बाद नमाज़ का मज़ीद ऐहतमाम हो गया कि ऐहतियातन सफर में अव्वल वक़्त नमाज़ पढ़ने की कोशिश करता हूँ। लोटा, मुसल्ला और कुतब नुमा हमेशा साथ रखता हूँ। हल्लल मक़दूर में नमाज़ के वक़्त में सफर करने से परहेज़ करता हूँ। अगर बहालते सफर नमाज़ पढ़ने में ज़्यादा परेशानी का खौफ़ होता है तो उसे कई टुकड़े कर देता हूँ, कई मौकों पर नमाज़ पढ़ने का इमकान न रहा तो फज़ले खुदावन्दी से गैबी ताईदें हुई और हम ने वक़्त पर नमाज़ें पढ़ लीं।

फिरोज़ाबाद ज़िला आगरा हम तक़रीर के लिये गए और वाज़ से फारिग होकर रात ही में वापस हो गए, जलसा वालों ने हमें ऐसी ट्रेन में बिठा दिया कि जिस में रश बहुत ज़्यादा था, फज़्र का वक़्त हो गया, इटावा स्टेशन पर ट्रेन खड़ी हुई, मगर उस के अन्दर कोई सूरत नमाज़ पढ़ने की नहीं थी और न गेट से निकल कर किसी तरह बाहर पढ़ना मुम्किन था, मैं बहुत परेशान था कि अब क्या करूँ, खुदाए तअल्ला से दुआ की कि नमाज़ के लिये कोई सूरत पैदा हो जाए कि ट्रेन का इंजन खराब हो गया और देर तक गाड़ी स्टेशन पर खड़ी रही, बहुत से लोग नीचे उतर पड़े, गेट खाली हो गया, हम ने वुजू करके जब आराम से नमाज़ पढ़ ली तब इंजन दुरुस्त हुआ और ट्रेन वहाँ से रवाना हुई।

मैं एक मर्तबा अपने वतन जाने के लिये बराऊं शरीफ से रवाना हो कर बांसी पहुंचा, सर्दी का ज़माना था, मैं ने अव्वल वक़्त 12-½ बजे जुहर की नमाज़ पढ़ ली मगर बस बहुत ताखीर से आई जिस के सबब रश बहुत ज़्यादा हुआ, 3-½ बजे वह बस बांसी से रवाना हुई और जब रुंधौली पहुंची तो अस्त्र का वक़्त आधा गुज़र चुका था और भीड़ के सबब बस से निकल कर नमाज़ पढ़ना मुमकिन न था, मैं सोचने लगा क्या करूं, यहीं बस छोड़ दूं, या कहीं आगे जा कर उतर जाऊं, अभी कोई फैसला नहीं कर पाया था कि बस वहां से रवाना हो गई मगर आबादी से निकल का पेंचर हो गई, हम ने खुदा का शुक अदा किया, सारे पैसिंजर उतर गए, हम ने वुजू करके नमाज़ पढ़ी, फिर दूसरी बस मिली जिस से बस्ती पहुंच कर मगरिब की नमाज़ अदा की।

गर्मियों का ज़माना था, हमें लखनऊ से बस के ज़रिये फैज़ाबाद पहुंच कर टांडा जाना था, हम ने वक़्त से पहले वुजू कर लिया कि भिटरया में बस खड़ी होगी तो हम नमाज़ पढ़ लेंगे। मगर वह भिटरया में खड़ी नहीं हुई और ड्राइवर व कन्डेक्टर दोनों साधुओं की शकल में बड़ी-बड़ी जटा रखाए हुए टीका धारी थे, उन से यह कतई उम्मीद नहीं थी कि वह कहने पर नमाज़ पढ़ने के लिये बस रोक देंगे।

मैं ने फैसला कर लिया कि अगर फैज़ाबाद पहुंचने से पहले सूरज के गुरुब होने का अदेश हुआ तो मैं बस छोड़ दूंगा फिर नमाज़ पढ़ कर टेक्सी से चला जाऊंगा, बस चलती रही यहां तक कि अस्त्र का वक़्त बिल्कुल आखिर हो गया मगर फैज़ाबाद दूर रहा और अब मैं ड्राइवर से कहने ही वाला था कि बस रोक दो, मैं उतरूंगा कि ए.जी.एम. की कार ने बस के सामने आकर उसे रोक दिया, मेरे दिल की मुराद बर आई, अल्लाह तआला का शुक अदा किया, फौरन उतर कर अस्त्र की नमाज़ पढ़ी, बस देर तक खड़ी रही, फिर जब मगरिब की नमाज़ भी हम ने पढ़ ली तो उस के बाद वह चल कर फैज़ाबाद पहुंची।

एक मर्तबा हमें इलाहाबाद से सुबह 4 बजे वाली पसिंजर ट्रेन के ज़रिये फैज़ाबाद आना था और ट्रेन की बोगियों में पानी नहीं था, सर्दी

का ज़माना था, हम ने वक़्त से पहले 4 बजे स्टेशन ही पर वुजू कर लिया, ट्रेन रवाना हुई, हम ऊपर की बर्थ पर लेट गए, आंख लग गई और फिर उस वक़्त बेदार हुए जबकि ट्रेन एक बहुत मामूली स्टेशन पर करासिंग के सबब खड़ी थी और फज़ का वक़्त आखिर हो रहा था, मालूम हुआ कि स्टेशन पर पानी का इन्तेज़ाम नहीं है, ज़रूरत पर कुछ दूर से आता है, मैं बहुत परेशान हुआ कि अगर मैं पानी के पास वुजू करने के लिये आऊं तो हो सकता है ट्रेन चल पड़े और यह भी मुमुकिन है कि खड़ी रहे तो अब मैं क्या करूं।

अल्लाह का फज़ल हुआ कि सामने की बर्थ पर लेटे हुए मुसाफिर ने पूछा कि आप परेशान क्यों नज़र आ रहे हैं? मैं ने उस को सूरते हाल से आगाह किया, उस ने कहा आप घबराइये नहीं मैं इंजन से पानी लाकर देता हूं, उस ने ऐसा ही किया और हम ने सूरज निकलने से पहले बड़े आराम से वुजू करके नमाज़ पढ़ ली फिर ट्रेन रवाना हुई।

मुम्बई के एक सफ़र में हम गार्ड की बोगी के करीब थे, ट्रेन से उतर कर जैसे ही हम ने नमाज़ की नियत बांधी उस ने सीटी लगा दी और फिर वह बार-बार सीटी बजाता और झंडी हिलाता रहा मगर ट्रेन चली नहीं, हालां कि डराइवर हमे देखता भी नहीं रहा, इस लिये कि स्टेशन की भीड़ के बाद हम ट्रेन के आखिरी हिस्से के समाने थे, जब हम नमाज़ से फारिग़ होकर ट्रेन पर आ गए तब वह रवाना हुई।

शुएबुल औलिया हज़रत शाह मुहम्मद यार अली साहब किब्ला रहमतुल्लाहि तआला अलैह फरमाया करते थे कि जो शख्स नमाज़ से मुहब्बत रखता है और पाबंदी से उस को पढ़ना चाहता है तो खुदाए तआला ग़ैब से उस की मदद फरमाता है — हज़रत की इस बात का मुझे ज़िंदगी में बारहा तजर्बी हुआ जिन में यह चन्द वाकिआ उन लोगों की नसीहत के लिये लिख दिये गए जो सफ़र में नमाज़ पढ़ने के लिये मौका न मिलने का बहाना करते हैं। खुदाए तआला उन्हें हिदायत नसीब फरमाए। आमीन

शार्गिदों को वसियत

1) खुलूस के साथ खिदमते दीन को अपनी जिंदगी का मक्सद करार दो। हुसूले ज़र को अपनी जिंदगी का मक्सद न बनाओ।

2) मस्जिद, मदरसा की मुलाज़िमत के मअूना में आलिम न रहो, नाइबे रसूल के मअूना में आलिम बनो कि रसूल की तरह हर वक़्त इस्लाम व सुन्नियत की तब्लीग़ व इशाअत की फिक्क रखो और हर मुमकिन तरीक़े से उस के लिये कोशिश करते रहो।

3) कुरआन मजीद और हदीस शरीफ पढ़ने के साथ फिक्क का ज़्यादा से ज़्यादा मुतालेआ करो कि अल्लाह व रसूल के नज़्दीक सब से बड़ा आलिम वही होता है जो फिक्क में ज़्यादा होता है अगरचें दूसरा हदीस व तफ़सीर से ज़्यादा इश्तेग़ाल रखता हो। (फ़तावा रज़विय्यह:4/572)

4) सहीह मअूना में आलिमे दीन बनने के लिये उलमाए अहल सुन्नत खुसूसन आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की तस्नीफ़ात का ज़्यादा से ज़्यादा मुतालेआ करो।

5) आलिम की सनद मिल जाने को काफी न समझो बल्कि जिंदगी भर तहसीले इल्म में लगे रहो और यकीन करो कि ज़मानए तालिब इल्मी में सिर्फ़ इल्म हासिल करने की सलाहियत पैदा की जाती है और हकीक़त में इल्म हासिल करने का ज़माना फरागत के बाद ही है।

6) खुद भी बाअमल रहो और दूसरों को भी बाअमल बनाने की कोशिश में दिन रात लगे रहो।

7) बद मज़हब और दुनिया दार मौलवी से दूर भागो जैसे शेर से बल्कि इस से भी ज़्यादा कि वह जान लेता है और यह ईमान बर्बाद करता है।

8) इल्हाक़ कि जिस से अक्सर दीनी मदारिस दुनिया दार हो गए और उन की तालीम बर्बाद हो गई, उस से बचो और मक़रो-फरेब से गवर्नमेन्ट का पैसा न हासिल करो कि ग़दर व बद अहदी मुत्तक़न सब से हराम है।

9) दीन में कभी मुदाहनत न इख्तियार करो, हक-गोई व बेबाकी अपनी जिंदगी का शिआर बनाओ।

10) अपने रुपये को बैंक में रखने और दूसरे कारोबार में लगाने के बजाए दीनी काम में लगाओ। किताबें तस्नीफ करो और उन्हें छपवा कर इस्लाम व सुन्नियत की ज्यादा से ज्यादा नश्रो-इशाअत करो और यकीन रखो कि जो लोग दीन का काम नहीं करते बल्कि जो अल्लाह व रसूल की मुखालफत करते हैं जब उन्हें भी खाने को मिलता है तो कभी तुम भूके न रहोगे।

11) असातिजा के हुक्क को तमाम मुसलमानों के हुक्क से मुकदम रखो और किसी तरह की ईजा उन को न पहुंचाओ वरना इल्म की बरकत से महरूम हो जाओगे।

दुआ है कि खुदाए अज्ज व जल्ल हमारे शार्गिदों को इन वसियतों पर अमल करने की तौफीके रफीक बख्शे, हमारी दीनी खिदमात को कबूल फरमाए, ईमान पर खातिमा हो और कियामत के दिन हुजूर पुर नूर शाफेए यौमुन्नुशूर जनाब अहमदे मुज्जबा मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम की शफाअत नसीब फरमाए। आमीन

وصلی اللہ تبارک و تعالیٰ وسلم علیٰ سیدنا محمد النبی الکریم

وعلیٰ آله واصحابه افضل الصلوات واکمل التسلیم

व सल्लल्लाहु तबारक व तआला व सल्लम अला सैय्यिदिना मुहम्मदिन् नबियिल् करीम व अला आलिही व अस्थाबिही अफज़लुस् सलवाति व अक्मलुत्-तस्लीम।

जलालुद्दीन अहमद अमजदी

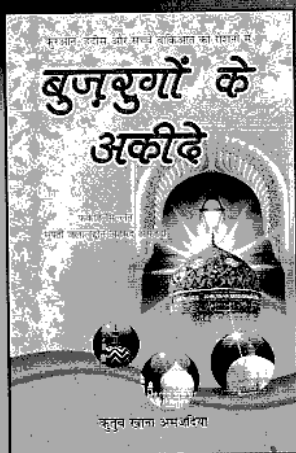
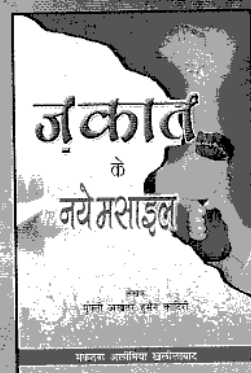
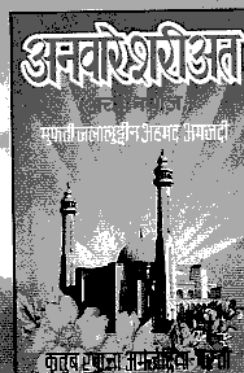
खादिम दारुल उलूम फैजुर रसूल बराऊं शरीफ, ज़िला बस्ती

11 जमादिउल उख्रा 1408 हि0

31 जनवरी 1988 ई0

.....

हमारी हिन्दी किताबें



ISBN 81-89087-58-4



**KUTUB KHANA
AMJADIA**

425/7, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Ph.: 011-32484831, Telefax: 011-23243187
e-mail: kkamjedia@yahoo.co.uk

www.kutubkhanamjadia.com • info@kutubkhanamjadia.com